समय को पुनः खोजना

खोए हुए समय की खोज में - खंड **VII**

मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
समय पुनः प्राप्त हुआ
अतीत की यादें - खंड **VII**

अनुवादक: स्टीफन हडसन (सिडनी शिफ)
चैटो एंड विंडस, लंदन, 1931

Table of Contents

सूक्ति
अनुवादक का समर्पण
अनुवादक का नोट
अध्याय 1
टैनसनविले
अध्याय II
एम. डी चार्लस: युद्ध के दौरान, उनके विचार, उनकी खुशियाँ
अध्याय III
प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पर दोपहर की पार्टी

सूक्ति

"जब मैं मधुर मौन चिंतन के सत्रों में अतीत की यादों को जगाता हूँ..."
"हाँ, यदि स्मृति, विस्मरण के कारण, वर्तमान क्षण से कोई संबंध न जोड़ सके, कोई संबंध न बना सके, यदि वह अपने स्थान पर, अपनी तिथि पर बनी रहे, यदि वह अपनी दूरी, अपना एकांत किसी घाटी के खोखले भाग में या किसी शिखर की चोटी पर बनाए रखे, तो वह अचानक हमें एक नई हवा में सांस लेने का अवसर देती है, ठीक इसलिए क्योंकि यह वही हवा है जिसे हमने अतीत में सांस लिया है, यह शुद्ध हवा जिसे कवियों ने स्वर्ग

में राज करने का व्यर्थ प्रयास किया है और जो नवीनीकरण की इस गहन अनुभूति को केवल तभी दे सकती है जब इसे पहले ही सांस लिया जा चुका हो, क्योंकि सच्चे स्वर्ग वे स्वर्ग हैं जिन्हें हम खो चुके हैं।"

अनुवादक का समर्पण
मेरे दोस्त की याद में
चार्ल्स स्कॉट मोनक्रिफ़
मार्सेल प्राउस्ट के अतुलनीय अनुवादक

अनुवादक का नोट

फ्रांसीसी संस्करण के खंड के पृष्ठ 244 पर लिखे वाक्यांश 'La vie humaine et pensante…dans une forteresse' से मैं उलझन में पड़ गया था। मेरे मित्र एल्डस हक्सले से संपर्क करने पर मुझे वह व्याख्या मिली जिसे मैंने लगभग पूरी तरह से अपना लिया है। हम दोनों जानते हैं कि यह अनुवाद केवल अनुमानित है, और इसकी अस्पष्टता आंशिक रूप से ही इस अंश की संक्षिप्त प्रकृति के कारण है। मेरा मानना है कि या तो प्रॉस्ट की पांडुलिपि को पढ़ने में संपादकीय त्रुटि हुई है या फिर मुद्रणकर्ता की गलती है, और इस श्रृंखला में ऐसी गलतियाँ अक्सर होती रहती हैं।

मैं श्री ए. जी. चैटर द्वारा सुझाए गए पाठ के बहुमूल्य संशोधनों के लिए भी कृतज्ञतापूर्वक आभार व्यक्त करता हूं।

स्टीफन हडसन

अध्याय **1**

टैनसनविले

टैनसनविले दो सैर के बीच आराम करने या बारिश से बचने के लिए एक साधारण सी जगह लग रही थी। कुछ हद तक देहाती माहौल वाला यह घर उन ग्रामीण घरों में से एक था जहाँ हर बैठक हरियाली से भरी अलमारी की तरह होती है, और जहाँ बगीचे में खिले गुलाब और पक्षी पर्दों में आपका साथ देते हैं; क्योंकि वे पुराने थे और हर गुलाब इतना सुंदर दिखता था मानो उसे असली गुलाब की तरह तोड़ा गया हो और हर पक्षी को पिंजरे में रखा गया हो, उन दिखावटी आधुनिक सजावटों के विपरीत जिनमें चाँदी की पृष्ठभूमि पर नॉर्मंडी के सभी सेब के पेड़ों की जापानी शैली में रूपरेखा बनाई जाती है, ताकि बिस्तर पर लेटे-लेटे समय का भ्रम बना रहे। मैंने पूरा दिन अपने कमरे में बिताया, जिसकी खिड़कियाँ पार्क की खूबसूरत हरियाली, प्रवेश द्वार पर खिले लिली के फूलों, पानी के किनारे और मेसेग्लिस के जंगल में लगे बड़े पेड़ों की हरी पत्तियों पर खुलती थीं। यह सब निहारना सुखद था, मैं मन ही मन सोच रहा था: "मेरी खिड़की में इतनी हरियाली कितनी मनमोहक है!" तभी अचानक उस विशाल हरे-भरे दृश्य के बीचोंबीच मुझे कॉम्ब्रे चर्च का घंटाघर दिखाई दिया, जो गहरे नीले रंग के विपरीत चमक रहा था, मानो बहुत दूर हो। यह घंटाघर की प्रतिकृति नहीं, बल्कि स्वयं घंटाघर का स्वरूप था, जो समय और स्थान को चुनौती देते हुए, उस चमकदार हरियाली के बीच ऐसे प्रकट हो रहा था मानो मेरी खिड़की के शीशे पर उकेरा गया हो। और अगर मैं अपने कमरे से बाहर निकलता, तो गलियारे के अंत में, लाल रंग की पट्टी की तरह मेरी ओर बढ़ते हुए, मुझे एक छोटे से बैठक कक्ष के पर्दे दिखाई देते, जो मलमल के बने होने के बावजूद इतने चटख लाल रंग के थे कि

सूर्य की एक किरण भी उन पर पड़ती तो उनमें आग लग जाती।
हमारी सैर के दौरान गिलबर्ट रॉबर्ट का ज़िक्र इस तरह करती थी मानो वह उससे दूर होकर दूसरी स्त्रियों की ओर आकर्षित हो रहा हो। यह सच था कि उसका जीवन स्त्रियों से इस प्रकार घिरा हुआ था जैसे पुरुषों का लगाव स्त्रियों के जीवन को घेर लेता है – प्रेम करने वाले पुरुष, दोनों ही एक वर्जित फल की तरह थे, एक ऐसे स्थान की तरह जिस पर व्यर्थ ही कब्ज़ा किया गया हो, जो अवांछित वस्तुओं का अधिकांश घरों में होता है।
एक बार मैं गिलबर्टे को जल्दी छोड़कर आधी रात को, अधनी नींद में ही, अल्बर्टीन को पुकारा। मैं उसके बारे में न तो सोच रहा था और न ही सपने में, और न ही मैंने उसे गिलबर्टे समझ लिया था। मेरी स्मृति से अल्बर्टीन के लिए प्रेम मिट चुका था, लेकिन ऐसा लगता है कि उसके अंगों की एक अनैच्छिक स्मृति अवश्य ही बनी रहती है, जो दूसरे की फीकी और बांझ नकल है, और कुछ बेजान जानवरों या पौधों की तरह मनुष्य से अधिक समय तक जीवित रहती है। पैर, बाहें कुंद यादों से भरी हैं; मेरी बांह में पनप रही एक स्मृति ने मुझे अपनी पीठ के पीछे घंटी ढूंढने के लिए मजबूर किया, जैसा कि मैं पेरिस में अपने कमरे में किया करता था, और मैंने अल्बर्टीन को पुकारा, यह कल्पना करते हुए कि मेरी मृत मित्र मेरे बगल में लेटी है, जैसा कि वह अक्सर शाम को हमारे साथ सोते समय करती थी, और मैं फ्रांस्वा के हम तक पहुंचने में लगने वाले समय को गिन रहा था, ताकि अल्बर्टीन बिना किसी झिझक के उस घंटी को बजा सके जिसे मैं नहीं ढूंढ पा रहा था।
जब मैं टैनसनविले में था, रॉबर्ट कई बार वहाँ आया। वह उस व्यक्ति से बहुत अलग था जिसे मैं पहले जानता था। उसके जीवन ने उसे एम. डी. चार्लस की तरह कठोर नहीं बनाया था, बल्कि इसके विपरीत, उसे एक

घुड़सवार अधिकारी का सहज स्वभाव पहले से कहीं अधिक दे दिया था, हालाँकि उसने अपनी शादी के बाद अपना पद त्याग दिया था। जैसे-जैसे एम. डी. चार्लस का वजन बढ़ता गया, रॉबर्ट (निःसंदेह वह बहुत छोटा था, फिर भी ऐसा लगता था कि उम्र के साथ वह भी उसी तरह का हो जाएगा जैसे कुछ महिलाएं अपने चेहरे को अपने शरीर के लिए कुर्बान कर देती हैं और मैरिएनबाद को कभी नहीं छोड़तीं, यह मानते हुए कि वे अपनी जवानी के सारे आकर्षण को बरकरार नहीं रख सकतीं, इसलिए शरीर की बनावट ही दूसरों को सबसे अच्छे से दर्शाती है) दुबला और फुर्तीला होता गया, जो उसी दुर्गुण का विपरीत प्रभाव था। इस फुर्ती के अन्य मनोवैज्ञानिक कारण भी थे; देखे जाने का डर, उस डर को न दिखाने की इच्छा, स्वयं से असंतोष और ऊब से उत्पन्न बेचैनी। उसे कुछ कुख्यात ठिकानों पर जाने की आदत थी, जहाँ वह नहीं चाहता था कि कोई उसे अंदर जाते या बाहर आते हुए देखे, इसलिए वह खुद को इस तरह छिपा लेता था ताकि राहगीरों की बुरी निगाहों से उसका शरीर कम से कम दिखाई दे, और उसकी वह हवा जैसी गति बनी रहती थी और शायद उस व्यक्ति की स्पष्ट निर्भीकता का प्रतीक थी जो यह दिखाना चाहता है कि वह निडर है और सोचने में समय नहीं लगाता।

पूरी तस्वीर को समझने के लिए, उम्र बढ़ने के साथ-साथ जवान दिखने की चाहत और हमेशा ऊबे और उदासीन रहने वालों की अधीरता को भी ध्यान में रखना होगा, जो अपेक्षाकृत आरामदेह जीवन के लिए बहुत बुद्धिमान होते हैं और अपनी क्षमताओं का पर्याप्त उपयोग नहीं करते। निस्संदेह, ऐसे लोगों का आलस्य उदासीनता के रूप में प्रकट हो सकता है, लेकिन विशेष रूप से तब से जब शारीरिक व्यायाम को दी जाने वाली प्राथमिकता के कारण आलस्य ने खेल का रूप ले लिया है, और यहां तक कि जब खेल संभव न हो, तब भी अत्यधिक सक्रियता ऊब को पनपने का

समय या स्थान नहीं देती।

वह भावहीन हो गया था और मुझ जैसे दोस्तों को भी संवेदनशीलता का कोई संकेत नहीं देता था। दूसरी ओर, गिलबर्ट के प्रति उसका व्यवहार अप्रिय संवेदनशीलता से भरा था, जिसे वह हास्य की हद तक ले जाता था। ऐसा नहीं था कि रॉबर्ट गिलबर्ट के प्रति उदासीन था; नहीं, वह उससे प्रेम करता था। लेकिन वह हमेशा उससे झूठ बोलता था और यह कपटपूर्ण व्यवहार, यदि उसके झूठ का मूल कारण नहीं भी था, तो लगातार उभरता रहता था। ऐसे समय में उसे लगता था कि गिलबर्ट को पीड़ा देने से होने वाले वास्तविक दर्द को हास्यास्पद हद तक बढ़ा-चढ़ाकर बताने से ही वह खुद को बचा सकता है। जब वह टैनसनविले पहुँचा, तो उसने बताया कि उसे अगली सुबह एक खास सज्जन के साथ काम के सिलसिले में जाना पड़ा, जो पेरिस में उसका इंतज़ार कर रहे थे। उसी शाम कॉम्ब्रे के पास उनसे मुलाकात हुई और दुर्भाग्य से उन्होंने रॉबर्ट के झूठ का पर्दाफाश कर दिया, क्योंकि रॉबर्ट ने उन्हें पहले से आगाह नहीं किया था। रॉबर्ट शर्म से लाल हो गया, उसने गिलबर्ट की हल्की उदास मुस्कान देखी, और उस बदकिस्मत अपराधी से अपमान करके बदला लेने के बाद, अपनी पत्नी से पहले लौट आया और उसे एक हताश भरा पत्र भेजा जिसमें उसने लिखा कि उसने झूठ इसलिए बोला ताकि उसे दुख न हो, क्योंकि उसे डर था कि जब वह किसी ऐसे कारण से चला जाएगा जिसे वह उसे बता नहीं सकता, तो वह सोचेगी कि उसने उससे प्यार करना छोड़ दिया है; और यह सब, जो झूठ की तरह लिखा गया था, वास्तव में सच था। फिर उसने यह पूछने के लिए संदेश भेजा कि क्या वह उसके कमरे में आ सकता है, और वहाँ, कुछ वास्तविक दुख में, कुछ अपने जीवन से घृणा में, और कुछ अपने लगातार बढ़ते झूठे ढिठाई के कारण, वह सिसकियाँ भरता रहा और अपनी आसन्न मृत्यु के बारे में बातें

करता रहा, कभी-कभी बीमार होने का नाटक करते हुए ज़मीन पर गिर पड़ता था। गिलबर्ट को यह समझ नहीं आ रहा था कि उस पर कितना विश्वास किया जाए, इसलिए वह हर बार उसे झूठा समझती थी। लेकिन उसकी निकट मृत्यु की आशंका से चिंतित और यह मानते हुए कि वह उससे प्रेम करता है, और शायद उसे कोई ऐसी बीमारी है जिसके बारे में गिलबर्ट को पता नहीं है, उसने उसका विरोध करने या उसे यात्राएं छोड़ने के लिए कहने का साहस नहीं किया। मुझे यह समझ नहीं आया कि सेंट-लूप्स परिवार जहाँ भी होता था, चाहे पेरिस में हो या टैनसनविले में, मोरेल का स्वागत गिलबर्ट ने इस तरह कैसे करवा दिया जैसे वह घर का बेटा हो।

फ्रांस्वा, जो जुपियन के लिए एम. डी चार्लस और मोरेल के लिए रॉबर्ट सेंट-लूप द्वारा किए गए सभी कार्यों को जानती थी, इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंची कि यह एक ऐसा लक्षण था जो गुएरमांटे परिवार की कुछ पीढ़ियों में फिर से प्रकट हुआ था, बल्कि लेग्रैंडिन द्वारा थियोडोर के प्रति अत्यधिक प्रेम को देखते हुए, अपनी संकीर्ण सोच और रूढ़िवादी मानसिकता के कारण, यह मानने लगी कि यह एक ऐसा रिवाज था जिसे सार्वभौमिकता ने सम्मानजनक बना दिया था। वह किसी भी युवक के बारे में, चाहे वह मोरेल हो या थियोडोर, कहती: "वह उस सज्जन को पसंद करता है जो उसमें रुचि रखता है और जिसने उसकी इतनी मदद की है।" और चूंकि ऐसे मामलों में संरक्षक ही प्रेम करते हैं, कष्ट सहते हैं और क्षमा करते हैं, फ्रांस्वा ने संरक्षकों और उन युवकों के बीच कोई संकोच नहीं किया जिन्हें उन्होंने भ्रष्ट किया था, संरक्षकों को सुंदर भूमिका देते हुए, यह पता लगाने के लिए कि उनमें "बहुत बड़ा हृदय" था। उसने थियोडोर को दोषी ठहराने में ज़रा भी संकोच नहीं किया, जिसने लेग्रैंडिन पर कई चालें चली थीं, फिर भी उनके रिश्ते की प्रकृति के बारे में उसे शायद ही कोई

संदेह था, क्योंकि उसने आगे कहा, "वह युवक समझता है कि उसे अपना हिस्सा निभाना है, जैसा कि वह कहता है: 'मुझे अपने साथ ले चलो, मैं तुमसे प्यार करूंगा और तुम्हें दुलारूंगा,' और, हे भगवान, उस सज्जन का दिल इतना बड़ा है कि थियोडोर को यकीनन वह अपनी योग्यता से कहीं अधिक दयालु लगेगा, क्योंकि वह गुस्सैल स्वभाव का है, जबकि वह सज्जन इतना अच्छा है कि मैं अक्सर जेनेट (थियोडोर की मंगेतर) से कहती हूँ, 'मेरी प्यारी, अगर कभी तुम मुसीबत में पड़ो तो उस सज्जन से मिलो, वह तुम्हें अपना बिस्तर देने के लिए ज़मीन पर लेट जाएगा, वह थियोडोर से इतना प्यार करता है कि उसे कभी नहीं छोड़ेगा और न ही उसे कभी त्यागेगा'।" इन्हीं बातचीत के दौरान, जब मैंने उस परिवार का नाम पूछा जिसके साथ थियोडोर दक्षिण में रह रहा था, तो मुझे अचानक समझ आया कि वह वही अनजान व्यक्ति था जिसने मुझे फिगारो में प्रकाशित मेरा लेख एक पत्र में भेजने के लिए कहा था, जिसकी लिखावट आम लोगों जैसी थी लेकिन आकर्षक ढंग से व्यक्त की गई थी।

इसी प्रकार, फ्रांस्वा ने मोरेल की तुलना में सेंट-लूप को अधिक महत्व दिया और बाद वाले के नीच व्यवहार के बावजूद यह राय व्यक्त की कि मार्क्विस का हृदय इतना अच्छा था कि वह उसे कभी नहीं छोड़ेगा जब तक कि उसे खुद कोई बड़ी विपत्ति न आ जाए।

सेंट-लूप ने ज़ोर देकर कहा कि मैं टैनसनविले में ही रहूँ और एक बार उसने यह बात कह दी, हालाँकि स्पष्ट रूप से वह मुझे खुश करने की कोशिश नहीं कर रहा था, कि मेरी यात्रा उसकी पत्नी के लिए इतनी बड़ी खुशी थी कि उसने उसे आश्वासन दिया था, हालाँकि वह पूरे दिन दुखी थी, कि जिस शाम मैं अचानक वहाँ पहुँचा, वह खुशी से झूम उठी थी, कि वास्तव में, मैंने चमत्कारिक रूप से उसे निराशा से बचाया था, "शायद इससे भी बदतर किसी चीज़ से।" उसने मुझसे विनती की कि मैं उसे

समझाने की कोशिश करूँ कि वह उससे प्यार करता है, और मुझे आश्वासन दिया कि जिस दूसरी महिला से वह प्यार करता है, वह उसके लिए गिल्बर्ट से कम महत्वपूर्ण है और वह बहुत जल्द उससे संबंध तोड़ने का इरादा रखता है। "और फिर भी," उसने बिल्ली जैसी मासूमियत और इतनी गहरी इच्छा से कहा कि मुझे लगा जैसे किसी भी क्षण चार्ली का नाम उसके मुँह से लॉटरी के नंबर की तरह निकल आएगा, "मुझे गर्व करने लायक कुछ तो था। यह औरत, जिसने मेरे प्रति अपनी निष्ठा साबित की है और जिसे मुझे गिल्बर्ट के लिए कुर्बान करना पड़ा, उसने कभी किसी पुरुष से स्नेह स्वीकार नहीं किया, वह खुद को प्रेम के काबिल नहीं समझती थी; मैं पहला हूँ जिससे उसने प्रेम किया है। मैं जानता था कि उसने हर किसी को खुद को ठुकरा दिया था, इतना कि जब मुझे उसका एक प्यारा सा पत्र मिला, जिसमें उसने लिखा था कि मेरे बिना उसकी कोई खुशी नहीं हो सकती, तो मैं खुद को रोक नहीं पाया। क्या मेरे लिए उससे मोहित होना स्वाभाविक नहीं होता, क्या मेरे लिए बेचारी गिल्बर्ट को आँसुओं में देखना असहनीय नहीं होता? क्या आपको नहीं लगता कि उसमें राहेल की कुछ झलक है?" वास्तव में, मुझे लगा था कि उन दोनों में कुछ-कुछ समानता है। यह शायद उनके यहूदी मूल के कारण चेहरे की कुछ समानता के कारण था, जो गिलबर्ट में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती थी, फिर भी जब उसके परिवार ने उसकी शादी चाही तो रॉबर्ट उसकी ओर आकर्षित हो गया। यह समानता शायद इसलिए भी थी क्योंकि गिलबर्ट ने राहेल की तस्वीरें देखी थीं और रॉबर्ट को खुश करने के लिए अभिनेत्री की कुछ आदतों की नकल करना चाहती थी, जैसे हमेशा बालों में लाल रिबन लगाना, बांह पर काला रिबन बांधना और बालों को काला रंगना। फिर, यह सोचकर कि उसके दुखों का असर उसके रूप पर पड़ रहा है, उसने कभी-कभी बनावटीपन को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की कोशिश

की। एक दिन, जब रॉबर्ट चौबीस घंटे के लिए टैनसनविले आने वाला था, तो मैं उसे मेज पर आते देखकर हैरान रह गई, वह अपने वर्तमान और पूर्व रूप से इतनी अलग दिख रही थी कि मैं इतनी अचंभित हो गई जैसे किसी अभिनेत्री, थियोडोरा जैसी किसी के सामने खड़ी हो। मुझे लगा कि यह जानने की उत्सुकता में कि उसमें क्या बदलाव आया है, मैं उसे बहुत टकटकी लगाकर देख रही थी। मेरी जिज्ञासा जल्द ही शांत हो गई जब उसने अपनी नाक पोंछी, क्योंकि तमाम सावधानियों के बावजूद, रूमाल पर रंगों का ऐसा मिश्रण था मानो रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला हो और मैंने देखा कि वह पूरी तरह से रंगी हुई थी। इसी वजह से उसके होंठों से खून बह रहा था, जिसे उसने मुस्कुराने की कोशिश में बदल दिया, यह सोचकर कि यह उस पर जँच रहा है। वहीं, यह जानते हुए कि उसके पति के आने का समय नजदीक आ रहा है, और यह जाने बिना कि वह एम. डी गुएरमांटेस द्वारा चतुराई से गढ़े गए टेलीग्राम में से एक भेजेगा या नहीं: "आना असंभव है, झूठ पीछे आ रहा है," उसके गाल पीले पड़ गए और उसकी आँखों के नीचे काले घेरे पड़ गए।

“अरे, देखो,” रॉबर्ट ने मुझसे जानबूझकर कोमल लहजे में कहा, जो उसके पहले के सहज स्नेह से बिल्कुल अलग था। उसकी आवाज़ में शराब का नशा था और बोलने का लहजा किसी अभिनेता जैसा था। “गिल्बर्ट को खुश करने के लिए! मैं इसके लिए क्या नहीं करता? तुम कभी नहीं जान पाओगे कि उसने मेरे लिए कितना कुछ किया है।” सबसे अप्रिय बात उसका घमंड था। सेंट-लूप, गिल्बर्ट के उससे प्यार करने की बात से खुश था, लेकिन मोरेल से प्यार करने की हिम्मत न करते हुए, उसने गिल्बर्ट को उस दिखावटी प्रेम के बारे में बताया जो वायलिन वादक उससे करती थी। वह अच्छी तरह जानता था कि ये बातें बढ़ा-चढ़ाकर कही गई थीं, या शायद पूरी तरह से मनगढ़ंत थीं, क्योंकि मोरेल उससे हर

दिन ज़्यादा पैसे मांगती थी। फिर गिल्बर्ट को मेरे भरोसे छोड़कर वह फिर से पेरिस के लिए रवाना हो गया। थोड़ा पहले बता दूं (क्योंकि मैं अभी भी टैनसनविले में हूं), मुझे समाज में उससे एक बार फिर मिलने का मौका मिला, हालांकि दूर से ही सही, लेकिन उसके शब्द इतने जीवंत और आकर्षक थे कि मुझे अतीत की याद आ गई। मैं यह देखकर दंग रह गया कि वह कितना बदल गया था। वह अपनी माँ से अधिकाधिक मिलता-जुलता था, लेकिन उससे विरासत में मिला गर्व और सुसंस्कृत व्यवहार, जो उसकी माँ में पूर्ण रूप से मौजूद था, उसकी उच्च स्तरीय शिक्षा के कारण अतिरंजित और बनावटी हो गया था; गुएरमांटे जनजाति की भेदक दृष्टि, उसकी एक विचित्र पशुवत आदत के कारण, उसे हर उस स्थान का निरीक्षण करने का अर्ध-अचेतन आभास देती थी जहाँ से वह गुजरता था। यहाँ तक कि स्थिर अवस्था में भी, उसका वह रंग जो अन्य गुएरमांटे जनजाति के लोगों से भी अधिक विशिष्ट था, एक ऐसा रंग जिसमें मानो पूरे सुनहरे दिन की धूप समाई हो, उसे इतना विचित्र पंख प्रदान करता था, उसे इतना दुर्लभ, इतना अनूठा प्राणी बनाता था कि हर कोई उसे पक्षीविज्ञान संग्रह के लिए अपने पास रखना चाहता था। लेकिन जब, इसके अलावा, सुनहरी धूप के इस पक्षी ने अपनी गति पकड़ी, उदाहरण के लिए, जब मैंने रॉबर्ट डी सेंट-लूप को एक पार्टी में देखा, तो उनके सिर को इतने आनंद और गर्व से पीछे की ओर झुकाने का उनका तरीका था, उनके हल्के बिखरे बालों के सुनहरे पंखों के नीचे, उनकी गर्दन की गति अन्य पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक लचीली, गर्वित और आकर्षक थी, कि जिज्ञासा और उनके प्रति अर्ध-सामाजिक, अर्ध-प्राणीगत प्रशंसा के बीच, कोई स्वयं से पूछता था कि क्या हमने उन्हें फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में पाया है या जार्डिन डेस प्लांट्स में और क्या हम किसी भव्य जागीरदार को ड्राइंग रूम पार करते हुए देख रहे हैं या किसी अद्भुत पक्षी को अपने

पिंजरे में घूमते हुए। थोड़ी कल्पना के साथ, उनके पंखों की तरह ही उनकी चहचहाहट भी इस व्याख्या को पुष्ट करती थी। वे उस शैली में बोलते थे जिसे वे ग्रैंड-सिएकल शैली मानते थे और इस प्रकार गुएरमांटेस के तौर-तरीकों की नकल करते थे, लेकिन एक अवर्णनीय छोटी सी बात के कारण वे एम. डी चार्लस के तौर-तरीके बन जाते थे। उस पार्टी के दौरान, जब एम. डी मार्सैंट्स कुछ दूरी पर थे, उन्होंने कहा, "मुझे एक पल के लिए जाना होगा, अपनी भतीजी से मिलने के लिए।" उस प्रेम के बारे में, जिसके बारे में वह मुझे बार-बार बताते रहते थे, चार्ली के अलावा भी कई लोग थे, हालाँकि उनके लिए वही सबसे महत्वपूर्ण था। किसी व्यक्ति का प्रेम चाहे जैसा भी हो, उसके संबंधों की संख्या के बारे में हमेशा गलतफहमी रहती है, क्योंकि लोग मित्रता को भी संबंध मान लेते हैं, जो कि एक गलत गणना है, और यह भी माना जाता है कि एक सिद्ध संबंध दूसरे को नकार देता है, जो कि एक अलग तरह की गलती है। दो लोग कह सकते हैं, "मैं X की प्रेमिका को जानता हूँ," और दोनों अलग-अलग नाम ले रहे हों, फिर भी दोनों में से कोई भी गलत नहीं है। जिस स्त्री से हम प्रेम करते हैं, वह शायद ही हमारी सभी जरूरतों को पूरा कर पाती है, इसलिए हम उसे किसी दूसरी स्त्री से धोखा देते हैं जिससे हम प्रेम नहीं करते। सेंट-लूप को एम. डी चार्लस से जिस तरह का प्रेम विरासत में मिला था, उस तरह का प्रेम रखने वाला पति आमतौर पर अपनी पत्नी को खुश रखता है। यह एक सामान्य नियम था, जिसके अपवाद गुएरमांटे परिवार थे, क्योंकि उनमें से जिन लोगों को यह रुचि थी, वे चाहते थे कि लोग यह मानें कि वे महिलाओं के प्रेमी हैं और एक या दूसरी महिला के साथ खुद को प्रचारित करके अपनी पत्नियों को निराश करते थे। कूर्वोइसियर परिवार ने अधिक समझदारी से काम लिया। युवा विस्काउंट डी कूर्वोइसियर स्वयं को पृथ्वी पर और संसार की शुरुआत से एकमात्र

ऐसा व्यक्ति मानते थे जो अपनी ही जाति की स्त्री से आकर्षित हुआ हो। यह सोचकर कि यह आकर्षण उन्हें शैतान से मिला है, उन्होंने इसका विरोध किया और एक आकर्षक स्त्री से विवाह किया, जिनसे उनके कई बच्चे हुए। फिर उनके एक चचेरे भाई ने उन्हें बताया कि यह प्रथा काफी आम थी, यहाँ तक कि उन्हें ऐसी जगहों पर भी ले गए जहाँ वे अपनी इस इच्छा को पूरा कर सकते थे। इससे एम. डी कूर्वोइसियर का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम और भी बढ़ गया और उन्होंने अपने प्रेम को इतना बढ़ा दिया कि इस जोड़े को पेरिस का सबसे अच्छा पारिवारिक जोड़ा माना जाने लगा। सेंट-लूप के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता था, क्योंकि रॉबर्ट, केवल आनंद प्राप्त करने से संतुष्ट नहीं था, बल्कि उसने रखैलें रखने के चक्कर में अपनी पत्नी को अंतहीन ईर्ष्या का पात्र बना दिया, जबकि उसे उनसे कोई सुख नहीं मिलता था।

यह संभव है कि मोरेल, जो बेहद सांवला था, सेंट-लूप के लिए उतना ही आवश्यक था जितना सूर्य के प्रकाश के लिए छाया। इस प्राचीन परिवार में, एक ऐसे महान जागीरदार की कल्पना की जा सकती है, जो गोरा, बुद्धिमान, हर तरह के सम्मान से संपन्न हो, और अपने भीतर एक गुप्त, किसी से अनभिज्ञ, अश्वेतों के प्रति प्रेम रखता हो। इसके अलावा, रॉबर्ट ने कभी भी अपने इस अनोखे प्रेम प्रसंग का जिक्र बातचीत में नहीं होने दिया। अगर मैं एक शब्द भी कहता, तो वह इतने उदासीन भाव से जवाब देता कि उसका चश्मा गिर जाता, "ओह! मुझे नहीं पता, मुझे इन सब बातों का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है। अगर तुम्हें इनके बारे में जानकारी चाहिए, मेरे प्रिय मित्र, तो मैं तुम्हें किसी और से पूछने की सलाह देता हूँ। मैं एक सैनिक हूँ, बस इतना ही। मैं इन मामलों में उतना ही उदासीन हूँ जितना कि बाल्कन युद्धों में। पहले तुम्हें युद्धों के इतिहास में रुचि थी। उन दिनों मैंने तुमसे कहा था कि हम फिर से वैसी ही लड़ाइयाँ देखेंगे, भले ही

परिस्थितियाँ पूरी तरह से अलग हों, जैसे कि उल्म की लड़ाई में आक्रमण द्वारा घेराबंदी का बड़ा प्रयास। खैर, वे बाल्कन युद्ध चाहे जितने भी खास रहे हों, लुल्ले बर्गास फिर से उल्म की ही लड़ाई है, आक्रमण द्वारा घेराबंदी। इन विषयों पर तुम मुझसे बात कर सकते हो। लेकिन जिस तरह की बात तुम कर रहे हो, उसके बारे में मुझे उतना ही कम पता है जितना कि संस्कृत के बारे में।" दूसरी ओर, उसके जाने के बाद, गिलबर्ट ने स्वेच्छा से उन विषयों का ज़िक्र किया जिन्हें रॉबर्ट ने हमारी बातचीत के दौरान तुच्छ समझा था। निश्चित रूप से अपने पति के संबंध में तो नहीं, क्योंकि वह सब कुछ से अनभिज्ञ थी, या अनभिज्ञ होने का नाटक करती थी। लेकिन जब बात दूसरे लोगों की आती, तो वह उन पर विस्तार से चर्चा करती, चाहे इसलिए कि उसे उनके मामले में रॉबर्ट के लिए एक तरह का अप्रत्यक्ष बहाना नज़र आता था, या फिर इसलिए कि वह अपने चाचा की तरह इन विषयों पर गंभीर चुप्पी और अपनी सारी बातें कहने और निंदा करने की तीव्र इच्छा के बीच बंटा हुआ था, और इसी वजह से रॉबर्ट ने उसे इन विषयों के बारे में बहुत अच्छी तरह से जानकारी दी थी। जिन लोगों का ज़िक्र किया गया, उनमें एम. डी चार्लस को भी नहीं बख्शा गया; निस्संदेह इसका कारण यह था कि रॉबर्ट, मोरेल के बारे में गिल्बर्ट से बात किए बिना, किसी न किसी रूप में उसे वही बातें दोहराता रहता था जो उसे उस वायलिन वादक ने बताई थीं जो उसके पूर्व संरक्षक से नफरत करता था। गिल्बर्ट द्वारा किए गए इन बनावटी संवादों ने मुझे उससे यह पूछने का मौका दिया कि क्या अल्बर्टीन, जिसका नाम मैंने पहली बार उसके मुंह से तब सुना था जब हम दोनों स्कूल के दोस्त थे, की भी ऐसी ही पसंद थी। गिल्बर्ट ने मुझे यह जानकारी देने से इनकार कर दिया। वैसे भी, इस मामले में मेरी रुचि काफी समय से खत्म हो चुकी थी। फिर भी मैं यंत्रवत रूप से इसके बारे में चिंतित होता रहा, ठीक वैसे

ही जैसे कोई बूढ़ा व्यक्ति जिसकी याददाश्त कमजोर हो गई हो, कभी-कभी अपने मृत बेटे के बारे में खबर जानना चाहता हो।

एक दिन मैं फिर से उस मामले की जांच करने गई और गिलबर्टे से दोबारा पूछा कि क्या अल्बर्टीन को औरतें पसंद थीं। "बिल्कुल नहीं," उसने जवाब दिया। "लेकिन आपने पहले कहा था कि उसका व्यवहार बहुत बुरा था।" "मैंने ऐसा कहा था? आपको ज़रूर गलतफहमी हुई होगी। वैसे भी, अगर मैंने ऐसा कहा भी था—लेकिन आपको गलतफहमी हुई है—तो मैं इसके विपरीत लड़कों के साथ छोटे-मोटे प्रेम संबंधों की बात कर रही थी और उस उम्र में, ये संबंध ज़्यादा आगे नहीं बढ़ते।"

क्या गिलबर्ट ने यह बात इसलिए कही ताकि वह यह छुपा सके कि अल्बर्टीन के अनुसार, वह खुद महिलाओं से प्रेम करती थी और उसे शादी का प्रस्ताव दे चुकी थी, या (क्योंकि अक्सर दूसरे लोग हमारे जीवन के बारे में हमारी सोच से कहीं अधिक जानते हैं) क्या गिलबर्ट जानती थी कि मैं अल्बर्टीन से प्रेम करता था और उससे ईर्ष्या करता था, और (क्योंकि अक्सर दूसरे लोग सच्चाई को हमारी सोच से कहीं अधिक जानते हैं, उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं और इस प्रकार अत्यधिक अनुमानों के कारण गलती करते हैं, जबकि हम उम्मीद करते हैं कि वे किसी भी अनुमान के अभाव में गलत हैं) क्या उसने सोचा कि मैं इतना शांत था, और क्या वह दया भाव से मेरी आँखों पर पट्टी बाँध रही थी, जो ईर्ष्यालु लोगों के साथ हमेशा करने को तैयार रहती है? किसी भी मामले में, गिलबर्ट के शब्द, पुराने दिनों के "बुरे व्यवहार" से लेकर आज के नैतिक जीवन और आदतों के प्रमाण पत्र तक, अल्बर्टीन के कथनों के विपरीत दिशा में चले, जिसने लगभग गिलबर्ट के साथ आधे-अधूरे संबंध को स्वीकार कर लिया था। इस मामले में अल्बर्टीन ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया था, और एंड्री ने जो बताया था, उससे भी। उस छोटे से समूह के बारे में, मैंने पहले तो,

उसकी विकृति को जानने से पहले, खुद को यह यकीन दिला दिया था कि मेरे संदेह निराधार थे, जैसा कि अक्सर होता है जब कोई किसी भोली-भाली लड़की को, जो जीवन की वास्तविकताओं से लगभग अनभिज्ञ होती है, ऐसे माहौल में पाता है जिसे उसने गलती से सबसे भ्रष्ट मान लिया होता है। बाद में मैंने अपने विचारों को उलट दिया और अपने शुरुआती संदेह को सही मान लिया। और शायद अल्बर्टीन ने मुझे यह सब इसलिए बताया ताकि वह अपनी असलियत से ज़्यादा अनुभवी दिखे और मुझे पेरिस में अपनी विकृति के रुतबे से आश्चर्यचकित कर सके, जैसे पहले बालबेक में अपने सद्गुण के रुतबे से। तो, सीधे शब्दों में कहें तो, जब मैंने उससे उन महिलाओं के बारे में बात की जो महिलाओं से प्यार करती थीं, तो उसने वैसा ही जवाब दिया, ताकि वह यह न लगे कि वह मेरी बात से अनजान है, जैसे बातचीत में कोई तब समझने का दिखावा करता है जब कोई फोरियर या टोबोल्स्क के बारे में बात करता है, जबकि उसे इन नामों का अर्थ भी नहीं पता होता। शायद वह मैडम की सहेली के साथ रही होगी। विंटेउइल और एंड्री के साथ, एक वायुरोधी विभाजन द्वारा उनसे अलग-थलग, और यद्यपि वे मानते थे कि वह उनमें से एक नहीं है, उसने बाद में ही जानकारी प्राप्त की (जैसे एक साहित्यकार से विवाह करने वाली महिला स्वयं को परिष्कृत करने का प्रयास करती है) मुझे प्रसन्न करने के लिए, मेरे प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम होकर, जब तक कि उसे यह एहसास नहीं हुआ कि प्रश्न ईर्ष्या से प्रेरित थे, तब तक, यदि गिलबर्ट मुझसे झूठ नहीं बोल रही थी, उसने इंजन को उलट दिया। मेरे मन में यह विचार आया कि रॉबर्ट ने उससे उस तरह के इश्कबाज़ी के दौरान सीखा था जिसमें उसकी रुचि थी, कि गिलबर्ट को महिलाओं से कोई घृणा नहीं थी, इसलिए उसने उससे उन सुखों की आशा में विवाह किया जिनकी उसे घर पर तलाश नहीं करनी चाहिए थी क्योंकि वह उन्हें

कहीं और प्राप्त कर रहा था। इनमें से कोई भी परिकल्पना बेतुकी नहीं थी, क्योंकि ओडेट की बेटी या उस छोटे समूह की लड़कियों जैसी महिलाओं के मामले में इतनी विविधता, इतने बदलते हुए स्वादों का ऐसा संचय होता है कि यदि वे एक साथ न भी हों, तो वे आसानी से एक महिला के साथ संबंध से एक पुरुष के प्रति जुनून में बदल जाती हैं, इतना कि उनके वास्तविक और प्रमुख स्वाद को परिभाषित करना मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार अल्बर्टीन ने मुझे प्रसन्न करने की कोशिश की ताकि मैं उससे शादी कर लूँ, लेकिन मेरे अनिश्चित और चिंताजनक स्वभाव के कारण उसने स्वयं ही इस योजना को छोड़ दिया। मैंने अल्बर्टीन के साथ अपने संबंध को इसी सरल रूप में आंका था, उस समय जब मैं इसे केवल बाहरी रूप से देख रहा था।

जो बात विचित्र है और जिसे मैं पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ, वह यह है कि उस समय के आसपास अल्बर्टीन से प्रेम करने वाले सभी लोग, वे सभी जो उससे अपनी इच्छा पूरी करवा सकते थे, मुझसे विनती करते, गिड़गिड़ाते, बल्कि मैं कहूँगा कि गिड़गिड़ाते, मेरी मित्रता न मिलने पर भी, कम से कम उनसे किसी प्रकार का संबंध रखने का अनुरोध करते। अब श्रीमती बोंटेम्प्स को अल्बर्टीन को मेरे पास भेजने के लिए पैसे देने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। जीवन का यह पुनरागमन, जब उसका कोई उपयोग नहीं रह गया था, मुझे बहुत दुखी कर गया, अल्बर्टीन के कारण नहीं, जिसे मैं बिना किसी प्रसन्नता के स्वीकार करता यदि उसे न केवल टूरेन से बल्कि परलोक से भी मेरे पास लाया जाता, बल्कि उस युवती के कारण जिसे मैं प्रेम करता था और जिसे मैं देख नहीं पा रहा था। मैंने मन ही मन कहा कि यदि वह मर गई या यदि मैं उससे प्रेम करना छोड़ दिया, तो वे सभी जो उसे मेरे पास ला सकते थे, मेरे चरणों में गिर पड़ेंगे। इस बीच, मैंने उन पर काम करने का व्यर्थ प्रयास किया, क्योंकि उस अनुभव

से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ जिसने मुझे यह सिखाया होता, यदि इसने कभी किसी को कुछ सिखाया हो, कि प्रेम करना परियों की कहानियों के समान एक बुरी नियति है, जिसके विरुद्ध तब तक कुछ भी कारगर नहीं होता जब तक कि जादू समाप्त न हो जाए।

गिलबर्ट ने आगे कहा, "मैं अभी-अभी उस किताब में एक ऐसे मोड़ पर पहुँची हूँ, जहाँ इन बातों का ज़िक्र है। यह बाल्ज़ाक की एक पुरानी किताब है जिसे मैं अपने चाचाओं की किताबों के बराबर पढ़ने की कोशिश कर रही हूँ, 'ला फ़िल ऑक्स येक्स डी'ओर', लेकिन यह अविश्वसनीय है, एक खूबसूरत दुःस्वप्न। शायद एक औरत को दूसरी औरत इस तरह वश में कर सकती है, लेकिन कोई मर्द कभी नहीं।" "आप गलत हैं, मैं एक ऐसी औरत को जानती थी जिसे एक ऐसे आदमी ने प्यार किया जिसने उसे सचमुच अलग-थलग कर दिया था; वह कभी किसी से नहीं मिल पाती थी और केवल भरोसेमंद नौकरों के साथ ही बाहर जाती थी।" "सच में! यह सुनकर आपको कितना डर लगा होगा, जो इतनी दयालु हैं। अभी हाल ही में रॉबर्ट और मैं कह रहे थे कि आपको शादी कर लेनी चाहिए, आपकी पत्नी आपको ठीक कर देगी और आपको खुश कर देगी।" "नहीं, मेरा स्वभाव ही ऐसा है।" "क्या बकवास है।" "मैं आपको यकीन दिलाती हूँ, मेरा स्वभाव ही ऐसा है। वैसे तो मेरी सगाई भी हुई थी, लेकिन मैं शादी नहीं कर पाई।"

मैं गिलबर्ट से 'ला फिल्ले ऑक्स येक्स डी'ओर' उधार नहीं लेना चाहती थी क्योंकि वह उसे पढ़ रही थी, लेकिन जिस आखिरी शाम मैं उसके साथ रुकी, उसने मुझे एक किताब दी जिसने मुझ पर गहरा और मिश्रित प्रभाव डाला। यह गोनकोर्ट परिवार की अप्रकाशित डायरी का एक खंड था। उस आखिरी शाम, अपने कमरे में जाते समय, मुझे यह सोचकर दुख हुआ कि मैं कभी भी कॉम्ब्रे के चर्च को देखने वापस नहीं गई, जो बैंगनी रंग की

खिड़की से घिरे हरे-भरे वातावरण में मेरा इंतजार कर रहा था। मैंने मन ही मन कहा, "ठीक है, अगर इस बीच मेरी मृत्यु नहीं हुई तो एक और साल लगेगा," मुझे अपनी मृत्यु के अलावा कोई और बाधा नहीं दिख रही थी और मैंने चर्च की मृत्यु की कल्पना भी नहीं की थी, जो मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरी मृत्यु के बाद भी लंबे समय तक रहेगा, जैसे वह मेरे जन्म से पहले लंबे समय तक रहा था। अपनी मोमबत्ती बुझाने से पहले, जब मैंने वह अंश पढ़ा जिसे मैं आगे लिख रहा हूँ, तो लेखन के प्रति मेरी अरुचि—जिसका पूर्व संकेत गुएरमांटेस की सैर के दौरान मिला था, और जिसकी पुष्टि उस यात्रा के दौरान हुई जिसकी यह आखिरी शाम थी—उन विदाई भरी निगाहों में, जब आदतों का सिलसिला थमने लगता है और इंसान खुद का आकलन करने लगता है—मुझे कम अफसोसजनक लगी; ऐसा लगा मानो साहित्य कोई गहरा सत्य प्रकट नहीं करता, और साथ ही यह दुखद भी लगता है कि यह वैसा नहीं है जैसा मैं मानता हूँ। अगर किताबों में वर्णित सुंदर चीज़ें उन चीज़ों से ज़्यादा सुंदर न होतीं जिन्हें मैंने देखा था, तो मुझे वह दुर्बल अवस्था कम अफसोसजनक लगती जिसके कारण मुझे किसी अस्पताल में भर्ती होना पड़ता। लेकिन, एक अजीब विरोधाभास से, अब जब इस किताब ने उनका ज़िक्र किया, तो मुझे उन्हें देखने की तीव्र इच्छा हुई। ये वे पृष्ठ हैं जिन्हें मैंने थकान से आँखें बंद होने तक पढ़ा।

"परसों, यहाँ अचानक कौन आ गया, मुझे अपने साथ रात के खाने पर ले जाने के लिए, वर्दुरिन, जो रिव्यू के पूर्व आलोचक थे, व्हिस्लर पर उस पुस्तक के लेखक, जिसमें सचमुच उस अत्यंत मौलिक अमेरिकी कलाकार के कार्यों और कलात्मक वातावरण को, चित्रों की सभी बारीकियों और सुंदरता के प्रेमी वर्दुरिन ने बड़ी ही कोमलता से चित्रित किया है। और जब मैं उनके पीछे चलने के लिए तैयार हो रहा था, तो वे बीच-बीच में एक नियमित पाठ सुनाने लगे, जैसे फ्रोमेंटाइन ने 'मैडेलीन' से शादी के तुरंत

बाद लेखन त्यागने की बात डरते हुए सुनाई थी। कहा जाता है कि यह त्याग मॉर्फिन लेने की उनकी आदत के कारण था, जिसका परिणाम, वर्दुरिन के अनुसार, यह था कि उनकी पत्नी के सैलून के अधिकांश नियमित ग्राहक, यह जाने बिना भी कि उनके पति ने कभी लिखा था, उनसे चार्ल्स ब्लैंक, सेंट विक्टर, सेंट ब्यूव और बर्टी के बारे में बात करते थे, जिन्हें वे उनसे पूरी तरह हीन मानते थे। 'गोंकोर्ट, तुम अच्छी तरह जानते हो, और गौटियर यह भी जानता था कि मेरा "सैलून" मेरी पत्नी के परिवार में उत्कृष्ट कृतियों के रूप में माने जाने वाले उन दयनीय "मैत्रे डी'ऑट्रेफोइस" से बिल्कुल अलग था। फिर, गोधूलि बेला में, जब ट्रोकाडेरो के टावर डूबते सूरज की आखिरी किरणों से जगमगा रहे थे और पुराने जमाने के हलवाईयों की किशमिश जेली से ढके टावरों जैसे दिख रहे थे, तो क्वाई कोंटी की ओर जाते हुए गाड़ी में बातचीत जारी रही, जहाँ उनका महल है। इसके मालिक का दावा है कि यह वेनिस के राजदूतों का प्राचीन महल है और वहाँ एक धूम्रपान कक्ष है जिसके बारे में वर्दुरिन ऐसे बात करते हैं मानो वह ड्राइंग रूम हो, ठीक उसी तरह जैसे 'हजार और एक रात' की कहानियों में होता था। यह एक प्रसिद्ध महल है, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, एक ऐसा महल जिसमें एक कुआँ है जो वर्जिन मैरी के राज्याभिषेक को दर्शाता है, जिसे वर्दुरिन सबसे बेहतरीन सैंसोविनो बताते हैं और जिसमें उनके मेहमान सिगार की राख फेंकते हैं। और, मा फोई, जब हम पहुँचे, तो चाँदनी का हल्का हरा फैलाव, ठीक उसी तरह जैसे शास्त्रीय चित्रकला वेनिस को आश्रय देती है और जिसके नीचे संस्थान का गुंबद दिखाई देता है, हमें सोचने पर मजबूर कर देता है। गार्डी की तस्वीरों में सैल्यूट को देखकर, मुझे कुछ-कुछ ऐसा भ्रम होता है जैसे मैं ग्रांड कैनाल के किनारे हूँ। यह भ्रम हवेली के निर्माण से और भी पुख्ता हो जाता है, जहाँ पहली मंजिल से घाट दिखाई नहीं देता, और घर के

मालिक की प्रभावी टिप्पणी से भी, जो कहते हैं कि रू डू बैक का नाम—अगर मैंने कभी ऐसा सोचा भी हो तो मैं खुद को कोसूँगा—उस नौका से आया है जिस पर पुराने जमाने के धार्मिक लोग, मिरामियोन्स, नोट्रे डेम में प्रार्थना के लिए जाते थे। मुझे वह पूरा इलाका फिर से पसंद आने लगा जहाँ मैं अपनी जवानी में घूमता था जब मेरी चाची डी कौरमोंट वहाँ रहती थीं, जब मैंने वर्दुरिन की हवेली के लगभग पास ही 'पेटिट डंकर्क' का साइन देखा, उन कुछ दुर्लभ दुकानों में से एक जो गैब्रियल डी सेंट औबिन के चाक और रगड़ में चित्रित होने के अलावा आज भी मौजूद हैं। अठारहवीं सदी का वह जिज्ञासु व्यक्ति अपने खाली समय में वहाँ आता और बैठता था, सुंदर छोटी-छोटी फ्रांसीसी और विदेशी 'मामूली चीजों' और कला द्वारा निर्मित हर नई चीज के बारे में मोलभाव करता था। 'पेटिट डंकरक्यू' में यह है, जिसका बिल-शीर्ष, मेरा मानना है कि केवल हम दोनों, वर्दुरिन और मेरे पास ही है, और जो अलंकृत कागज की उन उत्कृष्ट कृतियों में से एक है, जिन पर लुई XV के शासनकाल में खाते प्रस्तुत किए जाते थे, और इसके शीर्षक-शीर्ष पर जहाजों से भरे उग्र समुद्र का चित्रण है, एक ऐसा समुद्र जिसकी लहरें एडिशन डेस फ़र्मियर्स जेनेरॉक्स डे ल'हुइत्रे एट डेस प्लेडर्स में एक चित्र की तरह दिखती हैं। घर की मालकिन, जो मुझे अपने पास बिठाती है, सौहार्दपूर्वक कहती है कि उसने अपनी मेज को केवल जापानी गुलदाउदी से सजाया है, लेकिन ये गुलदाउदी दुर्लभतम कलाकृतियों वाले फूलदानों में रखी हैं, जिनमें से एक कांसे का है जिस पर लाल तांबे की पंखुड़ियाँ फूल के जीवंत पुष्पन की तरह प्रतीत होती हैं। वहाँ डॉक्टर कॉटार्ड और उनकी पत्नी, पोलिश मूर्तिकार विराडोबेट्स्की, संग्रहकर्ता स्वान, एक रूसी वृहद महिला, और एक सुनहरे नाम वाली राजकुमारी मौजूद हैं। मुझे याद नहीं आ रहा कि वह क्या था, और कॉटार्ड मेरे कान में फुसफुसाती है कि उसी ने

आर्चड्यूक रुडोल्फ पर बिल्कुल करीब से गोली चलाई थी। उसके अनुसार, गैलिसिया और पूरे उत्तरी पोलैंड में मेरी साहित्यिक स्थिति बिल्कुल असाधारण है, क्योंकि उन इलाकों में कोई लड़की अपने मंगेतर के ला फॉस्टिन का प्रशंसक होने की जानकारी के बिना कभी भी अपना हाथ देने को तैयार नहीं होती।

'"तुम पश्चिमी लोग,' अंत में राजकुमारी, जो मुझे, मेरी जानकारी के अनुसार, कहीं अधिक बुद्धिमान प्रतीत होती है, यह नहीं समझ सकते कि एक लेखक किसी महिला के अंतरंग जीवन में किस प्रकार प्रवेश कर सकता है,' यह कहते हुए अपनी बात समाप्त करता है।' दाढ़ी मुंडी और होंठ मुंडवाए हुए, बटलर जैसी मूंछों वाला एक आदमी, सेंट-शार्लेमेन के लिए पहली कक्षा के लड़कों को तैयार करने वाले माध्यमिक प्रोफेसर के तिरस्कारपूर्ण लहजे में बात शुरू करता है, यानी ब्रिचोट, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर। जब वर्दुरिन ने मेरा नाम लिया, तो उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, जिससे यह पता चले कि वे हमारी किताबों से परिचित हैं, जिसका मेरे लिए मतलब है क्रोध, निराशा जो सोरबोन द्वारा हमारे खिलाफ रची गई इस साजिश से पैदा हुई है, जो उस खूबसूरत घर में भी विरोधाभास और शत्रुतापूर्ण चुप्पी ला रही है जहाँ मेरा स्वागत किया जा रहा है। हम मेज पर जाते हैं और फिर प्लेटों का एक असाधारण जुलूस निकलता है जो चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने की कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। कला पारखी, जिसका ध्यान इस स्वादिष्ट भोजन के दौरान धीरे से आकर्षित होता है, कलात्मक चर्चा को और भी सहजता से सुनता है—जबकि उसके सामने युंग त्सचिंग की प्लेटें गुजरती हैं, जिनके नास्टर्टियम किनारे नीले केंद्र में पानी के आइरिस के समृद्ध फूलों के साथ मिलते हैं, किंगफिशर और सारस की भोर की उड़ान के साथ एक वास्तव में सजावटी दृश्य, एक ऐसी भोर जिसमें बस यही है। सुबह की वो लय जिसे मैं रोज़ सुबह

उठते ही आलस से निहारता हूँ, बुलेवार्ड मोंटमोरेंसी पर - ड्रेसडेन की प्लेटें अपनी बनावट की सुंदरता में और भी अधिक सूक्ष्म हैं, चाहे वो ट्यूलिप के कुचले हुए वाइन-लीज़ में बैंगनी रंग में बदलते गुलाबों की सुस्ती हो या कार्नेशन और मायोसोटिस के रोकोको डिज़ाइन। सेवर की प्लेटें अपनी सफेद धारियों की नाजुक झिलमिलाहट से सजी हुई हैं, सोने से जड़ी हुई हैं या अपने कोमल पाटे की मलाईदार सतह पर सुनहरे रिबन की आकर्षक नक्काशी से बंधी हुई हैं, और अंत में चांदी की पूरी सेट जिस पर वे ल्यूसिनियन मर्टल प्रदर्शित हैं जिन्हें डुबैरी पहचान लेंगे। और शायद उतना ही दुर्लभ है इसमें परोसी जाने वाली चीजों की वास्तव में असाधारण गुणवत्ता, नाजुक ढंग से तैयार किया गया भोजन, एक ऐसा स्टू जैसा पेरिसवासी, कोई भी जोर से कह सकता है, अपने सबसे भव्य भोज में कभी नहीं खाते और जो मुझे जीन डी'ह्यूर्स के कुछ कॉर्डन ब्लू की याद दिलाता है। यहाँ तक कि फोई ग्रास भी उस बेस्वाद झाग से इसका कोई संबंध नहीं है जिसे आमतौर पर इसी नाम से परोसा जाता है, और मुझे बहुत कम जगहें पता हैं जहाँ साधारण आलू का सलाद इस तरह बनाया जाता है, जिसमें आलू जापानी हाथीदांत के बटन की तरह सख्त और उन छोटी हाथीदांत की चम्मचों की तरह चमकीली होती हैं जिनसे चीनी लोग अभी पकड़ी गई मछली पर पानी डालते हैं। मेरे सामने रखे वेनिस के प्याले को एम. मोंटालिवेट की नीलामी में खरीदे गए एक अद्भुत लियोविल ने एक समृद्ध लाल रंग से सजाया है, और यह कल्पना और आँखों के लिए एक आनंद है, मैं यह कहने से नहीं डरता, उस कल्पना के लिए जिसे पहले जबड़ा कहा जाता था, एक ब्रिल परोसी गई है जिसका उस तरह की बासी ब्रिल से कोई लेना-देना नहीं है जो सबसे शानदार मेजों पर परोसी जाती है और जिसकी पीठ पर यात्रा में देरी के दौरान उसकी हड्डियों के निशान पड़ गए हैं, एक ब्रिल जिसके साथ वह चिपचिपा गोंद

नहीं है जिसे आमतौर पर बड़े घरों के कई रसोइये सॉस ब्लैंच कहते हैं, बल्कि एक असली सॉस ब्लैंच है जो मक्खन से बनी है और जिसकी कीमत पाँच फ्रैंक प्रति पाउंड है; इस ब्रिल को एक अद्भुत टचिंग होन व्यंजन एक ऐसे समुद्र पर डूबते सूरज की बैंगनी किरणों से सुशोभित है, जिस पर लॉबस्टरों का एक मनोरंजक झुंड तैर रहा है, उनके खुरदुरे टेंटेकल्स को इतनी वास्तविकता से चित्रित किया गया है कि ऐसा लगता है मानो उन्हें जीवित कवच पर ही बनाया गया हो। व्यंजन के हैंडल पर एक छोटा सा चीनी व्यक्ति है जो अपनी लाइन से मछली पकड़ रहा है, जिससे उसके पेट का चांदी जैसा नीला रंग मोती की तरह चमक रहा है। जब मैं वर्दुरिन से इस बात की नाजुक संतुष्टि के बारे में बात कर रहा था कि इस परिष्कृत भोजन का आनंद लेना उनके लिए कितना सुखद होगा, ऐसे संग्रह के बीच जो वर्तमान में किसी राजकुमार के पास नहीं है, तो घर की मालकिन ने मुझे उदास टिप्पणी करते हुए कहा: 'देखो तो सही, तुम उन्हें कितना कम जानते हो,' और वह अपने पति को एक सनकी विचित्र व्यक्ति बताती हैं, जो इन सभी सुंदरताओं के प्रति उदासीन है, 'एक विचित्र व्यक्ति,' वह दोहराती हैं, 'यही सही शब्द है, जिसे नॉर्मन फार्म की ठंडी हवा में पी जाने वाली साइडर की बोतल का अधिक आनंद आता है।' और वह मनमोहक महिला, देश के रंगों के प्रति सच्चे प्रेम से भरी आवाज़ में, उस नॉर्मंडी के बारे में बड़े उत्साह से बात करती है जहाँ वे रहे हैं। वह नॉर्मंडी किसी विशाल अंग्रेज़ी पार्क की तरह होगी, जहाँ लॉरेंस शैली के ऊँचे जंगलों की खुशबू फैली होगी, जहाँ गुलाबी हॉर्टेंसिया की चमकदार क्यारियों में मखमली क्रिप्टेमेरिया खिले होंगे, और जहाँ सल्फर रंग के गुलाबों से सजे प्राकृतिक लॉन एक देहाती द्वार पर गिरते होंगे, जिसके दोनों ओर दो आपस में गुंथे हुए नाशपाती के पेड़ होंगे, जिनकी स्वतंत्र रूप से गिरती और फूलती शाखाएँ गौथियर के कांस्य अलंकरण के अत्यधिक

अलंकृत प्रतीक चिन्ह की तरह दिखेंगी। वह नॉर्मंडी, जिसके बारे में छुट्टी पर आए पेरिसवासियों को बिल्कुल भी पता नहीं होगा, क्योंकि यह अपने प्रत्येक बाड़े की सुरक्षा में बसी है, और वर्दुरिन परिवार ने मुझसे स्वीकार किया है कि उन्होंने इसे हटाने का अपराध नहीं किया है। दिन ढलने पर, जब रंगों का दंगा धीरे-धीरे शांत हो गया और केवल समुद्र से प्रकाश आ रहा था, जो लगभग गाढ़े दूध जैसे नीले रंग का हो गया था। 'आह! यह वह समुद्र नहीं है जिसे आप...' 'जानिए—' मेरी मेज़बान ने मेरे इस कथन पर कि फ्लाउबर्ट मेरे भाई और मुझे ट्रौविल ले गए थे, ज़ोरदार विरोध करते हुए कहा, 'यह कुछ भी नहीं है, बिलकुल कुछ भी नहीं। आपको मेरे साथ आना होगा, इसके बिना आप कभी नहीं जान पाएंगे'—वे रोडोडेंड्रोन के गुलाबी-गुलाबी फूलों के असली जंगलों से होकर लौटेंगे, बगीचों की सुगंध से मदहोश होकर, जिससे उनके पति को अस्थमा के भयानक दौरे पड़ते थे। 'हाँ,' उन्होंने ज़ोर देकर कहा, 'यह सच है, अस्थमा के सचमुच के दौरे।' उसके बाद, अगली गर्मियों में, वे वापस लौटे और मध्ययुगीन काल के एक शानदार आवास में कलाकारों की एक पूरी बस्ती बसा ली, एक प्राचीन मठ जिसे उन्होंने मुफ्त में किराए पर लिया था। और हे भगवान, इस महिला की बातें सुनकर, जो इतने प्रतिष्ठित मंडलों में रहने के बाद भी आम महिला की तरह बोलने की आजादी बरकरार रखे हुए थी, एक ऐसी वाणी जो कल्पना के रंगों से चीजों को जीवंत कर देती है, मेरे मुंह में पानी आ गया जब मैंने उस जीवन के बारे में सोचा जो उसने वहाँ बिताने की बात कबूल की थी, हर कोई अपने कमरे में या उस विशाल बैठक कक्ष में काम कर रहा था जिसमें दो अंगीठी थीं। दोपहर के भोजन से पहले सभी लोग एक साथ आते और आपस में बेहतरीन बातचीत करते, जिसमें बीच-बीच में कुछ खेल भी खेले जाते, जो मुझे डिडेरोट की उस उत्कृष्ट कृति, मैडम वोलैंड को लिखे उनके पत्रों की याद दिलाते थे। फिर दोपहर के

भोजन के बाद सभी लोग बाहर जाते, यहाँ तक कि धूप और बारिश के दिनों में भी, जब बारिश की बूँदें चमकती हुई सौ साल पुराने बीच के पेड़ों की एक शानदार कतार की गांठों से छनकर आती थीं, जो द्वार के सामने अठारहवीं सदी के लोगों को प्रिय विकास का दृश्य प्रस्तुत करती थीं, और झाड़ियाँ भी। डालियों पर लटकी कलियों पर बारिश की बूँदें भीगी हुई थीं, ठंडी हवा से मोहित एक बुलफिंच चिड़िया को नहाते हुए देखने के लिए वे ठहरे हुए थे, जो सफेद गुलाब की पंखुड़ी के आकार के छोटे से निमफेम्बर्ग बेसिन में डुबकी लगा रही थी। और जब मैं श्रीमती वर्दुरिन से नीचे के परिदृश्यों और फूलों के बारे में बात कर रही थी, जिन्हें एल्स्टिर ने इतनी नाजुकता से चित्रित किया था: 'लेकिन यह मैं ही थी जिसने उन्हें यह सब बताया,' वह सिर उठाकर गुस्से से बोलीं, 'सब कुछ, आप समझ रहे हैं; आश्चर्य जगाने वाले कोने, उनके सभी विषय; मैंने ही उन्हें उनके सामने रख दिया था, है ना, ऑगस्टे? उन्होंने उन सभी विषयों को चित्रित किया है। वस्तुएँ जिन्हें वह हमेशा से जानते थे, निष्पक्ष रूप से कहें तो, यह मानना पड़ेगा। लेकिन फूल उन्होंने कभी नहीं देखे थे; नहीं, उन्हें मार्शमैलो और हॉलीहॉक के बीच का अंतर नहीं पता था। यह मैं ही थी जिसने उन्हें सिखाया, आप शायद ही विश्वास करेंगे, चमेली को पहचानना।' और यह मानना पड़ेगा कि यह एक अजीब बात है कि फूलों के चित्रकार, जिन्हें आज के कला पारखी लोग महानतम, यहाँ तक कि फैंटिन-लाटूर से भी श्रेष्ठ मानते हैं, शायद मेरे साथ रहने वाली उस महिला के बिना चमेली का चित्र बनाना कभी नहीं सीख पाते। 'जी हाँ, कसम से, चमेली; उनके द्वारा उगाए गए सभी गुलाबों का चित्र उन्होंने मेरे साथ रहते हुए ही बनाया था, अगर मैं उन्हें खुद न लाती। हमारे घर में हम उन्हें बस "एम. टिशे" कहकर बुलाते थे। कॉटार्ड या ब्रिचोट या उनमें से किसी से भी पूछिए कि क्या उनके साथ कभी यहाँ एक महान व्यक्ति जैसा व्यवहार किया गया था। वे

खुद इस पर हँसते। मैंने उन्हें फूल सजाना सिखाया; शुरुआत में उन्हें इसका कोई अंदाजा नहीं था। उन्हें गुलदस्ता बनाना नहीं आता था। उनमें चयन की स्वाभाविक समझ नहीं थी। मुझे उनसे कहना पड़ता था, "नहीं, इसे मत बनाओ; यह बेकार है, इसे बनाओ।" ओह! काश उन्होंने अपने जीवन की व्यवस्था के लिए हमारी बात सुनी होती, जैसे उन्होंने अपने फूलों की व्यवस्था के लिए सुनी थी, और काश उन्होंने वह भयानक शादी न की होती!' और अचानक, अतीत की यादों में डूबी आँखों से, एक बेचैन हावभाव के साथ, उसने अपनी बाहों को रेशमी आस्तीनों से उन्मादी ढंग से फैलाया, और अपने शरीर को एक पीड़ादायक मुद्रा में मोड़ लिया, मानो कोई अद्भुत चित्र हो, जो मेरे विचार से कभी चित्रित नहीं हुआ, जिसमें एक सहेली की कोमलता और स्त्रीत्वपूर्ण शालीनता में ठेस पहुँचने पर उसके सारे दबे हुए विद्रोह, उसकी सारी क्रोधित भावनाएँ पढ़ी जा सकती हैं। इसके बाद वह हमें उस अद्भुत चित्र के बारे में बताती है जो एल्स्टिर ने उसके लिए बनाया था, कोल्लार्ड परिवार का चित्र, वह चित्र जो उसने चित्रकार से झगड़ा होने पर लक्ज़मबर्ग को दिया था, यह स्वीकार करते हुए कि उसने ही उसे पुरुष को शाम की पोशाक में चित्रित करने का विचार दिया था ताकि लिनन का वह सुंदर विस्तार प्राप्त हो सके, और उसने ही महिला की मखमली पोशाक का चयन किया था, एक ऐसी पोशाक जो पर्दों, फूलों, फलों आदि के हल्के रंगों के फड़फड़ाने के बीच सहारा प्रदान करती है। छोटी बच्चियों की जालीदार पोशाकें बैले नर्तकियों की स्कर्ट जैसी थीं। यह वही थीं जिन्होंने उन्हें अपने बाल संवारते हुए उनका चित्र बनाने का विचार दिया था, एक ऐसा विचार जिसके लिए कलाकार को बाद में सम्मानित किया गया, जिसमें संक्षेप में, महिला को इस तरह चित्रित करना था जैसे वह किसी प्रदर्शन में न हो, बल्कि अपने रोजमर्रा के जीवन की अंतरंगता में आश्चर्यचकित हो। 'मैंने उनसे कहा,

"जब कोई महिला अपने बाल संवार रही होती है या अपना चेहरा पोंछ रही होती है या अपने पैर गर्म कर रही होती है, तो वह जानती है कि उसे कोई नहीं देख रहा है, वह कई दिलचस्प हरकतें करती है, बिल्कुल लियोनार्डो जैसी सुंदरता से भरी हरकतें।"' लेकिन वर्दुरिन के एक संकेत पर, जिसमें बताया गया था कि इस तरह की आक्रोश की स्थिति को जगाना उनकी पत्नी जैसी अत्यधिक संवेदनशील महिला के लिए अस्वास्थ्यकर था, स्वान ने मेरा ध्यान घर की मालकिन द्वारा पहने गए काले मोतियों के हार की ओर आकर्षित किया, जिसे उन्होंने श्रीमती डी ला फेयेट के वंशज की नीलामी में खरीदा था, जो इंग्लैंड की हेनरीटा ने उन्हें उपहार में दिया था, और जो आग के कारण काले हो गए थे। उस आग ने उस घर के एक हिस्से को नष्ट कर दिया जिसमें वर्दुरिन परिवार रहता था, उस गली में जिसका नाम मुझे अब याद नहीं है। आग लगने के बाद मोतियों से भरा डिब्बा मिला, लेकिन वे पूरी तरह से काले पड़ चुके थे। 'और मैं श्रीमती डी ला फायेट के कंधों पर उन मोतियों का चित्र जानता हूँ, हाँ, बिल्कुल वही, उनका चित्र,' स्वान ने मेहमानों के कुछ आश्चर्यचकित उद्गारों के सामने जोर देकर कहा। 'उनका असली चित्र, ड्यूक डी गुएरमांटेस के संग्रह में है। एक ऐसा संग्रह जिसकी दुनिया में कोई बराबरी नहीं है,' उन्होंने दावा किया और कहा कि मुझे जाकर उसे देखना चाहिए। यह संग्रह उस प्रसिद्ध ड्यूक को विरासत में मिला था जो अपनी चाची श्रीमती डी ब्यूसेर्जेंट के प्रिय भतीजे थे, वही श्रीमती डी ब्यूसेर्जेंट जो बाद में श्रीमती डी हेफील्ड बनीं, जो मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस और हनोवर की राजकुमारी की बहन थीं। पुराने दिनों में जब वह बेसिन नाम का एक प्यारा लड़का था, तब मैं और मेरा भाई उसे बहुत पसंद करते थे। दरअसल, ड्यूक का पहला नाम यही है। इस पर, डॉक्टर कॉटार्ड, अपनी उस शालीनता के साथ जो एक विशिष्ट व्यक्ति की पहचान है, मोतियों के इतिहास पर लौटते हैं और हमें

बताते हैं कि इस तरह की आपदाएँ लोगों के मन में वैसी ही विकृतियाँ पैदा करती हैं जैसी जैविक पदार्थों में देखी जाती हैं। वे अधिकांश चिकित्सकों की क्षमता से कहीं अधिक दार्शनिक शब्दों में बताते हैं कि कैसे श्रीमती वर्दुरिन का सेवक, उस भीषण आग की घटना में, जिसमें वह बाल-बाल बचा था, एक अलग ही इंसान बन गया था। उसकी लिखावट इतनी बदल गई थी कि जब उसके स्वामी, जो उस समय नॉर्मंडी में थे, ने उससे घटना की सूचना देने वाला पहला पत्र प्राप्त किया, तो उन्हें लगा कि यह किसी शरारती व्यक्ति की रचना है। कॉटार्ड का दावा है कि न केवल उसकी लिखावट बदली थी, बल्कि एक पूरी तरह से संयमी व्यक्ति से वह एक घिनौना शराबी बन गया था, जिसे श्रीमती वर्दुरिन को नौकरी से निकालना पड़ा था। घर की मालकिन के एक विनम्र संकेत पर, यह विचारोत्तेजक व्याख्यान भोजन कक्ष से वेनिस शैली के धूम्रपान कक्ष में जारी रहा, जहाँ कॉटार्ड ने मुझे बताया कि उन्होंने वास्तव में यह सब देखा था। व्यक्तित्व की पुनरावृत्ति का उदाहरण देते हुए, कॉटार्ड अपने एक मरीज़ का ज़िक्र करते हैं, जिसे वे बड़े सौहार्द से मुझसे मिलने के लिए लाते हैं। उस मरीज़ के मामले में, कॉटार्ड को बस उसकी कनपटी छूकर उसे एक दूसरे जीवन में ले जाना होता है, एक ऐसा जीवन जिसमें उसे पहले जीवन की कोई याद नहीं रहती, इतना कि इस जीवन में एक बहुत ही ईमानदार व्यक्ति होने के बावजूद, दूसरे जीवन में उसने कई बार चोरी के आरोप में गिरफ्तार करवाया था, जिसमें वह एक कुख्यात बदमाश से कम नहीं था। इस पर श्रीमती वर्दुरिन ने तीखी टिप्पणी की कि चिकित्सा जगत रंगमंच से कहीं अधिक सत्य विषय प्रस्तुत कर सकता है, जहाँ किसी उलझन का हास्य रोग संबंधी गलतियों पर आधारित होता है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती कॉटार्ड ने बताया कि इसी तरह की धारणा का उपयोग उनके बच्चों की शाम की पार्टियों में सबसे लोकप्रिय

शौकिया लेखक, स्कॉटिश स्टीवेन्सन ने किया था। इस नाम ने स्वान को यह दृढ़ निश्चय करने पर मजबूर कर दिया: 'लेकिन स्टीवेन्सन एक महान लेखक हैं, मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ, श्री डी गोनकोर्ट, एक बहुत महान लेखक, महानतम लेखकों के बराबर।' जिस कमरे में हम सिगरेट पी रहे थे, उसकी छत पर लगे नक्काशीदार पैनलों को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। ये पैनल प्राचीन पलाज़ो बारबेरिनी से लाए गए थे। मैंने अपने सिगरेट की राख से एक फूलदान के धीरे-धीरे काले पड़ते रंग पर खेद व्यक्त किया। स्वान ने बताया था कि कुछ किताबों के पन्नों पर ऐसे ही दाग इस बात का प्रमाण हैं कि वे नेपोलियन प्रथम की थीं। ये किताबें, उनके बोनापार्ट विरोधी विचारों के बावजूद, ड्यूक डी गुएरमेंटेस के पास थीं, क्योंकि सम्राट तंबाकू चबाते थे। कॉटार्ड, जो हर मामले में गहरी जिज्ञासा रखने वाले व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं, कहते हैं कि ये दाग तंबाकू चबाने से नहीं आए हैं: "मेरा विश्वास कीजिए, बिल्कुल नहीं," वे अधिकारपूर्वक कहते हैं, "बल्कि उनकी इस आदत से आए हैं कि वे युद्ध के मैदान में भी अपने जिगर के दर्द को शांत करने के लिए हमेशा अपने पास स्पेनिश मुलेठी की गोलियां रखते थे। उन्हें जिगर की बीमारी थी और उसी से उनकी मृत्यु हुई," डॉक्टर ने निष्कर्ष निकाला।

मैंने वहीं पढ़ना बंद कर दिया क्योंकि मुझे अगले दिन जाना था, और तो और, यह वह समय था जब दूसरे मालिक ने मुझे अपने पास बुलाया, जिसके आदेशों का हम आधे समय तक पालन करते हैं। हम आँखें बंद करके उसका दिया हुआ काम पूरा करते हैं। हर सुबह वह हमें हमारे दूसरे मालिक के हवाले कर देता है, यह जानते हुए कि अन्यथा हम उसकी सेवा में खुद को समर्पित नहीं कर पाएंगे। जब हमारी आत्मा की आँखें खुलेंगी, तो यह जानना दिलचस्प होगा कि हम उस मालिक के अधीन क्या कर रहे थे जो अपने दासों को काम पर लगाने से पहले उनके दिमाग को भ्रमित

कर देता है। सबसे चालाक लोग, अपना काम खत्म होने से पहले, चुपके से झाँकने की कोशिश करते हैं। लेकिन नींद जल्दी ही उन निशानों को मिटाने की कोशिश करती है जिन्हें वे देखना चाहते हैं। और, इन सदियों के बाद भी हम इसके बारे में बहुत कम जानते हैं। इसलिए मैंने गोनकोर्ट की डायरी बंद कर दी। साहित्य का आकर्षण! मैं कॉटार्ड परिवार से दोबारा मिलना चाहती थी, उनसे एल्स्टिर के बारे में कई बातें पूछना चाहती थी, यह देखना चाहती थी कि "पेटिट डंकरक्यू" की दुकान अभी भी है या नहीं, और वर्दुरिन परिवार के उस महल में जाने की अनुमति मांगना चाहती थी जहाँ मैंने भोजन किया था। लेकिन मेरे मन में एक अजीब सी घबराहट थी। मैं यह बात छिपा नहीं सकती थी कि मुझे न तो सुनना आता था और न ही दूसरों के साथ रहते हुए ध्यान से देखना; मेरी नज़र में कोई भी बूढ़ी औरत मोतियों का हार नहीं दिखाती थी और मेरे कान उसके बारे में कही गई कोई भी बात नहीं सुनते थे। फिर भी, मैं इन लोगों को अपने सामान्य जीवन में जानती थी, मैंने अक्सर उनके साथ भोजन किया था; चाहे वे वर्दुरिन परिवार हो, या गुएरमांटे परिवार, या कॉटार्ड परिवार, हर कोई मुझे उतना ही साधारण लगता था जितना कि वह बेसिन मेरी दादी को लगता था, जिन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह श्रीमती डी ब्यूसेर्जेंट का प्यारा भतीजा, आकर्षक नौजवान हीरो है। सभी मुझे फीके लगते थे; मुझे वे अनगिनत अश्लीलताएँ याद थीं जिनसे वे सब बने थे...।

और यह सब रात में एक तारा बन जाए!

मैंने गोनकोर्ट की रचनाओं के इन पन्नों ने साहित्य के प्रति जो आपत्तियाँ मेरे मन में जगाई थीं, उन्हें अस्थायी रूप से एक तरफ रखने का निश्चय किया। संस्मरण लेखक की असाधारण सरलता के अलावा, मैं विभिन्न दृष्टिकोणों से स्वयं को आश्वस्त करने में सक्षम था। सर्वप्रथम, अपने बारे में, अवलोकन और श्रवण की वह अक्षमता, जिसकी याद मुझे उद्धृत

डायरी ने अत्यंत पीड़ादायक रूप से दिलाई थी, पूर्ण नहीं थी। मेरे भीतर एक ऐसा व्यक्ति था जो अवलोकन करना जानता था, परन्तु वह एक क्षणिक व्यक्ति था जो तभी जीवंत होता था जब अनेक वस्तुओं का कोई सामान्य सार, जो उसका पोषण और आनंद है, प्रकट होता था। तब वह व्यक्ति टिप्पणी करता और सुनता, परन्तु एक निश्चित गहराई तक और इस प्रकार से कि अवलोकन से कोई लाभ नहीं होता था। एक ज्यामितिज्ञ की तरह जो वस्तुओं के भौतिक गुणों को अलग करके केवल उनके रेखीय आधार को देखता है, लोगों की कही बातें मेरी समझ से परे थीं, क्योंकि मुझे इस बात में रुचि नहीं थी कि वे क्या कहना चाहते थे, बल्कि उस तरीके में थी जिससे वे कहते थे, जहाँ तक कि उससे उनके चरित्र या उनकी मूर्खताओं का पता चलता था। या यूँ कहें कि यह एक ऐसा लक्ष्य था जो हमेशा से मेरा विशेष उद्देश्य रहा था, क्योंकि मुझे एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति में समान तत्व को पहचानने में विशेष आनंद मिलता था। जब मैंने इसे महसूस किया, तभी मेरा मन—जो तब तक मेरी बातचीत की स्पष्ट सक्रियता के पीछे भी सुस्त था, जिसकी चहल-पहल बाहरी दुनिया से मेरी पूर्ण मानसिक सुस्ती को छुपा रही थी—अचानक खुशी से खोज में जुट गया, लेकिन जिस चीज़ का वह पीछा कर रहा था—उदाहरण के लिए, विभिन्न स्थानों और समयों में वर्दुरिन के सैलून की पहचान—वह आधी गहराई में, वास्तविक दृश्य से परे, कुछ हद तक एकांत क्षेत्र में स्थित थी। लोगों का स्पष्ट हस्तांतरणीय आकर्षण भी मुझसे दूर हो गया, क्योंकि अब मुझमें उस आकर्षण को सीमित करने की क्षमता नहीं रही, जैसे कोई सर्जन किसी महिला के पेट की चमक के नीचे छिपी उस आंतरिक बीमारी को देख लेता है जो उसे खा रही होती है। मेरे लिए रात के खाने पर बाहर जाना तो ठीक था। मैंने मेहमानों को नहीं देखा, क्योंकि जब मैं उन्हें देखने का सोच रहा था, तब मैं उनका एक्स-रे

कर रहा था। इससे यह निष्कर्ष निकला कि रात्रिभोज के दौरान मैंने अतिथियों के बारे में जो भी अवलोकन किए थे, उन सभी को संकलित करने पर, मेरे द्वारा खींची गई रेखाओं की संरचना मनोवैज्ञानिक नियमों की एकरूपता का निर्माण करती है, जिसमें किसी विशेष अतिथि के संवाद से संबंधित रुचि का कोई स्थान नहीं होता। लेकिन क्या मेरे चित्र इसलिए महत्वहीन हो जाते हैं क्योंकि मैंने उन्हें केवल चित्र के रूप में नहीं बनाया? यदि चित्रकला के क्षेत्र में एक चित्र आयतन, प्रकाश और गति से संबंधित सत्यों को दर्शाता है, तो क्या यह अनिवार्य रूप से उसे उसी व्यक्ति के दूसरे बिल्कुल भिन्न चित्र से हीन बना देता है, जिसमें पहले चित्र में छोड़े गए हजारों विवरण एक दूसरे से सूक्ष्म रूप से संबंधित होते हैं, और दूसरे चित्र से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मॉडल सुंदर थी जबकि पहले चित्र की मॉडल बदसूरत मानी जाएगी, जिसका दस्तावेजी और यहां तक कि ऐतिहासिक महत्व हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह कलात्मक सत्य हो। फिर से, दूसरों के साथ होते ही मेरी चंचलता मुझे उन्हें खुश करने के लिए बेचैन कर देती थी और मैं सुनने से सीखने के बजाय अपनी बातों से लोगों का मनोरंजन करना ज़्यादा पसंद करता था, सिवाय इसके कि जब मैं किसी से कला के विषय पर पूछताछ करने जाता या जब तक कोई ईर्ष्यापूर्ण संदेह मुझे परेशान न करता। लेकिन मैं किसी चीज़ को तब तक नहीं देख पाता था जब तक कि पढ़ने से मेरे अंदर उसे देखने की इच्छा जागृत न हो जाती; जब तक कि वह ऐसी चीज़ न हो जिसका मैं पहले से कोई रेखाचित्र बनाकर बाद में वास्तविकता से सामना करना चाहता। भले ही गोनकोर्ट्स के उस पृष्ठ ने मुझे ज्ञान न दिया हो, मैं जानता हूँ कि कितनी बार मैं उन चीज़ों या लोगों पर ध्यान नहीं दे पाया था, जिनकी छवि बाद में, एकांत में किसी कलाकार द्वारा मुझे प्रस्तुत किए जाने पर, मैं मीलों दूर चला जाता और जान जोखिम में डाल देता।

फिर मेरी कल्पना ने काम करना शुरू किया, चित्र बनाना शुरू किया। और जिस चीज़ पर मैंने पिछले साल उबासी ली थी, उसे फिर से देखने पर, मैंने उसे पाने की इच्छा की और पीड़ा से खुद से कहा, "क्या मैं इसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगा? इसके लिए मैं क्या कुछ नहीं दे सकता?" जब कोई लोगों के बारे में लेख पढ़ता है, यहाँ तक कि समाज के साधारण लोगों के बारे में भी, जिन्हें "एक ऐसे समाज के अंतिम प्रतिनिधि जिनके अब कोई जीवित गवाह नहीं हैं" के रूप में वर्णित किया जाता है, तो निस्संदेह कुछ लोग आश्चर्य व्यक्त कर सकते हैं, "यह सोचकर आश्चर्य होता है कि लेखक इतने महत्वहीन व्यक्ति के बारे में इतना कुछ कहता है और उसकी इतनी प्रशंसा करता है", लेकिन अगर मैंने केवल अखबार और समीक्षाएँ पढ़ी होतीं और उस व्यक्ति को कभी स्वयं न देखा होता, तो मुझे ठीक ऐसे ही व्यक्ति को न जानने का अफसोस होता। अखबारों में ऐसे अंश पढ़ते हुए मेरा मन अक्सर यही सोचता था, "कितनी अफ़सोस की बात है! उस समय तो मुझे केवल गिल्बर्ट और अल्बर्टीन को पाने की चिंता थी और मैंने उस सज्जन पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जिसे मैंने केवल एक दिखावटी समाज सेवक, एक कठपुतली समझा था।" गोनकोर्ट जर्नल के जिन पन्नों को मैंने पढ़ा, उनसे मुझे अपने उस रवैये पर पछतावा हुआ। शायद मैं उनसे यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि जीवन हमें पढ़ने के महत्व को कम आंकना सिखाता है और दिखाता है कि लेखक हमारे लिए जिस चीज की प्रशंसा करता है, उसका कोई खास महत्व नहीं होता; लेकिन मैं इसके विपरीत निष्कर्ष भी निकाल सकता हूँ, कि पढ़ना जीवन के मूल्य को बढ़ाता है, एक ऐसा मूल्य जिसे हम तब तक नहीं समझ पाते जब तक कि किताबें हमें उस मूल्य की महानता से अवगत नहीं करा देतीं। सच कहें तो, हम इस बात से खुद को तसल्ली दे सकते हैं कि हमें विंटेउइल या बर्गोट की संगति का ज़्यादा आनंद नहीं मिला, क्योंकि एक

का अटपटा मध्यमवर्गीय व्यवहार और दूसरे की असहनीय कमियाँ उनके विरुद्ध कुछ भी साबित नहीं करतीं, क्योंकि उनकी प्रतिभा उनके कार्यों में प्रकट होती है; और यही बात एल्स्टिर की शुरुआती दिनों की दिखावटी अशिष्टता पर भी लागू होती है। इस प्रकार, गोनकोर्ट्स की डायरी ने मुझे यह जानने में मदद की कि एल्स्टिर कोई और नहीं बल्कि वही "एम. टिशे" थे जिन्होंने एक बार वर्दुरिन्स में स्वान को इतने चिढ़ाने वाले व्याख्यान दिए थे। लेकिन कौन सा प्रतिभाशाली व्यक्ति (जैसा कि एल्स्टिर ने किया, हालाँकि ऐसा कम ही होता है) श्रेष्ठ रुचि प्राप्त करने से पहले अपने ही समूह के कलाकारों के चिड़चिड़े संवाद शैली को नहीं अपनाता? क्या उदाहरण के लिए, बाल्ज़ाक के पत्र उन अश्लील शब्दों से भरे नहीं हैं जिनका उपयोग करने से स्वान मरना पसंद करते? फिर भी, यह संभव है कि स्वान, जो इतने संवेदनशील थे और हर अप्रिय विलक्षणता से पूरी तरह मुक्त थे, कूज़िन बेट्टे और ले क्यूरे डे टूर्स जैसी रचनाएँ लिखने में असमर्थ रहे होंगे। इसलिए, चाहे संस्मरणों में उस समाज को आकर्षक बताना गलत हो जिसने हमें नाखुश किया हो, यह एक महत्वहीन मुद्दा है, क्योंकि भले ही इन संस्मरणों के लेखक गलत हों, इससे उस समाज के महत्व पर कोई संदेह नहीं होता जिसने इतनी प्रतिभा को जन्म दिया और जो विंटेइल, एल्स्टिर और बर्गोट की रचनाओं में भी उतना ही स्पष्ट रूप से मौजूद था।

अनुभव के बिल्कुल विपरीत, जब मैंने टिप्पणी की कि गोनकोर्ट की डायरी की अथाह सामग्री और एकांत शामों के मनोरंजन का स्रोत बनने वाले वे विचित्र किस्से उन्हें उन मेहमानों द्वारा सुनाए गए थे, जिन्हें पढ़कर हमें ईर्ष्या होती कि वे उन्हें जानते, तो यह समझाना बहुत मुश्किल नहीं था कि उन्होंने मेरे मन में कोई रोचक स्मृति क्यों नहीं छोड़ी। गोनकोर्ट की सरलता के बावजूद, जिन्होंने माना कि इन किस्सों की रुचि उन्हें सुनाने वाले

व्यक्ति की विशिष्टता में निहित है, यह संभव है कि साधारण लोगों ने अपने जीवन में विचित्र चीजों का अनुभव किया हो या उनके बारे में सुना हो, जिन्हें उन्होंने बदले में सुनाया हो। गोनकोर्ट सुनना और देखना दोनों जानते थे, और मैं नहीं। इसके अलावा, इन सभी घटनाओं का एक-एक करके मूल्यांकन करना आवश्यक था। श्री डी गुएरमांटेस ने निश्चित रूप से मुझे उस मनमोहक किशोर सौंदर्य के आदर्श की छाप नहीं दी, जिसे मेरी दादी जानना चाहती थीं और श्रीमती के संस्मरणों के अनुसार मेरे सामने अद्वितीय के रूप में प्रस्तुत करती थीं। डी ब्यूसेर्जेंट। यह याद रखना आवश्यक है कि उस समय बेसिन सात वर्ष के थे, लेखिका उनकी चाची थीं और यहाँ तक कि वे पति भी जो कुछ महीनों बाद अपनी पत्नियों को तलाक देने वाले होते हैं, उनकी प्रशंसा में बढ़-चढ़कर बोलते हैं। सेंट-ब्यूव की सबसे मनमोहक कविताओं में से एक, एक फव्वारे के किनारे प्रकट हुए एक नन्हे बच्चे को समर्पित है, जो उपहारों और कृपाओं से परिपूर्ण था, और वह युवा मैडम डी चैम्पलैट्रेक्स थीं, जिनकी आयु दस वर्ष से अधिक नहीं थी। हालाँकि उस प्रतिभाशाली कवयित्री, कॉम्टेस डी नोएल्स, अपनी सास, डचेस डी नोएल्स (जन्म चैम्पलैट्रेक्स) के प्रति अत्यंत श्रद्धा रखती थीं, फिर भी यदि वे उनका चित्र बनातीं, तो संभव है कि वह चित्र सेंट-ब्यूव द्वारा पचास वर्ष पहले बनाए गए चित्र से काफ़ी भिन्न होता।

शायद इससे भी अधिक परेशान करने वाली बात कुछ बीच की स्थिति है, ऐसे व्यक्तित्व जिनके बारे में कही गई बातें एक ऐसी स्मृति से कहीं अधिक अर्थ रखती हैं जो किसी विचित्र किस्से को संजो कर रखती है, लेकिन हमारे पास, विन्ट्यूइल्स और बर्गोट्स के मामले की तरह, उनके काम के आधार पर उनका मूल्यांकन करने का साधन नहीं होता; उन्होंने सृजन नहीं किया है, उन्होंने केवल—हमारे लिए अत्यंत आश्चर्य की बात

है, क्योंकि हमने उन्हें इतना साधारण पाया—प्रेरणा दी है। फिर ऐसा होता है कि सार्वजनिक दीर्घाओं में, पुनर्जागरण और उसके बाद की महान चित्रकलाओं में जो सबसे अधिक भव्यता का आभास देता है, वह एक छोटी सी हास्यास्पद बुर्जुआ महिला का है, जिसे चित्र देखने के बाद, यदि मैं उसे न जानती होती, तो शायद मैं उससे व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए तरसती, यह आशा करते हुए कि चित्रकार की कला ने अपने कैनवास पर मुझे जो अनमोल रहस्य नहीं दिखाए, उनसे मैं कुछ सीख सकूँगी, हालाँकि उसकी राजसी मखमली पोशाक और फीते टिटियन की सबसे शानदार कृतियों के तुलनीय एक उत्कृष्ट रचना प्रस्तुत करते हैं। काश बीते दिनों में मुझे यह समझ आ जाता कि बर्गोट बनने वाला व्यक्ति सबसे बुद्धिमान, सबसे शिक्षित या सबसे अच्छे सामाजिक संबंधों वाला नहीं होता, बल्कि वह होता है जो दर्पण बनना जानता है और इस प्रकार अपने जीवन को, चाहे वह कितना भी साधारण क्यों न हो, प्रतिबिंबित करने में सक्षम होता है (भले ही उसके समकालीन उसे स्वान से कम प्रतिभाशाली और ब्रेओटे से कम विद्वान मानते हों), और यही बात एक कलाकार के आदर्शों के बारे में और भी अधिक तर्कसंगत रूप से कही जा सकती है। हर चीज को चित्रित कर सकने वाले कलाकार में सौंदर्य प्रेम का जागरण उन लोगों द्वारा प्रेरित किया जा सकता है जो उससे कहीं अधिक धनी होते हैं—जिनके घरों में उसे वह सब कुछ मिल सकता है जिसकी उसे अपने स्टूडियो में, पचास फ्रैंक में अपने कैनवस बेचते हुए किसी अज्ञात प्रतिभा के स्टूडियो में, आदत नहीं थी; उदाहरण के लिए, एक ड्राइंग रूम जो पुराने रेशम से सजा हो, कई लैंप, सुंदर फूल और फल, आकर्षक पोशाकें—अपेक्षाकृत साधारण लोग (या जो फैशनपरस्त लोगों को, जो दूसरों के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ हैं, ऐसा प्रतीत होते हैं) जो इसी कारण से किसी गुमनाम कलाकार से जान-पहचान बनाने,

उसकी सराहना करने, उसे आमंत्रित करने और उसकी तस्वीरें खरीदने की अधिक संभावना रखते हैं, उन अभिजात वर्ग के लोगों की तुलना में जो अकादमिक चित्रकारों से खुद को पोप या प्रधानमंत्री की तरह चित्रित करवाते हैं। क्या हमारे समय के सुरुचिपूर्ण आंतरिक सज्जा और सुंदर पोशाकों की कविता को भावी पीढ़ी द्वारा प्रकाशक शार्पेंटियर के रेनॉयर द्वारा बनाए गए ड्राइंग रूम में नहीं खोजा जाएगा, न कि कॉटे या चैपलिन द्वारा बनाए गए प्रिंसेस डी सागन या कॉम्टेस डी ला रोशेफौकॉल्ड के चित्र में? जिन कलाकारों ने हमें सुंदरता के सबसे शानदार दृश्य दिए हैं, उन्होंने इन तत्वों को उन लोगों के घरों से एकत्रित किया है जो शायद ही कभी अपने समय के फैशन के अगुआ रहे हों; क्योंकि बाद वाले चित्रों को शायद ही कभी किसी अज्ञात सौंदर्य संरक्षक द्वारा चित्रित किया जाता है, जिसे वे अपने कैनवास पर पहचान नहीं पाते हैं, क्योंकि यह सौंदर्य अप्रचलित सुंदरता के एक भद्दे तमाशे के हस्तक्षेप से छिपा हुआ होता है, जो जनता की आंखों के सामने उसी तरह तैरता है जैसे किसी बीमार व्यक्ति के व्यक्तिपरक दृश्य वास्तव में उसके सामने होते हैं। लेकिन ये साधारण से दिखने वाले आदर्श, जिन्हें मैं जानता था, प्रेरणा दे सकते थे, कुछ ऐसी व्यवस्थाओं की सलाह दे सकते थे जिन्होंने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था, कि चित्र में उनमें से किसी एक की उपस्थिति एक आदर्श से कहीं अधिक एक ऐसे मित्र की तरह थी जिसे एक चित्रकार अपने कैनवास पर चित्रित करना चाहता है, यह ऐसा था जैसे खुद से पूछना कि क्या हमें इन सभी हस्तियों को न जानने का अफसोस है क्योंकि बाल्ज़ाक ने उन्हें अपनी पुस्तकों में चित्रित किया था या अपनी प्रशंसा के सम्मान में अपनी पुस्तकें उन्हें समर्पित की थीं, जिनके लिए सेंट-ब्यूव या बॉडेलेयर ने अपनी सबसे सुंदर कविताएँ लिखी थीं, या इससे भी अधिक अगर सभी रेकामियर, सभी पोम्पाडोर मुझे महत्वहीन लोग लगते, चाहे मेरे

स्वभावगत दोष के कारण जिसने मुझे बीमार होने और उन लोगों को वापस जाकर न देख पाने का दुख दिया जिन्हें मैंने गलत समझा था, या इसलिए कि उनकी प्रतिष्ठा केवल साहित्य के मायावी जादू के कारण थी जिसने मुझे अपने मूल्यों के मानदंड को बदलने के लिए मजबूर किया और मुझे इस बात से सांत्वना दी कि मेरी बीमारी की प्रगति के कारण मुझे एक दिन से दूसरे दिन समाज से नाता तोड़ना पड़ा, यात्रा और गैलरी जाना छोड़ना पड़ा। और संग्रहालयों में ताकि मुझे किसी मानसिक अस्पताल में भर्ती कराया जा सके। शायद, हालांकि, यह भ्रामक पहलू, यह कृत्रिम चमक, केवल संस्मरणों में ही मौजूद होती है जब वे बहुत हाल के होते हैं, बौद्धिक या फैशनेबल प्रतिष्ठा के बहुत करीब होते हैं, जो जल्दी ही गायब हो जाएगी, (और यदि विद्वत्ता तब इस दफन के खिलाफ प्रतिक्रिया करने का प्रयास करती है, तो क्या वह इन हजारों विस्मृतियों में से एक को भी दूर करने में सफल होगी जो लगातार जमा होती जा रही हैं?)

ये विचार, जिनमें से कुछ मेरे इस अफसोस को कम करते थे, कि मुझमें साहित्य की कोई प्रतिभा नहीं थी, पेरिस से दूर एक सैनिटोरियम में बीमार के रूप में बिताए लंबे वर्षों के दौरान मेरे मन में कोई स्थान नहीं रखते थे और मैंने लेखन की परियोजना को पूरी तरह से त्याग दिया था, जब तक कि 1916 की शुरुआत में सैनिटोरियम में चिकित्सा कर्मचारियों की कमी नहीं हो गई। फिर, जैसा कि आगे देखा जाएगा, मैं एक ऐसे पेरिस में लौटा जो उस पेरिस से बहुत अलग था जहाँ मैं अगस्त 1914 में लौटा था, जब मेरी चिकित्सा जांच हुई थी, जिसके बाद मैं वापस सैनिटोरियम चला गया था।

अध्याय II

एम. डी चार्लस: युद्ध के दौरान, उनके विचार, उनकी खुशियाँ

1916 में पेरिस लौटने के बाद शुरुआती शामों में से एक शाम, युद्ध के बारे में जानने की उत्सुकता में, मैं रात के खाने के बाद श्रीमती वर्दुरिन से मिलने गया, क्योंकि वह, श्रीमती बोंटेम्प्स के साथ, युद्धकालीन पेरिस की उन रानियों में से एक थीं जो डायरेक्टरी की याद दिलाती थीं। जैसे थोड़ी मात्रा में खमीर से अंकुरण स्वतःस्फूर्त प्रतीत होता है, वैसे ही दिनभर युवतियाँ सिर पर बेलनाकार पगड़ी पहने इधर-उधर दौड़ती रहती थीं, मानो वे श्रीमती टैलिएन की समकालीन हों। जनहित की भावना के प्रमाण के रूप में, उन्होंने अपनी छोटी स्कर्ट के ऊपर सीधे मिस्री ट्यूनिक पहने थे, जो गहरे रंग के और बहुत ही "युद्धकालीन" थे, और उन्होंने सैंडल पहने थे, जो तलमा के बूट या हमारे प्रिय योद्धाओं की तरह ऊँची टांगों की याद दिलाते थे। उन्होंने कहा कि वे यह नहीं भूले थे कि उन योद्धाओं की आँखों को प्रसन्न करना उनका कर्तव्य है, इसलिए वे न केवल ऊनी वस्त्रों से, बल्कि ऐसे गहनों से भी खुद को सजाते थे जो अपनी सजावटी शैली से सेनाओं की याद दिलाते थे, भले ही उनकी सामग्री सेनाओं से न आई हो और न ही उनके द्वारा बनाई गई हो। मिस्र के अभियान की याद दिलाने वाले मिस्र के आभूषणों के बजाय, वे सीप के टुकड़ों से बनी अंगूठियाँ या कंगन पहनते थे या "सत्तर-पाँच" के बेल्ट पहनते थे, जो दो अंग्रेजी आधे-पैसे से बने सिगरेट लाइटर होते थे, जिन्हें एक सैनिक ने अपने बंकर में इतनी सुंदर चमक दी थी कि पिसानेलो उस पर महारानी विक्टोरिया की आकृति उकेर सकता था। उन्होंने कहा कि यही कारण था कि वे अपने लोगों के बारे में सोचना कभी नहीं छोड़ते थे, इसलिए जब उनमें से कोई शहीद हो जाता था तो वे शायद ही कभी शोक मनाते थे, बहाना यह होता था कि उसे मरने पर गर्व है, जिससे वे सफेद अंग्रेजी क्रेप की एक टाइट

टोपी (प्रभावशाली और महत्वाकांक्षी लोगों के लिए उत्साहवर्धक) पहन सकते थे, जबकि अंतिम विजय की अजेय निश्चितता ने उन्हें पहले के कश्मीरी वस्त्रों को साटन और रेशमी मलमल से बदलने और यहां तक कि अपने मोतियों को पहनने में भी सक्षम बनाया, "उस चतुराई और विवेक का पालन करते हुए जिसकी फ्रांसीसी महिलाओं को याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है।"

लूव्र और सभी संग्रहालय बंद थे, और जब किसी लेख के शीर्षक में "सनसनीखेज प्रदर्शनी" लिखा होता, तो यह निश्चित हो जाता कि यह चित्रों की प्रदर्शनी नहीं, बल्कि उन पोशाकों की प्रदर्शनी है जो "पेरिस की महिलाओं को लंबे समय से वंचित रखे गए उन नाजुक कलात्मक आनंदों को फिर से जगाने" के लिए बनाई गई थीं। इस प्रकार, लालित्य और आनंद ने अपना वर्चस्व पुनः प्राप्त कर लिया; कला की अनुपस्थिति में, फैशन ने स्वयं को सही ठहराने का प्रयास किया, ठीक उसी प्रकार जैसे 1793 में क्रांतिकारी सैलून में प्रदर्शन करने वाले कलाकारों ने घोषणा की थी कि "यह एक गलती होगी यदि कठोर गणतंत्रवादियों द्वारा इसे अनुचित माना जाए कि हम कला में संलग्न हों जबकि एकजुट यूरोप स्वतंत्रता के क्षेत्र को घेर रहा है।" 1916 में दर्ज़ियों ने भी इसी भावना से काम किया और कलाकार के आत्म-जागरूक अहंकार के साथ कहा कि "नया खोजना, साधारणता से बचना, विजय की तैयारी करना, युद्ध के बाद की पीढ़ियों के लिए सौंदर्य का एक नया सूत्र तैयार करना, उनकी प्रबल महत्वाकांक्षा थी। यही वह भ्रम था जिसका वे पीछा कर रहे थे, जैसा कि उन लोगों को पता चलता था जो उनके सैलून में आते थे, जो फलां-फलां गली में रमणीयता से स्थित थे, जहां परिस्थितियों द्वारा थोपी गई पाबंदियों से क्षणिक उदासी को दूर करके प्रसन्नता और चमक को प्रतिस्थापित करना दिनचर्या का नियम था। यह सच है कि अगर हमारे पास साहस

और सहनशीलता के ऐसे उच्च उदाहरण न होते, तो उस समय के दुख नारी शक्ति पर हावी हो सकते थे। इसलिए, खाइयों में हमारे उन सैनिकों के बारे में सोचते हुए जो घर पर अपने प्रियजनों के लिए अधिक आराम और नज़ाकत का सपना देखते हैं, आइए हम पोशाकों के निर्माण में उस नवीनता को लाने के लिए निरंतर परिश्रम करें जो वर्तमान समय की आवश्यकताओं को पूरा करती हो। यह स्वीकार करना होगा कि फैशन विशेष रूप से इससे जुड़ा हुआ है अंग्रेजों ने, सहयोगी कंपनियों के साथ मिलकर, इस साल वास्तव में आकर्षक पोशाक बनाई है, जिसकी मनमोहक स्वतंत्रता हमारी सभी युवतियों को एक मनोरंजक और विशिष्ट पहचान देती है। 'इस दुखद युद्ध के सबसे सुखद परिणामों में से एक यह होगा,' उस मनमोहक इतिहासकार ने (खोए हुए प्रांतों की पुनः प्राप्ति और राष्ट्रीय भावना के पुनरुद्धार की प्रतीक्षा करते हुए) आगे कहा, 'इतने कम सामान से पोशाक के क्षेत्र में इतने आकर्षक परिणाम प्राप्त करना और अनुचित विलासिता और भद्दी शैली के बिना कुछ भी नहीं से नज़ाकत पैदा करना। आजकल घर पर बनी पोशाकें बड़े दर्ज़ियों द्वारा कई श्रृंखलाओं में बनाई गई पोशाकों की तुलना में अधिक पसंद की जाती हैं, क्योंकि प्रत्येक पोशाक बनाने वाले की बुद्धिमत्ता, रुचि और व्यक्तित्व का प्रमाण है।' जहाँ तक दान की बात है, जब हम आक्रमण से उत्पन्न सभी दुख, कई घायल और अपंग लोगों को याद करते हैं, तो जाहिर है कि यह "और भी अधिक चतुर" होना चाहिए और ऊँची पगड़ी वाली महिलाओं को दोपहर में ब्रिज टेबल पर चाय पीते हुए मोर्चे से समाचारों पर चर्चा करने के लिए मजबूर करना चाहिए, जबकि उनकी कारें दरवाजे पर एक सुंदर वाहन के साथ उनका इंतजार कर रही हों। सीट पर बैठा सिपाही शिकारी से बातचीत कर रहा था। दरअसल, न केवल ऊँची बेलनाकार टोपियाँ नई थीं, बल्कि उनके चेहरे भी नए थे। नई टोपियाँ पहने महिलाएँ ऐसी

युवतियाँ थीं जिनके बारे में शायद ही किसी को पता हो कि वे कहाँ से आई हैं, जो फैशन की दुनिया में छाई हुई थीं, कुछ पिछले छह महीनों में, कुछ पिछले दो वर्षों में, और कुछ पिछले चार वर्षों में। ये अंतर उनके लिए उतने ही महत्वपूर्ण थे, जितने कि मेरे समाज में पहली बार आने पर दो परिवारों, जैसे कि गुएरमांटे और रोशेफौकॉल्ड, के बीच थे, जिनकी तीन-चार शताब्दियों की प्राचीन वंशावली थी। वह महिला जो 1914 से गुएरमांटे परिवार को जानती थी, 1916 में उनसे परिचित हुई दूसरी महिला को नवधनी समझती थी, उसे अपने लोरग्नन से देखते हुए एक विधवा डचेस की तरह सिर हिलाती थी, और एक महत्वपूर्ण इशारे से कहती थी कि समाज में किसी को नहीं पता कि वह महिला विवाहित भी है या नहीं। "यह सब कुछ बहुत ही घृणित है," 1914 की उस महिला ने निष्कर्ष निकाला, जो चाहती थी कि नव-प्रवेशियों का यह चक्र उसी के साथ समाप्त हो जाए। ये नवागंतुक, जिन्हें नौजवान निश्चित रूप से बुजुर्ग मानते थे और कुछ बुजुर्ग, जो केवल उच्च समाज में ही नहीं रहे थे, उन्हें उतना नया नहीं मानते थे, समाज को राजनीतिक चर्चा और संगीत जैसे मनोरंजन प्रदान करने से कहीं अधिक कर रहे थे; यह उनका कर्तव्य था कि वे ही ऐसे मनोरंजन प्रदान करें, क्योंकि कला हो या चिकित्सा, समाज में, चाहे चीजें नई हों या न हों, उन्हें नया दिखाने के लिए नए नामों की आवश्यकता होती है (कुछ मायनों में वे वास्तव में बहुत नए थे)। इस प्रकार, श्रीमती वर्दुरिन युद्ध के दौरान वेनिस गईं और उन लोगों की तरह जो किसी भी कीमत पर दुख और भावुकता से बचना चाहते हैं, जब उन्होंने इसे "épatant" कहा, तो उनकी प्रशंसा वेनिस, सेंट मार्क या महलों की नहीं थी, जिनसे उन्हें आनंद मिला था और जिन्हें उन्होंने तुच्छ बताया, बल्कि आकाश में चमकती रोशनी के प्रभाव की थी, जिसके बारे में उन्होंने आंकड़ों के साथ जानकारी दी। (इस प्रकार युग-दर-युग एक

प्रकार का यथार्थवाद उस कला के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में पुनर्जन्म लेता है जिसकी तब तक प्रशंसा की जाती रही है।)

सैंटे-यूवर्टे सैलून एक पिछड़ा हुआ स्थान था और वहाँ महानतम कलाकारों या सबसे प्रभावशाली मंत्रियों की उपस्थिति किसी को आकर्षित नहीं करती थी। दूसरी ओर, लोग एक सरकार के सचिव या दूसरी सरकार के उप-सचिव के एक शब्द को सुनने के लिए उमड़ पड़ते थे, उन नई महिलाओं के घरों में जो पगड़ी पहनकर पेरिस में धूम मचा रही थीं। पहली डायरेक्ट्री की महिलाओं में एक युवा और सुंदर रानी थी जिसका नाम श्रीमती टैलिएन था; दूसरी डायरेक्ट्री की दो रानी थीं जो बूढ़ी और बदसूरत थीं और जिनका नाम श्रीमती वर्दुरिन और श्रीमती बोंटेम्प्स था। श्रीमती बोंटेम्प्स को किसने फटकारा क्योंकि उनके पति की ड्रेफस मामले में उनकी भूमिका के लिए पेरिस के इको अखबार ने कड़ी आलोचना की थी? चूंकि पूरा चैंबर पहले ही संशोधनवादी बन चुका था, इसलिए सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक सहिष्णुता और सैन्य दक्षता की पार्टी को पुराने संशोधनवादियों और पूर्व समाजवादियों में से ही भर्ती करना आवश्यक था। पूर्वकाल में एम. बोंटेम्प्स से घृणा की जाती थी क्योंकि उस समय देशद्रोहियों को ड्रेफसवादी कहा जाता था, लेकिन यह नाम जल्द ही भुला दिया गया और उसकी जगह तीन वर्षीय कानून के विरोधी का नाम प्रचलित हो गया। दूसरी ओर, एम. बोंटेम्प्स उस कानून के रचनाकारों में से एक थे, इसलिए वे देशभक्त थे। समाज में (और यह सामाजिक घटना एक अधिक व्यापक मनोवैज्ञानिक नियम का ही अनुप्रयोग है) चाहे कोई नई बात निंदनीय हो या न हो, वह तब तक ही चिंता का विषय बनी रहती है जब तक कि उसे आत्मसात न कर लिया जाए और आश्वस्त करने वाले तत्वों द्वारा उसका बचाव न किया जाए। ड्रेफसवाद की तरह ही, सेंट-लूप और ओडेट की बेटी के विवाह के मामले

में भी यही हुआ, जिसका लोगों ने पहले विरोध किया था। अब जब लोग सेंट-लूप के घर पर अपने सभी परिचितों से मिलते थे, तो भले ही गिल्बर्ट के नैतिक मूल्य ओडेट के समान होते, लोग फिर भी वहाँ जाते और गिल्बर्ट के साथ मिलकर एक विधवा-राजकुमारी की तरह अपरिष्कृत नैतिक नवीनताओं की निंदा करते। ड्रेफसवाद अब कई अत्यंत सम्मानजनक और पारंपरिक बातों में समाहित हो चुका था। इसके अर्थ के बारे में पूछे जाने पर, लोग अब इसे स्वीकार करने में उतना ही संकोच करते थे जितना पहले इसकी निंदा करने में। इससे अब किसी को कोई हैरानी नहीं होती थी, बस इतना ही। लोग इसे उतना ही कम याद रखते थे जितना कि किसी परिचित युवती के पिता के चोर होने या न होने को। ज़्यादा से ज़्यादा वे इतना कह सकते थे: "जिस व्यक्ति की आप बात कर रहे हैं, वह मेरा जीजा है या उसी नाम का कोई और, इस पर कभी कोई आरोप नहीं था।" इसी तरह ड्रेफसवाद के भी कई रूप थे और जो व्यक्ति डचेस डी मोंटमोरेंसी के पास जाकर त्रिवर्षीय कानून पारित करवा पाया, वह बुरा आदमी नहीं हो सकता था। खैर, हमें पापियों पर दया करनी चाहिए। ड्रेफस को जो विस्मृति दी गई थी, वह ड्रेफसवादियों पर भी उतनी ही अधिक लागू होती थी। इसके अलावा, राजनीति में कोई और नहीं था, क्योंकि सरकार में रहने के लिए हर किसी को कभी न कभी ड्रेफस समर्थक होना ही पड़ता था, यहाँ तक कि वे लोग भी जो ड्रेफसवाद के उन विचारों के विपरीत थे जो उसके नए और भयावह रूप में (उस समय जब सेंट-लूप को गलत दिशा में जाते हुए माना जा रहा था) यानी देशभक्ति-विरोधी, अधर्म, अराजकता आदि का प्रतिनिधित्व करते थे। इस प्रकार, एम. बोंटेम्प्स का ड्रेफसवाद, सभी राजनेताओं की तरह अदृश्य और चिंतनशील, उनकी त्वचा के नीचे की हड्डियों की तरह कम दिखाई देता था। किसी को याद नहीं था कि वह ड्रेफस समर्थक थे, क्योंकि फैशन के

लोग लापरवाह और भूलने वाले होते हैं और इसलिए भी कि समय बीत चुका था जिसे वे असल समय से कहीं अधिक लंबा मानते थे और यह कहना फैशन बन गया था कि युद्ध-पूर्व काल और युद्ध-काल के बीच एक ऐसी खाई है जो भूवैज्ञानिक काल जितनी गहरी है; और यहाँ तक कि राष्ट्रवादी ब्रिचोट ने भी ड्रेफस मामले का जिक्र करते हुए "उन प्रागैतिहासिक दिनों" की बात की थी। सच तो यह है कि युद्ध के कारण जो बड़ा बदलाव आया, वह कम से कम एक हद तक, उन लोगों के विचारों के मूल्य के विपरीत अनुपात में था जिन पर इसका प्रभाव पड़ा। क्योंकि, सबसे निचले स्तर पर, पूर्ण मूर्ख, विलासी लोग, इस बात की परवाह नहीं करते थे कि युद्ध हो रहा है या नहीं; जबकि सबसे ऊपरी स्तर पर, वे लोग जो अपनी ही दुनिया, अपना ही आंतरिक जीवन रचते हैं, घटनाओं के महत्व से बेपरवाह रहते हैं। उनके विचारों की दिशा को गहराई से बदलने वाली चीज़ वास्तव में कोई ऐसी चीज़ है जिसका कोई स्पष्ट महत्व नहीं है, जो समय के क्रम को उलट देती है और उन्हें अपने जीवन के एक अलग दौर में ले जाती है। मोंटबोइसियर के पार्क में एक पक्षी का गीत, या मिग्नॉनेट की सुगंध से भरी हवा, स्पष्ट रूप से क्रांति और साम्राज्य की महान घटनाओं की तुलना में कम महत्वपूर्ण हैं; फिर भी उन्होंने शैतोब्रिएंड के 'मेमोइर्स डी'आउट्रे टॉम्बे' में कहीं अधिक मूल्यवान पन्ने प्रेरित किए।

एम. बोंटेम्प्स तब तक शांति की बात सुनना ही नहीं चाहते थे जब तक जर्मनी का विभाजन मध्य युग की तरह न हो जाए, होहेनज़ोलर्न वंश का अंत घोषित न हो जाए और विलियम द्वितीय को गोली मारने की सज़ा न मिल जाए। संक्षेप में, वे ब्रिचोट द्वारा वर्णित कट्टर थे; यह उनके लिए नागरिकता का सबसे उत्तम प्रमाण था। निस्संदेह, पहले तीन दिनों तक श्रीमती बोंटेम्प्स यह देखकर कुछ स्तब्ध रह गईं कि वे उन लोगों के बीच

थीं जो श्रीमती वर्दुरिन से उन्हें मिलवाने का अनुरोध कर रहे थे, और श्रीमती वर्दुरिन ने थोड़े तीखे लहजे में उत्तर दिया: "कॉम्टे, मेरे प्रिय," जब श्रीमती बोंटेम्प्स ने उनसे पूछा, "क्या यह वही ड्यूक डी'हॉसनविले नहीं हैं जिनसे आपने अभी-अभी मेरा परिचय कराया?" चाहे यह उनकी पूर्ण अज्ञानता और हौसनविले के नाम को किसी भी प्रकार के प्रभाव से न जोड़ पाने की विफलता के कारण हो, या इसके विपरीत, अत्यधिक ज्ञान और उनके विचारों को पार्टी डेस ड्यूक्स से जोड़ने के कारण हो, जिसके बारे में उन्हें बताया गया था कि एम. डी'हौसनविले अकादमिक सदस्यों में से एक थे। चौथे दिन के बाद वह फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में मजबूती से स्थापित होने लगीं। कभी-कभी उन्हें एक अस्पष्ट समाज के टुकड़ों के बीच देखा जा सकता था, जो उन लोगों के लिए उतना ही कम आश्चर्यजनक था जो उस अंडे को जानते थे जिससे श्रीमती बोंटेम्प्स निकली थीं, जितना कि चूजे के चारों ओर बचे हुए खोल के मलबे को। लेकिन दो सप्ताह बाद, उन्होंने उन आश्चर्यों को दूर कर दिया और पहले महीने के अंत तक, जब उन्होंने कहा, "मैं लेवी के यहाँ जा रही हूँ," तो हर कोई, बिना उनके अधिक स्पष्ट हुए, समझ गया कि वह लेवी-मिरेपोइक्स की बात कर रही थीं और वहाँ मौजूद एक भी डचेस उनसे या श्रीमती से पूछे बिना सोने नहीं जाती। कम से कम टेलीफोन पर, वेरदुरिन शाम के विज्ञप्ति में क्या था, ग्रीस में क्या चल रहा था, किस आक्रमण की तैयारी की जा रही थी, संक्षेप में, वह सब कुछ बता देती थीं जो जनता को अगले दिन या उसके बाद ही पता चलता, और इस तरह उन्हें एक तरह का पूर्वाभ्यास मिल जाता था। श्रीमती वेरदुरिन बातचीत में, जब समाचार देती थीं, तो फ्रांस के बारे में बात करते समय "हम" शब्द का प्रयोग करती थीं: "देखिए, हम ग्रीस के राजा से पेलोपोनीज़ से पीछे हटने की मांग करते हैं, इत्यादि। हम उन्हें भेजेंगे, इत्यादि।" और उनके सभी भाषणों में लगातार जी.एच.क्यू.

का प्रयोग होता था ("मैंने जी.एच.क्यू. को फोन किया है, इत्यादि"), एक संक्षिप्त रूप जिसका प्रयोग उन्हें उतना ही आनंद देता था जितना पहले की महिलाओं को, जो एग्रीजेंट के राजकुमार को न जानते हुए पूछती थीं कि क्या लोग "ग्री-ग्री" की बात कर रहे हैं, यह दिखाने के लिए कि वे वर्तमान स्थिति से अवगत हैं। यह आनंद केवल शांत समय में समाज को ही मिलता था, लेकिन बड़े संकट के समय में जनता को भी उतना ही आनंद मिलता था। उदाहरण के लिए, जब ग्रीस के राजा की चर्चा होती थी, तो हमारे बटलर कागज़ात की बदौलत उन्हें विलियम द्वितीय की तरह "टिनो" कहकर संबोधित कर पाते थे, जबकि अब तक राजाओं से उनका परिचय साधारण था और उन्होंने स्पेन के राजा को "फॉनफॉन्से" कहकर पुकारा था। यह भी देखा जा सकता है कि श्रीमती वर्दुरिन द्वारा "उबाऊ" कहे जाने वाले लोगों की संख्या, उनसे बातचीत शुरू करने वालों के सामाजिक महत्व के अनुपात में घटती गई। मानो कोई जादुई बदलाव हो गया हो, हर उबाऊ व्यक्ति जो उनसे मिलने आता और निमंत्रण मांगता, अचानक मिलनसार और बुद्धिमान बन जाता। संक्षेप में, एक साल के अंत तक "उबाऊ" लोगों की संख्या इतनी कम हो गई कि श्रीमती वर्दुरिन की बातचीत में अक्सर आने वाला और उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला "ऊबने का डर और असहनीयता" लगभग पूरी तरह गायब हो गया। हाल ही में, कोई कह सकता था कि ऊब की यह असहनीयता (जिसके बारे में उन्होंने पहले मुझे आश्वस्त किया था कि उन्होंने अपनी युवावस्था में कभी महसूस नहीं किया था) उन्हें सिरदर्द और तंत्रिका संबंधी अस्थमा जैसे कष्टों से कम पीड़ा देती थी, जो उम्र बढ़ने के साथ कम होते जाते हैं; और ऊबने का डर निस्संदेह श्रीमती वर्दुरिन को पूरी तरह से छोड़ देता, अगर उन्होंने पुराने "वफादारों" में से कुछ नए लोगों को शामिल न किया होता। अंत में, श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ आने वाली डचेसों

से छुटकारा पाने के लिए, वे वहाँ अनजाने में ही, ठीक उसी चीज़ की तलाश में आती थीं, जैसा कि ड्रेफस काल में होता था - एक ऐसा फैशनेबल मनोरंजन जो राजनीतिक जिज्ञासा और समाचार पत्रों में पढ़ी गई घटनाओं पर निजी तौर पर टिप्पणी करने की आवश्यकता को पूरा करता था। श्रीमती वर्दुरिन कहती थीं, "युद्ध के बारे में बात करने के लिए पाँच बजे आइए," जैसा कि वह पहले कहती थीं, "ल'अफेयर के बारे में बात करने के लिए और बीच में आप मोरेल को सुनेंगे।" मोरेल का वहाँ होना नामुमकिन था, क्योंकि उसे किसी भी तरह की छूट नहीं मिली थी। वह सेना में भर्ती नहीं हुआ था, बल्कि भगोड़ा था, पर यह बात किसी को पता नहीं थी। सैलून का एक और सितारा, "डांस-लेस-चॉक्स", अपनी खेल-प्रेमिकाओं के बावजूद, छूट पाने में कामयाब हो गया था। वह मेरे लिए एक ऐसे प्रशंसनीय काम का रचयिता बन गया था जिसके बारे में मैं लगातार सोचता रहता था, और यह बात मुझे तब समझ आई जब संयोगवश मैंने स्मृतियों की दो कड़ियों के बीच एक संबंध स्थापित किया। उसी ने अल्बर्टीन को मेरे घर से विदा किया था। और फिर, अल्बर्टीन की उन स्मृतियों के संदर्भ में, यह संबंध एक ऐसे मार्ग पर आकर रुक गया जो कई साल पहले पूरी तरह से अवरुद्ध हो गया था। क्योंकि मैंने उसके बारे में फिर कभी नहीं सोचा। यह स्मृतियों से रहित एक मार्ग था, एक ऐसी राह जिसका अनुसरण करने की मुझे अब कोई आवश्यकता नहीं थी। दूसरी ओर, "डांस-लेस-चॉक्स" की रचनाएँ हाल की थीं और स्मृतियों की वह कड़ी मेरे मन में लगातार घूमती रहती थी और उसका उपयोग करती रहती थी।

मुझे यह भी कहना होगा कि एंड्री के पति से जान-पहचान न तो आसान थी और न ही सुखद, और उनसे दोस्ती करना अक्सर निराशाओं से भरा होता था। दरअसल, उस समय भी वे बहुत बीमार थे और केवल उन्हीं

कामों से बचते थे जिनसे उन्हें आनंद मिलने की संभावना होती थी। वे केवल उन्हीं लोगों से मिलना पसंद करते थे जिन्हें वे नहीं जानते थे और जिनकी कल्पनाशीलता उन्हें बाकियों से अलग बनाती थी। वे अपने पुराने दोस्तों को अच्छी तरह जानते थे, उनसे क्या उम्मीद की जा सकती है, यह उन्हें अच्छी तरह पता था, और उनके लिए वे अब किसी खतरनाक और शायद जानलेवा थकान के लायक नहीं थे। संक्षेप में, वे एक बहुत बुरे दोस्त थे। शायद नए लोगों से मिलने की चाह में उन्होंने अपने पुराने दिनों में बालबेक में खेल, जुआ और शराब के नशे में दिखाई देने वाली कुछ हद तक बेपरवाही फिर से हासिल कर ली थी। जब भी मैं श्रीमती वर्दुरिन से मिलती, वे मुझे एंड्री से मिलवाना चाहती थीं, मानो यह मानने को तैयार न हों कि मैं उन्हें बहुत पहले से जानती थी। संयोग से, एंड्री अपने पति के साथ बहुत कम आती थीं, लेकिन वे मेरी एक बेहतरीन और सच्ची दोस्त बनी रहीं। अपने पति की कलात्मक शैली के प्रति निष्ठावान रहते हुए, जिन्होंने रूसी बैले का विरोध किया था, उन्होंने मार्क्विस डी पोलिग्नैक के बारे में टिप्पणी की, "उन्होंने अपने घर को बक्स्त से सजाया है। उसमें कोई कैसे सो सकता है? मुझे तो डुबुफे पसंद आएगा।"

इसके अलावा, सौंदर्यबोध की उस अपरिहार्य प्रगति के माध्यम से, जो अंततः स्वयं को ही नुकसान पहुँचाती है, वर्दुरिन परिवार ने घोषणा की कि वे आधुनिक शैली (इसके अलावा, यह म्यूनिख से आई थी) और सफेद दीवारों को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे और उन्हें केवल एक गंभीर परिवेश में पुराने फ्रांसीसी फर्नीचर पसंद थे।

उस दौर में जब श्रीमती वर्दुरिन अपने घर पर जिसे चाहें उसे बुला सकती थीं, यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह ओडेट से इशारों-इशारों में संपर्क साध रही थीं, जिसे वह पूरी तरह से भूल चुकी थीं। ऐसा लगता था कि ओडेट उस छोटे से समूह के शानदार दायरे में कुछ भी खास योगदान

नहीं दे सकती। लेकिन लंबे समय तक अलग रहने से, मनमुटाव कम हो जाता है, और कभी-कभी दोस्ती फिर से जीवित हो उठती है। और यह घटना जो मरने वालों को केवल उन्हीं नामों का उच्चारण करने पर मजबूर करती है जिन्हें वे पहले जानते थे और बुढ़ापे को बचपन की यादों से संतुष्ट कर देती है, उसका एक सामाजिक उदाहरण भी है। ओडेट को वापस लाने के प्रयास में सफल होने के लिए, यह समझना आवश्यक है कि श्रीमती वर्दुरिन ने अति उत्साही लोगों को नहीं, बल्कि उन कम वफादार नियमित ग्राहकों को बुलाया था जिनका हर सैलून में थोड़ा-बहुत संपर्क बना रहता था। उनसे उन्होंने कहा, "मुझे नहीं पता कि वह अब यहाँ क्यों नहीं आती। शायद उसका मुझसे झगड़ा हो गया हो, मेरा उससे कोई झगड़ा नहीं हुआ। मैंने उसका क्या बिगाड़ा है? मेरे घर पर ही वह अपने दोनों पतियों से मिली थी। अगर वह वापस आना चाहती है, तो उसे बता दें कि मेरे दरवाजे उसके लिए खुले हैं।" ये शब्द, जो "संरक्षिका" के स्वाभिमान को भारी कीमत पर ला सकते थे यदि वे उनकी कल्पना से प्रेरित न होते, आगे बढ़ा दिए गए लेकिन व्यर्थ। श्रीमती वर्दुरिन ओडेट की प्रतीक्षा कर रही थीं, लेकिन ओडेट तब तक नहीं आईं जब तक कि कुछ ऐसी घटनाएँ नहीं घटीं जिनका आगे पता चलेगा, और उनके आने के कारण उन कारणों से बिल्कुल अलग थे जो विश्वासघाती दूतों के, चाहे वे कितने भी उत्साही क्यों न हों, द्वारा बताए जा सकते थे; कुछ सफलताएँ आसान नहीं होतीं, कई रुकावटें निर्णायक होती हैं।

हालात इतने मिलते-जुलते थे, हालांकि देखने में अलग लगते थे, कि पुराने मुहावरे "सही सोच" और "गलत सोच" स्वाभाविक रूप से सामने आ जाते थे। और जिस तरह पुराने कम्यूनार्ड संशोधनवाद-विरोधी थे, उसी तरह सबसे ताकतवर ड्रेफसार्ड चाहते थे कि जनरलों के पूरे समर्थन से सभी को गोली मार दी जाए, ठीक वैसे ही जैसे गैलिफ़ेट कांड के समय वे उसके

खिलाफ थे। श्रीमती वर्दुरिन ने ऐसी पार्टियों में कुछ नई महिलाओं को आमंत्रित किया, जो अपने परोपकारी कार्यों के लिए जानी जाती थीं। वे शुरू में आकर्षक पोशाकों और मोतियों के बड़े-बड़े हारों के साथ आती थीं। ओडेट के पास भी एक बहुत ही सुंदर हार था और पहले वह उसे कुछ ज्यादा ही दिखाती थी, लेकिन अब वह युद्ध की पोशाक में थी और उपनगरीय इलाकों की महिलाओं की नकल करते हुए उन्हें घूर रही थी। लेकिन महिलाएं खुद को ढालना जानती हैं। तीन-चार बार पहनने के बाद, इन महिलाओं ने महसूस किया कि जिन पोशाकों को वे फैशनेबल मानती थीं, उन्हें फैशनेबल लोगों ने इसी कारण से प्रतिबंधित कर दिया था, और उन्होंने अपने सुनहरे गाउन उतार दिए और सादगी को अपना लिया।

श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, "यह बहुत दुखद है, मैं कल बोंटेम्प्स को फोन करके आवश्यक कार्रवाई करवाऊंगी। उन्होंने नॉरपोइस के लेख के पूरे अंतिम भाग को फिर से 'सेंसर' कर दिया है, सिर्फ इसलिए कि उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि उन्होंने पर्सिन को 'लिमोगे' कर दिया है।" इन सभी महिलाओं को उस समय प्रचलित मुहावरे का इस्तेमाल करके प्रसिद्धि मिलती थी और वे खुद को फैशन में मानती थीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई मध्यमवर्गीय महिला, जब एम. डी ब्रेउटे या एम. डी चार्लस का नाम लिया जाता था, तो कहती थी: "आप किसके बारे में बात कर रही हैं? बेबेल डी ब्रेउटे, मेमे डी चार्लस?" इसी तरह, डचेस को भी 'लिमोगे' कहने में उतना ही आनंद आता था, क्योंकि रोटूरियर्स उन प्यू पोएट्स की तरह, उनके लिए नाम मायने रखता है, लेकिन वे अपनी मानसिक श्रेणी के अनुसार खुद को व्यक्त करती हैं, जिसमें काफी हद तक मध्यमवर्गीय सोच शामिल है। जिनके पास बुद्धि होती है, वे जन्म को महत्व नहीं देते।

श्रीमती वर्दुरिन के उन सभी फोन कॉल्स के कुछ बुरे परिणाम भी निकले। हम यह बताना भूल गए थे कि वर्दुरिन सैलून, हालांकि मूल रूप से जारी

था, लेकिन अस्थायी रूप से पेरिस के सबसे बड़े होटलों में से एक में स्थानांतरित कर दिया गया था। कोयले और बिजली की कमी के कारण वेनिस के राजदूतों के पूर्व बेहद नम आवास में वर्दुरिन के स्वागत समारोह आयोजित करना कुछ मुश्किल हो गया था। फिर भी, नया सैलून बिल्कुल भी अप्रिय नहीं था। जैसे वेनिस में जल आपूर्ति के लिए चुनी गई जगह महल के स्वरूप को निर्धारित करती है, वैसे ही पेरिस में एक छोटा सा बगीचा देश के किसी पार्क से अधिक मनभावन होता है। होटल में श्रीमती वर्दुरिन का संकरा भोजन कक्ष एक प्रकार का चबूतरा था, जिसकी चमकदार सफेद दीवारें पर्दे जैसी थीं। हर बुधवार, और वास्तव में हर दिन, पेरिस के सबसे विविध और दिलचस्प लोग और सबसे बुद्धिमान महिलाएं वहां इकट्ठा होती थीं, वर्दुरिन परिवार की विलासिता का आनंद लेने के लिए, क्योंकि उनकी संपत्ति ऐसे समय में बढ़ रही थी जब सबसे अमीर लोग अपनी आय में कठिनाई के कारण अपने खर्चों में कटौती कर रहे थे। स्वागत की इस कुछ हद तक संशोधित शैली ने ब्रिचोट को मंत्रमुग्ध कर दिया, और जैसे-जैसे वर्दुरिन परिवार के सामाजिक संबंध विकसित होते गए, उन्हें एक छोटे से क्षेत्र में उनके एकत्रीकरण से अतिरिक्त संतुष्टि मिली, मानो क्रिसमस के मोज़े में रखे उपहार हों। कुछ दिनों में मेहमान इतने अधिक होते थे कि निजी अपार्टमेंट का भोजन कक्ष छोटा पड़ जाता था और भोजन नीचे होटल के विशाल भोजन कक्ष में परोसा जाना पड़ता था, जहाँ "वफादार" मेहमान, ऊपरी मंजिल की आत्मीयता को याद करने का दिखावा करते हुए, वास्तव में (पहले की तरह एक चुनिंदा समूह के रूप में) पड़ोसी मेजों के लिए ईर्ष्या का एक शानदार पात्र बनकर प्रसन्न होते थे। शांति काल में, चुपके से फिगारो या गाउलोइस को भेजा गया एक सामाजिक लेख निस्संदेह मैजेस्टिक के भोजन कक्ष की क्षमता से कहीं अधिक लोगों तक यह खबर पहुंचा देता कि ब्रिचोट ने डचेस डी

ड्यूरास के साथ भोजन किया था। लेकिन युद्ध के बाद से, सामाजिक पत्रकारों ने इस तरह की खबरें देना बंद कर दिया था (वे अंत्येष्टि, राज्याभिषेक और फ्रांसीसी-अमेरिकी भोजों के बारे में जानकारी लेकर घर लौटते थे)। अब एकमात्र प्रचार जो संभव था, वह गुटेनबर्ग की खोज से पहले के अंधकार युग के समान आदिम और सीमित था, यानी श्रीमती वर्दुरिन की मेज पर देखे जाने का। भोजन के बाद, लोग पैटन के सुइट में जाते और फोन करना फिर से शुरू हो जाता। उस समय कई बड़े होटल जासूसों से भरे रहते थे, जो प्रतिदिन एम. बोंटेम्प्स द्वारा फोन पर दी गई खबरों को बड़ी सावधानी से नोट करते थे, हालांकि उनकी जानकारी पूरी तरह से गलत होती थी और घटना से हमेशा खंडित हो जाती थी।

दोपहर की चाय खत्म होने से पहले, जब दिन ढल रहा था, तब दूर शांत, साफ आसमान में छोटे-छोटे भूरे धब्बे दिखाई दे रहे थे, जिन्हें धुंधलके में देखकर कोई मच्छर या पक्षी समझ सकता था। ठीक वैसे ही, जैसे दूर किसी पहाड़ को देखकर, जिसे हम बादल समझ लेते हैं, हम प्रभावित होते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि वह वास्तव में ठोस, विशाल और स्थिर है, वैसे ही मैं भी भावुक हो गया क्योंकि आसमान में वे भूरे धब्बे न तो मच्छर थे और न ही पक्षी, बल्कि वे हवाई जहाज थे जिन्हें पेरिस की निगरानी कर रहे लोग चला रहे थे। मुझे उन हवाई जहाजों की याद नहीं आई जिन्हें मैंने अल्बर्टीन के साथ वर्साय के पास अपनी आखिरी सैर में देखा था, क्योंकि उस सैर की याद मेरे लिए बेजान हो चुकी थी।

रात के खाने के समय रेस्तरां भरे रहते थे और अगर सड़क पर चलते हुए मैं किसी गरीब को छुट्टी पर घर आते हुए देखता, जो छह दिनों के लिए मौत के लगातार खतरे से मुक्त हुआ था, और उसकी नज़रें जगमगाती खिड़कियों पर एक पल के लिए टिक जातीं, तो मुझे वैसा ही दुख होता जैसा बालबेक के होटल में हुआ था जब मछुआरे हमें खाना खाते हुए घूर

रहे थे। लेकिन मुझे उससे भी ज़्यादा दुख होता था क्योंकि मैं जानता था कि एक सैनिक का दुख एक गरीब के दुख से कहीं ज़्यादा होता है, क्योंकि यह सभी दुखों को एक कर देता है और उससे भी ज़्यादा मार्मिक होता है क्योंकि यह ज़्यादा शांत, ज़्यादा महान होता है। और एक दार्शनिक अंदाज़ में, बिना किसी नाराज़गी के, सिर हिलाते हुए, वह व्यक्ति जो वापस मोर्चों पर जाने के लिए तैयार था, उसने मेजें आरक्षित करने के लिए एक-दूसरे को धक्का देते सैनिकों को देखकर कहा: "कोई यह नहीं कह सकता कि यहाँ कोई युद्ध चल रहा है।"

साढ़े नौ बजे, लोगों के खाना खत्म करने से पहले ही, पुलिस नियमों के चलते अचानक बत्तियाँ बुझा दी गईं। नौ बजकर पैंतीस मिनट पर, रेस्तरां में फिर से भीड़ उमड़ पड़ी, जहाँ मैंने सेंट-लूप के साथ उनकी छुट्टी की एक शाम खाना खाया था। वहाँ का माहौल रहस्यमय था, ठीक वैसे ही जैसे मैजिक लैंटर्न स्लाइड या सिनेमाघरों में फिल्में दिखाई जाती हैं। अब सभी लोग उसी ओर दौड़ रहे थे। लेकिन उस समय के बाद, मेरी तरह, जो लोग उस शाम घर पर ही खाना खाकर बाद में दोस्तों से मिलने गए थे, उनके लिए पेरिस के कुछ इलाके मेरे बचपन के कॉम्ब्रे से भी ज़्यादा अँधेरे हो गए थे; वहाँ जाना ऐसा लगता था जैसे गाँव में पड़ोसियों से मिलने जाते हों। आह! अगर अल्बर्टीन ज़िंदा होतीं, तो कितना अच्छा होता, जब मैं बाहर खाना खाने जाता था, तो आर्कवे के नीचे उनसे मिलने का समय तय करना। पहले तो मुझे किसी को नहीं देखना चाहिए था, मुझे यह विश्वास होना चाहिए था कि वह नहीं आएगी, लेकिन अचानक ही मुझे काली दीवार पर उसकी प्यारी ग्रे रंग की पोशाक उभरी हुई दिखाई देती, उसकी मुस्कुराती आँखें मुझे पहचान लेतीं और हम बिना किसी के पहचाने या दखल दिए हाथ में हाथ डालकर साथ-साथ घर चले जाते। अफसोस, मैं अकेला था और ऐसा लग रहा था जैसे मैं गाँव में किसी पड़ोसी से

मिलने गया हूँ, उन मुलाकातों में से एक जो स्वान रात के खाने के बाद हमसे मिलने आता था, टैनसनविले की सुनसान गलियों में सेंट एस्पिरिट की गली की ओर उस घुमावदार रास्ते पर चलते हुए मुझे आज शाम रू क्लोथिल्डे और रू बोनापार्ट के बीच की गली में जितने राहगीर मिले, उससे कहीं कम मिले, जो अब एक टेढ़ा-मेढ़ा, देहाती रास्ता बन चुका है। और जैसे-जैसे ग्रामीण इलाकों के कुछ हिस्से, जो खराब मौसम से प्रभावित होते हैं, अपने परिवेश में बदलाव से अछूते रहते हैं, बर्फीली हवाओं से भरी शामों में, मुझे ऐसा महसूस होता था मानो मैं किसी उग्र समुद्र के किनारे पर हूँ, उस बालबेक में होने की तुलना में जिसका मैं अक्सर सपना देखता था। और कुछ ऐसे तत्व भी थे जो पहले पेरिस में मौजूद नहीं थे और जिनसे ऐसा लगता था मानो कोई खुली हवा में छुट्टियां मनाने के लिए ट्रेन से उतरा हो, जैसे चांदनी रातों में पैरों के नीचे प्रकाश और छाया का विरोधाभास। चांदनी ऐसे प्रभाव पैदा करती है जो शहरों में, यहां तक कि कड़ाके की सर्दी में भी, नहीं दिखते; उसकी किरणें हौसमैन बुलेवार्ड की बर्फ पर, जिसे मजदूरों ने साफ नहीं किया था, किसी अल्पाइन ग्लेशियर की तरह खेल रही थीं। पेड़ों की रूपरेखा सुनहरी-नीली बर्फ पर इतनी स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित हो रही थी जैसे कुछ जापानी चित्रों में या राफेल की कुछ पृष्ठभूमियों में। वे पेड़ों की तलहटी में जमीन पर इस तरह फैल रही थीं जैसे प्रकृति में जब डूबता सूरज खेतों में नियमित अंतराल पर उगते पेड़ों को प्रतिबिंबित करता है। लेकिन अत्यंत सूक्ष्म और सूक्ष्मता से परिष्कृत होकर, वह मैदान जिस पर इन अलौकिक वृक्षों की छाया पड़ रही थी, स्वर्ग के मैदान जैसा प्रतीत हो रहा था; हरा नहीं, बल्कि चंद्रमा की किरणों से जगमगाता हुआ इतना सफेद कि मानो वह नाशपाती के फूलों की पंखुड़ियों से बुना गया हो। और चौकों में सार्वजनिक फव्वारों की देवियाँ, जिनके हाथों में बर्फ की फुहार थी, मानो किसी दोहरी सामग्री

से बनी हों, मानो कलाकार ने कांस्य और क्रिस्टल को मिलाकर उन्हें बनाया हो। ऐसे दुर्लभ दिनों में सभी घर काले होते थे; लेकिन वसंत ऋतु में, कभी-कभार पुलिस के नियमों की अवहेलना करते हुए, कोई विशेष घर, शायद उस घर की केवल एक मंजिल, या उस मंजिल का केवल एक कमरा, अपने शटर बंद नहीं करता था और अदृश्य छायाओं में एक चमकदार प्रक्षेपण की तरह, एक असंगत आभास की तरह लटका हुआ प्रतीत होता था। और जिस स्त्री को हमने उठी हुई निगाहों से देखा, वह सुनहरी रात के धुंधले साये में अकेली खड़ी थी, जिसमें हम खुद खोया हुआ और अकेला प्रतीत हो रहे थे। वह स्त्री पूर्वी दर्शन के रहस्यमय आकर्षण से परिपूर्ण थी। अंततः हम आगे बढ़ गए और अंधेरे में नीरस और स्वच्छ ढंग से चलने की लय को कोई भी जीवित प्राणी बाधित नहीं कर रहा था।

* * *

मैं सोच रहा था कि इस रचना से जुड़े व्यक्तियों से मिले हुए मुझे काफी समय हो गया था। 1914 में, पेरिस में बिताए दो महीनों के दौरान, मैंने एक बार एम. डी चार्लस को देखा था और ब्लोच और सेंट-लूप से मुलाकात की थी, सेंट-लूप से केवल दो बार। निश्चित रूप से दूसरी मुलाकात में ही वे अपने असली रूप में दिखे और उस अप्रिय बेईमानी को दूर कर चुके थे जिसे मैंने टैनसनविले में देखा था और जिसका जिक्र मैंने पहले किया था। इस बार मैंने उनमें पुराने दिनों के सभी प्यारे गुण देखे। पहली बार मैंने उन्हें युद्ध की घोषणा के बाद वाले सप्ताह की शुरुआत में देखा था और जहाँ ब्लोच ने बेहद कट्टर राष्ट्रवादी भावनाएँ दिखाईं, वहीं सेंट-लूप ने अपने सेना में शामिल न होने की बात को व्यंग्यपूर्ण ढंग से कहा, जिससे मुझे काफी हैरानी हुई। सेंट-लूप अभी-अभी बालबेक से लौटे थे। उन्होंने बनावटी उत्साह से कहा, "जो लोग लड़ने नहीं जाते, वे

चाहे जो भी कारण दें, बस मरना नहीं चाहते, यह सिर्फ डर है।" और दूसरों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने जिस तरह से कहा था, उससे कहीं अधिक ज़ोरदार हावभाव से उन्होंने कहा, "और अगर मैं अपनी रेजिमेंट में दोबारा शामिल नहीं होता, तो उसका कारण भी यही है।" इससे पहले, मैंने कई लोगों में यह देखा था कि प्रशंसनीय भावनाओं का दिखावा करना ही अयोग्य भावनाओं को छिपाने का एकमात्र तरीका नहीं है, बल्कि एक अधिक मौलिक तरीका यह है कि उन्हें इस तरह से प्रदर्शित किया जाए कि कम से कम ऐसा न लगे कि उन्हें छिपाया जा रहा है। सेंट-लूप में यह प्रवृत्ति उनकी उस आदत से और भी मजबूत हो गई थी, जिसके लिए जब भी उन्होंने कुछ ऐसा किया होता जिसके लिए उनकी निंदा की जा सकती थी, तो वे उसे इस तरह से घोषित करते थे मानो वह जानबूझकर किया गया हो। यह आदत उन्होंने युद्ध विद्यालय के किसी प्रोफेसर से सीखी होगी, जिनके साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे और जिनके प्रति वे बहुत सम्मान रखते थे। इसलिए मैंने इस अचानक हुए व्यवहार को उन भावनाओं की पुष्टि के रूप में समझा जिन्हें वे प्रदर्शित करना चाहते थे, और जिनके कारण उन्होंने अब शुरू हो रहे युद्ध में सैन्य सेवा से बचने का फैसला किया था। "क्या तुमने सुना है," उसने मुझसे विदा लेते हुए पूछा, "कि मेरी चाची ओरियान तलाक के लिए मुकदमा करने वाली हैं? मुझे खुद इसके बारे में कुछ नहीं पता। लोग पहले भी कई बार ऐसा कह चुके हैं और मैंने भी इतनी बार यह खबर सुनी है कि तलाक मंजूर होने तक मैं इस पर विश्वास नहीं करूंगा। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है; मेरे चाचा सामाजिक रूप से और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के बीच बहुत ही आकर्षक व्यक्ति हैं और एक तरह से वे मेरी चाची से ज्यादा दयालु हैं। मेरी चाची तो संत हैं, लेकिन वह उन्हें यह एहसास दिलाने का पूरा ध्यान रखती हैं। लेकिन मेरे चाचा एक बहुत ही

बुरे पति हैं; उन्होंने अपनी पत्नी के प्रति बेवफाई करना, उनका अपमान करना, उनके साथ बुरा बर्ताव करना और उन्हें पैसों से वंचित रखना कभी बंद नहीं किया। अगर वह उन्हें छोड़ दें तो यह इतना स्वाभाविक होगा कि यह बात सच भी हो सकती है और नहीं भी, सिर्फ इसलिए कि लोग ऐसा कहते रहते हैं। और आखिरकार, उन्होंने इतने लंबे समय तक यह सब सहा है... बेशक, मुझे पता है कि ऐसी बहुत सी झूठी खबरें होती हैं जिन्हें पहले तो नकार दिया जाता है और बाद में वे सच साबित होती हैं।" इससे मुझे उनसे यह पूछने की प्रेरणा मिली कि क्या गिलबर्ट से शादी करने से पहले, मैडम डी गुएरमांटेस से उनकी शादी का कभी कोई सवाल उठा था? यह सुनकर वे चौंक गए और मुझे आश्वस्त किया कि ऐसा नहीं था, कि यह समाज में फैली उन अफवाहों में से एक थी, जो न जाने कैसे पैदा होती हैं और जितनी जल्दी आती हैं उतनी ही जल्दी गायब भी हो जाती हैं। इन अफवाहों के झूठे होने से उन पर विश्वास करने वाले लोग अधिक सतर्क नहीं होते, क्योंकि सगाई, तलाक या राजनीतिक प्रकृति की कोई और अफवाह उठते ही लोग तुरंत उस पर विश्वास कर लेते हैं और उसे आगे बढ़ा देते हैं। अड़तालीस घंटे भी नहीं बीते थे कि कुछ तथ्यों ने साबित कर दिया कि रॉबर्ट के शब्दों की मेरी व्याख्या पूरी तरह गलत थी जब उन्होंने कहा था, "जो लोग मोर्चे पर नहीं हैं वे सब डरे हुए हैं।" सेंट-लूप ने यह बात केवल दिखावा करने और मनोवैज्ञानिक रूप से मौलिक दिखने के लिए कही थी, जबकि उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि उनकी सेवाएं स्वीकार की जाएंगी या नहीं। लेकिन ठीक उसी क्षण वह भर्ती होने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा था, उस शब्द के अपने दिए गए अर्थ में कम मौलिकता दिखा रहा था, बल्कि वह अधिक गहराई से फ्रांसीसी था, सेंट आंद्रे-डेस-चैम्प्स के फ्रांसीसी लोगों की सभी सर्वोत्तम बातों के अनुरूप था - सज्जन, बुर्जुआ, सज्जनों के सम्मानित सेवक, या

सज्जनों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले - एक ही परिवार के दो समान रूप से फ्रांसीसी विभाजन, एक फ्रांस्वा शाखा और एक सौटन शाखा, जिनसे दो तीर एक बार फिर उसी लक्ष्य की ओर चले, जो सीमा थी। ब्लोच एक राष्ट्रवादी (जो वास्तव में उतना राष्ट्रवादी नहीं था) द्वारा कायरता की इस स्वीकारोक्ति को सुनकर प्रसन्न हुआ और जब सेंट-लूप ने उससे पूछा कि क्या वह सेना में भर्ती होने जा रहा है, तो उसने एक उच्च पुरोहित की तरह मुंह बनाया और उत्तर दिया "दूरदर्शिता की कमी"। लेकिन ब्लोच ने युद्ध के बारे में अपनी राय पूरी तरह बदल दी थी जब वह कुछ दिनों बाद निराशा में मुझसे मिलने आया, क्योंकि दूरदर्शिता की कमी के बावजूद, उसे सेवा के लिए चुन लिया गया था। मैं उसे उसके घर वापस ले जा रहा था तभी हमारी मुलाकात सेंट-लूप से हुई। उसने मुझे बताया कि सेंट-लूप की मुलाकात एक पूर्व अधिकारी, एम. डी कैम्ब्रेमर से होनी थी, जो उसे युद्ध मंत्रालय के एक कर्नल से मिलवाने वाले थे। मैंने कहा, "कैम्ब्रेमर आपका पुराना परिचित है, आप कैंकन को उतना ही अच्छी तरह जानते हैं जितना मैं।" मैंने जवाब दिया कि मैं उसे और उसकी पत्नी को जानता तो था, लेकिन मुझे वे लोग कुछ खास पसंद नहीं थे। फिर भी, उनसे पहली बार मिलने के बाद से ही, मैं उनकी पत्नी को शोपेनहावर का गहन ज्ञान रखने वाली एक विलक्षण व्यक्ति मानता था, जिसकी पहुँच एक ऐसे बौद्धिक परिवेश तक थी जो उसके साधारण पति के लिए बंद था। इसलिए, जब सेंट-लूप ने टिप्पणी की: "उसकी पत्नी मूर्ख है, तुम उसे रख सकते हो; लेकिन वह एक उत्कृष्ट व्यक्ति है, प्रतिभाशाली और बेहद मिलनसार है," तो मुझे पहले तो आश्चर्य हुआ। पत्नी की मूर्खता से, निस्संदेह, सेंट-लूप का तात्पर्य उच्च समाज में प्रवेश करने की उसकी दीवानगी से था, जिसकी वह समाज कड़ी निंदा करता था, और पति के गुणों से, उनका तात्पर्य उन गुणों से था जो उनकी भतीजी ने उन्हें परिवार

का सर्वश्रेष्ठ कहकर व्यक्त किए थे। खैर, उन्हें डचेसों की परवाह नहीं थी, लेकिन इस तरह की बुद्धिमत्ता विचारकों की बुद्धिमत्ता से उतनी ही दूर है जितनी कि वह बुद्धिमत्ता जिसका जनता सम्मान करती है क्योंकि इसने एक धनी व्यक्ति को "अपनी दौलत बनाने" में सक्षम बनाया है। लेकिन सेंट-लूप के शब्दों ने मुझे अप्रिय नहीं बनाया क्योंकि उन्होंने मुझे याद दिलाया कि आडंबर मूर्खता से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है और सादगी में एक सूक्ष्म लेकिन सुखद स्वाद होता है। यह सच है कि मुझे एम. डी कैम्ब्रेमर के व्यक्तित्व का अनुभव करने का अवसर नहीं मिला। लेकिन यही कारण है कि एक व्यक्ति विचारों के मतभेदों के अलावा भी अनेक व्यक्तित्वों का संगम होता है। मैंने एम. डी कैम्ब्रेमर का केवल बाहरी स्वरूप ही जाना था और उनका आकर्षण, जिसकी दूसरों ने प्रशंसा की थी, मेरे लिए अज्ञात था। ब्लोच हमें अपने दरवाजे के सामने छोड़कर चला गया, सेंट-लूप के प्रति कड़वाहट से भरा हुआ, और उससे कहा कि स्टाफ मुख्यालय में परेड कर रहे वे "सुंदर लाल वर्दी वाले" कोई जोखिम नहीं उठाते और वह, एक साधारण द्वितीय श्रेणी का सिपाही, "विलियम के लिए अपनी चमड़ी में गोली खाने" की इच्छा नहीं रखता। "लगता है सम्राट विलियम गंभीर रूप से बीमार हैं," सेंट-लूप ने उत्तर दिया। ब्लोच, स्टॉक एक्सचेंज से जुड़े सभी लोगों की तरह, किसी भी सनसनीखेज खबर को अजीब तरह से विश्वास कर लेता था और आगे कहता था, "कहा जा रहा है कि उनकी मृत्यु हो गई है।" स्टॉक एक्सचेंज में, हर बीमार शासक, चाहे वह एडवर्ड सप्तम हो या विलियम द्वितीय, मृत माना जाता है; घेराबंदी के कगार पर खड़ा हर शहर जीत लिया जाता है। ब्लोच ने आगे कहा, "इसे गुप्त रखा गया है, ताकि जर्मन जनमत निराश न हो। लेकिन उनकी मृत्यु कल रात हो गई। मेरे पिता को यह जानकारी 'विश्वसनीय सूत्रों' से मिली है।" 'विश्वसनीय सूत्र' ही वे एकमात्र सूत्र थे जिन पर श्री ब्लोच वरिष्ठ ने

ध्यान दिया, जब कुछ 'प्रभावशाली संपर्कों' के कारण उन्हें यह गुप्त समाचार मिला कि विदेशी ऋण बढ़ने वाला है या डी बीयर्स का मूल्य गिरने वाला है। इसके अलावा, यदि उसी क्षण डी बीयर्स का मूल्य बढ़ जाता या विदेशी ऋण के प्रस्ताव आते, यदि पहले का बाज़ार 'मज़बूत और सक्रिय' होता और दूसरे का 'संकोच और कमज़ोर', तब भी 'विश्वसनीय सूत्र' 'विश्वसनीय सूत्र' ही रहते। ब्लोच ने भी कैसर की मृत्यु की घोषणा रहस्यमय ढंग से महत्वपूर्ण, लेकिन क्रोध से भरी हुई की। रॉबर्ट को 'सम्राट विलियम' कहते सुनकर वे विशेष रूप से क्रोधित हुए। मेरा मानना है कि गिलोटिन की छुरी पर सेंट-लूप और श्री डी गुएरमांटेस उनके बारे में अन्यथा बात नहीं करते। समाज के दो व्यक्ति, जो किसी निर्जन द्वीप पर अकेले जीवित हों, जहाँ उन्हें किसी को भी अपने अच्छे संस्कारों का प्रमाण नहीं देना पड़े, एक-दूसरे को उनके संस्कारों के उन्हीं चिह्नों से पहचान लेंगे, ठीक वैसे ही जैसे दो लैटिन विद्वान वर्जिल के सही उद्धरणों से एक-दूसरे की योग्यताओं को पहचानते हैं। सेंट-लूप यातना के बावजूद भी "सम्राट विलियम" के अलावा कुछ नहीं कहते; फिर भी जीवन-प्रबंधन की भावना मन के लिए एक बंधन ही है। जो इसे अस्वीकार नहीं कर सकता, वह समाज का मात्र एक व्यक्ति बनकर रह जाता है। फिर भी, साधारण लेकिन सुरुचिपूर्ण होना आकर्षक है—खासकर इसमें छिपी उदारता और अनकही वीरता के कारण—ब्लोच की अशिष्टता की तुलना में, जो एक साथ शेखीबाज़ और धोखेबाज़ था, जिसने सेंट-लूप पर चिल्लाते हुए कहा: "क्या तुम बस 'विलियम' नहीं कह सकते? बस, तुम डर के मारे कांप रहे हो, यहाँ भी उसके सामने घुटने टेकने को तैयार हो। छी! ये मोर्चे पर अच्छे सैनिक बनेंगे, ये जर्मनों के जूते चाटेंगे। तुम जैसे लाल चमड़ी वाले सर्कस में परेड करने लायक हो, बस इतना ही।"

"बेचारा ब्लोच यही चाहता है कि मैं तमाशा करने के अलावा कुछ न कर

सकूँ," सेंट-लूप ने मुस्कुराते हुए कहा जब हम अपने दोस्त से विदा ले रहे थे। और मुझे लगा कि रॉबर्ट का इरादा तमाशा करने का बिल्कुल नहीं था, हालाँकि तब मुझे उसका इरादा उतना समझ नहीं आया जितना बाद में आया जब घुड़सवार सेना निष्क्रिय हो गई और उसने पैदल सेना अधिकारी के रूप में, फिर चेसेउर आ पिएड के रूप में और अंत में जब कहानी आगे आई, तब सेवा के लिए आवेदन किया। लेकिन ब्लोच को रॉबर्ट की देशभक्ति का कोई अंदाजा नहीं था, क्योंकि रॉबर्ट ने कभी इसे व्यक्त नहीं किया। हालाँकि ब्लोच ने सेवा के लिए चुने जाने के बाद घोर सैन्य-विरोधी होने का दावा किया, लेकिन जब उसे लगा कि दूरदर्शिता की कमी के कारण उसे छूट मिल जाएगी, तो उसने सबसे कट्टरपंथी विचार व्यक्त किए। सेंट-लूप ऐसी घोषणाएँ करने में असमर्थ होता, क्योंकि एक विशेष नैतिक संवेदनशीलता होती है जो हमें उन गहरी भावनाओं को व्यक्त करने से रोकती है जो हमारे लिए स्वाभाविक हैं। मेरी माँ मेरी दादी के लिए अपना जीवन बलिदान करने में एक पल भी नहीं हिचकिचाती और ऐसा न कर पाने पर उसे बहुत दुख होता। फिर भी, मैं पीछे मुड़कर देखने पर कल्पना भी नहीं कर सकता कि उनके होंठों पर कभी ऐसा वाक्य रहा होगा, "मैं अपनी माँ के लिए अपनी जान दे दूँगी।" रॉबर्ट भी फ्रांस के प्रति अपने प्रेम के बारे में उतने ही मौन थे, और इस लिहाज़ से वे मुझे गुएरमांटेस की तुलना में सेंट-लूप (जैसा कि मैंने उनके पिता के बारे में कल्पना की थी) की तरह अधिक प्रतीत होते थे। उनके मन में एक विशेष नैतिक झुकाव होने के कारण वे ऐसे भाव व्यक्त करने में असमर्थ रहे होंगे। जो लोग अपना काम बुद्धिमानी और ईमानदारी से करते हैं, उन्हें उन लोगों से घृणा होती है जो उनके काम को साहित्य का रूप देना चाहते हैं, उसे महत्वपूर्ण बनाना चाहते हैं। सेंट-लूप और मैं न तो लाइसी में और न ही सोरबोन में एक साथ पढ़े थे, लेकिन हम दोनों ने अलग-अलग उन्हीं

गुरुओं के कुछ व्याख्यान सुने थे, और मुझे उनकी वह मुस्कान याद है जब उन्होंने उन लोगों का ज़िक्र किया था, जिन्होंने अपने व्याख्यानों को असाधारण बताकर, अपनी शिक्षाओं को महत्वाकांक्षी नाम देकर खुद को प्रतिभाशाली साबित करने की कोशिश की थी। हालाँकि हमने इस बारे में ज़्यादा बात नहीं की, फिर भी रॉबर्ट दिल खोलकर हँसे। हमारी स्वाभाविक रुचि कॉटार्ड या ब्रिचोट परिवार के प्रति नहीं थी, हालाँकि ग्रीक या चिकित्सा का गहन ज्ञान रखने वालों के प्रति हमारे मन में एक निश्चित सम्मान था और इस कारण हम उन्हें पाखंडी बनने की आवश्यकता नहीं समझते थे। जिस प्रकार मेरी माँ के सभी कार्य इस भावना पर आधारित थे कि वह अपनी माँ के लिए अपना जीवन दे देतीं, क्योंकि उन्होंने इस भावना को कभी व्यक्त नहीं किया था, जिसे वह किसी भी हालत में न केवल व्यर्थ और हास्यास्पद बल्कि अशोभनीय और शर्मनाक मानतीं, उसी प्रकार सेंट-लूप (जो मुझसे अपने साजो-सामान, जिन विभिन्न चीजों का उन्हें ध्यान रखना था, हमारी जीत की संभावनाओं, रूसी सेना के कम महत्व और इंग्लैंड क्या करेगा, के बारे में बात कर रहे थे) को उन वाक्पटु वाक्यों में से एक का उच्चारण करते हुए कल्पना करना असंभव था, जिन्हें सबसे सहानुभूति रखने वाला मंत्री भी प्रतिनिधियों और उत्साही लोगों को संबोधित करते समय व्यक्त करने के लिए प्रेरित होता है। हालाँकि, मैं इस नकारात्मक पक्ष से इनकार नहीं कर सकता जिसने उन्हें अपनी सुंदर भावनाओं को व्यक्त करने से रोका, कि इसमें "गुएरमांटेस भावना" का एक निश्चित प्रभाव था, जिसके कई उदाहरण स्वान ने दिए हैं। यदि मुझे उनमें सेंट-लूप की झलक सबसे अधिक दिखाई दी, तो वे गुएरमांटेस भी बने रहे, और इसी कारण, उनके साहस को प्रेरित करने वाले कई कारणों में से कुछ उनके डोंसिएरेस के मित्रों से भिन्न थे। वे युवा अपने पेशे के प्रति बेहद समर्पित थे, जिनके साथ मैंने हर शाम भोजन

किया था और जिनमें से कई मार्ने की लड़ाई या अन्य जगहों पर अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए शहीद हो गए थे। डोंसिएरेस में मेरे समय में मौजूद रहे ऐसे युवा समाजवादी, जिन्हें मैं नहीं जानता था क्योंकि वे सेंट-लूप के समूह में नहीं थे, इस बात से संतुष्ट थे कि उस समूह के अधिकारी किसी भी तरह से "अभिजात वर्ग" के नहीं थे, उस घमंडी और नीच भोग-विलास वाले अर्थ में, जिस अर्थ में आम "जनता" के अधिकारी और फ्रीमेसन इस शब्द का अर्थ लगाते थे। और इसी प्रकार, अभिजात अधिकारी ने उन समाजवादियों में भी वही देशभक्ति पाई, जिन्हें डोंसिएरेस में ड्रेफस कांड के दौरान मैंने देशद्रोही होने का आरोप लगाते सुना था। सैनिकों की गहरी और सच्ची देशभक्ति ने एक निश्चित रूप धारण कर लिया था जिसे वे अमूर्त मानते थे और जिसे बदनाम होते देखकर वे क्रोधित हो जाते थे, जबकि कट्टरपंथी-समाजवादी, जो एक अर्थ में अचेतन देशभक्त और स्वतंत्र थे, देशभक्ति के किसी निश्चित धर्म के बिना, इस बात से अनजान थे कि उनके द्वारा व्यर्थ और घृणित माने जाने वाले सूत्रों के पीछे कितनी गहरी वास्तविकता छिपी हुई थी। निःसंदेह, सेंट-लूप भी, उन्हीं की तरह, सामरिक और सामरिक सफलता के लिए बेहतर योजनाओं की खोज और कल्पना को अपने भीतर का सबसे सच्चा हिस्सा बनाने के आदी हो गए थे, इसलिए उनके लिए भी, शरीर का जीवन अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण था और उस आंतरिक जीवन के लिए आसानी से बलिदान किया जा सकता था, वह जीवन शक्ति जिसके चारों ओर व्यक्तिगत अस्तित्व का मूल्य केवल एक सुरक्षात्मक आवरण के समान था। मैंने सेंट-लूप को उनके मित्र, बालबेक ग्रैंड होटल के निदेशक के बारे में बताया, जिन्होंने युद्ध शुरू होने पर, कुछ फ्रांसीसी रेजिमेंटों में असंतोष का आरोप लगाया था, जिसे उन्होंने "दल-बदल" कहा था, और उन्होंने "प्रशियाई सैन्यवादियों" पर इसे भड़काने का आरोप लगाया था।

उन्होंने हंसते हुए कहा था, "मेरा भाई खाइयों में है। वे जर्मन सैनिकों से केवल तीस मीटर दूर हैं।" बाद में पता चला कि वह स्वयं एक जर्मन सैनिक थे और उन्हें एक यातना शिविर में डाल दिया गया। "बालबेक के संदर्भ में, क्या आपको होटल के पूर्व लिफ्ट-बॉय याद हैं?" सेंट-लूप ने मुझसे ऐसे लहजे में पूछा जैसे उन्हें उस व्यक्ति के बारे में ज्यादा जानकारी न हो और वे मुझसे जानकारी की उम्मीद कर रहे हों। "वह सेना में भर्ती हो रहा है और उसने मुझे पत्र लिखकर विमानन कोर में भर्ती कराने के लिए कहा है।" निस्संदेह, लिफ्ट-बॉय लिफ्ट के बंद पिंजरे में ऊपर-नीचे जाने से थक गया था और ग्रैंड होटल की सीढ़ियों की ऊंचाई अब उसके लिए पर्याप्त नहीं थी। वह एक चौकीदार के अलावा किसी और रूप में अपनी पहचान बनाने जा रहा था, क्योंकि हमारा भाग्य हमेशा वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते हैं। "मैं निश्चित रूप से उसके आवेदन का समर्थन करूँगा," सेंट-लूप ने कहा। "मैंने आज सुबह गिलबर्ट से फिर कहा, हमारे पास कभी भी पर्याप्त हवाई जहाज नहीं होंगे। इन्हीं के माध्यम से हम दुश्मन की गतिविधियों पर नज़र रख पाएंगे; ये उसे हमले में मिलने वाले सबसे बड़े लाभ, यानी अचानक हमले से वंचित कर देंगे; शायद सबसे अच्छी सेना वही होगी जिसकी नज़र सबसे तेज़ होगी। क्या बेचारी फ्रांस्वा अपने भतीजे को छूट दिलाने में सफल हुई?" फ्रांस्वा, जिसने लंबे समय तक अपने भतीजे को छूट दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया था, और जिसे गुएरमांटेस के माध्यम से जनरल डी सेंट जोसेफ को सिफारिश करने का प्रस्ताव दिया गया था, ने निराशापूर्वक उत्तर दिया: "ओह! इसका कोई फायदा नहीं होगा, उस बूढ़े आदमी का कुछ नहीं किया जा सकता, वह सबसे घटिया किस्म का आदमी है, वह देशभक्त है!" युद्ध की शुरुआत से ही, फ्रांस्वा को चाहे कितना भी दुख क्यों न हुआ हो, उसका यही मत था कि "बेचारे रूसियों" को नहीं छोड़ा जाना चाहिए क्योंकि हम

"गठबंधन" में थे। बटलर को पूरा विश्वास था कि युद्ध दस दिन से अधिक नहीं चलेगा और फ्रांस की निर्णायक जीत के साथ समाप्त होगा। इसलिए, घटनाओं के खंडन के डर से, उसने लंबे और अनिर्णायक युद्ध की भविष्यवाणी करने की हिम्मत नहीं की होगी, न ही उसमें इतनी कल्पनाशीलता थी। लेकिन, इस पूर्ण और तत्काल जीत से उसने पहले ही फ्रांस्वा को चिंतित करने वाली हर बात निकालने की कोशिश की। "यह बहुत बुरा हो सकता है; ऐसा लगता है कि बहुत से लोग मोर्चे पर नहीं जाना चाहते, सोलह साल के लड़के इसके बारे में रो रहे हैं।" उसने उसे तरह-तरह की अप्रिय बातें कहकर उकसाने की भी कोशिश की, जिसे वह "उसकी टांग खींचना" कहता था, जैसे "उस पर कटाक्ष करना" या "उस पर चुटकुला सुनाना"। "सोलह साल की! हे भगवान!" फ्रांस्वा ने हैरानी से कहा, और फिर क्षण भर के संदेह के साथ बोली, "लेकिन उन्होंने कहा था कि वे उन्हें बीस साल की उम्र के बाद ही लेते हैं, सोलह साल की उम्र में तो वे बच्चे ही हैं।" "स्वाभाविक रूप से, अखबारों को यही छापने का आदेश दिया जाता है। वैसे भी, देश के सारे युवा मोर्चे पर होंगे और उनमें से बहुत कम ही वापस लौटेंगे। एक तरह से यह अच्छी बात होगी, समय-समय पर खून बहाना फायदेमंद होता है, इससे काम सुचारू रूप से चलता है। हाँ, अगर इनमें से कुछ लड़के थोड़े डरपोक और कायर हैं और हिचकिचाते हैं, तो उन्हें तुरंत गोली मार दी जाती है, चमड़ी में एक दर्जन गोलियां और बस। एक तरह से यह करना ही पड़ता है और अधिकारियों को इससे क्या फर्क पड़ता है? उन्हें तो अपने पैसे तो मिलते ही हैं और उन्हें बस इसी की परवाह है।" इन बातचीत के दौरान फ्रांस्वा इतनी पीली पड़ गई कि किसी को डर लग सकता था कि नौकर कहीं उसे दिल की बीमारी से न मार दे। लेकिन इस वजह से उसके दोष कम नहीं हुए। जब कोई लड़की मुझसे मिलने आती, चाहे बूढ़ी नौकरानी के पैरों में कितना

भी दर्द क्यों न होता, अगर मैं कभी एक पल के लिए भी अपने कमरे से बाहर निकलता, तो मैं उसे सीढ़ियों के ऊपर, लटकने वाली अलमारी में देखता। वह दिखावा करती कि वह मेरे कोट में से कोई एक ढूंढ रही है, यह देखने के लिए कि कहीं उसमें कीड़े तो नहीं लग गए, जबकि असल में वह हम पर नज़र रख रही होती थी। मेरे तमाम विरोधों के बावजूद, वह अपने कपटपूर्ण तरीके से अप्रत्यक्ष प्रश्न पूछती रही और कुछ समय से "क्योंकि निस्संदेह" वाक्यांश का प्रयोग कर रही थी। मुझसे यह पूछने की हिम्मत न करते हुए कि, "क्या उस महिला का अपना घर है?" वह अपनी आँखें एक शांत कुत्ते की तरह दबे स्वर में ऊपर उठाकर कहती, "क्योंकि निस्संदेह उस महिला का अपना घर है," इस तरह वह सीधे सवाल पूछने से बचती ताकि वह विनम्र बनी रहे और जिज्ञासु न लगे। और तो और, चूंकि जिन नौकरों की हम सबसे ज्यादा परवाह करते हैं—खासकर अगर वे अब हमारी ज्यादा सेवा नहीं कर सकते या अपना काम भी नहीं कर सकते—वे अफसोस, नौकर ही रह जाते हैं और अपनी जाति की सीमाओं को और भी स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं (जिन्हें हम मिटाना चाहते हैं) उस हद तक जिस हद तक वे मानते हैं कि वे हमारी जाति में घुसपैठ कर रहे हैं, इसलिए फ्रांस्वा अक्सर मेरे बारे में अजीबोगरीब टिप्पणियां करती थी (मुझे चिढ़ाने के लिए, बटलर कहता होगा) जो हमारे जमाने के लोग नहीं करते। उदाहरण के लिए, अगर मुझे गर्मी लग रही होती और पसीना (जिस पर मैं ध्यान नहीं देता) मेरे माथे से टपक रहा होता, तो वह बड़ी ही बनावटी खुशी के साथ कहती, "अरे! तुम तो पूरी तरह भीग गए हो!" मानो वह किसी अजीब घटना से चकित हो गई हो, और उस अशोभनीय बात के प्रति तिरस्कार से मुस्कुराती, जैसे वह कह रही हो, "अरे, तुम बिना कॉलर के बाहर जा रहे हो!" जबकि उसका लहजा ऐसा होता कि वह मुझे असहज कर दे। ऐसा लगता था मानो मैं ही इस ब्रह्मांड में

एकमात्र ऐसा व्यक्ति हूँ जो कभी "भीगा" हुआ हो। क्योंकि अपनी विनम्रता में, अपने से कहीं अधिक हीन प्राणियों के प्रति अपने कोमल स्नेह में, उसने उनके भद्दे भावों को अपना लिया था। उसकी बेटी ने मुझसे उसकी शिकायत करते हुए कहा, "वह हमेशा कुछ न कुछ कहती रहती है, कि मैं दरवाजे ठीक से बंद नहीं करती और patatipatali et patatapatala□" फ्रांस्वा ने निस्संदेह सोचा होगा कि उसकी अपर्याप्त शिक्षा ही उसे अब तक इस सुंदर अभिव्यक्ति से वंचित रख पाई थी। और उसके होठों पर, जिन पर कभी शुद्धतम फ्रेंच बोली जाती थी, मैंने दिन में कई बार सुना, "Et patati patall patata patala□" यह देखना दिलचस्प है कि न केवल भावों में बल्कि एक ही व्यक्ति के विचारों में भी कितना कम अंतर होता है। बटलर, जिसे यह कहने की आदत थी कि एम. पोइंकेयर के इरादे बुरे थे, लालच वाले नहीं बल्कि इसलिए कि उन्होंने युद्ध को पूरी तरह से अपनी इच्छा से करवाया था, उसी उत्सुक श्रोताओं के सामने दिन में सात-आठ बार यही बात दोहराता था, बिना एक भी शब्द, हावभाव या स्वर बदले। हालाँकि यह केवल दो मिनट तक चलता था, फिर भी यह एक प्रस्तुति की तरह लगता था। फ्रांसीसी में उसकी गलतियों ने फ्रांस्वा की भाषा को उतना ही दूषित कर दिया जितना उसकी बेटी की गलतियों ने।

वह मुश्किल से सोती थी, मुश्किल से खाती थी। हालाँकि उसे समझ नहीं आता था, फिर भी उसके बटलर द्वारा उसे संदेश पढ़कर सुनाए जाते थे, जो उन्हें थोड़ा-बहुत ही समझता था और जिसमें फ्रांस्वा को परेशान करने की इच्छा अक्सर सतही देशभक्ति से दब जाती थी; जर्मनों के बारे में बात करते हुए उसने सहानुभूति भरी हंसी के साथ कहा, "इससे वे थोड़ा भड़क उठेंगे, हमारा बूढ़ा जॉफ्रे उन पर धूमकेतु गिराने की योजना बना रहा है।" फ्रांस्वा को समझ नहीं आया कि वह किस धूमकेतु की बात कर रहा था,

लेकिन फिर भी उसे लगा कि यह उन आकर्षक और मौलिक अतिशयोक्तियों में से एक है जिनका जवाब एक सभ्य व्यक्ति को देना चाहिए, इसलिए अच्छे हास्य और शालीनता के साथ, "वह हमेशा ऐसा ही रहता है" कहते हुए कंधे उचकाते हुए, उसने अपने आँसुओं को मुस्कान से छिपा लिया। कुल मिलाकर, वह खुश थी कि उसका नया कसाई लड़का, जो अपने पेशे के बावजूद थोड़ा डरपोक था (हालाँकि उसने बूचड़खाने में काम शुरू किया था), सेना में भर्ती होने के लिए बहुत छोटा था; अन्यथा, वह उसके बारे में युद्ध मंत्री से बात करने में सक्षम होती। बटलर को विश्वास नहीं हो रहा था कि विज्ञप्तियाँ उत्कृष्ट से कम थीं और सेनाएँ बर्लिन की ओर नहीं बढ़ रही थीं, जैसा कि उसने पढ़ा था, "हमने दुश्मन को भारी नुकसान पहुँचाते हुए खदेड़ दिया है," इन कार्रवाइयों का उसने ऐसे जश्न मनाया जैसे ये कोई नई जीत हो। जहाँ तक मेरी बात है, मैं इन विजयों के पेरिस की ओर इतनी तेज़ी से बढ़ते जाने से भयभीत था और मुझे आश्चर्य हुआ कि बटलर भी, जिसने एक विज्ञप्ति में लेंस के पास हुई एक कार्रवाई देखी थी, अगले दिन के अखबार में यह पढ़कर चिंतित नहीं हुआ कि इस कार्रवाई का परिणाम जौई-ले-विकॉन्टे में हमारे पक्ष में पलट गया, जहाँ हमने आक्रमण मार्गों पर मज़बूती से कब्ज़ा कर रखा था। बटलर जौई-ले-विकॉन्टे का नाम अच्छी तरह जानता था, जो कॉम्ब्रे से ज़्यादा दूर नहीं था। लेकिन हम अखबारों को अपनी मर्जी से पढ़ते हैं, आँखों पर पट्टी बांधे, तथ्यों को समझने की कोशिश किए बिना, संपादक के मीठे शब्दों को वैसे ही सुनते हैं जैसे अपनी प्रेमिका के शब्दों को। हम हारे हुए भी खुश हैं क्योंकि हम खुद को अजेय और विजयी मानते हैं।

मैं पेरिस में ज़्यादा दिन नहीं रुकी और जल्द ही अपने सैनिटोरियम लौट आई। हालाँकि डॉक्टर अपने मरीज़ों का इलाज एकांतवास में करते थे, फिर भी मुझे गिलबर्ट और रॉबर्ट से दो अलग-अलग मौकों पर पत्र मिले।

गिलबर्ट ने मुझे (लगभग सितंबर 1914 में) लिखा कि हालाँकि वह रॉबर्ट से आसानी से समाचार प्राप्त करने के लिए पेरिस में रहना चाहती थी, लेकिन पेरिस पर लगातार हो रहे "ताउबे" छापों ने उसे इतना डरा दिया था, खासकर अपनी छोटी बच्ची के कारण, कि वह कॉम्ब्रे जाने वाली आखिरी ट्रेन से पेरिस से भाग गई। ट्रेन कॉम्ब्रे तक पहुँची ही नहीं और एक किसान की गाड़ी पर दस घंटे की असहनीय असुविधा भरी यात्रा करने के बाद ही वह अंततः टैनसनविले पहुँच पाई। "और आपको क्या लगता है कि वहाँ आपकी पुरानी दोस्त का क्या इंतज़ार कर रहा था?" गिलबर्ट ने अपना पत्र यह कहकर समाप्त किया। "मैं जर्मन विमानों से बचने के लिए पेरिस छोड़कर आया था, यह सोचकर कि टैनसनविले में मैं हर तरह से सुरक्षित रहूंगा। वहां पहुंचे हुए मुझे दो दिन भी नहीं हुए थे कि क्या हुआ! ला फेरे के पास हमारी सेना को हराने के बाद जर्मन उस क्षेत्र पर आक्रमण कर रहे थे और जर्मन सेना का एक दस्ता, जिसके पीछे एक रेजिमेंट थी, टैनसनविले के द्वार पर आ पहुंचा और मुझे उन्हें अंदर लेने के लिए मजबूर होना पड़ा, भागने का कोई रास्ता नहीं था, न कोई ट्रेन, न कुछ और।" क्या जर्मन कर्मचारियों का व्यवहार अच्छा था या गिलबर्ट के पत्र में गुएरमांटे परिवार की भावना का प्रभाव देखा जाना चाहिए था, जो बवेरियाई मूल के थे और जर्मनी के सर्वोच्च अभिजात वर्ग से संबंधित थे? गिलबर्ट कर्मचारियों और सैनिकों के उत्तम व्यवहार की अथक प्रशंसा करती थीं, जिन्होंने केवल "झील के किनारे उगने वाले 'फॉरगेट-मी-नॉट' फूलों में से एक फूल तोड़ने की अनुमति" मांगी थी। उन्होंने इस अच्छे व्यवहार की तुलना फ्रांसीसी भगोड़ों की बेलगाम हिंसा से की, जिन्होंने जर्मन जनरलों के आने से पहले जागीर में घुसकर सब कुछ लूट लिया था। खैर, अगर गिलबर्ट का पत्र कुछ मायनों में "गुएरमांटे परिवार की भावना" से ओतप्रोत था—कुछ लोग कहेंगे कि यह उनका यहूदी

अंतर्राष्ट्रीयवाद था, जो शायद सच नहीं होगा, जैसा कि हम आगे देखेंगे—तो कुछ महीनों बाद रॉबर्ट से मुझे जो पत्र मिला, वह गुएरमांटे परिवार की तुलना में सेंट-लूप परिवार की भावना से कहीं अधिक प्रभावित था, क्योंकि उसमें उनकी उदार संस्कृति की झलक थी और वह पूरी तरह से सहानुभूतिपूर्ण था। दुर्भाग्य से उन्होंने मुझे रणनीति के बारे में कुछ नहीं बताया, जैसा कि वे डोनसिएरेस में हमारी बातचीत में बताया करते थे, और यह भी नहीं बताया कि युद्ध ने उन सिद्धांतों को किस हद तक पुष्ट या खंडित किया है, जिन्हें उन्होंने बाद में मेरे सामने रखा। उन्होंने मुझे बस इतना बताया कि 1914 के बाद से कई युद्ध एक के बाद एक हुए, और प्रत्येक युद्ध से मिले सबक ने अगले युद्ध के संचालन को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, "ब्रेक थ्रू" के सिद्धांत को इस सिद्धांत से पूरा किया गया था कि "ब्रेक थ्रू" से पहले दुश्मन के कब्जे वाले क्षेत्र को तोपखाने से पूरी तरह से नष्ट करना आवश्यक था। बाद में, इसके विपरीत, यह पता चला कि इस विनाश ने पैदल सेना और तोपखाने के लिए उस जमीन पर आगे बढ़ना असंभव बना दिया, जो हजारों गोले के गड्ढों से इतनी भरी हुई थी कि वे खुद ही बाधा बन गए थे। उन्होंने कहा, "युद्ध हमारे पुराने हेगेल के नियमों से बच नहीं सकता। यह निरंतर विकास की अवस्था है।" यह वह सब कुछ नहीं था जो मैं जानना चाहता था। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा निराशा इस बात से हुई कि उन्हें मुझे जनरलों के नाम बताने का कोई अधिकार नहीं था। और वास्तव में, अखबारों से मुझे जो थोड़ी-बहुत जानकारी मिली, उससे यही स्पष्ट था कि जिन लोगों के युद्ध के महत्व को जानना मेरे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण था, वे इस युद्ध का संचालन नहीं कर रहे थे। गेस्लिन डी बरगंडी, गैलिफ़ेट, नेग्रियर मर चुके थे, पाउ युद्ध की शुरुआत में ही सक्रिय सेवा से सेवानिवृत्त हो चुके थे। हमने जोफ्रे, फोच, कास्टेलेनाउ या पेटेन के बारे में कभी बात नहीं की थी। “मेरे प्यारे बेटे,”

रॉबर्ट ने लिखा, “अगर तुम देखते कि ये सैनिक कैसे हैं, खासकर आम लोग, मेहनतकश वर्ग के लोग, छोटे दुकानदार, जिन्हें अपनी वीरता का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था और जो बिना किसी शक के अपने बिस्तर पर मर सकते थे, गोलियों का सामना करते हुए अपने साथी की मदद करने के लिए, एक घायल अधिकारी को उठाकर ले जाने के लिए, और खुद घायल होकर भी, मरने के क्षण में मुस्कुराते हैं क्योंकि स्टाफ सर्जन उन्हें बताता है कि खाई को जर्मनों से वापस ले लिया गया है; मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, मेरे प्यारे बेटे, कि इससे एक फ्रांसीसी की असलियत का अद्भुत एहसास होता है और हमें उन ऐतिहासिक युगों को समझने में मदद मिलती है जो हमें स्कूल में असाधारण लगते थे। यह महाकाव्य इतना शानदार है कि मेरी तरह तुम्हें भी इसे बयान करने के लिए शब्द बेकार लगेंगे। ऐसी भव्यता के संपर्क में आने पर मेरे लिए “पोइलू” शब्द अब किसी संकेत या मज़ाक जैसा नहीं रह गया है, ठीक वैसे ही जैसे हम “चोउंस” शब्द को पढ़ते हैं। मुझे लगता है कि “पोइलू” शब्द महान कवियों का इंतज़ार कर रहा है, जैसे कि कुछ और शब्द। "डेल्यूज", "क्राइस्ट" या "बार्बेरियन्स" जैसे शब्द ह्यूगो, विग्नी और अन्य कवियों के आने से पहले ही भव्यता से भरे हुए थे। मेरी राय में, आम लोगों के बेटे सबसे अच्छे होते हैं, लेकिन हर कोई अच्छा होता है। बेचारे वाउगुबर्ट, राजदूत के बेटे, सात बार घायल होने के बाद मारे गए और हर बार जब वे किसी अभियान से बिना मारे गए लौट आते थे, तो मानो खुद को सही ठहराते हुए कहते थे कि यह उनकी गलती नहीं थी। वे एक आकर्षक इंसान थे। हम एक-दूसरे से बहुत मिलते-जुलते थे और उनके बेचारे माता-पिता को उनके अंतिम संस्कार में आने की अनुमति इस शर्त पर मिली थी कि वे शोक वस्त्र न पहनें और बमबारी के कारण पाँच मिनट से ज़्यादा न रुकें। माँ, एक बहुत ही मजबूत महिला, जिन्हें शायद आप जानते होंगे,

बहुत दुखी रही होंगी, लेकिन देखकर ऐसा लगता नहीं था। लेकिन पिता की हालत ऐसी थी, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, कि मैं, जो अपने किसी साथी का सिर बम से चकनाचूर होते या धड़ से अलग होते देखने का आदी हो चुका हूँ, उन्हें देखकर लगभग बेसुध हो गया था, लेकिन जब मैंने उन्हें देखा तो मैं यह बर्दाश्त नहीं कर पाया। बेचारे वोगौबर्ट की हालत इतनी खराब हो गई कि वह बिल्कुल चूर-चूर हो गया। सेनापति ने उससे कहा कि उसके बेटे ने फ्रांस के लिए वीरगति प्राप्त की, लेकिन इससे बेचारे का रोना और भी तेज हो गया, जो अपने बेटे के शव से दूर नहीं हो पा रहा था। इसीलिए हम कह सकते हैं, 'वे आगे नहीं बढ़ पाएंगे।' मेरे बेचारे नौकर वोगौबर्ट जैसे लोगों ने ही जर्मनों को आगे बढ़ने से रोका है। शायद आपको लगा हो कि हम ज्यादा आगे नहीं बढ़ रहे हैं, लेकिन यह तर्क करने का सही तरीका नहीं है; एक सेना को जीत का अहसास अंतर्ज्ञान से होता है, जैसे एक मरता हुआ आदमी जानता है कि उसका अंत निश्चित है। और हम जानते हैं कि हम ही विजयी होंगे और हम यही चाहते हैं ताकि हम एक न्यायपूर्ण शांति स्थापित कर सकें, न केवल अपने लिए, बल्कि वास्तव में एक न्यायपूर्ण शांति, जो फ्रांसीसियों और जर्मनों दोनों के लिए न्यायपूर्ण हो। साधारण और तुच्छ बुद्धि के नायकों के रूप में, जो अपनी बीमारी से उबरने के दौरान कविताएँ लिखते थे, उन्होंने युद्ध का वर्णन करने के लिए स्वयं को उन घटनाओं के स्तर पर नहीं रखा, जो अपने आप में कुछ भी नहीं हैं, बल्कि उस तुच्छ सौंदर्यशास्त्र के स्तर पर रखा, जिसके नियमों का वे तब तक पालन करते रहे थे, मानो वे दस साल पहले "खूनी भोर" या "विजय की कांपती उड़ान" के बारे में बात कर रहे हों। सेंट-लूप, जो स्वयं कहीं अधिक बुद्धिमान और कलात्मक थे, बुद्धिमान और कलात्मक बने रहे और मेरे लाभ के लिए उन्होंने दलदली जंगल के किनारे स्थिर रहते हुए भी परिदृश्यों का बड़े ही सलीके से वर्णन

किया, मानो वे बत्तख का शिकार कर रहे हों। मुझे छाया और प्रकाश के उन विरोधाभासों को समझाने के लिए, जो "सुबह का जादू" थे, उन्होंने कुछ ऐसी तस्वीरों का जिक्र किया जो हम दोनों को पसंद थीं, और रोमेन रोलैंड या नीत्शे के किसी पृष्ठ का उल्लेख उस स्वतंत्रता के साथ किया जो मोर्चे पर तैनात लोगों में होती है, जो पीछे के लोगों के विपरीत, जर्मन नाम लेने से नहीं डरते, और उसी नखरे के साथ, जिसके कारण कर्नल डू पैटी डी क्लैम ने ज़ोला मामले के दौरान गवाहों के कमरे में पियरे क्विलार्ड, एक ड्रेफ्यूसवादी कवि, जिसे वह नहीं जानते थे, के पास से गुजरते हुए उनके प्रतीकात्मक नाटक "ला फिल्ले ऑक्स मैन्स कूपेस" की पंक्तियाँ सुनाईं। सेंट-लूप ने जब मुझसे शुमान की किसी धुन के बारे में बात की, तो उसे उसका जर्मन शीर्षक दिया और मुझे यह बताने में कोई लाग-लपेट नहीं की कि जब उन्होंने जंगल के किनारे पहली चहचहाहट सुनी थी, तो वे इस तरह मदहोश हो गए थे मानो उस "महान सिगफ्रीड" का पक्षी, जिसे वे युद्ध के बाद फिर से सुनने की आशा करते थे, ने उनके लिए गाया हो। उसे। और अब पेरिस में अपनी दूसरी वापसी पर, मुझे अपने आगमन के अगले दिन गिलबर्ट का एक और पत्र मिला, जो निस्संदेह मुझे लिखे गए अपने पिछले पत्र को भूल गई थी, जिसका मैंने ऊपर उल्लेख किया है, क्योंकि 1914 के अंत में पेरिस से उसके प्रस्थान को बाद में बिल्कुल अलग तरीके से दर्शाया गया था। "शायद आपको एहसास नहीं है, मेरे प्रिय मित्र," उसने मुझे लिखा, "कि मैं अब दो साल से टैनसनविले में हूँ। मैं वहाँ जर्मनों के साथ ही पहुँची थी। हर कोई मुझे जाने से रोकना चाहता था, मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया गया मानो मैं पागल हूँ। 'क्या,' उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम पेरिस में सुरक्षित हो और तुम उन आक्रमण किए गए क्षेत्रों के लिए निकलना चाहती हो, जबकि बाकी सभी लोग उनसे भागने की कोशिश कर रहे हैं?'" मैंने इस तर्क की

सत्यता को पहचाना, पर अब क्या किया जा सकता था? मुझमें केवल एक ही गुण है, मैं कायर नहीं हूँ, या यूँ कहें कि मैं वफ़ादार हूँ, और जब मुझे पता चला कि मेरे प्यारे टैनसनविले पर खतरा मंडरा रहा है, तो मैं अपने पुराने प्रबंधक को वहाँ अकेले उसकी रक्षा के लिए नहीं छोड़ना चाहती थी; मुझे लगा कि मेरा स्थान उसके साथ ही है। और वास्तव में, इसी दृढ़ संकल्प के कारण मैं शैतो को लगभग पूरी तरह से बचाने में सक्षम रही—जबकि आस-पड़ोस के अन्य सभी शैतो, अपने भयभीत मालिकों द्वारा छोड़े जाने के बाद, छत से तहखाने तक नष्ट हो गए थे—और मैं न केवल शैतो को बचा पाई, बल्कि उन बहुमूल्य संग्रहों को भी बचा पाई जिन्हें मेरे प्यारे पिता बहुत प्रिय मानते थे। संक्षेप में, गिलबर्ट अब आश्वस्त थीं कि वह टैनसनविले, जैसा कि उन्होंने मुझे 1914 में लिखा था, जर्मनों से भागकर सुरक्षित रहने के लिए नहीं गई थीं, बल्कि इसके विपरीत, उनसे मिलने और अपने शैतो की रक्षा करने के लिए गई थीं। दरअसल, जर्मन सैनिक टैनसनविले में नहीं रुके थे, लेकिन उनके घर पर अधिकारियों का आना-जाना जारी रहा, जो उस संख्या से कहीं अधिक था जिसने फ्रांस्वा को कॉम्ब्रे की सड़कों पर रुला दिया था और जैसा कि उन्होंने इस बार पूरी सच्चाई से कहा, मोर्चे का जीवन जीने पर मजबूर कर दिया था। उनके सराहनीय आचरण के कारण अखबारों में उनकी खूब प्रशंसा की गई और उन्हें पदक देने का प्रस्ताव भी रखा गया। उसके पत्र का अंत बिल्कुल सटीक था: "मेरे प्रिय मित्र, तुम्हें इस युद्ध का कोई अंदाजा नहीं है, एक सड़क, एक पुल या एक ऊँचाई का क्या महत्व है। इस तबाह ग्रामीण इलाके में इन दिनों में मैंने कितनी बार तुम्हारे बारे में सोचा है, हमारी उन सैरों के बारे में जिन्हें तुम इतना आनंददायक बनाते थे, जबकि उस पहाड़ी पर कब्जा करने के लिए भयंकर लड़ाई चल रही थी जिसे तुम बहुत प्यार करते थे और जहाँ हम अक्सर साथ जाया करते

थे। शायद तुम भी मेरी तरह यह कल्पना नहीं कर सकते कि गुमनाम रूसैनविले और उबाऊ मेसेग्लिस, जहाँ से हमारे पत्र लाए जाते थे और जहाँ हम तुम्हारे बीमार होने पर डॉक्टर को बुलाने जाते थे, अब प्रसिद्ध स्थान बन गए हैं। खैर, मेरे प्रिय मित्र, वे ऑस्टरलिट्ज़ या वाल्मी की तरह ही हमेशा के लिए गौरवशाली हो गए हैं। मेसेग्लिस की लड़ाई आठ महीने से अधिक चली, जर्मनों ने वहाँ एक लाख से अधिक सैनिक खो दिए, उन्होंने मेसेग्लिस को नष्ट कर दिया लेकिन उस पर कब्जा नहीं कर पाए। वह छोटी सी सड़क जिसे तुम बहुत प्यार करते थे, जिसे हम कठोर काँटेदार चढ़ाई कहते थे, जहाँ तुम होने का दावा करते थे... जब तुम बच्ची थी तब तुमने मुझसे प्यार किया, जब मैं हर पल तुमसे प्यार करता रहा, मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि वह पल कितना महत्वपूर्ण था। वह विशाल गेहूं का खेत, जहाँ वह समाप्त होता था, प्रसिद्ध 'ढलान 307' है, वह नाम जो तुमने अक्सर विज्ञप्तियों में दर्ज देखा होगा। फ्रांसीसियों ने विवोन नदी पर बने छोटे पुल को उड़ा दिया, जो तुम्हें याद होगा, तुम्हारे बचपन की यादें उतनी ताज़ा नहीं कर पाया जितनी तुम चाहती थीं। जर्मनों ने दूसरों को नदी पार कराया; डेढ़ साल तक उन्होंने कॉम्ब्रे के एक हिस्से पर कब्ज़ा रखा और फ्रांसीसियों ने दूसरे हिस्से पर। जिस दिन मुझे यह पत्र मिला, उसके अगले दिन, यानी उस शाम से ठीक पहले, जब अंधेरे में चलते हुए, इन सभी यादों पर विचार करते हुए मैंने अपने कदमों की आहट सुनी, सेंट-लूप, मोर्चे से वापस आकर, वहाँ लौटने ही वाला था, मुझसे कुछ मिनटों के लिए मिलने आया, जिसकी घोषणा मात्र से ही मैं बहुत भावुक हो गया था। फ्रांस्वा पहले तो उस पर टूट पड़ने वाली थी, इस उम्मीद में कि वह कसाई के लड़के को छूट दिलवा सकेगी; एक साल बाद उसकी कक्षा मोर्चे पर जाने वाली थी। लेकिन उसने खुद को रोक लिया, क्योंकि उसे इस प्रयास की निरर्थकता का एहसास हो गया था। कुछ समय से उस

डरपोक पशु-हत्यारे ने अपनी कसाई की दुकान बदल ली थी, और चाहे हमारी दुकान की मालकिन को डर था कि वह हमारे ग्राहक खो देगी, या चाहे यह महज़ नेक इरादे से ही क्यों न हो, उसने फ्रांस्वा से कहा कि उसे नहीं पता कि वह लड़का, "जो वैसे भी कभी अच्छा कसाई नहीं बन सकता", कहाँ काम करता है। फ्रांस्वा ने उसे हर जगह ढूंढा, लेकिन पेरिस बड़ा है, वहाँ बहुत सारी कसाई की दुकानें हैं, और चाहे वह कितनी भी दुकानों में गई, उसे वह डरपोक और खून से सना हुआ युवक कभी नहीं मिला।

जब सेंट-लूप मेरे कमरे में आए, तो मैं उनके पास उसी संकोच और अलौकिक अनुभूति के साथ गया, जो छुट्टी पर आए लोगों के प्रति वैसी ही होती है जैसे किसी जानलेवा बीमारी से पीड़ित व्यक्ति के पास जाने पर होती है, जो फिर भी उठ खड़ा होता है, कपड़े पहनता है और चलने-फिरने लगता है। ऐसा लगता था मानो युद्ध में शामिल सैनिकों को दी जाने वाली इन छुट्टियों में कुछ क्रूरता थी, खासकर शुरुआत में, क्योंकि जो लोग मेरी तरह पेरिस से दूर नहीं रहते थे, उनमें वह आदत पड़ गई थी जो चीजों से उस गहरी छाप को मिटा देती है जो उन्हें उनका वास्तविक महत्व देती है। पहली बार जब किसी ने मन ही मन कहा, "ये कभी वापस नहीं लौटेंगे, ये भाग जाएंगे"—और सचमुच ये उन जगहों से नहीं आए थे जो हमें अवास्तविक लगती थीं, सिर्फ इसलिए कि हमने उनके बारे में अखबारों में पढ़ा था और जहाँ हम ये समझ नहीं पा रहे थे कि उन्होंने टाइटैनिक जैसी भीषण लड़ाई में हिस्सा लिया था और सिर्फ कंधे पर मामूली चोट के साथ वापस आए थे—ये पल भर के लिए मृत्यु के तट से हमारे पास लौटे और फिर वहीं लौट गए, हमारे लिए समझ से परे, हमें कोमलता, भय और रहस्य की भावना से भर दिया, ठीक वैसे ही जैसे मृत लोग एक पल के लिए हमारे सामने प्रकट होते हैं और अगर हम उनसे

सवाल करने की हिम्मत करें, तो वे ज़्यादा से ज़्यादा यही जवाब देते हैं, "आप कल्पना भी नहीं कर सकते।" क्योंकि जो लोग युद्ध के मैदान से पुनर्जीवित हुए हैं, उनके मामले में यह असाधारण है—जीवितों में तो छुट्टी पर आए लोग होते हैं, या मृतकों के मामले में जिन्हें सम्मोहित माध्यम बुलाता है—कि रहस्य के साथ इस संपर्क का एकमात्र प्रभाव, अगर संभव हो तो, उनके साथ हमारे संवाद की तुच्छता को बढ़ाना है। इस प्रकार, रॉबर्ट के पास पहुँचकर, जिसके माथे पर एक ऐसा निशान था जो मुझे किसी दैत्य के पदचिह्न से भी अधिक भव्य और रहस्यमय लगा, मैंने उससे कोई प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया और उसने केवल कुछ सरल शब्द कहे। और वे शब्द युद्ध से पहले के शब्दों से कुछ ही भिन्न थे, मानो युद्ध के बावजूद लोग वैसे ही बने रहे हों; बातचीत का लहजा वही रहा, विषय अलग था और फिर भी—? मुझे समझ आया कि रॉबर्ट को मोर्चे पर कुछ ऐसे साधन मिल गए थे जिनसे वह धीरे-धीरे यह भूल गया था कि मोरेल ने उसके साथ भी उतना ही बुरा व्यवहार किया था जितना उसके चाचा के साथ। फिर भी उसने मोरेल के प्रति गहरी मित्रता बनाए रखी थी और कभी-कभी उसे फिर से देखने की तीव्र इच्छा होती थी जिसे वह टालता रहता था। मैंने गिलबर्ट के प्रति अधिक विचारशीलतापूर्ण समझा कि रॉबर्ट को सूचित न किया जाए, यदि वह मोरेल को ढूंढना चाहता था, तो उसे केवल श्रीमती वर्दुरिन के पास जाना था। जब मैंने विनम्रतापूर्वक रॉबर्ट से कहा कि पेरिस में युद्ध का कितना कम प्रभाव महसूस होता है, तो उसने कहा कि वहाँ भी यह कभी-कभी "काफी असाधारण" होता था। वह पिछली शाम हुए ज़ेपेलिन हमले का ज़िक्र कर रहे थे और मुझसे पूछ रहे थे कि क्या मैंने उसे ठीक से देखा था, ठीक उसी तरह जैसे वह पहले थिएटर में किसी बेहद खूबसूरत कलाकृति का ज़िक्र करते थे। कोई कल्पना कर सकता है कि मोर्चे पर यह कहना एक तरह का नखरा होता

है, "यह अद्भुत है! कितना गुलाबी रंग है—और वह हल्का हरा!" जबकि उसी क्षण जान जा सकती है, लेकिन पेरिस पर हुए एक मामूली हमले के बारे में सेंट-लूप को जो बात परेशान कर रही थी, वह यह नहीं थी। जब मैंने उनसे रात में उड़ते हवाई जहाजों की सुंदरता के बारे में बात की, तो उन्होंने जवाब दिया, "और शायद उतरते हुए हवाई जहाज और भी खूबसूरत होते हैं। बेशक, जब वे ऊपर की ओर उड़ते हैं, जब वे नक्षत्रों का निर्माण करते हुए, आकाशीय नक्षत्रों के नियमों का पालन करते हैं, तो वे अद्भुत लगते हैं। आपके लिए तो स्क्वाड्रनों का जमावड़ा, उन्हें दिए जा रहे आदेश, उनका जासूसी कार्य पर भेजा जाना आदि एक शानदार नजारा है। लेकिन क्या आपको वह क्षण पसंद नहीं आता जब वे तारों के साथ मिलकर, उनसे अलग होकर किसी का पीछा करने के लिए निकलते हैं या लाल रंग की आवाज़ों के बाद लौटते हैं, जब वे 'लूप-लूप' करते हैं, तब तो तारे भी अपनी स्थिति बदलते हुए प्रतीत होते हैं। और क्या सायरन वाग्नरियन नहीं हैं, जैसा कि होना चाहिए, जर्मनों के आगमन का स्वागत करने के लिए, राष्ट्रगान की तरह, क्राउन प्रिंस और राजकुमारियों के साथ शाही बॉक्स में 'वाच्ट एम राइन' की तरह; कोई सोचता है कि क्या ऊपर विमान चालक हैं या वाल्कीरी?" उन्हें विमान चालकों की तुलना वाल्कीरी से करने में आनंद आता था और वे पूरी तरह से संगीत के सिद्धांतों पर ही उनकी व्याख्या करते थे। "हे भगवान! सायरन का संगीत घोड़ों के उछलने जैसा है; पेरिस में वैगनर को सुनने के लिए हमें जर्मनों के आने का इंतज़ार करना पड़ेगा।" कुछ दृष्टियों से यह तुलना गलत नहीं थी। शहर एक आकारहीन और काले पिंड जैसा प्रतीत होता था जो अचानक रात के अंधेरे से प्रकाश की चमक में बदल गया, और आकाश में, जहाँ एक के बाद एक विमान चालक सायरन की चीखती हुई आवाज़ के बीच ऊपर उठते थे, वहीं धीमी, अधिक कपटी और इसलिए अधिक भयावह गति से,

क्योंकि इससे ऐसा लगता था कि वे किसी अदृश्य वस्तु की खोज कर रहे हैं जो शायद हमारे करीब ही हो, सर्चलाइटें लगातार दुश्मन की गंध सूंघती हुई, उसे अपनी किरणों से घेरती हुई तब तक घूमती रहीं जब तक कि नुकीले विमान उसके पीछे तीर की तरह चमक नहीं उठे। और एक के बाद एक स्क्वाड्रन में विमान चालक वाल्कीरी की तरह शहर से आकाश में उड़ते चले गए। फिर भी, जमीन के करीब, घरों की नींव पर, कुछ जगहों पर तेज रोशनी थी और मैंने सेंट-लूप से कहा कि अगर वह पिछली शाम घर पर होता, तो आकाश में प्रलय का चिंतन करते हुए, वह धरती पर, ग्रीको द्वारा कॉम्टे डी'ऑर्गाज़ के दफन की तरह, जहां वे विपरीत तल समानांतर हैं, रात के गाउन पहने पात्रों द्वारा खेला जा रहा एक नियमित वाडेविल देख पाता, जिनके प्रसिद्ध नाम उस फेरारी के किसी उत्तराधिकारी को भेजे जाने चाहिए थे, जिसके फैशनेबल नोटों का उसने और मैंने अक्सर मजाक उड़ाकर आनंद लिया था। और हमें उस दिन भी ऐसा ही करना चाहिए था, मानो कोई युद्ध हुआ ही न हो, हालाँकि विषय बहुत ही "युद्ध-संबंधी" था, ज़ेपेलिन का खौफ साकार हो चुका था, डचेस डी गुएरमांटेस अपनी रात्रि पोशाक में बेहद खूबसूरत लग रही थीं, ड्यूक डी गुएरमांटेस अपने गुलाबी पायजामे और बाथ गाउन में अवर्णनीय थे, इत्यादि। "मुझे यकीन है," उन्होंने कहा, "कि सभी बड़े होटलों में अमेरिकी यहूदी महिलाओं को अपनी कमीज़ों में, अपने उभरे हुए स्तनों से चिपके मोतियों के हार पहने देखा जा सकता था, जिनसे वे एक 'बर्बाद' ड्यूक खरीद सकती थीं। ऐसी रातों में, होटल रिट्ज़ किसी विनिमय और बाज़ार जैसा लगता होगा।"

मैंने सेंट-लूप से पूछा कि क्या इस युद्ध ने अतीत में युद्ध के बारे में डोंसिएरेस में हमारे निष्कर्षों की पुष्टि की है। मैंने उन्हें उस प्रस्ताव की याद दिलाई जिसे वे भूल गए थे, उदाहरण के लिए भविष्य के जनरलों द्वारा

पूर्व युद्धों की नकल के बारे में। मैंने उनसे कहा, "इन अभियानों में छल-कपट अब संभव नहीं है, जहाँ तोपखाने के इतने बड़े संचय के साथ अग्रिम तैयारी की जाती है और आपने मुझे हवाई जहाज द्वारा टोही के बारे में जो बताया है, जिसे आप स्पष्ट रूप से पहले से नहीं देख सकते थे, वह नेपोलियन की चालों के प्रयोग को रोकता है।" “आप कितने गलत हैं,” उन्होंने उत्तर दिया, “स्पष्ट रूप से यह युद्ध पूर्व युद्धों की तुलना में नया है क्योंकि यह स्वयं क्रमिक युद्धों से बना है, जिनमें से अंतिम युद्ध पिछले युद्ध का एक नया रूप है। दुश्मन की नवीनतम रणनीति के अनुसार खुद को ढालना आवश्यक है ताकि उससे बचाव किया जा सके; फिर वह एक नई रणनीति अपनाता है और फिर भी, अन्य मानवीय चीजों की तरह, पुरानी चालें हमेशा कारगर साबित होती हैं। कल शाम ही हमारे सबसे बुद्धिमान सैन्य आलोचकों ने लिखा: 'जब जर्मन पूर्वी प्रशिया को मुक्त कराना चाहते थे, तो उन्होंने वारसॉ के खिलाफ दक्षिण में एक शक्तिशाली प्रदर्शन के साथ अभियान शुरू किया, दुश्मन को धोखा देने के लिए दस हजार सैनिकों का बलिदान दिया। जब 1915 की शुरुआत में उन्होंने खतरे में पड़े हंगरी को अलग करने के लिए आर्क-ड्यूक यूजीन का सामूहिक युद्धाभ्यास किया, तो उन्होंने यह अफवाह फैलाई कि यह सामूहिक युद्ध सर्बिया के खिलाफ अभियान के लिए था। इस प्रकार, 1800 में इटली के खिलाफ अभियान चलाने वाली सेना को स्पष्ट रूप से एक आरक्षित सेना के रूप में दर्शाया गया था, जिसे आल्प्स पर्वतमाला को पार नहीं करना था, बल्कि उत्तरी मोर्चे पर लगी सेनाओं का समर्थन करना था। युद्ध के मोर्चे। हिंडेनबर्ग द्वारा वारसॉ पर हमला करने का छल, माज़ुरियन झीलों पर वास्तविक हमले को छिपाने के लिए, 1812 में नेपोलियन की रणनीति की नकल था।' आप देख रहे हैं कि एम. बिदू लगभग उन्हीं शब्दों को दोहरा रहे हैं जिनकी आपने मुझे याद दिलाई और

जिन्हें मैं भूल गया था। और चूंकि युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है, ये छल बार-बार दोहराए जाएंगे और सफल होंगे क्योंकि इनका कभी पूरी तरह से पर्दाफाश नहीं होता और जो एक बार काम कर चुका है, वह फिर से काम करेगा क्योंकि वह एक अच्छा छल था। और वास्तव में, सेंट-लूप के साथ उस बातचीत के काफी समय बाद, जब मित्र देशों की निगाहें पेट्रोग्राड पर टिकी थीं, जिसकी राजधानी की ओर जर्मन सेना के मार्च करने का अनुमान था, वे इटली के खिलाफ एक बहुत ही शक्तिशाली आक्रमण की तैयारी कर रहे थे। सेंट-लूप ने मुझे सैन्य पैरोडी के कई अन्य उदाहरण दिए, या यदि कोई मानता है कि सैन्य कला नहीं बल्कि सैन्य विज्ञान है, तो स्थायी नियमों के अनुप्रयोग के उदाहरण दिए। "मैं यह नहीं कहूंगा कि युद्ध कला को विज्ञान कहना विरोधाभास होगा। और अगर युद्ध का विज्ञान है भी, तो उसके विद्वानों के बीच विविधता, विवाद और विरोधाभास मौजूद है, यह विविधता आंशिक रूप से समय की श्रेणी में भी झलकती है। यह काफी आश्वस्त करने वाला है, क्योंकि इससे यह संकेत मिलता है कि त्रुटि की बजाय सत्य का विकास हो रहा है।" बाद में उन्होंने मुझसे कहा, "इस युद्ध में सफलता की संभावना के विचारों को देखिए। पहले इस पर विश्वास किया जाता है, फिर हम मोर्चों की अभेद्यता के सिद्धांत पर लौट आते हैं, फिर संभावित लेकिन जोखिम भरी सफलता की बात करते हैं, इस बात पर कि लक्ष्य को नष्ट किए बिना आगे कदम नहीं बढ़ाना चाहिए (कट्टर पत्रकार लिखेंगे कि इसके विपरीत दावा करना सबसे बड़ी मूर्खता है), फिर इसके विपरीत, तोपखाने की बहुत हल्की तैयारी के साथ आगे बढ़ने की बात करते हैं, फिर 1870 के युद्ध के बाद से लागू एक सिद्धांत के रूप में मोर्चों की अभेद्यता की बात करते हैं, और फिर यह दावा करते हैं कि यह इस युद्ध के लिए एक गलत सिद्धांत है और इसलिए केवल एक सापेक्ष सत्य है। इस युद्ध में यह गलत इसलिए है क्योंकि भारी मात्रा में

सैन्य सामग्री का संचय हुआ है और हथियारों को परिष्कृत किया गया है (2 जुलाई, 1918 का बिदू देखें), एक ऐसा संचय जिसने पहले तो यह विश्वास दिलाया कि अगला युद्ध बहुत छोटा होगा, फिर बहुत लंबा, और अंत में निर्णायक जीत की संभावना पर फिर से विश्वास दिलाया। बिदू मित्र देशों का हवाला देते हैं..." सोम्मे, 1918 में जर्मनों का पेरिस पर आक्रमण। ठीक उसी तरह, जर्मनों की हर जीत पर कहा जाता था: 'हासिल की गई ज़मीन कुछ नहीं, जीते गए शहर कुछ नहीं, ज़रूरी तो दुश्मन की सैन्य शक्ति को नष्ट करना है।' फिर 1918 में जर्मनों ने भी यही सिद्धांत अपनाया और बिदू ने (जुलाई 1918 में) बड़े ही दिलचस्प अंदाज़ में समझाया कि कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं, कुछ ज़रूरी क्षेत्रों पर कब्ज़ा करना ही जीत का फ़ैसला करता है। यह उनकी सोच का एक विशेष पहलू भी है। उन्होंने दिखाया है कि अगर रूस को समुद्र में घेर लिया जाए, तो वह हार जाएगा और एक विशाल जेल शिविर जैसी जगह में बंद सेना का विनाश निश्चित है।

फिर भी, अगर युद्ध ने सेंट-लूप के चरित्र को नहीं बदला, तो उनकी बुद्धिमत्ता, जो वंशानुगत गुणों के कारण विकसित हुई थी, उस स्तर तक पहुँच चुकी थी जो मैंने उनमें पहले कभी नहीं देखी थी। सुनहरे बालों वाला वह नौजवान, जिसे कभी फैशनेबल महिलाएं और तर्कशास्त्री पसंद करते थे या जो वैसा बनना चाहता था, अब शब्दों से खेलने वाले सिद्धांतवादी से कितना अलग था! अपने परिवार की दूसरी शाखा की अगली पीढ़ी के लिए, ठीक वैसे ही जैसे कोई अभिनेता ब्रेसांट या डेलाने द्वारा निभाई गई भूमिका को निभा रहा हो, वह सुनहरे बालों वाला, गुलाबी और गोरा, एम. डी चार्लस का उत्तराधिकारी था, जो कभी काले थे, अब पूरी तरह सफेद। हालाँकि युद्ध के बारे में वह अपने चाचा से सहमत नहीं थे, क्योंकि वह अभिजात वर्ग के उस हिस्से से जुड़े थे जो सबसे पहले फ्रांस के लिए था,

जबकि एम. डी चार्लस मूल रूप से हार मानने वाले थे, लेकिन जिन्होंने मूल "किरदार के रचयिता" को नहीं देखा था, उनके लिए उन्होंने एक विवादकर्ता के रूप में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। "ऐसा लगता है कि हिंडेनबर्ग एक अद्भुत प्रतिभा है," मैंने उनसे कहा। "जैसे को तैसा का एक पुराना रहस्योद्घाटन या भविष्य का रहस्योद्घाटन। उन्हें दुश्मन से खेलने के बजाय, मंगिन को अपनी मनमानी करने देनी चाहिए, ऑस्ट्रिया और जर्मनी को घुटने टेकने पर मजबूर करना चाहिए और फ्रांस को मोंटेनेग्रो जैसा बनाने के बजाय तुर्की को यूरोपीय बनाना चाहिए।" "लेकिन हमें संयुक्त राज्य अमेरिका की मदद मिलेगी," मैंने सुझाव दिया। "फिलहाल मुझे केवल विभाजित राज्यों का तमाशा दिखाई दे रहा है। इटली को और अधिक रियायतें क्यों न दी जाएं और फ्रांस को ईसाई धर्म से विमुक्त करने की धमकी देकर उन्हें डराया जाए?" "अगर आपके चाचा चार्ल्स आपको सुन पाते!" मैंने कहा। "सचमुच आपको पोप को थोड़ा और नाराज करने में कोई अफसोस नहीं होगा और वह फ्रांसिस जोसेफ के सिंहासन के भविष्य को लेकर निराश होंगे। वैसे भी, वह टैलीरैंड और वियना कांग्रेस की परंपरा में हैं।" "वियना कांग्रेस का युग पूरा हो चुका है;" उन्होंने उत्तर दिया; "गुप्त कूटनीति की जगह ठोस कूटनीति अपनानी होगी। मेरे चाचा मूलतः एक कट्टर राजशाही समर्थक हैं, जो मैडम मोल की तरह कार्प मछली या आर्थर मेयर की तरह स्कार्प मछली निगल जाएंगे, बशर्ते उन्हें चैम्बॉर्ड शैली में पकाया जाए। तिरंगे झंडे से घृणा के कारण, मेरा मानना है कि वे लाल झंडे के नीचे रहना पसंद करेंगे, जिसे वे सफेद झंडे की जगह सद्भावना से स्वीकार करेंगे।" बेशक, ये केवल शब्द थे और सेंट-लूप अपने चाचा की तरह मौलिकता से भरे नहीं थे। लेकिन उनका स्वभाव उतना ही मिलनसार और मनमोहक था जितना कि दूसरे का संदेहपूर्ण और ईर्ष्यालु, और वे बालबेक की तरह ही अपने घने सुनहरे

बालों के नीचे आकर्षक और गुलाबी बने रहे। एकमात्र चीज़ जिसमें उनके चाचा उनसे आगे नहीं निकल पाते, वह थी सेंट-जर्मेन उपनगर की वह मानसिकता, जिससे वे लोग भरे हुए हैं जो खुद को इससे सबसे अलग मानते हैं, और जो उन्हें साथ ही साथ उन बुद्धिमान लोगों के लिए सम्मान देती है जो कुलीन परिवार से नहीं हैं (जो केवल कुलीन वर्ग में पनपता है और क्रांति को इतना अन्यायपूर्ण बनाता है) और मूर्खतापूर्ण आत्मसंतुष्टि। विनम्रता और गर्व, अर्जित जिज्ञासा और जन्मजात अधिकारबोध के इस मिश्रण के कारण ही एम. डी चार्लस और सेंट-लूप, अलग-अलग रास्तों पर चलते हुए और विपरीत मत रखते हुए, एक परिवर्तनशील पीढ़ी के लिए ऐसे बुद्धिजीवी बन गए थे जो हर नए विचार में रुचि रखते थे और ऐसे वक्ता थे जिन्हें कोई भी अवरोधक चुप नहीं करा सकता था। इस प्रकार, एक साधारण व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार, उन दोनों को या तो प्रतिभाशाली या उबाऊ मान सकता है।

सेंट-लूप की यात्रा को याद करते हुए, मैं श्रीमती वर्दुरिन के घर जाते समय एक लंबा चक्कर लगा चुका था और लगभग इनवैलिड्स पुल तक पहुँच ही गया था। गोथास के कारण (दूर-दूर तक) दीपक कुछ जल्दी ही जला दिए गए थे, क्योंकि ग्रीष्म ऋतु के लिए समय परिवर्तन समय से पहले ही निर्धारित कर दिया गया था (जैसे भट्टियाँ निश्चित तिथियों पर जलाई और बुझाई जाती हैं)। रात अभी भी जल्दी आ रही थी और आंशिक रूप से प्रकाशित शहर के ऊपर, आकाश के एक पूरे हिस्से में—एक ऐसा आकाश जो ग्रीष्म और शीत ऋतु को अनदेखा करता था और यह देखने की जहमत नहीं उठाता था कि साढ़े आठ बजकर साढ़े नौ बज गए हैं—अभी भी दिन का उजाला था। शहर के उस पूरे हिस्से में, जहाँ ट्रोकाडेरो के टावर हावी थे, आकाश एक विशाल फ़िरोज़ी रंग के समुद्र जैसा दिखता था, जो कम ज्वार के समय, काली चट्टानों की एक पतली रेखा या शायद

केवल मछुआरों के जालों को एक दूसरे के बगल में कतारबद्ध दिखाता था, जो छोटे बादल थे। अब फ़िरोज़ी रंग का एक सागर, जो उस विशाल पृथ्वी की परिक्रमा में अनजान मनुष्यों को अपने साथ लिए घूम रहा था, जिस पर वे अपनी ही क्रांतियों और व्यर्थ युद्धों को जारी रखने के लिए इतने पागल थे, जैसे कि यह युद्ध जो अब फ्रांस को खून से लथपथ कर रहा है। वास्तव में, आलसी, सुंदर आकाश को देखकर चक्कर आने लगता था, जो अपने समय-सारणी को बदलने की कृपा नहीं करता था और अपने नीले रंग में प्रकाशित शहर के ऊपर लंबे दिन को और भी बढ़ा देता था; यह अब फैला हुआ सागर नहीं, बल्कि नीले हिमनदों का एक ऊर्ध्वाधर क्रम था। और ट्रोकाडेरो के टावर, जो उन फ़िरोज़ी ऊँचाइयों के इतने करीब प्रतीत होते थे, वास्तव में उनसे उतने ही दूर थे जितने स्विट्ज़रलैंड के एक शहर में वे जुड़वां टावर, जो दूर से देखने पर पर्वतीय ढलानों के पड़ोसी प्रतीत होते हैं। मैं वापस लौट आया, लेकिन जैसे ही मैंने इनवैलिड्स ब्रिज को पीछे छोड़ा, आसमान में दिन का उजाला मिट चुका था, पूरे शहर में लगभग कोई रोशनी नहीं थी। कूड़ेदानों से टकराते हुए, रास्ता भटकते हुए, मैं अचानक ही, कई अनजान गलियों के भूलभुलैया में भटकने के बाद, बुलेवार्ड्स पर पहुँच गया। वहाँ पूर्व का आभास फिर से ताजा हो गया और डायरेक्टोइरे के पेरिस की यादों के बाद 1815 के पेरिस की यादें ताजा हो गईं। तब की तरह ही, मित्र देशों की सेनाओं की वर्दी पहने सैनिकों का विविध जुलूस, ढीली लाल पतलून पहने अफ्रीकी सैनिक, सफेद पगड़ी वाले हिंदू, मेरे लिए उस पेरिस से, जहाँ मैं चल रहा था, एक काल्पनिक शहर की छवि बना रहे थे, जो पूरब में वेशभूषा और त्वचा के रंग में तो एकदम सटीक था, लेकिन दृश्यों में मनमाने ढंग से काल्पनिक था, ठीक वैसे ही जैसे कार्पैसियो ने अपने शहर को यरूशलेम या कॉन्स्टेंटिनोपल बना दिया था, जिसमें रंगों का ऐसा अद्भुत मिश्रण था

जो इससे अधिक विविध नहीं था। दो ज़ुआवे लोगों के पीछे चलते हुए, जिन्होंने मानो उसे देखा ही नहीं, मैंने एक बड़े, हट्टे-कट्टे आदमी को मुलायम, फेल्ट की टोपी और लंबे लबादे में देखा। उसके बैंगनी रंग के चेहरे को देखकर मैं हिचकिचा रहा था कि कहीं वह कोई अभिनेता या चित्रकार तो नहीं है, जो अनगिनत समलैंगिक घोटालों के लिए उतना ही कुख्यात हो। वैसे भी, मुझे पूरा यकीन था कि मैं उस राहगीर को नहीं जानता था। जब उसकी नज़र मुझसे मिली, तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि वह झिझक रहा था और मानो रुककर मुझसे बात करना चाहता हो, जैसे कोई यह दिखाना चाहता हो कि आप उसे उसके उस काम में दखल नहीं दे रहे हैं जिसे वह गुप्त रखना चाहता था। एक पल के लिए मैंने खुद से पूछा कि मुझे कौन शुभ संध्या कह रहा है। वह एम. डी चार्लस थे। उनके बारे में कहा जा सकता है कि उनकी बीमारी का विकास या उनके अवगुण की क्रांति उस चरम बिंदु पर पहुँच गई थी जहाँ व्यक्ति का छोटा, आदिम व्यक्तित्व, उसके पैतृक गुण, उसके साथ आने वाले दोष या वंशानुगत बुराई के कारण पूरी तरह से ढक गए थे। एम. डी चार्लस अपनी हद तक जा चुके थे, या यूँ कहें कि वे अपने बदले हुए स्वरूप और आदतों से इतने प्रभावित हो चुके थे कि न केवल उनकी, बल्कि कई अन्य विकृत लोगों की भी, कि पहले तो मैंने उन्हें खुले रास्ते पर घूमने वाले उन वेश्याओं में से एक समझ लिया था; वास्तव में, वे उन्हीं में से एक थे जो एम. डी चार्लस नहीं थे, न ही कोई महान जागीरदार, न ही कोई बुद्धिमान और कल्पनाशील व्यक्ति, और जो बैरन से केवल उस सामान्य दिखावे के कारण मिलते-जुलते थे जो उन सभी में और उनमें भी समान था, और जिसे करीब से देखने पर सब कुछ छिपा हुआ लगता था। इसी तरह, श्रीमती वर्दुरिन के घर जाने की इच्छा से, मेरी मुलाकात एम. डी चार्लस से हुई। और निश्चित रूप से, मुझे उन्हें उनके घर पर उस रूप में नहीं मिलना

चाहिए था जैसा मैं पहले मिलता था; उनका झगड़ा और भी बढ़ गया था और श्रीमती वर्दुरिन अक्सर मौजूदा हालात का फायदा उठाकर उन्हें और बदनाम करती थीं। लंबे समय से यह कहते आ रही थीं कि वह बेकार हो चुका है, उसका करियर खत्म हो चुका है, और दिखावटी धृष्टता में वह सबसे आडंबरी लोगों से भी ज़्यादा पुराने ख्यालों का है। अब उन्होंने इस निंदा को एक सामान्य आरोप में समेटते हुए कहा कि वह "युद्ध-पूर्व" है। छोटे से समूह के अनुसार, युद्ध ने उसके और वर्तमान के बीच एक ऐसी खाई खड़ी कर दी थी जिसने उसे पूरी तरह से मृत अतीत में धकेल दिया था। इसके अलावा—और यह बात राजनीतिक जगत से ज़्यादा संबंधित थी, जिसे कम जानकारी थी—श्रीमती वर्दुरिन ने उसे पूरी तरह से खत्म हो चुका, एक ऐसा व्यक्ति बताया जो सामाजिक और बौद्धिक दोनों ही दृष्टि से पूरी तरह से बहिष्कृत था। "वह किसी से नहीं मिलता, कोई उसका स्वागत नहीं करता," उन्होंने एम. बोंटेम्प्स से कहा, जिन्हें उन्होंने आसानी से मना लिया था। और उनकी बातों में कुछ सच्चाई भी थी। एम. डी चार्लस की स्थिति बदल चुकी थी। समाज के प्रति उनकी परवाह कम होती जा रही थी, अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण वे हर किसी से झगड़ते रहते थे और अपनी सामाजिक अहमियत के पक्के यकीन के चलते समाज के संभ्रांत लोगों से मेल-मिलाप करने से कतराते थे। वे एक तरह से अलग-थलग जीवन जी रहे थे, जो श्रीमती डी विलेपारिसिस की मृत्यु के समय के अलगाव से अलग था। यह अलगाव अभिजात वर्ग के बहिष्कार के कारण नहीं था, बल्कि जनता की नज़र में दो कारणों से और भी बदतर प्रतीत होता था। श्री डी चार्लस की बदनामी, जो अब जगजाहिर थी, के कारण नासमझ लोगों का मानना था कि लोग उनके समाज में आना-जाना नहीं करते थे, जबकि असल में वे खुद ही स्वेच्छा से उनसे मिलने नहीं जाते थे। इस तरह उनके चिड़चिड़े स्वभाव का असर उन लोगों

की शत्रुता के रूप में दिखाई देता था जिन पर वे अपना गुस्सा निकालते थे। इसके अलावा, श्रीमती डी विलेपारिसिस के पास एक मजबूत सुरक्षा कवच था; उनका परिवार। लेकिन एम. डी चार्लस ने अपने और अपने परिवार के बीच झगड़े और बढ़ा दिए थे, जो उन्हें वैसे भी नीरस लगते थे, खासकर पुराने उपनगरीय इलाके, यानी कौरवॉइसियर परिवार। कला के क्षेत्र में इतने साहसिक प्रयास करने वाले, कौरवॉइसियर परिवार के विपरीत, उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि बर्गोट को सबसे ज्यादा दिलचस्पी पुराने उपनगरीय इलाके से उनके संबंधों में होती, उनके पास रू डे ला चेज़ या प्लेस डू पैलेस बॉर्बन और रू गारंसियर में रहने वाले अपने चचेरे भाइयों के लगभग प्रांतीय जीवन का वर्णन करने का साधन होता। एक कम आध्यात्मिक और अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण श्रीमती वर्दुरिन का था, जो यह दिखावा करती थीं कि वह फ्रांसीसी नहीं हैं। "उनकी सही राष्ट्रीयता क्या है? क्या वह ऑस्ट्रियाई नहीं हैं?" एम. वर्दुरिन ने मासूमियत से पूछा। "ओह, नहीं, बिल्कुल नहीं," काउंटेस मोले ने उत्तर दिया, जिनका पहला हावभाव उनकी कटुता के बजाय उनकी समझदारी को दर्शाता था। “ऐसा कुछ नहीं, वह प्रशियाई है,” ला पैट्रोन ने कहा: “मैं जानती हूँ, मैं आपको बता रही हूँ। उसने हमें कई बार बताया है कि वह प्रशिया का वंशानुगत कुलीन और एक ‘सर्वशक्तिमान महामहिम’ है।” “फिर भी, नेपल्स की रानी ने मुझे बताया—” “जहाँ तक उसकी बात है, आप जानती हैं कि वह एक भयानक जासूस है,” श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, जो उस शाम अपने घर पर उस पदच्युत शासक के रवैये को नहीं भूली थीं। “मैं इसे पूरी तरह जानती हूँ। वह केवल जासूसी करके ही जीती है। अगर हमारी सरकार अधिक सक्रिय होती, तो वे सभी लोग किसी यातना शिविर में होते। और वैसे भी, बेहतर होगा कि आप उस आकर्षक तरह के समाज में न जाएँ, क्योंकि मुझे पता है कि गृह मंत्री की उन पर नज़र है

और आपके घर पर निगरानी रखी जाएगी। कोई भी बात मुझे यह विश्वास नहीं दिला सकती कि दो साल के दौरान चार्लस लगातार मेरे घर पर जासूसी नहीं कर रहा था।" और शायद यह सोचते हुए कि "छोटे कबीले" के संगठन पर सबसे विस्तृत रिपोर्टों में भी जर्मन सरकार की रुचि के बारे में कुछ संदेह हो सकता है, श्रीमती वर्दुरिन ने कहा... वेरदुरिन, एक ऐसी व्यक्ति के कोमल और गोपनीय लहजे में, जो अपनी बात का महत्व जानती है और यह भी कि बिना आवाज उठाए बात अधिक महत्वपूर्ण लगती है, कहती हैं, "मैं आपको बताऊं, पहले दिन से ही मैंने अपने पति से कहा था, 'जिस तरह से इस आदमी ने हमारे घर में घुसपैठ की है, वह मुझे पसंद नहीं है। इसमें कुछ संदिग्ध है।' हमारी जागीर एक खाड़ी के पीछे एक बहुत ऊंचे स्थान पर थी। मुझे यकीन है कि जर्मनों ने उसे वहां अपनी पनडुब्बियों के लिए एक अड्डा तैयार करने का काम सौंपा था। कुछ बातों ने मुझे चौंका दिया और अब मैं उन्हें समझती हूं। उदाहरण के लिए, पहले तो वह अन्य मेहमानों के साथ ट्रेन से नहीं आया। मैंने बहुत ही विनम्रता से उसे महल में एक कमरा देने की पेशकश की थी। लेकिन उसने ऐसा बिल्कुल नहीं किया, उसने डोनसिएरेस में रहना पसंद किया जहां भारी संख्या में सैनिक तैनात थे। यह सब जासूसी की बू से भरा था।" बैरन डी चार्लस पर लगाए गए इन आरोपों में से पहले, यानी पुराने जमाने के होने के आरोप के बारे में, समाज के लोग श्रीमती वेरदुरिन को आसानी से स्वीकार करने को तैयार थे। वर्दुरिन का दृष्टिकोण। यह उनके लिए एम. डी चार्लस के प्रति कृतघ्नता थी, जो एक हद तक उनके कवि थे और सामाजिक परिवेश से एक ऐसी कविता निकालने की कला रखते थे जिसमें वे इतिहास, सौंदर्य, रमणीय दृश्य, हास्य और चंचल लालित्य को पिरोते थे। लेकिन फैशनेबल लोग, जो कविता को समझने में असमर्थ थे, क्योंकि उन्हें अपने जीवन में कविता कहीं नहीं मिली, उसे कहीं और

खोजते थे और एम. डी चार्लस से हज़ार फीट ऊपर उन लोगों को रखते थे जो उनसे कहीं अधिक हीन थे, जो समाज को तुच्छ समझने का दिखावा करते थे और दूसरी ओर सामाजिक और राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांतों का प्रचार करते थे। एम. डी चार्लस हास्य की एक ऐसी शैली में आनंद लेते थे जो दिखावटी तौर पर गीतात्मक थी, जिसके द्वारा वे डचेस ऑफ X के वस्त्रों की सजीव सुंदरता का वर्णन करते थे और उन्हें एक उदात्त प्राणी के रूप में संदर्भित करते थे। इस वजह से समाज की उन महिलाओं ने उन्हें मूर्ख समझा, जो मानती थीं कि डचेस ऑफ X— एक नीरस मूर्ख हैं, कि कपड़े ऐसे पहने जाते हैं कि उन पर ध्यान न जाए, और जो खुद को ज़्यादा बुद्धिमान समझती थीं और डेसचनेल के भाषण के लिए सोरबोन या चैम्बर की ओर दौड़ पड़ती थीं। संक्षेप में, समाज के लोग एम. डी चार्लस से निराश थे, इसलिए नहीं कि वे उनसे आगे निकल गए थे, बल्कि इसलिए कि वे उनके असाधारण बौद्धिक मूल्य को कभी समझ ही नहीं पाए थे। उन्हें युद्ध-पूर्व, पुराने ज़माने का माना जाता था, क्योंकि जो लोग योग्यता को परखने में सबसे कम सक्षम होते हैं, वे बदलते फैशन को सबसे आसानी से स्वीकार कर लेते हैं; वे पिछली पीढ़ी के उन प्रतिभाशाली लोगों को गहराई से नहीं समझ पाए हैं, जिन्हें अब वे एक नई पीढ़ी का लेबल लगाकर सामूहिक रूप से निंदा कर रहे हैं, जिसे वे उतना ही कम समझ पाएंगे। एम. डी. चार्लस पर लगे दूसरे आरोप, यानी जर्मनवाद के आरोप के संबंध में, समाज के लोगों की मध्यममार्गी मानसिकता ने इसे खारिज कर दिया, लेकिन उन्हें मोरेल के रूप में एक अथक और विशेष रूप से क्रूर व्याख्याकार मिला, जिसने प्रेस और यहां तक कि समाज में भी उस पद को बरकरार रखने में कामयाबी हासिल की, जिसे एम. डी. चार्लस ने उसे उससे वंचित करने में लगने वाले प्रयास से दोगुना प्रयास करके प्राप्त किया था, और उसने बैरन का निर्दयी घृणा

के साथ पीछा किया; यह न केवल मोरेल की ओर से क्रूरता थी, बल्कि दुगुना गलत भी था, क्योंकि बैरन के साथ उसके संबंध चाहे जैसे भी रहे हों, मोरेल ने उस दुर्लभ दयालुता का अनुभव किया था जिसे उसके संरक्षक ने कई लोगों से छिपा रखा था। एम. डी चार्लस ने वायलिन वादक के साथ इतनी उदारता और इतनी कोमलता से व्यवहार किया था, अपने वचन को न तोड़ने के प्रति इतनी सावधानी बरती थी कि चार्ली के मन में उनके बारे में जो धारणा बनी हुई थी, वह किसी दुष्ट व्यक्ति की नहीं थी (ज्यादा से ज्यादा वह बैरन के दुर्गुण को एक बीमारी ही मानता था), बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की थी जिसके विचार सबसे महान थे और संवेदनशीलता सबसे उत्कृष्ट थी, एक तरह का संत। उन्होंने इस बात से इनकार भी नहीं किया कि उनसे झगड़ा होने के बावजूद उन्होंने अपने रिश्तेदारों से पूरी ईमानदारी से कहा, "आप अपने बेटे को उनके भरोसे छोड़ सकते हैं, उनका उस पर केवल अच्छा प्रभाव ही पड़ेगा।" वास्तव में, जब उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश की, तो मन ही मन उन्होंने उनके दुर्गुणों का नहीं, बल्कि उनके गुणों का उपहास किया। युद्ध से पहले, कुछ छोटे-छोटे अखबार, जिन्हें तथाकथित "विशेषज्ञ" ही देख पाते थे, एम. डी चार्लस को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाने लगे थे। इनमें से एक का शीर्षक था "एक पांडित्यपूर्ण डचेस का दुस्साहस, बैरोनेस मैडम का बुढ़ापा..." वर्दुरिन ने अपने परिचितों को उधार देने के लिए पचास प्रतियाँ खरीदी थीं, और श्री वर्दुरिन ने यह कहते हुए कि वोल्टेयर ने स्वयं इससे बेहतर कुछ नहीं लिखा, उन्हें अपने मित्रों को पढ़कर सुनाया। युद्ध के बाद से केवल बैरन के उलटफेर की ही निंदा नहीं की गई, बल्कि उनकी कथित जर्मन राष्ट्रीयता की भी निंदा की गई। श्री डी चार्लस के उपनाम "फ्राउ बॉश" और "फ्राउ वोह डेर बॉश" थे। एक काव्य रचना, जिसका शीर्षक "उने एलेमांडे" था, बीथोवेन की कुछ नृत्य

धुनों से प्रेरित थी। अंत में, दो लघु उपन्यास, अंकल डी'अमेरिक एट तांते डे फ्रैंकफोर्ट और गैलार्ड डी'एरियर, जिन्हें छोटे समूह ने प्रूफरीडिंग के लिए पढ़ा था, ब्रिचोट को भी बहुत प्रसन्न कर गए, जिन्होंने टिप्पणी की, "ध्यान रहे कि सबसे महान और शक्तिशाली अनास्तासिया हमें बर्बाद न कर दे।" लेख अपने हास्यास्पद शीर्षकों से कहीं बेहतर थे। उनकी शैली बर्गोट से प्रेरित थी, लेकिन एक ऐसे तरीके से जिसे शायद केवल मैं ही पहचान सकता था। बर्गोट के लेखन का मोरेल पर कोई प्रभाव नहीं था। यह प्रेरणा इतनी अनोखी और असाधारण तरीके से उत्पन्न हुई थी कि मुझे इसका उल्लेख यहाँ करना आवश्यक है। मैंने यहाँ बर्गोट के शब्दों के चयन और उच्चारण के विशेष तरीके का उल्लेख किया है। मोरेल, जो उनसे शुरुआती दिनों में मिले थे, उस समय उनकी नकल करते थे और उनकी बोलने की शैली को हूबहू दोहराते थे, ठीक उन्हीं शब्दों का प्रयोग करते थे जिनका प्रयोग बर्गोट करते थे। इस प्रकार, मोरेल ने बर्गोट की शैली में बातचीत को लिखा, लेकिन उन्हें बर्गोट की लेखन शैली में रूपांतरित नहीं किया। चूंकि बहुत कम लोगों ने बर्गोट से बात की थी, इसलिए वे उस लहजे को नहीं पहचान पाए जो उनकी शैली से बिल्कुल अलग था। मौखिक प्रेरणा इतनी दुर्लभ है कि मैं इसका उल्लेख यहाँ करना चाहता था; क्योंकि इससे केवल निष्फल फूल ही उगते हैं।

प्रेस ब्यूरो में कार्यरत मोरेल, जिसकी अनियमित स्थिति के बारे में किसी को पता नहीं था, ने अपने अंदर फ्रांसीसी होने का जुनून लिए, मानो कॉम्ब्रे के अंगूरों के रस की तरह रगों में उबल रहा हो, यह बहाना बनाया कि युद्ध के दौरान दफ्तर में काम करना उसके लिए पर्याप्त नहीं है और वह सेना में भर्ती होना चाहता है (जो वह जब चाहे तब कर सकता था)। वहीं, श्रीमती वर्दुरिन ने उसे पेरिस में ही रहने के लिए मनाने की पूरी कोशिश की। वह इस बात से निश्चित रूप से नाराज़ थीं कि एम. डी

कैम्ब्रेमर, अपनी उम्र के बावजूद, एक सरकारी नौकरी कर रहे थे, और वह हर उस आदमी के बारे में टिप्पणी करती थीं जो उनके घर नहीं आता था, "वह कहाँ छिप गया है?" और अगर कोई कहता कि फलां व्यक्ति पहले दिन से ही मोर्चे पर था, तो वह बेशर्मी से या झूठ बोलने की आदत के चलते झूठ बोलकर जवाब देतीं, "बिल्कुल नहीं, वह पेरिस से बाहर कभी नहीं निकला, वह मंत्रालयों के आसपास टहलने जैसा ही कुछ खतरनाक काम कर रहा है। मैं आपको बता रही हूँ कि मुझे पता है कि मैं क्या कह रही हूँ क्योंकि मैंने यह बात उस व्यक्ति से सुनी है जिसने उसे देखा है।" लेकिन "वफादारों" के मामले में बात अलग थी। वह नहीं चाहती थी कि वे जाएं और युद्ध को एक "उबाऊ काम" बताती थी जो उन्हें उससे दूर ले जाता था; और उसने उन्हें जाने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया, जिससे उसे दोहरी खुशी मिलती थी: उन्हें रात के खाने पर बुलाना और जब वे नहीं आते थे या चले जाते थे, तो उनकी कायरता के लिए उनकी पीठ पीछे उनकी निंदा करना। "वफादारों" को इस छल में शामिल होना पड़ा और जब मोरेल ने अवज्ञा का नाटक किया तो वह दुखी हुई और उससे कहा, "प्रेस ब्यूरो में सेवा करके तुम अपना फर्ज निभा रहे हो, और मोर्चे पर होने से भी ज्यादा। जो जरूरी है वह है उपयोगी होना, सचमुच युद्ध में हिस्सा लेना, उसका हिस्सा बनना। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो युद्ध का हिस्सा तो होते हैं लेकिन उनका कोई भोलापन नहीं होता; तुम युद्ध का हिस्सा हो और चिंता मत करो, हर कोई जानता है कि तुम हो और कोई तुम्हारे खिलाफ कुछ नहीं कह सकता।" पहले हालात अलग थे, जब पुरुषों की संख्या इतनी कम नहीं थी और जब उन्हें अब की तरह मुख्य रूप से महिलाओं को ही रखना पड़ता था, तब अगर उनमें से किसी की माँ का देहांत हो जाता, तो वह उन्हें यह समझाने में ज़रा भी संकोच नहीं करतीं कि वे निःसंकोच उनके समारोहों में आते रह सकते हैं। "दुःख दिल में होता

है। अगर आप किसी बॉल पार्टी में जाएँ (वह कभी कोई बॉल पार्टी नहीं देती थीं), तो मैं सबसे पहले आपको यही सलाह दूँगी कि न जाएँ, लेकिन यहाँ मेरी छोटी-सी बुधवार की पार्टियों में या थिएटर के किसी बॉक्स में, कोई भी चौंक नहीं सकता। हर कोई जानता है कि आप कितने दुखी हैं।" अब, हालांकि, पुरुषों की संख्या कम थी, शोक अधिक बार मनाया जाता था, उन्हें अब उन्हें समाज में जाने से रोकने की ज़रूरत नहीं थी, युद्ध ने यह सुनिश्चित कर दिया था। लेकिन वह उन्हें यह समझाना चाहती थीं कि पेरिस में रुककर वे फ्रांस के लिए अधिक उपयोगी होंगे, ठीक उसी तरह जैसे वह पहले उन्हें समझाती थीं कि दिवंगत आत्मा उन्हें आनंदित देखकर अधिक प्रसन्न होती। फिर भी, उन्हें बहुत कम पुरुष मिलते थे, और कभी-कभी, शायद, उन्हें एम. डी चार्लस के साथ हुए उस संबंध विच्छेद का अफ़सोस होता था, जिसे कभी ठीक नहीं किया जा सका।

लेकिन भले ही एम. डी चार्लस और मैडम वर्दुरिन का आमना-सामना बंद हो गया था, फिर भी दोनों—कुछ मामूली अंतरों के साथ—मानो कुछ भी नहीं बदला हो, मैडम वर्दुरिन मेहमानों का स्वागत करती रहीं और एम. डी चार्लस अपनी निजी सुख-सुविधाओं में मग्न रहे। उदाहरण के लिए, मैडम वर्दुरिन के घर पर, कॉटार्ड l'Ile du Rève के कर्नल की वर्दी में मेहमानों के स्वागत में उपस्थित रहते थे, जो कुछ हद तक हैती के एडमिरल की वर्दी जैसी थी, और जिसके कॉलर पर लगा चौड़ा आसमानी नीला रिबन Enfants de Marie की याद दिलाता था; एम. डी चार्लस की बात करें तो, खुद को ऐसे शहर में पाकर जहाँ अब तक उनकी पसंद के परिपक्व पुरुष गायब हो चुके थे, उन्होंने, कुछ ऐसे फ्रांसीसी पुरुषों की तरह जो फ्रांस में महिलाओं के पीछे भागते हैं लेकिन उपनिवेशों में रहते हैं, पहले ज़रूरत से, फिर आदत से, छोटे लड़कों के प्रति आकर्षण विकसित कर लिया था।

इसके अलावा, सैलून वर्दुरिन की एक विशिष्ट विशेषता जल्द ही गायब हो गई, क्योंकि कॉटार्ड की मृत्यु "शत्रु का सामना करते हुए" हुई, जैसा कि अखबारों ने कहा, हालांकि उन्होंने कभी पेरिस नहीं छोड़ा था; असल में, उन्होंने अपने जीवनकाल में अत्यधिक काम किया था और उनके कुछ समय बाद ही एम. वर्दुरिन का निधन हो गया, जिनकी मृत्यु से केवल एक व्यक्ति को ही दुख हुआ—क्या आप विश्वास करेंगे?—एल्स्टिर। मैं उनके काम का एक ऐसे दृष्टिकोण से अध्ययन करने में सक्षम था जो एक हद तक अंतिम था। लेकिन, जैसे-जैसे वे बूढ़े होते गए, उन्होंने इसे अंधविश्वासपूर्वक उस समाज से जोड़ दिया जिसने उनके मॉडल प्रदान किए थे और, उनकी अंतर्ज्ञान की जादूगरी ने उन्हें कलाकृतियों में रूपांतरित करने के बाद, उन्हें उनका दर्शक वर्ग दिया था। वे इस विश्वास की ओर अधिकाधिक झुकते गए कि सुंदरता का एक बड़ा हिस्सा वस्तुओं में निहित है, जैसा कि उन्होंने पहले मैडम में पूजा की थी। एल्स्टिर के लिए, उस गंभीर प्रकार की सुंदरता का, जिसका उन्होंने टेपेस्ट्री में अध्ययन किया था और जिसे उन्होंने अपने चित्रों में उतारा था, एम. वर्दुरिन की मृत्यु ने उन्हें नश्वर सामाजिक ढांचे के अंतिम निशानों में से एक के लुप्त होने का संकेत दिया, जो उसी क्षण लुप्त हो रहा था जैसे पहनावे के फैशन जो इसका हिस्सा हैं—वह ढांचा जो कला को सहारा देता है और उसकी प्रामाणिकता को प्रमाणित करता है, ठीक उसी तरह जैसे क्रांति, जिसने अठारहवीं शताब्दी की भव्यता को नष्ट करते हुए, उत्सवों के चित्रकार को व्याकुल कर दिया होता या रेनॉयर को तब पीड़ा पहुँचाई होती जब मोंटमार्ट्रे और मौलिन डे ला गैलेट गायब हो गए। लेकिन, सबसे बढ़कर, एम. वर्दुरिन के साथ वे आँखें, वह मस्तिष्क भी लुप्त हो गया, जिसने उनके चित्र की सबसे प्रामाणिक दृष्टि धारण की थी, जिसमें वह चित्र, मानो, एक संजोई स्मृति के रूप में जीवित था। निःसंदेह

ऐसे नौजवान सामने आए थे जिन्हें चित्रकला से प्रेम था, लेकिन एक अलग तरह की चित्रकला से। उन्होंने स्वान और एम. वर्दुरिन की तरह व्हिस्लर से कला-बोध की शिक्षा या मोनेट से सत्यबोध की शिक्षा नहीं ली थी, जिससे वे एल्स्टिर का निष्पक्ष मूल्यांकन कर पाते! इसके अलावा, एम. वर्दुरिन, जिनसे उनका वर्षों पहले मतभेद हुआ था, की मृत्यु के बाद वे और भी अकेले हो गए, मानो उनके काम की कुछ सुंदरता, उस सौंदर्यबोध के साथ गायब हो गई हो जो तब तक दुनिया में विद्यमान था।
एम. डी चार्लस के सुख-सुविधाओं में जो बदलाव आया था, वह रुक-रुक कर ही होता रहा। मोर्चे से लगातार पत्राचार करते रहने के कारण, उनके पास छुट्टी पर घर आए हुए अनुभवी पुरुषों की कमी नहीं थी। इसलिए, सामान्य तौर पर, श्रीमती वर्दुरिन का आना-जाना जारी रहा और एम. डी चार्लस अपनी सुख-सुविधाओं में ऐसे मग्न रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो। और फिर भी दो वर्षों तक फ्रांस नामक विशाल मानव इकाई, जिसकी भौतिक दृष्टि से भी अपार सुंदरता का अनुभव तभी किया जा सकता है जब कोई लाखों व्यक्तियों के सामंजस्य को समझे, जो विभिन्न रूपों की कोशिकाओं की तरह इसे भरते हैं, जैसे कई छोटे आंतरिक बहुभुज इसकी परिधि की अंतिम सीमा तक फैले हुए हैं, और यदि कोई इसे उसी पैमाने पर देखे जिस पैमाने पर एक मानव शरीर को देखा जाता है, यानी मोंट ब्लैंक जितना विशाल, जर्मनी नामक व्यक्तियों के उस दूसरे विशाल समूह के साथ एक भयंकर सामूहिक संघर्ष का सामना कर रही थी। उस समय जब मैं लोगों की बातों पर विश्वास करता था, तो मुझे जर्मनी, फिर बुल्गारिया, फिर ग्रीस पर विश्वास करने का प्रलोभन हुआ होगा जब उन्होंने अपने शांतिपूर्ण इरादों की घोषणा की थी। लेकिन अल्बर्टीन और फ्रांस्वा के साथ बिताए समय ने मुझे उनके अनकहे इरादों पर शक करने की आदत डाल दी थी, इसलिए मैंने विलियम द्वितीय, बुल्गारिया के फर्डिनेंड

या ग्रीस के कॉन्स्टेंटाइन के किसी भी शब्द को, चाहे वह कितना भी सही क्यों न लगे, अपनी अंतरात्मा को धोखा देने नहीं दिया, जो उनमें से प्रत्येक की साजिश को भांप लेती थी। निःसंदेह फ्रांस्वा और अल्बर्टीन के साथ मेरे झगड़े केवल छोटे-मोटे व्यक्तिगत झगड़े थे, जिनका महत्व केवल मनुष्य के उस छोटे से आध्यात्मिक शरीर के जीवन से था। लेकिन जिस प्रकार जानवरों के शरीर होते हैं, मानव शरीर, अर्थात् कोशिकाओं का समूह, जो अपने आप में एक इकाई के संदर्भ में पर्वत के समान विशाल होते हैं, उसी प्रकार व्यक्तियों के विशाल संगठित समूह होते हैं जिन्हें हम राष्ट्र कहते हैं; उनका जीवन केवल उन कोशिकाओं के जीवन को दोहराता और बढ़ाता है, और जो इन कोशिकाओं के रहस्य, प्रतिक्रियाओं और नियमों को समझने में सक्षम नहीं है, वह राष्ट्रों के बीच संघर्षों के बारे में बात करते समय केवल खोखले शब्द ही बोलेगा। लेकिन यदि वह व्यक्तियों के मनोविज्ञान का पारखी है, तो आमने-सामने खड़े इन विशाल जनसमूहों की भीड़ उसकी दृष्टि में दो पात्रों के बीच के संघर्ष से कहीं अधिक भयावह सुंदरता धारण कर लेगी, और वह उन्हें उस पैमाने पर देखेगा जिस पैमाने पर एक लंबे आदमी का शरीर उन छोटे-छोटे बहुभुजों से घिरा हुआ दिखाई देगा जिन्हें एक घन मिलीमीटर भरने के लिए दस हजार से अधिक बहुभुजों की आवश्यकता होगी। इस प्रकार कुछ समय पहले तक, विभिन्न आकृतियों के लाखों छोटे बहुभुजों से घिरी हुई विशाल फ्रांस की आकृति और उससे भी अधिक बहुभुजों से भरी हुई जर्मनी की आकृति में एक ऐसा ही झगड़ा चल रहा था, जो कुछ हद तक व्यक्तियों के बीच होता है।

लेकिन उनके बीच चल रहे प्रहार उन अनगिनत मुक्केबाजी मुकाबलों के नियमों द्वारा नियंत्रित थे, जिनके सिद्धांत सेंट-लूप ने मुझे समझाए थे। और चूंकि, व्यक्तियों के दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो वे विशाल समूह

थे, इसलिए यह झगड़ा एक विशाल और भव्य रूप धारण कर लेता था, मानो लाखों लहरों से उमड़ता हुआ सागर चट्टानों की एक लंबी श्रृंखला को ध्वस्त करने का प्रयास कर रहा हो, या विशाल हिमनद अपने धीमे और विनाशकारी कंपन से उस पर्वत की संरचना को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हों जिसके चारों ओर वे स्थित हैं। इसके बावजूद, इस वृत्तांत में वर्णित कई लोगों, विशेष रूप से एम. डी चार्लस और वर्दुरिन परिवार के लिए जीवन लगभग वैसा ही चलता रहा, मानो जर्मन उनके इतने करीब न आए हों; एक तात्कालिक खतरे के रूप में केंद्रित होने के बावजूद, यह एक स्थायी खतरा बना रहता है, जिसे अगर हम न समझें तो हम पूरी तरह से अप्रभावित रहते हैं। लोग आदत के चलते अपने सुखों का पीछा करते हैं, बिना यह सोचे कि यदि क्षीण करने वाले और संयमित करने वाले प्रभाव समाप्त हो जाएं, तो इन्फ्यूसोरिया का प्रसार अपने चरम पर पहुंच जाएगा, यानी कुछ ही दिनों में लाखों मील की छलांग लगाकर एक घन मिलीमीटर से सूर्य से दस लाख गुना बड़े द्रव्यमान में परिवर्तित हो जाएगा, साथ ही उन पदार्थों की सारी ऑक्सीजन नष्ट कर देगा जिन पर हम जीवित हैं, कि फिर न तो मानवता होगी, न जानवर, न ही पृथ्वी। और, इस बात की जरा भी समझ के बिना कि सूर्य की स्पष्ट अपरिवर्तनीयता के पीछे छिपी निरंतर और उन्मत्त ऊर्जा द्वारा आकाश में एक अपूरणीय और पूरी तरह से संभव तबाही हो सकती है, वे अपने काम में लगे रहते हैं, इन दो दुनियाओं के बारे में सोचे बिना, एक उनके लिए बहुत छोटी है, दूसरी बहुत बड़ी है, जिससे वे हमारे चारों ओर मंडरा रहे ब्रह्मांडीय खतरे को समझ नहीं पाते हैं। इस प्रकार वर्दुरिन परिवार ने अपने रात्रिभोज दिए (श्रीमान वर्दुरिन की मृत्यु के तुरंत बाद, केवल श्रीमती वर्दुरिन ही) और श्री डी चार्लस अपने सुख-सुविधाओं में मग्न रहे, इस बात से अनभिज्ञ कि जर्मन सेना—जो वास्तव में एक लगातार नवीनीकृत हो रही रक्तपात की दीवार से गतिहीन

थी—पेरिस से एक घंटे की कार ड्राइव की दूरी पर थी। फिर भी, यह कहा जा सकता है कि वर्दुरिन परिवार ने इस बारे में सोचा होगा, क्योंकि उनके पास एक राजनीतिक बैठक होती थी जहाँ सेनाओं और बेड़ों की स्थिति पर प्रतिदिन चर्चा होती थी। वास्तव में, उन्होंने नष्ट हुए रेजिमेंटों और डूबे हुए नाविकों की उन भीषण मौतों के बारे में सोचा होगा, लेकिन एक विपरीत प्रक्रिया हमारे कल्याण से संबंधित चीजों को इस हद तक बढ़ा देती है और जो चीजें इससे संबंधित नहीं हैं उन्हें इतनी बड़ी संख्या में विभाजित कर देती है कि लाखों अज्ञात लोगों की मृत्यु हमें सूखे की सर्दी से ज्यादा अप्रिय रूप से प्रभावित नहीं करती। श्रीमती वर्दुरिन, जिन्हें कॉफी में डुबोने के लिए क्रोइसैन न मिलने के कारण सिरदर्द होता था, ने कॉटार्ड से एक आदेश प्राप्त किया था जिससे वे पहले बताए गए रेस्तरां में क्रोइसैन बनवा सकें। अधिकारियों से यह आदेश प्राप्त करना लगभग उतना ही कठिन था जितना किसी जनरल का नामांकन। जिस सुबह अखबारों में लुसिटानिया के डूबने की खबर छपी, उसी सुबह उन्होंने अपना पहला क्रोइसैन फिर से खाना शुरू किया। क्रोइसैन को कॉफी में डुबोते हुए, उन्होंने अखबार को इस तरह रखा कि वह खुला रहे और उन्हें दूसरे हाथ से क्रोइसैन डुबोने का काम न रोकना पड़े, और भय से कहा, "कितना भयानक! यह सबसे भयानक त्रासदियों से भी ज्यादा डरावना है।" लेकिन डूबते हुए लोग उन्हें हजार गुना छोटे लग रहे होंगे, क्योंकि इन दुखद विचारों में डूबे रहने के साथ-साथ वे अपना मुंह भर रही थीं और उनके चेहरे पर जो भाव थे, संभवतः क्रोइसैन के स्वाद से, जो उनके सिरदर्द का एक अनमोल इलाज था, वह शांत संतुष्टि का था।

एम. डी चार्लस ने फ्रांस की जीत की तीव्र इच्छा रखने से कहीं बढ़कर काम किया; बिना खुलकर कहे, वे चाहते थे कि जर्मनी की जीत न हो, तो कम से कम वह विनाश से बच जाए, जैसा कि सब चाहते थे। इसका

कारण यह था कि झगड़ों में राष्ट्र कहलाने वाले व्यक्तियों के विशाल समूह कुछ हद तक व्यक्तियों की तरह व्यवहार करते हैं। उनका तर्क उनके भीतर होता है और प्रेम-विवाद या घरेलू विवाद में उलझे लोगों की तरह ही भावनाओं से निरंतर रूपांतरित होता रहता है, जैसे कि बेटे का अपने पिता से, रसोइए का अपनी मालकिन से, या स्त्री का अपने पति से। जो गलत होता है वह खुद को सही मानता है, जैसा कि जर्मनी के मामले में हुआ था, और जो सही होता है वह ऐसे तर्कों से अपने पक्ष को पुष्ट करता है जो उसे केवल इसलिए अकाट्य प्रतीत होते हैं क्योंकि वे उसके क्रोध को भड़काते हैं। व्यक्तियों के बीच इन झगड़ों में, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई एक पक्ष सही है, सबसे कारगर तरीका है कि आप स्वयं उस पक्ष का हिस्सा बन जाएं; कोई भी दर्शक कभी भी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो सकता। और यदि कोई व्यक्ति किसी राष्ट्र का अभिन्न अंग है, तो वह स्वयं उस राष्ट्र का एक मात्र अंश है। लोगों के दिमाग में शब्दों का अंबार लगाना व्यर्थ है। यदि युद्ध के किसी नाजुक दौर में किसी फ्रांसीसी को बताया जाता कि उसका देश हारने वाला है, तो वह इतना हताश हो जाता मानो उसे स्वयं "बर्था" (जर्मनी) द्वारा मार डाला जाने वाला हो। वास्तव में, यदि कोई व्यक्ति किसी राष्ट्र का अभिन्न अंग है, तो वह अपने दिमाग में आशा भर लेता है, जो आत्मरक्षा की एक सहज प्रवृत्ति है। जर्मनी नामक देश के दावों में जो झूठ है, उसे अनदेखा करना और फ्रांस नामक देश के हर दावे में न्याय देखना, इसका सबसे पुख्ता तरीका यह नहीं था कि किसी जर्मन में विवेक की कमी हो और किसी फ्रांसीसी में वह गुण हो, बल्कि यह था कि दोनों देशभक्त हों। एम. डी चार्लस, जिनमें दुर्लभ नैतिक गुण थे, जो दया के पात्र थे, उदार थे, स्नेह और भक्ति से परिपूर्ण थे, इसके विपरीत, कई कारणों से, जिनमें से एक यह था कि उनकी माता बवेरिया की डचेस थीं, देशभक्ति से रहित

थे। परिणामस्वरूप, वह जर्मनी के साथ-साथ फ्रांस के भी उतने ही हिस्सेदार थे। यदि मुझमें देशभक्ति की भावना न होती, और मैं स्वयं को फ्रांस के एक हिस्से के रूप में न देखता, तो मुझे लगता है कि इस विवाद को लेकर मेरा दृष्टिकोण पहले जैसा नहीं होता। किशोरावस्था में, जब मैं सुनी हुई बातों पर पूरी तरह विश्वास करता था, तो जर्मन सरकार द्वारा सद्भावना का दावा सुनने पर मैं निश्चित रूप से उस पर विश्वास कर लेता, लेकिन अब मुझे लंबे समय से यह एहसास हो गया है कि हमारे विचार हमेशा हमारे शब्दों से मेल नहीं खाते।

लेकिन वास्तव में मैं कल्पना ही कर सकता हूँ कि अगर मैं फ्रांस नामक एजेंट का सदस्य न होता तो क्या करता, जैसा कि अल्बर्टीन के साथ मेरे झगड़ों में हुआ था, जब मेरी उदास शक्ल और मेरा घुटता गला, मेरे अस्तित्व के हिस्से के रूप में, मेरे स्वार्थ में इतने गहरे रूप से लिप्त थे कि मैं किसी भी प्रकार का तटस्थ भाव नहीं रख पाया। एम. डी चार्लस का मामला पूर्ण था। चूंकि वह केवल एक दर्शक थे, इसलिए हर बात का उन पर जर्मन-प्रेम का प्रभाव पड़ा क्योंकि, यद्यपि वे वास्तव में फ्रांसीसी नहीं थे, वे फ्रांस में रहते थे। वे बहुत तीक्ष्ण बुद्धि के थे और हर देश में मूर्खों की संख्या बाकी लोगों से अधिक होती है; निस्संदेह, यदि वे जर्मनी में रहते तो अन्यायपूर्ण कारण का जोशीले अंदाज में बचाव करने वाले जर्मन मूर्ख उन्हें उतना ही परेशान करते; लेकिन फ्रांस में रहते हुए, न्यायपूर्ण कारण का जोशीले अंदाज में बचाव करने वाले फ्रांसीसी मूर्खों ने भी उन्हें कम परेशान नहीं किया। न्याय की सेवा में भी, भावनाओं का तर्क कभी भी उस व्यक्ति द्वारा अकाट्य नहीं हो सकता जो तटस्थ रहता है। एम. डी चार्लस ने देशभक्तों के प्रत्येक झूठे तर्क को बारीकी से देखा। एक मूर्ख व्यक्ति को सही होने और सफलता की निश्चितता से जो संतुष्टि मिलती है, वह विशेष रूप से परेशान करने वाली होती है। एम. डी. चार्लस उन

लोगों के विजयी आशावाद से पागल हो जाते थे जो जर्मनी और उसकी शक्ति को उतना नहीं जानते थे जितना वे जानते थे। ये लोग हर महीने आश्वस्त रहते थे कि अगले महीने जर्मनी का सफाया हो जाएगा, और एक साल बीत जाने पर वे उतनी ही आसानी से एक नई भविष्यवाणी पर विश्वास कर लेते थे मानो उन्होंने उतनी ही दृढ़ता से उस झूठी भविष्यवाणी पर विश्वास न किया हो जिसे वे भूल चुके थे, या यदि उन्हें उसकी याद दिलाई जाती थी, तो वे कहते थे, "यह वही बात नहीं थी।" एम. डी. चार्लस, जिनके दिमाग में कुछ गहराई थी, शायद कला के क्षेत्र में यह नहीं समझ पाए कि मोनेट के आलोचकों द्वारा "यह वही बात नहीं है" का तर्क, उन लोगों के विरोध में दिया गया था जो कहते थे कि "उन्होंने डेलाक्रॉइक्स के बारे में भी यही कहा था", उसी मानसिकता को दर्शाता है। और फिर एम. डी चार्लस दयालु थे, पराजित व्यक्ति का विचार उन्हें पीड़ा देता था, वे हमेशा कमजोरों के पक्ष में थे, और अखबारों में मुकदमों के विवरण पढ़े बिना वे कैदी की पीड़ा को स्वयं महसूस किए बिना नहीं रह सकते थे और न्यायाधीश, जल्लाद और उस भीड़ की हत्या करने की इच्छा रखते थे जो "न्याय होते देखकर प्रसन्न" होती थी। किसी भी मामले में, अब यह निश्चित था कि फ्रांस को हराया नहीं जा सकता था और वे जानते थे कि जर्मन अकाल से पीड़ित थे और देर-सवेर स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने के लिए विवश होंगे। फ्रांस में रहने के कारण यह विचार उन्हें और भी अप्रिय लगा। जर्मनी की उनकी यादें, आखिरकार, समय के साथ धुंधली हो गई थीं, जबकि जर्मनी को कुचलने की संभावना पर अप्रिय रूप से प्रसन्न होने वाले फ्रांसीसी लोग ऐसे लोग थे जिनके दोष और घृणास्पद चेहरे उन्हें परिचित थे। ऐसे मामले में हम उन लोगों के प्रति अधिक सहानुभूति महसूस करते हैं जिन्हें हम नहीं जानते, जिनकी हम केवल कल्पना कर सकते हैं, उन लोगों की तुलना में जिनका सामान्य

दैनिक जीवन हमारे करीब ही बीतता है, जब तक कि हम पूरी तरह से उनमें से एक, उनके साथ एक शरीर महसूस न करें; देशभक्ति ऐसा चमत्कार करती है; हम अपने देश के साथ वैसे ही खड़े रहते हैं जैसे प्रेम-विवाद में खुद के साथ। युद्ध ने भी एम. डी. चार्लस पर असाधारण रूप से गहरा प्रभाव डाला, मानो यह उनकी उन घृणाओं का फलदायी कारण हो जो पल भर में पैदा हुईं, थोड़े समय के लिए ही रहीं, लेकिन उस दौरान बेहद हिंसक थीं। अखबार पढ़ते हुए, जर्मनी को "कमजोर, शक्तिहीन" बताने वाले लेखों का विजयी लहजा, जबकि सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत थी, उन्हें क्रोध से पागल कर देता था। उस समय अखबारों का संपादन कुछ जाने-माने लोग कर रहे थे, जिन्होंने इस तरह "अपना योगदान" देने का रास्ता खोज लिया था; ब्रिचोट, नॉरपोई और लेग्रैंडिन जैसे लोग। एम. डी. चार्लस उनसे मिलना और अपनी कड़वी व्यंग्य से उन्हें चूर-चूर कर देना चाहते थे। यौन विकारों के बारे में हमेशा विशेष रूप से जानकार, वह उन लोगों में इन्हें पहचान लेता था जो खुद को निर्दोष समझते हुए, वैगनर आदि जैसे "शिकारी साम्राज्यों" के शासकों की निंदा करने में आनंद लेते थे। वह उनसे आमने-सामने मिलना चाहता था ताकि वह दुनिया के सामने उनके दुराचारों का अपमान कर सके और एक हारे हुए शत्रु का अपमान करने वालों को ध्वस्त और अपमानित कर सके। अंततः एम. डी चार्लस के जर्मन-प्रेमी होने का एक और कारण था। एक यह था कि एक अनुभवी व्यक्ति होने के नाते, वह समाज के लोगों, सम्मानित पुरुषों के बीच काफी समय बिता चुका था, जो किसी बदमाश से हाथ नहीं मिलाते थे; वह उनकी बारीकियों और उनकी कठोरता दोनों को जानता था, वह जानता था कि वे उस व्यक्ति के आँसुओं के प्रति असंवेदनशील होते हैं जिसे वे क्लब से बाहर निकाल देते हैं, जिसके साथ वे द्वंद्वयुद्ध करने से इनकार कर देते हैं, भले ही उनके "नैतिक शुद्धता" के

कार्य के कारण उस बदमाश की माँ की मृत्यु हो जाए। इंग्लैंड के प्रति उनकी प्रशंसा कितनी भी गहरी क्यों न रही हो, वह बेदाग इंग्लैंड, जो झूठ बोलकर जर्मनी में अनाज और दूध के प्रवेश को रोकने में असमर्थ था, एक तरह से प्रतिष्ठित सज्जनों, लाइसेंस प्राप्त गवाहों और सम्मान के मध्यस्थों का राष्ट्र था, जबकि उनकी नज़र में दोस्तोवस्की के कुछ बदनाम बदमाश उनसे कहीं बेहतर थे। लेकिन मैं कभी समझ नहीं पाया कि उन्होंने ऐसे पात्रों की तुलना जर्मनों से क्यों की, जबकि जर्मनों में हमें वह अच्छाई दिखाई नहीं देती, जिसे झूठ और छल से भी कम नहीं किया जा सका। अंत में, एक और विशेषता एम. डी. चार्लस के जर्मन प्रेम को पूर्ण करती है, जो उनके "चार्लिज़्म" के प्रति एक विशेष प्रतिक्रिया के कारण उत्पन्न हुई थी। वे जर्मनों को बहुत बदसूरत मानते थे, शायद इसलिए कि वे उनके अपने खून के बहुत करीब थे। वे मोरक्कोवासियों के दीवाने थे, लेकिन सबसे बढ़कर एंग्लो-सैक्सन लोगों के, जिन्हें वे फ़िडियास की जीवित मूर्तियों के रूप में देखते थे। उसके मन में यौन संतुष्टि और क्रूरता का भाव एक दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए थे और (यह कितना प्रबल था, यह मुझे तब समझ नहीं आया था) जिस व्यक्ति ने उसे आकर्षित किया, वह उसे एक प्रकार के आनंदमय जल्लाद जैसा प्रतीत होता था। यदि वह जर्मनों के विरुद्ध खड़ा होता, तो वह सोचता कि वह वही कर रहा है जो वह केवल अपने आत्म-भोग के क्षणों में करता था, अर्थात्, अपने स्वाभाविक दयालु स्वभाव के विपरीत, दूसरे शब्दों में, आवेशित होकर; मोहक बुराई से प्रेरित होकर और सद्गुणी कुरूपता को कुचलने की इच्छा से। रासपुतिन की हत्या के समय भी उनका यही हाल था, जब एक रात्रिभोज में उनकी हत्या हुई थी, जो डोस्टोएव्स्की की शैली में हुई थी और जिसमें रूसी प्रभाव साफ झलकता था (यह प्रभाव और भी गहरा होता अगर जनता को एम. डी चार्लस के सभी ज्ञान की जानकारी होती),

क्योंकि जीवन हमें इतना धोखा देता है कि हम यह मानने लगते हैं कि साहित्य का इससे कोई संबंध नहीं है और हम यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि किताबों द्वारा प्रस्तुत अद्भुत विचार रोजमर्रा की जिंदगी में सहजता से प्रदर्शित होते हैं, लेखक द्वारा बिगाड़े जाने के जोखिम के बिना, उदाहरण के लिए, एक रात्रिभोज में हुई हत्या, एक रूसी घटना, में कुछ रूसी तत्व होना चाहिए।

युद्ध अनिश्चित काल तक चलता रहा और जिन लोगों ने वर्षों पहले एक विश्वसनीय स्रोत से शांति वार्ता शुरू होने की घोषणा की थी, यहाँ तक कि युद्धविराम की शर्तों का भी स्पष्ट उल्लेख किया था, उन्होंने आपसे बात करते समय अपनी झूठी जानकारी के लिए माफी मांगने की जहमत भी नहीं उठाई। वे इसे भूल चुके थे और पूरी ईमानदारी से ऐसी अन्य जानकारी फैलाने के लिए तैयार थे जिसे वे उतनी ही जल्दी भूल जाते। यह वह दौर था जब गोथा विमानों के लगातार हवाई हमले हो रहे थे। फ्रांसीसी विमानों की सतर्क और गूंजती हुई आवाज़ से हवा लगातार कांपती रहती थी। लेकिन कभी-कभी सायरन वाल्कीरी के दिल दहला देने वाले आह्वान की तरह बजता था, युद्ध के बाद से सुना गया एकमात्र जर्मन संगीत—जब तक कि दमकलकर्मी यह घोषणा नहीं कर देते कि अलार्म खत्म हो गया है, तब तक सायरन, एक अदृश्य समाचारदाता की तरह, नियमित अंतराल पर खुशखबरी देता रहता था और अपनी आनंदमय गूंज हवा में बिखेरता रहता था।

एम. डी चार्लस यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि ब्रिचोट जैसे लोग भी, जो युद्ध से पहले सैन्यवाद के समर्थक थे और फ्रांस की पर्याप्त सैन्यवाद की कमी के लिए आलोचना करते थे, जर्मनी को उसके अत्यधिक सैन्यवाद के लिए दोषी ठहराने से संतुष्ट नहीं थे, बल्कि उसकी सेना की प्रशंसा करने के लिए भी उसकी निंदा करते थे। निःसंदेह, जर्मनी

के विरुद्ध युद्ध को धीमा करने का प्रश्न उठने पर उन्होंने अपना दृष्टिकोण बदल दिया और शांतिवादियों की उचित निंदा की। फिर भी, ब्रिचोट, अपनी कमजोर दृष्टि के बावजूद, तटस्थ देशों में प्रकाशित कुछ पुस्तकों पर व्याख्यान देने के लिए सहमत होकर, एक स्विस उपन्यास की प्रशंसा करते थे, जिसमें दो बच्चे, एक ड्रैगून के प्रतीकात्मक दर्शन की प्रशंसा में घुटने टेक देते हैं, उन्हें सैन्यवाद का बीज बताकर निंदा की जाती है। एम. डी चार्लस को यह निंदा नापसंद होने के अन्य कारण भी थे, क्योंकि उनका मानना था कि एक ड्रैगून अत्यंत सुंदर हो सकता है। लेकिन फिर भी, वह ब्रिचोट की प्रशंसा को समझ नहीं पा रहा था, भले ही वह उस पुस्तक के लिए प्रशंसा न करता हो जिसे बैरन ने पढ़ा ही न था, कम से कम उस पुस्तक की भावना के लिए तो ज़रूर, जो युद्ध से पहले ब्रिचोट की भावना से बिलकुल अलग थी। उस समय, सैनिक से जुड़ी हर चीज़ अच्छी मानी जाती थी, चाहे वह जनरल डी बोइसडेफ्रे की अनियमितताएँ हों, कर्नल डू पैटी डी क्लैम की चालबाज़ी और छल-कपट हो या कर्नल हेनरी के झूठे दावे। लेकिन उस असाधारण यू-टर्न (जो वास्तव में देशभक्ति की उस महान भावना का ही दूसरा रूप था, जो ड्रेफ्यूवाद के विरुद्ध लड़ाई के दौरान अनिवार्य रूप से सैन्यीकृत हो गई थी, जबकि ड्रेफ्यूवाद में पहले तो सैन्यवाद-विरोधी प्रवृत्ति थी और अब जर्मनी, जो एक अति-सैन्यवादी देश था, के विरुद्ध लड़ाई के कारण लगभग सैन्यवाद-विरोधी हो गई थी) के द्वारा ब्रिचोट ने कहा: "ओह! यह कितना प्रशंसनीय प्रदर्शन है, कितना उचित है, युवाओं से एक सदी तक क्रूरता जारी रखने की अपील करना, हिंसा की संस्कृति के अलावा किसी अन्य संस्कृति को न पहचानना: एक ड्रैगून! हम कल्पना कर सकते हैं कि क्रूर बल के इन प्रदर्शनों की पूजा करने के लिए पली-बढ़ी पीढ़ी से हम किस प्रकार के नीच सैनिकों की अपेक्षा कर सकते हैं।" “अब सुनिए,” एम. डी चार्लस ने

मुझसे कहा, “आप ब्रिचोट और कैम्ब्रेमर को जानते हैं। जब भी मैं उनसे मिलता हूँ, वे मुझसे जर्मनी में मनोविज्ञान की असाधारण कमी के बारे में बात करते हैं। हम दोनों के बीच, क्या आपको लगता है कि अब तक उन्होंने मनोविज्ञान पर ज़्यादा ध्यान दिया है या अब भी वे यह साबित करने में सक्षम हैं कि उनमें मनोविज्ञान का कोई ज्ञान है? लेकिन, मेरा विश्वास कीजिए, मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रहा हूँ। यहाँ तक कि जब महानतम जर्मन विद्वानों, नीत्शे या गोएथे की बात आती है, तो आप ब्रिचोट को यह कहते हुए सुनेंगे, ‘मनोविज्ञान की उस आदतन कमी के साथ जो जर्मन जाति की विशेषता है’। ज़ाहिर है, इससे भी बुरी बातें सहन करनी पड़ती हैं, लेकिन आपको मानना पड़ेगा कि यह बात परेशान करती है। मैं मानता हूँ कि नॉरपोइस ज़्यादा बुद्धिमान हैं, हालाँकि वे शुरू से ही गलत साबित हुए हैं। लेकिन उन लेखों के बारे में क्या कहा जाए जो सार्वभौमिक उत्साह जगाते हैं? मेरे प्रिय महोदय, आप भी मेरी तरह जानते हैं कि ब्रिचोट का क्या महत्व है, और उस झगड़े के बाद से भी मुझे वे पसंद हैं जिसने मुझे उनके छोटे से ठिकाने से अलग कर दिया है, जिसके कारण मैं उनसे बहुत कम मिलता हूँ।” फिर भी, मैं इस कॉलेज के डीन के प्रति विशेष सम्मान रखता हूँ, जो एक कुशल वक्ता और विद्वान हैं, और मैं स्वीकार करता हूँ कि उनकी उम्र और खराब स्वास्थ्य को देखते हुए, खासकर पिछले कुछ वर्षों में, उनका स्वयं को उस सेवा में समर्पित करना अत्यंत मार्मिक है जिसे वे स्वयं सेवा कहते हैं। लेकिन चाहे कुछ भी कहा जाए, नेक इरादा एक बात है, प्रतिभा दूसरी, और ब्रिचोट में कभी प्रतिभा नहीं थी। मैं मानता हूँ कि युद्ध की कुछ भव्यताओं के प्रति मैं उनकी प्रशंसा से सहमत हूँ। लेकिन फिर भी, ब्रिचोट जैसे पुरातनता के अंधभक्त का, जो ज़ोला के बारे में व्यंग्य करने में कभी पीछे नहीं हटते थे, जिन्होंने एक मजदूर के घर, एक खदान में ऐतिहासिक महलों से

अधिक सुंदरता देखी, या गोनकोर्ट द्वारा डिडेरोट को होमर से ऊपर और वाटेउ को राफेल से ऊपर रखने के बारे में, बार-बार यह दोहराते रहते हैं कि थर्मोपाइले या ऑस्टरलिट्ज़, वाउक्वाइस की तुलना में कुछ भी नहीं थे। इस बार, कला और साहित्य के आधुनिकतावादियों का विरोध करने वाली जनता, युद्ध के आधुनिकतावादियों का अनुसरण कर रही है, क्योंकि ऐसा सोचना फैशन बन गया है और संकीर्ण सोच वाले लोग वे सुंदरता से नहीं, बल्कि युद्ध के विशाल पैमाने से अभिभूत थे। वे 'कोलोसल' शब्द को 'के' के बिना कभी नहीं लिखते, लेकिन वास्तव में वे जिसके सामने नतमस्तक होते हैं, वह सचमुच विशाल होता है।

"यह एक अजीब बात है," एम. डी चार्लस ने अपनी उस ऊँची आवाज़ में कहा, जो वे कभी-कभी अपना लेते थे, "मैं ऐसे लोगों को सुनता हूँ जो दिन भर खुश दिखते हैं और बढ़िया कॉकटेल खूब पीते हैं, फिर भी कहते हैं कि वे युद्ध को पूरा नहीं देख पाएंगे, कि उनका दिल इतना मजबूत नहीं है, कि वे किसी और चीज़ के बारे में सोच ही नहीं सकते और उनकी अचानक मृत्यु हो जाएगी, और असाधारण बात यह है कि ऐसा सचमुच हो जाता है; कितना अजीब है! क्या यह पोषण का मामला है, क्योंकि वे केवल अधपका खाना खाते हैं या फिर, अपना उत्साह साबित करने के लिए, वे खुद को किसी व्यर्थ काम में लगा लेते हैं जो उनके उस आहार में बाधा डालता है जिसने उन्हें जीवित रखा है? खैर, मैंने इन अजीब असमय मौतों की एक आश्चर्यजनक संख्या दर्ज की है, जो किसी भी तरह से असमय ही थीं, जहाँ तक मृतक की इच्छा का संबंध था। मुझे ठीक से याद नहीं है कि मैंने ब्रिचोट और नॉरपोइस द्वारा इस युद्ध की प्रशंसा करने के बारे में आपसे क्या कहा था, लेकिन इसके बारे में बात करने का यह कितना अनोखा तरीका था। सबसे पहले, क्या आपने नॉरपोइस द्वारा इस्तेमाल किए गए नए मुहावरों की उस भरमार पर ध्यान दिया है, जो

दैनिक उपयोग से समाप्त हो जाते हैं—क्योंकि वास्तव में वह अथक हैं और मेरा मानना है कि मेरी चाची विलेपारिसिस की मृत्यु ने उन्हें दूसरी जवानी दी—ये मुहावरे तुरंत आम बोलचाल के अन्य मुहावरों से बदल दिए जाते हैं। मुझे याद है, पहले आप भाषा के इन रूपों को देखकर खुश होते थे जो प्रकट होते हैं, कुछ समय तक चलते हैं और फिर गायब हो जाते हैं: 'जो हवा बोएगा, बवंडर काटेगा', 'कुत्ता भौंकता है, कारवां गुजरता है', 'मुझे एक अच्छी राजनीति ढूंढो और मैं तुम्हारे लिए अच्छा वित्त जुटाऊंगा, बैरन लुई ने कहा'। ये ऐसे लक्षण हैं जिन्हें बहुत दुखद रूप से लेना अतिशयोक्ति होगी, लेकिन इन्हें गंभीरता से लेना चाहिए, 'प्रशिया के राजा के लिए काम करना' (वैसे, यह आखिरी मुहावरा अपरिहार्य रूप से पुनर्जीवित हो गया है)। खैर, अफसोस की बात है कि मैंने उनमें से बहुतों को मरते देखा है, इसलिए हमारे पास 'कागज का टुकड़ा', 'लुटेरे साम्राज्य', 'प्रसिद्ध संस्कृति जिसमें निहत्थे महिलाओं और बच्चों की हत्या शामिल है', 'जीत, जैसा कि जापानी कहते हैं, उसे मिलेगी जो दूसरे से पंद्रह मिनट अधिक सहन कर सकता है', 'द' जैसे मुहावरे हैं। जर्मन-तुरानियों', 'वैज्ञानिक बर्बरता', 'यदि हम श्री लॉयड जॉर्ज के सशक्त शब्दों के अनुसार युद्ध जीतना चाहते हैं', वास्तव में, ऐसे कथनों की कोई कमी नहीं है; सैनिकों का व्यंग्य और सैनिकों का क्रोध। यहाँ तक कि उत्कृष्ट नॉरपोइस के विचार भी युद्ध के कारण रोटी की संरचना या परिवहन की गति की तरह पूरी तरह बदल जाते हैं। क्या आपने गौर किया है कि उत्कृष्ट व्यक्ति, अपनी इच्छाओं को इस प्रकार घोषित करने के लिए उत्सुक है मानो वे साकार होने वाली सच्चाई हों, फिर भी भविष्य काल का प्रयोग करने का साहस नहीं करता, जिसे घटनाएँ खंडित कर सकती हैं, बल्कि इसके बजाय 'जानना' क्रिया का प्रयोग करता है। मैंने एम. डी चार्लस से कहा कि मुझे उनकी बात समझ नहीं आई। मुझे यहाँ यह

उल्लेख करना आवश्यक है कि ड्यूक डी गुएरमांटेस अपने भाई के निराशावाद से बिल्कुल भी सहमत नहीं थे। इसके अलावा, वे उतने ही अंग्रेज-प्रेमी थे जितने एम. डी चार्लस अंग्रेज-विरोधी थे। उदाहरण के लिए, वह एम. कैलाक्स को गद्दार मानते थे और उन्हें हज़ार बार गोली मारने की सज़ा देते थे। जब उनके भाई ने उनसे इस राजद्रोह का सबूत माँगा, तो एम. डी गुएरमांटेस ने जवाब दिया कि अगर केवल उन्हीं लोगों को दोषी ठहराया जाए जिन्होंने किसी कागज़ पर हस्ताक्षर करके कहा हो कि "मैंने देशद्रोह किया है", तो राजद्रोह के अपराध को कभी दंडित नहीं किया जा सकेगा। लेकिन अगर मुझे इस विषय पर दोबारा चर्चा करने का मौका न मिले, तो मैं यह भी कहना चाहूँगा कि दो साल बाद, कैलाक्स के घोर विरोध से प्रेरित होकर, ड्यूक डी गुएरमांटेस ने एक अंग्रेज़ सैन्य अटैची और उनकी पत्नी से मुलाकात की, जो बेहद पढ़े-लिखे दंपति थे। उन्होंने उनसे भी उसी तरह दोस्ती की, जैसे ड्रेफस कांड के समय तीन आकर्षक महिलाओं से की थी। कैलाक्स के बारे में बात करते हुए, जिसे वह निश्चित और उसका अपराध स्पष्ट मानते थे, वह पहले ही दिन से यह सुनकर दंग रह गए कि उस आकर्षक और पढ़े-लिखे दंपति में से एक ने कहा, "उसे शायद बरी कर दिया जाएगा, उसके खिलाफ़ बिल्कुल कुछ भी नहीं है।" एम. डी गुएरमांटेस ने आरोप लगाने की कोशिश की कि एम. डी नॉरपोइस ने अपने बयान में गिरे हुए कैलाक्स के चेहरे की ओर देखते हुए कहा था, "तुम फ्रांस के जियोलिट्टी हो, जी हाँ, एम. कैलाक्स, तुम फ्रांस के जियोलिट्टी हो।" लेकिन उस आकर्षक दंपति ने मुस्कुराते हुए एम. डी नॉरपोइस का मज़ाक उड़ाया, उनकी बुढ़ापे की कमज़ोरी के उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने फिगारो के अनुसार अपदस्थ एम. कैलाक्स को संबोधित किया था, लेकिन शायद वास्तव में वह एक बहुत ही चालाक एम. कैलाक्स थे। ड्यूक डी गुएरमांटेस की राय जल्द ही बदल गई। इस

बदलाव का श्रेय एक अंग्रेज़ महिला के प्रभाव को देना उतना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है जितना लग सकता था, अगर किसी ने 1919 में भी भविष्यवाणी की होती, जब अंग्रेज़ों ने जर्मनों को हूण कहा था और दोषियों के लिए क्रूर सज़ा की मांग की थी, कि उनकी राय बदलेगी और हर उस फैसले का वे समर्थन करेंगे जो फ्रांस को दुखी कर सकता है और जर्मनी की मदद कर सकता है। एम. डी चार्लस की बात पर लौटते हैं। "हाँ," उसने मेरे न समझने पर जवाब देते हुए कहा, "नॉरपोइस के लेखों में 'जानना' शब्द भविष्य काल के स्थान पर प्रयोग किया गया है, अर्थात् यह नॉरपोइस की इच्छाओं को व्यक्त करता है, बल्कि हमारी सभी इच्छाओं को व्यक्त करता है," उसने शायद पूरी ईमानदारी से नहीं कहा। आप समझते हैं कि यदि 'जानना' ने सरल भविष्य काल का स्थान न लिया होता, तो दबाव पड़ने पर यह स्वीकार किया जा सकता था कि इस क्रिया का कर्ता एक देश हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब भी ब्रिचोट कहते हैं, 'अमेरिका को यह पता नहीं होगा कि अधिकारों के इन बार-बार होने वाले उल्लंघनों के प्रति उदासीन कैसे रहा जाए,' 'दो सिर वाला राजतंत्र अपने तौर-तरीकों को सुधारने में विफल कैसे रहा,' तो यह स्पष्ट है कि ऐसे वाक्यांश नॉरपोइस (उनके और हमारे) की इच्छाओं को व्यक्त करते हैं, लेकिन फिर भी, यह शब्द अपनी बेतुकीपन के बावजूद अपना मूल अर्थ बरकरार रख सकता है, क्योंकि एक देश 'जान सकता है', अमेरिका 'जान सकता है', यहाँ तक कि स्वयं दो सिर वाला राजतंत्र भी 'जान सकता है' (मनोविज्ञान की अपनी शाश्वत कमी के बावजूद), लेकिन यह अर्थ तब मान्य नहीं रह जाता जब ब्रिचोट लिखते हैं, 'व्यवस्थित विनाशों को यह पता नहीं होगा कि तटस्थों को कैसे राजी किया जाए', या 'झीलों का क्षेत्र यह पता नहीं होगा कि जल्द ही मित्र देशों के हाथों में गिरने से कैसे बचा जाए', या 'परिणाम तटस्थ देशों में होने वाले चुनावों के नतीजे

उन देशों के अधिकांश लोगों की राय को प्रतिबिंबित करना नहीं जानते। अब यह स्पष्ट है कि ये विनाश, ये झीलें और चुनावों के ये परिणाम निर्जीव वस्तुएं हैं जो 'जान' नहीं सकतीं। इस सूत्र के माध्यम से नॉरपोइस तटस्थ देशों (जिनके बारे में मुझे खेद है कि वे उनका पालन नहीं करते) को अपनी तटस्थता से बाहर आने का निर्देश दे रहे हैं या झीलों से आग्रह कर रहे हैं कि वे अब 'बोशे' (जर्मन) के अधीन न रहें। (एम. डी चार्लस ने 'बोचेस' शब्द का उच्चारण करते समय उसी तरह का अहंकार दिखाया जैसा उन्होंने पहले बालबेक जाने वाली ट्रेन में उन पुरुषों के संदर्भ में किया था जिनकी रुचि महिलाओं में नहीं होती।) "इसके अलावा, क्या आपने देखा कि नॉरपोइस ने 1914 से तटस्थ देशों पर अपने लेखों की शुरुआत में किस तरह की तरकीबें अपनाईं? वह इस बात पर ज़ोर देते हुए शुरुआत करते हैं कि फ्रांस को इटली, रोमानिया, बुल्गारिया इत्यादि की राजनीति में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। 'यह केवल उन शक्तियों का अधिकार है कि वे पूरी स्वतंत्रता के साथ, केवल अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए, यह तय करें कि उन्हें अपनी तटस्थता छोड़नी है या नहीं।' लेकिन यदि लेख की प्रारंभिक घोषणाएँ (जिन्हें पहले प्रस्तावना कहा जाता था) इतनी स्पष्ट रूप से निस्वार्थ हैं, तो आगे जो आता है वह आम तौर पर बहुत कम निस्वार्थ होता है। खैर, आगे बढ़ते हुए एम. डी नॉरपोइस संक्षेप में कहते हैं, 'इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केवल वे शक्तियाँ जिन्होंने न्याय और सत्य के पक्ष में गठबंधन किया है, उन्हें ही संघर्ष से भौतिक लाभ प्राप्त होंगे। यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि सहयोगी उन राष्ट्रों को क्षतिपूर्ति देंगे जिन्होंने न्यूनतम प्रतिरोध का मार्ग अपनाते हुए, सहयोगियों की सेवा में अपनी तलवार नहीं रखी है, उन्हें उन क्षेत्रों को देकर जहाँ से सदियों से उनके उत्पीड़ित भाइयों की गुहार उठती रही है।' हस्तक्षेप की सलाह देने की दिशा में यह पहला कदम उठाने के

बाद, नॉरपोइस को कोई नहीं रोकता और अब वे न केवल सिद्धांत के बारे में बल्कि हस्तक्षेप के उचित समय के बारे में भी अधिक से अधिक अस्पष्ट सलाह देते हैं। 'स्वाभाविक रूप से,' वे कहते हैं, जैसा कि वे स्वयं इसे एक अच्छे उपदेशक की भूमिका में कहते हैं, 'यह केवल इटली, रोमानिया के लिए ही उचित समय और उस रूप का निर्णय करना है जिसके तहत उनके लिए हस्तक्षेप करना उपयुक्त होगा। वे नहीं कर सकते, हालांकि, उन्हें इस बात का एहसास होना चाहिए कि अगर वे बहुत देर करते हैं, तो वे निर्णायक क्षण को खोने का जोखिम उठाते हैं। आज भी जर्मनी रूसी घुड़सवार सेना की गर्जना से कांप उठता है। यह स्पष्ट है कि जो राष्ट्र विजय के उस क्षण में सहायता के लिए दौड़े हैं, जिसकी उज्ज्वल सुबह पहले से ही दिखाई दे रही है, वे किसी भी तरह से उन पुरस्कारों पर दावा नहीं कर सकते जो वे अभी भी जल्दबाजी करके प्राप्त कर सकते हैं, इत्यादि। यह थिएटर में उस समय की तरह है जब वे कहते हैं, 'आखिरी बची सीटें बहुत जल्द भर जाएंगी। यह विलंब करने वालों के लिए एक चेतावनी है', एक तर्क जो और भी मूर्खतापूर्ण है क्योंकि नॉरपोइस इसे हर छह महीने में दोहराता है और समय-समय पर रोमानिया को चेतावनी देता है: 'रोमानिया के लिए यह निर्णय लेने का समय आ गया है कि वह अपनी राष्ट्रीय आकांक्षाओं को साकार करना चाहती है या नहीं। अगर वह और अधिक इंतजार करती है, तो उसे बहुत देर होने का जोखिम उठाना पड़ेगा।' और हालांकि वह दो साल से इस चेतावनी को दोहरा रहा है, 'बहुत देर' अभी तक नहीं हुई है और वे रोमानिया को अपने प्रस्ताव बढ़ाते रहते हैं। इसी तरह वह आमंत्रित करता है फ्रांस और अन्य देशों द्वारा ग्रीस में एक संरक्षक शक्ति के रूप में हस्तक्षेप करने का प्रस्ताव इसलिए है क्योंकि ग्रीस और सर्बिया के बीच हुए समझौते का पालन नहीं किया गया है। और वास्तव में, यदि फ्रांस युद्ध में न होता और ग्रीस की उदार

तटस्थता की सहायता न चाहता, तो क्या वह एक संरक्षक शक्ति के रूप में हस्तक्षेप करने के बारे में सोचता? क्या ग्रीस द्वारा सर्बिया के साथ किए गए समझौतों का पालन न करने के कारण उसकी निंदा करने वाली नैतिक भावना, रोमानिया और इटली के मामले में इसी तरह के घोर उल्लंघन का प्रश्न उठते ही शांत न हो जाती? मेरा मानना है कि इन देशों ने भी ग्रीस की तरह, जर्मनी के सहयोगी के रूप में अपने दायित्वों को पूरा नहीं किया है, जो कि अपेक्षित से कम अनिवार्य और व्यापक थे। सच्चाई यह है कि लोग सब कुछ अपने अखबारों के नजरिए से देखते हैं, और वे ऐसा कैसे कर सकते हैं, क्योंकि वे स्वयं संबंधित लोगों या घटनाओं के बारे में कुछ नहीं जानते। उस 'घटना' के समय, जिसने उस दौर में सभी भावनाओं को भड़का दिया था, जिससे अब यह कहना सही होगा कि हम सदियों से अलग हैं, क्योंकि युद्ध-दार्शनिकों ने इस बात पर सहमति जताई है कि अतीत से सभी संबंध टूट चुके हैं, मैं अपने ही परिवार के सदस्यों को अपनी प्रतिक्रिया देते देखकर स्तब्ध रह गया था। अपने अखबार में पादरी-विरोधी और पूर्व कम्युनिस्टों को सम्मान देते हुए, जिन्हें उनके अखबार ने ड्रेफस-विरोधी के रूप में प्रस्तुत किया, और एक उच्च कुल के जनरल और एक कैथोलिक जनरल का अपमान किया जो संशोधनवादी थे। मुझे यह देखकर कम आश्चर्य नहीं हुआ कि पूरी फ्रांसीसी जनता सम्राट फ्रांसिस जोसेफ की निंदा कर रही है, जिनका वे कभी सम्मान करते थे; मैं आपको इसका आश्वासन दे सकता हूँ, क्योंकि मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था और उन्होंने मुझे अपने चचेरे भाई की तरह मानकर मेरा सम्मान किया था। आह! मैंने युद्ध के बाद से उन्हें पत्र नहीं लिखा है," उन्होंने ऐसे कहा जैसे कोई गलती स्वीकार कर रहे हों जिसके लिए वे जानते थे कि उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता। "हाँ, मुझे देखने दीजिए, मैंने एक बार लिखा था, केवल पहले वर्ष। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इससे

उनके प्रति मेरा सम्मान जरा भी नहीं बदलता, लेकिन मेरे कई युवा रिश्तेदार हमारी सेना में लड़ रहे हैं और मुझे पता है, वे समझेंगे कि अगर मैं हमारे साथ युद्धरत राष्ट्र के प्रमुख के साथ पत्राचार करता रहूँ तो मैं बहुत गलत व्यवहार कर रहा हूँ। जो चाहे मेरी आलोचना कर सकता है," उन्होंने ऐसे कहा जैसे वे साहसपूर्वक खुद को मेरी निंदा के लिए पेश कर रहे हों; "मैं नहीं चाहता था कि ऐसे समय में चार्लस के हस्ताक्षर वाला कोई पत्र वियना पहुंचे। पुराने सम्राट के विरुद्ध मेरी मुख्य आलोचना यह है कि उनके पद के एक जागीरदार, यूरोप के सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित घरानों में से एक के मुखिया, ने खुद को विलियम ऑफ होहेनज़ोलर्न जैसे उस छोटे से नवधनी जमींदार के बहकावे में आने दिया, जो वैसे तो बहुत बुद्धिमान था लेकिन बिल्कुल नया अमीर था। यह इस युद्ध की विसंगतियों में से एक है।" और चूंकि, एक बार जब उन्होंने कुलीनता का दृष्टिकोण अपना लिया, जो उनके लिए सब कुछ से ऊपर था, तो एम. डी चार्लस सबसे बचकानी बातें करने में सक्षम थे, उन्होंने मुझे उसी गंभीर लहजे में बताया जैसे कि वे मार्ने या वर्दुन के बारे में बात कर रहे हों, कि इस युद्ध के किसी भी इतिहासकार को कुछ बहुत ही रोचक और विचित्र बातों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। “उदाहरण के लिए,” उन्होंने कहा, “लोग इतने अज्ञानी हैं कि किसी ने इस उल्लेखनीय बात पर ध्यान नहीं दिया: माल्टा के ग्रैंड-मास्टर, जो एक शुद्ध बोशे (जर्मन मूल के) हैं, इस कारण रोम में रहना नहीं छोड़ते, जहाँ हमारे संगठन के ग्रैंड-मास्टर के रूप में उन्हें अतिरिक्त विशेषाधिकार प्राप्त हैं। क्या यह रोचक नहीं है?” उन्होंने यह कहते हुए अपनी बात आगे बढ़ाई, “देखिए, मुझसे मिलकर आपने अपनी शाम व्यर्थ नहीं की।” मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और उन्होंने विनम्रता का भाव अपना लिया, मानो वे कोई शुल्क नहीं मांग रहे हों। "अरे! मैं तुम्हें क्या बता रहा था? ओह, हाँ, कि लोग अब अपने अखबार के अनुसार

फ्रांसिस जोसेफ से नफरत करते हैं। ग्रीस के राजा कॉन्स्टेंटाइन और बुल्गारिया के ज़ार के मामले में, जनता उनके प्रति घृणा और सहानुभूति के बीच झूलती रही है, क्योंकि ऐसी खबरें थीं कि वे एंटेंटे या जिसे नॉरपोइस 'केंद्रीय साम्राज्य' कहते हैं, में शामिल होने वाले थे। यह वैसा ही है जैसे वह हमें हर पल बताता रहता है कि वेनिज़ेलोस का समय आने वाला है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वेनिज़ेलोस बहुत सक्षम व्यक्ति है, लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि उसका देश उसे इतना चाहता है? हमें बताया गया है कि वह चाहता था कि ग्रीस सर्बिया के साथ अपने समझौते निभाए। इसलिए हमें यह जानना चाहिए कि वे समझौते क्या थे और क्या वे उन समझौतों से अधिक बाध्यकारी थे जिन्हें इटली और रोमानिया ने तोड़ने को उचित समझा था। हम ग्रीस द्वारा अपने समझौतों को लागू करने और अपने संविधान का सम्मान करने के तरीके के बारे में चिंता दिखाते हैं, जो निश्चित रूप से हमें नहीं दिखानी चाहिए थी यदि यह हमारे हित में न होता। यदि युद्ध न होता, तो क्या आपको लगता है कि गारंटी देने वाली शक्तियाँ चैंबर के विघटन पर जरा भी ध्यान देतीं? मैं देखता हूँ कि एक-एक करके एक तो वे ग्रीस के राजा को अपना समर्थन नहीं दे रहे हैं ताकि जिस दिन उसके पास अपनी रक्षा के लिए कोई सेना न हो, उस दिन उसे सत्ता से बेदखल कर सकें या कैद कर सकें। मैं आपको बता रहा था कि जनता ग्रीस के राजा और बुल्गारिया के ज़ार के बारे में केवल अखबारों के आधार पर ही राय बनाती है, और वे ऐसा कैसे कर सकते हैं जब वे उन्हें जानते ही नहीं? मैं उन्हें अक्सर देखता था और उन्हें अच्छी तरह जानता था। जब ग्रीस के कॉन्स्टेंटाइन युवराज थे, तब वे बेहद खूबसूरत थे। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि सम्राट निकोलस उनके प्रति बहुत स्नेह रखते थे। बेशक, जो बुरा सोचता है, वही अच्छा सोचता है। राजकुमारी क्रिस्टियन ने इस बारे में खुलकर बात की, लेकिन वह एक दुष्ट

महिला है। जहाँ तक बुल्गारिया के ज़ार की बात है, वह एक धूर्त और अय्याश है, दिखावटी व्यक्तित्व वाला, लेकिन बहुत बुद्धिमान, एक असाधारण व्यक्ति है। वह मुझे बहुत पसंद करता है।

एम. डी चार्लस, जो कभी इतने सौम्य होते थे, इन विषयों पर बात करते ही चिढ़ने लगते थे। उनका आत्मसंतुष्टि भाव किसी बीमार व्यक्ति की तरह चिढ़ाता था जो बार-बार अपनी सेहत का आश्वासन देता रहता है। मैंने अक्सर सोचा है कि वे "आस्थावान" जो बालबेक के पेचीदा व्यक्तित्व द्वारा छुपाए गए खुलासों को जानने के लिए इतने उत्सुक थे, वे उनके उन्माद के दिखावटी लेकिन असहज प्रदर्शन को सहन नहीं कर पाते और उन्हें उतना ही असहज महसूस होता जितना कि किसी मॉर्फिन के मरीज़ के सामने इंजेक्शन लगाने पर होता है; शायद वे उन रहस्यों से जल्द ही ऊब जाते जिन्हें वे बड़े चाव से सुनने की उम्मीद कर रहे थे। इसके अलावा, बिना किसी सबूत के हर किसी को उस श्रेणी में डाल दिया जाना जिससे वह खुद संबंधित था, भले ही वह इसे नकारता हो, यह सुनकर मन ऊब जाता था। अपनी बुद्धिमत्ता के बावजूद, उन्होंने इस संबंध में अपने लिए एक संकीर्ण दर्शन गढ़ लिया था (जिसके आधार में शायद स्वान के जीवन को देखने के उस विशिष्ट दृष्टिकोण की झलक थी) जो हर चीज़ को विशेष कारणों से जोड़ता था और, जैसा कि अक्सर होता है जब कोई व्यक्ति अपनी विशेष कमियों के प्रति सचेत होता है, वह स्वयं को अयोग्य समझता था और फिर भी असामान्य रूप से आत्मसंतुष्ट था। इसलिए ऐसा हुआ कि इतना गंभीर, इतना नेक दिल व्यक्ति मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ यह कह सका: "चूंकि कोबर्ग के फर्डिनेंड और सम्राट विलियम के संबंधों के बारे में इसी तरह की प्रबल धारणाएं हैं, शायद यही कारण है कि ज़ार फर्डिनेंड ने खुद को लुटेरे साम्राज्यों के साथ खड़ा कर लिया। महोदया, आखिरकार, यह पूरी तरह से समझ में आता है। कोई अपनी

बहन के प्रति उदार होता है, उसे किसी भी चीज़ के लिए मना नहीं करता। मेरे विचार से यह जर्मनी और बुल्गारिया के गठबंधन की एक बहुत ही आकर्षक व्याख्या होगी।" और एम. डी चार्लस इस मूर्खतापूर्ण स्पष्टीकरण पर इतनी देर तक हँसे मानो यह कोई बहुत ही चतुराई भरा स्पष्टीकरण हो, जो कि अगर इसमें कोई औचित्य भी होता, तो भी उतना ही बचकाना था जितना कि युद्ध के बारे में उनकी टिप्पणियाँ, चाहे वे इसे सामंती दृष्टिकोण से देखें या यरूशलेम के ऑर्डर के एक नाइट के दृष्टिकोण से। उन्होंने एक समझदारी भरी टिप्पणी के साथ अपनी बात समाप्त की: "यह आश्चर्यजनक है कि जनता, हालाँकि वह युद्ध में लोगों और चीजों का आकलन केवल अखबारों के आधार पर करती है, फिर भी आश्वस्त है कि वह अपनी पहल का प्रयोग कर रही है।" एम. डी चार्लस इस बारे में सही थे। मुझे बताया गया कि श्रीमती डी फोर्शेविल की चुप्पी और हिचकिचाहट उनके चेहरे के भावों के लिए देखने लायक थी जब उन्होंने गहरे व्यक्तिगत विश्वास के साथ घोषणा की: "नहीं, मुझे विश्वास नहीं है कि वे वारसॉ पर कब्जा कर लेंगे", "मुझे लगता है कि यह दूसरी सर्दी तक नहीं टिकेगा", "मैं एक लंगड़ी शांति नहीं चाहती"। "अगर आप मेरी राय जानना चाहें तो मुझे जो बात चिंतित करती है, वह है चैंबर"। "हाँ, मुझे फिर भी विश्वास है कि वे घुसपैठ कर सकते हैं।" इन वाक्यों को बोलते समय ओडेट के चेहरे पर एक समझदारी भरी झलक दिखाई दी, जो तब और भी स्पष्ट हो गई जब उसने कहा: "मैं यह नहीं कहती कि जर्मन सेनाएँ अच्छी तरह से नहीं लड़तीं, लेकिन उनमें वह 'क्रेन' (जैसा कि हम कहते हैं) की कमी है।" इस अभिव्यक्ति (या सैनिकों के संदर्भ में व्यंग्यात्मक शब्द) का प्रयोग करते हुए उसने हाथ से कुछ गूंथने का इशारा किया, अपना सिर एक तरफ झुकाया और कला की छात्रा की तरह अपनी आँखें आधी बंद कर लीं। उसकी भाषा में अंग्रेजों के प्रति उसकी प्रशंसा पहले से कहीं अधिक

झलक रही थी, जिन्हें वह अब पहले की तरह "चैनल के पार हमारे पड़ोसी" या "हमारे अंग्रेज मित्र" कहकर संतुष्ट नहीं थी, बल्कि "हमारे वफादार सहयोगी" कहकर पुकारती थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह हर संदर्भ में "निष्पक्ष खेल" अभिव्यक्ति का प्रयोग करने में कभी नहीं चूकती थी, ताकि यह दिखाया जा सके कि अंग्रेज जर्मनों को बेईमान खिलाड़ी मानते थे। "जैसा कि हमारे बहादुर सहयोगी कहते हैं, युद्ध जीतने के लिए निष्पक्ष खेल ही आवश्यक है।" और उन्होंने बड़ी अजीब तरह से अपने दामाद का नाम अंग्रेज़ सैनिकों से जुड़ी हर चीज़ से जोड़ दिया और इस बात का ज़िक्र किया कि उन्हें ऑस्ट्रेलियाई, स्कॉटिश, न्यूज़ीलैंड और कनाडाई सैनिकों के साथ घनिष्ठ संबंध रखने में कितना आनंद आता था। "मेरे दामाद, सेंट-लूप, उन सभी बहादुर 'टॉमीज़' की बोलचाल की भाषा जानते हैं। वे दूर-दराज के 'डोमिनियन्स' से आए लोगों को अपनी बात समझाना जानते हैं और वे सबसे साधारण सिपाही से भी उतनी ही सहजता से घुलमिल जाते हैं जितना कि बेस के कमांडर जनरल से।"

मैडम डी फोर्शेविल के बारे में यह छोटी सी बात, जो मैं मिस्टर डी चार्लस के साथ बुलेवार्ड पर चलते हुए कर रहा हूँ, एक और लंबी बात का आधार बन सकती है—ताकि इस दौर में मैडम वेरडुरिन और ब्रिचोट के बीच के रिश्तों को और ज़्यादा साफ़ किया जा सके। अगर बेचारे ब्रिचोट को, नॉरपोइस की तरह ही, मिस्टर डी चार्लस ने बहुत ज़्यादा नरमी से नहीं आँका (क्योंकि मिस्टर डी चार्लस एक तरफ़ तो बहुत तेज़-तर्रार थे, और दूसरी तरफ़, अनजाने में ही सही, कुछ हद तक जर्मन-समर्थक भी थे), तो असल में वेरडुरिन परिवार ने उनके साथ इससे भी कहीं ज़्यादा बुरा बर्ताव किया। वेरडुरिन परिवार बेशक कट्टर राष्ट्रवादी था, और उन्हें ब्रिचोट के

लेख पसंद आने चाहिए थे—जो, सच कहूँ तो, उन कई लेखों से किसी भी तरह कमतर नहीं थे जिन्हें मैडम वेरडुरिन बहुत उम्दा मानती थीं। शायद पाठकों को याद होगा कि, 'ला रास्पेलियर' के दिनों में भी, ब्रिचोट—जिन्हें वे कभी एक महान हस्ती मानते थे—अब उनकी नज़रों में उस ऊँचे दर्जे से गिरकर, अगर सैनिएट की तरह मज़ाक का पात्र (Turk's head) नहीं भी बने, तो भी कम-से-कम उनके हल्के-फुल्के और छिपे हुए व्यंग्य का निशाना तो ज़रूर बन गए थे। फिर भी, वह अब भी उन 'वफ़ादारों' (faithfuls) में से एक थे, जिसकी वजह से उन्हें वे कुछ फ़ायदे मिलते रहे जो उस छोटे से समूह के नियमों के तहत सभी संस्थापक और सहयोगी सदस्यों को चुपचाप दिए जाते थे। लेकिन जैसे-जैसे—शायद युद्ध की वजह से, या फिर उस लंबे समय से अटकी हुई 'फ़ैशनेबल' पहचान के अचानक ज़ोर पकड़ने की वजह से (जिसके सभी ज़रूरी, पर तब तक छिपे हुए तत्व, वेरडुरिन के सैलून में पहले से ही घुल-मिल चुके थे)—वह सैलून एक नए तरह के समाज के लिए खुल गया; और जैसे-जैसे वे 'वफ़ादार' लोग—जो शुरू में इस नए समाज को खींचने का ज़रिया (bait) थे—धीरे-धीरे कम और कम बार बुलाए जाने लगे; ठीक वैसी ही एक समानांतर घटना ब्रिचोट के मामले में भी घट रही थी। सोरबोन और इंस्टीट्यूट जैसे बड़े संस्थानों से जुड़े होने के बावजूद, युद्ध शुरू होने तक, उनकी शोहरत वेरडुरिन के सैलून की चारदीवारी से बाहर नहीं निकल पाई थी। लेकिन जब उन्होंने लगभग रोज़ाना ऐसे लेख लिखने शुरू किए जो उसी 'नकली चमक-दमक' से सजे होते थे—जिसे हमने उन्हें अक्सर 'वफ़ादारों' को रिझाने के लिए बेहिचक इस्तेमाल करते देखा था—और चूँकि उनके पास सचमुच का गहरा ज्ञान (erudition) था (जिसे एक सच्चे 'सोरबोनियन' की तरह, वह अपने लेखन की सजावट के पीछे छिपाने की कोशिश नहीं करते थे), तो उस नए समाज की आँखें सचमुच

उनकी इस प्रतिभा से चौंधिया गईं। इस बार, तो उसने अपना पक्ष एक ऐसे व्यक्ति के लिए चुना जो किसी भी तरह से मामूली हस्ती नहीं था, और जो अपनी तेज़ बुद्धि और ज़बरदस्त याददाश्त की बदौलत लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच सकता था। और जहाँ तीन डचेस (कुलीन महिलाएँ) अपनी शाम Mme. Verdurin के यहाँ बिताने गईं, वहीं तीन अन्य इस बात के लिए होड़ कर रही थीं कि उस महान व्यक्ति को अपने खाने की मेज़ पर बिठाने का सम्मान किसे मिलेगा; और जब उनमें से किसी एक का निमंत्रण स्वीकार कर लिया गया, तो उसे और भी ज़्यादा आज़ादी महसूस हुई, क्योंकि Mme. Verdurin—जो Faubourg Saint–Germain में उसके लेखों की सफलता से चिढ़ी हुई थीं—इस बात का खास ध्यान रखती थीं कि उसे अपने घर पर तब तक न बुलाएँ, जब तक इस बात की कोई भी संभावना हो कि वहाँ उसकी मुलाक़ात किसी ऐसे शानदार व्यक्ति से हो सकती है जिसे वह अभी तक नहीं जानता, और जो झट से उसे अपने पाले में खींच लेगा। अपनी बुढ़ापे की उम्र में, Brichot इस बात से संतुष्ट था कि वह पत्रकारिता को—अच्छी-खासी कमाई के बदले में—वह सारा मान-सम्मान दे रहा था जिसे उसने Verdurin के सैलून में मुफ़्त में और बिना किसी पहचान के ही गँवा दिया था (क्योंकि उसके लेखों में उसे अपनी बातचीत से ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी; वह बातचीत करने में इतना माहिर और इतना विद्वान था); और इस चीज़ ने शायद उसे बेजोड़ शोहरत दिलाई होती—और एक पल के लिए तो ऐसा लगा भी था कि वह ऐसा करने ही वाला है—अगर Mme. Verdurin बीच में न आतीं। यकीनन, Brichot के लेख उतने असाधारण नहीं थे जितना कि समाज के लोग उन्हें मानते थे। विद्वान होने का दिखावा करने के बावजूद, उस आदमी की ओछी मानसिकता हर पल साफ़ झलकती थी। और उन बेमतलब की उपमाओं

के अलावा—जैसे कि "जर्मन अब Beethoven की मूर्ति की आँखों में आँखें डालकर नहीं देख सकते", "Schiller अपनी कब्र में ज़रूर करवटें बदल रहा होगा", "बेल्जियम की तटस्थता पर दस्तखत करने वाली स्याही अभी सूखी भी नहीं थी", "Lenin के शब्दों का कोई मतलब नहीं है, वे तो बस मैदानों में चलने वाली हवा की तरह हैं"—उसमें कुछ ऐसी मामूली बातें भी होती थीं, जैसे: "बीस हज़ार कैदी—यह तो वाकई एक बड़ी संख्या है।" "हमारी कमान अब हमेशा के लिए अपनी आँखें खुली रखना सीख जाएगी।" "हम जीतना चाहते हैं; बस एक ही मकसद—जीतना।" लेकिन उस बकवास के बीच, उसमें बहुत सारा ज्ञान, बुद्धि और ठोस तर्क भी छिपा होता था। अब, Mme. Verdurin जब भी Brichot का कोई लेख पढ़ना शुरू करती थीं, तो उन्हें पहले से ही इस बात का मज़ा आता था कि उन्हें उसमें ज़रूर कोई न कोई बेतुकी बात मिलेगी; और वह उसे पूरी एकाग्रता से पढ़ती थीं, ताकि उन्हें यकीन हो जाए कि उनमें से कोई भी बेतुकी बात उनकी नज़र से चूक न जाए। दुर्भाग्य से, ऐसे लोग हमेशा मौजूद रहते थे; किसी को ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ता था। ब्रिशो ने जिस रचना का ज़िक्र किया था, उसके लेखक—जो लगभग अनजान ही थे—के एक बेहद सटीक उद्धरण का इस्तेमाल ब्रिशो की बेतुकी विद्वत्ता को साबित करने के लिए किया गया। और मादाम वेर्दुरिन बेसब्री से खाने के समय का इंतज़ार कर रही थीं, ताकि वह अपने मेहमानों को ज़ोर-ज़ोर से हँसने का मौका दे सकें। "तो! आज शाम हमारे ब्रिशो का क्या हाल है? जब मैं कुवियर का वह उद्धरण पढ़ रही थी, तो मुझे तुम्हारी ही याद आई। सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि वह पागल हो रहा है।" "मैंने अभी तक उसे पढ़ा नहीं है," एक 'वफ़ादार' मेहमान ने कहा। "क्या? तुमने अभी तक उसे पढ़ा नहीं? तुम्हें पता ही नहीं कि तुम्हारे लिए कितनी मज़ेदार चीज़ें इंतज़ार कर रही हैं। वह इतना ज़्यादा बेवकूफ़ी भरा

है कि मैं तो हँसते-हँसते मर ही गई थी।" और इस बात से खुश होकर कि किसी-न-किसी ने अभी तक वह खास लेख नहीं पढ़ा था—जिससे वह खुद ब्रिशो की बेवकूफ़ियों को सबके सामने ला सकें—मादाम वेर्दुरिन ने बटलर से 'ले ताँ' (Le Temps) अखबार लाने को कहा और उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना शुरू कर दिया।

, सबसे सरल वाक्यों पर ज़ोर देते हुए। रात के खाने के बाद, पूरी शाम, ब्रिशो-विरोधी अभियान जारी रहा, लेकिन एक तरह के दिखावटी संयम के साथ। "मैं इसे बहुत ज़ोर से नहीं पढ़ रही हूँ क्योंकि मुझे डर है कि नीचे," उसने काउंटेस मोले की ओर इशारा करते हुए कहा, "इस बकवास के लिए अभी भी कुछ तारीफ़ बाकी है। समाज के लोग जितने सीधे होते हैं, हम उससे कहीं ज़्यादा सोचते हैं।" हालाँकि वे चाहते थे कि मादाम मोले सुनें कि वे उसके बारे में क्या कह रहे हैं, उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी करके इसका उल्टा होने का नाटक किया, और उसने, कायरतापूर्ण ढंग से, ब्रिशो को नकार दिया, जिसे असल में वह मिशेले के बराबर मानती थी। वह मादाम वेर्दुरिन से सहमत थी, और फिर भी, बात को ऐसे खत्म करने के लिए जो उसे अकाट्य लगे, उसने जोड़ा, "कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि यह अच्छी तरह से लिखा गया है।" "तुम इसे अच्छी तरह से लिखा हुआ कहती हो," मादाम वेर्दुरिन ने जवाब दिया, "मैं तो इसे सूअर की तरह लिखा हुआ मानती हूँ," इस बात पर समाज में हँसी गूँज उठी, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि मादाम वेर्दुरिन, "सूअर" शब्द से थोड़ी शर्मिंदा होकर, इसे अपने होठों पर हाथ रखकर फुसफुसाते हुए बोली थी। ब्रिशो के प्रति उसकी दुर्भावना इसलिए और बढ़ गई क्योंकि वह अपनी सफलता पर भोलेपन से संतुष्टि दिखाता था, भले ही हर बार सेंसरशिप के कारण उसका मूड खराब हो जाता था—जैसा कि वह कहता था, अपनी आदत के अनुसार बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए

ताकि यह न लगे कि वह बहुत ज़्यादा विद्वान है—कि सेंसरशिप ने उसके लेख का एक हिस्सा काट दिया था। उसके सामने, मादाम वेर्डुरिन ने उसे यह ज़रा भी महसूस नहीं होने दिया कि वह उसके लेखों के बारे में कितनी खराब राय रखती थी, सिवाय अपने रूखे व्यवहार के, जिसे देखकर कोई ज़्यादा समझदार आदमी तो ज़रूर समझ जाता। सिर्फ़ एक बार उसने उसे इस बात के लिए टोका कि वह "मैं" शब्द का इस्तेमाल बहुत ज़्यादा करता है। असल में, वह ऐसा करता भी था, जिसका कुछ कारण उसकी पेशेवर आदत थी; "मैं मानता हूँ कि", "मुझे पता है कि मोर्चों के भारी विकास की ज़रूरत है", वगैरह-वगैरह जैसे वाक्यांश उसके मन में बार-बार आते थे; लेकिन उससे भी ज़्यादा इसलिए कि एक पुराने कट्टर ड्रेफस-विरोधी के तौर पर, जिसने युद्ध से बहुत पहले ही जर्मन तैयारियों का अंदाज़ा लगा लिया था, उसे लगातार यह लिखने की आदत पड़ गई थी: "मैंने 1897 से ही उनकी निंदा की है", "मैंने 1901 में इस बात की ओर इशारा किया था", "मैंने अपनी छोटी-सी पुस्तिका में उन्हें चेतावनी दी थी—जो आज बहुत मुश्किल से मिलती है—'habent sua fata libelli' (किताबों की भी अपनी किस्मत होती है)"—और इस तरह यह आदत पक्की हो गई थी। मैडम वेर्डुरिन की तीखी टिप्पणी सुनकर वह शर्म से लाल हो गया। "आप सही कह रही हैं, मैडम। एक व्यक्ति—जो एम. कोम्ब्स की तरह ही जेसुइट्स को बिल्कुल पसंद नहीं करता था—और जिसे हमारे प्यारे गुरु, संशयवाद के अद्भुत विद्वान अनातोले फ्रांस (जो, अगर मैं गलत नहीं हूँ तो, युद्ध से पहले मेरे विरोधी थे) से अपनी किताब की प्रस्तावना लिखवाने का सौभाग्य मिला था, उसने कहा था कि 'मैं' शब्द हमेशा ही घृणित होता है।" उसी पल से ब्रिशो ने 'मैं' की जगह 'हम' का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया; लेकिन 'हम' शब्द भी पाठक को यह समझने से नहीं रोक पाया कि लेखक असल में अपने ही बारे में बात कर रहा है। इसके

विपरीत, इस शब्द ने उसे अपने बारे में लगातार बात करते रहने का मौका दे दिया; वह अपने सबसे मामूली वाक्यों पर भी लंबी-चौड़ी टीका-टिप्पणी करने लगता और सिर्फ़ किसी एक बात का खंडन करके ही पूरा का पूरा लेख लिख डालता—और हर बार उसे 'हम' शब्द का सुरक्षा-कवच मिल जाता। उदाहरण के लिए, मान लीजिए ब्रिशो ने किसी दूसरे लेख में यह कहा हो कि जर्मन सेनाओं की ताक़त कुछ कम हो गई है, तो वह अपनी बात की शुरुआत कुछ इस तरह करता: "'हम' सच को छिपाने वाले नहीं हैं। 'हम' ने कहा था कि इन जर्मन सेनाओं की ताक़त कुछ कम हो गई है। लेकिन 'हम' ने यह बिल्कुल नहीं कहा था कि उनकी अहमियत अब भी बहुत ज़्यादा नहीं है। और 'हम' तो यह बात बिल्कुल भी नहीं कहेंगे कि उनकी कोई अहमियत ही नहीं बची है—ठीक वैसे ही, जैसे 'हम' यह कभी नहीं कहेंगे कि हमने कोई ज़मीन जीत ली है, जबकि असल में हमने उसे जीता ही न हो—वगैरह-वगैरह।" संक्षेप में कहें तो, ब्रिशो सिर्फ़ उन सभी बातों को गिनाकर जिन्हें वह नहीं कहने वाला था, और उन सभी बातों को याद दिलाकर जिन्हें वह सालों से कहता आ रहा था—साथ ही उन बातों का ज़िक्र करके जो क्लॉज़विट्ज़, ओविड या अपोलोनियस ऑफ़ ट्याना जैसे विद्वानों ने सदियों पहले कही थीं—आसानी से एक पूरी की पूरी किताब लिख सकता था। यह बड़े अफ़सोस की बात है कि उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि ज्ञान और विद्वत्ता से भरे हुए वे लेख अब बहुत मुश्किल से ही मिलते हैं। मैडम वेर्डुरिन के कहने पर, फ़ॉबर्ग सेंट-जर्मेन के लोग उनके घर पर ब्रिशो का मज़ाक उड़ाने लगे, लेकिन जैसे ही वे उस छोटे से समूह से दूर होते, वे फिर से उनकी तारीफ़ करने लगते। फिर उनका मज़ाक उड़ाना एक फ़ैशन बन गया, ठीक वैसे ही जैसे पहले उनकी तारीफ़ करना फ़ैशन था; और यहाँ तक कि वे महिलाएँ भी, जो मन ही मन उनमें दिलचस्पी रखती थीं, जैसे ही उनका कोई लेख पढ़तीं, तो दूसरों

से कम समझदार न दिखने के लिए, सबके सामने रुककर उस पर हँसतीं। उस छोटे से समूह में ब्रिशो के बारे में पहले कभी इतनी चर्चा नहीं हुई थी जितनी इस दौर में हुई, लेकिन वह चर्चा उपहास भरी होती थी। हर नए आने वाले व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का पैमाना ब्रिशो के लेखों के बारे में उसकी राय होती थी; अगर पहली बार में वह संतोषजनक जवाब नहीं देता, तो वे उसे जल्द ही सिखा देते कि लोगों की बुद्धिमत्ता को कैसे परखा जाता है। "खैर, मेरे प्यारे दोस्त," एम. डी चार्लस ने बात आगे बढ़ाई, "यह सब बहुत ही भयानक है और इन उबाऊ लेखों के अलावा भी बहुत कुछ ऐसा है जिस पर अफ़सोस किया जा सकता है। लोग बर्बरता की बात करते हैं, मूर्तियों को तोड़े जाने की बात करते हैं, लेकिन क्या उन इतने सारे अद्भुत नौजवानों का विनाश, जो बेजोड़ सुंदरता वाली रंग-बिरंगी मूर्तियों जैसे थे, बर्बरता नहीं है? क्या वह शहर, जिसमें अब कोई सुंदर पुरुष न बचा हो, उस शहर जैसा नहीं है जिसकी सारी मूर्तियाँ नष्ट कर दी गई हों? मुझे किसी ऐसे रेस्टोरेंट में खाना खाने जाने में क्या मज़ा आ सकता है, जहाँ मुझे बूढ़े, काई लगे, तोंद वाले लोग खाना परोसें जो 'पेरे डिडॉन' जैसे दिखते हों—या फिर ऐसी महिलाएँ परोसें जिन्होंने सिर पर टोपी पहन रखी हो और जो मुझे..."

मुझे लगता है कि मैं 'बुलियन डुवाल' में हूँ। बिल्कुल सही, मेरे प्यारे दोस्त, और मुझे लगता है कि मुझे ऐसा कहने का पूरा हक है, क्योंकि सुंदरता तो जीवित चीज़ों में भी उतनी ही सुंदर होती है। उन कमज़ोर-से दिखने वाले, चश्मा लगाए लोगों से सेवा करवाना एक अलग ही आनंद देता है—जिनकी युद्ध से छूट मिलने की वजह उनके चेहरों पर ही साफ़ पढ़ी जा सकती है। आजकल, अगर कोई किसी रेस्टोरेंट में किसी सुंदर व्यक्ति को देखकर अपनी आँखों को सुकून देना चाहता है, तो उसे अब वेटर लोगों में

नहीं, बल्कि ग्राहकों के बीच उसे ढूँढ़ना चाहिए। और कोई किसी नौकर को तो फिर से देख सकता है—क्योंकि वे अक्सर बदलते रहते हैं—लेकिन उस अंग्रेज़ लेफ्टिनेंट का क्या, जो पहली बार इस रेस्टोरेंट में आया है और शायद कल ही मारा जाएगा? जब पोलैंड के ऑगस्टस ने—जैसा कि 'क्लैरिस' के प्यारे लेखक मोरांड बताते हैं—अपनी एक पूरी रेजिमेंट के बदले चीनी बर्तनों का एक संग्रह ले लिया था, तो मेरी राय में उन्होंने घाटे का सौदा किया था। यह सोचकर ही दिल बैठ जाता है कि वे सभी शानदार, छह फुट ऊँचे नौकर—जो हमारी सुंदर सहेलियों की आलीशान सीढ़ियों की शोभा बढ़ाते थे—वे सब मारे जा चुके हैं; उनमें से ज़्यादातर तो इसलिए सेना में भर्ती हो गए थे, क्योंकि लोग उनसे लगातार यही कहते रहते थे कि यह युद्ध तो बस दो महीने ही चलेगा। "आह! उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था—जैसा कि मुझे था—कि जर्मनी की ताकत कितनी ज़्यादा है, और प्रशियाई नस्ल कितनी बहादुर है," उन्होंने खुद में ही खोते हुए आगे कहा। और फिर, जब उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने अपने विचार कुछ ज़्यादा ही साफ़ तौर पर ज़ाहिर कर दिए हैं, तो उन्होंने बात आगे बढ़ाई: "मुझे फ्रांस के लिए जर्मनी से उतना डर नहीं लगता, जितना कि खुद इस युद्ध से लगता है। लोगों को लगता है कि यह युद्ध तो बस एक बहुत बड़ा मुक्केबाज़ी का मुकाबला है, जिसे वे अखबारों की बदौलत दूर से ही बैठकर देख रहे हैं। लेकिन यह बात पूरी तरह से गलत है। यह तो एक ऐसी बीमारी है, जो जब एक जगह ठीक होती हुई लगती है, तो दूसरी जगह फिर से उभर आती है। आज, 'नोयोन' को राहत मिल जाएगी; कल, हमारे पास न तो रोटी होगी और न ही चॉकलेट; और उसके अगले दिन, वह इंसान—जो खुद को पूरी तरह सुरक्षित समझ रहा था और ज़रूरत पड़ने पर एक ऐसी मौत मरने के लिए भी तैयार था जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी—अखबारों में यह पढ़कर दहशत से भर जाएगा

कि उसकी 'क्लास' (उम्र-वर्ग) के लोगों को भी अब युद्ध के लिए बुला लिया गया है।" जहाँ तक स्मारकों की बात है, रीम्स जैसी अद्वितीय कृति का विनाश मुझे उतना भयानक नहीं लगता, जितना कि उन असंख्य कला-समूहों का विनाश देखना, जिन्होंने फ्रांस के सबसे छोटे गाँव को भी शिक्षाप्रद और मनमोहक बना दिया था। तुरंत ही मैं कोम्ब्रे के बारे में सोचने लगा, और कैसे पुराने दिनों में, वहाँ मेरे परिवार की साधारण स्थिति को स्वीकार करने के कारण, मुझे लगता था कि मैडम डी गुएरमांटेस की नज़रों में मेरा कद छोटा हो गया है। मैं सोच रहा था कि क्या यह बात गुएरमांटेस परिवार और एम. डी चार्लस को पता चल गई होगी—चाहे लेग्रैंडिन, स्वान, सेंट-लूप या मोरेल के ज़रिए ही क्यों न पता चली हो। लेकिन यह बात उजागर हो गई हो, यह मुझे उतना कष्टप्रद नहीं लगा, जितना कि अतीत की बातों पर सफाई देना। मुझे बस यही उम्मीद थी कि एम. डी चार्लस कोम्ब्रे का ज़िक्र नहीं करेंगे। "मैं अमेरिकियों के बारे में बुरा नहीं कहना चाहता, महाशय," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "ऐसा लगता है कि वे असीम रूप से उदार हैं; और चूँकि इस युद्ध में कोई एक 'ऑर्केस्ट्रा कंडक्टर' नहीं था—हर कोई एक-दूसरे के काफी बाद इस 'नृत्य' में शामिल हुआ, और अमेरिकियों ने तब शुरुआत की जब हम लगभग थक चुके थे—तो शायद उनमें वह जोश अब भी बाकी हो, जिसे चार साल के युद्ध ने हममें से खत्म कर दिया है। युद्ध से पहले भी वे हमारे देश और हमारी कला से प्रेम करते थे, और हमारी उत्कृष्ट कृतियों के लिए ऊँची कीमतें चुकाते थे—जिनमें से कई अब उनके पास हैं। लेकिन यह ठीक वही 'जड़-विहीन' कला है—जैसा कि एम. बैरेस कहते—जो उन तमाम चीज़ों के बिल्कुल विपरीत है, जिन्होंने फ्रांस को उसका अद्वितीय आकर्षण प्रदान किया था। 'शैटो' (किले) ने उस चर्च की व्याख्या की, और उस चर्च ने—क्योंकि वह एक तीर्थस्थल था—बदले में 'चैन्सन डी जेस्ट'

(वीरगाथाओं) की व्याख्या की। उदाहरण के तौर पर, मुझे अपनी खुद की वंशावली और अपने संबंधों के बारे में विस्तार से बताने की ज़रूरत नहीं है; वैसे भी, हमारा उससे कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन हाल ही में मुझे परिवार से जुड़े कुछ मामलों को सुलझाना पड़ा, और सेंट-लूप परिवार तथा मेरे बीच मौजूद कुछ हद तक की 'बेरुखी' के बावजूद, मुझे अपनी भतीजी से मिलने कोम्ब्रे जाना पड़ा। कोम्ब्रे भी अन्य कई कस्बों की तरह ही एक छोटा सा कस्बा था, लेकिन वहाँ के चर्च की कई रंगीन खिड़कियों (stained glass windows) में हमारे पूर्वजों को 'संरक्षक' के रूप में चित्रित किया गया था, और कुछ अन्य खिड़कियों पर हमारे 'कुल-चिह्न' (arms) अंकित थे। वहाँ हमारा अपना एक 'चैपल' (छोटा गिरजाघर) और हमारे पूर्वजों की समाधियाँ थीं। इस चर्च को फ्रांसीसी और अंग्रेज़ सैनिकों ने ही नष्ट कर दिया, क्योंकि जर्मन सैनिक इसका इस्तेमाल 'निगरानी-चौकी' के तौर पर कर रहे थे। इतिहास और कला का वह सारा मिला-जुला ताना-बाना—जो ही असल में 'फ्रांस' था—अब नष्ट होता जा रहा है, और यह सिलसिला अभी थमा नहीं है।" बेशक, मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूँ कि पारिवारिक कारणों से कॉम्ब्रे के चर्च के विनाश की तुलना रीम्स के कैथेड्रल से करूँ—जो अपनी अनोखी मूर्तियों की सहज पवित्रता के कारण एक गॉथिक कैथेड्रल का चमत्कार था—या एमिएन्स के कैथेड्रल से करूँ। मुझे नहीं पता कि आज सेंट फ़िरमिन की उठी हुई बांह टूटकर चूर-चूर हो गई है या नहीं। अगर ऐसा हुआ है, तो आस्था और ऊर्जा की सबसे महान अभिव्यक्ति इस दुनिया से मिट गई है। "उसका "मैं समझता हूँ कि आप क्या कहना चाहते हैं," एम. डी चार्लस ने जवाब दिया, "और एम. बैरेस—जिन्होंने, अफ़सोस! हमें स्ट्रासबर्ग की मूर्ति और एम. डेरुलेड की समाधि पर बार-बार तीर्थयात्राएँ करने पर मजबूर किया —बहुत ही भावुक और सुंदर थे जब उन्होंने लिखा कि रीम्स का कैथेड्रल

भी हमारे लिए हमारे किसी पैदल सैनिक की जान से कम प्यारा है। यह बात हमारे अखबारों के उस गुस्से को काफी हास्यास्पद बना देती है, जो उस जर्मन जनरल के खिलाफ था जिसने कहा था कि रीम्स का कैथेड्रल उसके लिए एक जर्मन सैनिक की जान से कम कीमती है। और सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली और दिल दहला देने वाली बात यह है कि हर देश यही बात कहता है। जर्मनी के औद्योगिक संगठनों ने बेलफोर्ट पर कब्ज़ा बनाए रखने के लिए जो कारण दिए हैं—कि यह हमारे बदले की भावना से अपने देश को बचाने के लिए ज़रूरी है—वे बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे बैरेस ने मेयेंस पर कब्ज़ा करने के लिए दिए थे, ताकि हमें 'बोशेस' (जर्मनों) के हमले की आशंकाओं से बचाया जा सके। यह कैसे हो सकता है कि अल्सेस-लोरेन की वापसी फ्रांस के लिए युद्ध शुरू करने का एक अपर्याप्त कारण लगे, लेकिन फिर भी युद्ध जारी रखने और हर साल उसे नए सिरे से घोषित करने का एक पर्याप्त कारण बन जाए? आपको लगता है कि फ्रांस की जीत पक्की है; मैं भी पूरे दिल से यही उम्मीद करता हूँ—इसमें आपको कोई शक नहीं होना चाहिए—लेकिन जब से, चाहे सही हो या गलत, मित्र देशों को यह यकीन हो गया है कि उनकी जीत निश्चित है (जहाँ तक मेरी बात है, बेशक, मैं ऐसे किसी भी नतीजे से बहुत खुश होऊँगा, लेकिन मैं कागज़ों पर बहुत सारी जीतें देखता हूँ—ऐसी जीतें जिनकी कीमत हमें नहीं बताई जाती) और यह कि 'बोशेस' को अब अपनी जीत का भरोसा नहीं रहा, तब से हम देख रहे हैं कि जर्मनी शांति चाहता है और फ्रांस युद्ध को लंबा खींचना चाहता है; यह कि फ्रांस —जो न्याय की आवाज़ को बुलंद करना चाहता है—उसे ही अब करुणावान फ्रांस भी बनना चाहिए, और दया के शब्द कहने चाहिए—भले ही सिर्फ़ अपने बच्चों की खातिर ही सही—ताकि जब वसंत के दिन लौटकर आएँ और फूल फिर से खिलें, तो वे सिर्फ़ कब्रों को ही नहीं,

बल्कि दूसरी चीज़ों को भी रोशन करें। ज़रा खुलकर बात कीजिए, मेरे प्यारे दोस्त; आपने ही मुझे वह सिद्धांत समझाया था कि चीज़ें तभी अस्तित्व में रहती हैं जब उनका लगातार नया सृजन होता रहता है। आप कहा करते थे कि दुनिया का सृजन एक बार में ही हमेशा के लिए नहीं हो गया, बल्कि यह हर दिन लगातार चलता रहता है। तो फिर, अगर आपने यह बात पूरी ईमानदारी से कही थी, तो आप इस युद्ध को उस सिद्धांत से अलग नहीं मान सकते। हमारे बेहतरीन नॉरपोइस के लिए यह लिखना तो बहुत अच्छी बात है (कि वे... (अपने उन पसंदीदा अलंकारिक मुहावरों में से एक का इस्तेमाल करते हुए, जैसे 'जीत की सुबह' और 'जनरल विंटर') 'अब जब जर्मनी ने युद्ध चाहा है, तो पासा फेंक दिया गया है'—सच तो यह है कि हर दिन युद्ध की घोषणा नए सिरे से होती है। इसलिए, जो इसे जारी रखना चाहता है, वह उतना ही दोषी है जितना कि जिसने इसे शुरू किया था—शायद उससे भी ज़्यादा, क्योंकि बाद वाला शायद इसके सारे भयानक परिणामों का अंदाज़ा नहीं लगा पाया होगा। और ऐसा दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि इतना लंबा चलने वाला युद्ध—भले ही उसका परिणाम जीत में निकले—खतरों से खाली होगा। उन चीज़ों के बारे में बात करना मुश्किल है जिनका कोई पूर्व उदाहरण न हो, और किसी ऐसे अभियान के तंत्र पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में बात करना भी मुश्किल है जिसे पहली बार आज़माया जा रहा हो। आम तौर पर, यह सच है कि जिन नई-नई चीज़ों को लेकर हम घबराते हैं, हम उनसे काफी हद तक उबर जाते हैं। सबसे समझदार रिपब्लिकन को भी चर्च की संस्था को खत्म करना पागलपन लगा था, लेकिन वह काम इतनी आसानी से हो गया जैसे कोई चिट्ठी डाक से भेजी गई हो। ड्रेफस का पुनर्वास हुआ, और पिक्वार्ट को युद्ध मंत्री बना दिया गया—बिना किसी के एक भी शब्द कहे। फिर भी, कई सालों तक लगातार चलने वाले युद्ध से पैदा हुई इतनी

ज़बरदस्त थकावट के बाद क्या-क्या नहीं हो सकता? जब सैनिक वापस लौटेंगे तो वे क्या करेंगे? क्या वे पूरी तरह से थक चुके होंगे? क्या थकान ने उन्हें तोड़ दिया होगा, या उन्हें पागल बना दिया होगा? यह सब बुरा साबित हो सकता है—अगर फ्रांस के लिए नहीं, तो कम से कम सरकार के लिए, और शायद सरकार के स्वरूप के लिए भी। पहले आपने मुझे मौरस की लिखी शानदार किताब 'एमि डी कोइग्नी' पढ़ने के लिए दी थी। मुझे बहुत हैरानी होगी अगर कोई 'एमि डी कोइग्नी' इस युद्ध से—जिसे हमारा गणतंत्र लड़ रहा है—वैसे ही परिणामों की उम्मीद न कर रही हो, जैसी उम्मीद 1812 में उस 'एमि डी कोइग्नी' ने उस युद्ध से की थी जिसे उस समय का साम्राज्य लड़ रहा था। अगर वह 'एमि डी कोइग्नी' सचमुच मौजूद है, तो क्या उसकी उम्मीदें पूरी होंगी? मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा। अब वापस युद्ध की बात पर आते हैं: क्या सम्राट विलियम ने इसे शुरू किया था? मुझे इस पर गहरा संदेह है; और अगर उन्होंने ऐसा किया भी था, तो उन्होंने ऐसा कौन सा काम किया है जो नेपोलियन ने—उदाहरण के लिए—नहीं किया था? ऐसे काम जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से घिनौना मानता हूँ; लेकिन मुझे इस बात पर हैरानी होती है कि नेपोलियन की पूजा करने वालों में—उन लोगों में—ये काम इतनी ज़्यादा दहशत क्यों पैदा करते हैं, जबकि युद्ध की घोषणा के दिन वे लोग जनरल X की तरह चीख रहे थे: 'मैं चालीस सालों से इस दिन का इंतज़ार कर रहा था। यह मेरी ज़िंदगी का सबसे महान दिन है;' भगवान ही जानता है कि जब समाज ने राष्ट्रवादियों और सैनिकों को ज़रूरत से ज़्यादा अहमियत दी, जब कला के हर प्रेमी पर यह इल्ज़ाम लगाया गया कि वह ऐसे काम कर रहा है जो देश के लिए नुकसानदेह हैं, और जब हर शांतिप्रिय सभ्यता को हानिकारक माना गया, तब मुझसे ज़्यादा ज़ोरदार विरोध शायद ही किसी ने किया हो। किसी भी असली सामाजिक हस्ती की तुलना किसी जनरल

से नहीं की जा सकती थी; कोई न कोई सनकी औरत मुझे M. Syveton से मिलवाने की कोशिश करती ही रहती थी! आप मुझसे कहेंगे कि मैं तो बस समाज के नियमों को बनाए रखने की ही फ़िक्र करता था; लेकिन, उनकी ऊपरी तौर पर दिखने वाली तुच्छता के बावजूद, शायद वे कई तरह की ज्यादतियों को रोक सकते थे। मैंने हमेशा उन लोगों का सम्मान किया है जो व्याकरण और तर्क की रक्षा करते हैं, और यह
प्रतीक, महाशय," मैंने जवाब दिया, "मैं भी आपकी तरह ही प्रतीकों से प्रेम करता हूँ, लेकिन जिस वास्तविकता का प्रतीक वह है, उस वास्तविकता को प्रतीक पर कुर्बान कर देना बेतुकी बात होगी। कैथेड्रल की पूजा तब तक की जानी चाहिए, जब तक कि उन्हें बचाने के लिए, उन सच्चाइयों को नकारने की ज़रूरत न पड़ जाए, जो वे सिखाते हैं। सेंट फ़िरमिन की उठी हुई बांह, एक लगभग सैनिक-जैसे हाव-भाव के साथ कहती थी: 'अगर सम्मान की माँग हो, तो भले ही हम टूट जाएँ। पत्थरों की खातिर इंसानों की बलि मत दो; इन पत्थरों की सुंदरता तो इसी बात में है कि इन्होंने कुछ पलों के लिए ही सही, मानवीय सच्चाइयों को स्थापित किया है।'"

पचास साल बाद ही यह एहसास होता है कि उन्होंने कितने बड़े खतरों को टाल दिया था। और हमारे राष्ट्रवादी सबसे ज़्यादा जर्मन-विरोधी, सबसे कट्टर लोग हैं, लेकिन पिछले पंद्रह सालों में उनकी सोच पूरी तरह बदल गई है। असल में, अब वे युद्ध जारी रखने की वकालत कर रहे हैं, लेकिन ऐसा वे सिर्फ़ एक लड़ाकू नस्ल को खत्म करने के लिए और शांति के प्रति अपने प्रेम के कारण कर रहे हैं। क्योंकि जिस युद्ध-प्रिय सभ्यता को वे पंद्रह साल पहले इतना सुंदर मानते थे, अब वही उन्हें डराती है; वे न सिर्फ़ प्रशिया पर यह आरोप लगाते हैं कि उसने अपने देश में सैनिक तत्वों को हावी होने दिया, बल्कि वे यह भी मानते हैं कि हर दौर में सैनिक

सभ्यताएँ उन सभी चीज़ों को नष्ट कर देती थीं जिन्हें अब वे कीमती मानते हैं—जिनमें कलाओं के क्षेत्र में 'वीरता' की कला भी शामिल है। उनके किसी भी आलोचक के राष्ट्रवादी बन जाने के लिए बस इतना ही काफ़ी है कि वह तुरंत शांति का समर्थक बन जाए; उसे यह पक्का यकीन हो जाता है कि सभी युद्ध-प्रिय सभ्यताओं में औरतें एक अपमानजनक और नीची भूमिका निभाती हैं। कोई भी यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि मध्य युग के शूरवीरों की स्त्रियाँ और दांते की बीट्रिस शायद उतनी ही ऊँची गद्दी पर बिठाई गई थीं, जितनी कि एम. बेक की नायिकाएँ। मुझे उम्मीद है कि किसी दिन मैं खाने की मेज़ पर खुद को किसी रूसी क्रांतिकारी से नीचे, या शायद अपने ही किसी जनरल से नीचे बैठा हुआ पाऊँगा—वे जनरल जो युद्ध से नफ़रत करने के कारण युद्ध करते हैं, और जो किसी ऐसे राष्ट्र को सज़ा देना चाहते हैं जिसने एक ऐसे आदर्श को अपनाया है जिसे वे खुद पंद्रह साल पहले सबसे ज़्यादा स्फूर्तिदायक आदर्श मानते थे। कुछ महीने पहले तक तो बेचारे ज़ार का सम्मान किया जाता था, क्योंकि उन्होंने 'हेग सम्मेलन' बुलाया था; लेकिन अब जब हम 'मुक्त रूस' का स्वागत कर रहे हैं, तो हम उसकी गौरव की एकमात्र निशानी को ही भूल जाते हैं—दुनिया का पहिया इसी तरह घूमता है। और फिर भी, जर्मनी ठीक वैसे ही शब्दों का इस्तेमाल करता है जैसे फ़्रांस करता है—इतने ज़्यादा कि किसी को भी लग सकता है कि वह फ़्रांस की नकल कर रहा है। वह यह कहना कभी नहीं छोड़ता कि वह अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। जब मैं पढ़ता हूँ: "हम एक ऐसे बेरहम और क्रूर दुश्मन से लड़ रहे हैं, जब तक कि हमें ऐसी शांति न मिल जाए जो भविष्य में हमें हर तरह के हमले से सुरक्षित रखे, और ताकि हमारे बहादुर सैनिकों का खून बेकार न जाए," या फिर "जो हमारे साथ नहीं है, वह हमारे खिलाफ़ है"—तो मुझे समझ नहीं आता कि यह बात सम्राट विल्हेम ने कही है या एम.

पॉइनकेयर ने; क्योंकि दोनों ने ही इन शब्दों का इस्तेमाल बीस बार किया है, बस थोड़े-बहुत फेरबदल के साथ। हालाँकि, सच कहूँ तो मुझे यह मानना पड़ेगा कि इस मामले में सम्राट ने ही गणतंत्र के राष्ट्रपति की नकल की थी। "शायद फ्रांस युद्ध को लंबा खींचने पर अड़ा न रहता, अगर वह कमज़ोर बना रहता; लेकिन शायद जर्मनी को भी इसे खत्म करने की इतनी जल्दी न होती, अगर वह अपनी ताकत न खोता—मेरा मतलब है, उतनी ताकत जितनी उसके पास पहले थी, क्योंकि आप देखेंगे कि वह अब भी काफी ताकतवर है।" घबराहट के मारे बहुत ज़ोर से बोलने की उसे आदत पड़ गई थी; वह उन मानसिक दबावों से राहत पाना चाहता था जिन्हें, किसी भी कला का अभ्यास न होने के कारण, वह बाहर निकालने के लिए विवश महसूस करता था—ठीक वैसे ही जैसे कोई विमान-चालक अपने बम किसी खुले मैदान में गिराता है, जहाँ उसके शब्द किसी को चोट नहीं पहुँचाते। खासकर सामाजिक महफिलों में, जहाँ उसके शब्द बेतरतीब ढंग से गिरते थे, और जहाँ लोग केवल दिखावे या रसूख के चलते उसकी बातों को ध्यान से सुनते थे; वहाँ वह अपने श्रोताओं पर इस कदर हावी हो जाता था कि कोई भी कह सकता था कि वे उससे सहमे हुए थे। इसके अलावा, सड़कों (बुलेवार्ड्स) पर उसका यह ऊँचा स्वर, वहाँ से गुज़रने वाले लोगों के प्रति उसकी अवमानना का प्रतीक था; वह उन लोगों के लिए अपनी आवाज़ उतनी भी धीमी नहीं करता था, जितनी वह उनके लिए रास्ते से हटता। लेकिन वहाँ उसकी आवाज़ ज़ोर से गूँजती और लोगों को चौंका देती थी; और खासकर तब, जब उसकी बातें इतनी साफ़ होती थीं कि राहगीर मुड़कर देखने लगते थे—ऐसे में तो वे राहगीर हमें 'हारवादी' (defeatists) कहकर गिरफ़्तार भी करवा सकते थे। मैंने एम. दे शार्लस का ध्यान इस बात की ओर दिलाया, लेकिन इसका नतीजा बस इतना हुआ कि उन्हें ज़ोरों की हँसी आ गई: "मानो कि यह सचमुच मज़ेदार

होगा," उन्होंने कहा। "आखिरकार, कोई नहीं जानता—हममें से किसी के भी साथ ऐसा हो सकता है कि आज शाम की घटना कल सुबह अखबारों की सुर्खियों में छप जाए; और अगर बात यहाँ तक आ ही गई है, तो फिर मुझे विन्सेन्स की खाई में गोली क्यों न मार दी जाए? मेरे परदादा, ड्यूक द'एंगिएन के साथ भी तो यही हुआ था। कुलीन रक्त की प्यास आम जनता को बहुत रास आती है—इस मामले में तो वे शेरों से भी ज़्यादा 'परिष्कृत' (refined) साबित होते हैं। जहाँ तक उन जानवरों की बात है, आप जानते ही हैं, अगर श्रीमती..." Verdurin की नाक पर बस एक खरोंच थी; वह कहती थी कि वे उस पर ऐसे झपटे थे, जिसे मेरी जवानी में लोग 'pif' कहते थे। और वह अपना मुँह चौड़ा खोलकर हँसने लगा, मानो वह कमरे में बिल्कुल अकेला हो। कभी-कभी, जब मैं देखता कि M. de Charlus जहाँ से गुज़र रहे थे, उसके पास ही एक अँधेरी गली से कुछ संदिग्ध लोग निकलकर थोड़ी दूरी पर जमा हो रहे हैं, तो मैं सोचता कि क्या वह चाहेंगे कि मैं उन्हें अकेला छोड़ दूँ या उनके साथ ही रहूँ। ठीक वैसे ही, जैसे कोई व्यक्ति किसी ऐसे बुज़ुर्ग से मिले जिसे मिर्गी के दौरे पड़ते हों और जिसका बेतुका बर्ताव यह संकेत देता हो कि उसे कभी भी दौरा पड़ सकता है; ऐसे में वह व्यक्ति खुद से पूछता है कि क्या उस बुज़ुर्ग को उसके साथ की ज़रूरत एक सहारे के तौर पर है, या वह उससे एक गवाह के तौर पर डर रहा है—एक ऐसा गवाह जिससे वह अपना दौरा छिपाना चाहेगा, जिसकी महज़ मौजूदगी शायद दौरे को और बढ़ा दे, जबकि पूरी तरह से शांति शायद उसे रोक ले; और वह संभावित घटना, जिसके बारे में वह तय नहीं कर पाता कि उससे भागा जाए या नहीं, मरीज़ की टेढ़ी-मेढ़ी चाल से ज़ाहिर हो जाती है—ठीक वैसी ही चाल, जैसी किसी नशे में धुत आदमी की होती है। M. de Charlus के इस मामले में भी, अलग-अलग तरह की स्थितियाँ—जो किसी संभावित

घटना के संकेत थीं...
मुझे पक्का नहीं था कि वह ऐसा होते देखना चाहते थे या उन्हें डर था कि मेरी मौजूदगी इसे रोक देगी; लेकिन एक होशियारी भरी व्यवस्था के चलते, यह भूमिका खुद बैरन ने नहीं निभाई—जो सीधे आगे बढ़ रहे थे—बल्कि अभिनेताओं की एक पूरी टोली ने निभाई। फिर भी, मुझे लगता है कि उन्होंने उस आमने-सामने की स्थिति से बचना ही बेहतर समझा, क्योंकि वह मुझे एक ऐसी गली में ले गए जो मुख्य सड़क (बुलेवार्ड) से कहीं ज़्यादा सुनसान थी। वहाँ हर सेना और हर देश के सैनिकों का तांता लगा रहता था—युवाओं की इस लगातार आमद ने एम. डी शार्लस को उन सभी पुरुषों के सीमा पर चले जाने से हुए खालीपन की भरपाई और सांत्वना दी; सीमा पर चले जाने के कारण ही लामबंदी के शुरुआती दिनों में पेरिस में वह भयानक सन्नाटा छा गया था। एम. डी शार्लस हमारे सामने से गुज़र रही शानदार वर्दियों की लगातार तारीफ़ कर रहे थे; इन वर्दियों ने पेरिस को किसी बंदरगाह जितना ही विश्वव्यापी बना दिया था—और साथ ही, किसी पेंट की हुई तस्वीर जितना ही अवास्तविक भी—जिसमें वास्तुकला के रूप एक पृष्ठभूमि का काम कर रहे थे, और उनके सामने सबसे अलग-अलग और लुभावनी पोशाकें नज़र आ रही थीं। उन कुछ 'बड़ी हस्तियों' (grandes dames) के लिए उनके मन में अब भी वही इज़्ज़त और स्नेह था, जिन पर 'हार मान लेने' (defeatism) का आरोप लगा था—ठीक वैसे ही, जैसे पहले उन लोगों के लिए था जिन पर 'ड्रेफ़स-वाद' (Dreyfusism) का आरोप लगा था। उन्हें बस इस बात का अफ़सोस था कि राजनीति में दखल देकर, उन्होंने "पत्रकारों की टीका-टिप्पणी" को उन पर निशाना साधने का एक मौका दे दिया था। जहाँ तक उन महिलाओं का सवाल था, उनके बारे में एम. डी शार्लस की राय बिल्कुल नहीं बदली थी। क्योंकि उनकी 'छिछोरी सोच' इतनी व्यवस्थित

थी कि उनके लिए 'ऊँचे कुल' में जन्म—जो सुंदरता और अन्य आकर्षणों के साथ जुड़ा हो—ही एकमात्र स्थायी चीज़ थी; और युद्ध—ठीक ड्रेफ़स-प्रकरण की तरह—उनके लिए बस एक घटिया और क्षणभंगुर फ़ैशन मात्र था। अगर ऑस्ट्रिया के साथ अलग से शांति-समझौता करने की शुरुआत के तौर पर डचेस डी गुएरमांटेस को गोली भी मार दी जाती, तो भी वह इसे एक 'वीरतापूर्ण' कार्य ही मानते; और यह उन्हें आज के समय में मैरी एंटोनेट को सिर कलम करने की सज़ा सुनाए जाने से ज़्यादा अपमानजनक नहीं लगता। उस पल, एम. डी शार्लस—जो किसी सेंट वैलियर या सेंट मेग्रिन जितने ही कुलीन और भव्य दिख रहे थे—बिल्कुल सीधे, तने हुए और गंभीर खड़े थे। वह बहुत ही संजीदगी से बात कर रहे थे, और उन्होंने ऐसे कोई हाव-भाव या हरकतें नहीं कीं, जिनसे उनके जैसे लोगों की असलियत ज़ाहिर हो जाती है। फिर भी, ऐसा क्यों है कि कोई भी ऐसा नहीं मिलता जिसकी आवाज़ बिल्कुल 'सही सुर' में हो? ठीक उसी पल भी—जब वह बेहद गंभीर विषयों पर बात कर रहे थे—उनकी आवाज़ में वह 'बेसुरापन' (false note) अब भी मौजूद था, जिसे ठीक करने की ज़रूरत थी। और एम. डी चार्लस को सचमुच समझ नहीं आ रहा था कि अब किस तरफ देखें; उन्होंने अपना सिर ऐसे ऊपर उठाया, मानो उन्हें किसी दूरबीन की ज़रूरत महसूस हो रही हो—हालाँकि, वह उनके लिए ज़्यादा काम की नहीं होती, क्योंकि पिछले दिन हुए ज़ेपेलिन हमले के कारण सरकारी अधिकारियों की चौकसी बढ़ गई थी, और आसमान तक हर जगह सैनिक ही सैनिक नज़र आ रहे थे। जो हवाई जहाज़ मैंने कुछ घंटे पहले देखे थे—शाम के नीले आसमान में कीड़े या भूरे धब्बों की तरह—वे रात के और भी गहरा जाने पर भी उड़ते रहे; रात इसलिए और भी गहरी लग रही थी, क्योंकि सड़कों की बत्तियाँ आधी बुझ चुकी थीं और जलती हुई लकड़ियों के गट्ठरों जैसी लग रही थीं। इन उड़ते हुए

'इंसानी सितारों' ने हमें सुंदरता का जो सबसे गहरा एहसास कराया, वह शायद यह था कि उन्होंने हमें आसमान की ओर देखने के लिए प्रेरित किया—एक ऐसी जगह, जहाँ उस पेरिस में लोग शायद ही कभी नज़र उठाते थे; वही पेरिस, जिसकी लगभग निहत्थी सुंदरता को मैंने 1914 में दुश्मन के बढ़ते ख़तरे का इंतज़ार करते हुए देखा था। यकीनन, तब की तरह अब भी, चाँद की वह प्राचीन और अपरिवर्तित भव्यता मौजूद थी—एक ऐसी भव्यता जो क्रूरतापूर्ण और रहस्यमयी ढंग से शांत थी—और जो उन अभी भी अक्षुण्ण स्मारकों पर अपनी रोशनी की व्यर्थ-सी सुंदरता बिखेर रही थी। लेकिन, 1914 की तरह—और बल्कि 1914 से भी कहीं ज़्यादा—अब कुछ और भी था: कुछ और रोशनियाँ और रुक-रुककर चमकती किरणें। यह एहसास होता था कि, चाहे वे हवाई जहाज़ों से आ रही हों या आइफ़िल टावर की सर्चलाइटों से, उन्हें किसी सचेत इच्छाशक्ति द्वारा—किसी सुरक्षात्मक चौकसी द्वारा—नियंत्रित किया जा रहा था। इसी चौकसी ने मेरे मन में वही भावना जगाई, वही कृतज्ञता और शांति भर दी, जिसका अनुभव मैंने सेंट-लूप के कमरे में किया था—उस 'सैनिक मठ' की उस कोठरी में, जहाँ कितने ही जोशीले और अनुशासित हृदय उस दिन के लिए तैयार हो रहे थे, जब बिना किसी हिचकिचाहट के, वे अपनी जवानी की पूरी बहार में अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले थे।

पिछली शाम के हमले के दौरान आकाश धरती से भी ज़्यादा अशांत था, लेकिन हमले के बाद आकाश अपेक्षाकृत शांत हो गया, पर तूफ़ान के बाद समुद्र की तरह पूरी तरह शांत नहीं हुआ था। हवाई जहाज़ रॉकेट की तरह आकाश में ऊपर उठे और तारों में समा गए, और सर्चलाइटें धीरे-धीरे आकाश में घूम रही थीं, जो धूल भरे तारों से अलग-अलग हिस्सों में बंटा

हुआ था, मानो आकाशगंगा भटक रही हो। हवाई जहाज़ तारों में इस कदर घुलमिल गए थे कि ऐसा लग रहा था मानो कोई दूसरे गोलार्ध में नए तारामंडलों को देख रहा हो। एम. डी चार्लस ने इन विमान चालकों के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त की और, जैसा कि वे अपनी जर्मन-प्रेम की भावना को खुलकर ज़ाहिर करने से खुद को नहीं रोक सके, हालांकि उन्होंने दोनों से इनकार किया, मुझसे कहा: "इसके अलावा, मुझे यह भी कहना होगा कि मैं जर्मनों की गोथा विमानों में उतनी ही प्रशंसा करता हूँ। और सोचो उन ज़ेपेलिन में जाने के लिए कितनी हिम्मत चाहिए। वे सचमुच नायक हैं। और अगर वे नागरिकों पर बम गिराते हैं, तो क्या हमारी तोपें उन पर हमला नहीं करेंगी? क्या तुम गोथा विमानों और तोपों से डरते हो?" मैंने कहा कि मैं ऐसा नहीं था, लेकिन शायद मैं गलत था। आलस्य के कारण काम को दिन-प्रतिदिन टालने की आदत पड़ जाने से, मुझे निस्संदेह लगा कि मृत्यु भी मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार करेगी। भला कोई उस गोले से कैसे डर सकता है जिसके बारे में उसे पूरा यकीन हो कि वह उस दिन उसे नहीं लगेगा? इसके अलावा, बमों के गिरने और संभावित मृत्यु के ये अलग-थलग विचार, गुजरते जर्मन हवाई जहाजों की मेरी छवि में कोई दुखद पहलू नहीं जोड़ते थे, जब तक कि एक शाम मैंने उनमें से किसी एक से हमारी ओर एक बम गिरते हुए नहीं देखा, जो तूफानी बादलों में इधर-उधर बिखर रहा था, या किसी हवाई जहाज से, जिसका घातक उद्देश्य तो मुझे पता था, लेकिन जिसे मैं तब तक दिव्य मानता था। क्योंकि खतरे की अंतिम वास्तविकता को केवल किसी नई और पहले से ज्ञात चीज़ के माध्यम से ही समझा जा सकता है, जिसे हम एक छाप कहते हैं और जिसे अक्सर, जैसा कि अब हुआ, एक पंक्ति में समेट दिया जाता है, एक ऐसी पंक्ति जो एक उद्देश्य प्रकट करती है, एक ऐसी पंक्ति जिसमें क्रिया की एक अंतर्निहित शक्ति होती है जो इसे बदल देती है; इस

प्रकार, पोंट डे ला कॉनकॉर्ड पर, खतरनाक और पीछा किए जा रहे हवाई जहाज के चारों ओर, मानो चैंप्स एलिसीज़, प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड, और ट्यूलरीज़ के फव्वारे बादलों में प्रतिबिंबित हो रहे हों, चमकदार पानी की फुहारों जैसी सर्चलाइटें तीरों की तरह आकाश को चीर रही थीं, उद्देश्य से भरी रेखाएं, शक्तिशाली और बुद्धिमान पुरुषों का दूरदर्शी और सुरक्षात्मक उद्देश्य, जिनके प्रति मैंने वही कृतज्ञता महसूस की, जैसी उस रात डोंसिएरेस में अपने क्वार्टर में थी, जब उनकी शक्ति ने इतनी शानदार सटीकता के साथ हमारी रक्षा करने की कृपा की थी।

रात उतनी ही खूबसूरत थी जितनी 1914 में थी, जब पेरिस पर उतना ही खतरा मंडरा रहा था। चाँद की किरणें कोमल, निरंतर मैग्नीशियम की रोशनी जैसी लग रही थीं, मानो आखिरी बार प्लेस वेंडोम और प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड जैसी खूबसूरत जगहों के रात्रिकालीन दृश्य प्रस्तुत कर रही हों। गोलेबारी के डर से इन जगहों की सुंदरता में एक अलग ही चमक आ गई थी, मानो ये जगहें अपनी निहत्थी वास्तुकला को आने वाले हमलों के सामने पेश कर रही हों। "क्या तुम्हें डर नहीं लगता?" एम. डे चार्लस ने दोहराया। "पेरिसवासियों को अपने खतरे का एहसास नहीं लगता। मुझे बताया गया है कि श्रीमती वर्दुरिन हर दिन पार्टियाँ देती हैं। मुझे यह सिर्फ सुनी-सुनाई बातों से पता है, क्योंकि मुझे उनके बारे में कुछ भी नहीं पता; मैंने उनसे पूरी तरह नाता तोड़ लिया है," उन्होंने आगे कहा, और न सिर्फ अपनी आँखें नीचे कर लीं, मानो कोई टेलीग्राफ बॉय पास से गुजर गया हो, बल्कि अपना सिर और कंधे भी झुका लिए और अपनी बाहों को इस इशारे से ऊपर उठाया जिसका अर्थ था: "मैंने उनसे अपना हाथ धो लिया है!" "कम से कम मैं तुम्हें उनके बारे में कुछ नहीं बता सकता," (हालाँकि मैंने उनसे पूछा नहीं था)। “मुझे पता है कि मोरेल वहाँ बहुत जाता है” (यह पहली बार था जब उसने मुझसे उसके बारे में बात की थी)। “ऐसा

कहा जाता है कि उसे अतीत पर बहुत पछतावा है, वह मुझसे सुलह करना चाहता है," उसने आगे कहा, एक ऐसे उपनगरीय व्यक्ति की भोली-भाली सोच दिखाते हुए जो कहता है: "आम तौर पर कहा जाता है कि फ्रांस जर्मनी के साथ पहले से कहीं अधिक बातचीत कर रहा है, यहाँ तक कि आपसी मनमुटाव भी हो रहे हैं" और एक ऐसे प्रेमी की तरह जिसे सबसे बुरी तरह ठुकराया जाना भी हतोत्साहित नहीं कर सकता। "खैर, अगर वह चाहता है, तो उसे बस इतना कहना है। मैं उससे उम्र में बड़ा हूँ और पहल करना मेरा काम नहीं है।" और वास्तव में, उसके ऐसा कहने का निरर्थक होना स्पष्ट था। लेकिन, इसके अलावा, वह ईमानदार भी नहीं था और इसी कारण से एम. डी चार्लस के बारे में शर्मिंदगी महसूस हुई क्योंकि, जब उसने कहा कि पहल करना उसका काम नहीं है, तो इसके विपरीत, वह पहल कर रहा था और उम्मीद कर रहा था कि मैं सुलह कराने की पेशकश करूँ। मैं निश्चित रूप से उन लोगों के भोलेपन या अनुमानित भोलेपन को जानता था जो किसी की परवाह करते हैं या यहां तक कि जिन्हें उस व्यक्ति द्वारा आमंत्रित नहीं किया जाता है, और उस व्यक्ति पर एक ऐसी इच्छा थोप देते हैं जिसे उसने भरपूर आग्रह के बावजूद कभी व्यक्त नहीं किया है।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि दुर्भाग्यवश, अगले ही दिन, एम. डी चार्लस अचानक सड़क पर मोरेल के आमने-सामने आ गए। मोरेल ने उन्हें ईर्ष्या दिलाने के लिए उनका हाथ पकड़ लिया और उन्हें कुछ ऐसी कहानियां सुनाईं जो कमोबेश सच थीं। जब एम. डी चार्लस, जो स्तब्ध थे और मोरेल को उस शाम अपने साथ रोकना चाहते थे, ने उनसे न जाने की विनती की, तो मोरेल ने अपने एक मित्र को देखकर अलविदा कह दिया। एम. डी चार्लस क्रोधित होकर, इस उम्मीद में कि उनकी धमकी (जिसे वह शायद कभी पूरा नहीं करेंगे) मोरेल को अपने साथ रोक लेगी, उनसे बोले:

"सावधान रहना, मैं बदला लूंगा।" यह सुनकर मोरेल हंसते हुए मुड़ गए, अपने आश्चर्यचकित मित्र की पीठ थपथपाई और उन्हें गले लगा लिया। एम. डी चार्लस ने मोरेल के बारे में बात करते हुए जिस अचानक कांपते स्वर में अपने शब्दों पर ज़ोर दिया था, उनकी आँखों की गहराई में जो पीड़ा का भाव था, उससे मुझे लगा कि उनके शब्दों के पीछे साधारण आग्रह से कहीं अधिक कुछ छिपा है। मैं गलत नहीं था और मैं तुरंत उन दो घटनाओं का वर्णन करूँगा जिनसे बाद में यह सिद्ध हुआ। (मैं इन घटनाओं में से दूसरी के बारे में कई साल पहले ही बता रहा हूँ, जो एम. डी चार्लस की मृत्यु के बाद हुई थी और बहुत बाद में हुई थी। हमें उन्हें कई बार फिर से देखने का अवसर मिलेगा, उस व्यक्ति से बहुत अलग जिसे हम अब तक जानते हैं और विशेष रूप से, जब हम उन्हें आखिरी बार देखेंगे, तो वह उस समय होगा जब वह मोरेल को पूरी तरह से भूल चुके होंगे)। इन घटनाओं में से पहली घटना उस शाम के ठीक दो साल बाद घटी जब मैं एम. डी चार्लस के साथ सड़कों पर टहल रहा था। मेरी मुलाकात मोरेल से हुई। तुरंत ही मुझे एम. डी चार्लस की याद आई, वायलिन वादक को देखकर उन्हें जो खुशी होगी, और मैंने उनसे विनती की कि वे जाकर उनसे मिलें, कम से कम एक बार तो मिलें। मैंने मोरेल से कहा, "वह तुम्हारे प्रति अच्छे रहे हैं। अब वे बूढ़े हो गए हैं, उनकी मृत्यु भी हो सकती है, पुराने झगड़ों को खत्म करके उनकी यादों को मिटाना जरूरी है।" मोरेल भी सुलह की मेरी राय से पूरी तरह सहमत दिखे। फिर भी, उन्होंने एम. डी चार्लस से मिलने से साफ इनकार कर दिया। मैंने उनसे कहा, "तुम गलत हो। क्या यह हठधर्मिता है, आलस्य है, विकृति है, गलत जगह पर रखा गया घमंड है, सद्गुण है (ध्यान रहे, इस पर कोई टिप्पणी नहीं होगी), या फिर नखरे हैं?" फिर वायलिन वादक ने अपना चेहरा बिगाड़ते हुए, जो निस्संदेह उसके लिए बहुत महंगा साबित हुआ होगा, कांपते हुए उत्तर

दिया: "नहीं, इनमें से कोई कारण नहीं है। जहाँ तक सद्गुण की बात है, मुझे उसकी ज़रा भी परवाह नहीं है, और जहाँ तक कुटिलता की बात है, तो इसके विपरीत, मुझे उस पर दया आने लगी है। और यह नखरे की वजह से भी नहीं है, वह तो व्यर्थ होगा। यह आलस्य की वजह से भी नहीं है, कई दिन तो मैं बस खाली बैठा रहता हूँ। नहीं, इसका इन सब बातों से कोई लेना-देना नहीं है, यह—मैं आपसे विनती करता हूँ कि किसी को मत बताना, और मेरे लिए आपको बताना मूर्खता होगी—यह—यह इसलिए है क्योंकि मैं डरा हुआ हूँ।" उसके सारे अंग कांपने लगे। मैंने उससे कहा कि मुझे उसकी बात समझ नहीं आई। "मुझसे मत पूछो; इस बारे में और कुछ मत कहो। तुम उसे उतना नहीं जानते जितना मैं जानता हूँ। मैं तुम्हें ऐसी बातें बता सकता हूँ जिनके बारे में तुम्हें कोई जानकारी नहीं है।" "पर वह तुम्हें क्या नुकसान पहुंचा सकता है? अगर तुम दोनों के बीच कोई मनमुटाव न हो तो और भी कम। और वैसे भी, तुम जानती हो कि वह दिल से बहुत दयालु है।" "जी हां, बिल्कुल, मैं जानती हूं। मैं जानती हूं कि वह दयालु, कोमल और नेक दिल इंसान है। लेकिन मुझे अकेला छोड़ दो, इस बारे में बात मत करो, मैं तुमसे विनती करती हूं, मुझे शर्म आती है कि मैं उससे डरती हूं।" दूसरी घटना एम. डी चार्लस की मृत्यु के बाद की है। मेरे पास उनकी छोड़ी हुई कई यादगार चीजें और तीन लिफाफों में बंद एक पत्र लाया गया, जो उनकी मृत्यु से कम से कम दस साल पहले लिखा गया था। लेकिन उस समय वे इतने गंभीर रूप से बीमार थे कि उन्होंने अपनी वसीयत बना ली थी, फिर वे आंशिक रूप से ठीक हो गए थे, लेकिन फिर उनकी हालत वैसी ही हो गई जैसी हम उन्हें प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पर दोपहर की पार्टी के दिन देखेंगे। वह पत्र सात साल तक एक डिब्बे में उन चीजों के साथ पड़ा रहा जो उन्होंने कुछ दोस्तों के लिए छोड़ी थीं; इन सात सालों में वे मोरेल को पूरी तरह से भूल गए थे।

अत्यंत सुंदर और दृढ़ लिखावट में लिखा गया वह पत्र इस प्रकार था: "मेरे प्रिय मित्र, ईश्वर की योजनाएँ कभी-कभी समझ से परे होती हैं। यह एक धर्मी व्यक्ति को सद्गुणों से विमुख होने से बचाने के लिए एक निम्न व्यक्ति के पाप का उपयोग करती है। आप मोरेल को जानते हैं, आप जानते हैं कि वह कहाँ से आया था, और मैं उसे किस भाग्य से उठाकर, एक तरह से, अपने स्तर तक लाना चाहता था। आप जानते हैं कि उसने न केवल उस धूल और राख में लौटना पसंद किया, जिससे हर मनुष्य, क्योंकि मनुष्य वास्तव में एक फीनिक्स है, पुनर्जन्म ले सकता है, बल्कि उस कीचड़ और दलदल में जहाँ विषैला साँप रहता है। उसने स्वयं को डूबने दिया और इस प्रकार मुझे गड्ढे में गिरने से बचाया। आप जानते हैं कि मेरे प्रतीक चिन्ह में स्वयं प्रभु का चिन्ह है: 'Inculcabis super leonem et aspidem', जिसमें एक मनुष्य को शेर और उसके पैरों के पास एक साँप के साथ दर्शाया गया है। अब यदि मेरे भीतर के शेर ने स्वयं को कुचले जाने दिया है, तो यह साँप और उसकी उस बुद्धिमत्ता के कारण है जिसे कभी-कभी बहुत हल्के में दोष कहा जाता है, क्योंकि गहन ज्ञान सुसमाचार ने इसे एक सद्गुण बना दिया है, कम से कम दूसरों के लिए तो एक सद्गुण। हमारा सर्प, जिसकी फुफकार पहले मधुरता से लयबद्ध होती थी जब उस पर कोई सपेरा होता था—जो स्वयं भी बहुत मोहित था—न केवल एक संगीतमय सरीसृप था, बल्कि उसमें कायरता की हद तक वह सद्गुण भी था जिसे मैं अब दैवीय मानता हूँ, विवेक। यह इसी दैवीय विवेक के कारण था कि उसने मेरे द्वारा भेजे गए अनुरोधों का विरोध किया और मुझसे मिलने नहीं आया। और यदि मैं यह स्वीकारोक्ति आपसे नहीं करता, तो मुझे न तो इस दुनिया में शांति मिलेगी और न ही अगली दुनिया में क्षमा की आशा। इस मामले में वही दैवीय ज्ञान का साधन था, क्योंकि मैंने निश्चय कर लिया था कि वह मुझे जीवित नहीं

छोड़ेगा। यह आवश्यक था कि हम दोनों में से कोई एक मर जाए। मैंने उसे मारने का फैसला कर लिया था। स्वयं ईश्वर ने उसके विवेक को प्रेरित किया ताकि वह मुझे अपराध करने से बचाए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मेरे संरक्षक संत, महादूत माइकल की मध्यस्थता ने इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे कई वर्षों तक उनकी उपेक्षा करने और मैंने उनके द्वारा मुझ पर दिखाए गए अनगिनत उपकारों, विशेषकर बुराई के विरुद्ध मेरी लड़ाई में, का इतना बुरा प्रतिफल नहीं दिया। मैं उनकी सेवा का ऋणी हूँ, मैं यह पूर्ण विश्वास और बुद्धि से कहता हूँ, कि ईश्वर ने मोरेल को मुझसे मिलने न आने के लिए प्रेरित किया। और अब मैं ही मर रहा हूँ। आपका वफादार और समर्पित, सेम्पर इडेम, पी. जी. चार्लस।" तब मुझे मोरेल का भय समझ में आया। निश्चित रूप से उस पत्र में गर्व और साहित्य दोनों थे, लेकिन स्वीकारोक्ति सच्ची थी। और मोरेल मुझसे बेहतर उस "लगभग पागलपन" को जानते थे जिसे श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने बहनोई में पहचाना था और जो, जैसा कि मैंने तब तक सोचा था, सतही और व्यर्थ जुनून के क्षणिक विस्फोटों तक सीमित नहीं था।

लेकिन हमें अपने कदम पीछे हटाने होंगे। मैं अब भी एम. डी चार्लस के साथ सड़कों पर चल रहा हूँ, जो मुझे अपने और मोरेल के बीच शांति वार्ता के लिए एक अस्पष्ट मध्यस्थ के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। यह देखकर कि मैंने कोई जवाब नहीं दिया, उन्होंने आगे कहा: "जहाँ तक उस बात का सवाल है, मुझे नहीं पता कि वह अब क्यों नहीं बजाते। जाहिर तौर पर युद्ध के बहाने अब संगीत नहीं है, लेकिन वे नाचते-गाते और बाहर खाना खाते हैं। ये उत्सव शायद हमारे पोम्पेई के आखिरी दिनों को दर्शाते हैं, अगर जर्मन और आगे बढ़ते हैं। बस किसी जर्मन वेसुवियस के लावा (उनकी नौसैनिक तोपें ज्वालामुखी से कम भयानक नहीं हैं) की जरूरत है

जो उन्हें उनके श्रृंगार के समय चौंका दे और उनके इस हावभाव को रोककर अमर कर दे; बच्चे बाद में श्रीमती मोल के चित्रों से शिक्षित होंगे, जो अपनी भाभी के साथ भोजन करने जाने से पहले अपने चेहरे पर रंग की आखिरी परत लगाने वाली हैं, या सोस्थीन डी गुएरमांटेस अपनी नकली भौहें रंगने को पूरा कर रही हैं। यह भविष्य के ब्रिचोट जैसे विद्वानों के लिए व्याख्यान सामग्री होगी; दस शताब्दियों के बाद के काल की चंचलता सबसे गंभीर विद्वत्ता के योग्य है, खासकर अगर इसे किसी ज्वालामुखी विस्फोट द्वारा अक्षुण्ण रूप से संरक्षित किया गया हो जिसमें लावा के समान पदार्थ फेंके गए हों। बमबारी। भविष्य के इतिहास के लिए क्या दस्तावेज़! जब वेसुवियस ज्वालामुखी से निकलने वाली दम घोंटने वाली गैसों और पोम्पेई को दफ़नाने वाले भूकंपों जैसी गैसें उन सभी बची हुई लापरवाह महिलाओं को सुरक्षित रखेंगी जो अपनी तस्वीरों और मूर्तियों के साथ बेयोन नहीं भागी हैं। इसके अलावा, क्या यह पोम्पेई नहीं था, जो एक साल से ज़्यादा समय तक हर शाम थोड़ा-थोड़ा करके तबाह होता रहा? ये लोग अपने तहखानों में भाग रहे थे, माउटन-रोथ्सचाइल्ड या सेंट एमिलियन की पुरानी बोतल निकालने के लिए नहीं, बल्कि खुद को और अपनी सबसे कीमती चीज़ों को छिपाने के लिए, ठीक वैसे ही जैसे हरक्यूलेनियम के पुजारी पवित्र पात्रों को ले जाते समय मृत्यु से घिर गए थे। किसी वस्तु से लगाव हमेशा उसके मालिक की मृत्यु का कारण बनता है। पेरिस, हरक्यूलेनियम की तरह, हरक्यूलिस द्वारा स्थापित नहीं किया गया था। लेकिन क्या समानताएँ हमें चौंका देती हैं और वह स्पष्टता जो हमें मिली है, वह केवल हमारे समय की नहीं है, हर समय में यह मौजूद थी। अगर हम सोचते हैं कि कल हम वेसुवियस के शहरों जैसा ही भाग्य साझा कर सकते हैं, तो उस समय की महिलाओं का मानना था कि वे मैदानी शहरों के भाग्य से ग्रस्त। उन्होंने पोम्पेई के एक घर की दीवारों पर

यह शिलालेख पाया: 'सोडोम और गोमोरा'। मुझे नहीं पता कि सोडोम का यह नाम और इससे उत्पन्न विचार थे या बमबारी, जिसने एम. डी चार्लस को एक क्षण के लिए आकाश की ओर देखने पर मजबूर किया, लेकिन उन्होंने जल्द ही अपनी निगाहें वापस धरती पर टिका दीं। उन्होंने कहा, "मैं इस युद्ध के सभी नायकों की प्रशंसा करता हूँ।" मेरे प्रिय मित्र, उन सभी अंग्रेज़ सैनिकों को ही ले लो जिन्हें मैंने युद्ध की शुरुआत में महज़ फ़ुटबॉल खिलाड़ी समझा था, जो पेशेवर खिलाड़ियों से खुद को कमतर आंकने की हिम्मत रखते थे—और कैसे पेशेवर खिलाड़ी! खैर, सौंदर्य की दृष्टि से तो वे ग्रीस के एथलीट हैं, जी हाँ, ग्रीस के, मेरे प्रिय मित्र, ये प्लेटो के या यूँ कहें कि स्पार्टा के नौजवान हैं। मेरा एक मित्र रूएन में उनके शिविर में गया और उसने ऐसे चमत्कार देखे जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अब वह रूएन नहीं रहा, वह एक अलग ही शहर बन गया है। बेशक, कैथेड्रल के दुबले-पतले संतों वाली पुरानी रूएन अभी भी मौजूद है। वह भी सुंदर है, लेकिन वह एक अलग ही बात है। और हमारे पोइलस! मैं आपको बता नहीं सकता कि मुझे हमारे पोइलस में, हमारे छोटे 'पैरीगोट्स' में कितना स्वाद मिलता है। वहाँ, उस व्यक्ति की तरह जो उस मजाकिया, चौकन्ने अंदाज में इतनी सहजता और बेफिक्री से गुजर रहा है। मैं अक्सर रुककर उनसे बात करता हूँ। कितनी तेज बुद्धि, कितना अच्छा विवेक! और प्रांतों के लड़के, वे अपने लुढ़कते 'र' और देहाती बोली के साथ कितने प्यारे हैं। मैं हमेशा से ही गाँव में काफी रहा हूँ, खेतों में सोया हूँ, मुझे इन लोगों से बात करना आता है। लेकिन फ्रांसीसियों के प्रति हमारी प्रशंसा हमें अपने दुश्मनों को कम आंकने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, इससे हमारा ही अपमान होता है। और आप नहीं जानते कि एक जर्मन सैनिक क्या होता है, आपने उन्हें कभी मेरी तरह नहीं देखा है, परेड में 'उंटर डेन लिंडेन' में हंस-कदम करते हुए।" बालबेक में उन्होंने

जिस पौरुष के आदर्श पर बात की थी, जो समय के साथ दार्शनिक रूप ले चुका था, उस पर लौटते हुए उन्होंने बेतुके तर्कों का इस्तेमाल किया और कई बार, यहाँ तक कि जब उन्होंने श्रेष्ठता दिखाई, तब भी ये तर्क हमें एक मात्र फैशनपरस्त व्यक्ति की सीमाओं को समझने पर मजबूर कर देते थे, भले ही वह एक बुद्धिमान फैशनपरस्त व्यक्ति थे; “देखो,” उन्होंने कहा, “वह शानदार जर्मन सैनिक एक बलवान, स्वस्थ प्राणी है, जो केवल अपने देश की महानता के बारे में सोचता है, ‘जर्मनी सर्वोपरि’ (Deutschland über Alles) जो सुनने में जितना मूर्खतापूर्ण लगता है, उतना है नहीं, और जब वे जोश से खुद को तैयार कर रहे हैं, हम शौकियापन में डूबे हुए हैं।” यह शब्द शायद एम. डी चार्लस के लिए साहित्य से मिलता-जुलता कुछ अर्थ रखता था, क्योंकि तुरंत ही, यह याद करते हुए कि मुझे साहित्य से प्रेम था और एक समय के लिए मैंने खुद को साहित्य में समर्पित करने का इरादा किया था, उन्होंने मेरे कंधे पर थपथपाया (इस अवसर का लाभ उठाते हुए कि मैं इतना झुक गया कि मुझे उतना ही बुरा लगा जितना मुझे अपनी सैन्य सेवा के दौरान “76” के झटके से लगता था) और जैसे फटकार को नरम करने के लिए कहा: “हाँ, हमने शौकियापन से खुद को बर्बाद कर लिया है, हम सभी ने, तुम भी, याद रखना, तुम भी मेरी तरह अपनी गलती स्वीकार कर सकते हो। हम सभी बहुत शौकिया रहे हैं।” फटकार सुनकर हैरानी, जवाबी कार्रवाई की कमी, अपने वार्ताकार के प्रति आदर और उनकी मित्रतापूर्ण दयालुता से प्रभावित होकर, मैंने ऐसे उत्तर दिया मानो उनके आमंत्रण पर मुझे भी अपनी छाती पीटनी चाहिए। और यह पूरी तरह निरर्थक था, क्योंकि मुझमें शौकियापन का कोई अंश नहीं था जिसके लिए मैं खुद को दोषी ठहरा सकूँ। "ठीक है," उन्होंने कहा, "मैं चलता हूँ," कुछ दूर तक हमारा साथ देने वाला समूह अंततः गायब हो गया, "मैं एक बूढ़े सज्जन की तरह घर

जाकर सो रहा हूँ, लगता है युद्ध ने हमारी सभी आदतें बदल दी हैं - नॉरपोइस के कथनों में से एक।" जहाँ तक इस बात का सवाल है, मैं जानता था कि एम. डी चार्लस घर पर होने के बावजूद सैनिकों से घिरे रहेंगे, क्योंकि उन्होंने अपने महल को एक सैन्य अस्पताल में बदल दिया था, और ऐसा करने में उन्होंने अपने जुनून से ज़्यादा अपने अच्छे दिल का साथ दिया था।

वह एक साफ, शांत रात थी और मेरी कल्पना में, गोलाकार पुलों के बीच बहती सीन नदी, संरचना और प्रतिबिंब के संयोजन से गोलाकार, बोस्फोरस जैसी लग रही थी। चंद्रमा शायद उस आक्रमण का प्रतीक था जिसकी भविष्यवाणी एम. डी चार्लस के निराशावाद ने की थी या हमारे मुस्लिम भाइयों के फ्रांस की सेनाओं के साथ सहयोग का। पतला और घुमावदार चंद्रमा, एक सेक्विन की तरह, पेरिस के आकाश को अर्धचंद्र के पूर्वी चिन्ह के नीचे रख रहा था। एक पल के लिए एम. डी चार्लस रुके, एक सेनेगलवासी की ओर मुड़े और विदाई में मेरा हाथ पकड़कर उसे मसल दिया, जो बैरन जैसे लोगों की एक जर्मन आदत थी। कुछ मिनटों तक उसे मसलते रहे, जैसे कॉटार्ड ने कहा हो, मानो बैरन मेरे जोड़ों को वह लचीलापन देना चाहते हों जो उन्होंने खोया नहीं था। दृष्टिहीन लोगों के मामले में स्पर्श दृष्टि को कुछ हद तक पूरक करता है; मुझे ठीक से नहीं पता कि इस मसलने ने किस इंद्रिय का स्थान लिया। शायद उन्हें लगा होगा कि वे सिर्फ मेरा हाथ दबा रहे थे, और शायद उन्हें यह भी लगा होगा कि वे उस सेनेगलवासी पर सिर्फ एक नज़र डाल रहे थे जो परछाईं में चला गया और उसने यह ध्यान नहीं दिया कि लोग उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। लेकिन दोनों ही मामलों में एम. डी चार्लस से गलती हुई; स्पर्श और घूरने में कुछ ज़्यादा ही हो गया था। "क्या इसमें डेकैम्प्स, फ्रोमेंटिन, इंग्रेस, डेलाक्रॉइक्स का पूरा पूर्व नहीं समाया है?" सेनेगलवासी के चले जाने से

अभी भी स्तब्ध होकर उन्होंने कहा। "आप जानते हैं कि मुझे किसी भी चीज़ या व्यक्ति में केवल एक चित्रकार या दार्शनिक के रूप में ही रुचि है। इसके अलावा, मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन तस्वीर को पूरा करने के लिए, यह कितना अफ़सोस की बात है कि हम दोनों में से एक ओडालिस्क नहीं है।"

जब बैरन मुझे छोड़कर चले गए, तो मेरी कल्पना में डेकैम्प्स या डेलाक्रॉइक्स का ओरिएंट नहीं, बल्कि 'हजार और एक रात' की कहानियों का पुराना ओरिएंट बसने लगा, जिसे मैं बहुत पसंद करता था। काली गलियों के जाल में खोते हुए, मैं बगदाद के गुमनाम इलाकों में रोमांच की तलाश में निकले खलीफा हारून अल रशीद के बारे में सोच रहा था। इसके अलावा, मौसम और पैदल चलने के कारण मुझे प्यास लग रही थी, लेकिन सभी बार बहुत पहले ही बंद हो चुके थे और पेट्रोल की कमी के कारण मुझे जो कुछ टैक्सी मिलीं, जिन्हें लेवेंटाइन या नीग्रो चला रहे थे, उन्होंने मेरे इशारों पर भी ध्यान नहीं दिया। एकमात्र जगह जहाँ मुझे कुछ पीने को मिल सकता था और घर लौटने की ताकत मिल सकती थी, वह कोई होटल होता। लेकिन जिस गली में मैं अब पहुँच गया था, जो शहर के केंद्र से काफी दूर थी, वहाँ सभी होटल बंद थे, क्योंकि गोथाओं ने पेरिस पर बम बरसाना शुरू कर दिया था। यही हाल लगभग उन सभी दुकानों का था जिनके मालिक, कर्मचारियों की कमी के कारण या स्वयं भयभीत होकर गाँव भाग जाने के कारण, अपने दरवाजों पर हाथ से लिखा हुआ वही पुराना नोटिस छोड़ गए थे, जिसमें उन्होंने एक अनिश्चित और अनिश्चित तिथि पर दोबारा खुलने की घोषणा की थी। जो प्रतिष्ठान बचे रहे, उन्होंने भी इसी तरह घोषणा की कि वे सप्ताह में केवल दो बार ही खुलेंगे, और ऐसा प्रतीत होता था कि पूरे इलाके में उदासी, निराशा और भय का माहौल छाया हुआ है। इन वीरान घरों के बीच एक ऐसा घर

देखकर मुझे और भी आश्चर्य हुआ, जहाँ जीवन ने भय और असफलता पर विजय प्राप्त कर ली थी और जो चहल-पहल और समृद्धि से भरा हुआ प्रतीत होता था। हर खिड़की के बंद शटर के पीछे, पुलिस नियमों के अनुसार कम रोशनी में, मितव्ययिता के प्रति पूर्ण उदासीनता दिखाई दे रही थी और हर कुछ क्षणों में दरवाजा किसी नए आगंतुक के लिए खुलता था। इस होटल ने आस-पास के दुकानदारों में ईर्ष्या पैदा कर दी होगी (इसके मालिकों द्वारा कमाए जा रहे धन के कारण) और मेरी जिज्ञासा तब जागृत हुई जब मैंने लगभग पंद्रह कदम की दूरी से एक अधिकारी को इससे बाहर निकलते देखा, जो अंधेरे में मेरे लिए उसे पहचान पाने के लिए बहुत दूर था।

फिर भी, उसके बारे में किसी बात ने मेरा ध्यान खींचा। यह उसका चेहरा नहीं था, क्योंकि मैं उसे देख नहीं पाया था; न ही यह उसकी वर्दी थी, जो एक बड़े से लबादे में छिपी हुई थी। बल्कि, यह एक असाधारण असंतुलन था—उन अलग-अलग जगहों की संख्या के बीच, जहाँ से उसका शरीर तेज़ी से गुज़रा, और बाहर निकलने में लगे चंद सेकंडों के बीच। उसका बाहर निकलना, किसी घेराबंदी में फँसे व्यक्ति द्वारा अचानक बाहर निकलने की कोशिश जैसा लग रहा था। इस बात ने मुझे यह मानने पर मजबूर कर दिया—हालाँकि मैं उसे औपचारिक रूप से पहचान नहीं पाया था (न तो उसकी शारीरिक बनावट से, न उसकी दुबलेपन से, न उसकी चाल से, और न ही उसकी गति से)—कि वह सेंट-लूप ही था। मैंने उसे उसकी एक खास तरह की 'सर्वव्यापकता' (हर जगह मौजूद होने की क्षमता) से पहचाना। वह जो कोई भी था—वह अफ़सर, जिसके पास इतने कम समय में अंतरिक्ष में इतनी सारी अलग-अलग जगहों पर मौजूद होने की यह अद्भुत क्षमता थी—वह मुझे देखे बिना ही, एक दूसरी गली में गायब हो गया। मैं वहीं खड़ा खुद से यह सवाल पूछ रहा था कि क्या मुझे

इस होटल के अंदर जाना चाहिए या नहीं? इस होटल की सादगी भरी बाहरी बनावट को देखकर मुझे शक हो रहा था कि क्या सचमुच सेंट-लूप ही इससे बाहर निकला था। अब मुझे याद आया कि सेंट-लूप, एक जासूसी के मामले में अनजाने में फँस गया था; ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि एक जर्मन अफ़सर से ज़ब्त किए गए कुछ पत्रों में उसका नाम सामने आया था। सेना के अधिकारियों ने उसके साथ पूरा-पूरा न्याय किया था, लेकिन चाहकर भी मैं उस पुरानी घटना को, अभी अपनी आँखों के सामने देखी गई इस घटना से जोड़ने से खुद को रोक नहीं पाया। क्या यह होटल जासूसों के मिलने-जुलने की जगह के तौर पर इस्तेमाल होता था? उस अफ़सर के वहाँ से चले जाने के कुछ ही देर बाद, मैंने देखा कि सेना के अलग-अलग विभागों के कई सिपाही उस होटल में दाखिल हुए; इस बात ने मेरे शक को और भी गहरा कर दिया। और हाँ, मुझे बहुत ज़ोरों की प्यास भी लगी हुई थी। "शायद मुझे यहाँ पीने के लिए कुछ मिल जाए," मैंने मन ही मन सोचा। अपनी आशंकाओं के बावजूद, मैंने इस मौके का फ़ायदा उठाकर अपनी जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश करने का फ़ैसला किया। हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि यह केवल जिज्ञासा ही थी, जिसने मुझे उस छोटी-सी सीढ़ी के कई पायदान चढ़ने के लिए प्रेरित किया। उस सीढ़ी के आखिर में एक तरह के 'वेस्टिब्यूल' (प्रवेश-कक्ष) का दरवाज़ा खुला हुआ था—जो यकीनन, गर्मी की वजह से खुला छोड़ा गया था। शुरू में मुझे लगा कि मैं अपनी जिज्ञासा को शांत नहीं कर पाऊँगा; क्योंकि मैंने देखा कि कई लोग वहाँ आकर कमरे के बारे में पूछताछ कर रहे थे, और उन्हें जवाब में यही बताया जा रहा था कि इस समय एक भी कमरा खाली नहीं है। जल्द ही मुझे समझ आ गया कि वहाँ के लोगों के खिलाफ़ बस यही बात थी कि वे जासूसों के उस अड्डे से ताल्लुक नहीं रखते थे; क्योंकि जब एक आम नाविक वहाँ आया, तो

उन्होंने तुरंत उसे कमरा नंबर 28 दे दिया। अँधेरे की वजह से, मैं खुद किसी को दिखे बिना, कई सैनिकों और मज़दूर वर्ग के दो आदमियों को देख पाया। वे एक छोटे, घुटन भरे कमरे में दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे; वह कमरा पत्रिकाओं और सचित्र समीक्षाओं से ली गई औरतों की रंगीन तस्वीरों से बड़े दिखावटी ढंग से सजा हुआ था। वे आदमी देशभक्ति से भरी बातें कर रहे थे: "अब कोई चारा नहीं है, जैसा बाकी लोग कर रहे हैं, हमें भी वैसा ही करना होगा," उनमें से एक ने कहा। "बेशक, मुझे नहीं लगता कि मैं मारा जाऊँगा," दूसरे ने जवाब में कहा—उसने किसी ऐसी इच्छा का जवाब दिया था जिसे मैंने सुना नहीं था—और मुझे समझ आ गया था कि वह अगले ही दिन एक खतरनाक मोर्चे पर जाने वाला था। "ज़रा सोचो, सिर्फ़ बाईस साल की उम्र में! सिर्फ़ छह महीने की सेवा के बाद यह बहुत ही ज़्यादती होगी!" उसने ऐसी आवाज़ में कहा, जिससे जीने की इच्छा से भी ज़्यादा, उसकी दलील का औचित्य ज़ाहिर हो रहा था—मानो सिर्फ़ बाईस साल का होना ही उसे मौत से बचने का बेहतर मौका देने वाला हो; बल्कि असल में तो, मानो उसका मारा जाना नामुमकिन ही हो। "पेरिस में तो सब कुछ बहुत बढ़िया है," दूसरे ने कहा, "वहाँ देखकर कोई सोच भी नहीं सकता कि कोई युद्ध चल रहा है। क्या तुम भी सेना में भर्ती हो रहे हो, जूलॉट?" "बेशक मैं भर्ती हो रहा हूँ। मैं जाकर उन गंदे 'बोश' (जर्मनों) को एक ज़ोरदार सबक सिखाना चाहता हूँ।" "वह जॉफ़्रे! वह तो ऐसा आदमी है जो मंत्रियों की पत्नियों के साथ सोता रहा है; उसने तो कुछ भी नहीं किया।" "इस तरह की बातें सुनना बहुत ही घटिया लगता है," एक हवाई-सैनिक ने बीच में टोकते हुए कहा —वह उम्र में थोड़ा बड़ा था—और उसने आखिरी बात कहने वाले व्यक्ति, यानी उस मज़दूर की तरफ़ मुड़कर देखा। "मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि जब तुम मोर्चे पर पहुँचो, तो इस तरह की बातें मत करना; वरना वहाँ के

सैनिक (poilus) तुम्हें बहुत जल्द ही वहाँ से बाहर का रास्ता दिखा देंगे।" इस बातचीत की नीरसता को सुनकर मुझे और कुछ सुनने की कोई खास इच्छा नहीं हुई; मैं ऊपर या नीचे जाने ही वाला था कि तभी मेरा ध्यान कुछ शब्दों पर गया, जिन्हें सुनकर मैं काँप उठा। "यह कितनी अजीब बात है कि मालिक (Patron) अभी तक वापस नहीं आया है—रात के इस पहर में! मुझे नहीं पता कि उसे वे ज़ंजीरें कहाँ मिलेंगी।" "लेकिन दूसरे वाले को तो पहले ही ज़ंजीरों से बाँध दिया गया है।" "हाँ, बेशक वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है—एक तरह से। अगर मैं उस तरह जंजीरों में जकड़ा होता, तो मैं बहुत जल्द खुद को आज़ाद कर लेता।" "लेकिन ताला तो लगा हुआ है।" "ओह! ताला तो लगा है, ठीक है, लेकिन अगर कोई कोशिश करे, तो उसे ज़बरदस्ती खोला जा सकता है। दिक्कत यह है कि जंजीरें काफी लंबी नहीं हैं। तुम मुझे इस तरह की बातें समझाने की कोशिश मत करो, यह देखते हुए कि मैं पूरी रात उसे पीटता रहा, जब तक कि मेरे हाथों से खून नहीं निकलने लगा।" "अच्छा, तो आज रात तुम्हें ही यह काम करना होगा।" "नहीं, आज मेरी बारी नहीं है, मॉरिस की है। रविवार को मेरी बारी आएगी। मालिक ने मुझसे वादा किया है।" अब मुझे समझ आया कि उस नाविक की मज़बूत बांहों की ज़रूरत क्यों थी। अगर आम नागरिकों को अंदर आने से मना किया गया था, तो इसकी वजह यह नहीं थी कि वह होटल जासूसों का अड्डा था। एक घिनौना जुर्म होने वाला था, अगर कोई समय पर पहुँचकर उसे रोक न लेता और दोषियों को गिरफ्तार न करवा देता। इस खतरे से भरी, फिर भी शांत रात में, यह सब किसी सपने की कहानी जैसा लग रहा था; और मैं जान-बूझकर उस होटल में इस दृढ़ निश्चय के साथ दाखिल हुआ—ठीक वैसे ही उत्साह के साथ, जैसा कोई कवि न्याय होते देखना चाहता है। मैंने हल्के से अपनी टोपी को छुआ, और वहाँ मौजूद लोगों ने, बिना अपनी जगह से हिले-डुले,

कमोबेश विनम्रता से मेरे अभिवादन का जवाब दिया। "क्या आप कृपया मुझे बताएँगे..."
"क्या यहाँ कोई ऐसा है जिससे मैं एक कमरा और पीने के लिए कुछ माँग सकूँ?" "एक मिनट रुकिए, मालिक बाहर गए हुए हैं।" "लेकिन 'चीफ़' (मालिक) तो ऊपर हैं," उनमें से एक ने सुझाव दिया। "तुम्हें अच्छी तरह पता है कि तुम उन्हें परेशान नहीं कर सकते।" "क्या तुम्हें लगता है कि वे मुझे कमरा दे देंगे?" "हाँ, मुझे तो ऐसा ही लगता है, कमरा नंबर 43 खाली होना चाहिए," उस नौजवान ने कहा, जिसे पूरा यकीन था कि वह मारा नहीं जाएगा क्योंकि उसकी उम्र अभी सिर्फ़ बाईस साल थी; उसने सोफ़े पर अपने बगल में मेरे लिए जगह बनाई। "खिड़की खोल देना अच्छा रहेगा, यहाँ बहुत ज़्यादा धुआँ हो गया है," उस पायलट ने कहा, और सचमुच, उनमें से हर किसी के पास एक पाइप या सिगरेट थी। "हाँ, ठीक है, लेकिन पहले खिड़की के पल्ले बंद कर दो; तुम्हें पता है न, ज़ेपेलिन (हवाई जहाज़ों) के खतरे की वजह से रोशनी जलाना मना है।" "अब और कोई ज़ेपेलिन नहीं आएगा; अख़बारों में छपा था कि उन सबको मार गिराया गया है।" "वे नहीं आएँगे! वे नहीं आएँगे! तुम्हें इस बारे में क्या पता है? जब तुम मेरी तरह पंद्रह महीने तक मोर्चे पर रह लोगे, जब तुम पाँच जर्मन हवाई जहाज़ मार गिरा लोगे, तब तुम इस बारे में बात करने लायक बनोगे। अख़बारों पर यकीन करना बेवकूफ़ी है। कल ही वे 'कॉम्पिएन' के ऊपर से गुज़रे थे और उन्होंने एक माँ और उसके दो बच्चों को मार डाला।" वह नौजवान, जिसे उम्मीद थी कि वह मारा नहीं जाएगा और जिसका चेहरा काफ़ी जोशीला, खुला और हमदर्द था, उसने अपनी आँखों में गहरी करुणा और जोश लिए हुए कहा: "बड़े 'जुलॉट' के बारे में कोई ख़बर नहीं है। उसकी धर्म-माँ को पिछले आठ दिनों से उसका कोई खत नहीं मिला है, और यह पहली बार है जब इतने लंबे समय तक उसने

अपनी धर्म-माँ को कोई ख़बर नहीं भेजी है।" "उसकी धर्म-माँ कौन है?" "वह औरत जो 'ओलंपिया' के नीचे बने सार्वजनिक शौचालय की देख-रेख करती है।" "क्या वे दोनों साथ सोते हैं?" "तुम यह क्या कह रहे हो? वह एक बहुत ही इज़्ज़तदार और शादीशुदा औरत है। वह हर हफ़्ते उसे पैसे भेजती है, क्योंकि उसका दिल बहुत अच्छा है। वह सचमुच बहुत ही नेक इंसान है।" "तो, तुम बड़े जुलॉट को जानते हो?" "क्या मैं उसे जानता हूँ?" बाईस साल के उस नौजवान ने बड़े जोश के साथ जवाब दिया। "वह मेरे सबसे करीबी दोस्तों में से एक है।" मुझे नहीं लगता कि मैं किसी और के बारे में उतना सोचता हूँ जितना उसके बारे में; वह एक अच्छा दोस्त है, हमेशा दूसरों की मदद के लिए तैयार रहता है। अगर उसे कुछ हो गया, तो यह बहुत बुरा होगा।" किसी ने पासे के खेल का प्रस्ताव रखा, और जिस जोश और बेचैनी से उस नौजवान ने पासे फेंके और आँखें फाड़-फाड़कर नतीजे बताए, उससे यह साफ़ पता चलता था कि उसका मिज़ाज जुआरी वाला है। मैं ठीक से समझ नहीं पाया कि तभी किसी और ने उससे क्या कहा, लेकिन अचानक उसने बहुत गुस्से और नाराज़गी भरे लहजे में चिल्लाकर कहा, "जुलॉट दलाल है! वह भले ही खुद को दलाल कहता हो, लेकिन कसम से, वह बिल्कुल भी दलाल नहीं है। मैंने उसे अपनी औरतों को पैसे देते हुए देखा है। हाँ, मैंने देखा है। मैं यह नहीं कहता कि अल्जीरियाई ज़ीन ने उसे कभी थोड़े-बहुत पैसे नहीं दिए। लेकिन कभी भी पाँच फ़्रैंक से ज़्यादा नहीं—एक ऐसी औरत जो कोठे पर काम करती है और दिन के पचास फ़्रैंक से ज़्यादा कमाती है। ज़रा सोचिए, एक आदमी जो किसी औरत से सिर्फ़ पाँच फ़्रैंक लेता हो। और अब वह मोर्चे पर है; मैं मानता हूँ कि उसकी ज़िंदगी काफ़ी मुश्किल है, लेकिन वह जितना चाहे उतना कमाती है और उसे कभी कुछ नहीं भेजती। जुलॉट दलाल है? अगर इस हिसाब से देखें, तो दुनिया में बहुत सारे दलाल मिल जाएँगे। वह न

सिर्फ़ दलाल नहीं है, बल्कि मुझे तो लगता है कि वह एक नंबर का बेवकूफ़ भी है।" उस टोली का सबसे बुज़ुर्ग आदमी—जिसे शायद मालिक ने वहाँ थोड़ी-बहुत शांति बनाए रखने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी—कुछ देर के लिए बाहर गया हुआ था; उसने बातचीत का सिर्फ़ आखिरी हिस्सा ही सुना, लेकिन उसने मेरी तरफ़ घूरकर देखा और ऐसा लगा कि उसे इस बात से साफ़ तौर पर चिढ़ हो रही है कि इस बातचीत का मुझ पर क्या असर पड़ा होगा। उस बाईस साल के नौजवान को सीधे तौर पर कुछ न कहते हुए—जो अभी-अभी 'बिकने वाले प्यार' (venal love) के बारे में अपनी थ्योरी बता रहा था—उसने आम अंदाज़ में कहा, "तुम बहुत ज़्यादा और बहुत ज़ोर से बोल रहे हो। खिड़की खुली हुई है। इस वक़्त लोग सो रहे हैं।" "तुम्हें पता है, अगर मालिक ने तुम्हें सुन लिया होता, तो मुसीबत हो जाती।" ठीक उसी पल दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई, और यह सोचकर कि मालिक आ गया है, सब चुप हो गए। लेकिन वह तो बस एक विदेशी ड्राइवर था, जिसका सबने स्वागत किया। जब बाईस साल के उस नौजवान ने, नए आए आदमी की वेस्टकोट पर लटकती शानदार घड़ी की चेन देखी, तो उसने उसकी तरफ़ सवालिया और मज़ाकिया नज़र से देखा; साथ ही अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए मुझे भी एक तीखी नज़र से इशारा किया। मैं समझ गया कि पहली नज़र का मतलब था, "अरे! यह तुमने कहाँ से चुराई? मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत बधाई!" और दूसरी नज़र का मतलब था, "कुछ मत कहना। हम इस आदमी को नहीं जानते, इसलिए ज़रा संभलकर।" अचानक मालिक पसीने से लथपथ अंदर आया; उसके हाथों में कई गज़ लंबी भारी-भरकम ज़ंजीरें थीं—इतनी मज़बूत कि उनसे कई कैदियों को बांधा जा सकता था। उसने कहा: "मेरे पास यहाँ काफ़ी भारी-भरकम सामान है। अगर तुम सब इतने आलसी न होते, तो मुझे खुद यह काम करने की ज़रूरत न पड़ती।" मैंने उससे कहा कि मुझे बस कुछ

घंटों के लिए एक कमरा चाहिए, "मुझे कोई गाड़ी नहीं मिली और मेरी तबीयत भी कुछ ठीक नहीं है, लेकिन मैं चाहूँगा कि मेरे कमरे में पीने के लिए कुछ भिजवा दिया जाए।" "पियरो, तहखाने में जाओ और थोड़ी 'कैसिस' ले आओ, और उनसे कहो कि कमरा नंबर 43 तैयार कर दें। देखो, कमरा नंबर 7 से घंटी बज रही है। वे कह रहे हैं कि वे बीमार हैं! कैसी अजीब बीमारी है! वे तो कोकेन के पीछे पड़े हैं; देखकर लगता है कि उन्होंने नशा कर रखा है। उन्हें तो यहाँ से बाहर निकाल देना चाहिए। क्या कमरा नंबर 22 में चादरें बिछा दी गई हैं? लो, फिर से कमरा नंबर 7 से घंटी बजने लगी। दौड़कर जाओ और देखो। तुम वहाँ क्या कर रहे हो, मौरिस? तुम्हें अच्छी तरह पता है कि तुम्हारा इंतज़ार हो रहा है; जाओ, कमरा नंबर 14 में जाओ—और ज़रा तेज़ी से काम करना!" मौरिस तेज़ी से बाहर निकल गया, मालिक के पीछे-पीछे। मालिक साफ़ तौर पर नाराज़ लग रहा था कि मैंने उसकी ज़ंजीरें देख ली थीं। "तुम्हें इतनी देर कैसे हो गई?" बाईस साल के उस नौजवान ने ड्राइवर से पूछा।

"तुम्हारा क्या मतलब, इतनी देर से? मैं तो एक घंटा पहले ही आ गया हूँ। लेकिन बाहर घूमने के लिए बहुत गर्मी है, मेरी मुलाक़ात तो आधी रात को है।" "लेकिन तुम यहाँ किससे मिलने आए हो?" "पामेला ला चारम्यूज़ से," उस पूर्वी ड्राइवर ने जवाब दिया, जिसकी हँसी में उसके सुंदर सफ़ेद दाँत दिखाई दिए। "आह!" बाईस साल के उस नौजवान ने हैरानी से कहा। जल्द ही मुझे कमरा नंबर 43 में ले जाया गया, लेकिन वहाँ का माहौल इतना अजीब और मेरी जिज्ञासा इतनी ज़्यादा थी कि, अपनी कैसिस पीने के बाद, मैं सीढ़ियों से नीचे उतर आया; फिर, एक और विचार आने पर, मैं फिर ऊपर गया और, जिस मंज़िल पर मेरा कमरा था वहाँ रुके बिना, मैं सीधे सबसे ऊपर वाली मंज़िल पर चला गया। अचानक, गलियारे के आखिर में बने एक अलग-थलग कमरे से, मुझे दबी हुई कराहने की

आवाज़ें सुनाई दीं। मैं तेज़ी से उस तरफ़ बढ़ा और दरवाज़े पर अपना कान लगा दिया। "मैं तुमसे मिन्नत करता हूँ, दया करो, दया करो, मुझे आज़ाद करो, मेरी ज़ंजीरें खोलो, मुझे इतनी ज़ोर से मत मारो," एक आवाज़ ने कहा। "मैं तुम्हारे पैरों में गिरता हूँ, मैं तुम्हारे आगे गिड़गिड़ाता हूँ, मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा, मुझ पर दया करो।" "नहीं करूँगा, कमीने," दूसरी आवाज़ ने जवाब दिया, "और क्योंकि तुम इस तरह चीख रहे हो और अपने घुटनों के बल ज़मीन पर घिसट रहे हो, इसलिए मैं तुम्हें बिस्तर से बाँध दूँगा। कोई दया नहीं!" और मुझे 'कैट-ओ-नाइन-टेल्स' (नौ-पूंछों वाले कोड़े) के फटकने की आवाज़ सुनाई दी; शायद उसमें कीलें लगी थीं, क्योंकि उसके बाद दर्द भरी चीखें सुनाई दीं। फिर मैंने देखा कि कमरे में एक तरफ़ एक छोटा सा छेद (पीप-होल) था, जिसका पर्दा वे खींचना भूल गए थे। उस तरफ़ दबे पाँव सरकते हुए, मैं उस छेद के पास पहुँचा और वहाँ बिस्तर पर, प्रोमेथियस की तरह अपनी चट्टान से बँधा हुआ, 'कैट-ओ-नाइन-टेल्स' की मार से तड़पता हुआ—जिसमें सचमुच कीलें लगी थीं और जिसे मॉरिस चला रहा था—मैंने अपने सामने एम. दे चारलस को देखा। उनके शरीर से पहले ही खून बह रहा था और चोटों के निशान थे, जिनसे यह साबित होता था कि वे पहली बार इस यातना को नहीं सह रहे थे। अचानक दरवाज़ा खुला और कोई अंदर आया, जिसने, खुशकिस्मती से, मुझे नहीं देखा। वह जूपियन था। वह सम्मान और एक समझदारी भरी मुस्कान के साथ बैरन के पास पहुँचा। "तो! क्या आपको मेरी ज़रूरत है?" बैरन ने जूपियन से गुज़ारिश की कि वह मॉरिस को एक पल के लिए बाहर भेज दे। जूपियन ने उसे बड़े ही उत्साह के साथ बाहर निकाल दिया। बैरन ने पूछा, "मुझे लगता है कि हमारी बातें कोई सुन नहीं पाएगा?" जूपियन ने उसे यकीन दिलाया कि कोई नहीं सुन पाएगा। बैरन जानता था कि जूपियन, हालाँकि वह एक पढ़े-लिखे आदमी जितना ही

समझदार था, लेकिन उसमें किसी भी तरह की व्यावहारिक समझ नहीं थी; वह चालाक लोगों के सामने ऐसी बातों में छिपे अर्थों का इस्तेमाल करता था जिनसे कोई भी धोखा नहीं खाता था, और ऐसे उपनामों का ज़िक्र करता था जिन्हें हर कोई जानता था। जूपियन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "एक सेकंड।" उसने कमरा नंबर 3 में घंटी बजने की आवाज़ सुनी थी। वह एक लिबरल डिप्टी था जो अब जा रहा था। जूपियन को घंटी का नंबर देखने की ज़रूरत नहीं थी; वह उसकी आवाज़ पहचानता था, क्योंकि वह डिप्टी हर रोज़ दोपहर के खाने के बाद आता था। उस खास दिन उसे अपना समय बदलना पड़ा था, क्योंकि उसे दोपहर में सेंट पियरे डे शैलो में अपनी बेटी की शादी में शामिल होना था। इसलिए वह शाम को आया था, लेकिन वह समय पर घर पहुँचना चाहता था, क्योंकि उसकी पत्नी परेशान हो जाती थी अगर वह देर से घर लौटता था—खासकर बमबारी के इन दिनों में। जूपियन ने खास तौर पर उसके साथ दरवाज़े तक जाने का ध्यान रखा, ताकि वह उस सम्मानित सज्जन के प्रति अपना आदर दिखा सके, बिना किसी निजी फायदे की उम्मीद के। क्योंकि, जहाँ एक तरफ वह डिप्टी 'एक्शन फ्रैन्सेज़' की अतिशयोक्तियों को नकारता था (वैसे भी, वह चार्ल्स मॉरस या लियोन डौडेट की एक भी पंक्ति समझने में असमर्थ होता), वहीं दूसरी तरफ उसके मंत्रियों के साथ अच्छे संबंध थे—जो उसके 'शूटिंग पार्टियों' में बुलाए जाने पर खुद को सम्मानित महसूस करते थे—लेकिन जूपियन ने कभी भी पुलिस के साथ अपनी कभी-कभार की मुश्किलों में उससे ज़रा सी भी मदद माँगने की हिम्मत नहीं की होती। वह पूरी तरह समझता था कि अगर उसने उस अमीर और डरपोक विधायक से ऐसे मामलों पर बात करने का जोखिम उठाया होता, तो उसे पुलिस की मामूली से मामूली छापेमारी से भी बख्शा नहीं जाता, और वह तुरंत अपने सबसे उदार ग्राहकों में से एक को खो

देता। डिप्टी को दरवाज़े तक छोड़ने के बाद, उसने अपनी टोपी आँखों तक नीचे खींच ली, अपना कॉलर ऊपर कर लिया, और—जैसा कि वह अपने चुनावी अभियानों के दौरान करता था—तेज़ी से वहाँ से खिसक गया; उसे लगा कि वह अपना चेहरा छिपा रहा है। जूपियन—वापस एम. डे शार्लस के पास जाते हुए—बोला: "वह एम. यूजीन थे।" जुपियन की जगह पर, ठीक पागलखानों की तरह, लोगों को सिर्फ़ उनके पहले नाम से पुकारा जाता था; लेकिन, वहाँ आने-जाने वालों की जिज्ञासा शांत करने और अपने घर की इज़्ज़त बढ़ाने के लिए, वह दबे स्वर में उनके सरनेम भी बता देता था। कभी-कभी, हालाँकि, जुपियन को अपने ग्राहकों की असली पहचान पता नहीं होती थी, इसलिए वह खुद ही कोई कहानी गढ़ लेता था और कहता था कि यह वाला शेयर-ब्रोकर है, दूसरा कोई रईस या कलाकार है; जिन लोगों के नाम वह ग़लती से बता देता था, उनके लिए ये छोटी-मोटी और मज़ेदार ग़लतियाँ होती थीं। आख़िरकार, M. Victor की असली पहचान के बारे में अपनी अज्ञानता को उसने पूरी तरह से स्वीकार कर लिया। जुपियन की एक और आदत थी कि वह Baron को खुश करने के लिए, कुछ पार्टियों में जो काम सही माना जाता है, उसका ठीक उल्टा करता था: "मैं आपकी मुलाक़ात M. Lebrun से करवाने जा रहा हूँ" (उसके कान में: "यह खुद को M. Lebrun कहता है, लेकिन असल में यह रूस का एक Grand-Duke है।") दूसरे शब्दों में, जुपियन को M. de Charlus से किसी दूधवाले की मुलाक़ात करवाना कोई दिलचस्प बात नहीं लगती थी, लेकिन, आँख मारते हुए वह कहता था: "यह एक तरह का दूधवाला है, लेकिन उससे भी बढ़कर, यह Belleville के सबसे ख़तरनाक बदमाशों (apaches) में से एक है।" (जिस मज़ेदार अंदाज़ में जुपियन "apache" शब्द बोलता था, वह देखने लायक होता था)। और मानो यह चापलूसी...

अगर ये बातें काफ़ी नहीं थीं, तो उसने कुछ और बातें भी जोड़ दीं, जैसे: "उसे चोरी करने और घरों में सेंध लगाने के जुर्म में कई बार सज़ा मिल चुकी है। उसे सड़क पर लोगों से झगड़ा करने (वही बिंदास अंदाज़) के लिए फ़्रेस्नेस भेजा गया था, जहाँ उसने लोगों को लगभग अपाहिज ही कर दिया था; और वह एक अफ़्रीकी बटालियन में भी रह चुका है, जहाँ उसने अपने सार्जेंट की हत्या कर दी थी।"

बैरन जुपियन से थोड़ा नाराज़ था क्योंकि वह जानता था कि उस घर में लगभग सभी लोग, जिसे उसने अपने सहायक को खरीदकर एक अधीनस्थ के हाथों में सौंप दिया था, उसकी पहचान और नाम से वाकिफ थे। यह घर मैडम डी'ओलोरन (दिवंगत श्रीमती डी कैम्ब्रेमर) के चाचा की गलतियों के कारण खरीदा गया था। (सौभाग्य से कई लोगों ने इसे छद्म नाम समझा और इसे इतना बिगाड़ दिया कि बैरन उनकी मूर्खता के कारण बच गया, जुपियन की समझदारी के कारण नहीं)। यह जानकर राहत महसूस करते हुए कि उनकी बातें कोई सुन नहीं सकता, बैरन ने उससे कहा: "मैं उस छोटे से आदमी के सामने बोलना नहीं चाहता था। वह बहुत अच्छा है और अपनी पूरी कोशिश करता है, लेकिन वह उतना क्रूर नहीं है। उसका चेहरा मुझे भाता है, लेकिन वह मुझे नीच व्यभिचारी कहता है जैसे उसने इसे रट लिया हो।" "अरे नहीं! किसी ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा," जुपियन ने इस बात की असंभावना को समझे बिना उत्तर दिया। "दरअसल, वह ला विलेट में एक चौकीदार की हत्या में शामिल था।" "सचमुच? यह तो काफी दिलचस्प है," बैरन ने मुस्कुराते हुए कहा। "लेकिन मैंने अभी-अभी एक कसाई, एक पशु काटने वाले को बुलाया है, जो बिल्कुल उसके जैसा दिखता है; संयोग से वह यहाँ आया था। क्या

आप उसे आजमाना चाहेंगे?" "जी हाँ, खुशी से।" मैंने कसाईखाने के आदमी को अंदर जाते देखा। वह थोड़ा-बहुत "मौरिस" जैसा दिखता था, लेकिन उससे भी ज्यादा अजीब बात यह थी कि दोनों एक ऐसे प्रकार के थे जिसे मैं कभी परिभाषित नहीं कर पाया था, लेकिन तब मुझे एहसास हुआ कि वह मोरेल में भी दिखाई देता था; अगर उसके चेहरे में नहीं जैसा कि मैं जानता था, तो कम से कम उसकी विशेषताओं में, जो प्रेम की दृष्टि से मोरेल को मुझसे अलग रूप में देखकर, उसके चेहरे पर फिट बैठती थीं। जिस क्षण मैंने अपने मन में मोरेल की छवि बनाई, जिसमें मैंने उन विशेषताओं को शामिल किया जो मेरी यादों से ली गई थीं कि मोरेल किसी और के लिए क्या मायने रखता होगा, उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वे दोनों युवक, जिनमें से एक जौहरी का लड़का था और दूसरा होटल का कर्मचारी, अस्पष्ट रूप से उसके उत्तराधिकारी थे। क्या यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि एम. डी चार्लस, कम से कम अपने प्रेम प्रसंगों के एक पक्ष में, हमेशा एक ही प्रकार के प्रति वफादार रहे और जिस वासना के कारण उन्होंने इन दोनों युवकों को चुना, वही वासना थी जिसके कारण उन्होंने डोनसिएरेस स्टेशन के प्लेटफार्म पर मोरेल को रोका था? क्या वे तीनों उस युवक से कुछ हद तक मिलते-जुलते थे, जिसकी आकृति एम. डी चार्लस की नीली आँखों में अंकित थी, और जिसने उनकी दृष्टि को वह विचित्रता प्रदान की थी जिसने मुझे बालबेक में उस पहले दिन भयभीत कर दिया था? या फिर, क्या मोरेल के प्रति उनके प्रेम ने उनके पसंदीदा प्रकार को बदल दिया था और अब वे मोरेल से मिलते-जुलते पुरुषों की तलाश कर रहे थे ताकि मोरेल के परित्याग के दुख से खुद को सांत्वना दे सकें? एक और अनुमान यह था कि शायद बाहरी तौर पर भले ही ऐसा न लगे, लेकिन मोरेल और उनके बीच दोस्ती के अलावा कोई और रिश्ता नहीं था और एम. डी चार्लस ने जुपियन से इन युवकों को इसलिए

मंगवाया था क्योंकि वे मोरेल से काफी मिलते-जुलते थे, जिससे जुपियन को यह भ्रम हो गया था कि मोरेल उनसे प्रेम कर रहा है। यह सच है कि एम. डी चार्लस ने मोरेल के लिए जो कुछ किया था, उसे ध्यान में रखते हुए, यह अनुमान असंभव लगता है, अगर यह न पता हो कि प्रेम हमें अपने प्रिय के लिए बड़े बलिदान देने पर मजबूर करता है, और कभी-कभी तो हमारी इच्छा का भी बलिदान देना पड़ता है, जिसे त्यागना और भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि जिसे हम प्यार करते हैं वह महसूस करता है कि हम उससे और भी अधिक प्रेम करते हैं। इस तरह के अनुमान की संभावना को कम करने वाला कारक एम. डी चार्लस का अत्यधिक संवेदनशील और भावुक स्वभाव था, जो इस मामले में सेंट-लूप के समान था, जिसने मोरेल के साथ उनके संबंधों में शायद वही भूमिका निभाई हो, हालांकि अधिक शालीन और नकारात्मक भूमिका, जो उनके भतीजे के राहेल के साथ शुरुआती संबंधों में थी। किसी प्रिय स्त्री के साथ संबंध (और यह बात किसी युवक के प्रेम पर भी लागू हो सकती है) उसकी पवित्रता या उसके प्रेम की निर्मम प्रकृति के अलावा अन्य कारणों से भी निस्वार्थ रह सकते हैं। कारण यह हो सकता है कि प्रेमी बहुत अधीर हो और अपने अत्यधिक प्रेम के कारण उस क्षण की प्रतीक्षा न कर पाए जब वह उदासीनता का दिखावा करके अपनी इच्छाएँ पूरी कर सके। वह लगातार प्रेम की तलाश में रहता है, अपनी प्रेमिका को पत्र लिखना कभी नहीं छोड़ता, उससे मिलने की कोशिश करता रहता है, लेकिन वह उससे मिलने से इनकार कर देती है, और वह हताश हो जाता है। उस समय से वह जानती है कि यदि वह उसे अपना साथ और मित्रता प्रदान करे, तो ये लाभ उस व्यक्ति के लिए इतने महत्वपूर्ण होंगे जिसे लगता था कि वह इनसे वंचित रहने वाला है, कि उसे इससे अधिक कुछ देने की आवश्यकता नहीं है और वह उस क्षण का लाभ उठा सकती है जब वह

उसे न देख पाने का कष्ट सहन नहीं कर पाता और हर हाल में इस संघर्ष को समाप्त करने के लिए एक ऐसे समझौते को स्वीकार कर लेता है जिसकी प्रारंभिक शर्त एक निस्वार्थ संबंध होगी। इसके अलावा, इस सुलह से पहले के पूरे समय में, प्रेमी निरंतर चिंता में डूबा रहता था, एक पत्र या एक नज़र की निरंतर उम्मीद करता रहता था। वह उस शारीरिक इच्छा के बारे में सोचना बहुत पहले ही छोड़ चुका होता था जो पहले उसे सताती थी, लेकिन प्रतीक्षा करते-करते शांत हो जाती थी और उसकी जगह एक अलग तरह की लालसा ने ले ली होती थी, जो असंतुष्ट रहने पर और भी अधिक पीड़ादायक होती थी। पहले स्पर्श से मिलने वाला सुख बाद में मिलता तो था, लेकिन वह मैत्रीपूर्ण शब्दों और यौन संबंध के वादों में बदल जाता था। अनिश्चितता के तनाव या ऐसी ठंडी निगाहों के बाद, जो ऐसा लगता था मानो प्रेमिका को फिर कभी न देख पाने की उम्मीद से परे कर देती हों, ये सुखदायक क्षण आते थे। स्त्रियाँ यह सब जानती हैं और उन्हें यह विलासिता प्राप्त है कि वे उन लोगों के आगे कभी न झुकें जिन्होंने शुरू से ही उनकी अटूट इच्छा को धोखा दिया है। एक स्त्री मोहित हो जाती है यदि वह बिना कुछ दिए, उससे कहीं अधिक प्राप्त कर सकती है जितना वह आमतौर पर स्वयं को देने पर प्राप्त करती है। इसी कारण अति संवेदनशील पुरुष अपनी आदर्श की पवित्रता में विश्वास करते हैं। और जिस आभा से वे उसे घेरे रहते हैं, वह भी उनके अत्यधिक प्रेम का ही परिणाम है, परन्तु जैसा कि हम देखते हैं, अप्रत्यक्ष रूप से। स्त्री में कुछ हद तक उन औषधियों का अवचेतन प्रभाव होता है जो अनजाने में ही अपना असर दिखाती हैं, जैसे मॉर्फिन। ये औषधियाँ उन लोगों के लिए अपरिहार्य नहीं हैं जिन्हें ये नींद और वास्तविक सुख का आशीर्वाद देती हैं। ऐसे लोग इन्हें सोने के भाव से नहीं खरीदते, न ही बीमार व्यक्ति की सारी संपत्ति के बदले लेते हैं। बल्कि ये उन अन्य दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए

अपरिहार्य हैं (वे वास्तव में एक ही हों, बस वर्षों के साथ बदल गए हों) जिन्हें ये औषधि न तो नींद देती है, न ही आनंद देती है, बल्कि इसके बिना वे एक ऐसी बेचैनी के शिकार हो जाते हैं जिसे उन्हें हर कीमत पर समाप्त करना होता है, भले ही ऐसा करने का अर्थ मृत्यु ही क्यों न हो। और एम. डी चार्लस, जिनका मामला, लिंग की समानता के मामूली अंतर को छोड़कर, प्रेम के सामान्य नियमों में शामिल किया जा सकता है, हालांकि वे कैपेट्स परिवार से भी पुराने, धनी और विशिष्ट समाज में प्रतिष्ठित परिवार से थे, जबकि मोरेल कोई खास व्यक्ति नहीं थे, मोरेल से वही कह सकते थे जो उन्होंने मुझसे कहा था: "मैं एक राजकुमार हूँ और मैं तुम्हारा कल्याण चाहता हूँ," फिर भी अगर मोरेल उनकी बात नहीं मानते तो वे उनके स्वामी होते। और शायद, यह जानना कि उन्हें प्यार किया जाता है, उनके लिए ऐसा न करने का निश्चय करने के लिए पर्याप्त था। प्रतिष्ठित लोगों को उन घमंडी लोगों से घृणा होती है जो उन पर अपना अधिकार जताना चाहते हैं, वही घृणा एक पुरुष को उस पुरुष से होती है जो उस पुरुष को उस पुरुष से जो उस पुरुष से अत्यधिक प्रेम करता है। एम. डी चार्लस के पास न केवल हर तरह का लाभ था, बल्कि वे शायद मोरेल को भारी रिश्वत भी दे सकते थे, फिर भी यह संभव है कि मोरेल की इच्छा के आगे वे व्यर्थ ही होतीं। एम. डी चार्लस की अपने मूल जर्मनों से कुछ समानता थी, जिनसे उनका संबंध था और जो वर्तमान युद्ध में, जैसा कि बैरन अक्सर दोहराते थे, हर मोर्चे पर विजयी थे। लेकिन उनकी जीत का क्या फायदा, क्योंकि हर जीत ने मित्र राष्ट्रों को पहले से कहीं अधिक दृढ़ बना दिया कि वे उन्हें शांति और सुलह नहीं देंगे। इस प्रकार नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण किया और उदारतापूर्वक अधिकारियों को अपने समक्ष उपस्थित होने का निमंत्रण दिया। लेकिन कोई नहीं आया।

मैं नीचे गया और उस छोटे से कमरे में दाखिल हुआ जहाँ मौरिस, जिसे

यह पता नहीं था कि उसे वापस बुलाया जाएगा या नहीं और जिसे जुपियन ने इंतज़ार करने को कहा था, अपने एक दोस्त के साथ ताश खेलने वाला था। वे फर्श पर मिले एक युद्ध-चिह्न को लेकर बहुत उत्साहित थे और उन्हें नहीं पता था कि वह किसने खोया है या उसे किसे वापस भेजा जाए ताकि असली मालिक को चिंता न हो। फिर वे एक अधिकारी की बहादुरी के बारे में बात करने लगे जो अपने अर्दली को बचाने की कोशिश में मारा गया था। "फिर भी, अमीरों में भी अच्छे लोग होते हैं। मैं ऐसे आदमी के लिए खुशी-खुशी मर जाता!" मौरिस ने कहा, जिसने जाहिर तौर पर बैरन पर अपनी भयानक मार केवल यांत्रिक आदत, अज्ञानता, पैसे की ज़रूरत और बिना काम किए पैसा कमाने की चाहत के कारण ही डाली थी, हालाँकि शायद इससे उसे ज़्यादा परेशानी हुई। और जैसा कि एम. डी चार्लस को आशंका थी, वह शायद एक नेक दिल इंसान था, और निश्चित रूप से वह साहसी लग रहा था। जब उसने उस अधिकारी की मौत के बारे में बात की तो उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए और बाईस साल का वह युवक भी उतना ही भावुक हो गया। "आह! वे बड़े अच्छे लोग थे! हम जैसे बेचारे लोगों के पास खोने के लिए कुछ नहीं है। लेकिन एक ऐसा सज्जन जिसके पास बहुत कुछ है, जो हर दिन शाम छह बजे अपना एपेरिटिफ (शराब) पीने जा सकता है, यह सच में बहुत बुरा लगता है। कोई चाहे जितना भी बोले, लेकिन जब कोई ऐसे लोगों को मरते हुए देखता है, तो सच में बहुत दुख होता है। भगवान को ऐसे अमीर लोगों को मरने नहीं देना चाहिए, वैसे भी, वे मेहनतकश लोगों के लिए उपयोगी होते हैं। उन कमीने जर्मनों को एक-एक करके मार डालना चाहिए, जिन्होंने ऐसे आदमी की जान ले ली। और देखो उन्होंने लूवेन में क्या किया, छोटे बच्चों के सिर काट दिए! मुझे नहीं पता, मैं किसी से बेहतर नहीं हूँ, लेकिन मैं ऐसे बर्बरों का कहना मानने के बजाय

अपना गला कटवाना पसंद करूँगा; वे इंसान नहीं हैं, वे पूरी तरह से बर्बर हैं, आप इससे इनकार नहीं कर सकते।" दरअसल, ये सभी लड़के देशभक्त थे। उनमें से एक, जिसकी बांह में मामूली चोट आई थी, बाकी लोगों की तरह उतना महान नहीं था, क्योंकि उसने कहा कि उसे जल्द ही मोर्चे पर लौटना है: "धिक्कार है, काश मुझे कोई गंभीर चोट लगी होती" (जिससे छूट मिल जाती है) ठीक वैसे ही जैसे श्रीमती स्वान पहले कहा करती थीं, "मुझे एक कष्टदायक फ्लू हो गया है।" ड्राइवर के लिए दरवाज़ा फिर से खुला, जो थोड़ी देर के लिए ताज़ी हवा लेने गया था। "अरे!" उसने कहा, "क्या यह सब खत्म हो गया? ज़्यादा देर नहीं हुई!" उसने मौरिस को देखा, जो शायद उस आदमी को कोड़े मार रहा था, जिसे उन्होंने उस समय के एक अखबार के नाम पर "जंजीरों में जकड़ा आदमी" नाम दिया था। "शायद आपको, जो टहलने गए थे, ज़्यादा देर न लगे," मौरिस ने चिढ़कर जवाब दिया, क्योंकि उसे पता चल गया था कि उसने ऊपर वाले ग्राहक को खुश नहीं किया था, "लेकिन अगर आपको इस गर्मी में मेरी तरह कोड़े मारने पड़ते! अगर वह पचास फ्रैंक न देता तो—!" "इसके अलावा, वह अच्छी तरह से बात करने वाला आदमी है, ऐसा लगता है कि उसने शिक्षा प्राप्त की है। क्या उसने कहा कि यह जल्द ही खत्म हो जाएगा?" "उसने कहा कि हम उन्हें नहीं पकड़ पाएंगे, कि यह बिना किसी पक्ष की जीत के समाप्त हो जाएगा।" "बॉन सांग दे बॉन सांग! वह ज़रूर कोई जर्मन होगा।" "मैंने तुमसे कहा था कि तुम बहुत ज़ोर से बोल रहे हो," मुझे देखकर बाकी लोगों से उम्र में बड़े एक आदमी ने कहा। "क्या तुम्हारा कमरा खाली हो गया?" "चुप रहो, तुम यहाँ के मालिक नहीं हो।" "हाँ, मेरा काम हो गया है और मैं भुगतान करने आया हूँ।" "तुम्हें संरक्षक को भुगतान कर देना चाहिए। मौरिस, जाओ और उसे बुला लाओ।" "मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता।" "मुझे कोई परेशानी नहीं है।" मौरिस

ऊपर गया और वापस आया। "संरक्षक नीचे आ रहे हैं," उसने कहा। मैंने उसे उसकी मेहनत के लिए दो फ्रैंक दिए। वह खुशी से शरमा गया: "बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं उन्हें अपने भाई को भेज दूँगा जो कैदी है। नहीं, वह ठीक है, यह शिविर पर निर्भर करता है।" इसी बीच, दो बेहद सलीकेदार ग्राहक, जिन्होंने ओवरकोट के नीचे ड्रेस कोट और सफेद टाई पहनी हुई थी, अपने हल्के लहजे से रूसी लग रहे थे। वे दरवाजे पर खड़े होकर सोच रहे थे कि अंदर जाएं या नहीं। साफ दिख रहा था कि वे पहली बार यहां आए थे। उन्हें जगह का पता जरूर बताया गया होगा और वे इच्छा, लालच और अत्यधिक भय के बीच फंसे हुए लग रहे थे। उन दोनों में से एक, एक सुंदर युवक, आधे सवालिया, आधे राजी करने वाली मुस्कान के साथ हर मिनट दूसरे से दोहराता रहा, "आखिरकार, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।" वह भले ही कह रहा हो कि उसे अंजाम की परवाह नहीं है, लेकिन वह उतना उदासीन नहीं था जितना उसके शब्दों से लग रहा था, क्योंकि उसकी इस टिप्पणी से वह अंदर नहीं गया, बल्कि इसके विपरीत, उसने अपने दोस्त की तरफ एक और नजर डाली, फिर वही मुस्कान और वही "आखिरकार, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता" कहा। यह "हमें ज़रा भी परवाह नहीं" का भाव, उस अभिव्यंजक भाषा के हज़ारों उदाहरणों में से एक है जो हमारी आम बोलचाल की भाषा से बिल्कुल अलग है। इसमें भावनाएँ हमें अपने कहने के अर्थ को बदलने पर मजबूर करती हैं और उसकी जगह हम ऐसे वाक्यांशों का प्रयोग करते हैं जो किसी अज्ञात झील से निकले हों, जहाँ भावों का हमारे विचारों से कोई संबंध न हो और इसी कारण वे हमारे विचारों को प्रकट करते हैं। मुझे याद है कि एक बार जब फ्रांस्वा चुपचाप कमरे में दाखिल हुई, ठीक उसी समय जब मेरी सहेली मेरे बगल में नग्न अवस्था में लेटी थी, तो अल्बर्टीन ने खुद को रोक न पाने के कारण मुझे चेतावनी देते हुए कहा: "आह! देखो, वह खूबसूरत फ्रांस्वा!"

फ्रांस्वा, जिसकी नज़र कमज़ोर थी और जो कमरे में हमसे कुछ दूरी पर खड़ी थी, ने शायद कुछ नहीं देखा। लेकिन "वह खूबसूरत फ्रांस्वा" जैसे असामान्य शब्द, जिनका इस्तेमाल अल्बर्टीन ने अपने जीवन में कभी नहीं किया था, अनायास ही अपने मूल को प्रकट कर गए; फ्रांस्वा जानती थी कि ये शब्द अल्बर्टीन के मुँह से बिना देखे, भावनाओं और समझ के निकले हैं, और वह अपनी स्थानीय बोली में बुदबुदाते हुए बोली, "पोउताना"। बहुत समय बाद, जब ब्लोच एक परिवार के पिता बन गए और उन्होंने अपनी एक बेटी का विवाह एक कैथोलिक से किया, तो एक बदतमीज़ व्यक्ति ने उन्हें बताया कि उसने सुना है कि वह एक यहूदी की बेटी है और उनसे उनका नाम पूछा। जन्म से ही मिस ब्लोच कहलाने वाली उस युवती ने उत्तर दिया, ब्लोच का उच्चारण जर्मन शैली में किया, जैसे ड्यूक डी गुएरमांटेस करते होंगे, यानी 'च' का उच्चारण 'क' की तरह नहीं बल्कि जर्मन 'च' की तरह किया।

होटल के दृश्य पर वापस आते हुए (जहाँ दोनों रूसी अंततः घुसने का फैसला कर चुके थे—"आखिरकार हमें तो कोई परवाह ही नहीं"), होटल का मालिक अभी लौटा भी नहीं था कि जुपियन अंदर आया और उन्हें ज़ोर से बात करने के लिए डांटते हुए कहा कि पड़ोसी शिकायत करेंगे। लेकिन मुझे देखकर वह अवाक रह गया। "तुम सब अभी इसी वक्त बाहर निकलो!" वह चिल्लाया। तुरंत ही वे सब उठ खड़े हुए, जिस पर मैंने कहा: "अच्छा होगा कि ये युवक यहीं रुकें और मैं थोड़ी देर के लिए तुम्हारे साथ बाहर चलूँ।" वह बहुत परेशान होकर मेरे पीछे आया और मैंने उसे बताया कि मैं क्यों आया था। ग्राहक होटल मालिक से पूछते सुनाई देते थे कि क्या वह उन्हें किसी नौकर, गायक या अश्वेत ड्राइवर से मिलवा सकता है। इन बूढ़े सनकी लोगों को हर पेशे में दिलचस्पी थी; हर तरह के सैनिक और हर देश के सहयोगी। कुछ लोग विशेष रूप से कनाडाई लोगों को

पसंद करते थे, उनके लहजे के आकर्षण में, जो इतना हल्का था कि वे यह नहीं जानते थे कि यह पुराने फ्रांस का है या इंग्लैंड का। स्कॉटिश पुरुषों की बहुत मांग थी, क्योंकि वे किल्ट्स (स्कॉटिश पोशाक) पहनते थे और ऐसी वासनाओं से जुड़े जलपरी जैसे सपने देखते थे। हर उन्माद की अपनी एक खास प्रकृति होती है, और उसकी तीव्रता भी परिस्थितियों पर निर्भर करती है। एक बूढ़ा आदमी, जिसकी सारी कामुक इच्छाएँ शांत हो चुकी थीं, एक घायल सैनिक से मिलने की ज़िद करने लगा। सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी। अपनी स्वाभाविक अविवेकी प्रवृत्ति के साथ, जुपियन ने मुझे बताया कि बैरन नीचे आ रहे हैं, और उन्हें किसी भी हालत में मुझे नहीं देखना चाहिए। लेकिन अगर मैं उस छोटे से कमरे में जाऊँ जो गलियारे के पास था जहाँ जवान लोग थे, तो वह शटर खोल देगा। यह एक तरकीब थी जो उसने बैरन को बिना देखे देखने और सुनने के लिए ईजाद की थी, और अब यही तरकीब मेरे ही खिलाफ काम आएगी। "बस शोर मत करना," उसने कहा। और मुझे आधा धक्का देकर अंधेरे में धकेलते हुए वह चला गया। इसके अलावा, उसके पास मुझे देने के लिए कोई और कमरा नहीं था, क्योंकि युद्ध के बावजूद उसका होटल पूरी तरह भरा हुआ था। जिस कमरे से मैं अभी निकला था, उसे विस्काउंट डी कौरवॉइसियर ने ले लिया था। वे रेड क्रॉस से दो दिन की छुट्टी लेकर पेरिस में एक घंटे का मनोरंजन करने आए थे, ताकि वे शैतो डी कौरवॉइसियर लौटकर विस्काउंटेस को बता सकें कि वे आखिरी ट्रेन नहीं पकड़ पाए। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि एम. डी चार्लस उनसे कुछ ही गज की दूरी पर हैं, और एम. डी चार्लस को भी इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था, क्योंकि वे जुपियन के घर पर अपने चचेरे भाई से कभी नहीं मिले थे, और एम. डी चार्लस विस्काउंट की सावधानीपूर्वक छुपाई गई पहचान से अनभिज्ञ थे। बैरन जल्द ही अंदर

आए, अपने चोटों के कारण चलने में कुछ कठिनाई महसूस कर रहे थे, हालांकि उन्हें शायद इसकी आदत हो गई थी। हालांकि उनका अय्याशी का दौर खत्म हो चुका था और वे केवल मौरिस को उसका बकाया पैसा देने जा रहे थे, फिर भी उन्होंने वहां जमा हुए युवकों पर एक गोलाकार नजर डाली, जो एक साथ कोमल और जिज्ञासु थी, और स्पष्ट रूप से उनमें से प्रत्येक के साथ एक पूरी तरह से निस्वार्थ लेकिन प्रेमपूर्ण लंबी बातचीत का आनंद लेने की उम्मीद कर रहे थे। मैंने देखा कि हरम के प्रति उसकी चंचलता और बेफिक्री में, जिससे वह मानो डरा हुआ सा लगता था, शरीर का वो मरोड़ना और सिर हिलाना, वो संवेदनशील निगाहें जो मैंने ला रास्पेलियर में उसके पहले आगमन की शाम को देखी थीं, उसकी एक नानी से विरासत में मिली अदाएं थीं जिन्हें मैं नहीं जानती थी, और जो आम जीवन में अधिक मर्दाना भावों के पीछे छिपी रहती थीं, लेकिन जब वह एक नीच श्रोताओं को खुश करने के लिए एक संभ्रांत महिला के रूप में प्रकट होना चाहता था तो नखरे से प्रदर्शित होती थीं। जुपियन ने बैरन को यह कहकर उनकी सिफारिश की थी कि वे बेलेविले के गुंडे हैं और एक लुई के लिए अपनी बहनों के साथ भी सो जाते हैं। वास्तव में, जुपियन झूठ भी बोल रहा था और सच भी। बैरन को उसने जितना बताया था, उससे कहीं बेहतर और संवेदनशील, वे बदमाशों की श्रेणी में नहीं आते थे। लेकिन जो लोग उन पर विश्वास करते थे, वे उनसे पूरी ईमानदारी से बात करते थे मानो ये भयानक लोग भी वही कर रहे हों। हालांकि, एक क्रूर व्यक्ति चाहे कितना भी यह मान ले कि वह किसी हत्यारे के साथ है, उसकी अपनी शुद्ध क्रूर आत्मा पर इसका कोई असर नहीं पड़ता और वह इन लोगों के झूठों से सम्मोहित हो जाता है, जो ज़रा भी हत्यारे नहीं हैं, बल्कि आसानी से पैसा कमाने की चाह में अपने पिता, माता या बहन को ज़ुबान से ज़िंदा कर देते हैं और फिर से मार डालते हैं,

बार-बार यही करते हैं, क्योंकि जिस ग्राहक को वे खुश करने की कोशिश कर रहे हैं, उससे उनकी बातचीत में खलल पड़ जाता है। ग्राहक उसकी सरलता पर अचंभित है और सामूहिक हत्याओं में लिप्त दोषी जिगोलो की अपनी बेतुकी धारणा में, अपराधी के झूठ और विरोधाभासों पर चकित है। ऐसा लगता था कि वे सभी एम. डी चार्लस को जानते थे, जो कुछ देर तक वहाँ रुका और उनमें से हर एक से अपनी स्थानीय भाषा में बात करता रहा, दिखावटी स्थानीय लहजे के लिए और साथ ही एक घिनौने जीवन में खुद को शामिल करने के क्रूर आनंद के लिए। “यह घिनौना है,” उन्होंने कहा। “मैंने तुम्हें ओलंपिया के सामने दो वेश्याओं के साथ देखा, सिर्फ़ उनसे कुछ सिक्के लेने के लिए। मुझे धोखा देने का यह अच्छा तरीका है।” सौभाग्य से उस युवक के पास यह कहने का समय नहीं था कि उसने कभी किसी महिला से सिक्के नहीं लिए थे, जिससे एम. डी चार्लस का उत्साह कम हो जाता। इसलिए उन्होंने अपना विरोध उनके वाक्य के अंत में व्यक्त करते हुए कहा, “अरे नहीं! मैं आपको धोखा नहीं दे रहा हूँ।” इन शब्दों से एम. डी चार्लस को बहुत खुशी हुई और अपनी स्वाभाविक बुद्धिमत्ता के बावजूद, उन्होंने जुपियन की ओर मुड़कर कहा, "यह कहना अच्छा लगा और वह इसे इतने आकर्षक ढंग से कहते हैं कि मानो यह सच हो। और वैसे भी, अगर वह किसी को इस पर विश्वास दिला दें तो इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह सच है या नहीं। उनकी आंखें कितनी प्यारी हैं। इधर आओ, बेटा, मैं तुम्हें तुम्हारी मेहनत के लिए दो बड़े चुंबन देने जा रही हूँ। तुम खाइयों में मुझे याद करोगे ना? क्या यह बहुत कठिन है?" "हे भगवान! ऐसे दिन भी होते हैं जब गोला तुम्हारे बहुत करीब से गुजरता है!" और वह युवक गोले, हवाई जहाज आदि की आवाज़ की नकल करने लगा। "लेकिन हमें भी बाकियों की तरह ही करना होगा और आप यकीन मानिए हम अंत तक लड़ते रहेंगे।" "अंत तक," निराशावादी

बैरन ने उदास स्वर में उत्तर दिया। "क्या आपने अखबारों में नहीं पढ़ा कि सारा बर्नहार्ट ने कहा है कि फ्रांस अंत तक डटा रहेगा। फ्रांसीसी अपने अंतिम सैनिक तक मरने को तैयार हैं।" "मुझे एक पल के लिए भी संदेह नहीं है कि फ्रांसीसी बहादुरी से अपने अंतिम सैनिक तक मरेंगे," एम. डी चार्लस ने ऐसे उत्तर दिया मानो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो, हालांकि उनका ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था, बल्कि शांतिवाद की किसी भी धारणा को सुधारने के इरादे से जो वे भूलवश दे सकते थे, "मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन मैं खुद से पूछ रहा हूँ कि श्रीमती सारा बर्नहार्ट फ्रांस के नाम पर बोलने के लिए किस हद तक योग्य हैं— आह, मुझे लगता है कि मैं इस आकर्षक युवक को जानता हूँ," उन्होंने एक अन्य व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा जिसे शायद उन्होंने कभी नहीं देखा था। उन्होंने उसे उसी तरह सलाम किया जैसे वर्साय में किसी राजकुमार को करते। इस अवसर का लाभ उठाते हुए और मुफ्त में अतिरिक्त आनंद प्राप्त करने के लिए, जैसे जब मैं छोटी थी और अपनी माँ के साथ बोइसियर या गौचे को कोई ऑर्डर देने जाती थी और वहाँ मौजूद महिलाओं में से एक मुझे कांच के फूलदानों में से एक से मिठाई देती थी, उन्होंने उस आकर्षक युवक का हाथ पकड़ा और अपने प्रशियाई अंदाज़ में उसे देर तक दबाए रखा, उस पर अपनी निगाहें गड़ाए और उतनी देर तक मुस्कुराते रहे जितनी देर तक फोटोग्राफर खराब रोशनी में हमारी तस्वीरें खींचते थे। "महाशय, आपसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ, मैं मंत्रमुग्ध हूँ। इनके बाल कितने सुंदर हैं," उन्होंने जुपियन की ओर मुड़ते हुए कहा। फिर वे मौरिस के पास गए और उसे अपने पचास फ्रैंक दिए और उसकी कमर में हाथ डाल दिया। "तुमने मुझे कभी नहीं बताया कि तुमने एक बूढ़ी बेलेविले कुतिया के साथ संबंध बनाए थे," एम. डी चार्लस ने खुशी से ठहाका लगाते हुए अपना चेहरा मौरिस के चेहरे के बिल्कुल

करीब कर दिया। "ओह, महाशय बैरन," उस जिगोलो ने विरोध किया जिसे वे चेतावनी देना भूल गए थे, "आप ऐसी बात पर कैसे विश्वास कर सकते हैं?" चाहे यह झूठ हो या कथित अपराधी वास्तव में इसे एक घृणित कार्य मानता हो जिसे उसे नकारना चाहिए, लड़के ने आगे कहा: "अपने ही जैसे लोगों को छूना, भले ही वह जर्मन हो, एक बात है, लेकिन एक औरत को, और वह भी एक बूढ़ी औरत को!" नेक सिद्धांतों की इस घोषणा का बैरन पर ठंडे पानी के छींटे जैसा असर हुआ, जो मॉरिस से ठंडेपन से दूर हट गया, उसे उसके पैसे तो दे दिए, लेकिन ऐसे भाव से जैसे वह "नाराज़" हो गया हो, "ठगा" गया हो लेकिन हंगामा नहीं करना चाहता हो, जिसने पैसे तो दे दिए लेकिन असंतुष्ट हो।

बैरन पर जो बुरा प्रभाव पड़ा, वह लाभार्थी के धन्यवाद देने के तरीके से और भी बढ़ गया: "मैं इसे अपने माता-पिता को भेज रहा हूँ और मोर्चे पर तैनात अपने दोस्त के लिए थोड़ा सा रखूँगा।" इन भावुक भावनाओं ने एम. डी चार्लस को लगभग उतना ही निराश किया जितना कि उनके साधारण किसान जैसे भाव ने। जुपियन कभी-कभी उन्हें चेतावनी देता था कि उन्हें "और भी क्रूर" होना होगा। फिर उनमें से एक शैतानी बात कबूल करने के अंदाज़ में कहता: "मैं आपको एक बात बताता हूँ, बैरन, लेकिन आप विश्वास नहीं करेंगे। जब मैं छोटा था, मैंने चाबी के छेद से देखा और अपने माता-पिता को एक-दूसरे को गले लगाते हुए देखा। क्या यह क्रूर नहीं है? आपको लगता है कि मैं बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहा हूँ, लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि ऐसा नहीं है। यह बिलकुल सच है।" विकृति का यह बनावटी प्रयास, जो केवल मूर्खता और मासूमियत को दर्शाता था, एम. डी चार्लस को और भी गुस्सा दिलाता था। सबसे शातिर चोर, लुटेरा या हत्यारा भी उसे संतुष्ट नहीं कर पाता, क्योंकि वे अपने अपराधों के बारे में बात नहीं करते, और तो और, एक क्रूर व्यक्ति में—चाहे वह कितना भी

अच्छा हो, बल्कि जितना बेहतर हो—बुराई की ऐसी प्यास होती है जिसे अपराधी भी नहीं बुझा सकते। वह सुंदर युवक, अपनी गलती का एहसास करते हुए, शायद कहता, "वह उसे जमकर सबक सिखाएगा," और बैरन से "उसके साथ मिलने की तारीख तय करने" तक की गुस्ताखी करता, लेकिन उसका आकर्षण खत्म हो जाता। उसका पाखंड उतना ही स्पष्ट था जितना उन किताबों में होता है जिनके लेखक बोलचाल की भाषा का प्रयोग करने पर जोर देते हैं। उस युवक ने व्यर्थ ही उसे अपनी महिलाओं के साथ की गई सभी अश्लील हरकतों का ब्यौरा दिया, एम. डी चार्लस केवल इस बात से चकित रह गए कि वे कितनी तुच्छ थीं। वैसे भी, यह केवल बेईमानी का परिणाम नहीं था, क्योंकि बुराई से ज्यादा सीमित कुछ भी नहीं है। इस अर्थ में, एक आम कहावत का प्रयोग करते हुए कहा जा सकता है कि व्यक्ति हमेशा एक ही दुष्चक्र में घूमता रहता है।

"कितना सीधा-सादा है ये, कोई देखकर कह ही नहीं सकता कि ये राजकुमार है," वहाँ आने-जाने वालों ने टिप्पणी की जब एम. डी चार्लस जुपियन के साथ नीचे गए, जिस पर बैरन लगातार उस नौजवान के व्यवहार की आलोचना कर रहे थे। जुपियन के असंतुष्ट भाव से लग रहा था कि वह उस नौजवान को पहले से ही कुछ सिखाने की कोशिश कर रहा था और ऐसा लग रहा था कि उस झूठे हत्यारे को जल्द ही अच्छी-खासी डांट पड़ने वाली है। "ये तो बिलकुल वैसा नहीं है जैसा तुमने मुझे बताया था," बैरन ने आगे कहा ताकि जुपियन इस सबक को किसी और समय के लिए सीख ले। "ये स्वभाव से अच्छा लगता है, ये अपने परिवार के प्रति सम्मान दिखाता है।" "फिर भी, इसके बावजूद उसके अपने पिता से बिल्कुल भी नहीं बनती," जुपियन ने आपत्ति जताई, "ये साथ रहते हैं लेकिन दोनों अलग-अलग बार में जाते हैं।" ज़ाहिर है, हत्या के मुकाबले ये एक मामूली अपराध था, लेकिन जुपियन दंग रह गया। बैरन ने और कुछ

नहीं कहा क्योंकि, हालांकि वो अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहते थे, उन्हें ये भ्रम भी चाहिए था कि उनकी इच्छाएँ पूरी नहीं हुई हैं। “वह तो एकदम बदमाश है, उसने तुम्हें बहकाने के लिए ये सब कहा, तुम बहुत भोले हो,” जुपियन ने खुद को बेगुनाह साबित करने की कोशिश में कहा, लेकिन ऐसा करके उसने एम. डी चार्लस के स्वाभिमान को और भी ठेस पहुँचाई। एम. डी चार्लस के राजकुमार होने की बात करते हुए, क्लब के नौजवान एक ऐसे व्यक्ति की मौत पर शोक मना रहे थे, जिसके बारे में जिगोलो ने कहा था, “मुझे उसका नाम नहीं पता, लेकिन लगता है वह एक बैरन है,” और वह कोई और नहीं बल्कि प्रिंस डी फॉक्स (सेंट-लूप के दोस्त के पिता) थे। जहाँ राजकुमार की पत्नी मानती थी कि वह अपना ज़्यादातर समय क्लब में बिताते हैं, वहीं असल में वह जुपियन के साथ घंटों गपशप करते और बदमाशों की मौजूदगी में समाज के किस्से सुनाते हुए बिताते थे। वह उनके बेटे की तरह ही एक सुंदर और आकर्षक व्यक्ति थे। यह हैरानी की बात है कि एम. डी चार्लस को यह नहीं पता था कि जुपियन की पसंद उनसे मिलती-जुलती है; शायद इसका कारण यही था कि बैरन ने उन्हें सिर्फ समाज में ही देखा था। लोगों का तो यहाँ तक कहना था कि उन्होंने अपने बेटे पर कॉलेज में पढ़ते समय ही इन आदतों को आज़माने की हद तक कोशिश की थी, जो शायद झूठ था। दूसरी ओर, कई लोगों की आदतों के बारे में अच्छी जानकारी होने के कारण, वे अपने बेटे के साथ उठने-बैठने वाले लोगों पर कड़ी नज़र रखते थे। एक दिन एक निम्न वर्ग का आदमी युवा राजकुमार डी फॉक्स का पीछा करते हुए उसके पिता के महल तक पहुँच गया और खिड़की से एक चिट्ठी फेंक दी, जिसे पिता ने उठा लिया। हालाँकि यह पीछा करने वाला व्यक्ति, कुलीनता के लिहाज़ से, श्री डी फॉक्स के समान समाज का नहीं था, फिर भी एक अलग दृष्टिकोण से वह उनके समान था, और उसे अपने साथियों में से

एक मध्यस्थ ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं हुई, जिसने यह साबित करके श्री डी फॉक्स को चुप करा दिया कि यह युवक ही था जिसने अपने से कहीं अधिक उम्र के व्यक्ति को इस तरह की हरकत करने के लिए उकसाया था। और यह बात काफी विश्वसनीय थी, क्योंकि राजकुमार डी फॉक्स अपने बेटे को बाहर की बुरी संगत से तो बचाने में सफल रहे थे, लेकिन उसकी वंशानुगत बुरी आदतों से नहीं। यह भी कहा जा सकता है कि युवा राजकुमार डी फॉक्स, अपने पिता की तरह, समाज के लोगों द्वारा इस संबंध में अनपेक्षित होने के कारण, एक अन्य वर्ग के साथ हद से ज्यादा आगे बढ़ गए।

“कहा जाता है कि उसके पास सालाना दस लाख रुपये खर्च करने के लिए हैं,” बाईस वर्षीय युवक ने कहा, जिसे यह बात अविश्वसनीय नहीं लगी। थोड़ी देर में एम. डी चार्लस की गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी। उसी क्षण मैंने देखा कि एक सैनिक के साथ कोई व्यक्ति पास के कमरे से धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए निकल रहा है, जो मुझे काले वस्त्र पहने एक बूढ़ी औरत जैसी लग रही थी। मुझे जल्द ही अपनी गलती का एहसास हुआ, वह एक पादरी था; फ्रांस में वह दुर्लभ और बेहद दुर्लभ बात, एक बुरा पादरी। जाहिर तौर पर सैनिक अपने साथी को उसके आचरण और पादरी के पद के बीच असंगति को लेकर चिढ़ा रहा था, क्योंकि पादरी ने धर्मशास्त्र के डॉक्टर की तरह गंभीर भाव से अपने बदसूरत चेहरे के सामने उंगली रखते हुए कहा, “अच्छा, तुम मुझसे क्या उम्मीद करते हो, मैं तो” (मुझे उम्मीद थी कि वह संत कहेगा) “देवदूत नहीं हूँ।” उसके पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं था और उसने जुपियन से विदा ली, जो बैरन को छोड़ने के बाद ऊपर जा रहा था, लेकिन अपनी घबराहट के कारण वह बुरा पादरी अपने कमरे का किराया देना भूल गया था। जुपियन, जो अपनी सूझबूझ से कभी पीछे नहीं हटता था, ग्राहकों के चंदे

वाले बक्से को खड़काते हुए बोला: "सेवा के खर्चे के लिए, महाशय अब्बे।" उस अप्रिय व्यक्ति ने माफी मांगी, अपने पैसे दिए और चला गया। जुपियन आया और मुझे उस अंधेरी गुफा से ले आया जहाँ से निकलने की हिम्मत मैं नहीं कर पा रहा था। "एक पल के लिए उस गलियारे में जाओ जहाँ नौजवान बैठे हैं—कोई बात नहीं, क्योंकि तुम किराएदार हो—मैं जाकर तुम्हारा कमरा बंद कर देता हूँ।" मालिक वहाँ था और मैंने उसे पैसे दे दिए। उसी क्षण, डिनर जैकेट पहने एक युवक अंदर आया और अधिकारपूर्ण लहजे में मालिक से पूछा: "क्या मैं लियोन को कल सुबह ग्यारह बजे के बजाय पौने ग्यारह बजे ले सकता हूँ, क्योंकि मैं दोपहर का भोजन बाहर कर रहा हूँ?" "यह इस बात पर निर्भर करता है कि अब्बे उसे कितने समय तक रखते हैं," मालिक ने उत्तर दिया। डिनर जैकेट पहने युवक को यह देखकर असंतोष हुआ और वह मानो अब्बे को कोसने ही वाला था, लेकिन मुझे देखते ही उसका गुस्सा भड़क उठा। वह सीधे संरक्षक के पास गया और गुस्से में पूछा, "यह कौन है? इसका क्या मतलब है?" संरक्षक बहुत शर्मिंदा हुआ और उसने बताया कि मेरी उपस्थिति का कोई महत्व नहीं है, मैं तो बस यहाँ किराए पर रह रहा हूँ। डिनर जैकेट पहने युवक इस स्पष्टीकरण से बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं हुआ और बार-बार दोहराता रहा, "यह बेहद अप्रिय है; ऐसा नहीं होना चाहिए। आप जानते हैं कि मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है और मैं फिर कभी इस जगह पर कदम नहीं रखूँगा।" हालाँकि, उसकी धमकी पर अमल होते नहीं दिख रहा था, क्योंकि गुस्से में जाने के बावजूद उसने फिर से इच्छा व्यक्त की कि लियोन को पौने ग्यारह बजे तक, या हो सके तो साढ़े दस बजे तक रिहा कर दिया जाए। जुपियन लौटा और मुझे नीचे ले गया। “मैं नहीं चाहता कि आप मेरे बारे में गलत राय रखें,” उसने कहा, “इस घर से उतनी आमदनी नहीं होती जितनी आप सोचते हैं। मुझे भले किराएदार

रखने पड़ते हैं, लेकिन अगर मैं सिर्फ उन्हीं पर निर्भर रहूँ तो मुझे नुकसान होगा। माउंट कार्मेल्स के विपरीत, यहाँ बुराई के कारण ही अच्छाई कायम है। अगर मैंने यह घर लिया है, या यूँ कहें कि जिस संरक्षक को आपने देखा है, उसने इसे लिया है, तो यह सिर्फ बैरन की सेवा करने और उनके बुढ़ापे में उनका मनोरंजन करने के लिए है।" जुपियन सिर्फ उन क्रूर कृत्यों या बैरन की बुराइयों के बारे में बात नहीं करना चाहता था जो मैंने देखे थे। बैरन अब बातचीत, संगति या ताश खेलने के लिए भी सिर्फ आम लोगों को ही पसंद करता था जो उसका फायदा उठाते थे। बेशक, नीच संगति के प्रति घमंड उतना ही स्वाभाविक है जितना कि उसका उल्टा। एम. डी चार्लस के मामले में, ये दोनों प्रकार लंबे समय से एक जैसे थे; समाज में कोई भी इतना होशियार नहीं था कि उसके साथ संगति करे और पाताल लोक में कोई भी इतना नीच नहीं था। "मुझे औसत दर्जे की कोई भी चीज़ नापसंद है," उन्होंने कहा, "बुर्जुआ कॉमेडी उबाऊ होती है। मुझे या तो शास्त्रीय त्रासदी की राजकुमारियाँ चाहिए या फिर व्यापक प्रहसन, आधा-अधूरा नहीं, फ्रेड्रे या लेस साल्टिम्बैंक्स नहीं। लेकिन, चाहे वह कितनी भी बातें करते, दिखावे के इन दो रूपों के बीच संतुलन बिगड़ चुका था। चाहे बुढ़ापे की थकान के कारण हो या सबसे सामान्य यौन संबंध तक कामुकता के विस्तार के कारण, बैरन अब केवल अपने से कमतर लोगों के साथ ही रहते थे। इस प्रकार अनजाने में ही वे अपने उन महान पूर्वजों से उत्तराधिकार स्वीकार कर रहे थे जैसे ड्यूक डी ला रोशेफौकॉल्ड, प्रिंस डी हारकोर्ट, ड्यूक डी बेरी, जिन्हें सेंट-साइमन ने अपने नौकरों के साथ जीवन बिताते हुए दिखाया है, जो उनसे भारी रकम वसूलते थे, इस हद तक कि जब लोग इन महान सज्जनों से मिलने जाते थे तो उन्हें अपने नौकरों के साथ ताश खेलते और शराब पीते देखकर आश्चर्य होता था। "यह मुख्य रूप से," जुपियन ने आगे कहा, "उन्हें ऊबने से बचाने के लिए

है, क्योंकि, आप जानते हैं, बैरन एक महान अरे वाह! अब भी, जब उसके पास यहाँ सब कुछ है जो वह चाहता है, उसे रोमांच के पीछे भागना और खलनायक की भूमिका निभाना ही है। और, चाहे वह कितना भी उदार क्यों न हो, कभी न कभी उसका यह व्यवहार मुसीबत का कारण बन सकता है। अभी कुछ ही दिन पहले एक होटल का शिकारी बैरन द्वारा दिए गए पैसों से डर के मारे लगभग मर ही गया था। सोचो! उसके घर आना, कितनी नासमझी! यह लड़का, जिसे केवल औरतें पसंद थीं, बैरन की बात समझकर बहुत राहत महसूस कर रहा था। बैरन के पैसों के वादों ने लड़के को यह विश्वास दिला दिया कि वह एक जासूस है, और उसे तब तसल्ली मिली जब उसे पता चला कि उससे अपने देश के साथ विश्वासघात करने के लिए नहीं कहा जा रहा है, बल्कि केवल अपने शरीर को सौंपने के लिए कहा जा रहा है, जो शायद नैतिक रूप से ज़्यादा कठिन नहीं है, लेकिन कम खतरनाक और निश्चित रूप से आसान है। जुपियन की बातें सुनते हुए मैंने मन ही मन कहा: "कितनी अफ़सोस की बात है कि एम. डी. चार्लस उपन्यासकार या कवि नहीं हैं, इसलिए नहीं कि वे जो देखते हैं उसका वर्णन करें, बल्कि इच्छा के संबंध में एम. डी. चार्लस जिस मुकाम पर पहुँचे हैं, उससे उनके आसपास विवाद पैदा होते हैं, उन्हें जीवन को गंभीरता से लेने, आनंद को भावनात्मक बनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है, चीजों को विशुद्ध रूप से व्यंग्यात्मक और बाहरी नज़रिए से देखने के कारण स्थिर होने से रोकता है, और उनके भीतर दर्द के एक निरंतर स्रोत को फिर से खोल देता है। लगभग हर बार जब वे पहल करते हैं, तो उन्हें जेल न भी हो तो भी अपमान का खतरा रहता है। बच्चों की शिक्षा नहीं, बल्कि कवियों की शिक्षा चोटों से होती है। अगर एम. डी. चार्लस एक उपन्यासकार होते, तो जुपियन के नियंत्रण वाले घर द्वारा उन्हें दी गई सुरक्षा (हालाँकि पुलिस छापे की संभावना हमेशा बनी रहती थी)

आकस्मिक सड़क मुठभेड़ों से होने वाले जोखिमों को कम करके उनके लिए दुर्भाग्य साबित होती।" लेकिन एम. डी चार्लस कला के क्षेत्र में केवल एक शौकिया व्यक्ति थे, जिन्होंने लेखन का सपना नहीं देखा था और न ही उनमें इसके लिए कोई प्रतिभा थी। “इसके अलावा, मैं आपसे यह स्वीकार करता हूँ,” जुपियन ने आगे कहा, “कि मुझे इस तरह के काम से पैसे कमाने में कोई हिचक नहीं है। मैं आपसे यह छुपा नहीं सकता कि मुझे यह पसंद है, यह मेरी रुचि का है। और क्या उन कामों के लिए वेतन लेना अपराध है जिन्हें हम गलत नहीं मानते? आप मुझसे अधिक शिक्षित हैं और निस्संदेह आप मुझे बताएंगे कि सुकरात ने अपने पाठों के लिए पैसे लेना उचित नहीं समझा था। लेकिन हमारे समय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, डॉक्टर, चित्रकार, नाटककार या थिएटर प्रबंधक ऐसे नहीं होते। यह मत सोचिए कि इस व्यवसाय में केवल निम्न वर्ग के लोगों के साथ ही मेलजोल रखना पड़ता है। यह सच है कि इस तरह के संस्थान का प्रबंधक, एक महान वेश्या की तरह, केवल पुरुषों से ही मिलता है, लेकिन वह ऐसे पुरुषों से मिलता है जो हर तरह से महत्वपूर्ण होते हैं और जो आम तौर पर अपने वर्ग के सबसे परिष्कृत, सबसे संवेदनशील और सबसे मिलनसार लोगों के बराबर होते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस घर को आसानी से एक बौद्धिक केंद्र और एक समाचार एजेंसी में बदला जा सकता है।” लेकिन मैं अब भी एम. डी. चार्लस को लगी चोटों के बारे में सोच रहा था। और सच कहूँ तो, एम. डी. चार्लस को जानने वाला, उसका घमंड, सामाजिक मनोरंजन के प्रति उसकी आसक्ति, उसकी सनक जो आसानी से सबसे नीच और घटिया किस्म के लोगों के प्रति वासना में बदल जाती थी, ये सब देखकर आसानी से समझा जा सकता था कि वह उस विशाल संपत्ति का मालिक होने से खुश था, जो एक नवधनी को अपनी बेटी की शादी एक ड्यूक से करने

और अपने शिकार समारोहों में उच्चाधिकारियों को आमंत्रित करने में सक्षम बनाती है, और उसे एक या शायद कई प्रतिष्ठानों में अपना अधिकार जमाने की अनुमति देती है जहाँ हमेशा युवा पुरुष मौजूद रहते थे जिनके साथ वह मौज-मस्ती करता था। शायद, वास्तव में, इसके लिए उसे दुष्ट होने की आवश्यकता नहीं थी। वह उन कई महान सज्जनों और शाही खानदान के राजकुमारों या ड्यूकों का उत्तराधिकारी था, जिनके बारे में सेंट-साइमन कहते हैं कि वे कभी भी किसी योग्य व्यक्ति से मेलजोल नहीं रखते थे। “इस बीच,” मैंने जुपियन से कहा: “यह घर कुछ बहुत ही अलग है, यह पागलखाने से कहीं अधिक अफरा-तफरी का अड्डा है, क्योंकि यहाँ मौजूद पागलों का पागलपन मंच पर प्रदर्शित किया जाता है और दृश्य रूप से पुनः प्रस्तुत किया जाता है। मुझे लगा, जैसे हज़ार और एक रातों के खलीफा को लगा था, कि मैं एक नाजुक क्षण में एक ऐसे व्यक्ति को बचाने आया हूँ जिसके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा था और हज़ार और एक रातों की एक और कहानी मेरी आँखों के सामने साकार हो गई, जिसमें एक महिला कुत्ते में बदल जाती है और अपना पूर्व रूप वापस पाने के लिए खुद को पिटने देती है।” जुपियन, यह जानकर कि मैंने बैरन को कोड़े खाते देखा था, बहुत चिंतित हो गया। वह एक पल चुप रहा, फिर अचानक, अपनी उसी चतुराई भरी बात से, जो अक्सर मुझे तब प्रभावित करती थी जब वह हमारे घर के आंगन में फ्रांस्वा या मेरा इतने सुंदर शब्दों से अभिवादन करता था: “आप हज़ार और एक रातों की कहानियों की बात कर रहे हैं,” उसने कहा। "मैं एक ऐसी बात जानता हूँ जिसका संबंध उस किताब के शीर्षक से है जो मैंने बैरन के घर पर देखी थी" (वह रस्किन की 'सेसम एंड लिलीज़' के अनुवाद का जिक्र कर रहे थे जो मैंने एम. डी. चार्लस को भेजा था)। "अगर कभी किसी शाम आप चालीस नहीं बल्कि दस चोरों को देखना चाहें, तो बस यहाँ आ जाइए;

और अगर आपको यकीन हो जाए कि मैं वहाँ हूँ, तो बस ऊपर देखिए और अगर मेरी छोटी सी खिड़की खुली हो और बत्ती जल रही हो, तो इसका मतलब है कि मैं वहाँ हूँ और आप अंदर आ सकते हैं; यही मेरा 'सेसम' है। मैं सिर्फ 'सेसम' की बात कर रहा हूँ; जहाँ तक 'लिलीज़' की बात है, अगर आप उन्हें ढूंढ रहे हैं तो मैं आपको कहीं और देखने की सलाह देता हूँ," और कुछ लापरवाही से मुझे नमस्कार करते हुए, क्योंकि एक कुलीन परिवार से संबंध और कुछ नौजवानों का गिरोह, जिन्हें वह एक समुद्री डाकू सरदार की तरह नियंत्रित करते थे, ने उन्हें एक खास तरह की जान-पहचान दे दी थी, उन्होंने मुझसे विदा ली। उनके जाने के तुरंत बाद सायरन की तेज आवाज के साथ ही भारी गोलाबारी शुरू हो गई। यह स्पष्ट था कि एक जर्मन पायलट हमारे सिर के ठीक ऊपर मंडरा रहा था और अचानक एक जोरदार विस्फोट ने साबित कर दिया कि उसने अपना एक बम फेंका था।

कई लोग जो भागना नहीं चाहते थे, जुपियन के एक ही कमरे में जमा हो गए थे। हालाँकि वे एक-दूसरे को नहीं जानते थे, फिर भी वे लगभग एक ही धनी और कुलीन समाज से थे। उनकी शक्ल-सूरत देखकर घृणा होती थी, जिसका कारण निस्संदेह उनकी नीच बुराइयों में लिप्त होना था। उनमें से एक विशालकाय व्यक्ति का चेहरा शराबी की तरह लाल धब्बों से भरा हुआ था। बाद में मुझे पता चला कि पहले तो वह शराबी नहीं था, बल्कि युवाओं को शराब पिलाने में उसे आनंद आता था और बाद में, सेना में भर्ती होने के डर से (हालाँकि वह पचास से अधिक उम्र का लग रहा था), क्योंकि वह बहुत मोटा था, उसने बिना रुके शराब पीना शुरू कर दिया, यहाँ तक कि उसका वजन सौ किलो से अधिक हो गया, जिसके बाद पुरुषों को छूट मिल जाती थी। अब यह धंधा उसका जुनून बन गया था, और चाहे लोग उसे रोकने की कितनी भी कोशिश करें, वह हमेशा शराब

बेचने वाले के पास लौट जाता था। लेकिन जैसे ही वह बोलता, उसकी औसत दर्जे की बुद्धि के बावजूद, कोई भी देख सकता था कि वह काफी पढ़ा-लिखा और सुसंस्कृत व्यक्ति था। एक और युवा, बेहद प्रतिष्ठित दिखने वाला युवक अंदर आया। उसके मामले में, अभी तक बुराई के कोई बाहरी लक्षण नहीं थे, लेकिन उससे भी बुरी बात यह थी कि उसके भीतर बुराई भरी हुई थी। लंबा कद, आकर्षक चेहरा, उसकी बोलने की शैली उसके शराबी पड़ोसी से कहीं अधिक बुद्धिमान होने का संकेत देती थी, वास्तव में, बिना किसी अतिशयोक्ति के, बहुत ही असाधारण। लेकिन वह जो कुछ भी कहता, उसके साथ चेहरे के भाव भी अलग ही होते थे। हालाँकि उसके पास मानवीय भावों का पूरा भंडार था, फिर भी ऐसा लगता था मानो वह किसी दूसरी दुनिया में रहता हो, क्योंकि वह उनका गलत क्रम में उपयोग करता था और ऐसा लगता था कि वह जो कुछ कह रहा है या सुन रहा है, उससे कोई संबंध न रखते हुए बेतरतीब ढंग से मुस्कान और निगाहें बिखेर रहा है। मैं उसके भले के लिए आशा करता हूँ, यदि जैसा कि संभव लगता है, वह अभी भी जीवित है, तो वह किसी शारीरिक बीमारी का शिकार नहीं, बल्कि किसी क्षणिक विकार का शिकार हुआ हो। शायद, यदि उन लोगों को अपने विजिटिंग कार्ड दिखाने के लिए कहा जाता, तो यह देखकर आश्चर्य होता कि वे सभी समाज के उच्च वर्ग से थे। लेकिन हर तरह की बुराई, और सबसे बड़ी बुराई, इच्छाशक्ति की कमी जो किसी पुरुष को इसका विरोध करने से रोकती है, उन्हें वहाँ इकट्ठा कर देती थी। यह सच है कि वे अलग-अलग कमरों में इकट्ठा होते थे, लेकिन मुझे बताया गया कि हर शाम ऐसा होता था, यहाँ तक कि अगर समाज की महिलाएँ उनके नाम जानती भी थीं, तो धीरे-धीरे उनके चेहरे भूलती जा रही थीं। उन्हें निमंत्रण तो मिलते थे, लेकिन आदत उन्हें हमेशा उस बदनाम अड्डे पर वापस ले आती थी। वे इसे अपने आप से

छिपाती नहीं थीं, क्योंकि इस मामले में वे उन छोटे-मोटे शिकारी, कामगारों आदि से अलग थीं, जो उनकी सेवा करते थे। और कई स्पष्ट कारणों के अलावा, इसे निम्नलिखित कारण से भी समझाया जा सकता है। किसी व्यावसायिक कर्मचारी या नौकर का वहाँ जाना, किसी सम्मानित महिला के गुप्त ठिकाने पर जाने जैसा था। उनमें से कुछ जो वहाँ जा चुकी थीं, उन्होंने फिर कभी ऐसा न करने का फैसला किया और जुपियन ने खुद उनकी प्रतिष्ठा बचाने या प्रतिस्पर्धा को रोकने के लिए झूठ बोलकर कहा: "ओह, नहीं, वह मेरे यहाँ नहीं आता और न ही आना चाहेगा।" समाज में पुरुषों के लिए इसका महत्व कम है, क्योंकि समाज के अन्य लोग ऐसी जगहों पर नहीं जाते हैं और न ही उनके बारे में कुछ जानते हैं और न ही दूसरों के मामलों में दखल देते हैं।

अलार्म बजते ही मैं जुपियन के घर से निकल चुका था। सड़कें पूरी तरह अंधेरी हो चुकी थीं। कभी-कभार ही कोई दुश्मन का विमान, जो काफी नीचे उड़ रहा होता, उस जगह पर रोशनी डालता जहाँ वह बम गिराने वाला होता। मैं रास्ता नहीं ढूंढ पा रहा था और उस दिन की याद आ गई जब ला रास्पेलियर जाते समय मेरी मुलाकात एक ऐसे पायलट से हुई थी जो मानो किसी देवता की तरह अपने घोड़े को लगाम कस रहा हो। मैं सोच रहा था कि इस बार मुठभेड़ का अंजाम अलग होगा, कि बुराई का देवता मुझे मार डालेगा। मैं एक जलप्रपात से भागते यात्री की तरह तेजी से कदम बढ़ा रहा था, फिर भी मैं अंधेरी जगहों के चक्कर में घूमता रहा जहाँ से निकलना नामुमकिन था। आखिरकार आग की लपटों ने मुझे रोशन किया और तोपों की लगातार गड़गड़ाहट के बीच मैं अपना रास्ता फिर से ढूंढ पाया। लेकिन मेरा ध्यान कहीं और चला गया। मैंने जुपियन के घर के बारे में सोचा, जो शायद अब राख में तब्दील हो चुका होगा, क्योंकि एक बम मेरे ठीक पास गिरा था, ठीक उसी समय जब मैं उस घर

से बाहर आ रहा था जिस पर एम. डी चार्लस ने शायद भविष्यवाणी करते हुए "सोडोम" लिखा होगा, जैसा कि पोम्पेई के एक अज्ञात निवासी ने उतनी ही दूरदर्शिता से किया था, जब संभवतः उस तबाही की प्रस्तावना के रूप में ज्वालामुखी विस्फोट शुरू हुआ था। लेकिन जो लोग अपनी वासनाओं को पूरा करने के लिए वहाँ आए थे, उनके लिए सायरन या गोथा का क्या महत्व था? हम कभी भी प्रकृति के उस ढांचे के बारे में नहीं सोचते जो हमारे जुनून को घेरे रहता है। समुद्र में तूफान उमड़ता है, जहाज हर तरफ हिलता-डुलता है, तेज हवाओं से हिमस्खलन गिरते हैं और ज़्यादा से ज़्यादा हम खुद को एक पल के लिए रुकने देते हैं, उस विशाल दृश्य से होने वाली असुविधा को दूर करने के लिए, जिसमें हम और जिस मानव शरीर की हम इच्छा करते हैं, दोनों ही सबसे छोटे परमाणु हैं। बमों के चेतावनी भरे सायरन ने जुपियन के घर के निवासियों को उतना ही कम परेशान किया जितना कि एक हिमखंड करता। इससे भी बढ़कर, शारीरिक खतरे की आशंका ने उन्हें उस भय से मुक्त कर दिया, जिससे वे लंबे समय से अस्वस्थ रूप से ग्रस्त थे। यह मानना गलत है कि भय का स्तर उन खतरों के स्तर के बराबर होता है जो उन्हें प्रेरित करते हैं। कोई व्यक्ति अनिद्रा से डर सकता है, लेकिन द्वंद्वयुद्ध से नहीं; चूहे से डर सकता है, लेकिन शेर से नहीं। कुछ घंटों के लिए पुलिस केवल आम जनता के जीवन को लेकर चिंतित रहती है, जो एक मामूली मामला होता है, क्योंकि इससे उनकी प्रतिष्ठा को ठेस नहीं पहुँचती।

कुछ नियमित आगंतुक, अपनी नैतिक स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करते हुए, सड़कों पर अचानक छाए अंधेरे से और भी अधिक आकर्षित हो गए। इनमें से कुछ पोम्पेईवासी, जिन पर स्वर्ग की अग्नि पहले से ही बरस रही थी, मेट्रो के उन गलियारों में उतर गए जो तहखानों की तरह अँधेरे थे। वे जानते थे कि वे वहाँ अकेले नहीं होंगे। और वह अँधेरा, जो हर चीज़ को

एक नए तत्व में नहला देता है, कुछ लोगों के लिए एक अप्रतिरोध्य रूप से लुभावना प्रभाव डालता है, जिससे वासना का पहला चरण समाप्त हो जाता है और वे बिना किसी विलंब के स्नेह के उस क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं, जिसके लिए आमतौर पर पूर्वापेक्षाओं की आवश्यकता होती है। चाहे कामुक इरादा किसी स्त्री या पुरुष की ओर निर्देशित हो, यह मानते हुए कि पहुँच आसान है और दिन के उजाले में ड्राइंग रूम में चलने वाली भावुकता को शाम को भी, चाहे गली कितनी भी अंधेरी क्यों न हो, दरकिनार किया जा सकता है, कम से कम एक भूमिका तो होनी ही चाहिए जब केवल आँखें ही मदिरा को निहार सकें, जब राहगीरों या यहाँ तक कि पीछा किए जा रहे व्यक्ति का डर पीछा करने वाले को दृष्टि और वाणी से आगे बढ़ने से रोक दे। लेकिन अंधेरे में सारी चालें धरी रह जाती हैं, हाथ, होंठ, शरीर, सब कुछ तुरंत सक्रिय हो जाता है। फिर अंधेरे का बहाना और उससे उत्पन्न होने वाली गलतियाँ, यदि बुरा स्वागत मिले, तो बहाना बन जाता है, लेकिन इसके विपरीत, यदि शरीर तुरंत प्रतिक्रिया करता है और पीछे हटने के बजाय करीब आता है, तो यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस स्त्री या पुरुष से संपर्क किया गया है वह भी उतना ही कामुक और दुष्ट है, और बिना आँखों से वासना किए और बिना अनुमति मांगे फल को चखने का अतिरिक्त रोमांच मिलता है। और फिर भी अंधेरा बना रहा। इस नए माहौल में डूबे हुए जुपियन के नियमित आगंतुक खुद को ऐसे यात्रियों के रूप में कल्पना करते थे जो ज्वार-भाटे या ग्रहण जैसी प्राकृतिक घटना के साक्षी बन रहे हों। पूर्वनिर्धारित मौज-मस्ती में लिप्त होने के बजाय, वे अज्ञात में आकस्मिक रोमांच की तलाश में थे और बमों की गड़गड़ाहट के बीच—मानो किसी पोम्पेई के वेश्यालय में—अंधेरे तहखानों में गुप्त अनुष्ठान कर रहे थे। जुपियन के यहाँ मौजूद पोम्पेई की पेंटिंग्स इन घटनाओं के लिए उपयुक्त थीं, क्योंकि वे फ्रांसीसी

क्रांति के अंत और डायरेक्टोइरे के लगभग समान काल की याद दिलाती थीं, जो अब शुरू हो रहा था। शांति की उम्मीद में, पुलिस नियमों का खुलेआम उल्लंघन न करने के लिए अंधेरे में आयोजित नए नृत्य रात में दंगे कर रहे थे। और इसके साथ ही, कुछ कलात्मक विचार, जो युद्ध के शुरुआती वर्षों की तुलना में कम जर्मन-विरोधी थे, दमित दिमागों को विस्तार देने में सक्षम बना रहे थे, हालांकि उन्हें व्यक्त करने का साहस करने वाले व्यक्ति को नागरिक सद्गुण का प्रमाण पत्र चाहिए था। एक प्रोफेसर ने शिलर पर एक उल्लेखनीय पुस्तक लिखी, जिस पर अखबारों ने ध्यान दिया। लेकिन लेखक का नाम लेने से पहले, प्रकाशकों ने पुस्तक पर एक मुद्रण लाइसेंस की तरह एक बयान लिख दिया, जिसमें कहा गया था कि वह मार्ने और वर्दुन की लड़ाई में शामिल थे, उनका पाँच बार उल्लेख किया गया था और उनके दो पुत्र मारे गए थे। इसके बाद, शिलर पर लेखक के काम की स्पष्टता और गहराई की खूब प्रशंसा की गई, और यह कहा गया कि शिलर को महान तभी कहा जा सकता है जब उन्हें एक महान जर्मन के बजाय एक महान जर्मन के रूप में संदर्भित किया जाए, और इस प्रकार लेख सेंसर द्वारा पारित कर दिए गए। घर पहुँचते ही मैं इस बात पर विचार कर रहा था कि कैसे हमारी चेतना कितनी जल्दी हमारी आदतों के साथ सहयोग करना बंद कर देती है, उन्हें अपने आप विकसित होने देती है और उन पर आगे ध्यान नहीं देती, और हम कितने आश्चर्यचकित होते हैं जब हम किसी व्यक्ति का मूल्यांकन केवल बाहरी दिखावे के आधार पर करते हैं, मानो वे उसे पूरी तरह से परिभाषित करते हों, जबकि उस व्यक्ति का नैतिक या बौद्धिक मूल्य पूरी तरह से अलग दिशा में विकसित हो सकता है। स्पष्टतः, यह परवरिश की खामी या परवरिश की पूर्ण कमी, साथ ही सबसे आसान तरीके से पैसा कमाने की प्राथमिकता (हो सकता है कि कई तरह के काम आसान हों, लेकिन क्या

एक बीमार व्यक्ति अनेक अभावों और उपायों से कहीं अधिक पीड़ादायक जीवन नहीं गढ़ लेता, जबकि वह अक्सर अपेक्षाकृत मामूली बीमारी से ही अपना बचाव करने का प्रयास करता है?) या कम से कम, सबसे कम मेहनत वाले तरीके से पैसा कमाने की चाहत का परिणाम था, जिसके कारण इन युवाओं ने, एक तरह से कहें तो, पूरी मासूमियत में और कम वेतन पर ऐसे काम किए जिनसे उन्हें कोई आनंद नहीं मिला और जिनसे उन्हें शुरू में घोर घृणा हुई होगी। इसलिए कोई उन्हें मूल रूप से भ्रष्ट मान सकता है, लेकिन वे न केवल युद्ध में अद्भुत सैनिक थे, बल्कि बेहद बहादुर भी थे, और नागरिक जीवन में भले ही सभ्य न हों, लेकिन अक्सर अच्छे हृदय वाले लोग थे। वे अपने जीवन में नैतिक या अनैतिक का बोध करना छोड़ चुके थे क्योंकि यह उनके परिवेश का ही स्वरूप था। इस प्रकार, प्राचीन इतिहास के कुछ कालखंडों का अध्ययन करते समय हम कभी-कभी यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि व्यक्तिगत रूप से अच्छे लोग भी बिना किसी संकोच के सामूहिक हत्याओं और मानव बलि में भाग लेते थे, जो शायद उन्हें पूरी तरह से स्वाभाविक लगता था। जो व्यक्ति दो हजार वर्ष बाद हमारे काल का इतिहास पढ़ेगा, उसे भी ऐसा ही प्रतीत होगा कि कोमल और शुद्ध अंतरात्मा वाले लोगों को एक ऐसे जीवंत वातावरण में डाल दिया गया था जिसमें वे स्वयं को ढाल लेते थे, यद्यपि तब यह उतना ही भयावह और हानिकारक प्रतीत होगा। और इससे भी बढ़कर, मैंने जुपियन से अधिक बुद्धि और संवेदनशीलता से संपन्न किसी व्यक्ति को नहीं जाना, क्योंकि उनके विमर्श की बौद्धिक संरचना बनाने वाले ये आकर्षक गुण उन्हें स्कूली शिक्षा या विश्वविद्यालय की संस्कृति से प्राप्त नहीं हुए थे, जो उन्हें असाधारण बना सकते थे, जबकि समाज के कई युवा इनसे कोई लाभ नहीं उठा पाते। यह उनकी सहज, जन्मजात समझ, उनका स्वाभाविक स्वाद था जिसने उन्हें अपने खाली समय में

कभी-कभार किए गए असंबद्ध और अनियंत्रित पठन से अपनी वाक्पटुता को इतनी सटीकता से संजोने में सक्षम बनाया कि भाषा की सभी समरूपताएँ निखर कर सामने आ गईं और उनमें अपनी सुंदरता प्रकट हुई। फिर भी, जिस व्यवसाय में वह लगा हुआ था, उसे उचित ही, सबसे अधिक लाभदायक होने के बावजूद, सबसे निम्न स्तर का व्यवसाय माना जा सकता था। जहाँ तक एम. डी चार्लस की बात है, भले ही वह "लोगों की बातों" की कितनी ही अवहेलना करता हो, फिर भी आत्मसम्मान और आत्म-सम्मान की भावना ने उसे उन कामुक भोग-विलास से क्यों नहीं रोका, जिनका एकमात्र बहाना पूर्ण पागलपन था? ऐसा केवल इसलिए हो सकता है कि उसके मामले में, जुपियन की तरह, नैतिकता को कार्यों की पूरी व्यवस्था से अलग करने की आदत (जो कि एक न्यायाधीश, कभी-कभी एक राजनेता और अन्य पदों पर भी होती है) इतनी पुरानी हो गई थी कि अब उसके विवेक या नैतिक भावना की आवश्यकता न होने के कारण, यह दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई, यहाँ तक कि उस बिंदु पर पहुँच गई जहाँ इस सहमति देने वाले प्रोमेथियस ने खुद को शुद्ध पदार्थ की चट्टान पर बलपूर्वक कील ठोकने दिया। निश्चित रूप से मैंने महसूस किया कि एम. डी चार्लस की बीमारी में एक नया चरण प्रकट हो रहा था, जो मेरे द्वारा पहली बार देखे जाने और चरण-दर-चरण प्रकट होते देखने के बाद से लगातार बढ़ती ही जा रही थी। बेचारे बैरन अब अंतिम समय, यानी मृत्यु से ज़्यादा दूर नहीं थे, अगर श्रीमती वर्दुरिन की भविष्यवाणियों और आशाओं के अनुसार, उन्हें ज़हर न दिया गया हो, जो उनकी उम्र में उनकी मृत्यु को और तेज़ कर सकता था। फिर भी, शायद मैंने 'शुद्ध पदार्थ की चट्टान' कहकर एक गलत अभिव्यक्ति का प्रयोग किया। संभव है कि उस शुद्ध पदार्थ में थोड़ी सी बुद्धि अभी भी बची हो। यह पागल, सब कुछ के बावजूद, जानता था कि वह पागल है, कि वह पागलपन के ऐसे क्षणों का

शिकार है, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि उसे पीटने वाला व्यक्ति युद्ध-खेलों में उन छोटे लड़कों से ज़्यादा दुष्ट नहीं था जो यह तय करने के लिए लॉटरी निकालते हैं कि उनमें से कौन प्रशियाई की भूमिका निभाएगा और बाकी सभी सच्चे देशभक्ति के जोश और दिखावटी नफरत में किस पर टूट पड़ते हैं। पागलपन का शिकार, जिसमें फिर भी एम. डी चार्लस के व्यक्तित्व का कुछ अंश समाहित था; क्योंकि अपनी विकृतियों में भी, मानवीय स्वभाव (जैसे हमारे प्रेम और हमारी यात्राओं में) सत्य की खोज के माध्यम से आस्था की आवश्यकता को प्रकट करता है। जब मैंने फ्रांस्वा को मिलान के एक चर्च के बारे में बताया—एक ऐसा शहर जिसे वह शायद कभी नहीं देख पाएगी—या रीम्स के कैथेड्रल के बारे में—यहाँ तक कि अर्रास के कैथेड्रल के बारे में भी!—जिन्हें वह कभी नहीं देख पाएगी क्योंकि वे लगभग नष्ट हो चुके थे, तो उसने उन धनी लोगों से ईर्ष्या की जो ऐसे खजानों को देखने में सक्षम थे और उदासी भरे पछतावे के साथ रो पड़ी: "आह, यह कितना अद्भुत होगा!" फिर भी, जो इतने वर्षों तक पेरिस में रही थी, उसे कभी नोट्रे डेम को देखने की जिज्ञासा नहीं हुई! ऐसा इसलिए था क्योंकि नोट्रे डेम पेरिस का हिस्सा था, उस शहर का जहाँ उसका दैनिक जीवन व्यतीत होता था और जहाँ परिणामस्वरूप हमारी बूढ़ी नौकरानी के लिए (जैसा कि मेरे लिए भी होता अगर वास्तुकला के अध्ययन ने कुछ मायनों में कॉम्ब्रे की प्रवृत्ति को न बदला होता) अपने सपनों की वस्तुओं को समझना मुश्किल था। जिनसे हम प्यार करते हैं, उनके मन में एक ऐसा सपना छिपा होता है जिसे हम हमेशा समझ नहीं पाते, लेकिन जिसका हम पीछा करते हैं। बर्गोट और स्वान में मेरे विश्वास ने ही मुझे गिल्बर्ट से प्यार करवाया, गिल्बर्ट द बैड में मेरे विश्वास ने ही मुझे मैडम डी गुएरमांटेस के प्यार में डाल दिया। और अल्बर्टीन के लिए मेरे प्यार में कितना विशाल सागर समाया हुआ था,

सबसे दुखद, सबसे ईर्ष्यालु और सबसे निजी प्यार। उस एक प्राणी के प्रति प्रेम में, जिसके प्रति हमारा पूरा अस्तित्व उमड़ पड़ता है, कुछ न कुछ विकृति जरूर होती है। क्या शरीर के रोग, कम से कम तंत्रिका तंत्र से जुड़े रोग, किसी न किसी रूप में हमारे अंगों, हमारी अभिव्यक्ति द्वारा उत्पन्न विशेष रुचियां या विशेष भय नहीं होते, जो इस प्रकार कुछ खास मौसमों के प्रति ऐसा भय पैदा कर देते हैं जो उतना ही अस्पष्ट और जिद्दी होता है जितना कि कुछ पुरुषों का चश्मा पहनने वाली महिला या सर्कस के सवारों के प्रति आकर्षण? कौन कह सकता है कि सर्कस के सवार को बार-बार देखकर जागृत होने वाली वह इच्छा किस स्थायी और विचित्र सपने से जुड़ी है? यह उतना ही अचेतन और रहस्यमय है जितना कि, उदाहरण के लिए, एक विशेष शहर का प्रभाव, जो देखने में अन्य शहरों के समान है, लेकिन जहां अस्थमा से जीवन भर पीड़ित व्यक्ति पहली बार खुलकर सांस ले पाता है।

विकृतियाँ उन जुनूनों की तरह होती हैं जिन पर एक विकृत प्रवृत्ति हावी हो जाती है, फिर भी, उनमें से सबसे विक्षिप्त अवस्था में भी प्रेम को पहचाना जा सकता है। एम. डी चार्लस का यह आग्रह कि उनके पैरों और हाथों को बांधने वाली जंजीरें प्रमाणित मजबूती की होनी चाहिए, न्याय के कटघरे में मुकदमा चलाने की उनकी मांग और, जैसा कि जुपियन ने मुझे बताया, क्रूर कृत्यों के लिए नाविकों से भी सबूत प्राप्त करना बड़ी मुश्किल थी (जहाजों पर, जहाँ अनुशासन सबसे सख्त होता है, वहाँ भी उनके द्वारा दी जाने वाली सजा को समाप्त कर दिया गया था)। इन सबके मूल में एम. डी चार्लस का पौरुष का निरंतर सपना था, जिसे वह जरूरत पड़ने पर क्रूर कृत्यों से सिद्ध करते थे, और उन सभी प्रकाशों को, जिनकी झलकियाँ उनके भीतर, यद्यपि हमें दिखाई नहीं देतीं, उन्होंने न्यायिक और सामंती यातनाओं पर डालीं, जिन्होंने मध्य युग से रंगी उनकी कल्पना को

सुशोभित किया। यह भावना उसके मन में हर बार तब आती थी जब वह जुपियन से कहता था: "आज शाम तो वैसे भी कोई अलार्म नहीं बजेगा, क्योंकि मैं पहले से ही खुद को स्वर्ग की आग में राख होते हुए देख सकता हूँ, जैसे सोडोम का कोई निवासी।" और वह गोथाओं से डरने का नाटक करता था, इसलिए नहीं कि उसे सचमुच उनसे ज़रा भी डर था, बल्कि इसलिए कि सायरन बजते ही उसे मेट्रोपॉलिटन होटल में शरण लेने का बहाना मिल जाए, जहाँ उसे मध्य युग में दंडवत प्रणाम और भूमिगत कोठरियों के धुंधले सपनों से जुड़ी आधी रात की लड़ाइयों से रोमांच मिलने की उम्मीद थी। अंततः जंजीरों में जकड़े जाने और पीटे जाने की उसकी इच्छा, अपनी सारी कुरूपता के साथ, एक ऐसे सपने के रूप में सामने आई जो दूसरों की वेनिस जाने या नाचने वाली लड़कियों को रखने की इच्छा जितनी ही काव्यात्मक थी। और एम. डी चार्लस इस सपने से मिले वास्तविकता के भ्रम में इतना खो गया था कि जुपियन को कमरा नंबर 43 में रखा लकड़ी का पलंग बेचकर उसकी जगह लोहे का पलंग लगाना पड़ा, जो जंजीरों के साथ ज़्यादा अच्छा लगता था।

आखिरकार जब मैं घर पहुँचा तो मुझे लाल रंग की सीटी सुनाई दी। एक छोटे लड़के ने दमकलकर्मियों के आने की सूचना दी और मैंने फ्रांस्वा को बटलर के साथ तहखाने से ऊपर आते देखा। उसने मुझे मरा हुआ समझ लिया था। उसने मुझे बताया कि सेंट-लूप ने यह देखने के लिए आने का बहाना बनाया था कि कहीं सुबह आते समय उसका वीरता चिह्न गिर तो नहीं गया। उसे अभी-अभी पता चला था कि वह उसे खो चुका है और अगले दिन अपनी रेजिमेंट में वापस जाना था, इसलिए वह हर हाल में यह देखना चाहता था कि वह मेरे घर पर तो नहीं है। उसने और फ्रांस्वा ने हर जगह खोजा, लेकिन कुछ नहीं मिला। फ्रांस्वा का मानना था कि उसने मुझसे मिलने आने से पहले ही उसे खो दिया होगा, क्योंकि उसने कहा

कि जब उसने उसे देखा था तो उसे लगभग पक्का यकीन था कि उसने उसे नहीं पहना था; इसमें वह गलत थी, जो गवाहों और यादों के महत्व को दर्शाता है। मुझे तुरंत उनके द्वारा उसके बारे में बात करने के उदासीन तरीके से समझ आ गया कि सेंट-लूप ने फ्रांस्वा और बटलर पर अच्छा प्रभाव नहीं डाला था। सेंट-लूप द्वारा खतरे को न्योता देने के प्रयास, बटलर के बेटे और फ्रांस्वा के भतीजे द्वारा खुद को बचाने के लिए किए गए प्रयासों के बिल्कुल विपरीत थे, लेकिन अपने दृष्टिकोण से देखें तो फ्रांस्वा और बटलर इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते थे। उन्हें पूरा यकीन था कि अमीर लोग हमेशा सुरक्षित रहते हैं। यहाँ तक कि अगर उन्हें रॉबर्ट की वीरता के बारे में सच्चाई पता भी होती, तो भी वे उससे प्रभावित नहीं होते। उन्होंने कभी "बोशे" (जर्मनों) की बात नहीं की, उन्होंने जर्मनों की बहादुरी की प्रशंसा की, उन्होंने पहले दिन से ही जीत हासिल करने में हमारी विफलता का कारण राजद्रोह नहीं बताया। यही वे सुनना चाहते थे और यही वे साहस की निशानी मानते। इसलिए, जब वे क्रॉस की तलाश जारी रखे हुए थे, तब मुझे, जिसे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि वह क्रॉस कहाँ खो गया था, रॉबर्ट के विषय पर उनकी उदासीनता साफ दिखी। हालाँकि सेंट-लूप उस शाम अस्पष्ट तरीके से अपना मनोरंजन कर रहे थे, लेकिन यह केवल मोरेल की खबर की प्रतीक्षा करते हुए था; उसे मोरेल से दोबारा मिलने की तीव्र इच्छा हो रही थी, और उसने अपने सभी संपर्कों का इस्तेमाल करके यह पता लगाने की कोशिश की कि मोरेल किस सेना में है, यह सोचकर कि वह भर्ती हो गया होगा, लेकिन अब तक उसे केवल विरोधाभासी जवाब ही मिले थे। मैंने फ्रांस्वा और बटलर को सोने की सलाह दी, लेकिन बटलर को फ्रांस्वा को छोड़ने की कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि युद्ध के कारण उसे ननों के निष्कासन और ड्रेफस मामले के बारे में बताने से भी ज़्यादा असरदार तरीका मिल

गया था। उस शाम और पेरिस में बिताए समय के दौरान जब भी मैं उनके पास होता, मैंने बटलर को बेचारी, डरी हुई फ्रांस्वा से कहते सुना: "वे जल्दी में नहीं हैं, बिल्कुल नहीं; वे पके हुए नाशपाती का इंतज़ार कर रहे हैं, जिस दिन वे पेरिस पर कब्ज़ा करेंगे, वे कोई दया नहीं दिखाएंगे।" "हे भगवान! धन्य वर्जिन मैरी!" फ्रांस्वा चिल्लाई, "क्या उनके लिए बेचारे बेल्जियम को जीतना ही काफी नहीं है? उसने अपने 'आक्रमण' के समय बहुत कष्ट सहा है।" "बेल्जियम, फ्रांस्वा! अरे! बेल्जियम के साथ उन्होंने जो किया, वो तो यहाँ करने वाले अत्याचारों के सामने कुछ भी नहीं है।" युद्ध ने आम बोलचाल में कई नए मुहावरे ला दिए थे, जिन्हें वे अखबारों में पढ़कर ही जानते थे, उच्चारण नहीं कर पाते थे। बटलर ने आगे कहा, "देखो, फ्रांस्वा, वे पहले से भी कहीं ज़्यादा भयानक 'एनवर्गुर' हमले की तैयारी कर रहे हैं।" विरोध में, शायद फ्रांस्वा पर दया करके या समझदारी से नहीं, बल्कि व्याकरण के लिहाज़ से, मैंने उन्हें बताया कि इस शब्द का सही उच्चारण 'एनवर्गुर' है, लेकिन मेरी कोशिशों से बस यही हुआ कि जब भी मैं रसोई में जाता, फ्रांस्वा उस भयानक शब्द को दोहराती रहती। हालांकि बटलर को अपने साथी नौकर को डराने में बहुत मज़ा आता था, लेकिन वह अपने मालिक को यह दिखाने में भी उतना ही प्रसन्न था कि वह सेंट आंद्रे-डेस-चैंप्स के क्रम का एक अच्छा फ्रांसीसी है और मानवाधिकारों की घोषणा के बाद से उसे पूर्ण स्वतंत्रता के साथ एनवरज्यूर बोलने का विशेषाधिकार प्राप्त है और वह ऐसे किसी भी मामले पर आदेश स्वीकार नहीं करता जिसका उसकी सेवा से कोई लेना-देना नहीं है और जिसके संबंध में क्रांति के परिणामस्वरूप किसी को भी उसे सुधारने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि वह मेरे बराबर है। इसलिए, मुझे फ्रांस्वा को एक बड़े एनवरज्यूर ऑपरेशन के बारे में इस ज़िद के साथ बात करते हुए सुनकर चिढ़ हुई, जिसका उद्देश्य मुझे यह

साबित करना था कि वह उच्चारण वास्तव में अज्ञानता का नहीं बल्कि सोच-समझकर लिए गए दृढ़ संकल्प का था। बटलर ने सरकार और अखबारों के लिए संदेह भरे अंदाज़ में "वे" शब्द का इस्तेमाल किया: "वे जर्मनों के नुकसान की बात करते हैं, हमारे नुकसान की नहीं, जो कि दस गुना ज़्यादा लगता है। वे कहते हैं कि वे हार मानने वाले हैं, उनके पास खाने को कुछ नहीं है। मेरा मानना है कि उनके पास हमसे सौ गुना ज़्यादा खाने को है। यह सब ठीक है, लेकिन उन्हें हमें इस तरह धोखा देने का कोई हक नहीं है। अगर उनके पास खाने को कुछ नहीं होता, तो वे उस दिन की तरह नहीं लड़ पाते जब उन्होंने बीस साल से कम उम्र के एक लाख नौजवानों को मार डाला था।" इस तरह वह लगातार जर्मनों की जीत को बढ़ा-चढ़ाकर बताता रहा, जैसा कि वह पहले कट्टरपंथियों की जीत को बताता था, और उनकी क्रूरता की कहानियाँ सुनाता रहा ताकि दुश्मन की जीत फ्रांस्वा के लिए और भी दर्दनाक लगे, जो बार-बार चिल्लाती रही: "देवदूतों की पवित्र माँ! ईश्वर की पवित्र माँ!" कभी-कभी वह उसे दूसरे तरीके से भी परेशान करने की कोशिश करता, जैसे कहता: "वैसे भी, हम उनसे बेहतर नहीं हैं। ग्रीस में हम जो कर रहे हैं, वह बेल्जियम में उनके किए से बेहतर नहीं है। तुम देखोगी, पूरी दुनिया हमारे खिलाफ होगी और हमें सबसे लड़ना होगा," जबकि वास्तव में सच्चाई इसके ठीक विपरीत थी। जब खबरें अच्छी होतीं, तो वह फ्रांस्वा से बदला लेने के लिए उसे यकीन दिलाता कि युद्ध पैंतीस साल तक चलेगा और अगर संयोग से शांति हो भी गई, तो वह कुछ महीनों से ज्यादा नहीं टिकेगी और उसके बाद ऐसे युद्ध होंगे जिनके सामने आज के युद्ध बच्चों का खेल लगेंगे और उनके बाद फ्रांस का कुछ भी नहीं बचेगा। मित्र देशों की जीत भले ही तुरंत न हो, लेकिन कम से कम निश्चित लग रही थी, और दुर्भाग्य से यह मानना पड़ेगा कि इससे बटलर नाखुश था। क्योंकि,

विश्वयुद्ध और उसके बाद की घटनाओं को फ्रांस्वा के विरुद्ध अपने अभियान से जोड़कर देखने के कारण (जिसे वह फिर भी पसंद करता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई उस व्यक्ति को पसंद करता है जिसे वह रोज़ डोमिनोज़ में हराकर नाराज़ करता है), उसके लिए जीत का अर्थ फ्रांस्वा से होने वाली पहली बातचीत से था, जब वह यह सुनकर चिढ़ जाएगा: "आखिरकार यह सब खत्म हो गया, और उन्हें हमें 71 में दिए गए से कहीं अधिक देना होगा।" वास्तव में, वह हमेशा मानता था कि अंत में ऐसा ही होगा, क्योंकि एक अवचेतन देशभक्ति ने उसे यह सोचने पर मजबूर कर दिया था, जैसे सभी फ्रांसीसी, जो मेरी तरह ही एक भ्रम के शिकार थे, जब से मैं बीमार था, कि मेरी तरह ही कल ही जीत आने वाली है। उसने फ्रांस्वा पर यह कहकर बढ़त हासिल कर ली कि भले ही जीत मिल जाए, लेकिन उसका दिल इससे छलक उठेगा, क्योंकि इसके तुरंत बाद एक क्रांति और फिर आक्रमण होगा। "आह! वो खूनी पुराना युद्ध, बोशे (जर्मन सैनिक) तो उससे जल्दी ही उबर जाएँगे! अरे, फ्रांस्वा! उन्होंने तो इससे करोड़ों कमा लिए हैं। लेकिन ये मत सोचो कि वो हमें एक पैसा भी देंगे। हो सकता है वो ये बात अखबारों में छाप दें," उन्होंने सावधानी बरतते हुए और एहतियात के तौर पर आगे कहा, "ताकि लोग चुप रहें, जैसे वो तीन साल से कहते आ रहे हैं कि युद्ध कल ही खत्म हो जाएगा। मुझे समझ नहीं आता कि लोग इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं कि इस पर विश्वास कर लें।" फ्रांस्वा उसकी बातों से और भी चिंतित हो गई क्योंकि वास्तव में उसने बटलर की अपेक्षा आशावादियों पर विश्वास किया था और देखा था कि युद्ध, जो "गरीब बेल्जियम पर आक्रमण" के बावजूद दो सप्ताह में समाप्त होने वाला था, अनंत काल तक चल रहा था, कोई प्रगति नहीं हो रही थी, मोर्चों पर गतिरोध की एक ऐसी घटना थी जिसे वह समझ नहीं पा रही थी, और उसके अनगिनत धर्मपुत्रों में से एक, जिसे वह हमसे

प्राप्त हर चीज देती थी, ने उसे बताया था कि यह, वह और अन्य बातें जनता से छिपाई जा रही हैं। अंत में बटलर ने कहा, "यह सब कामगार वर्ग पर पड़ेगा, और वे तुम्हारा खेत तुमसे छीन लेंगे, फ्रांस्वा।" "हे भगवान!" लेकिन उसने निकट की विपत्तियों को प्राथमिकता दी और अखबारों को पढ़ने में मग्न रहा, फ्रांस्वा की हार की घोषणा की उम्मीद में, और ईस्टर अंडे जैसी खबरों का इंतजार करता रहा, जो फ्रांस्वा को डराने के लिए काफी बुरी हों, बिना उसे आर्थिक नुकसान पहुंचाए। इस प्रकार, ज़ेपेलिन के हमले ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया क्योंकि वे फ्रांस्वा को तहखाने में छिपते हुए देख सकते थे और उन्हें पूरा विश्वास था कि पेरिस जैसे इतने बड़े शहर में बम सिर्फ हमारे घर पर नहीं गिरेंगे। फिर फ्रांस्वा ने अपने कॉम्ब्रे वाले शांतिवाद को फिर से अपनाना शुरू कर दिया। उन्होंने तो "जर्मन अत्याचारों" पर भी संदेह करना शुरू कर दिया। "युद्ध की शुरुआत में उन्होंने हमें बताया कि जर्मन हत्यारे, लुटेरे, आम डाकू थे—बोचेस।" (अगर उन्होंने बोचेस में कई 'बी' लगाए थे, तो इसलिए क्योंकि जर्मनों पर हत्यारा होने का आरोप लगाना तो तर्कसंगत लग रहा था, लेकिन उन्हें बोचेस कहना लगभग असंभव सा लग रहा था)। फिर भी, यह समझना थोड़ा मुश्किल था कि फ्रांस्वा बोचे शब्द को किस रहस्यमय और भयानक अर्थ से जोड़ रही थी, क्योंकि वह युद्ध की शुरुआत की बात कर रही थी और इस शब्द का उच्चारण इतने संदेह के साथ कर रही थी। जर्मनों के अपराधी होने का संदेह भले ही निराधार हो, लेकिन तार्किक दृष्टि से इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। पर भला कोई यह कैसे संदेह कर सकता है कि वे बोशे थे, क्योंकि आम बोलचाल में इस शब्द का अर्थ केवल जर्मन ही होता है। शायद वह उस समय सुनी गई हिंसक टिप्पणियों को दोहरा रही थी, जब बोशे शब्द पर विशेष जोर दिया जाता था। उसने कहा, "मैं पहले इन सब बातों पर विश्वास करती थी, लेकिन अब मुझे आश्चर्य हो रहा है

कि क्या हम भी उतने ही बड़े बदमाश तो नहीं हैं जितने वे हैं।" यह अपमानजनक विचार फ्रांकोइस के मन में चालाकी से उस नौकर ने डाला था, जिसने देखा कि उसकी साथी नौकरानी को ग्रीस के राजा कॉन्स्टेंटाइन के प्रति विशेष लगाव है, और वह लगातार कहता रहता था कि जब तक वह आत्मसमर्पण नहीं कर देता, तब तक उसे खाना नहीं दिया जाता। राजा के पदत्याग ने फ्रांकोइस को और भी प्रेरित किया और उसने कहा, "हम उनसे बेहतर नहीं हैं। अगर हम जर्मनी में होते, तो हम भी यही करते।" उस समय मैं उससे ज़्यादा नहीं मिल पाता था क्योंकि वह अक्सर अपने चचेरे भाइयों के घर रहने जाती थी, जिनके बारे में मेरी माँ ने एक दिन मुझसे कहा: "जानती हो, वे तुमसे ज़्यादा अमीर हैं।" इसी सिलसिले में एक बेहद खूबसूरत घटना घटी, जो उस दौर में पूरे देश में अक्सर होती रहती थी। अगर उस घटना को याद रखने के लिए इतिहासकार होते, तो वह फ्रांस की शान, उसकी आत्मा की महानता, सेंट आंद्रे-डेस-चैम्प्स की उस महानता की गवाही देती, जो मार्ने में शहीद हुए सैनिकों के साथ-साथ पीछे के इलाकों में मौजूद आम नागरिकों में भी दिखाई देती थी। फ्रांस्वा का एक भतीजा बेरी-औ-बैक में शहीद हो गया था, जो फ्रांस्वा के उन करोड़पति चचेरे भाइयों का भतीजा था, जो पहले कैफे चलाते थे और काफी दौलत के साथ रिटायर हो चुके थे। पच्चीस साल का यह युवक, जो खुद एक छोटे से कैफे का मालिक था, बिना किसी और साधन के सेना में भर्ती हो गया और अपनी युवा पत्नी को छोटा सा बार अकेले संभालने के लिए छोड़कर कुछ महीनों में लौटने की उम्मीद में चला गया। वह शहीद हो गया और उसके बाद जो हुआ वह इस प्रकार है। फ्रांस्वा के ये करोड़पति चचेरे भाई, जिन पर उनके भतीजे की विधवा इस युवती का कोई अधिकार नहीं था, दस साल पहले जिस ग्रामीण घर में वे सेवानिवृत्त हुए थे, उसे छोड़कर फिर से कैफे का

कार्यभार संभाल लिया, लेकिन बिना एक पैसा लिए। हर सुबह छह बजे करोड़पति पत्नी, जो एक सच्ची भद्र महिला थीं, अपनी युवती बेटी के साथ सज-धज कर अपनी भतीजी और रिश्तेदार की मदद करने के लिए निकलती थीं, और तीन साल तक वे बिना एक दिन भी आराम किए सुबह से लेकर रात साढ़े नौ बजे तक गिलास धोती और खाना परोसती रहीं। इस पुस्तक में, जिसमें एक भी घटना काल्पनिक नहीं है, जिसमें एक भी पात्र मनगढ़ंत नहीं है, जिसमें मैंने अपनी प्रस्तुति की आवश्यकताओं के अनुरूप सब कुछ गढ़ा है, मुझे अपने देश के प्रति सम्मान के रूप में, फ्रांस्वा के इन करोड़पति रिश्तेदारों का उल्लेख करना चाहिए, जो वास्तव में मौजूद थे और जिन्होंने अपनी शोक संतप्त भतीजी की मदद करने के लिए अपनी सेवानिवृत्ति छोड़ दी थी। और, इस बात से आश्वस्त होकर कि उनकी विनम्रता को ठेस नहीं पहुँचेगी, क्योंकि वे इस पुस्तक को कभी नहीं पढ़ेंगे, मैं बच्चों जैसी खुशी और गहरी भावना के साथ, उन अनेक लोगों के नाम बताने में असमर्थ हूँ जिन्होंने ऐसा ही किया और जिनके कारण फ्रांस आज भी जीवित है, इसलिए मैं यहाँ उनका नाम लिख रहा हूँ, जो कि एक बहुत ही फ्रांसीसी नाम है, लारिवियर। यदि जुपियन के यहाँ मैंने जिस अभिमानी युवक को डिनर जैकेट पहने देखा था, जो केवल यही जानना चाहता था कि क्या उसे रात साढ़े दस बजे लियोन मिल सकता है क्योंकि वह बाहर दोपहर का भोजन कर रहा था, जैसे कुछ तुच्छ और निंदनीय लोग थे, तो सेंट आंद्रे-डेस-चैंप्स के असंख्य फ्रांसीसी लोगों और उन सभी उत्कृष्ट सैनिकों के सामने उनकी कोई कमी नहीं रह जाती, जिनके साथ मैं लारिवियर परिवार को रखता हूँ। फ्रांकोइस की बेचैनी बढ़ाने के लिए, बटलर ने उसे कहीं से मिली कुछ पुरानी 'रीडिंग्स फॉर ऑल' (सभी के लिए पठन सामग्री) दिखाई, जिसके कवर पर (युद्ध से पहले की प्रतियां) "जर्मनी का शाही परिवार" चित्रित था। बटलर ने

फ्रांकोइस से कहा, "ये हैं हमारे कल के मालिक," और उसे "गिलौम" की तस्वीर दिखाई। फ्रांकोइस ने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं, फिर तस्वीर में उसके बगल में खड़ी महिला की ओर इशारा करते हुए कहा, "और ये हैं गिलौम।"

पेरिस से मेरी रवानगी उस खबर की वजह से टल गई, जिसने मुझे इतना दुख पहुँचाया कि मैं कुछ समय तक हिल भी नहीं पाया। दरअसल, मुझे रॉबर्ट सेंट-लूप की मृत्यु की खबर मिली थी, जो मोर्चे पर लौटने के अगले दिन अपने सैनिकों की रक्षा करते हुए मारे गए थे। उनके जैसा कोई और नहीं था जो किसी राष्ट्र के प्रति घृणा रखता हो (और सम्राट के प्रति, कुछ विशेष कारणों से, जो शायद गलत थे, उनका मानना था कि विलियम द्वितीय ने युद्ध को भड़काने की बजाय उसे रोकने की कोशिश की थी)। न ही उन्हें जर्मनवाद से घृणा थी; छह दिन पहले मैंने उनके जो आखिरी शब्द सुने थे, वे शुमान के एक गीत की शुरुआत के थे, जिसे उन्होंने मेरी सीढ़ियों पर मुझे जर्मन में गुनगुनाया था; दरअसल, पड़ोसियों की वजह से मुझे उनसे चुप रहने के लिए कहना पड़ा था। उच्च कोटि के अच्छे संस्कारों के कारण, वह क्षमा याचना, अपशब्द और अपशब्दों से परहेज करने के आदी थे। जिस शत्रु से उन्होंने लामबंदी के समय भी परहेज किया था, उससे बचने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किया, चाहे उनके कार्यों में जो आत्म-त्याग झलकता था, वह उनके व्यवहार में भी स्पष्ट था। यहाँ तक कि जब भी मैं उनके घर से निकलता, तो वे बिना टोपी के खड़े होते थे और मेरी टैक्सी का दरवाजा बंद कर देते थे। कई दिनों तक मैं अपने कमरे में बंद होकर उनके बारे में सोचता रहा। मुझे बालबेक में उनका वह पहला आगमन याद आया, जब वे सफेद फलालैन के कपड़े पहने, पानी की तरह चमकती हरी आँखों के साथ, समुद्र की ओर खुली खिड़कियों वाले बड़े भोजन कक्ष से सटे हॉल में टहल रहे थे। मुझे उस अद्वितीय

व्यक्तित्व की याद आई, जिसकी मित्रता की मुझे उस समय बहुत तीव्र इच्छा थी। वह इच्छा मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक पूरी हो गई थी, फिर भी मुझे शायद ही एक पल का सुख मिला, और बाद में मुझे उस सुरुचिपूर्ण रूप के पीछे छिपे सभी गुणों और अन्य चीजों का एहसास हुआ। उन्होंने बिना किसी कंजूसी के, दिन-प्रतिदिन, सब कुछ दिया, अच्छा हो या बुरा, और अंत में उन्होंने पूरी उदारता के साथ एक खाई पर धावा बोल दिया, अपनी सारी संपत्ति दूसरों की सेवा में लगा दी, ठीक वैसे ही जैसे एक शाम वह मुझे असुविधा न हो इसलिए रेस्तरां के सोफे पर दौड़ पड़े थे। मैंने उन्हें इतने अलग-अलग स्थानों पर, इतने अलग-अलग परिस्थितियों में, इतने लंबे अंतरालों के बाद, बहुत कम ही देखा था - बालबेक के हॉल में, रिवेबेल के कैफे में, डोंसिएरेस कैवलरी बैरक और सैन्य भोज में, उस थिएटर में जहाँ उन्होंने एक पत्रकार के कान खींचे थे, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ। इसके परिणामस्वरूप, मुझे उनके जीवन की अधिक प्रभावशाली और स्पष्ट तस्वीरें याद रह गईं, और उनकी मृत्यु पर मुझे उससे कहीं अधिक गहरा दुख हुआ जितना अक्सर उन लोगों के मामले में होता है जिन्हें हमने बहुत प्यार किया है लेकिन जिन्हें हमने इतना देखा है कि उनकी जो छवि हमारे मन में रह जाती है वह अनगिनत तस्वीरों का एक अस्पष्ट औसत मात्र है जो एक-दूसरे से मुश्किल से ही भिन्न होती हैं। साथ ही, हमारा तृप्त स्नेह, उन लोगों के मामले की तरह, जिन्हें हमने सीमित क्षणों के लिए अधूरी मुलाकातों के दौरान देखा है, उस अधिक संभावित स्नेह के भ्रम को संरक्षित नहीं कर पाया है जिससे परिस्थितियों ने हमें वंचित कर दिया था। जिस दिन मैंने सेंट-लूप को अपने चश्मे के पीछे लड़खड़ाते हुए देखा था और बालबेक के हॉल में उन्हें बड़े घमंडी अंदाज़ में कल्पना की थी, उसके कुछ दिनों बाद ही एक और शख्सियत थी जिसे मैंने पहली बार बालबेक के समुद्र तट पर देखा था और जो अब

केवल एक स्मृति बनकर रह गई थी—अल्बर्टीन—उस पहली शाम को रेत पर टहल रही थी, सबकी परवाह किए बिना और समुद्र से इस कदर जुड़ी हुई जैसे कोई सीगल। मुझे उससे इतनी जल्दी प्यार हो गया था कि उसके साथ हर दिन रहने की कमी न हो, इसलिए मैं सेंट-लूप से मिलने के लिए बालबेक कभी नहीं छोड़ता था। फिर भी, उनके साथ मेरी दोस्ती का इतिहास इस बात का भी गवाह है कि एक समय ऐसा भी आया जब मैंने अल्बर्टीन से प्यार करना छोड़ दिया था, क्योंकि अगर मैं रॉबर्ट के साथ डोंसिएरेस में रहने गया था, तो यह इस दुख के कारण था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उनके लिए मेरे दिल में जो भावना थी, उसे नहीं लौटाया। उनका जीवन और अल्बर्टीन का जीवन, जिसे मैं इतनी देर बाद जान पाया, दोनों बालबेक में ही बीते और दोनों का अंत भी बहुत जल्दी हो गया; मैंने मन ही मन दोहराया, मानो वर्षों का उड़ता हुआ शटल उन यादों के बीच धागे बुन रहा हो जो पहले एक-दूसरे से पूरी तरह अलग लगती थीं, कि वही था जिसे मैंने श्रीमती बोंटेम्प्स के पास भेजा था जब अल्बर्टीन मुझे छोड़कर चली गई थी। और फिर ऐसा हुआ कि उन दोनों के जीवन में एक समानांतर रहस्य छिपा था जिसका मुझे कभी संदेह नहीं था। सेंट-लूप का जीवन अब मुझे अल्बर्टीन के जीवन से अधिक दुखी कर रहा था क्योंकि उसका जीवन मेरे लिए एक अजनबी जैसा हो गया था। लेकिन मैं इस बात से खुद को दिलासा नहीं दे पा रही थी कि उसका जीवन भी सेंट-लूप की तरह छोटा था। जब वे मेरी देखभाल करते थे तो वे दोनों अक्सर कहते थे: "आप बहुत बीमार हैं," और फिर भी वे ही मर चुके थे, वे ही जिनकी अंतिम दृष्टि मैं देख सकती हूँ, एक खाई के सामने, दूसरा अपनी दुर्घटना के बाद, पहले से इतने कम अंतराल पर अलग, कि अल्बर्टीन की दृष्टि भी मेरे लिए समुद्र पर सूर्यास्त के साथ उसके जुड़ाव से अधिक महत्वहीन थी। फ्रांस्वा ने सेंट-लूप की मृत्यु की खबर अल्बर्टीन की तुलना

में अधिक करुणा के साथ सुनी। वह तुरंत शोक मनाने वाली की भूमिका में ढल गई और विलाप और निराशा भरे शब्दों के साथ मृतकों की याद में विलाप करने लगी। उसने अपना दुख प्रकट किया और अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लिया, केवल तभी जब मैंने उसे अपने आँसू दिखाए, जिन्हें उसने अनदेखा करने का नाटक किया। कई अति संवेदनशील लोगों की तरह, दूसरों की बेचैनी उसे भयभीत कर देती थी, निस्संदेह इसलिए क्योंकि यह उसकी अपनी बेचैनी से बहुत मिलती-जुलती थी। वह अपनी गर्दन में हल्की सी भी अकड़न या चक्कर आने पर सबका ध्यान आकर्षित करना चाहती थी। लेकिन अगर मैं अपने किसी दर्द के बारे में बात करता, तो वह शांत और गंभीर हो जाती और ऐसा दिखावा करती जैसे उसने मुझे सुना ही नहीं। "बेचारे मार्क्विस!" वह कहती, हालाँकि वह यह सोचे बिना नहीं रह सकती थी कि उसने मोर्चे पर न जाने और वहाँ पहुँचने पर खतरे से बचने के लिए अपनी पूरी कोशिश की थी। "बेचारी महिला!" वह कहती, श्रीमती की ओर इशारा करते हुए। डी मार्सेंट्स ने कहा, "अपने बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर वह कितना रोई होगी! काश वह उसे फिर से देख पाती! लेकिन शायद यह अच्छा ही हुआ कि वह उसे नहीं देख पाई क्योंकि उसकी नाक दो टुकड़ों में कट गई थी। उसका चेहरा पूरी तरह से बिगड़ गया था।" और फ्रांस्वा की आँखें आँसुओं से भर गईं, फिर भी किसान की क्रूर जिज्ञासा उनमें झलक रही थी। निःसंदेह फ्रांस्वा ने श्रीमती डी मार्सेंट्स के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की, लेकिन उसे इस बात का दुख था कि वह उनके दुख का रूप नहीं देख पाई और उनके कष्टों को देख नहीं पाई। और चूंकि उसे रोना अच्छा लगता था और वह चाहती थी कि मैं उसे रोते हुए देखूँ, इसलिए उसने कहा: "मुझे बहुत बुरा लग रहा है।" और उसने मेरे चेहरे पर दुख के निशान को इतनी उत्सुकता से देखा कि रॉबर्ट के बारे में बात करते समय मुझे एक तरह की कठोरता का दिखावा करना

पड़ा। नकल करने की भावना से और क्योंकि उसने दूसरों को ऐसा कहते सुना था, क्योंकि नौकरों के क्वार्टर में भी वैसे ही घिसे-पिटे मुहावरे होते हैं जैसे गुटों में, उसने गरीबों की विनम्रता से दोहराया: "उसकी सारी दौलत भी उसे दूसरों की तरह मरने से नहीं रोक सकी और अब उसके किसी काम की नहीं है।" बटलर ने इस मौके का फायदा उठाते हुए फ्रांस्वा से कहा कि यह दुखद तो है, लेकिन सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद हर दिन मरने वाले लाखों लोगों की तुलना में यह कुछ भी नहीं है। लेकिन इस बार बटलर फ्रांस्वा को उतना दुख नहीं पहुँचा सका जितना उसने सोचा था, क्योंकि उसने जवाब दिया: "यह सच है कि वे भी फ्रांस के लिए मरे, लेकिन वे सभी गुमनाम हैं और जब आप किसी को जानते हैं तो यह हमेशा अधिक दिलचस्प होता है।" और फ्रांस्वा, जो अपने आँसुओं में डूबी हुई थी, बोली: "अगर अखबार में मार्क्विस की मौत की खबर आए तो मुझे जरूर बताना।"

युद्ध से बहुत पहले रॉबर्ट मुझसे अक्सर उदासी से कहता था: "अरे, मेरी ज़िंदगी के बारे में बात मत करो, मैं तो पहले से ही बर्बाद हूँ।" क्या वह उस बुराई की ओर इशारा कर रहा था जिसे वह अब तक दुनिया से छिपाने में कामयाब रहा था, जिसकी गंभीरता को शायद उसने बढ़ा-चढ़ाकर बताया था, जैसा कि युवा लोग पहली बार प्यार करने पर या उससे भी पहले एकांत सुख की तलाश करने पर करते हैं और खुद को ऐसे पौधों की तरह समझते हैं जो पराग फैलाए बिना मर जाते हैं? शायद सेंट-लूप के मामले में यह अतिशयोक्ति बच्चों की तरह ही एक अपरिचित पाप के विचार से उत्पन्न हुई थी, एक नई अनुभूति जिसमें लगभग भयानक शक्ति थी जो बाद में कम हो गई। या क्या उसे अपने पिता की असमय मृत्यु के कारण अपनी असमय मृत्यु का पूर्वाभास था? ऐसा पूर्वाभास तर्कहीन लगता है, फिर भी मृत्यु कुछ नियमों के अधीन लगती है।

उदाहरण के लिए, कोई सोच सकता है कि जिन लोगों के माता-पिता बहुत वृद्धावस्था या बहुत कम उम्र में मर गए, वे लगभग एक ही उम्र में मरने के लिए विवश होते हैं। माता-पिता सौ वर्ष की आयु तक दुखों और असाध्य रोगों को सहते हैं, जबकि माता-पिता एक सुखी और स्वस्थ जीवन जीने के बावजूद, अपरिहार्य और असमय मृत्यु को प्राप्त कर लेते हैं। यह मृत्यु इतनी आकस्मिक और अप्रत्याशित होती है (भले ही इसकी जड़ें शरीर में कितनी भी गहरी क्यों न हों) कि यह मृत्यु की वास्तविकता के लिए एक आवश्यक औपचारिकता प्रतीत होती है। क्या यह संभव नहीं है कि आकस्मिक मृत्यु—जैसे सेंट-लूप की मृत्यु, जो उनके चरित्र से कई मायनों में जुड़ी हुई थी—भी पहले से ही निर्धारित होती है, जिसे केवल मनुष्य के लिए अदृश्य देवता ही जानते हैं, लेकिन उस व्यक्ति में एक विशेष और अर्ध-चेतन उदासी द्वारा प्रकट होती है (और दूसरों के सामने भी उतनी ही ईमानदारी से व्यक्त की जाती है जितनी ईमानदारी से हम उन दुर्भाग्य की घोषणा करते हैं जिनसे हम अपने अंतर्मन में बचने का विश्वास करते हैं, लेकिन जो फिर भी घटित होते हैं)।

अपने अंतिम क्षणों में वह अत्यंत सुंदर रहा होगा, वह जो इस जीवन में, यहाँ तक कि जब वह ड्राइंग रूम में बैठा या घूम रहा होता था, तब भी अपने भीतर एक जोशीला उत्साह समेटे हुए प्रतीत होता था और अपने त्रिभुजाकार सिर में केंद्रित अदम्य इच्छाशक्ति को मुस्कुराते हुए छुपाए रखता था, जब वह अंतिम बार आक्रमण करने जा रहा था। किताबों से मुक्त होकर, सामंती बुर्ज फिर से युद्ध के मैदान में उतर आया था और मृत्यु में गुएरमांटेस अपने असली रूप में था—वह अपनी जाति का अधिक प्रतिनिधित्व कर रहा था, एक गुएरमांटेस और कुछ नहीं। यह उसके अंतिम संस्कार में सेंट-हिलैरे-डी-कॉम्ब्रे के चर्च में काले पर्दों से सजे समारोह में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया, जहाँ बंद मुकुट के नीचे "G" अक्षर,

बिना किसी प्रारंभिक अक्षर या उपाधि के, गुएरमांटेस वंश का प्रतीक था, जिसका उसने मृत्यु में प्रतिनिधित्व किया। अंतिम संस्कार में जाने से पहले, जो तुरंत नहीं हुआ, मैंने गिल्बर्ट को पत्र लिखा। शायद मुझे डचेस डी गुएरमांटेस को पत्र लिखना चाहिए था, लेकिन मुझे लगा कि वह रॉबर्ट की मृत्यु को उसी उदासीनता से स्वीकार कर लेंगी, जैसी मैंने उन्हें अपने जीवन से जुड़े कई अन्य लोगों के प्रति दिखाते हुए देखा था। शायद अपने गुएरमांटेस परिवार की भावना के कारण वह यह दिखाना चाहेंगी कि रक्त संबंधों को लेकर अंधविश्वास का उनके लिए कोई महत्व नहीं है। मैं इतनी बीमार थी कि सबको पत्र नहीं लिख सकी। पहले मुझे लगता था कि वह और रॉबर्ट सामाजिक तौर पर एक-दूसरे को पसंद करते थे, यानी जब उनका मन करता था तो वे स्नेह का आदान-प्रदान करते थे। लेकिन जब वह उनसे दूर होते थे, तो वह उन्हें मूर्ख कहने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। और अगर कभी-कभी उन्हें रॉबर्ट की संगति में स्वार्थी आनंद मिलता था, तो मैंने देखा था कि वह खुद को जरा भी कष्ट देने, अपनी शक्ति का जरा सा भी उपयोग करके रॉबर्ट की कोई सेवा करने या उन्हें किसी भी दुर्भाग्य से बचाने में असमर्थ थीं। जब रॉबर्ट मोरक्को लौट रहे थे, तब जनरल सेंट-जोसेफ को उनकी सिफारिश करने से इनकार करके उन्होंने जो दुर्भावना दिखाई, उससे यह साबित होता है कि शादी के समय उनके प्रति उनकी सद्भावना महज़ एक तरह का समझौता थी, जिसमें उन्हें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ा। इसलिए मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब मैंने सुना कि रॉबर्ट की मृत्यु के समय वह बीमार थीं, इसलिए उनके परिवार वालों ने उनकी मृत्यु की घोषणा से होने वाले सदमे के डर से कई दिनों तक उनसे कागजात छुपाए रखे (झूठे बहाने बनाकर)। लेकिन मेरा आश्चर्य तब और बढ़ गया जब मुझे पता चला कि सच्चाई पता चलने के बाद डचेस डी गुएरमांटेस पूरे दिन रोती रहीं, बीमार पड़ गईं और खुद को संभालने में

उन्हें एक हफ्ते से भी ज्यादा समय लगा—जो उनके लिए बहुत लंबा समय था। जब मैंने उनके दुख के बारे में सुना, तो मैं भावुक हो गया और इससे सभी लोग, मेरी तरह, यह कह सकते हैं कि उनके बीच गहरी दोस्ती थी। लेकिन जब मुझे याद आता है कि उस दोस्ती में कितनी छोटी-छोटी बदनामी और कितनी दुर्भावना समाई हुई थी, तो मुझे एहसास होता है कि समाज उसे कितना कम महत्व देता है। इसके अलावा, कुछ समय बाद, ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण परिस्थितियों में, हालांकि उन्होंने मेरे हृदय को उतना प्रभावित नहीं किया, श्रीमती डी गुएरमांटेस मेरी राय में और भी अधिक अनुकूल रूप में उभरीं। यह याद रखना होगा कि एक लड़की के रूप में उन्होंने रूसी शाही परिवार के प्रति दुस्साहसपूर्ण उद्दंडता दिखाई थी और शादी के बाद उनके बारे में इतनी बेबाकी से बात की थी जो सामाजिक शिष्टाचार की सीमा तक पहुँच जाती थी, फिर भी रूसी क्रांति के बाद शायद वही एकमात्र ऐसी व्यक्ति थीं जिन्होंने ग्रैंड-ड्यूक और डचेस के प्रति अत्यधिक निष्ठा का प्रमाण दिया। युद्ध से ठीक पहले वाले वर्ष में उन्होंने ग्रैंड-ड्यूक पॉल की गैर-राजकीय पत्नी, कॉम्टेस ऑफ होहेनफेल्सन को "ग्रैंड-ड्यूचेस पॉल" कहकर ग्रैंड-ड्यूचेस व्लादिमीर को नाराज कर दिया था। लेकिन, रूसी क्रांति के शुरू होते ही, सेंट पीटर्सबर्ग में हमारे राजदूत, एम. पैलियोलॉग (राजनयिक समाज के लिए "पैलियो" शब्द का प्रयोग होता है, जिसमें अन्य शब्दों की तरह ही कुछ छद्म-मजाकिया संक्षिप्त रूप हैं), डचेस डी गुएरमांटेस के टेलीग्रामों से परेशान हो गए, जो ग्रैंड-डचेस मारिया पावलोवना के बारे में जानकारी चाहती थीं, और लंबे समय तक उस राजकुमारी को सहानुभूति और सम्मान के जो संकेत मिले, वे केवल श्रीमती डी गुएरमांटेस से ही प्राप्त हुए।

सेंट-लूप ने, अपनी मृत्यु से नहीं तो कम से कम उससे पहले के हफ्तों में किए गए अपने कार्यों से, डचेस की परेशानियों से भी कहीं अधिक

मुसीबतें खड़ी कर दी थीं। हुआ ये कि जिस शाम मैंने एम. डी चार्लस को देखा था, जिस दिन उन्होंने मोरेल से कहा था: "मैं बदला लूँगा," उसी दिन सेंट-लूप का मोरेल की तलाश तब खत्म हो गई, जब उस जनरल ने, जिसके आदेश पर मोरेल को होना चाहिए था, पता लगाया कि वह भगोड़ा है और उसे ढूंढकर गिरफ्तार करवा दिया। जिस व्यक्ति में उनकी दिलचस्पी थी, उसे दी जाने वाली सजा के लिए सेंट-लूप से माफी मांगने के लिए, जनरल ने सेंट-लूप को पत्र लिखकर इसकी सूचना दी थी। मोरेल को यकीन था कि उसकी गिरफ्तारी एम. डी चार्लस की दुश्मनी के कारण हुई है। उसे "मैं बदला लूँगा" शब्द याद थे और यह सोचकर कि यही बदला है, उसने अपनी बात रखने की मांग की। उसने कहा, "यह सच है कि मैं भगोड़ा था, लेकिन अगर मैं बुरे कामों में शामिल हुआ हूँ, तो क्या यह पूरी तरह से मेरी गलती है?" खुद को जोखिम में डाले बिना, उन्होंने एम. डी चार्लस और एम. डी'आर्गेनकोर्ट के बारे में जानकारी दी, जिनसे उनका झगड़ा भी हुआ था। यह झगड़ा उन दोनों द्वारा, प्रेमियों और विक्षिप्तों के दोहरे उत्साह के साथ, उन्हें बताई गई बातों पर आधारित था, जिसके कारण एम. डी चार्लस और एम. डी'आर्गेनकोर्ट की एक साथ गिरफ्तारी हुई। इस गिरफ्तारी से शायद इन दोनों को उतना दुख नहीं हुआ जितना इस बात से कि वे दोनों एक-दूसरे के अनिच्छुक प्रतिद्वंद्वी थे और कार्यवाही से सड़कों पर प्रतिदिन पकड़े जाने वाले अन्य और अधिक अज्ञात प्रतिद्वंद्वियों की एक बड़ी संख्या का खुलासा हुआ। इसके अलावा, उन्हें और मोरेल को जल्दी ही रिहा कर दिया गया क्योंकि जनरल द्वारा सेंट-लूप को लिखा गया पत्र उन्हें "सम्मान के मैदान में मृत" लिखकर लौटा दिया गया था। जनरल ने मृतकों के सम्मान में फैसला किया कि मोरेल को सीधे मोर्चे पर भेज दिया जाए। वहाँ उन्होंने बहादुरी से व्यवहार किया, सभी खतरों से बच निकले और युद्ध समाप्त होने पर उस क्रॉस के साथ

लौटे, जिसके लिए एम. डी चार्लस ने पहले व्यर्थ ही उनसे विनती की थी और जो उन्हें सेंट-लूप की मृत्यु के कारण अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हुआ था। जुपियन के युद्ध में खोए हुए क्रॉस को याद करते हुए मैंने अक्सर सोचा है कि अगर सेंट-लूप जीवित होते, तो युद्ध के बाद हुए चुनाव में वे आसानी से डिप्टी चुने जाते, युद्ध के दौरान फैली मूर्खता और उसके पीछे रह गई गौरवशाली छवि के कारण, साथ ही सदियों से चले आ रहे पूर्वाग्रहों के समाप्त होने के कारण भी। और अगर एक उंगली खोने से एक शानदार शादी और एक कुलीन परिवार में प्रवेश मिल गया, तो क्रॉस, भले ही वह किसी पद के लिए जीता गया हो, आस्था की प्रतिज्ञा का स्थान ले लेता है और प्रतिनिधि सभा, लगभग फ्रांसीसी अकादमी में विजयी चुनाव सुनिश्चित करता है। सेंट-लूप के चुनाव पर, उनके "पवित्र" परिवार के कारण, एम. आर्थर मेयर आँसू और स्याही की बाढ़ ला देते। लेकिन शायद सेंट-लूप जनता से इतना सच्चा प्रेम करते थे कि उनका समर्थन हासिल नहीं कर सके, हालाँकि उनकी कुलीनता के कारण जनता निस्संदेह उनके लोकतांत्रिक विचारों को क्षमा कर देती। सेंट-लूप शायद विमान चालकों की सभा के समक्ष उन्हें सफलतापूर्वक बेनकाब कर देते और वे वीर उन्हें समझ लेते, जैसा कि कुछ अन्य उच्च कोटि के विद्वान भी समझते। लेकिन ब्लॉक नेशनल के शांतिदायक प्रभाव के कारण, कई पुराने राजनीतिक बदमाश सामने आ गए थे और हमेशा चुने जाते थे। जो लोग विमान चालकों की सभा में प्रवेश करने में असमर्थ थे, वे कम से कम फ्रांसीसी अकादमी के सदस्य बनने की आशा में मार्शलों, गणतंत्र के राष्ट्रपति, सभा के अध्यक्ष आदि के वोट मांगने लगे। वे सेंट-लूप का समर्थन नहीं करते, लेकिन उन्होंने जुपियन के एक अन्य समर्थक, लिबरल एक्शन के उस प्रतिनिधि का समर्थन किया, और वे निर्विरोध पुनः निर्वाचित हो गए। हालांकि युद्ध समाप्त हुए काफी समय हो गया था, फिर

भी उन्होंने अपने प्रादेशिक अधिकारी की वर्दी पहनना नहीं छोड़ा। उनके चुनाव का उन सभी समाचार पत्रों ने खुशी से स्वागत किया, जिन्होंने उनके नाम के बल पर गठबंधन बनाया था। इसमें धनी और कुलीन महिलाओं का भी योगदान था, जो पारंपरिक भावुकता और करों के डर से फटे-पुराने कपड़े पहनती थीं। वहीं, शेयर बाजार के लोग लगातार हीरे खरीदते रहे, अपनी पत्नियों के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि किसी भी देश की साख पर भरोसा न होने के कारण वे भौतिक संपत्ति में सुरक्षा ढूंढ रहे थे, और संयोगवश इसी वजह से डी बीयर्स के शेयर की कीमत एक हजार फ्रैंक बढ़ गई। ऐसी मूर्खता कुछ हद तक चिढ़ाने वाली थी, लेकिन जब अचानक बोल्शेविज़्म के शिकार लोग सामने आए, तो ब्लॉक नेशनल के प्रति आक्रोश कम हो गया; वे ग्रैंड-डचेस जो फटेहाल थीं और जिनके पति और पुत्रों की बारी-बारी से हत्या कर दी गई थी। पतियों को ठेले में ले जाया गया, पुत्रों को पत्थर मारकर और भोजन से वंचित करके, उपहास के बीच मजदूरी करने के लिए मजबूर किया गया और अंत में गड्ढों में फेंककर जिंदा दफना दिया गया क्योंकि कहा जाता था कि वे प्लेग से बीमार हैं और समुदाय को संक्रमित कर सकते हैं। जो कुछ लोग भागने में सफल रहे, वे अचानक फिर से प्रकट हुए और इस भयावह घटना में नए और डरावने विवरण जोड़ दिए।

अध्याय **III**

प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पर दोपहर की पार्टी

जिस नए मानसिक अस्पताल में मैं भर्ती हुआ, उसने भी मुझे पहले वाले अस्पताल से ज़्यादा ठीक नहीं किया और उसे छोड़ने में मुझे काफ़ी समय लग गया। पेरिस वापस रेल यात्रा के दौरान, साहित्यिक प्रतिभा की कमी

का एहसास मुझे फिर से सताने लगा। यह एहसास, जिसे मैंने पहले गुएरमांटेस के साथ रहते हुए महसूस किया था, जिसे मैंने टैनसनविले में गिल्बर्ट के साथ रात के खाने से पहले या देर रात तक टहलते हुए और भी दुख के साथ पहचाना था, और जिसे मैंने प्रस्थान की पूर्व संध्या पर, गोंकर्ट्स के संस्मरणों के कुछ पन्ने पढ़ने के बाद, साहित्य के व्यर्थता और झूठ के पर्यायवाची के रूप में लगभग पहचान लिया था, शायद कम दुखद था, लेकिन फिर भी अधिक निराशाजनक था यदि इसका कारण मेरी व्यक्तिगत अक्षमता नहीं बल्कि उस आदर्श का अस्तित्वहीन होना था जिसमें मैंने विश्वास किया था। यह एहसास, जो लंबे समय से मेरे मन में नहीं आया था, मुझे फिर से और पहले से कहीं अधिक दुखद रूप से प्रभावित कर गया। मुझे याद है, जब ट्रेन खुले मैदान में रुकी और रेल पटरी के किनारे लगे पेड़ों की कतार पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी। मैंने सोचा, "पेड़ों, अब तुम्हारे पास मुझे बताने के लिए कुछ नहीं बचा, मेरा ठंडा दिल तुम्हें सुन नहीं पा रहा। मैं प्रकृति के बीच में हूँ, फिर भी मेरी आँखें तुम्हारे चमकदार चेहरे और छायादार तनों को अलग करने वाली रेखा को उबड़-खाबड़ देख रही हैं। अगर मैंने कभी खुद को कवि समझा था, तो अब मैं जानता हूँ कि मैं कवि नहीं हूँ। शायद जीवन के इस नए और बंजर दौर में, मनुष्य मुझे वैसे ही प्रेरित कर सकें जैसे प्रकृति अब नहीं कर सकती, और वे दिन कभी वापस नहीं आएंगे जब मैं शायद उसकी सुंदरता का गुणगान कर पाता।" लेकिन मानवता के अवलोकन की संभावना को असंभव प्रेरणा का स्थान देने की कोशिश में, मैं जानता था कि मैं केवल एक ऐसी सांत्वना खोज रहा था जिसका कोई मूल्य नहीं था। अगर सचमुच मुझमें एक कलाकार की आत्मा होती, तो ढलते सूरज की रोशनी से जगमगाते पेड़ों के उस पर्दे को देखकर, रेलगाड़ी के डिब्बे के फुटबोर्ड तक पहुँचते उन नन्हे-नन्हे फूलों को देखकर, जिनकी पंखुड़ियों

को मैं गिन सकता था और जिनके रंगों का वर्णन करने की हिम्मत मैं वैसे नहीं कर सकता था जैसे कई उत्कृष्ट लेखक करते हैं, भला पाठक तक उस आनंद को कैसे पहुँचाया जा सकता है जिसे उसने स्वयं महसूस न किया हो? थोड़ी देर बाद मैंने उसी उदासीनता से एक घर की खिड़कियों को सुनहरे और नारंगी रंग के लेंसों में बदलते देखा; और फिर, जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने एक और घर देखा जो किसी अजीब गुलाबी पदार्थ से बना हुआ प्रतीत होता था। लेकिन मैंने ये सभी अवलोकन उसी उदासीनता से किए जैसे मैं किसी महिला के साथ बगीचे में टहलते हुए किसी कांच के पत्ते को देखता और फिर आगे अलबास्टर जैसी किसी वस्तु को देखता जिसका असामान्य रंग मुझे असहनीय ऊब से विचलित नहीं करता, लेकिन मैंने शिष्टाचारवश उस महिला को यह दिखाने के लिए उसकी ओर इशारा किया होता कि मैंने उन्हें देखा है, भले ही वे रंगीन कांच और प्लास्टर से बने हों। ठीक उसी तरह, अंतरात्मा की आवाज के रूप में मैंने अपने मन में, मानो किसी ऐसे व्यक्ति को बता रहा हो जो मेरे साथ था और जो मुझसे कहीं अधिक आनंद ले सकता था, खिड़कियों के शीशों में चमकीली परछाइयों और घर की गुलाबी पारदर्शिता को महसूस किया। लेकिन जिस साथी का ध्यान मैंने इन विचित्र प्रभावों की ओर दिलाया था, वह निस्संदेह उन अनेक नेक लोगों की तुलना में कम उत्साही स्वभाव का था जिन्हें ऐसा दृश्य देखकर प्रसन्नता होती, क्योंकि उसने रंगों को बिना किसी आनंद के देखा था।

चूंकि मेरा नाम उनकी अतिथि सूची में था, इसलिए पेरिस से मेरी लंबी अनुपस्थिति ने पुराने मित्रों को मुझे निमंत्रण भेजने से नहीं रोका। घर लौटने पर, मुझे ला बेरमा द्वारा अपनी बेटी और दामाद के सम्मान में आयोजित रात्रिभोज के निमंत्रण के साथ-साथ प्रिंस डी गुएरमांटेस के यहाँ दोपहर के स्वागत समारोह का निमंत्रण भी मिला। ट्रेन में मेरे मन में

चल रहे उदास विचार भी उन कारणों में से एक थे जिन्होंने मुझे वहाँ जाने के लिए प्रेरित किया। मैंने खुद से कहा कि समाज से खुद को वंचित रखना उचित नहीं है, क्योंकि मैं उस बहुमूल्य "कार्य" के लिए या तो तैयार नहीं था या योग्य नहीं था, जिसके लिए मैं इतने लंबे समय से "कल" खुद को समर्पित करने की आशा कर रहा था, और जो शायद वास्तविकता से मेल नहीं खाता था। सच तो यह है कि यह तर्क नकारात्मक था और इसने उन कारणों के महत्व को ही नकार दिया जो मुझे इस सामाजिक समारोह से दूर रख सकते थे। लेकिन जिस बात ने मुझे जाने के लिए प्रेरित किया, वह था गुएरमांटेस का नाम, जो मेरे मन से इतना विमुख हो चुका था कि जब मैंने उसे निमंत्रण पत्र पर देखा, तो मेरा ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ और मेरी स्मृति की गहराइयों में दबे अतीत के एक अंश को झकझोर कर रख दिया। वह अतीत वन क्षेत्र की कल्पनाओं से जुड़ा था, जिसकी समृद्ध हरियाली ने एक बार फिर पुराने कॉम्ब्रे के दिनों का आकर्षण और महत्व समेट लिया था, जब घर लौटने से पहले मैं रू डे ल'ओइसो से गुजरता था और बाहर से, गहरे वार्निश की तरह, गुएरमांटेस के मालिक गिल्बर्ट ले मौवैस की चित्रित खिड़की देखता था। एक क्षण के लिए गुएरमांटेस मुझे समाज के लोगों से बिल्कुल अलग, उनसे या किसी भी जीवित प्राणी से, यहाँ तक कि एक राजा से भी अतुलनीय प्रतीत हुए। वे ऐसे प्राणी थे जो कॉम्ब्रे के उस गंभीर और सदाचारी शहर के वातावरण में पनपे थे जहाँ मेरा बचपन बीता था, और उस पूरे अतीत से भी अलग थे जिसका प्रतिनिधित्व वह छोटी सी गली कर रही थी जहाँ से मैं चित्रित खिड़की को निहार रहा था। मुझे गुएरमांटे परिवार के घर जाने की तीव्र इच्छा थी, मानो वह मुझे मेरी यादों की गहराइयों से मेरा बचपन वापस ले आएगा, जहाँ मैंने उसकी एक झलक देखी थी। और मैं निमंत्रण पत्र को बार-बार पढ़ता रहा, जब तक कि नाम के अक्षर, जो कॉम्ब्रे की तरह ही

परिचित और रहस्यमय थे, विद्रोही ढंग से अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त नहीं कर लेते और मेरी थकी हुई आँखों के सामने एक ऐसा नाम प्रकट नहीं कर देते जिसे मैं नहीं जानता था।

मेरी माँ श्रीमती सैज़ेरत के साथ एक छोटी सी चाय पार्टी में जा रही थीं, इसलिए मुझे प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के स्वागत समारोह में जाने में कोई संकोच नहीं हुआ। मैंने वहाँ जाने के लिए एक गाड़ी मंगवाई, क्योंकि प्रिंस डी गुएरमांटेस अब अपने पुराने महल में नहीं, बल्कि एवेन्यू डू बोइस में बने एक शानदार नए महल में रहते थे। समाज में लोगों की एक गलती यह होती है कि वे यह नहीं समझते कि अगर वे चाहते हैं कि हम उन पर विश्वास करें, तो उन्हें पहले खुद पर विश्वास करना होगा या कम से कम उन तत्वों का सम्मान करना होगा जो हमारे विश्वास के लिए आवश्यक हैं। उस समय जब मैं यह मानकर चल रही थी कि गुएरमांटेस अपने महल में वंशानुगत विशेषाधिकार के कारण रहते हैं, जबकि मैं जानती थी कि ऐसा नहीं है, तब किसी जादूगर या परी के महल में प्रवेश करना, उन दरवाजों का खुलना जो जादुई मंत्र बोले जाने तक बंद रहते हैं, मुझे उतना ही मुश्किल लगता था जितना कि स्वयं जादूगर और परी से मिलना। मेरे लिए यह यकीन करना बेहद आसान था कि पोटेल और चाबोट के यहाँ कल ही काम पर रखा गया बूढ़ा नौकर उन लोगों का बेटा, पोता या वंशज था जिन्होंने क्रांति से बहुत पहले परिवार की सेवा की थी। बर्नहाइम जूनियर से पिछले महीने खरीदी गई तस्वीर को अपने पूर्वज का चित्र कहने में मुझे असीम प्रसन्नता होती थी। लेकिन आकर्षण को मिटाया नहीं जा सकता, यादों को अलग नहीं किया जा सकता और अब जब राजकुमार डी गुएरमांटेस ने एवेन्यू डू बोइस में रहने जाकर मेरे भ्रम को ही तोड़ दिया था, तो अब उसका कुछ अंश बचा ही नहीं था। जिन छतों के बारे में मुझे डर था कि मेरा नाम सुनते ही गिर जाएँगी और जिनके नीचे

मेरी पहले की श्रद्धा और कल्पना अभी भी बसी हुई थी, अब उनमें एक अमेरिकी महिला की शाम की पार्टियाँ होती थीं, जिनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। बेशक, चीजों में अपने आप में कोई शक्ति नहीं होती और चूंकि हम ही उन्हें शक्ति प्रदान करते हैं, इसलिए हो सकता है कि इस समय कोई मध्यमवर्गीय स्कूली लड़का एवेन्यू डू बोइस के उस हवेली के सामने खड़ा हो और वैसा ही महसूस कर रहा हो जैसा मैं पहले उस हवेली के बारे में महसूस करता था। और ऐसा इसलिए क्योंकि वह अब भी आस्था की उस उम्र में था जिसे मैं बहुत पीछे छोड़ आया था; मैंने वह विशेषाधिकार खो दिया था जैसे कोई शिशु दूध पचाने की क्षमता खो देता है जिसे हम केवल थोड़ी मात्रा में ही पी सकते हैं जबकि शिशु बिना सांस लिए अनिश्चित काल तक दूध पी सकते हैं। कम से कम गुएरमांटे परिवार के निवास स्थान में परिवर्तन का मेरे लिए यह लाभ था कि मुझे वहाँ ले जाने वाली गाड़ी, जिसमें मैं ये विचार कर रहा था, को चैंप्स एलिसी की ओर जाने वाली सड़कों से होकर गुजरना पड़ा। उस समय वे सड़कें बहुत खराब थीं, फिर भी जैसे ही गाड़ी उनमें प्रवेश कर गई, मैं एक अत्यंत सुखद अनुभूति से अपने विचारों से विमुख हो गया; ऐसा लगा जैसे अचानक गाड़ी आसानी से और बिना शोर के आगे बढ़ रही हो, जैसे किसी पार्क के द्वार खुलते ही कोई बारीक बजरी या सूखे पत्तों से ढकी सड़क पर सरक रहा हो। इसमें कुछ भी भौतिक नहीं था, फिर भी अचानक मुझे बाहरी बाधाओं से मुक्ति का अहसास हुआ, मानो मुझे अब अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि हम लगभग अचेतन रूप से किसी नई चीज का सामना करने पर करते हैं; जिन गलियों से मैं गुज़र रहा था, वे वही पुरानी गलियाँ थीं जिन्हें मैं और फ़्रांस्वा चैंप्स एलिसीज़ जाते समय इस्तेमाल किया करते थे। सड़क को खुद पता था कि उसे कहाँ जाना है, उसने अपना प्रतिरोध पार कर लिया

था। और एक पायलट की तरह जो ज़मीन पर दर्दनाक ढंग से लुढ़कता है और फिर अचानक उससे अलग हो जाता है, मैंने खुद को यादों की शांत ऊँचाइयों की ओर धीरे-धीरे उठते हुए महसूस किया। पेरिस की वे खास गलियाँ, मेरे लिए, हमेशा दूसरी गलियों से अलग रहेंगी। जब मैं रू रॉयल के उस कोने पर पहुँचा जहाँ पहले एक खुली हवा में सड़क विक्रेता फ़्रांस्वा की पसंदीदा तस्वीरें प्रदर्शित किया करता था, तो मुझे ऐसा लगा जैसे वर्षों में सैकड़ों बार वहाँ मुड़ने वाली गाड़ी अपने आप मुड़ने के लिए विवश हो गई हो। मैं उन गलियों से नहीं गुज़र रहा था जिनसे वहाँ से गुज़रने वाले लोग गुज़र रहे थे, मैं एक मीठे और उदास अतीत में तैर रहा था जो इतने अलग-अलग अतीतों से बना था कि मेरे लिए अपनी उदासी का कारण पहचानना मुश्किल था। क्या यह गिलबर्टे के इंतज़ार में इधर-उधर चक्कर लगाने और उसके न आने के डर के कारण था? क्या यह इसलिए था कि मैं उस घर के पास था जहाँ मुझे बताया गया था कि अल्बर्टीन एंड्री के साथ गई थी, या क्या यह उस गली का दार्शनिक महत्व था जो तब सामने आता है जब कोई उसे हज़ार बार इस्तेमाल कर चुका हो, किसी ऐसे जुनून में डूबा हुआ हो जो अब खत्म हो चुका है और जिसका कोई फल नहीं निकला, जैसे दोपहर के भोजन के बाद मैं फ्रेड्रे और ब्लैक डोमिनो के नाटक-पत्रों को देखने के लिए बेचैनी से चक्कर लगाता था, जब वे अभी भी बिल-स्टिकर के पेस्ट से गीले थे? चैंप्स एलिसीज़ पहुँचकर, और गुएरमांटेस के यहाँ पूरा संगीत कार्यक्रम सुनने की ज़्यादा इच्छा न होने के कारण, मैंने गाड़ी रोक दी और उससे उतरकर कुछ कदम चला, तभी मैंने देखा कि एक और गाड़ी भी रुकने वाली है। एक आदमी, जिसकी आँखें बेजान थीं और शरीर झुका हुआ था, गाड़ी के पीछे बैठने के बजाय उतार दिया गया था, और वह खुद को सीधा रखने की कोशिश कर रहा था, जैसे कोई बच्चा अच्छे से पेश आने के लिए कहे जाने पर करता है। उनके भूसे

के हैट के नीचे से बर्फ जैसे सफेद बालों का घना जंगल झाँक रहा था, जबकि सार्वजनिक उद्यानों में मूर्तियों पर जमी बर्फ जैसी सफेद दाढ़ी उनकी ठुड्डी से लटक रही थी। जुपियन (जो बहुत ध्यान देने वाले थे) के बगल में एम. डी चार्लस बैठे थे, जो पक्षाघात के दौरे से उबर रहे थे (जिसके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी; मैंने केवल इतना सुना था कि उनकी दृष्टि चली गई थी, जो एक क्षणिक बात थी, क्योंकि अब उन्हें सब कुछ साफ दिखाई दे रहा था)। ऐसा प्रतीत होता था, जब तक कि वे अपने बालों को रंगने के आदी न रहे हों और थकान के कारण उन्हें ऐसा करने से मना न किया गया हो, कि उन पर किसी प्रकार की रासायनिक प्रक्रिया की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप उनके बाल इतने चमकदार और धातु जैसे चमक रहे थे कि उनके बाल और दाढ़ी शुद्ध चांदी के फव्वारों की तरह फूट रहे थे और उस बूढ़े और पतित राजकुमार को शेक्सपियर के किंग लियर जैसी भव्यता प्रदान कर रहे थे। इस पूर्ण परिवर्तन, सिर के इस धातुई रूपांतरण से उनकी आँखें भी अछूती नहीं रहीं; लेकिन एक विपरीत घटना के कारण उनकी सारी चमक फीकी पड़ गई थी। सबसे मार्मिक बात यह थी कि यह चमक उन्हें नैतिक अभिमान से मिली थी और इसके खो जाने के कारण ही एम. डी चार्लस का शारीरिक और बौद्धिक जीवन उनके उस अभिजात्य अहंकार से बच पाया, जिसे उनमें समाहित माना जाता था। ठीक उसी क्षण, श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे, जो निस्संदेह प्रिंस डी गुएरमांटेस की विजय थीं, गुजरीं, जिन्हें पहले बैरन इतना बुद्धिमान नहीं समझते थे कि उनसे जान-पहचान कर सकें। जुपियन, जो उनकी एक बच्चे की तरह देखभाल कर रहा था, ने उनके कान में फुसफुसाया कि वह श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे को जानता है। तुरंत ही, बड़ी मुश्किल से और एक ऐसे बीमार व्यक्ति की एकाग्रता के साथ, जो अभी भी दर्द से कराह रहा हो, एम. डी चार्लस ने अपने कपड़े उतारे,

झुककर श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे को उसी सम्मान के साथ नमस्कार किया, जैसा कि वह तब करते जब वह फ्रांस की रानी होतीं। उन्हें इस प्रकार प्रणाम करने की कठिनाई ही शायद इसका कारण रही होगी, क्योंकि उन्हें इस बात का एहसास था कि एक बीमार व्यक्ति के लिए कुछ कष्टदायक और इसलिए दुगना पुण्य कार्य करना और जिसे यह प्रणाम किया जा रहा था उसके प्रति दुगना सम्मान प्रकट करना कितना मार्मिक था। राजाओं की तरह, बीमार लोग भी शिष्टाचार का अतिशयोक्तिपूर्ण प्रदर्शन करते हैं। शायद बैरन के हाव-भाव में अस्थि मज्जा और मस्तिष्क की बीमारी के कारण तालमेल की कमी थी और उनके इशारे उनकी मंशा से कहीं अधिक थे। मुझे तो उनमें एक प्रकार की अर्ध-शारीरिक कोमलता, जीवन की वास्तविकताओं से एक अलगाव दिखाई दिया, जो मृत्यु के साये में प्रवेश करने वालों में प्रकट होता है। उनके चांदी जैसे बालों वाले सिर का खुला होना उस अचेतन सांसारिक विनम्रता से कम गहरा परिवर्तन दर्शाता है, जिसने सभी सामाजिक संबंधों को उलटते हुए, श्रीमती के समक्ष उन्हें नीचा दिखाया। डी सैंटे-यूवर्टे के समक्ष, बैरन का वह घमंड, जो अब तक सबसे अधिक अभिमानपूर्ण प्रतीत होता था, सबसे कम महत्वपूर्ण अमेरिकी महिला (जो अंततः बैरन से वह सम्मान प्राप्त कर सकती थी जो अब तक नहीं मिला था) के सामने भी उसकी दुर्बलता प्रदर्शित करता। क्योंकि बैरन अभी भी जीवित थे, सोच सकते थे; उनकी बुद्धि अभी भी जीवित थी। और, ओडिपस के टूटे हुए अभिमान पर सोफोक्लीज के गीतों से भी कहीं अधिक, मृत्यु या किसी भी अंतिम संस्कार भाषण से भी कहीं अधिक, बैरन द्वारा श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे को विनम्रतापूर्वक और चापलूसी से अभिवादन करना सांसारिक वैभव और सभी मानवीय अभिमान की नश्वर प्रकृति को दर्शाता था। एम. डी चार्लस, जो तब तक श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे के साथ भोजन करने के लिए भी सहमत नहीं होते, अब उनके

सामने जमीन पर झुक गए। यह संभव है कि उसने उसके सामाजिक दर्जे की अज्ञानता के कारण ही उसे प्रणाम किया हो (क्योंकि सामाजिक नियमों को स्मृति के किसी भी अन्य भाग की तरह एक झटके में मिटाया जा सकता है), शायद किसी असंगति के कारण जिसने उसकी अनिश्चितता को, जो अन्यथा अभिमानपूर्ण प्रतीत हो सकती थी, राहगीर महिला की पहचान के संबंध में विनम्रता के आभास में बदल दिया। वास्तव में, उसने उसे उसी संकोची विनम्रता से प्रणाम किया, जैसे कोई बच्चा अपनी माँ द्वारा बड़ों को सुप्रभात कहने के लिए कहे जाने पर करता है। और वह सचमुच एक बच्चा बन चुका था, बिना बच्चे के गर्व के। श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे के लिए एम. डी चार्लस का सम्मान प्राप्त करना गर्व से भरा एक भाव था, ठीक वैसे ही जैसे पहले बैरन द्वारा उसे यह सम्मान देने से इनकार करना भी गर्व का भाव था। और एम. डी चार्लस ने एक ही झटके में उस अनमोल और दुर्गम चरित्र को नष्ट कर दिया था जिसे उन्होंने श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे के लिए बनाने में सफलता प्राप्त की थी। डी सैंट-यूवर्टे का मानना था कि उनकी झिझक और डर से भरी उत्सुकता, जिस तरह से उन्होंने अपनी टोपी उठाई और अपने चांदी जैसे बालों को लहराते हुए हवा में लहराया, वह उनके व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग था। वे उनके सामने बिना ढके, बॉसुएट की तरह विनम्रता से खड़े थे। जुपियन द्वारा बैरन को नीचे उतारने में सहायता करने के बाद, मैंने उन्हें प्रणाम किया और वे मुझसे बहुत तेज़ी से और अस्पष्ट रूप से बोलने लगे, जिससे मैं उन्हें समझ नहीं पाई। जब मैंने तीसरी बार उनसे अपनी बात दोहराने को कहा, तो उन्होंने अधीरता का भाव दिखाया, जिसने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया क्योंकि इससे पहले उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, जो निस्संदेह लकवे के प्रभाव के कारण था। लेकिन जब मैं उनके फुसफुसाते शब्दों को समझने में सफल हुई, तो मुझे एहसास हुआ कि उस बीमार

व्यक्ति की बुद्धि पूरी तरह से बरकरार थी। इसके अलावा, अन्य लोगों को छोड़कर, दो एम. डी चार्लस थे। उनमें से बुद्धिमान व्यक्ति पूरे समय शिकायत करता रहा कि वह स्मृतिलोप की ओर बढ़ रहा है, कि वह लगातार एक शब्द या एक अक्षर के बजाय दूसरा शब्द या अक्षर बोल रहा है। लेकिन संयोगवश, दूसरा एम. डी चार्लस, अवचेतन मन वाला वह हिस्सा जो ईर्ष्या और दया दोनों का पात्र बनना चाहता था, रुक गया, ठीक वैसे ही जैसे कोई ऑर्केस्ट्रा लीडर किसी ऐसे संगीत की शुरुआत में रुक जाता है जहाँ उसके संगीतकार लड़खड़ा रहे हों, और असीम चतुराई से उस शब्द के आगे का वाक्य जोड़ दिया जिसे उसने गलती से इस्तेमाल किया था लेकिन जिसे वह चाहता था कि लोग मानें कि उसने जानबूझकर चुना था। उसकी स्मृति भी अक्षुण्ण थी; वास्तव में, उसने मेरे संबंध में किसी प्राचीन और महत्वहीन स्मृति को पुनर्जीवित करने का बेहद थकाऊ नाटक किया ताकि मुझे यह साबित कर सके कि उसने अपनी सारी मानसिक तीक्ष्णता बरकरार रखी है या पुनः प्राप्त कर ली है। उदाहरण के लिए, बिना अपना सिर या आँखें हिलाए और बिना अपनी आवाज़ बदले, उसने मुझसे कहा: "देखो! वहाँ एक खंभा है जिस पर ठीक वैसा ही नोटिस लगा है जैसा उस जगह पर लगा था जहाँ मैं तुम्हें पहली बार एवरान्चेस में देखा था—नहीं, मेरा मतलब बालबेक में है।" और वास्तव में वह उसी उत्पाद का विज्ञापन था। पहले तो मुझे उनकी बात समझने में कठिनाई हुई, क्योंकि अंधेरे कमरे में पहले ठीक से दिखाई नहीं देता। लेकिन जैसे धुंधलके में आंखें अभ्यस्त हो जाती हैं, वैसे ही उनके कान भी जल्द ही उनकी धीमी आवाज़ के अभ्यस्त हो गए। मेरा मानना है कि जैसे-जैसे वे बोलते गए, उनकी आवाज़ और भी प्रभावशाली होती गई, चाहे यह कमजोरी आंशिक रूप से घबराहट के कारण थी जो किसी से बातचीत करने पर कम हो जाती थी, या इसके विपरीत, कमजोरी वास्तविक थी

और उनकी आवाज़ में उत्तेजना के कारण अस्थायी रूप से बल आ रहा था जो उनके लिए हानिकारक था और अजनबियों को यह कहने पर मजबूर कर रहा था: "वे ठीक हो रहे हैं, उन्हें अपनी बीमारी के बारे में नहीं सोचना चाहिए," जबकि वास्तव में, इससे उनकी हालत और बिगड़ रही थी। जो भी हो, इस विशेष क्षण में बैरन ने अपने शब्दों को खराब मौसम में ज्वार की तरह अधिक जोश से उछाला। हाल ही में हुए स्ट्रोक का असर यह था कि उनकी आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे उनके शब्दों के नीचे पत्थर लुढ़क रहे हों। और जैसे-जैसे वे मुझसे अतीत के बारे में बात करते गए, निस्संदेह यह दिखाने के लिए कि उन्होंने अपनी स्मृति नहीं खोई है, उन्होंने उसे शोकपूर्ण ढंग से, फिर भी बिना किसी उदासी के, याद किया। वह अपने परिवार या अपने समूह के उन सदस्यों के नाम गिनाता रहा जो मर चुके थे, जाहिर तौर पर इसलिए नहीं कि उसे उनके चले जाने का दुख था, बल्कि इसलिए कि वह उनसे बच गया था और इस बात से संतुष्ट था; उनकी मृत्यु को याद करते हुए, वह अपने पुनरुत्थान के प्रति अधिक सचेत होता प्रतीत हुआ। उसने लगभग विजयी भाव से, लेकिन एकरस स्वर में, थोड़ी हकलाहट और एक प्रकार की गंभीर गूंज के साथ गिनाया: "हैनिबल डी ब्रेउटे, मर गया! एंटोइन डी मौची, मर गया! चार्ल्स स्वान, मर गया! एडलबर्ट डी मोंटमोरेंसी, मर गया! बैरन डी टैलीरैंड, मर गया! सोस्थीन डी डूडोविल, मर गया!" और हर बार "मृत" शब्द मृतकों पर मिट्टी के ढेर की तरह गिरता प्रतीत होता था, जो कब्र खोदने वाले के लिए और भी भारी होता था, जो उन्हें कब्र में और गहराई तक दबाना चाहता था।

ड्यूशेस डी लेटूरविले, जो लंबे समय से बीमार होने के कारण प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के स्वागत समारोह में नहीं जा रही थीं, उसी क्षण पैदल हमारे पास से गुजरीं और बैरन को देखकर, जिनके रोग के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी, रुककर उन्हें नमस्कार किया। लेकिन अपनी बीमारी के

कारण वे दूसरों की पीड़ा को बेहतर ढंग से नहीं समझ पा रही थीं, जिसे वे अधीरता और चिड़चिड़ेपन के साथ सहन कर रही थीं, जिसमें शायद दया की भावना भी थी। बैरन के अटपटे उच्चारण और कुछ शब्दों में हुई गलतियों को सुनकर और उनके हाथ हिलाने में हो रही कठिनाई को देखकर, उन्होंने बारी-बारी से जुपियन और मेरी ओर देखा, मानो वे इस भयावह घटना का कारण पूछ रही हों। जब हमने कोई उत्तर नहीं दिया, तो उन्होंने एम. डी चार्लस को एक लंबी, उदास और निंदा भरी निगाह से देखा, मानो उन्हें इस बात से चिढ़ हो कि उन्हें उनके साथ ऐसी असामान्य स्थिति में देखा गया है जैसे उन्होंने न तो टाई पहनी हो और न ही जूते। जब बैरन ने उच्चारण में एक और गलती की, तो डचेस की झुंझलाहट और आक्रोश बढ़ गया, और वह बैरन पर चिल्लाई: "पालामेडे?" उन चिड़चिड़े और सवालिया लहजे में जो उन लोगों में होता है जो एक पल भी इंतजार नहीं कर सकते और अगर कोई उन्हें तुरंत अंदर बुला ले और पूरी तरह से कपड़े न पहनने के लिए माफी मांगे, तो वे कड़वाहट से कहते हैं, "ओह, मुझे लगता है कि मैं आपको परेशान कर रही हूँ!" मानो जिसे वे परेशान कर रहे हैं उसने कुछ गलत किया हो। अंत में, वह और भी चिंतित भाव से बैरन से बोली: "आपको घर चले जाना चाहिए।"

एम. डी चार्लस कुर्सी पर बैठकर आराम करना चाहते थे, जबकि जुपियन और मैं कुछ कदम साथ चले। उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपनी जेब से एक किताब निकाली, जो मुझे प्रार्थना-पुस्तक जैसी लगी। जुपियन से बैरन के स्वास्थ्य के बारे में कुछ जानकारी पाकर मुझे कोई अफ़सोस नहीं हुआ। जुपियन ने कहा, "आपसे बात करके खुशी हुई, महाशय, लेकिन हम रोंड-पॉइंट से आगे नहीं जाएंगे। ईश्वर का शुक्र है, बैरन अब बेहतर हैं, लेकिन मैं उन्हें ज़्यादा देर तक अकेला नहीं छोड़ सकता। वे हमेशा की तरह ही हैं, बहुत दयालु हैं, दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे देते हैं और इतना ही

नहीं, वे आज भी उतने ही उत्साही हैं जैसे किसी युवा में होते हैं, और मुझे उन पर नज़र रखनी पड़ती है।" मैंने जवाब दिया, "और भी ज़्यादा, क्योंकि वे ठीक हो गए हैं। जब मुझे पता चला कि उनकी आँखों की रोशनी चली गई है, तो मुझे बहुत दुख हुआ।" "उसके लकवे का वास्तव में यही असर हुआ था, शुरू में तो उसे बिल्कुल दिखाई ही नहीं देता था। ज़रा सोचिए, इलाज के दौरान, जिससे उसे काफ़ी फ़ायदा हुआ, कई महीनों तक उसकी नज़र इतनी कमज़ोर रही मानो वो जन्म से ही अंधा हो।" "कम से कम, इससे आपकी निगरानी का कुछ हिस्सा तो अनावश्यक हो गया होगा।" "बिल्कुल भी नहीं! होटल पहुँचते-पहुँचते ही उसने मुझसे पूछा कि फलाँ-फलाँ कर्मचारी कैसा है। मैंने उसे यकीन दिलाया कि वे सब बुरे हैं, पर वह जानता था कि ऐसा नहीं हो सकता जैसा मैं कह रही हूँ और मैं उनमें से कुछ के बारे में झूठ बोल रही हूँ। फिर वही छोटी-मोटी चालाकी! और फिर उसे एक तरह का अंतर्ज्ञान हुआ, शायद किसी आवाज़ से, मुझे नहीं पता, और उसने मुझे किसी ज़रूरी काम पर भेज दिया। एक दिन—माफ़ करना, यह सब बताने के लिए, लेकिन क्योंकि तुम एक बार गलती से अपवित्रता के मंदिर में प्रवेश कर चुके हो, इसलिए मेरे पास तुमसे छिपाने के लिए कुछ नहीं है" (वैसे भी उसे राज़ खोलने में हमेशा एक अप्रिय संतुष्टि मिलती थी) "मैं उन झूठे ज़रूरी कामों में से एक से जल्दी वापस आ गई क्योंकि मुझे लगा कि यह जानबूझकर किया गया था, तभी जैसे ही मैं बैरन के कमरे के पास पहुँची, मैंने एक आवाज़ सुनी: 'क्या?' और बैरन का जवाब: 'क्या तुम्हारा मतलब है कि यह पहली बार है?'" मैंने बिना दरवाजा खटखटाए प्रवेश किया और मेरा आश्चर्य देखिए! बैरन, उस आवाज से भ्रमित हो गए जो वास्तव में उस उम्र के हिसाब से कहीं अधिक परिपक्व थी (और उस समय वे पूरी तरह से अंधे थे), जो पहले केवल वयस्क पुरुषों को ही पसंद करते थे, वे दस साल से कम उम्र के एक बच्चे

के साथ थे।

मुझे बताया गया कि उस दौरान वह लगभग हर दिन मानसिक अवसाद के दौरों का शिकार होता था, जिसकी विशेषता यह थी कि वह विषयांतर तो नहीं करता था, लेकिन वह उन तीसरे पक्षों के सामने, जिनकी उपस्थिति और आलोचना को वह भूल चुका था, जोर-जोर से उन विचारों को स्वीकार करता था जिन्हें वह आमतौर पर छिपाता था, जैसे कि जर्मन प्रेम। तो, युद्ध समाप्त होने के काफी समय बाद भी वह जर्मनों की पराजय पर शोक व्यक्त कर रहे थे, जिनमें उन्होंने खुद को भी शामिल किया और कड़वाहट से कहा: "हमें बदला लेना होगा। हमने अपने प्रतिरोध की शक्ति साबित कर दी है और हम सबसे संगठित थे।" या फिर उनके विचार कुछ और ही रूप ले लेते और वे क्रोध में चिल्लाते: "लॉर्ड X— या X— के राजकुमार को आकर मुझे फिर से वही न बताने दें जो उन्होंने उस दिन कहा था, क्योंकि मैं खुद को यह कहने से मुश्किल से रोक पाया, 'आप जानते हैं, क्योंकि आप भी उनमें से एक हैं, कम से कम उतने ही जितने मैं हूं।'" यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जब एम. डी चार्लस इस तरह से अपनी भड़ास निकालते थे, जब वे, जैसा कि कहा जाता है, पूरी तरह से होश में नहीं होते थे, तो इन जर्मन-समर्थक और अन्य बातों पर, उनके साथ मौजूद लोग, जैसे जुपियन या डचेस डी गुएरमांटेस, उनकी अविवेकी बातों को बीच में ही रोक देते थे और उनके शब्दों का एक जबरदस्ती लेकिन सम्मानजनक अर्थ निकाल देते थे, जो उनसे कम परिचित और अधिक विवेकहीन तीसरे व्यक्ति के लिए होता था। "हे भगवान!" जुपियन ने कहा, "मेरे पास दूर न जाने का अच्छा कारण था। देखो, वह एक माली लड़के से बातचीत शुरू कर रहा है। नमस्कार महोदय, बेहतर होगा कि मैं चला जाऊं, मैं अपने बीमार को एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ सकता; वह तो बिल्कुल बच्चा है।"

प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पहुँचने से कुछ देर पहले मैं फिर से गाड़ी से उतर गया और उस सुस्ती, उस थकावट के बारे में सोचने लगा, जिसके साथ मैंने पिछली शाम फ्रांस के सबसे खूबसूरत ग्रामीण इलाकों में से एक में पेड़ों पर छाई छाया और उजाले को अलग करने वाली रेलवे लाइन को देखने की कोशिश की थी। बेशक, उन विचारों से मैंने जो बौद्धिक निष्कर्ष निकाले थे, वे आज मेरी भावनाओं को इतनी बुरी तरह प्रभावित नहीं कर रहे थे, लेकिन वे वैसे ही बने रहे, क्योंकि हमेशा की तरह जब मैं अपनी आदतों से हटकर, किसी नए स्थान पर असामान्य समय पर जाता था, तो मुझे उससे एक जीवंत आनंद मिलता था।

आज, श्रीमती डी गुएरमांटेस के यहाँ स्वागत समारोह में जाने का सुख मुझे पूरी तरह से व्यर्थ लग रहा था, लेकिन अब जब मुझे पता था कि मुझे व्यर्थ सुखों के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा, तो उन्हें न स्वीकार करने का क्या फायदा? मैंने मन ही मन दोहराया कि इस वर्णन को करते समय मैंने उस उत्साह का अनुभव नहीं किया जो प्रतिभा का एकमात्र नहीं बल्कि पहला मानदंड है। अब मैं अपनी स्मृति से उन "स्नैपशॉट्स" को याद करने लगा, विशेष रूप से वेनिस में लिए गए स्नैपशॉट्स को, लेकिन इस शब्द का नाम सुनते ही वेनिस मेरे लिए किसी फोटो प्रदर्शनी की तरह उबाऊ हो गया और जो मैंने पहले देखा था उसे चित्रित करने में मुझे कल की तरह ही कोई रुचि या प्रतिभा नहीं दिखी, जिस तरह कल मैंने बड़ी बारीकी और उदासी से जो देखा था उसका वर्णन करने में नहीं दिखी थी। कुछ ही मिनटों में मेरे कई प्यारे दोस्त, जिनसे मैं इतने लंबे समय से नहीं मिला था, निस्संदेह मुझसे कहेंगे कि मैं खुद को अलग न करूँ और उनके साथ कुछ समय बिताऊँ। मेरे पास उन्हें अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं था क्योंकि अब मेरे पास इस बात का प्रमाण था कि मैं किसी काम का नहीं था, कि साहित्य अब मुझे कोई आनंद नहीं दे सकता था, चाहे

वह मेरी प्रतिभा की कमी के कारण हो या इसलिए कि यह उतना वास्तविक नहीं था जितना मैंने माना था।

जब मुझे बर्गोट की कही बात याद आई: "तुम बीमार हो, लेकिन तुम्हारे लिए अफ़सोस नहीं किया जा सकता क्योंकि तुम मन के सुखों का आनंद लेते हो," तो मुझे समझ आया कि वह कितना गलत था। इस नीरस स्पष्टता से मुझे कितना कम आनंद मिलता था। मैं यह भी कह सकता था कि अगर कभी मैंने सुखों का स्वाद चखा भी हो—मन के नहीं—तो मैंने उन्हें हमेशा किसी दूसरी स्त्री के साथ ही समाप्त कर दिया, इसलिए अगर भाग्य मुझे सौ साल का स्वस्थ जीवन भी दे दे, तो यह केवल एक सीधी रेखा में चल रहे जीवन में और लंबाई जोड़ना होगा, जिसे आगे बढ़ाने का कोई उद्देश्य नहीं है। जहाँ तक "मन के सुखों" की बात है, क्या मैं उन ठंडे और नीरस विचारों को ऐसा नाम दे सकता हूँ जिन्हें मेरी स्पष्ट दृष्टि या मेरा तार्किक तर्क आनंदहीन रूप से सारांशित करता है? लेकिन कभी-कभी ज्ञान हमें ठीक उसी क्षण बचाता है जब सब कुछ खोया हुआ लगता है; हमने हर दरवाजे पर दस्तक दी है और वे खाली ही खुलते हैं, जब तक कि अंत में हम अनजाने में उस एकमात्र दरवाजे से नहीं टकरा जाते जिसके माध्यम से हम उस राज्य में प्रवेश कर सकते हैं जिसे हमने सौ वर्षों से व्यर्थ खोजा है—और वह खुल जाता है।*

[* ले टेम्प्स रेट्रोवे के फ्रेंच पाठ में, खंड 1 यहीं समाप्त होता है।]

जिन पीड़ादायक विचारों का मैंने अभी ज़िक्र किया, उन्हें याद करते हुए मैं गुएरमांटेस के महल के प्रांगण में प्रवेश कर चुका था और अपनी व्यस्तता में मैं आती हुई गाड़ी पर ध्यान नहीं दे पाया। ठेले वाले की आवाज़ पर मुझे जल्दी से एक तरफ हटने का भी समय नहीं मिला और पीछे हटते हुए मैं कुछ असमान रूप से रखे पत्थरों से टकरा गया, जिनके पीछे एक कोच-हाउस था। जैसे ही मैंने खुद को संभाला, मेरा एक पैर बगल वाले

पत्थर से नीचे वाले पत्थर पर पड़ गया। उसी क्षण मेरी सारी निराशा गायब हो गई और मैं उसी आनंद से भर गया, जिसने मेरे जीवन के विभिन्न क्षणों में मुझे बालबेक की सैर के दौरान परिचित लगने वाले पेड़ों का दृश्य, मार्टिनविले के घंटाघरों का दृश्य, चाय में डूबी मेडेलिन की सुगंध और उन अनेक अन्य संवेदनाओं का अनुभव कराया था, जिनका मैंने ज़िक्र किया है और जिन्हें विंटेउइल की अंतिम रचनाओं ने संश्लेषित किया था। ठीक उसी क्षण जब मैंने मेडेलिन का स्वाद चखा, भविष्य के बारे में मेरी सारी आशंकाएँ, मेरे सारे बौद्धिक संदेह, सब दूर हो गए। मेरे साहित्यिक गुणों और यहाँ तक कि साहित्य की वास्तविकता को लेकर जो शंकाएँ मुझे कुछ देर पहले सता रही थीं, वे जादू की तरह गायब हो गईं। इस बार मैंने ठान लिया कि मैं इस बात को अनदेखा नहीं करूँगा कि बिना किसी नए तर्क, बिना किसी निश्चित परिकल्पना के, पिछली बार की अनसुलझी समस्याएँ कैसे महत्वहीन हो गईं, ठीक वैसे ही जैसे मेडेलिन का स्वाद चखते समय हुआ था। अब जो आनंद मुझे मिल रहा था, वह निस्संदेह वही आनंद था जो मुझे मेडेलिन खाते समय महसूस हुआ था, जिसका कारण मैंने तब खोजे जाने को टाल दिया था। दोनों छवियों में केवल भौतिक अंतर था। एक गहरा नीला रंग मेरी आँखों में छा गया, ताजगी और चकाचौंध भरी रोशनी का एहसास मुझे घेर लिया और उस अनुभूति को पकड़ने की चाह में, ठीक वैसे ही जैसे मेडेलिन का स्वाद चखते समय मैं हिलने की हिम्मत नहीं कर पाया था क्योंकि मैं उस चीज़ को याद करने की कोशिश कर रहा था जिसकी याद मुझे मेडेलिन से आई थी, मैं खड़ा रहा, निस्संदेह वहाँ खड़े लोगों के लिए उपहास का पात्र, उसी क्षण की हरकत को दोहराते हुए, एक पैर ऊँचे पत्थर पर और दूसरा नीचे वाले पर। महज उस हरकत को दोहराना व्यर्थ था; लेकिन अगर, गुएरमांटेस के स्वागत से बेखबर, मैं उस हरकत के साथ आने वाली

अनुभूति को फिर से महसूस करने में कामयाब हो जाता, तो फिर से वह मदहोश कर देने वाला और मायावी दृश्य धीरे से मुझमें समा जाता मानो कह रहा हो, "अगर तुम कर सको, तो मुझे पकड़ लो जब मैं तुम्हारे पास से गुज़र रहा हूँ, और उस खुशी के रहस्य को सुलझाने की कोशिश करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ।" और फिर, अचानक, मैंने उस वेनिस को पहचान लिया जिसे मेरे वर्णनात्मक प्रयास और स्मृति के बनावटी स्नैपशॉट याद दिलाने में नाकाम रहे थे; सेंट मार्क के बपतिस्माघर में दो असमान शिलाखंडों पर मैंने जो अनुभूति कभी महसूस की थी, वह मुझे वापस मिल गई थी और उस और अन्य दिनों की उन सभी अनुभूतियों से जुड़ गई थी जो भूले हुए वर्षों की श्रृंखला में अपनी जगह पर प्रतीक्षा कर रही थीं, जिनसे अचानक एक संयोग ने उन्हें जबरदस्ती बाहर निकाल दिया था। ठीक वैसे ही, छोटी मेडेलिन के स्वाद ने कॉम्ब्रे की याद दिला दी थी। लेकिन यह कैसे हुआ कि कॉम्ब्रे और वेनिस के इन दृश्यों ने मुझे एक पल में और दूसरे पल में एक ऐसी आनंदमय निश्चितता प्रदान कर दी जो अन्य प्रमाणों के बिना भी मृत्यु को मेरे लिए उदासीन बनाने के लिए पर्याप्त थी? मैंने स्वयं से यही प्रश्न पूछा और आज ही इसका उत्तर खोजने का निश्चय कर लिया। मैं गुएरमांटेस के महल में दाखिल हुआ, क्योंकि हम अक्सर अपनी आंतरिक आवश्यकताओं को उस भूमिका के आगे झुकने देते हैं जो हमें निभाने के लिए सौंपी जाती है, और उस दिन मुझे एक अतिथि के रूप में रहना था। पहली मंजिल पर पहुँचते ही एक नौकर ने मुझे बुफे से सटे एक छोटे से कमरे-पुस्तकालय में जाने का अनुरोध किया, जब तक कि उस समय चल रहा संगीत कार्यक्रम समाप्त न हो जाए, क्योंकि राजकुमारी ने आदेश दिया था कि प्रदर्शन के दौरान दरवाजे नहीं खोले जाने चाहिए। ठीक उसी क्षण एक दूसरी आशंका उत्पन्न हुई जिसने मुझे असमान पत्थरों से मिली आशंका को और पुष्ट किया और

मुझे अपने कार्य में लगे रहने के लिए प्रेरित किया। नौकर ने शोर न करने के अपने व्यर्थ प्रयास में एक चम्मच प्लेट से टकरा दी। असमान पत्थरों से मिली खुशी की ही एक लहर मेरे भीतर उमड़ पड़ी; इस बार मेरी अनुभूति बिलकुल अलग थी, भीषण गर्मी के साथ धुएं की गंध भी थी, जो आसपास के जंगल की ताज़ी हवा से कुछ हद तक कम हो रही थी। मुझे एहसास हुआ कि जो इतना सुखद प्रतीत हो रहा था, वह वही वृक्षों का समूह था जिसे मैंने रेलगाड़ी के डिब्बे में बीयर की बोतल खोलते समय देखना और वर्णन करना बहुत थकाऊ पाया था। एक तरह के भ्रम में, क्षण भर के लिए, जब तक मैंने खुद को संभाला नहीं, मुझे लगा कि प्लेट पर चम्मच की आवाज़ और रेल कर्मचारी के हथौड़े की आवाज़ में इतना गहरा अंतर था, जो ट्रेन के रुके होने पर वृक्षों के समूह के सामने डिब्बे के पहिये पर कुछ कर रहा था, कि मैं सचमुच वहीं था। ऐसा लग रहा था मानो उस दिन मुझे मेरी निराशा से बाहर निकालने और साहित्य में मेरा विश्वास वापस जगाने वाले संकेत कई गुना बढ़ गए हों, क्योंकि प्रिंस डी गुएरमांटेस की सेवा में लंबे समय से कार्यरत एक नौकर ने मुझे पहचान लिया और मुझे बुफे में जाने से बचाने के लिए पुस्तकालय में मेरे लिए कुछ केक और संतरे का रस का गिलास ले आया। मैंने उसके दिए हुए रुमाल से अपना मुँह पोंछा और तुरंत ही, 'हज़ार और एक रात' के उस पात्र की तरह, जिसने अनजाने में वह अनुष्ठान पूरा किया जिससे उसके सामने एक शांत, अदृश्य, प्रतिभा प्रकट हुई, जो उसे बहुत दूर ले जाने के लिए तैयार थी, एक नया नीला दृश्य मेरी आँखों के सामने से गुज़रा; लेकिन इस बार यह शुद्ध और खारा था और नीले थनों जैसी आकृतियों में बदल गया। यह प्रभाव इतना प्रबल था कि जिस क्षण को मैं जी रहा था वह अतीत के साथ एक हो गया प्रतीत हुआ और (उस दिन की तुलना में और भी अधिक भ्रमित होकर जब मैं सोच रहा था कि क्या राजकुमारी डी

गुएरमांटेस मेरा स्वागत करेंगी या सब कुछ पिघल जाएगा), मुझे विश्वास हो गया कि नौकर ने अभी-अभी किनारे की ओर खिड़की खोली है और सब कुछ मुझे नीचे जाकर ज्वार के समय समुद्र की दीवार पर चलने के लिए आमंत्रित कर रहा है; जिस नैपकिन से मैं अपना मुँह पोंछ रहा था, उसमें ठीक वैसी ही कड़कपन थी जैसी उस नैपकिन में थी जिससे मैंने बालबेक पहुँचने के पहले दिन खिड़की के सामने बड़ी मुश्किल से अपना मुँह पोंछा था। अब, गुएरमांटेस हवेली के उस पुस्तकालय में, उस नैपकिन की तहों में हरे-नीले रंग का सागर मोर की पूंछ की तरह फैला हुआ था। मैं केवल उन रंगों से ही नहीं, बल्कि उस पूरे पल से आनंदित था जिसने उन्हें जन्म दिया था। वह पल जिसकी मेरी पूरी जिंदगी ने शायद कामना की थी, जिसे थकान या उदासी की भावना ने मुझे बालबेक में कभी अनुभव करने से रोक दिया था, लेकिन अब, शुद्ध, निराकार और बाहरी धारणाओं की अपूर्णताओं से मुक्त होकर, वह मुझे आनंद से भर रहा था। वे जो संगीत बजा रहे थे, वह किसी भी क्षण समाप्त हो सकता था, और मुझे ड्राइंग रूम में जाना पड़ता। इसलिए मैंने खुद को मजबूर किया कि मैं उन समान संवेदनाओं की प्रकृति को जल्द से जल्द समझने की कोशिश करूँ जो मैंने कुछ ही मिनटों के भीतर तीन बार महसूस की थीं, ताकि मैं उनसे कुछ सीख सकूँ। मैंने इस बात पर गौर नहीं किया कि किसी वस्तु के बारे में हमारी वास्तविक धारणा और उसे कृत्रिम अर्थ देने के बीच कितना बड़ा अंतर होता है, क्योंकि मुझे याद था कि स्वान कितनी सहजता से उन दिनों की बात करता था जब उसे प्यार किया जाता था। शब्दों के पीछे वह कुछ और ही महसूस करता था, और विंटेइल के उस छोटे से वाक्य ने उसे कितना दर्द पहुँचाया था, क्योंकि उसने उसे वही दिन फिर से याद दिला दिए थे जैसे उसने पहले महसूस किए थे। मैं यह भी अच्छी तरह समझता था कि असमान पत्थरों और मेडेलिन के स्वाद ने मेरे मन में जो भावनाएँ

जगाई थीं, उनका वेनिस, बालबेक और कॉम्ब्रे की उन छवियों से कोई संबंध नहीं था जिन्हें मैंने एक समान स्मृति के सहारे बार-बार याद करने की कोशिश की थी। इसके अलावा, मुझे एहसास हुआ कि जीवन कुछ खास पलों में इतना सुंदर दिखने के बावजूद भी सामान्य लग सकता है, क्योंकि ऐसा करने पर व्यक्ति उसे उसके वास्तविक स्वरूप से बिल्कुल अलग आधारों पर आंकता है, उन छवियों के आधार पर जिनमें जीवन नहीं होता। मैंने इसके अतिरिक्त यह भी देखा कि प्रत्येक वास्तविक अनुभव के बीच जो अंतर होता है—वे अंतर जो यह समझाते हैं कि जीवन का एक समान स्वरूप इससे मेल क्यों नहीं खा सकता—संभवतः इस कारण से हो सकता है: कि हमारे जीवन के किसी विशेष काल में बोले गए हमारे सबसे छोटे शब्द, हमारे द्वारा व्यक्त की गई सबसे तुच्छ अभिव्यक्ति, उन चीजों के प्रतिबिंब से घिरी हुई थीं, उन पर प्रतिबिंबित होती थीं जो तार्किक रूप से उनसे असंबंधित थीं, वास्तव में उस बुद्धि द्वारा उनसे अलग थीं जिसे तर्क के उद्देश्यों के लिए उनकी आवश्यकता नहीं थी, लेकिन जिसके बीच में—यहाँ, एक देहाती रेस्तरां की फूलों की दीवार की सजावट पर गुलाबी शाम की चमक, भूख की भावना, यौन इच्छा, विलासिता का आनंद—वहाँ, सुबह के आकाश के नीले रंग के नीचे लहरें संगीतमय वाक्यांशों को घेरे हुए हैं जो आंशिक रूप से जलपरियों के कंधों की तरह उभरते हैं—सबसे सरल कार्य या हावभाव मानो हजारों जारों में बंद रहता है, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग रंगों, गंधों और तापमान की चीजों से भरा होता है; यह भी ध्यान देने योग्य है कि बढ़ते वर्षों के दौरान, जब हम लगातार बदलते रहते हैं, चाहे सपने में ही सही या विचारों में, समय-समय पर रखे गए वे फूलदान बिल्कुल अलग-अलग स्तरों पर स्थित होते हैं और विचित्र रूप से बदलते मौसमों का आभास कराते हैं। यह सच है कि ये परिवर्तन हमें बिना जाने ही घटित हुए हैं; लेकिन अचानक लौट

आई स्मृति और हमारे वर्तमान व्यक्तित्व के बीच की दूरी, ठीक उसी तरह जैसे अलग-अलग वर्षों और स्थानों की दो स्मृतियों के बीच होती है, इतनी अधिक है कि उनकी विशिष्टता को छोड़ दें तो भी, उनकी तुलना करना असंभव हो जाता है। हाँ, यदि कोई स्मृति, विस्मृति के कारण, वर्तमान से कोई संबंध स्थापित करने में असमर्थ रही हो, यदि वह अपने स्थान पर, अपने समय में ही अटकी रही हो, यदि वह किसी घाटी की गहराई में या किसी पर्वत की चोटी पर अपनी दूरी, अपना एकांत बनाए रखी हो, तो वह हमें अचानक एक नई हवा में सांस लेने का अनुभव कराती है, मात्र इसलिए कि वह हवा हमने पहले भी ली है, एक ऐसी हवा जो कवियों द्वारा व्यर्थ में स्वर्गिक कहे जाने वाली हवा से भी अधिक शुद्ध है, जो नवीनीकरण का वह गहरा अहसास केवल इसलिए प्रदान करती है क्योंकि उसे पहले भी लिया जा चुका है, क्योंकि सच्चे स्वर्ग वे स्वर्ग हैं जिन्हें हम खो चुके हैं। और इस मार्ग पर चलते हुए, मैंने पाया कि जिस कलाकृति को मैं अब करने के लिए तैयार महसूस कर रहा था, उसे सचेत रूप से अपने मन में रखे बिना बनाना बहुत कठिन होगा, क्योंकि मुझे इसके प्रत्येक क्रमिक भाग को अलग-अलग प्रकार की सामग्री से बनाना होगा। समुद्र किनारे की यादों के लिए उपयुक्त सामग्री वेनिस की दोपहरों की यादों से बिल्कुल अलग होगी, जिसके लिए एक नई, विशेष पारदर्शिता और मधुरता वाली, सघन, ताज़ी और गुलाबी सामग्री की आवश्यकता होगी। अगर मैं रिवेबेल की शामों का वर्णन करना चाहूँ, तो वह सामग्री फिर से अलग होगी, जहाँ बगीचे की ओर खुलने वाले भोजन कक्ष में गर्मी धीरे-धीरे कम हो रही थी, धरती पर उतर रही थी और गुलाबों से ढकी रेस्तरां की दीवारें डूबते सूरज की आखिरी किरण से जगमगा रही थीं और दिन के उजाले के आखिरी रंग आकाश में ठहरे हुए थे। मैं इन सभी चीजों को जल्दी से भूल गया, क्योंकि मुझे उस खुशी के कारण को खोजने की

तीव्र इच्छा हो रही थी, जिसमें एक अटूट निश्चितता का अनूठा चरित्र था, जिसकी खोज मैंने पहले स्थगित कर दी थी। और मैंने उन विभिन्न सुखद अनुभूतियों की तुलना करके कारण खोजना शुरू किया, जिनमें एक समान गुण था कि वे एक ही समय में वर्तमान क्षण में और समय के अंतराल में महसूस की जा रही थीं। इसी समान गुण के कारण थाली पर चम्मच की आवाज, पक्की सड़क की असमानता, मेडेलिन का स्वाद, अतीत को वर्तमान पर थोप रहे थे और मुझे यह तय करने में असमंजस में डाल रहे थे कि मैं किस समय में जी रहा हूँ। वास्तव में, मेरे भीतर का वह अस्तित्व जिसने इस अनुभूति को महसूस किया, उसने अतीत और वर्तमान में अपनी समानता को महसूस किया, अपने काल-अंतर स्वरूप को महसूस किया, एक ऐसा अस्तित्व जो केवल तभी प्रकट होता है जब वर्तमान और अतीत की समानता के माध्यम से वह स्वयं को उस एकमात्र परिवेश में पाता है जिसमें वह विद्यमान हो सकता है और चीजों के सार का आनंद ले सकता है, अर्थात् समय से परे। इससे यह स्पष्ट हुआ कि मेरी मृत्यु के विषय में मेरी आशंकाएँ उस क्षण से क्यों समाप्त हो गईं जब मैंने अनजाने में छोटी मेडेलिन का स्वाद पहचाना, क्योंकि उस क्षण मैं एक काल-अंतर स्वरूप था और परिणामस्वरूप भविष्य के उतार-चढ़ाव से उदासीन था। वह सत्ता कभी मेरे पास नहीं आई थी, कभी प्रकट नहीं हुई थी, सिवाय तब जब मैं निष्क्रिय था और क्षणिक आनंद से परे एक क्षेत्र में था; यही मेरी वह स्थिति थी जब भी उस चमत्कारिक घटना ने मुझे वर्तमान से बचने में सक्षम बनाया था। केवल उस सत्ता में ही मुझे बीते दिनों को, बीते हुए समय को, पुनः प्राप्त करने की शक्ति थी, जिसके सामने मेरी स्मृति और बुद्धि के सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते थे।

और शायद, अगर अभी-अभी मुझे लगा कि बर्गोट ने आध्यात्मिक जीवन के आनंद के बारे में झूठ बोला था, तो इसका कारण यह था कि मैंने तब

आध्यात्मिक जीवन का नाम उन तार्किक तर्कों को दे दिया था जिनका उससे कोई संबंध नहीं था, जिनका उस चीज़ से कोई संबंध नहीं था जो अब मुझमें विद्यमान थी—ठीक वैसे ही जैसे मुझे समाज और जीवन थकाऊ लगते थे क्योंकि मैं उन्हें सत्यहीन स्मृतियों के आधार पर आंक रहा था, जबकि अब जब अतीत का एक वास्तविक क्षण मुझमें तीन अलग-अलग बार पुनर्जन्म ले चुका है, तो मेरे भीतर जीने की ऐसी तीव्र इच्छा है।

महज अतीत का एक क्षण? शायद उससे कहीं अधिक; कुछ ऐसा जो अतीत और वर्तमान दोनों में समान होने के कारण, दोनों से कहीं अधिक आवश्यक है।

मेरे जीवन में कितनी ही बार वास्तविकता ने मुझे निराश किया है, क्योंकि जिस क्षण मैंने उसे अनुभव किया, मेरी कल्पना, जो सौंदर्य का आनंद लेने का मेरा एकमात्र साधन थी, उस पर लागू नहीं हो सकी, क्योंकि यह अटल नियम है कि हम केवल उसी की कल्पना कर सकते हैं जो अनुपस्थित है। और अब अचानक इस कठोर नियम का प्रभाव निष्प्रभावी हो गया, प्रकृति की एक अद्भुत युक्ति से अधर में लटक गया, जिसने मुझे एक अनुभूति करा दी—चम्मच और हथौड़े की आवाज़, असमान पक्की सड़क के पत्थर—एक साथ अतीत में, जिसने मेरी कल्पना को उसे समझने की अनुमति दी, और वर्तमान में, जिसमें शोर से मेरी इंद्रियों को लगे आघात ने कल्पना के सपनों और उस चीज़ के बीच संपर्क स्थापित कर दिया जिससे वे आमतौर पर वंचित रहते हैं, अर्थात् अस्तित्व का विचार—और उस युक्ति के कारण मेरे भीतर के उस अस्तित्व को समय के एक अंश को, उसके शुद्ध सार में, एक पल के लिए सुरक्षित करने, अलग करने और स्थिर करने की अनुमति दी, जिसे वह कभी पूरी तरह से समझ नहीं सकता। जब मैंने आनंद की एक ऐसी सिहरन के साथ वह

ध्वनि सुनी, जो चम्मच के थाली से टकराने, हथौड़े के पहिये पर चोट करने, गुएरमांटेस के महल के आंगन और सेंट मार्क के बपतिस्मागृह में बिछे पत्थरों की असमानता जैसी ध्वनियों में एक साथ सुनाई देती थी, तो ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मेरे भीतर का वह अस्तित्व केवल वस्तुओं के सार से ही पोषित हो सकता है और उन्हीं में अपना जीवन और आनंद पाता है। यह वर्तमान के इंद्रियों द्वारा अवलोकन में क्षीण हो जाता है, बुद्धि द्वारा निष्फल कर दिए गए भविष्य की प्रतीक्षा में, जो इच्छाशक्ति द्वारा अतीत और वर्तमान के टुकड़ों से निर्मित होता है, जिससे यह वास्तविकता को और भी अधिक हटा देता है, केवल उसी को रखता है जो उपयोगितावादी उद्देश्यों के संकीर्ण मानवीय लक्ष्य की पूर्ति करता है। लेकिन जब अतीत में सुनी और महसूस की गई कोई ध्वनि, कोई सुगंध फिर से वर्तमान और अतीत में एक साथ सुनी और महसूस की जाए, वास्तविक होते हुए भी यथार्थ, आदर्श होते हुए भी अमूर्त न हो, तो वस्तुओं में छिपा हुआ स्थायी और विशिष्ट सार तुरंत मुक्त हो जाता है और हमारा सच्चा अस्तित्व, जो लंबे समय से मृत प्रतीत होता था, लेकिन अन्य मायनों में ऐसा नहीं था, इस दिव्य पोषण के कारण जागृत और पुनर्जीवित हो जाता है। समय के क्रम से मुक्त एक क्षण ने हममें उसी क्रम से मुक्त मनुष्य का पुनर्निर्माण किया है, ताकि वह इसके प्रति सचेत हो सके। और वास्तव में हम उसकी खुशी में उसके विश्वास को समझते हैं, भले ही एक मेडेलिन का मात्र स्वाद तार्किक रूप से इसे उचित न ठहराता हो; हम समझते हैं कि मृत्यु का नाम उसके लिए अर्थहीन है, क्योंकि समय से परे होने के कारण वह भविष्य से कैसे डर सकता है? लेकिन वह भ्रम जिसने मुझे अतीत के एक ऐसे क्षण के निकट लाया जो वर्तमान से मेल नहीं खाता था, वह टिक नहीं सकता। निश्चित रूप से हम स्मृति के दृश्यों को इच्छाशक्ति से लंबा कर सकते हैं, जो किसी सचित्र

पुस्तक को पलटने से अधिक कुछ नहीं है। इस प्रकार, पहले जब मैं पेरिस में अपने घर के धूप से जगमगाते आंगन से पहली बार प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर जा रहा था, तो एक पल के लिए मेरा ध्यान उस चौक पर केंद्रित हो जाता था जहाँ कॉम्ब्रे का चर्च स्थित था, और दूसरे पल बालबेक के समुद्र तट पर। जैसे मैं किसी संग्राहक के अहंकारी आनंद के साथ उन विभिन्न स्थानों के जलरंग चित्रों की एक पुस्तिका पलटकर और उन स्मृति-चित्रों को सूचीबद्ध करके अपना मनोरंजन कर रहा होता, वैसे ही मैं कह सकता था: "आखिरकार, मैंने अपने जीवन में कुछ खूबसूरत चीजें देखी हैं।" निःसंदेह, उस स्थिति में, मेरी स्मृति विभिन्न संवेदनाओं को व्यक्त कर रही होती, लेकिन वह केवल उनके समरूप तत्वों को ही संयोजित कर रही होती। यह उन तीन यादों से बिल्कुल अलग था जिनका मैंने अभी-अभी अनुभव किया था, जिन्होंने मेरे व्यक्तित्व के बारे में मुझे और अधिक सकारात्मक धारणा देने के बजाय, इसके विपरीत, लगभग मुझे इसके अस्तित्व पर ही संदेह करने पर मजबूर कर दिया था। इस प्रकार, जिस दिन मैंने मेडेलिन को गर्म काढ़े में डुबोया, उस स्थान के केंद्र में जहाँ मैं उस समय मौजूद था (चाहे वह स्थान, जैसा कि तब था, पेरिस में मेरा कमरा हो या, जैसा कि आज है, प्रिंस डी गुएरमांटेस का पुस्तकालय), मेरे भीतर और आसपास एक छोटे से क्षेत्र में एक अनुभूति (डूबी हुई मेडेलिन का स्वाद, धातु जैसी ध्वनि, असमान सीढ़ियों का एहसास) व्याप्त थी, जो उस स्थान पर भी समान थी जहाँ मैं उस समय था और साथ ही दूसरे स्थान पर भी (मेरी चाची लियोनी का कमरा, रेलवे का डिब्बा, सेंट मार्क का बपतिस्माघर)। और ठीक उसी क्षण जब मैं इस प्रकार सोच-विचार कर रहा था, तभी एक हुक्के की तीखी आवाज़ सुनाई दी, जो बालबेक में भ्रमण नौकाओं पर सुनाई देने वाली उन लंबी चीखों जैसी थी। इसने मुझे (जैसा कि एक बार पेरिस के एक बड़े रेस्तरां में, एक

आलीशान भोजन कक्ष को आधा खाली, गर्मी के मौसम जैसा गर्म देखकर हुआ था) एक ऐसी अनुभूति से कहीं अधिक अनुभव कराया, जैसी अनुभूति मुझे बालबेक में एक दोपहर को हुई थी। उस समय, सभी मेजें लिनेन और चांदी के बर्तनों से समरूप रूप से सजी थीं, बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ समुद्र पर धीरे-धीरे डूबते सूरज और उसमें तैरते जहाजों के दृश्य के लिए खुली थीं। मुझे बस खिड़की के फ्रेम को पार करना था, जो मेरे टखने से थोड़ा ही ऊँचा था, ताकि मैं अल्बर्टीन और उसकी सहेलियों के साथ समुद्र की दीवार पर चल सकूँ। यह केवल उस अतीत की अनुभूति की प्रतिध्वनि या दोहराव नहीं था जो हुक्के की आवाज़ ने मुझे महसूस कराई थी, बल्कि यह स्वयं वह अनुभूति थी। उस स्थिति में, और पिछली सभी स्थितियों में भी, सामान्य अनुभूति ने अपने चारों ओर पूर्व स्थान को पुनः सृजित करने का प्रयास किया, जबकि वह भौतिक स्थान जहाँ अनुभूति घटी, उसने नॉर्मन समुद्रतट और रेलवे तटबंध से बने पेरिस के एक आलीशान घर में इस आरोहण का पुरजोर विरोध किया। बालबेक के समुद्री भोजन कक्ष में, जहाँ ढलते सूरज को ग्रहण करने के लिए वेदी के वस्त्रों की तरह सजे दमिश्क के लिनेन का प्रयोग किया गया था, उसने गुएरमांटेस के आलीशान घर की दृढ़ता को भंग करने, उसके दरवाजों को तोड़ने का प्रयास किया और मेरे चारों ओर के सोफे को एक पल के लिए कंपकंपा दिया, ठीक वैसे ही जैसे एक अन्य अवसर पर पेरिस के रेस्तरां की मेजों ने किया था। उन सभी पुनरुत्थानों में, उन सभी में समान अनुभूति द्वारा उत्पन्न दूरस्थ स्थान, एक पहलवान की तरह, एक क्षण के लिए भौतिक स्थान से भिड़ गया। भौतिक स्थान हमेशा विजेता और हमेशा पराजित ही प्रतीत होता था, और यही बात मुझे और भी सुंदर लगती थी। इतना अधिक कि मैं चाय के प्याले के साथ उस ऊबड़-खाबड़ फुटपाथ पर भी परमानंद की अवस्था में डूबा रहा, उनके प्रकट होने के

क्षण को संजोने की कोशिश करता रहा, उनके भागते ही उसे पुनः प्रकट करने का प्रयास करता रहा, उस कॉम्ब्रे, उस वेनिस, उस बालबेक को, जो आक्रमण करते हुए भी पराजित हुए, जो मेरी आँखों के सामने आए और तुरंत ही मुझे एक नए दृश्य के बीच में छोड़ गए, जो अतीत से अभी भी प्रभावित था। और यदि भौतिक स्थान एक ही क्षण में विजेता न होता, तो मुझे लगता है कि मैं बेहोश हो जाता। अतीत के ये पुनरुत्थान, उनके अंतिम क्षण के लिए, इतने पूर्ण होते हैं कि वे न केवल हमारी आँखों को सामने के कमरे को देखना बंद करने के लिए मजबूर करते हैं ताकि हम पेड़ों से घिरी रेल पटरी या बढ़ते ज्वार को देख सकें, बल्कि वे हमारी नाक को उन स्थानों की हवा में सांस लेने के लिए मजबूर करते हैं जो फिर भी बहुत दूर हैं, हमारी इच्छा को उन विविध विकल्पों में से चुनने के लिए मजबूर करते हैं, हमारे पूरे व्यक्तित्व को खुद को उनसे घिरा हुआ मानने के लिए मजबूर करते हैं, या कम से कम उनके और भौतिक दुनिया के बीच ठोकर खाने के लिए मजबूर करते हैं, उस विस्मयकारी अनिश्चितता में जिसका अनुभव हम नींद की दहलीज पर एक अवर्णनीय दृष्टि से करते हैं। अतः, मेरे भीतर के उस अस्तित्व ने, जो तीन-चार बार पुनर्जीवित हुआ था, जो अनुभव किए थे, वे शायद समय से छीने गए जीवन के अंश थे, जो अनंत काल से देखने पर भी क्षणभंगुर प्रतीत होते थे। फिर भी, मुझे यह अहसास था कि मेरे जीवन के उन दुर्लभ क्षणों में मुझे जो सुख प्राप्त हुआ था, वही एकमात्र सार्थक और वास्तविक सुख था। क्या दूसरों में अवास्तविकता का संकेत उनकी हमें संतुष्ट करने में असमर्थता में निहित नहीं है, जैसे कि सामाजिक सुखों के मामले में, जो सर्वोत्तम स्थिति में भी अस्वास्थ्यकर भोजन से उत्पन्न होने वाली असुविधा का कारण बनते हैं, जब मित्रता लगभग एक दिखावा मात्र होती है, क्योंकि चाहे वह किसी भी नैतिक कारण से इसकी तलाश करे, वह कलाकार जो किसी मित्र से

बातचीत करने के लिए एक घंटे का काम छोड़ देता है, जानता है कि वह वास्तविकता का त्याग एक भ्रम के लिए कर रहा है (मित्र केवल उस मीठे पागलपन के अर्थ में मित्र होते हैं जो जीवन में हम पर हावी हो जाता है और जिसके आगे हम झुक जाते हैं, हालांकि हमारे मन के भीतर हम जानते हैं कि यह एक पागल की गलती है जो फर्नीचर को जीवित समझकर उससे बातें करता है) उस संतुष्टि के बाद आने वाली उदासी के कारण—ठीक वैसे ही जैसे मैंने उस दिन महसूस किया था जब मेरी पहली बार अल्बर्टीन से मुलाकात हुई थी, जब मैंने कुछ हासिल करने के लिए, जो कि वास्तव में बहुत बड़ा नहीं था, खुद को इतनी मेहनत की—उस लड़की से परिचय करने के लिए—जो मुझे केवल इसलिए महत्वहीन लगी क्योंकि मैंने इसे प्राप्त कर लिया था। अल्बर्टीन से प्रेम करने पर मुझे जो गहरा आनंद मिलता था, वह भी वास्तव में उसके न रहने पर मेरे गहरे दुख के सामने फीका पड़ गया। जब मुझे पूरा यकीन था कि वह उसी दिन लौट आएगी जब वह ट्रोकाडेरो से आई थी, तब भी मुझे एक अस्पष्ट ऊब महसूस होती थी। वहीं, चम्मच की थाली की आवाज़ या चाय के स्वाद में गहराई से उतरते ही मेरी खुशी और भी बढ़ जाती थी कि मेरी चाची लियोनी का कमरा और बाद में पूरा कॉम्ब्रे शहर, उसके दोनों किनारे, मेरे कमरे में समा गए हैं। अब मैंने ठान लिया था कि मैं चीजों के सार पर ध्यान केंद्रित करूँगी, उसे अपने लिए परिभाषित करूँगी, लेकिन कैसे और किस माध्यम से? निःसंदेह, उस क्षण जब मेज के नैपकिन की कठोरता ने मुझे बालबेक की याद दिला दी और एक पल के लिए मेरी कल्पना को न केवल उस सुबह के समुद्र के दृश्य से, बल्कि कमरे की सुगंध से, हवा की तेज़ी से, नाश्ते की भूख से, विभिन्न सैरों के बीच डगमगाने से, उन सभी चीजों से जो अंतरिक्ष की अनुभूति से जुड़ी थीं, जैसे पंखों वाले पहिए अपनी उन्मादी दौड़ में, निःसंदेह, उस क्षण जब दो फुटपाथों की

असमानता ने वेनिस और सेंट मार्क के मेरे शुष्क और कच्चे दृश्यों को सभी दिशाओं और आयामों में विस्तारित कर दिया, और उन सभी भावनाओं को जो मैंने तब अनुभव की थीं, चौक को चर्च से, लैंडिंग-स्टेज को चौक से, नहर को लैंडिंग-स्टेज से, हर उस चीज़ से जो आँख देख सकती थी, उस पूरी लालसा की दुनिया से जो वास्तव में केवल आत्मा द्वारा ही अनुभव की जाती है, मुझे वेनिस जाने का प्रलोभन हुआ, यदि खराब मौसम के कारण नहीं, तो कम से कम बालबेक जाने का। लेकिन मैं उस विचार पर एक पल भी नहीं रुका; मुझे न केवल यह अहसास हुआ कि देश वह नहीं थे जो उनके नाम से मेरे मन में छवि बनती थी और मेरी कल्पना उन्हें दर्शाती थी, बल्कि यह भी कि केवल मेरे सपनों में, और वह भी मुश्किल से, एक ऐसी जगह जो शुद्ध पदार्थ से बनी थी, मेरे सामने स्पष्ट और उन सामान्य चीजों से अलग फैली हुई थी जिन्हें हम देख और छू सकते हैं। लेकिन स्मृति की उन दूसरी तरह की छवियों के संबंध में भी, मैं जानता था कि जब मैं बालबेक गया था तो मुझे वहाँ कोई सुंदरता नहीं मिली थी और स्मृति द्वारा मुझमें छोड़ी गई सुंदरता मेरी दूसरी यात्रा पर वैसी नहीं रही थी। मैंने स्पष्ट रूप से यह सिद्ध कर दिया था कि वास्तविकता से वह अपेक्षा करना असंभव है जो मेरे भीतर है। सेंट मार्क के चौक में या बालबेक की मेरी दूसरी यात्रा के दौरान या गिलबर्ट से मिलने के लिए टैनसनविले लौटने पर मुझे खोया हुआ समय नहीं मिला और वह यात्रा जिसने मुझे एक बार फिर इस भ्रम से लुभाया कि ये पुरानी छापें मेरे बाहर मौजूद हैं और एक निश्चित स्थान पर स्थित हैं, वह साधन नहीं हो सकती जिसकी मुझे तलाश थी। मैं खुद को फिर से लुभाने नहीं दूंगा; मेरे लिए यह जानना आवश्यक था कि क्या वास्तव में वह चीज़ हासिल करना संभव है जिसे मैं, स्थानों और लोगों से हमेशा निराश होने के बावजूद, (विंटेइल की एक संगीत रचना के बावजूद, जो इसके विपरीत

प्रतीत होती थी) असंभव मानता था। इसलिए, मैं उस रास्ते पर एक और अनुभव करने का प्रयास नहीं करने जा रहा था जिसे मैं लंबे समय से जानता था कि वह कहीं नहीं ले जाता। जिन छापों को मैं स्थायी बनाने का प्रयास कर रहा था, वे केवल प्रत्यक्ष आनंद के संपर्क में आने पर ही लुप्त हो सकते थे, जो उन्हें जन्म देने में असमर्थ था। एकमात्र तरीका था उन्हें वहीं अधिक पूर्ण रूप से जानने का प्रयास करना जहाँ वे मौजूद थे, अर्थात् अपने भीतर, और ऐसा करके उनकी गहराई को उजागर करना। मैंने बालबेक में कभी कोई आनंद नहीं जाना, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अल्बर्टीन के साथ रहने में नहीं जाना, सिवाय उस आनंद के जो बाद में अनुभव किया जा सकता था। और यदि अपने जीवन की अब तक की निराशाओं का पुनर्कथन करते हुए, वे मुझे यह विश्वास दिलाती हैं कि इसकी वास्तविकता कर्म के अलावा कहीं और निहित होनी चाहिए, और यदि अपने जीवन के उतार-चढ़ावों का अनुसरण करते हुए, मैं उन्हें केवल संयोग का विषय नहीं मानता, तो मैं भली-भांति जानता हूँ कि यात्रा की निराशा और प्रेम की निराशा अलग-अलग निराशाएँ नहीं हैं, बल्कि भिन्न-भिन्न पहलू हैं जो उन परिस्थितियों के अनुसार, भौतिक सुख और प्रभावी कर्म की उस अक्षमता के कारण हम पर थोपे जाते हैं, जिसे समझना हमारे लिए कठिन है। चम्मच की आवाज़ या मेडेलिन के स्वाद से उत्पन्न होने वाले उस अलौकिक आनंद पर फिर से विचार करते हुए, मैंने स्वयं से कहा: "क्या यह वही आनंद था जो सोनाटा के उस छोटे से वाक्यांश में निहित था, जिसे स्वान प्रेम के आनंद के साथ जोड़कर भ्रमित हो गए थे और जिसे वे कलात्मक रचना में नहीं पा सके थे; वह आनंद जिसने मुझे सोनाटा के उस छोटे से वाक्यांश से भी कहीं अधिक अलौकिक चीज़ के पूर्वाभास के रूप में प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित किया था, उस सप्तक के लाल और रहस्यमय आकर्षण के प्रति जिसे स्वान नहीं जानते थे,

क्योंकि कई अन्य लोगों की तरह उनकी भी मृत्यु हो गई थी, इससे पहले कि उनके लिए निर्धारित सत्य प्रकट हो पाता?" इसके अलावा, इससे उन्हें कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि वह वाक्यांश एक आकर्षण का प्रतीक तो हो सकता था, लेकिन वह उस शक्ति का सृजन नहीं कर सकता था जो स्वान को वह लेखक बना देती जो वे नहीं थे। फिर भी, कुछ क्षण बाद और स्मृति के उन पुनरुत्थानों पर विचार करने के बाद, मैंने स्वयं को याद दिलाया कि एक अन्य तरीके से, अस्पष्ट छापें, कॉम्ब्रे और गुएरमांटेस के समय से ही, कभी-कभी मेरे चिंतन की मांग करती थीं, ठीक उसी तरह जैसे वे स्मृतिजन्य पुनरुत्थान करते हैं, लेकिन उनमें कोई पूर्व अनुभव नहीं बल्कि एक नया सत्य, एक अनमोल छवि निहित थी जिसे मैं उस प्रकार के प्रयासों से खोजने का प्रयास कर रहा था जैसे कोई व्यक्ति किसी चीज को याद करने के लिए करता है, मानो हमारे सबसे प्यारे विचार संगीत की धुनों की तरह हों जो हमें बिना सुने ही आ सकती हैं और जिन्हें हम स्वयं को सुनने और लिखने के लिए विवश करते हैं। मैंने संतोष के साथ स्वयं को याद दिलाया (क्योंकि इससे सिद्ध हुआ कि मैं तब भी वैसा ही था और यह मेरे स्वभाव का एक मूलभूत गुण था) और इस विचार से दुखी भी हुआ कि तब से मैंने कोई प्रगति नहीं की थी। मुझे याद आया कि कॉम्ब्रे में भी मैं अपने मन को एक सम्मोहक छवि पर केंद्रित करने का प्रयास कर रहा था - एक बादल, एक त्रिकोण, एक घंटाघर, एक फूल, एक कंकड़ - यह मानते हुए कि शायद उन प्रतीकों के नीचे कुछ और भी है जिसे मुझे खोजने का प्रयास करना चाहिए, एक विचार जिसे ये वस्तुएँ चित्रलिपि के अक्षरों की तरह व्यक्त कर रही थीं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता था कि वे केवल भौतिक वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। निःसंदेह, इस तरह का विश्लेषण कठिन था, लेकिन केवल यही सत्य का कुछ अंश प्रकट कर सकता था। क्योंकि जो सत्य बुद्धि प्रत्यक्ष और स्पष्ट दृष्टि से दिन के

उजाले में समझती है, वे उन सत्यों की तुलना में कम गहन और कम आवश्यक होते हैं जो जीवन हमें अवचेतन रूप से उस अंतर्ज्ञान के माध्यम से बताता है जो केवल तभी भौतिक होता है जब वह हमारी इंद्रियों और उस आत्मा के माध्यम से हम तक पहुँचता है जिसे हम जागृत कर सकते हैं। दरअसल, इस मामले में भी, जैसा कि दूसरे मामले में था, चाहे बात मार्टिनविले के घंटाघर के दृश्य से उत्पन्न छापों की हो या दो असमान पत्थरों की यादों की, या मेडेलिन के स्वाद की, यह आवश्यक था कि मैं उन्हें अनेक नियमों और विचारों के प्रतीक के रूप में व्याख्यायित करने का प्रयास करूँ, यानी अपनी संवेदना को उसकी अस्पष्टता से निकालकर उसे बौद्धिक रूप देने का प्रयास करूँ। और कलाकृति के सृजन के अलावा मेरे पास और क्या साधन थे? इसके परिणाम पहले से ही मेरे मन पर भारी पड़ रहे थे; चाहे बात चम्मच की आवाज़ और मेडेलिन के स्वाद जैसी यादों की हो या उन वास्तविकताओं की जिन्हें रूपों में व्यक्त किया गया था और जिनका अर्थ मैं अपने मस्तिष्क में खोज रहा था, जहाँ घंटाघर, जंगली जड़ी-बूटियाँ, और न जाने क्या-क्या मिलकर एक जटिल सजी हुई छवि बनाते थे, उनकी पहली विशेषता यह थी कि मैं उन्हें चुनने के लिए स्वतंत्र नहीं था, वे मुझे वैसे ही दिए गए थे जैसे वे थे। और मुझे लगा कि यही उनकी प्रामाणिकता की मुहर होनी चाहिए। मैं आंगन में उन दो पत्थरों को खोजने नहीं गया था जिनसे टकराया था। लेकिन यह संयोग ही था, उस अनुभूति की अनिवार्यता थी जिसने अतीत की सच्चाई को सहेजा, उन छवियों को मुक्त किया जिन्हें इसने पुनर्जीवित किया, क्योंकि हम इसके प्रकाश और वास्तविकता की पुनः प्राप्ति के आनंद की ओर ऊपर उठने के प्रयास को महसूस करते हैं। वह संयोग ही समकालीन छापों की पूरी श्रृंखला की सच्चाई का रक्षक है, जिसे वह अपने साथ लाता है, प्रकाश और छाया, जोर और चूक, स्मृति और विस्मरण के उस अचूक अनुपात के

साथ, जिसके बारे में सचेत स्मृति या अवलोकन अनभिज्ञ होते हैं।
मेरे भीतर मौजूद उन अज्ञात संकेतों की पुस्तक (ऐसा प्रतीत होता था मानो वे उभरे हुए संकेत हों, क्योंकि मेरा एकाग्र ध्यान, जैसे-जैसे मेरे अवचेतन मन की खोज में मग्न होता गया, उनसे टकराता गया, उनके चारों ओर एक गोताखोर की तरह चक्कर लगाता गया) को कोई भी नियम के अनुसार पढ़ने में मेरी मदद नहीं कर सकता था, क्योंकि उसका पढ़ना एक सृजनात्मक क्रिया है जिसमें कोई हमारा स्थान नहीं ले सकता और कोई सहयोग नहीं कर सकता। और कितने लोग इसे लिखने से मुंह मोड़ लेते हैं, कितने कार्यों को कोई व्यक्ति इससे बचने के लिए नहीं करता! हर घटना, चाहे वह ड्रेफस कांड हो या युद्ध, लेखकों को उस पुस्तक को न समझने के बहाने देती थी; वे न्याय की विजय का दावा करना चाहते थे, राष्ट्र की नैतिक एकता को पुनर्जीवित करना चाहते थे और उनके पास साहित्य के बारे में सोचने का समय नहीं था। लेकिन ये केवल बहाने थे क्योंकि या तो उनमें प्रतिभा, अर्थात् सहज ज्ञान, नहीं था या वह प्रतिभा, अर्थात् सहज ज्ञान, खो चुका था। क्योंकि सहज ज्ञान ही कर्तव्य का मार्गदर्शन करता है और बुद्धि उससे बचने के बहाने प्रदान करती है। लेकिन कला में बहाने नहीं चलते, इरादों का कोई महत्व नहीं होता; कलाकार को हमेशा अपनी सहज प्रवृत्ति का पालन करना चाहिए, यही बात कला को सबसे वास्तविक, जीवन का सबसे कठोर विद्यालय और सच्चा अंतिम निर्णय बनाती है। वह पुस्तक जिसे समझना सबसे कठिन है, वही एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसे वास्तविकता ने निर्देशित किया है, वही एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसे वास्तविकता ने स्वयं हमारे भीतर अंकित किया है। जीवन ने हमारे भीतर जो भी विचार छोड़े हैं, उनका भौतिक स्वरूप, हम पर पड़े उनके प्रभाव का निशान, वही उनकी सत्यता का आवश्यक प्रमाण है। बुद्धि द्वारा निर्मित विचारों में केवल

तार्किक सत्य होता है, एक संभावित सत्य होता है; उनका चयन मनमाना होता है। हमारी एकमात्र पुस्तक वह है जिसे हमने स्वयं नहीं बनाया है, जिसके पात्र पहले से ही चित्रित हैं। ऐसा नहीं है कि हमारे द्वारा निर्मित विचार तार्किक रूप से सही नहीं हो सकते, बल्कि यह है कि हम नहीं जानते कि वे सत्य हैं या नहीं। केवल अंतर्ज्ञान, चाहे उसकी संगति कितनी भी कमजोर हो, चाहे उसका स्वरूप कितना भी असंभावित हो, सत्य का मापदंड है और इसी कारण मन द्वारा स्वीकार किए जाने योग्य है क्योंकि केवल वही सक्षम है, यदि मन उस सत्य को निकाल सके, तो उसे अधिक पूर्णता तक पहुंचा सकता है और उसे बिना किसी मिलावट के आनंद दे सकता है। लेखक के लिए अंतर्ज्ञान वही है जो विद्वान के लिए प्रयोग होता है, फर्क सिर्फ इतना है कि विद्वान के मामले में बुद्धि का कार्य पहले होता है और लेखक के मामले में बाद में। जिसे हमने अपने व्यक्तिगत प्रयास से स्पष्ट नहीं किया, जिसे पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, वह हमारा नहीं है। केवल वही हमारे भीतर से निकलता है जिसे हम स्वयं अपने भीतर के अंधकार से निकालते हैं और जो दूसरों के लिए अज्ञात है। और जिस प्रकार कला जीवन को सटीक रूप से पुनर्गठित करती है, उसी प्रकार हमारे भीतर के उन सत्यों को, जिन्हें हम प्राप्त करते हैं, कविता का वातावरण घेर लेता है, उस रहस्य की मिठास जो उस धुंधली रोशनी के समान है जिससे हम गुजरे हैं। ढलते सूरज की एक तिरछी किरण मुझे तुरंत उस समय की याद दिला देती है जिसके बारे में मैंने कभी दोबारा सोचा भी नहीं था। बचपन में, मेरी चाची लियोनी को बुखार था, जिसे डॉक्टर परसेपीड ने टाइफाइड समझा था, और उन्होंने मुझे एक हफ्ते के लिए चर्च स्क्वायर में यूलाली के छोटे से कमरे में रखा था, जहाँ फर्श पर सिर्फ एक चटाई थी और खिड़की पर एक पतला सा पर्दा था जो धूप में गुनगुनाता था, जिसकी मुझे आदत नहीं थी। और जब मैं सोचती हूँ कि

कैसे उस बूढ़ी नौकरानी के छोटे से कमरे की याद ने अचानक मेरे बीते जीवन में एक ऐसा विस्तार जोड़ दिया जो उसके दूसरे पहलू से कितना अलग और कितना सुखद था, तो मुझे इसके विपरीत, सबसे आलीशान महलों में होने वाली सबसे भव्य पार्टियों की याद आती है, जिनका मेरे मन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा था। यूलाली के कमरे में एकमात्र कष्टदायक बात यह थी कि पुल के पास होने के कारण, रात में गुजरती ट्रेनों का शोर सुनाई देता था। लेकिन चूंकि मुझे पता था कि यह गर्जना नियंत्रित मशीनों से आ रही थी, इसलिए इसने मुझे उतना भयभीत नहीं किया जितना कि प्रागैतिहासिक काल में पास में ही जंगली स्वतंत्रता में घूम रहे एक विशालकाय जानवर की दहाड़ ने किया होता।

इस प्रकार मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि कलाकृति की उपस्थिति में हम किसी भी प्रकार से स्वतंत्र नहीं हैं, कि हम इसे अपनी इच्छा से नहीं बनाते बल्कि यह हमारे भीतर पूर्व-विम्र विद्यमान होती है और हम इसे खोजने के लिए विवश हैं, मानो यह प्रकृति का नियम हो, क्योंकि यह हमसे छिपी हुई भी है और आवश्यक भी। लेकिन क्या वह खोज, जो कला हमें करने में सक्षम बनाती है, हमारे लिए सबसे अनमोल नहीं है? वह खोज जो हममें से अधिकांश के लिए हमेशा अज्ञात रहती है, हमारा सच्चा जीवन, वह वास्तविकता जिसे हमने स्वयं अनुभव किया है और जो उस वास्तविकता से इतनी भिन्न है जिसे हमने माना है कि जब संयोगवश हमें इसका प्रामाणिक प्रकटीकरण मिलता है तो हम आनंद से भर जाते हैं? मुझे इस बात का पूरा यकीन तथाकथित यथार्थवादी कला की असत्यता से था, जो इतनी भ्रामक नहीं होती यदि हमने जीवन के दौरान अपनी भावनाओं को इस प्रकार भिन्न अभिव्यक्ति देने की आदत न डाली होती कि कुछ समय बाद हम उसे ही वास्तविकता मान लेते हैं। मुझे लगा कि मेरे लिए उन विविध साहित्यिक सिद्धांतों में उलझना आवश्यक नहीं है

जिन्होंने मुझे कुछ समय के लिए परेशान किया था—विशेष रूप से वे सिद्धांत जो ड्रेफस कांड के समय आलोचना द्वारा विकसित किए गए थे और जिन्होंने युद्ध के दौरान फिर से अपना प्रभाव जमा लिया था—जो कलाकार को "अपने एकांतवास से बाहर निकालने" और तुच्छ या भावुक विषयों को अपनी सामग्री बनाने के बजाय, महान श्रमिक वर्ग आंदोलनों या यदि भीड़ नहीं तो कम से कम महत्वहीन आलसी लोगों के बजाय—("मैं स्वीकार करता हूँ," ब्लोच ने कहा, "कि इन निष्फल लोगों के चित्र मेरे लिए उदासीन हैं")—महान बुद्धिजीवियों या नायकों का चित्रण करने के लिए प्रेरित करते थे। उनके तार्किक सार पर विचार करने से पहले ही, ये सिद्धांत मुझे उन लोगों के बीच हीनता का प्रमाण प्रतीत होते थे जो उन्हें मानते थे, ठीक उसी तरह जैसे एक अच्छे संस्कार वाले बच्चे को जब किसी मित्र के घर दोपहर के भोजन के लिए भेजा जाता है, तो वह किसी को यह कहते हुए सुनता है: "हम खुलकर बोलते हैं, हम स्पष्टवादी हैं," और समझ जाता है कि ये शब्द एक ऐसे नैतिक गुण को दर्शाते हैं जो एक शुद्ध और सरल अच्छे कार्य से हीन है जिसके बारे में कुछ नहीं कहा जाता। वास्तविक कला स्वयं को प्रकट नहीं करती, क्योंकि वह मौन में अर्जित की जाती है। इसके अलावा, जो लोग इस प्रकार सिद्धांत गढ़ते हैं, वे तैयार अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं जो उन मंदबुद्धि लोगों की अभिव्यक्तियों से मिलती-जुलती होती हैं जिनकी वे निंदा करते हैं। और शायद भाषा की गुणवत्ता से ही हम यह आंकलन कर सकते हैं कि बौद्धिक और नैतिक कार्य किस स्तर तक पहुंचा है, न कि किसी विशेष सौंदर्यशास्त्र से। लेकिन इसके विपरीत, भाषा की यह गुणवत्ता (और हम चरित्र के नियमों का अध्ययन एक गंभीर और एक तुच्छ विषय में समान रूप से कर सकते हैं, जैसे एक शरीर रचना विज्ञानी एक मंदबुद्धि व्यक्ति के शरीर पर शरीर रचना विज्ञान के नियमों का अध्ययन उसी तरह कर

सकता है जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के शरीर पर; महान नैतिक नियम और रक्त परिसंचरण या गुर्दे से उत्सर्जन को नियंत्रित करने वाले नियम व्यक्तियों के बौद्धिक मूल्य में कोई खास अंतर नहीं करते) जिसके बारे में सिद्धांतकार सोचते हैं कि वे इससे बच सकते हैं, सिद्धांतकारों की प्रशंसा करने वाले लोग इसे कोई खास बौद्धिक मूल्य का नहीं मानते और इसे समझने के लिए, इसे सीधे शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता होती है क्योंकि वे इसे कल्पना की सुंदरता से नहीं समझ पाते। इसीलिए लेखक को बौद्धिक रचनाएँ लिखने का वह घिनौना प्रलोभन होता है। एक बड़ी बेहूदगी। जिस रचना में सिद्धांत होते हैं, वह उस वस्तु के समान है जिस पर मूल्य अंकित होता है। इसके अलावा, यह मूल्य केवल उस मूल्य को व्यक्त करता है जो साहित्य में तार्किक तर्क से कम हो जाता है। हम तर्क करते हैं, अर्थात् हमारा मन भटकता है, हर बार जब हमारा साहस हमें उस अंतर्ज्ञान का अनुसरण करने के लिए विवश नहीं करता जो अंततः उसके स्थिरीकरण, उसकी अपनी वास्तविकता की अभिव्यक्ति में समाप्त होता है। अब मुझे अहसास हुआ कि जिस वास्तविकता को व्यक्त किया जाना चाहिए, वह विषय की दिखावट में नहीं, बल्कि उस अंतर्ज्ञान की उस गहराई तक प्रवेश करने की क्षमता में निहित है जहाँ दिखावट का महत्व कम हो जाता है, जैसा कि थाली पर चम्मच की ध्वनि, मेज के नैपकिन की कठोरता से प्रतीकित होता है, जो मेरे आध्यात्मिक नवीनीकरण के लिए कई मानवीय, देशभक्तिपूर्ण, अंतर्राष्ट्रीय वार्तालापों से कहीं अधिक मूल्यवान थे। उन दिनों मैंने सुना था कि जितनी अधिक शैली, उतना ही अधिक जीवन का साहित्य। कल्पना की जा सकती है कि एम. डी नॉरपोइस के "बांसुरी वादकों के विरुद्ध" कितने सरल सिद्धांत युद्ध के बाद से फिर से फले-फूले होंगे। जिन लोगों में कलात्मक संवेदनशीलता का अभाव है, यानी भीतर की वास्तविकता के प्रति समर्पण की कमी है, वे

कला के बारे में चाहे कितनी भी तर्कशक्ति रखते हों, और चाहे वे राजनयिक हों या वर्तमान की "वास्तविकताओं" से जुड़े वित्तपोषक ही क्यों न हों, वे आसानी से मान लेंगे कि साहित्य एक प्रकार का बौद्धिक खेल है जो भविष्य में धीरे-धीरे समाप्त होता चला जाएगा। उनमें से कुछ लोग उपन्यास को एक प्रकार का सिनेमाई जुलूस बनाना चाहते थे। यह धारणा बेतुकी थी। ऐसी सिनेमाई दृष्टि से बढ़कर कोई भी चीज़ हमें उस वास्तविकता से दूर नहीं करती जिसे हम अपने भीतर अनुभव करते हैं। अभी जैसे ही मैं इस पुस्तकालय में दाखिल हुआ, मुझे गोनकोर्ट्स की उन सुंदर मूल प्रतियों के बारे में कही गई बातें याद आ गईं जो यहाँ मौजूद हैं और मैंने खुद से वादा किया कि जब तक मैं यहाँ बंद हूँ, मैं उन्हें देखूंगा। और अपनी बात पर कायम रहते हुए, मैंने एक-एक करके उन अनमोल किताबों को उठाया, उन पर ज्यादा ध्यान दिए बिना। तभी, अनजाने में मैंने उनमें से एक किताब, जॉर्ज सैंड द्वारा लिखित 'फ्रांकोइस ले चैम्पी', खोली और मुझे ऐसा लगा जैसे कोई अप्रिय भाव मेरे विचारों से मेल नहीं खा रहा हो। तभी अचानक मुझे एक ऐसी भावना का अहसास हुआ जिससे मेरी आँखों में लगभग आँसू आ गए। यह ठीक वैसा ही था जैसे मुर्दाघर में अंतिम संस्कार करने वाले लोग देश की सेवा करने वाले एक व्यक्ति के ताबूत को नीचे उतार रहे हों और उसका बेटा कब्र के पास से गुजर रहे अंतिम मित्रों का हाथ थामे, तभी अचानक खिड़कियों के नीचे तुरहियों की गूंज सुनकर वह भयभीत हो जाए, क्योंकि उसे लगता है कि यह उसके दुख का अपमान करने के लिए किया गया एक मज़ाक है। वहीं, अब तक संयमित रहने वाला दूसरा व्यक्ति अपने आँसू नहीं रोक पाता क्योंकि उसे एहसास होता है कि वह जिस संगीत को सुन रहा है वह एक रेजिमेंट का संगीत है जो उसके शोक में शामिल है और उसके पिता के अवशेषों को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहती है। प्रिंस डी गुएरमांटेस के

पुस्तकालय में एक पुस्तक का शीर्षक पढ़ते ही मुझे ऐसा ही दुखद अनुभव हुआ था। उस शीर्षक ने मुझे यह एहसास दिलाया कि साहित्य वास्तव में हमें रहस्य का वह संसार प्रदान करता है जो मुझे अब उसमें नहीं मिल रहा था। फिर भी, फ्रांकोइस ले चैम्पी कोई बहुत उल्लेखनीय पुस्तक नहीं थी, लेकिन यह नाम, गुएरमांटेस के नाम की तरह, उन नामों से भिन्न था जिन्हें मैंने बाद में जाना था। जब मेरी माँ ने इसे मुझे पढ़कर सुनाया था, तब जो कुछ समझ से परे लग रहा था, वह इसके शीर्षक से जागृत हो गया। ठीक उसी प्रकार जैसे गुएरमांटेस का नाम (जब मैंने गुएरमांटेस परिवार को लंबे समय से नहीं देखा था) मेरे लिए सामंतवाद के संपूर्ण स्वरूप को समाहित करता था, ठीक उसी प्रकार फ्रांकोइस ले चैम्पी उपन्यास के सार को समाहित करता था—जॉर्ज सैंड के उबाऊ उपन्यासों में समाहित सामान्य विचारों को क्षण भर के लिए दरकिनार कर देता था। किसी रात्रिभोज में, जहाँ विचार हमेशा सतही होते हैं, मैं निस्संदेह फ्रांकोइस ले चैम्पी और गुएरमांटेस परिवार के बारे में इस तरह बात कर सकता था मानो उनमें से किसी का भी कॉम्ब्रे से कोई संबंध न हो। लेकिन जब, जैसा कि इस क्षण था, मैं अकेला था, तो मैं और भी गहरे चिंतन में डूब गया। उस समय यह विचार कि समाज में मेरी जान-पहचान वाली एक विशेष व्यक्ति, श्रीमती डी गुएरमांटेस की चचेरी बहन थी, यानी एक जादुई लालटेन स्लाइड पर दिखने वाले पात्र की चचेरी बहन, मुझे समझ से परे लगा। ठीक वैसे ही जैसे, मैंने जो सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ी थीं, वे इस असाधारण फ्रांकोइस ले चैम्पी के बराबर ही थीं, यह कहना भी गलत होगा, हालांकि वे श्रेष्ठ थीं। यह एक पुरानी बचकानी धारणा थी जिससे मेरे बचपन और परिवार की यादें गहराई से जुड़ी हुई थीं और जिसे मैंने पहले तो पहचाना ही नहीं था। पहले ही क्षण मैंने गुस्से से खुद से पूछा कि यह अजनबी कौन है जिसने मुझ पर अत्याचार किया है, और वह अजनबी मैं

ही था, वह बच्चा जो मैं कभी था, जिसे पुस्तक ने मेरे भीतर पुनर्जीवित कर दिया था। मुझमें केवल उस बच्चे को पहचानकर, पुस्तक ने उसे तुरंत पुकारा था, जो केवल उसकी आँखों से देखा जाना चाहता था, केवल उसके दिल से प्यार पाना चाहता था और केवल उससे बात करना चाहता था। और वह किताब जो मेरी माँ ने मुझे कॉम्ब्रे में लगभग सुबह तक पढ़कर सुनाई थी, उस रात का सारा आकर्षण मेरे लिए आज भी बरकरार रखे हुए थी। ब्रिचोट के एक मुहावरे का प्रयोग करें तो, जॉर्ज सैंड की कलम (वे अक्सर कहते थे कि किताब "जीवंत कलम" से लिखी जाती है) मुझे वैसी जादुई कलम नहीं लगी जैसी मेरी माँ को लंबे समय तक लगती थी, जब तक कि उन्होंने अपनी साहित्यिक रुचियों को मुझसे प्रभावित नहीं किया। लेकिन यह एक ऐसी कलम थी जिसे मैंने अनजाने में ही विद्युतीकृत कर दिया था, जैसे स्कूली बच्चे कभी-कभी मनोरंजन के लिए करते हैं, और अब कॉम्ब्रे की हज़ारो छोटी-छोटी चीज़ें, जिन्हें मैंने इतने लंबे समय से नहीं देखा था, सहजता से उछल पड़ीं और यादों से गूंजती एक अंतहीन श्रृंखला में चुंबक की तरह खिंच गईं। कुछ रहस्य-प्रेमी मन यह मानना पसंद करते हैं कि वस्तुएँ उन आँखों की छाप संजो कर रखती हैं जिन्होंने उन्हें देखा है, कि स्मारक और चित्र हमें एक ऐसे अदृश्य आवरण के नीचे दिखाई देते हैं जिसे सदियों से अनगिनत उपासकों के चिंतनशील प्रेम ने उनके चारों ओर बुन रखा है। वह भ्रम तब सच हो जाएगा यदि वे उसे हम सभी के लिए मौजूद एकमात्र वास्तविकता के दायरे में, यानी अपनी स्वयं की संवेदनशीलता के दायरे में स्थानांतरित कर दें।

हाँ, इस अर्थ में और केवल इसी अर्थ में; लेकिन इससे कहीं अधिक, क्योंकि यदि हम किसी ऐसी वस्तु को पुनः देखते हैं जिसे हमने पहले देखा था, तो वह हमारे अतीत के साथ-साथ उन सभी छवियों को भी हमारे सामने ला देती है जिनसे वह वस्तु हमारे भीतर समाई हुई थी। ऐसा

इसलिए है क्योंकि वस्तुएँ—जैसे लाल आवरण में लिपटी कोई पुस्तक—जैसे ही हम उन्हें देखते हैं, हमारे भीतर अमूर्त हो जाती हैं, उस समय की हमारी चिंताओं या भावनाओं के समान स्वभाव धारण कर लेती हैं और उनसे अविभाज्य रूप से जुड़ जाती हैं। बीते दिनों की किसी पुस्तक में पढ़ा गया नाम अपने अक्षरों में उस क्षण की तीव्र हवा और चमकीली धूप को समाहित कर लेता है जब हम उसे पढ़ते हैं। सबसे साधारण भोजन से मिलने वाली हल्की सी अनुभूति में, जैसे कॉफी और दूध की गंध में, हम सुहावने मौसम की उस धुंधली आशा को पुनः प्राप्त कर लेते हैं जिसने हमें तब आकर्षित किया था जब दिन निकल रहा था और सुबह का आकाश अनिश्चित था; सूर्य की एक किरण सुगंधों, ध्वनियों, क्षणों, विभिन्न भावों और मौसमों से भरा एक पात्र है। यह वह सार है जिसे कला को सार्थक रूप में व्यक्त करना चाहिए और यदि वह इसमें विफल रहती है, तो भी इसकी विफलता से एक सबक लिया जा सकता है (जबकि यथार्थवाद की सफलताओं से कभी कुछ नहीं लिया जा सकता) अर्थात् वह सार कुछ हद तक व्यक्तिपरक और अव्यवहारिक है।

इससे भी बढ़कर, किसी विशेष काल में देखी गई कोई वस्तु, पढ़ी गई कोई पुस्तक, केवल उस समय के परिवेश से ही नहीं जुड़ी रहती; वह उतनी ही निष्ठा से हमारे साथ जुड़ी रहती है जितनी निष्ठा से हम उस समय थे, और उसे केवल उस संवेदनशीलता द्वारा ही पुनः प्राप्त किया जा सकता है जो व्यक्ति को उसके उस समय के स्वरूप में पुनर्स्थापित करती है। यदि कभी चिंतन में मैं पुस्तकालय में फ़्रांस्वा ले शैम्पी की पुस्तक उठा लूँ, तो तुरंत मेरे भीतर एक बच्चा जागृत हो उठता है और मेरी जगह ले लेता है, जिसे केवल फ़्रांस्वा ले शैम्पी नामक उस पुस्तक को पढ़ने का अधिकार है और जो उसे उसी प्रकार पढ़ता है जैसे उसने उस समय पढ़ा था, बगीचे के मौसम की उसी अनुभूति के साथ, देशों और जीवन के बारे

में उन्हीं पुराने सपनों के साथ, कल की उसी चिंता के साथ। यदि मैं किसी अन्य काल की वस्तु देखूँ, तो एक और युवा व्यक्ति प्रकट होगा। और मेरा आज का व्यक्तित्व केवल एक परित्यक्त खदान है जो मानता है कि उसमें जो कुछ भी है वह एकसमान और नीरस है, लेकिन जिससे स्मृति, प्राचीन ग्रीस के एक मूर्तिकार की तरह, अनगिनत मूर्तियाँ उत्पन्न करती है। मैं कहता हूँ, हम हर चीज़ को दोबारा देखते हैं, क्योंकि किताबें, इस मायने में वस्तुओं की तरह व्यवहार करती हैं, उनके आवरण के खुलने के तरीके से, कागज़ की गुणवत्ता से, वे अपने भीतर वेनिस की मेरी तत्कालीन कल्पना या वहाँ जाने की मेरी इच्छा की उतनी ही जीवंत स्मृति को संजो कर रख सकती हैं, जितनी कि वाक्य स्वयं। बल्कि उससे भी अधिक जीवंत, क्योंकि वाक्य कभी-कभी एक बाधा बन जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे किसी मित्र की तस्वीर जिसे देखने के बाद याद करने की अपेक्षा उसके बारे में सोचने से ही उसकी याद बनी रहती है। निश्चित रूप से मेरी युवावस्था की कई किताबों के मामले में, यहाँ तक कि दुर्भाग्यवश, स्वयं बर्गोट की किताबों के मामले में भी, जब मैंने उन्हें किसी थकी हुई शाम को उठाया, तो ऐसा लगा जैसे मैं अलग-अलग दृश्य देखकर और बीते दिनों के वातावरण में साँस लेकर आराम पाने की उम्मीद में ट्रेन में सवार हो गया हूँ। अक्सर ऐसा होता है कि लंबे समय तक पढ़ने से वांछित स्मृति का अनुभव बाधित हो जाता है। बर्गोट की एक किताब है (इस पुस्तकालय में मौजूद प्रति में राजकुमार के प्रति एक चापलूसी भरा और बेहद घिसा-पिटा समर्पण था) जिसे मैंने कुछ समय पहले एक सर्दी के दिन पढ़ा था जब मैं गिल्बर्ट से नहीं मिल पा रहा था, और मुझे वे पन्ने नहीं मिले जिनसे मुझे कभी इतना प्यार था। कुछ शब्दों ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वे वही पन्ने हैं, लेकिन वे नहीं थे। वह सुंदरता कहाँ गई जो मुझे तब उनमें मिलती थी? फिर भी, जिस दिन मैंने इसे पढ़ा

था, उस दिन चैंप्स एलिसीज़ को ढकने वाली बर्फ आज भी उस किताब को ढके हुए है। मैं उसे आज भी देख सकता हूँ। और इसी कारण, यदि मैं राजकुमार डी गुएरमांटेस की तरह एक पुस्तक प्रेमी बनने के लिए प्रेरित होता, तो मैं केवल अपने तरीके से ही एक पुस्तक प्रेमी होता, एक ऐसा व्यक्ति जो पुस्तक के उचित मूल्य से स्वतंत्र सुंदरता की तलाश करता है और जो संग्राहकों के लिए उन पुस्तकालयों को जानने में निहित है जिनसे वह गुजरी है, कि यह किसी खास घटना के घटित होने पर किसी खास शासक को, किसी खास हस्ती को दी गई थी, और इसकी बिक्री से लेकर बिक्री तक के सफर का अनुसरण करने में निहित है; एक ऐतिहासिक अर्थ वाली पुस्तक की वह सुंदरता मुझसे छिपी नहीं रहती। परन्तु मैं उस सुंदरता को अपने जीवन के इतिहास से, यानी एक पुस्तक प्रेमी के रूप में नहीं, बल्कि अधिक दृढ़ इच्छाशक्ति से निकाल पाता। और अक्सर ऐसा होता कि मैं उस सुंदरता को किसी भौतिक पुस्तक से नहीं, बल्कि फ्रांकोइस ले चैम्पी जैसी कृति से जोड़ता, जिसे मैंने पहली बार कॉम्ब्रे स्थित अपने छोटे से कमरे में उस रात देखा था, जो शायद मेरे जीवन की सबसे मधुर और सबसे दुखद रात थी, जब (उस समय जब रहस्यमयी गुएरमांटेस मेरे लिए बहुत दुर्गम प्रतीत होते थे) मैंने अपने माता-पिता से वह पहला त्याग प्राप्त किया था, जिससे मेरे स्वास्थ्य और इच्छाशक्ति में गिरावट की शुरुआत हुई, एक कठिन कार्य का त्याग, जो हर गुजरते दिन के साथ और अधिक पीड़ादायक होता गया—एक ऐसा कार्य जिसे मैंने आज उन्हीं गुएरमांटेस के पुस्तकालय में पुनः आरंभ किया है, उस सबसे अद्भुत दिन जब न केवल मेरे विचारों की पूर्व की खोजें, बल्कि मेरे जीवन का उद्देश्य और शायद कला का उद्देश्य भी प्रकाशित हुआ। इसके अलावा, मुझे किताबों की प्रतियों में जीवंत रुचि लेने में सक्षम होना चाहिए था। किसी कृति का पहला संस्करण मेरे लिए अन्य संस्करणों से कहीं अधिक

मूल्यवान होता, लेकिन पहले संस्करण से ही मैं उस संस्करण को समझ पाता जिसे मैंने पहली बार पढ़ा था। मैं मूल संस्करणों की तलाश करता, लेकिन मेरा तात्पर्य उन पुस्तकों से होता जिनसे मुझे मौलिक अनुभव प्राप्त हुआ था। क्योंकि बाद के अनुभव अब मौलिक नहीं रह जाते। मैं पुराने उपन्यासों की जिल्दें इकट्ठा करता, लेकिन वे वे दिन होते जब मैंने अपने पहले उपन्यास पढ़े थे, वे दिन जब मेरे पिता अक्सर कहते थे, "सीधे बैठो"। जैसे वह पोशाक जिसमें हमने किसी स्त्री को पहली बार देखा था, वैसे ही वे मुझे उस समय के अपने प्रेम को पुनः प्राप्त करने में मदद कर सकते थे, उस सुंदरता को जिसे मैंने कई छवियों से प्रतिस्थापित कर दिया था, जो अब कम प्रिय होती जा रही थीं; उसे पुनः पाने के लिए, मैं, जो अब वह स्वयं नहीं हूँ जिसने इसे महसूस किया था, उस स्वयं को स्थान देना होगा जो मैं तब था, ताकि वह उस बात को याद कर सके जो केवल वही जानता था, जो आज का स्वयं नहीं जानता। इस प्रकार जो पुस्तकालय मैं इकट्ठा करूँ, उसका मूल्य और भी अधिक होगा, क्योंकि वेनिस के कॉम्ब्रे में पढ़ी गई मेरी पुरानी पुस्तकें, सेंट-हिलैरे के चर्च और ग्रैंड कैनाल पर सैन जियोर्जियो मैगियोर के तल पर खड़ी नीलमणि से जड़ी गोंडोला जैसी भव्य चित्रों से सजी स्मृति से समृद्ध होकर, उन पदकों से सजी पांडुलिपियों और ऐतिहासिक बाइबलों के योग्य हो जाएँगी जिन्हें संग्राहक कभी पाठ पढ़ने के लिए नहीं खोलता, बल्कि केवल उन रंगों से मंत्रमुग्ध होने के लिए खोलता है जिनसे फूकेट के किसी प्रतिद्वंद्वी ने उन्हें सजाया है और जो कृति का सारा मूल्य हैं। फिर भी, उन पुस्तकों को, जिन्हें मैंने पहले केवल उन चित्रों को देखने के लिए पढ़ा था जो तब उन्हें सुशोभित नहीं करते थे, खोलना मुझे इतना खतरनाक लगता है कि उस अर्थ में भी, जिसे मैं समझता हूँ, मैं पुस्तकप्रेमी बनने के लिए प्रलोभित नहीं होऊँगा। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मन द्वारा छोड़ी गई छवियाँ

कितनी आसानी से मिट जाती हैं। यह पुरानी छवियों को नई छवियों से बदल देता है जिनमें पुनरुत्थान की वही शक्ति नहीं होती। और अगर मेरे पास आज भी फ़्रांस्वा ले शैम्पी की वह किताब होती, जिसे मेरी माँ ने एक दिन उन किताबों के ढेर में से चुना था जो मेरी दादी मुझे मेरे जन्मदिन पर देने वाली थीं, तो मैं उसे कभी नहीं देखता; मुझे बहुत डर लगता कि धीरे-धीरे आज के मेरे विचार उसमें समा जाएँगे और पुराने विचारों को मिटा देंगे, मुझे बहुत डर लगता कि वह किताब इतनी वर्तमान की वस्तु बन जाएगी कि जब मैं उससे उस बच्चे की याद दिलाने को कहूँ जिसने कॉम्ब्रे के उस छोटे से कमरे में उसका शीर्षक बोला था, तो वह बच्चा, उसकी वाणी को पहचान न पाने के कारण, मेरी अपील का जवाब नहीं देगा और हमेशा के लिए विस्मृति में दफ़न हो जाएगा।

देशभक्ति कला की तरह लोकप्रिय कला की अवधारणा, भले ही वह खतरनाक न हो, मुझे बेतुकी लगती है। यदि इसे आम जनता तक पहुँचाना हो, तो "आलसी लोगों के लिए उपयुक्त" कला शैली की बारीकियों का त्याग करना पड़ेगा; और मैंने समाज में लोगों के साथ इतना समय बिताया है कि मैं जानता हूँ कि असल में अनपढ़ तो वे ही होते हैं, न कि काम करने वाले मिस्त्री। इस लिहाज़ से, लोकप्रिय कला शैली जॉकी क्लब के सदस्यों के लिए होनी चाहिए, न कि श्रम संघ के सदस्यों के लिए; विषयों की बात करें तो, लोकप्रिय उपन्यास बच्चों के लिए लिखी किताबों की तरह लोगों को मदहोश कर देते हैं। लोग पढ़ने के ज़रिए अपना मनोरंजन ढूंढते हैं, और मज़दूर राजकुमारों के बारे में उतने ही जिज्ञासु होते हैं जितने राजकुमार मज़दूरों के बारे में। युद्ध की शुरुआत से ही एम. बैरेस कहते रहे हैं कि कलाकार (जैसे टिटियन) को सबसे पहले अपने देश की शान के लिए काम करना चाहिए। लेकिन वह केवल एक कलाकार के रूप में ही इसकी सेवा कर सकता था, यानी इस शर्त पर कि

जब वह कला के नियमों का अध्ययन करे, अपना प्रशिक्षण पूरा करे और विज्ञान के समान जटिल खोजें करे, तो उसे अपने देश के बारे में भी, केवल उस सत्य के बारे में सोचना चाहिए जिसका उसे सामना करना है। हमें उन क्रांतिकारियों का अनुकरण नहीं करना चाहिए जिन्होंने अपनी नागरिक भावना के कारण वाटो और ला टूर की कृतियों को नष्ट न करके उनका तिरस्कार किया, जबकि इन चित्रकारों ने फ्रांस के सम्मान के लिए क्रांति में भाग लेने वाले सभी लोगों से कहीं अधिक कार्य किया। एक कोमल हृदय वाला व्यक्ति शायद स्वेच्छा से शरीर रचना विज्ञान को अध्ययन विषय के रूप में नहीं चुनेगा। चोडरलोस डी लैक्लोस ने 'लियाइसन्स डेंजरस' लिखा, चाहे उनका हृदय कितना भी महान क्यों न रहा हो, यह उनकी अच्छाई नहीं थी, और न ही यह फ्लाउबर्ट की छोटे या बड़े बुर्जुआ वर्ग के प्रति पसंद थी जिसने उन्हें 'मैडम बोवरी' और 'एल'एजुकेशन सेंटीमेंटल' को विषय के रूप में चुनने के लिए प्रेरित किया। कुछ लोग कहते हैं कि तेज़ गति के दौर की कला क्षणभंगुर होनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे युद्ध शुरू होने से पहले ही लोगों ने कहा था कि युद्ध जल्द ही समाप्त हो जाएगा। इसी तर्क से, रेलवे को चिंतन का अंत कर देना चाहिए था। फिर भी, स्टेजकोच के युग पर पछतावा करना व्यर्थ था, क्योंकि ऑटोमोबाइल ने उनकी जगह ले ली है और आज भी पर्यटकों के लिए वीरान चर्चों के सामने रुकने की जगहें मौजूद हैं।

जीवन का एक चित्र अपने साथ अनेक और विविध संवेदनाएँ लेकर आता है। उदाहरण के लिए, पढ़ी हुई पुस्तक के आवरण को देखने मात्र से ही उसके शीर्षक के भाव से ही दूर की ग्रीष्म ऋतु की रात की चाँदनी की झलक मिल जाती है। सुबह की कॉफ़ी का स्वाद हमें एक सुहावने दिन की धुंधली सी आशा देता है, जो पहले अक्सर सुबह की अशांत रोशनी में, जमे हुए दूध जैसे दिखने वाले चीनी मिट्टी के बर्तन से हम पर मुस्कुराती

थी। एक घंटा मात्र एक घंटा नहीं होता, यह सुगंधों, ध्वनियों, योजनाओं और मौसमों से भरा एक फूलदान होता है। जिसे हम वास्तविकता कहते हैं, वह उन संवेदनाओं और स्मृतियों के बीच का संबंध है जो एक साथ हमें घेरे रहती हैं—एक ऐसा संबंध जिसे सिनेमाई दृष्टि नष्ट कर देती है क्योंकि उसका रूप उसे उस सत्य से अलग कर देता है जिस तक वह स्वयं को सीमित रखने का दिखावा करती है—वह अनूठा संबंध जिसे लेखक को खोजना पड़ता है ताकि वह दो अलग-अलग अवस्थाओं को एक वाक्य में हमेशा के लिए जोड़ सके। वस्तुओं का वर्णन करते समय, किसी विशेष स्थान पर प्रदर्शित वस्तुओं को अनिश्चित काल तक एक दूसरे के बाद रखा जा सकता है; सत्य तभी उभरना शुरू होगा जब लेखक दो अलग-अलग वस्तुओं को लेकर, उनके बीच संबंध स्थापित करेगा - कला जगत में उस संबंध का प्रतिरूप, जो विज्ञान जगत में कारण-कार्य संबंध का एकमात्र उदाहरण है - और उसे उत्कृष्ट शैली के घेरे में समाहित करेगा। इसमें, जीवन की ही तरह, वह दो संवेदनाओं के एक समान गुण को मिलाता है, उनके सार को निकालता है और उन्हें समय की सीमाओं से मुक्त करने के लिए, उन्हें एक रूपक में पिरोता है, इस प्रकार उन्हें एक अवर्णनीय शाब्दिक बंधन से जोड़ देता है। क्या इस दृष्टिकोण से, कला के मार्ग पर, प्रकृति स्वयं ही कला की शुरुआत नहीं थी? वह जिसने अक्सर मुझे किसी वस्तु की सुंदरता का एहसास बहुत बाद में, किसी दूसरी वस्तु में, कॉम्ब्रे में दोपहर के समय केवल उसकी घंटियों की ध्वनि से, और डोनसिएरेस में सुबह के समय केवल हमारे हीटिंग उपकरण की खरखराहट से ही कराया। संबंध भले ही कम महत्वपूर्ण हो, वस्तुएँ सामान्य हों, शैली खराब हो, लेकिन जब तक वह संबंध नहीं है, तब तक कुछ भी नहीं है। वह साहित्य जो केवल "चीजों का वर्णन" करने, उनकी रेखाओं और सतहों का सार प्रस्तुत करने में ही संतुष्ट रहता है, यथार्थवाद

का दावा करने के बावजूद वास्तविकता से सबसे दूर होता है, वह हमें सबसे अधिक दरिद्र और दुखी करता है, चाहे वह कितनी भी महिमा और भव्यता की बात करे, क्योंकि यह हमारे वर्तमान स्वरूप, जिसके सार को वस्तुएँ संजोए रखती हैं, और भविष्य, जिसमें वे हमें उसे पुनः खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, के बीच का संबंध अचानक तोड़ देता है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। यदि वास्तविकता उस प्रकार का निरर्थक अनुभव होती जो लगभग सभी के लिए एक समान होता, क्योंकि जब हम कहते हैं: "खराब मौसम", "युद्ध", "टैक्सी स्टैंड", "रोशनी वाला रेस्तरां", "फूलों का बगीचा", तो हर कोई समझ जाता है कि हमारा क्या अर्थ है—यदि वास्तविकता ऐसी होती, तो निस्संदेह इन चीजों की एक प्रकार की सिनेमाई फिल्म ही पर्याप्त होती और "शैली", "साहित्य" जो स्वयं को उस सरल तथ्य से अलग कर लेता है, एक कृत्रिम कृति होती। लेकिन क्या वास्तविकता में ऐसा ही है? अगर मैं यह समझने की कोशिश करूं कि किसी परिस्थिति या घटना के हमारे मन पर पड़ने वाले प्रभाव के समय हमारे भीतर क्या हलचल होती है, अगर विवोन पुल पार करते समय पानी पर बादल की छाया देखकर मैं खुशी से उछल पड़ा और "हलो!" बोल उठा, अगर बर्गोट की कोई बात सुनकर मेरे मन में सिर्फ "अद्भुत!" जैसा भाव ही आ सके। हालांकि यह बात इस पर विशेष रूप से लागू नहीं होती, फिर भी अगर किसी के बुरे व्यवहार से नाराज़ होकर ब्लोच ने ऐसे घिनौने घटनाक्रम से बेतुके शब्द कहे हों, जैसे कि "किसी पुरुष का ऐसा व्यवहार करना मुझे अकल्पनीय लगता है", या अगर गुएरमांटे परिवार द्वारा किए गए अच्छे स्वागत से प्रसन्न होकर और शायद उनकी शराब के नशे में थोड़ा चूर होकर, उनसे विदा लेते समय मैं दबे स्वर में खुद से कह सका: "आखिरकार, वे आकर्षक लोग हैं जिनके साथ जीवन बिताना सुखद होगा," तो मैंने महसूस किया कि उन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए,

उस सारगर्भित पुस्तक को लिखने के लिए, जो एकमात्र सच्ची पुस्तक है, एक महान लेखक वर्तमान अर्थों में उसे गढ़ता नहीं है, बल्कि, चूंकि वह हममें से प्रत्येक में पहले से ही मौजूद है, उसकी व्याख्या करता है। एक लेखक का कर्तव्य और कार्य एक व्याख्याकार का होता है।

और यदि, लेखक के आत्मसम्मान से प्रेरित अभिव्यक्ति के एक गलत तरीके के संबंध में, उस तिरछी आंतरिक अभिव्यक्ति (जो मूल मानसिक धारणा से अधिकाधिक विचलित होती जाती है) को तब तक सीधा करना जब तक कि वह उस सीधी रेखा के साथ एक न हो जाए जो उस धारणा से निकलनी चाहिए थी, यदि वह सीधा करने की प्रक्रिया एक असहज प्रक्रिया है जिसके विरुद्ध हमारी निष्क्रियता विद्रोह करती है, तो प्रेम जैसे अन्य मामले भी हैं, जहाँ वही सीधा करने की प्रक्रिया कष्टदायक हो जाती है। हमारी सारी बनावटी उदासीनता, इसके अपरिहार्य झूठों पर हमारा सारा स्वाभाविक आक्रोश, जो हमारे अपने झूठों से इतना मिलता-जुलता था, संक्षेप में कहें तो, वह सब कुछ जो हम लगातार तब कहते थे जब हम दुखी या धोखे में होते थे, न केवल उस व्यक्ति से जिसे हम प्यार करते थे बल्कि खुद से भी, उसका इंतज़ार करते हुए, कभी-कभी अपने कमरे की खामोशी में ज़ोर से कहते थे: "नहीं, सचमुच ऐसा व्यवहार असहनीय है," और "मैंने तुम्हें आखिरी बार देखने का फैसला किया है। मैं इससे होने वाले दर्द से इनकार नहीं कर सकता," जो वास्तव में महसूस किया गया था उसे वापस लाना, जहाँ से वह भटक गया था, उन सभी चीजों को खत्म करना है जिनसे हम सबसे ज्यादा जुड़े हुए थे, उन जोशीले पलों में हमारे भावुक आत्म-संवाद का विषय जब, खुद से आमने-सामने, हम पूछते थे कि हम क्या पत्र लिख सकते हैं, हमारा अगला कदम क्या होना चाहिए।

यहां तक कि जब हम कलात्मक आनंद की तलाश केवल उनके द्वारा हम

पर पड़ने वाले प्रभाव के लिए करते हैं, तब भी हम शीघ्र ही उस प्रभाव को ही त्याग देते हैं और अपना ध्यान उसमें मौजूद उस तत्व पर केंद्रित कर लेते हैं जो हमें उसकी गहराई में उतरे बिना ही आनंद का अनुभव कराता है। यह सोचकर कि हम बातचीत में इसे दूसरों तक पहुंचा सकते हैं क्योंकि हम उनसे किसी ऐसे विषय पर बात कर रहे होंगे जो उनके और हमारे लिए समान है, हम अपने मूल व्यक्तिगत प्रभाव को ही खो देते हैं। ठीक उन क्षणों में जब हम प्रकृति, समाज, प्रेम, कला के सबसे निस्वार्थ दर्शक होते हैं—क्योंकि सभी प्रभाव दो प्रकार के होते हैं, आधा वस्तु में समाहित होता है और दूसरा आधा हमारे भीतर व्याप्त होता है जिसे केवल हम ही जान सकते हैं—हम बाद वाले की उपेक्षा करने में जल्दबाजी करते हैं, यानी उस एकमात्र पर जिस पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए और केवल दूसरे आधे पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं जो हमारे बाहर होने के कारण अथाह है और हमें थकाता नहीं है; हम उस छोटे से खांचे को समझने के प्रयास को भी बहुत कठिन समझते हैं जो किसी संगीत की धुन या किसी गिरजाघर के दृश्य ने हमारे भीतर बना दिया है। लेकिन हम सिम्फनी को बार-बार बजाते हैं, हम चर्च को देखने के लिए लौटते हैं, जब तक कि—अपने जीवन से उस दूर भागने में, जिसका सामना करने का साहस हममें नहीं होता, जिसे ज्ञान कहते हैं—हम उन्हें उसी तरह जान लेते हैं जैसे कोई सबसे निपुण संगीतकार या पुरातत्वविद। और कितने लोग वहीं रुक जाते हैं, अपने अनुभव से कुछ नहीं सीखते, और बूढ़े होकर बेकार और असंतुष्ट रह जाते हैं, कला के बंजर ब्रह्मचारी बनकर! उन्हें वही असंतोष होता है जो उन कुंवारे और आलसी लोगों को होता है जिन्हें श्रम की उर्वरता दूर कर सकती है। कलाकृतियों के बारे में बात करते समय वे असली कलाकारों से भी अधिक उत्साहित होते हैं, क्योंकि उनका उत्साह, गहराई में उतरने के कठिन कार्य के लिए प्रेरणा न बनकर, बाहर की ओर

फैलता है, उनकी बातचीत को गर्म करता है और उनके चेहरे लाल कर देता है; वे सोचते हैं कि अपनी पसंद की रचना के प्रदर्शन के बाद ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर: "वाह! वाह!" वे कुछ कर रहे हैं। लेकिन ये अभिव्यक्तियाँ उन्हें अपनी प्रशंसा के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए बाध्य नहीं करतीं, इसलिए वे कुछ नहीं सीखते। फिर भी, यह व्यर्थ प्रशंसा उनकी सामान्य बातचीत में भी झलकती है और कला के बारे में बात करते समय उन्हें हाव-भाव, चेहरे के भाव और सिर हिलाने पर मजबूर करती है: "मैं एक संगीत कार्यक्रम में था जहाँ वे ऐसा संगीत बजा रहे थे जिससे मैं बिल्कुल भी रोमांचित नहीं हुआ। फिर उन्होंने चौकड़ी बजानी शुरू की। आह! हे भगवान! इसने तो सब कुछ बदल दिया! (उस क्षण शौकिया संगीतकार के चेहरे पर चिंता और आशंका के भाव होते हैं मानो वह सोच रहा हो: 'मुझे चिंगारियाँ उड़ती दिख रही हैं, जलने की गंध आ रही है, आग लगी है!') हे भगवान! यह तो पागलपन है! यह बेढंगा है लेकिन विस्मित है! यह कोई साधारण रचना नहीं है।" लेकिन भले ही ये शौकिया संगीतकार हास्यास्पद लगें, उन्हें पूरी तरह से तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए। वे प्रकृति द्वारा एक कलाकार को बनाने के पहले प्रयास हैं, उतने ही निराकार और अव्यवहारिक जितने कि आज के प्राणियों से पहले के प्राचीन प्राणी, जो स्थायी रूप से रहने के लिए नहीं बनाए गए थे। ये सनकी और नीरस शौकिया कलाकार हम पर उसी तरह प्रभाव डालते हैं जैसे वे पहले यांत्रिक उपकरण डालते थे जो धरती से ऊपर नहीं उठ सकते थे, जिनमें, हालांकि गुप्त साधन अभी तक खोजे जाने बाकी थे, उड़ने की आकांक्षा निहित थी। "और, दोस्त," शौकिया कलाकार आपका हाथ पकड़ते हुए कहता है, "मैंने इसे आठवीं बार सुना है और मैं कसम खाता हूँ कि यह आखिरी बार नहीं होगा।" और सच तो यह है कि चूंकि वे कला से वह नहीं ग्रहण करते जो वास्तव में पोषण देता है, इसलिए उन्हें

निरंतर कलात्मक प्रेरणा की आवश्यकता होती है, क्योंकि वे एक ऐसी लालसा के शिकार हैं जो कभी शांत नहीं हो सकती। इसलिए वे लंबे समय तक एक ही कृति की सराहना करते रहेंगे, यह मानते हुए कि उनकी उपस्थिति एक कर्तव्य है, जैसा कि अन्य लोग किसी बोर्ड मीटिंग या अंतिम संस्कार में निभाते हैं। फिर साहित्य, चित्रकला या संगीत की अन्य रचनाएँ आती हैं जो विरोध उत्पन्न करती हैं। विचारों या प्रणालियों को आरंभ करने और सबसे बढ़कर उन्हें आत्मसात करने की क्षमता, रचनाकारों में भी वास्तविक रुचि से कहीं अधिक पाई जाती रही है, लेकिन समीक्षाओं और साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या बढ़ने (और उनके साथ लेखकों और कलाकारों के कृत्रिम पेशे के बढ़ने) के बाद से यह क्षमता और भी व्यापक हो गई है। इस प्रकार, युवा, सबसे बुद्धिमान और सबसे गहन रचनाकार उच्च नैतिक, सामाजिक या धार्मिक प्रवृत्ति वाली रचनाओं को प्राथमिकता देते थे। वे मानते थे कि ऐसी बातें ही किसी रचना का मूल्य निर्धारित करती हैं, इस प्रकार वे डेविड, चेनावार्ड और ब्रुनेटियर जैसे लेखकों की गलती को दोहराते थे; वे बर्गोट की तुलना में, जिनके सबसे सरल वाक्य भी वास्तव में आत्म-चिंतन की गहरी अनुभूति कराते थे, उन लेखकों को अधिक महत्व देते थे जो कम प्रभावी होने के कारण ही अधिक गंभीर प्रतीत होते थे। इन लोकतंत्रवादियों का कहना था कि बर्गोट की जटिल रचनाएँ केवल समाज के लोगों के लिए थीं, इस प्रकार उन्होंने समाज के लोगों को वह सम्मान दिया जिसके वे पात्र नहीं थे। लेकिन जिस क्षण से कलाकृतियों का मूल्यांकन तर्क के आधार पर किया जाता है, कुछ भी स्थिर या निश्चित नहीं रहता, व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कुछ भी सिद्ध कर सकता है। जबकि प्रतिभा की वास्तविकता एक वरदान है, एक ऐसी उपलब्धि है जो संपूर्ण जगत के लिए है, जिसकी उपस्थिति को पहले विचार और शैली के स्पष्ट रूपों के नीचे पहचानना

आवश्यक है, आलोचना यहीं रुक जाती है और लेखकों का मूल्यांकन विषयवस्तु के बजाय रूप के आधार पर करती है। यह उस लेखक को पैगंबर का दर्जा दे देती है जो अपने से पहले के साहित्य जगत के प्रति अपने तिरस्कार को अभिमानपूर्ण शब्दों में व्यक्त करते हुए भी कोई नया संदेश नहीं देता। आलोचना की यह निरंतर विकृति इस हद तक पहुँच गई है कि एक लेखक लगभग आम जनता द्वारा आंका जाना पसंद करेगा (यदि ऐसा न होता कि आम जनता उस क्षेत्र में कलाकार द्वारा किए जा रहे शोध को समझने में असमर्थ है जो उसके लिए अज्ञात है)। क्योंकि जनता के सहज जीवन और एक महान लेखक की प्रतिभा के बीच, जो स्वयं सहज प्रवृत्ति है, साकार और परिपूर्ण है, जिसे दूसरों पर थोपी गई धार्मिक चुप्पी में सुना जाना चाहिए, स्व-घोषित न्यायाधीशों की सतही शब्दावली और बदलते मानदंडों की तुलना में कहीं अधिक समानता है। उनकी कलह हर दस साल में फिर से शुरू हो जाती है, क्योंकि बहुरंगी दृश्य केवल समाज के समूहों से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विचारों से भी बना होता है, जो जनमानस में फैलने के कारण क्षणिक रूप से विस्तारित होते हैं, लेकिन तब तक ही टिकते हैं जब तक उनकी नवीनता उन दिमागों को प्रभावित करती है जो प्रमाण की ज्यादा मांग नहीं करते। फिर, दल और विचारधाराएँ एक के बाद एक आते रहते हैं, हमेशा एक ही मानसिकता वाले लोगों को लक्षित करते हैं, अपेक्षाकृत बुद्धिमान लोग अतिवाद के शिकार होते हैं जिनसे अधिक सतर्क और जिन्हें समझाना मुश्किल होता है, वे दूर रहते हैं। दुर्भाग्य से, पहले वाले लोग केवल अपूर्ण बुद्धि के होते हैं, इसलिए उन्हें स्वयं को पूर्ण करने के लिए क्रिया की आवश्यकता होती है और इसी के माध्यम से वे श्रेष्ठ बुद्धि वालों की तुलना में अधिक प्रभाव डालते हैं, वे जनमानस पर अपना प्रभाव थोपते हैं और न केवल अयोग्य प्रतिष्ठा और अनुचित द्वेष का

एक समूह बनाते हैं, बल्कि गृहयुद्ध और बाह्य युद्ध का भी निर्माण करते हैं, जिससे थोड़ी सी आत्म-आलोचना उन्हें बचा सकती थी। अब, एक संतुलित मन, एक जीवंत हृदय, अपने गुरु के सुंदर विचार से जो आनंद प्राप्त करता है, वह निःसंदेह लाभकारी है, लेकिन जो लोग उस विचार की सही सराहना करते हैं (बीस वर्षों में ऐसे कितने लोग होते हैं?), वे अपने आनंद के कारण दूसरे की विस्तारित चेतना मात्र बनकर रह जाते हैं। एक व्यक्ति ने उस स्त्री का प्रेम पाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी हो जो उसे केवल दुखी ही करेगी, लेकिन वर्षों के प्रयासों के बावजूद वह उससे मिलने में सफल नहीं हुआ। अपने दुखों और जिस खतरे से वह बचा है, उसे व्यक्त करने के बजाय, वह लगातार लैब्रूयेर के इस विचार को पढ़ता रहता है, जिससे उसके मन में हजारों अर्थ और अपने जीवन की सबसे मार्मिक यादें उभरती हैं: "पुरुष अक्सर प्रेम करना चाहते हैं और मुझे नहीं पता कि कैसे, वे हार का सामना किए बिना ही हार की तलाश करते हैं और, अगर मैं कहूँ तो, स्वतंत्र रहने के लिए विवश होते हैं।" चाहे इस विचार का यह अर्थ लेखक के लिए था या नहीं (इसका यह अर्थ होने के लिए उसे "प्रेम करना" के बजाय "प्यार किया जाना" कहना चाहिए था और यह अधिक सुंदर होता), यह निश्चित है कि इस संवेदनशील साहित्यकार ने इस विचार को जीवन प्रदान किया, इसे महत्व से भर दिया, यहाँ तक कि यह उसके भीतर फूट पड़ा और वह इसे अत्यधिक संतुष्टि की भावना के बिना दोहरा नहीं सकता, क्योंकि यह उसे पूर्णतः सत्य और सुंदर प्रतीत होता है, हालाँकि अंततः उसने इसमें कुछ भी नहीं जोड़ा है और यह केवल लैब्रूयेर का एक विचार ही बना हुआ है।

संकेतों के साहित्य का कोई मूल्य कैसे हो सकता है, जबकि वास्तविकता उन छोटी-छोटी चीजों के नीचे विद्यमान है जिन्हें यह दर्ज करता है (दूर से आती हवाई जहाज की ध्वनि की भव्यता, सेंट-हिलैरे के घंटाघर की

रूपरेखा, मेडेलिन के स्वाद में अतीत की झलक)। ये चीजें अपने आप में महत्वहीन हैं यदि हम इसे इनसे अलग न करें। स्मृति में धीरे-धीरे संचित, उन सभी अस्पष्ट छापों की श्रृंखला, जिनमें हमारे वास्तविक अनुभव का कुछ भी शेष नहीं रहता, हमारे विचार, हमारा जीवन, हमारी वास्तविकता का निर्माण करती है। और यही वह झूठ है जिसे तथाकथित "जीवंत कला" केवल पुन: प्रस्तुत करती है, एक ऐसी कला जो जीवन की तरह ही कच्ची है, सौंदर्यहीन है, हमारी आँखों ने जो देखा है और हमारी बुद्धि ने जो देखा है, उसका इतना थकाऊ और व्यर्थ पुनरुत्पादन है कि व्यक्ति स्वयं से पूछता है कि जो इसे अपना लक्ष्य बनाता है, वह इसमें वह उत्साहवर्धक प्रेरणा कैसे पा सकता है जो काम करने का जोश प्रदान करती है। सच्ची कला की भव्यता, एम. डी नॉरपोइस द्वारा "एक शौकिया का मनोरंजन" कहे जाने के विपरीत, उस वास्तविकता को पुनः प्राप्त करना, उसे थाम लेना, उसे अपने साथ एक कर लेना है जो हमारी वर्तमान वास्तविकता से बहुत दूर है, जिससे हम धीरे-धीरे अलग होते जाते हैं क्योंकि उसके स्थान पर हम जो ज्ञान ग्रहण करते हैं वह अधिक ठोस और अभेद्य होता जाता है। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसे हम मरने से पहले कभी न जान पाने के जोखिम में रहते हैं, लेकिन जो अंततः हमारा वास्तविक, हमारा सच्चा जीवन है जो प्रकट और प्रकाशित होता है, एकमात्र ऐसा जीवन जो वास्तव में जिया जाता है और जो एक अर्थ में हर क्षण सभी मनुष्यों के साथ-साथ कलाकार में भी जीवित रहता है। लेकिन वे इसे नहीं देख पाते क्योंकि वे इसे प्रकाशित करने का प्रयास नहीं करते। और इस प्रकार उनका अतीत असंख्य "नकारात्मक" वस्तुओं से भरा हुआ है जो बेकार रह जाती हैं क्योंकि बुद्धि ने उन्हें "विकसित" नहीं किया है। अपने जीवन को थामना; और दूसरों के जीवन को भी; क्योंकि एक लेखक की शैली और एक चित्रकार की शैली तकनीक की नहीं बल्कि

दृष्टि की बात है। यह प्रत्यक्ष और सचेत साधनों द्वारा असंभव प्रकटीकरण है, जो दुनिया को देखने के हमारे दृष्टिकोण में मौजूद गुणात्मक अंतर को प्रकट करता है, एक ऐसा अंतर जो कला के बिना, हमेशा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का निजी रहस्य बना रहता। केवल कला के माध्यम से ही हम स्वयं से बाहर निकल पाते हैं, यह जान पाते हैं कि दूसरा इस ब्रह्मांड को कैसे देखता है, जो उसके लिए हमारा नहीं है, जिसके परिदृश्य हमारे लिए उतने ही अज्ञात रहते जितने कि चंद्रमा के। कला की बदौलत, हम एक ही दुनिया, अपनी दुनिया, को देखने के बजाय, उसे कई गुना बढ़ते हुए देखते हैं और जितने मौलिक कलाकार हैं, उतनी ही अनेक दुनियाएँ हमारे लिए उपलब्ध हैं, जो अनंत के चारों ओर घूमने वाली दुनियाओं से भी कहीं अधिक भिन्न हैं और जो, चाहे उनका नाम रेम्ब्रांट हो या वेर मीर, उस चूल्हे के बुझ जाने के कई सदियों बाद भी हमें अपनी अनूठी किरणें भेजती हैं जहाँ से वे निकली थीं। कलाकार का यह परिश्रम, पदार्थ और अनुभव के भीतर, शब्दों के भीतर, उनके बाहरी स्वरूप से भिन्न किसी चीज़ को समझने का साधन खोजने का प्रयास, उस क्रिया के बिल्कुल विपरीत है जिसमें अहंकार, वासना, बुद्धि और आदतें हमारे भीतर निरंतर संलग्न रहती हैं जब हम आत्म-संवाद के बिना अपना जीवन व्यतीत करते हैं, मानो अपनी सच्ची भावनाओं को छिपाने के लिए व्यावहारिक उद्देश्यों की शब्दावली का संचय करते हैं जिसे हम झूठे रूप से जीवन कहते हैं। संक्षेप में, यह जटिल कला ही एकमात्र सजीव कला है। यह अकेले ही दूसरों के लिए हमारे अपने जीवन को व्यक्त करती है और हमें दिखाती है, वह जीवन जो स्वयं को देख नहीं सकता, जिसके बाहरी स्वरूपों को देखने पर व्याख्या की आवश्यकता होती है और अक्सर उन्हें उलट-पुलट कर पढ़ा जाता है, ताकि उन्हें श्रमसाध्य ढंग से समझा जा सके। हमारे अहंकार, हमारी वासना, हमारी अनुकरणशीलता, हमारी अमूर्त बुद्धि,

हमारी आदतों के कार्य को उस कला द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए जो विपरीत मार्ग अपनाती है और उस गहराई में लौटती है जहाँ वास्तविकता का अज्ञात अस्तित्व है, और हमें उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करती है। यह निश्चित रूप से सच्चे जीवन का पुनर्निर्माण करना, भावनाओं को नवीनीकृत करना एक बड़ा प्रलोभन है। लेकिन इसके लिए हर प्रकार के साहस की आवश्यकता होती है, यहाँ तक कि भावनात्मक साहस की भी। क्योंकि इसका अर्थ है, सर्वप्रथम, अपने सबसे प्रिय भ्रमों का त्याग करना, अपनी ही कल्पनाओं की वस्तुनिष्ठता पर विश्वास करना छोड़ देना और सौवीं बार "वह बहुत प्यारी थी" कहकर खुद को दिलासा देने के बजाय, उनमें "मुझे उसे चूमना अच्छा लगा" का भाव खोजना। बेशक, प्रेम के क्षणों में मैंने जो अनुभव किया, वह हर दूसरा पुरुष अनुभव करता है। लेकिन जो अनुभव किया जाता है वह कुछ नकारात्मक चित्रों की तरह होता है जो तब तक काले दिखाई देते हैं जब तक उन्हें प्रकाश में न रखा जाए और उन्हें भी पीछे से देखना पड़ता है; हम किसी वस्तु को तब तक नहीं जानते जब तक हम अपनी बुद्धि से उसके पास न पहुँच जाएँ। केवल जब बुद्धि उसे प्रकाशित करती है, जब वह उसका बौद्धिक विश्लेषण करती है, तभी हम उस वस्तु के स्वरूप को पहचान पाते हैं, और कितनी कठिनाई से, जिसे हमने महसूस किया है। और मुझे यह भी एहसास हुआ कि गिलबर्ट के साथ पहले जो पीड़ा मैंने यह महसूस करने में अनुभव की थी कि हमारे प्रेम का उस व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है जो उसे प्रेरित करता है, वह ज्ञान के पूरक के रूप में उपयोगी है। (क्योंकि, हमारा जीवन चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, दुख की अवस्था में ही हमारे विचार, निरंतर उथल-पुथल और परिवर्तन की स्थिति में, हमारे भीतर की गहराइयों को एक आंधी की तरह उस ऊंचाई तक ले जाते हैं जहाँ हम देखते हैं कि वे उन नियमों के अधीन हैं जिन्हें हम तब तक नहीं

देख पाते थे, क्योंकि सुख की शांति ने उन गहराइयों को अविचलित रखा था। शायद केवल कुछ महान प्रतिभाओं के मामले में ही यह संभव है कि इस गति को उनके कष्ट, उथल-पुथल और उदासी के बिना निरंतर महसूस किया जा सके; लेकिन फिर भी यह निश्चित नहीं है, जब हम उनकी शांत उपलब्धियों के विशाल और एकसमान विकास पर विचार करते हैं, तो हम यह मानकर तो नहीं चल रहे हैं कि कार्य की जीवंतता उसके निर्माता की जीवंतता को दर्शाती है, जो शायद इसके विपरीत, निरंतर दुखी रहा हो।) लेकिन मुख्य रूप से इसलिए कि यदि हमारा प्रेम केवल गिल्बर्ट के लिए नहीं है, तो जो बात हमें इतना दर्द देती है वह यह नहीं है कि यह अल्बर्टाइन के लिए भी प्रेम है, बल्कि इसलिए है कि यह हमारी आत्मा का एक अधिक स्थायी हिस्सा है उन विभिन्न स्वों की तुलना में जो क्रमिक रूप से हममें मरते हैं, जिनमें से प्रत्येक स्वार्थी रूप से इसे बनाए रखना चाहता है, हमारी आत्मा का एक हिस्सा जो अवश्य ही, चाहे कुछ भी हो दर्द को उन प्राणियों से अलग कर दो ताकि हम उनकी व्यापकता को समझ सकें और उसका स्वरूप बना सकें तथा उस प्रेम का अर्थ सभी मनुष्यों को, सार्वभौमिक चेतना को समझा सकें, न कि केवल एक स्त्री को, फिर दूसरी को, जिसके साथ हमारे क्रमिक स्वरूपों में से पहले एक, फिर दूसरी ने एक होने की इच्छा की है।

इसलिए मेरे लिए अपने आस-पास मौजूद सूक्ष्म संकेतों (गुएरमांटेस, अल्बर्टाइन, गिल्बर्ट, सेंट-लूप, बालबेक, इत्यादि) का अर्थ खोजना आवश्यक था, जिन्हें मैं आदत के कारण नज़रअंदाज़ कर रहा था। हमें यह सीखना होगा कि वास्तविकता को प्राप्त करने के बाद उसे संरक्षित और व्यक्त करने के लिए, हमें उसे उन सभी चीजों से अलग करना होगा जो हमारी जल्दबाजी की आदत उसके विरोध में जमा करती है। सबसे बढ़कर, मुझे उन शब्दों को अलग करना था जो होठों से बोले गए थे

लेकिन मन से नहीं; वे हास्यपूर्ण बोलचाल की भाषाएँ जिनका उपयोग हम बहुत अधिक सामाजिक मेलजोल के बाद कृत्रिम रूप से करने के आदी हो जाते हैं, जो मन को झूठ से भर देती हैं, वे विशुद्ध रूप से शारीरिक शब्द जो लेखक द्वारा जानबूझकर मुस्कान के साथ बोले जाते हैं और उन्हें लिखकर स्वयं को नीचा दिखाते हैं, वह छोटा सा भाव जो, उदाहरण के लिए, सेंट-बेउवे के बोले गए वाक्य को लगातार बिगाड़ देता है, जबकि वास्तविक पुस्तकें दिन के उजाले और बातचीत की नहीं, बल्कि अंधेरे और मौन की संतान होनी चाहिए। और चूंकि कला स्वयं में बोधित सत्यों के इर्द-गिर्द जीवन का सूक्ष्म पुनर्निर्माण करती है, इसलिए उनके चारों ओर हमेशा एक काव्यमय वातावरण मंडराता रहता है, एक रहस्य की मिठास जो उस धुंधलके का मात्र अवशेष है जिससे हमें गुजरना पड़ा है, एक मापक छड़ी की तरह, किसी कृति की गहराई का संकेत। (क्योंकि वह गहराई कुछ विषयों में अंतर्निहित नहीं होती जैसा कि भौतिकवादी-आध्यात्मिक उपन्यासकार मानते हैं, क्योंकि वे दिखावे की दुनिया और उनके उच्च इरादों के नीचे प्रवेश नहीं कर सकते, उन सद्गुणी भाषणों की तरह जो उन लोगों में आम हैं जो जरा सा भी दयालु प्रयास करने में असमर्थ हैं, हमें यह देखने से नहीं रोकते कि उनमें अनुकरण से प्राप्त सामान्य तुच्छताओं को त्यागने की मानसिक शक्ति भी नहीं है।)

बुद्धि द्वारा—यहाँ तक कि अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तियों की भी—खुले वातावरण में प्राप्त सत्यों का, दिन के उजाले में उनका मूल्य बहुत अधिक हो सकता है; परन्तु वे सत्य कठोर रूपरेखा वाले और सपाट होते हैं, उनमें गहराई नहीं होती क्योंकि उन्हें प्राप्त करने के लिए गहराई का अन्वेषण नहीं किया गया होता—उनका पुनर्निर्माण नहीं किया गया होता। अक्सर ऐसा होता है कि जो लेखक वृद्धावस्था में इन सत्यों को प्रदर्शित करना बंद कर देते हैं, वे केवल अपनी उस बुद्धि का उपयोग करते हैं जो समय के

साथ और अधिक शक्तिशाली होती जाती है; और यद्यपि इस कारण से उनकी परिपक्व रचनाएँ अधिक सक्षम होती हैं, फिर भी उनमें उनकी युवावस्था की कोमलता नहीं होती।

फिर भी, मुझे ऐसा लगा कि बुद्धि द्वारा तात्कालिक वास्तविकता से निकाले गए सत्यों को तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए, क्योंकि वे कम शुद्ध, फिर भी मन द्वारा जीवंत किए गए ऐसे अंतर्ज्ञानों को समाहित कर सकते हैं, जिनका सार अतीत और वर्तमान में समान होने के कारण हमें समय से परे ले जाता है, लेकिन जो कलाकृति के एकमात्र तत्व होने के लिए बहुत दुर्लभ और अनमोल हैं। मुझे ऐसा लगा जैसे कई सत्य मेरे ध्यान में आ रहे हैं, जो भावनाओं, चरित्रों और आदतों से संबंधित हैं जिनका इस प्रकार उपयोग किया जा सकता है। हम शायद हर उस प्राणी को, जिसने हमें दुख दिया है, एक ऐसे देवत्व से जोड़ सकते हैं जिसकी वह केवल एक अंशिक प्रतिबिंब है, एक ऐसा देवत्व जिसका चिंतन कल्पना के क्षेत्र में हमें हमारे पूर्व के दर्द के स्थान पर तत्काल सुख प्रदान करेगा। जीवन जीने की पूरी कला यह है कि जो लोग हमें पीड़ा देते हैं, उन्हें एक हद तक उस पीड़ा के दिव्य रूप को स्वीकार करने में सक्षम बनाने वाला मानें और इस प्रकार अपने दैनिक जीवन को देवत्वों से भर दें। इन सच्चाइयों को जानकर मुझे आनंद मिला, हालांकि इसने मुझे याद दिलाया कि अगर मैंने इनमें से एक से अधिक सत्य कष्टों के माध्यम से खोजे हैं, तो उतने ही सत्य मैंने सामान्य सुख-सुविधाओं के दौरान भी खोजे हैं। फिर मेरे भीतर एक नया प्रकाश जागा, जो उस प्रकाश से कम चमकीला था जिसने मुझे यह एहसास दिलाया था कि कलाकृति ही खोए हुए समय को पुनः प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। और मैं समझ गया कि एक साहित्यिक कृति की सारी सामग्री मेरे पिछले जीवन में निहित थी, मैं समझ गया कि मैंने इसे तुच्छ मनोरंजनों, आलस्य, कोमलता और

पीड़ा के बीच अर्जित किया था, जिसे मैंने बिना इसके गंतव्य या अस्तित्व की जानकारी के संचित किया था, जैसे बीज में पौधे को पोषित करने वाले सभी तत्व भंडारित होते हैं। बीज की तरह, मैं तब मर सकता हूँ जब पौधा विकसित हो चुका हो और मुझे पता चले कि मैं इसके लिए जी रहा था, बिना जाने, बिना यह जाने कि मेरे जीवन को कभी उन पुस्तकों से संपर्क की आवश्यकता महसूस हुई जिन्हें मैं लिखना चाहता था और जिनके लिए जब मैं पहले अपनी मेज पर बैठता था, तो मुझे कोई विषय नहीं मिलता था। इस प्रकार उस दिन तक का मेरा सारा जीवन "एक पेशा?" शीर्षक के अंतर्गत संक्षेपित किया जा सकता था या नहीं भी किया जा सकता था। एक अर्थ में, साहित्य ने मेरे जीवन में कोई सक्रिय भूमिका नहीं निभाई। परन्तु दूसरे अर्थ में, मेरा जीवन, उसके दुःखों और सुखों की स्मृतियाँ, एक पौधे के बीजांड में सफेदी की तरह भंडार बना रही थीं। इसी से पौधा पोषण प्राप्त करता है ताकि वह बीज में परिवर्तित हो सके, उस समय जब हमें यह पता भी नहीं होता कि पौधे का भ्रूण रासायनिक क्रियाओं और गुप्त, लेकिन अत्यंत सक्रिय श्वसन के माध्यम से विकसित हो रहा है। इस प्रकार मेरा जीवन उन तत्वों के निरंतर संपर्क में बीता जिन्होंने इसे परिपक्व बनाया। और जो लोग बाद में इससे पोषण प्राप्त करेंगे, वे उस प्रक्रिया से उतने ही अनभिज्ञ होंगे जिसने इसे पोषण दिया, जैसे अनाज खाने वाले लोग उसमें निहित पोषक तत्वों से अनभिज्ञ होते हैं, भले ही उन्होंने उस मिट्टी को खाद दी हो जिसमें वह उगाया गया था और उसे परिपक्वता तक पहुँचाया हो। इस संदर्भ में, जो तुलनाएँ शुरू में गलत लगती हैं, वे अंत में सही हो सकती हैं। लेखक चित्रकार से ईर्ष्या करता है, वह रेखाचित्र और नोट्स बनाना चाहता है, और यदि वह ऐसा करता है, तो वह खो जाता है। फिर भी, लेखन में, उनके पात्रों का कोई भी हावभाव, कोई भी शैली, कोई भी लहजा ऐसा नहीं है जो उनकी स्मृति

में समाया न हो; एक भी ऐसा काल्पनिक पात्र नहीं है जिसे वे अपने देखे हुए लोगों के साठ नाम न दे सकें, जिनमें से एक का चेहरा किसी खास तरह का बना हो, दूसरे का चश्मा, तीसरे का स्वभाव, और चौथे का बांहों की किसी खास हरकत के लिए। और लेखक को यह एहसास होता है कि भले ही चित्रकार बनने की उनकी आकांक्षा सचेत रूप से पूरी न हो सकी हो, फिर भी अनजाने में ही उन्होंने अपनी नोटबुक रेखाचित्रों से भर दी है। क्योंकि, अपनी सहज प्रवृत्ति के कारण, लेखक बनने से बहुत पहले ही, दूसरों द्वारा देखी जाने वाली हर तरह की चीजों को देखने से बचता था। परिणामस्वरूप, दूसरों द्वारा उसे अन्यमनस्कता का और स्वयं द्वारा ध्यान और अवलोकन की अक्षमता का आरोप लगाया जाता था। जबकि वह लगातार अपनी आँखों और कानों को उन चीजों को हमेशा के लिए याद रखने का आदेश देता रहता था जो दूसरों को बचकानी लगती थीं - किसी वाक्य के उच्चारण का लहजा, किसी विशेष व्यक्ति के चेहरे के भाव और कंधों की हरकत, शायद कई साल पहले किसी विशेष क्षण में, जिसे वह अन्यथा नहीं जानता था। ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने वह लहजा पहले सुना था या उसे लगता था कि वह उसे फिर से सुन सकता है, और यह एक आवर्ती और स्थायी विशेषता थी। भावी लेखक में सामान्यता के प्रति यही भाव होता है, जो कलाकृति के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन उसकी व्यापकता के कारण करता है। वह केवल दूसरों पर ध्यान देता है, चाहे वे कितने भी नीरस और थकाऊ क्यों न हों, क्योंकि तोते की तरह अपनी ही प्रजाति की बातों को दोहराते हुए, वे भविष्यवक्ता पक्षी होते हैं, एक मनोवैज्ञानिक नियम के प्रवक्ता होते हैं। वह केवल सामान्य बातों को ही याद रखता है। बोलने के कुछ खास तरीकों से, चेहरे के भावों के एक खास खेल से और कंधों की कुछ खास हरकतों से (भले ही ये सब उसने बचपन में देखा हो), दूसरों का जीवन उसके भीतर बसा रहता है। बाद में

जब वह लिखना शुरू करता है, तो वह जीवन वास्तविकता को फिर से रचने में मदद करता है, शायद कंधों की उस आम हरकत का इस्तेमाल करके जो कई लोगों में पाई जाती है। यह हरकत इतनी जीवंत है मानो किसी शरीर रचना विज्ञानी ने इसे देखा हो, लेकिन लेखक इसके द्वारा एक मनोवैज्ञानिक सच्चाई को व्यक्त करता है, एक व्यक्ति के कंधों पर दूसरे की गर्दन को जोड़कर, जबकि दोनों ने उसके सामने सिर्फ एक पल के लिए ही पोज दिया था।

यह पक्का नहीं है कि किसी लिटरेरी काम को बनाने में कल्पना और सेंसिबिलिटी एक-दूसरे की जगह नहीं ले सकते और क्या दूसरे को, बिना किसी नुकसान के, पहले की जगह नहीं लिया जा सकता, ठीक वैसे ही जैसे जिन लोगों का पेट खाना पचा नहीं पाता, वे यह काम अपनी आंतों को सौंप देते हैं। एक नैचुरली सेंसिटिव आदमी जिसमें कोई कल्पना नहीं है, फिर भी वह शानदार नॉवेल लिख सकता है। दूसरों से उसे जो तकलीफ़ होती है और उनसे खुद को बचाने की उसकी कोशिशों से जो झगड़ा होता है, ऐसे अनुभवों को इंटेलिजेंस से समझने पर एक ऐसी किताब के लिए मटीरियल मिल सकता है जो उतनी ही खूबसूरत हो जितनी कि उसकी कल्पना की गई हो और जो उतनी ही ऑब्जेक्टिव, उतनी ही चौंकाने वाली और अनएक्सपेक्टेड हो जितनी कि लेखक की कल्पनाशील कल्पना होती, अगर वह खुश और ज़ुल्म से आज़ाद होता। सबसे बेवकूफ़ लोग अनजाने में अपने हाव-भाव और अपनी बातों से अपनी भावनाएँ ज़ाहिर करते हैं और इस तरह ऐसे नियम दिखाते हैं जिनके बारे में उन्हें पता नहीं होता और जिन्हें आर्टिस्ट सामने लाता है। इस वजह से, आम लोग गलती से लेखक को शरारती समझते हैं क्योंकि कलाकार एक अजीब इंसान में एक दिलचस्प आम बात देखता है और उस पर उतना ही इल्ज़ाम लगाता है जितना एक सर्जन अपने मरीज़ को

सर्कुलेशन की पुरानी बीमारी से परेशान देखकर नफ़रत करता है। इसके अलावा, कलाकार से ज़्यादा अजीब लोगों का मज़ाक उड़ाने वाला कोई नहीं होता। बदकिस्मती से, जब उसके अपने जुनून की बात आती है तो वह शरारती से ज़्यादा दुखी होता है; हालाँकि वह अपने मामले में उनकी आम बातों को उतना ही पहचानता है, लेकिन वह निजी दुख से उतनी आसानी से नहीं बच पाता। ज़ाहिर है, हम बेइज़्ज़ती के बजाय तारीफ़ सुनना ज़्यादा पसंद करते हैं और जब कोई औरत जिससे हम प्यार करते हैं, हमें धोखा देती है, तो हम क्या नहीं देंगे अगर ऐसा न होता। लेकिन बेइज़्ज़ती का गुस्सा, छोड़ दिए जाने का दर्द उस हालत में ऐसी दुनिया होती जिसे हम कभी नहीं जान पाते, जिसकी खोज, आदमी के लिए भले ही दर्दनाक हो, कलाकार के लिए कीमती होती है। खुद के और अपने लोगों के बावजूद, शरारती और एहसान फरामोश लोग उसके काम में ज़रूर होते हैं। पब्लिसिस्ट अनजाने में उन बदमाशों को अपनी पहचान से जोड़ लेता है जिनकी उसने बुराई की है। हर आर्ट वर्क में हम उस आदमी को पहचान सकते हैं जिससे आर्टिस्ट ने सबसे ज़्यादा नफ़रत की है, और अफ़सोस, उन औरतों को भी जिनसे उसने सबसे ज़्यादा प्यार किया है। वे राइटर के लिए ठीक उसी समय पोज़ दे रही थीं, जब उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़, वे उसे सबसे ज़्यादा तकलीफ़ दे रही थीं। जब मुझे अल्बर्टीन से प्यार हुआ तो मुझे पूरी तरह एहसास हुआ कि वह मुझसे प्यार नहीं करती और मुझे इस बात के लिए मान जाना पड़ा कि वह मुझे प्यार का दर्द सिखा रही है, भले ही वह शुरू में ही क्यों न हो। और जब हम अपने दुख से आम बातें निकालने की कोशिश करते हैं ताकि उसके बारे में लिख सकें तो हमें थोड़ी तसल्ली मिलती है, शायद उन वजहों से जो मैंने अब तक बताई हैं, किसी और वजह से, जो यह है कि आम तौर पर सोचें तो, राइटर के लिए लिखना एक साफ़-सुथरा और ज़रूरी काम है और उसे

उसी तरह संतुष्टि देता है जैसे एक्सरसाइज़, पसीना और नहाना एक फिजिकल इंसान को देता है। सच कहूँ तो मुझे इससे कुछ हद तक बगावत थी। मैं चाहे जितना भी यकीन करूँ कि ज़िंदगी का सबसे बड़ा सच आर्ट में है, चाहे मैं अल्बर्टीन के लिए फिर से प्यार महसूस करने के लिए याददाश्त की कोशिश करने में कितना भी कम काबिल था, अपनी दादी के लिए फिर से दुख मनाने के लिए, मैंने खुद से पूछा कि क्या, फिर भी एक आर्ट का काम जिसके बारे में उनमें से किसी को भी पता नहीं था, उन बेचारे मरे हुए लोगों के लिए उनकी किस्मत पूरी कर सकता है। मेरी दादी, जिन्हें मैंने इतनी बेपरवाही से देखा था जब वह अपनी आखिरी तकलीफ में मेरे पास लेटी थीं। आह! क्या मैं, जब मेरा काम पूरा हो जाएगा, और इलाज से परे घायल हो जाऊँगा, तो प्रायश्चित के तौर पर, मरते समय सबके द्वारा छोड़े जाने के लंबे घंटों तक दुख सहूँगा! इसके अलावा, मुझे उन जीवों के लिए बहुत दया आती थी जो मुझसे कम प्यारे थे, यहाँ तक कि मुझसे बेपरवाह भी थे और मेरे विचारों ने उन्हें समझने की मेरी कोशिशों में कितनी किस्मतों का इस्तेमाल किया था, यहाँ तक कि सिर्फ बेतुकी बातों का भी। वे सभी जीव जिन्होंने मुझे सच बताया और जो अब नहीं रहे, मुझे ऐसा लगा जैसे उन्होंने एक ऐसी ज़िंदगी जी है जिससे सिर्फ मुझे फायदा हुआ और जैसे वे मेरे लिए मर गए हों। मेरे लिए यह सोचना दुखद था कि मेरी किताब में, मेरा प्यार जो कभी मेरे लिए सब कुछ था, एक इंसान से इतना अलग होगा कि कई पढ़ने वाले इसे दूसरी औरतों के लिए अपने प्यार पर लागू करेंगे। लेकिन मुझे इस मरणोपरांत बेवफाई से क्यों डरना चाहिए, कि यह आदमी या वह अनजान औरतों को मेरी भावनाओं का विषय बनाए, जबकि वह बेवफाई, कई इंसानों के बीच प्यार का वह बंटवारा मेरी ज़िंदगी से ही शुरू हो गया था और मेरे लिखना शुरू करने से बहुत पहले? मैंने सच में गिल्बर्ट, मैडम डी गुएरमांटेस,

अल्बर्टीन के ज़रिए एक के बाद एक दुख झेले थे। एक के बाद एक मैं उन्हें भूल भी गया था और सिर्फ़ मेरा प्यार, जो अलग-अलग समय पर अलग-अलग इंसानों को समर्पित था, ही टिका रहा। मुझे अनजान पढ़ने वालों द्वारा मेरी यादों के अपमान का अंदाज़ा था। मैं खुद से भी डरने से ज़्यादा दूर नहीं था, जैसे शायद कोई नेशनलिस्ट पार्टी हो जिसके नाम पर दुश्मनी भड़काई गई हो और जिसे अकेले ही एक ऐसे युद्ध से फ़ायदा हुआ हो जिसमें कई नेक शिकार हुए और बिना यह जाने कि उस लड़ाई का नतीजा क्या है, मर गए, जो मेरी दादी के लिए इतना बड़ा इनाम होता। और एक ही तसल्ली जो उसे कभी नहीं पता चली, कि आखिरकार मैंने काम करना शुरू कर दिया था, वो थी,

मरे हुए की किस्मत ऐसी होती है कि भले ही वह मेरी तरक्की से खुश नहीं हो सकती थी, लेकिन कम से कम उसे मेरी लंबी इनएक्टिविटी, उस फ्रस्ट्रेट ज़िंदगी का एहसास तो नहीं हुआ जो उसके लिए बहुत तकलीफ़देह थी। और हाँ, मेरी दादी और अल्बर्टीन के अलावा और भी बहुत से लोग थे जिनसे मैंने एक शब्द, एक नज़र सीखा था, लेकिन जिनके बारे में मुझे अलग-अलग कुछ भी याद नहीं था; एक किताब एक बड़ा कब्रिस्तान है जिसमें ज़्यादातर कब्रों पर लिखे नाम मिट जाते हैं। दूसरी तरफ, कभी-कभी कोई एक अच्छी तरह याद किया हुआ नाम लिख देता है, यह जाने बिना कि उस नाम को रखने वाले का कुछ और बचा है या नहीं। वह जवान लड़की जिसकी आँखें गहरी धँसी हुई हैं, जिसकी आवाज़ डरावनी है, क्या वह वहाँ है? और अगर वह है, तो किस हिस्से में, हम उसे फूलों के नीचे कहाँ ढूँढेंगे? लेकिन क्योंकि हम अलग-अलग ज़िंदगी से दूर रहते हैं, क्योंकि अब हमारे पास अपनी दादी और अल्बर्टीन के लिए मेरे प्यार जैसी गहरी भावनाएँ नहीं बची हैं, क्योंकि वे अब बेमतलब के शब्दों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं, क्योंकि हम समाज के उन लोगों

से इन मरे हुए लोगों के बारे में बात कर सकते हैं जिनके घर जाने पर हमें अपने प्रियजनों की मौत के बाद भी खुशी मिलती है, अगर उन भूले हुए शब्दों को समझने का कोई तरीका है, तो क्या हमें उसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, भले ही हमें पहले उन्हें बताने के लिए एक यूनिवर्सल भाषा ढूंढनी पड़े ताकि, इस तरह परमानेंट होकर, वे उन लोगों का असली सार बन जाएँ जो चले गए हैं और हर आत्मा के लिए हमेशा एक चीज़ बने रहें? सच में, अगर हम बदलाव के उस नियम को समझा सकें जिसने मरे हुए लोगों के उन शब्दों को हमारे लिए समझ से बाहर कर दिया है, तो क्या हमारी कमज़ोरी एक नई ताकत नहीं बन सकती? इसके अलावा, जिस काम में हमारे दुखों ने साथ दिया है, उसे शायद भविष्य में भयानक दुख और खुशी की तसल्ली, दोनों का संकेत माना जा सकता है। असल में, अगर हम कहें कि कवि के प्यार, दुखों ने उसकी मदद की है, कि उन्होंने उसके काम को बनाने में उसकी मदद की है, कि जिन अनजान औरतों पर सबसे कम शक था, एक अपनी शरारतों से, दूसरी अपनी मज़ाक से, कि वे सब उस यादगार को बनाने में अपना पत्थर लगा रही थीं जिसे वे कभी नहीं देख पाएंगी, तो यह ठीक से नहीं सोचा जा सकता कि लेखक की ज़िंदगी उस काम के साथ खत्म नहीं हुई है, कि वही नेचर जिसने उसे दुख दिया जिसने उसके काम को रंग दिया, काम खत्म होने के बाद भी उसका बना रहेगा, उसे दूसरी औरतों से ऐसे हालात में प्यार करने पर मजबूर करेगा जो वैसे ही होते अगर वे समय के साथ थोड़े बदले नहीं होते जो खुद उस व्यक्ति के हालात, प्यार की उसकी चाहत और दुख सहने के उसके विरोध को बदल देता है। इस पहले नज़रिए से उसके काम को सिर्फ़ एक दुखी प्यार के तौर पर देखा जाना चाहिए जो ज़रूरी तौर पर दूसरों का पहले से पता लगा लेता है और जो उसकी ज़िंदगी को वैसा ही बना देता है, ताकि कवि को लिखना जारी रखने की ज़रूरत ही न पड़े, वह

पूरी तरह से उस चीज़ का अंदाज़ा लगा लेगा जिसका उसने जो लिखा है उसमें अंदाज़ा लगाया गया है। इस तरह अल्बर्टीन के लिए मेरा प्यार और वह किस हद तक अलग था, वह उन खुशी के दिनों के बीच गिल्बर्ट के लिए मेरे प्यार में पहले से ही डूबा हुआ था, जब मैंने पहली बार अल्बर्टीन का नाम उसकी आंटी से सुना था, बिना यह शक किए कि वह मामूली सा कीड़ा एक दिन बढ़ेगा और मेरी पूरी ज़िंदगी में फैल जाएगा। लेकिन दूसरे नज़रिए से, काम खुशी की निशानी है क्योंकि यह हमें सिखाता है कि हर प्यार में आम प्यार खास प्यार के करीब होता है और दूसरे से पहले प्यार तक एक ऐसे व्यायाम से पहुँचता है जो लेखक को दुख के खिलाफ मज़बूत बनाता है, उसे उसके कारण को छोड़कर उसके सार की खोज करने के लिए मजबूर करता है। असल में, जैसा कि मैंने बाद में अनुभव किया, जब मुझे अपने काम का एहसास हुआ, प्यार से होने वाली तकलीफ़ के समय में भी, किसी के जुनून की चीज़ काम के घंटों के दौरान यूनिवर्सल में इतनी पूरी तरह से मिल जाती है, कि कुछ समय के लिए, कोई उसका होना भूल जाता है और अपने दिल के दर्द को सिर्फ़ एक शारीरिक दर्द के रूप में महसूस करता है। यह सच है कि यह कुछ पलों की बात है और अगर काम बाद में आता है तो इसका असर उल्टा लगता है। क्योंकि जब जीव, जो अपनी बुराई, अपनी तुच्छता के कारण, हमारे बावजूद, हमारे भ्रम को तोड़ने में कामयाब हो जाते हैं, तो वे खुद हमारे बनाए हुए प्यार के भ्रम से अलग होकर बेबस हो जाते हैं, अगर हम तब खुद को काम पर लगाते हैं, तो हमारी आत्मा उन्हें नए सिरे से ज़िंदा करती है, खुद को समझने की ज़रूरतों के लिए, उन जीवों से उनकी पहचान कराती है जिनसे हम कभी प्यार करते थे और इस मामले में, साहित्य उस काम को फिर से करता है जो निराशा से बिगड़ गया था, और उन भावनाओं को एक तरह से ज़िंदा रहने का मौका देता है जो अब

मौजूद नहीं हैं। निश्चित रूप से हमें अपने खास दुख को एक डॉक्टर की हिम्मत के साथ दोबारा जीना चाहिए जो खुद पर एक खतरनाक सीरम के साथ एक्सपेरिमेंट करने की कोशिश करता है। लेकिन हमें इसे एक आम रूप में सोचना चाहिए जो हमें कुछ हद तक इसके कंट्रोल से बचने में मदद करे, सभी लोगों को अपने दुख में साथी बनाकर और यह एक तरह की खुशी से खाली नहीं है। जहाँ ज़िंदगी हमारे चारों ओर बंद हो जाती है, वहाँ समझदारी एक रास्ता बना लेती है, क्योंकि अगर एकतरफ़ा प्यार का कोई इलाज नहीं है, तो इंसान दुख की सच्चाई से बाहर निकल सकता है, भले ही उससे जुड़े नतीजे निकालकर ही।

बुद्धि ज़िंदगी में उन हालात को नहीं पहचानती जिनका कोई नतीजा न हो। और मुझे हार माननी पड़ी, क्योंकि कुछ भी आम होने के अलावा (जब तक मन खुद से झूठ न बोले) टिक नहीं सकता, यह मानकर कि जो लोग लेखक को सबसे प्यारे थे, वे भी आखिरकार उसके सामने पेंटर की तरह ही पेश आए। कभी-कभी जब कोई दर्दनाक हिस्सा स्केच के स्टेज पर रह जाता है, तो एक नई कोमलता, एक नया दुख आता है जो हमें उसे खत्म करने और भरने में मदद करता है। नए और मददगार दुखों की कमी की शिकायत करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि बहुत सारे आने वाले हैं और उनके लिए ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। फिर भी, उनसे फ़ायदा उठाने के लिए जल्दी करना ज़रूरी है क्योंकि वे ज़्यादा समय तक नहीं टिकते; या तो हम खुद को दिलासा देते हैं या अगर वे बहुत मज़बूत हैं और दिल ठीक नहीं है, तो इंसान मर जाता है। प्यार में हमारा सफल दुश्मन, जिसे हम अपना दुश्मन भी कह सकते हैं, हमारा भला करने वाला होता है। वह तुरंत उस इंसान में एक ऐसी चीज़ जोड़ देता है जिसने हममें सिर्फ़ एक मामूली शारीरिक इच्छा जगाई है, एक बहुत ज़्यादा बढ़ी हुई कीमत जिसे हम उसके साथ कन्फ्यूज़ कर देते हैं। अगर हमारा कोई दुश्मन न

होता, तो शारीरिक खुशी प्यार में नहीं बदल पाती, यानी अगर हमारा कोई दुश्मन न होता या हम मानते कि हमारा कोई दुश्मन नहीं है, क्योंकि असल में उनका होना ज़रूरी नहीं है। वह झूठी ज़िंदगी जो हमारा शक और जलन उन दुश्मनों को देते हैं जिनका कोई वजूद नहीं है, हमारे भले के लिए काफी है। खुशी शरीर के लिए फायदेमंद है लेकिन दुख आत्मा की ताकतों को बढ़ाता है। इसके अलावा, क्या यह हर मौके पर हमें एक ऐसा नियम नहीं दिखाता जो हमें सच्चाई की ओर वापस लाने के लिए, आदत, शक, फालतूपन और बेपरवाही की जड़ों को उखाड़कर चीज़ों को गंभीरता से लेने के लिए मजबूर करने के लिए उतना ही ज़रूरी है। यह सच है कि जो सच खुशी, सेहत के साथ मेल नहीं खाता, वह हमेशा ज़िंदगी के साथ भी मेल नहीं खाता। दुख मारकर खत्म होता है। हर नए, हावी होने वाले दुख के साथ एक और नस हमारी भौंहों और आँखों के नीचे अपनी जानलेवा टेढ़ी-मेढ़ी बनावट दिखाती है और उसे बढ़ाती है। इस तरह, धीरे-धीरे, रेम्ब्रांट, बीथोवेन के वे बुरी तरह से तबाह चेहरे बनते हैं, जिनका लोग कभी मज़ाक उड़ाते थे। और अगर दिल में इतनी तकलीफ़ न होती, तो आँखों के नीचे ये गड्ढे और माथे पर झुर्रियाँ नहीं होतीं। लेकिन क्योंकि ताकतें दूसरी ताकतों में बदल सकती हैं, क्योंकि गर्मी जो लंबे समय तक चलती है, वह रोशनी बन जाती है और बिजली की चमक में तस्वीरें खींच सकती है, क्योंकि हमारा भारी दिल का दर्द हर बार आने वाले दुख के साथ एक झंडे की तरह, एक दिखने वाला और हमेशा रहने वाला निशान, अपने ऊपर उठा सकता है, तो आइए हम आध्यात्मिक ज्ञान के लिए शारीरिक चोट को स्वीकार करें और अपने शरीर को टूटने दें, क्योंकि हर नया टुकड़ा जो अब खुद को अलग करता है, वह ज़्यादा चमकदार और साफ़ दिखता है ताकि हम अपना काम दूसरों को ज़रूरी तकलीफ़ देकर पूरा कर सकें, जो ज़्यादा काबिल हैं, उसे बनाते हुए और उसमें उतनी ही

भावनाएँ जोड़ते हुए जो हमारी ज़िंदगी को खत्म कर देती हैं। विचार दुखों का सब्स्टीट्यूट हैं; जब दुख विचारों में बदल जाते हैं, तो वे हमारे दिलों पर अपना कुछ बुरा असर खो देते हैं और पहली ही बार में उनका बदलना खुशी की भावना को खत्म कर देता है। हालाँकि, यह सब्स्टीट्यूट सिर्फ़ समय के क्रम में होता है, क्योंकि ऐसा लगता है कि पहला एलिमेंट विचार है और दुख सिर्फ़ वह तरीका है जिससे कुछ विचार सबसे पहले हमारे अंदर आते हैं। लेकिन आइडिया के ग्रुप में कई परिवार हैं, कुछ तो तुरंत खुश करने वाले होते हैं। इन बातों से मुझे उस सच्चाई का ज़्यादा मज़बूत और सही अंदाज़ा हुआ, जिसका मुझे अक्सर अंदाज़ा होता था, खासकर तब जब मैडम डी कैम्ब्रेमर हैरान थीं कि मैं एल्स्टिर जैसे कमाल के आदमी को एल्बर्टीन के लिए छोड़ सकती हूँ। दिमागी नज़रिए से भी मुझे लगा कि वह गलत थीं, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह जिन बातों को गलत समझ रही थीं, वे वे सबक थे जिनसे कोई एक साहित्यकार के तौर पर अपनी ट्रेनिंग पूरी करता है। कला की असल कीमत का इस मामले में बहुत कम असर होता है; जिसे निकालना और सामने लाना ज़रूरी है, वह है हमारी भावनाएँ, हमारे जुनून, जो सभी आदमियों की भावनाएँ और जुनून हैं। एक औरत जिसकी हमें ज़रूरत है, वह हमें तकलीफ़ देती है, हमसे भावनाओं की एक सीरीज़ ज़बरदस्ती निकालती है, जो उस बेहतर किस्म के आदमी से ज़्यादा गहरी और ज़रूरी होती है जिसमें हमारी दिलचस्पी हो। यह देखना बाकी है कि हम जिस लेवल पर जी रहे हैं, उसके हिसाब से क्या हमें पता चलेगा कि एक औरत की बेवफाई से हमें जो दर्द हुआ है, वह उन सच्चाइयों के मुकाबले मामूली है जो हमें पता चलीं, ऐसी सच्चाईयाँ जिन्हें हमें तकलीफ़ देने में खुश होने वाली औरत शायद ही समझ पाती। वैसे भी, ऐसी बेवफाई आम बात है। एक राइटर को लंबा काम करने से डरने की ज़रूरत नहीं है। अक्ल को काम करने दो;

इस दौरान उसे इसे खत्म करने के लिए काफी दुख मिलेंगे। खुशी का कोई और मकसद नहीं होता सिवाय इसके कि वह दुख को मुमकिन बनाए। जब हम खुश होते हैं, तो हमें भरोसे और लगाव के बहुत कोमल और मज़बूत रिश्ते बनाने पड़ते हैं ताकि उनके टूटने से हमें दुख नाम की कीमती टूटन मिले। खुशी के बिना, अगर सिर्फ उम्मीद की खुशी के बिना, कोई बेरहमी नहीं होगी और इसलिए, बदकिस्मती का कोई नतीजा नहीं होगा। और एक पेंटर को एक चर्च को पेंट करने के लिए कई चर्च देखने पड़ते हैं, उससे भी ज़्यादा, एक राइटर को, पाने के लिए।

आयतन, निरंतरता, व्यापकता और साहित्यिक यथार्थ के मामले में, किसी एक भावना को व्यक्त करने के लिए कई व्यक्तियों की आवश्यकता होती है; क्योंकि यदि कला लंबी है और जीवन छोटा, तो दूसरी ओर यह भी कहा जा सकता है कि यदि प्रेरणा क्षणिक है, तो जिन भावनाओं को उसे व्यक्त करना है, वे भी बहुत लंबी नहीं होतीं। हमारी भावनाएँ हमारी पुस्तकों को आकार देती हैं, और विश्राम के क्षणों में उन्हें लिखती हैं। जब प्रेरणा का पुनर्जन्म होता है, जब हम अपना काम फिर से शुरू करने में सक्षम होते हैं, तो वह स्त्री, जिसने हमारी भावनात्मक प्रतिक्रिया के लिए हमें प्रेरित किया था, अब हमें वह भावना महसूस नहीं करा पाती। हमें उसे किसी दूसरे 'मॉडल' (आदर्श) के आधार पर चित्रित करना जारी रखना पड़ता है; और यदि साहित्यिक अर्थ में, यह पहली स्त्री के प्रति एक प्रकार का विश्वासघात है, तो भी हमारी भावनाओं की समानता के कारण—जो किसी कृति को एक ही समय में हमारे पिछले प्रेम की स्मृति और नए प्रेम का प्रारंभिक बिंदु बनाती है—इस अदला-बदली में कोई बड़ा नुकसान नहीं होता। यही उन कारणों में से एक है जिसके चलते वे अध्ययन, जिनमें यह अनुमान लगाने का प्रयास किया जाता है कि कोई लेखक किसके बारे में लिख रहा है, व्यर्थ और हास्यास्पद होते हैं। क्योंकि यहाँ तक कि एक

प्रत्यक्ष स्वीकारोक्ति भी, कम से कम, लेखक के जीवन की विभिन्न घटनाओं के बीच पिरोई हुई होती है—वे प्रारंभिक घटनाएँ जिन्होंने उसे प्रेरित किया, और वे बाद की घटनाएँ जिन्होंने उसके बाद के प्रेम संबंधों को प्रेरित किया, जिनकी विशिष्टताएँ पहले वाले प्रेम की ही प्रतिलिपि थीं। क्योंकि हम उस व्यक्ति के प्रति उतने वफ़ादार नहीं होते जिससे हमने सबसे अधिक प्रेम किया हो, जितने कि हम स्वयं अपने प्रति होते हैं; और देर-सवेर हम उसे भूल जाते हैं—क्योंकि यह हमारी चारित्रिक विशेषताओं में से एक है—ताकि हम किसी और से प्रेम करना शुरू कर सकें। अधिक से अधिक, वह स्त्री जिससे हमने इतना प्रेम किया है, उस प्रेम को एक ऐसा विशिष्ट रूप प्रदान कर देती है, जो हमारी बेवफ़ाई के क्षणों में भी हमें उसके प्रति वफ़ादार बनाए रखता है। हमें उसकी जगह आने वाली स्त्री के साथ भी सुबह की सैर पर जाने की, और शाम को उसी अंदाज़ में उसे घर लाने की आवश्यकता महसूस होती है; और हमें उसे भी बहुत अधिक धन देना पड़ता है। (स्त्रियों को दिए जाने वाले धन का यह चक्र बड़ा ही विचित्र है; इसी के कारण वे हमें दुखी करती हैं, और इस प्रकार हमें पुस्तकें लिखने में सहायता करती हैं—कोई तो यहाँ तक कह सकता है कि साहित्यिक कृतियाँ 'आर्टीज़ियन कुओं' (पाताल-तोड़ कुओं) के समान होती हैं; पीड़ा जितनी गहरी होती है, वे उतनी ही ऊँचाई तक उठती हैं।) ये प्रतिस्थापन (substitutions) कृति में कुछ निस्वार्थ और अधिक व्यापक तत्व जोड़ते हैं, और साथ ही ये एक प्रकार के वैराग्य का पाठ भी हैं; हमें व्यक्तियों से आसक्ति नहीं रखनी चाहिए; क्योंकि यथार्थ में व्यक्ति नहीं, बल्कि विचार ही अस्तित्व में होते हैं और वर्णन के योग्य होते हैं। और जब तक ये 'मॉडल' हमारे पास उपलब्ध हैं, तब तक हमें समय व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। जो लोग खुशी के लिए पोज़ देते हैं, वे आम तौर पर हमें ज़्यादा समय नहीं दे पाते। लेकिन जो लोग दुख के लिए पोज़ देते

हैं, वे हमें उस स्टूडियो में खूब समय देते हैं, जिसका इस्तेमाल हम सिर्फ़ उन्हीं पलों में करते हैं। वह स्टूडियो हमारे अपने भीतर ही है। वे पल हमारे जीवन की एक तस्वीर होते हैं, जिसमें तरह-तरह के दुख-दर्द शामिल होते हैं। क्योंकि उनमें और भी दुख छिपे होते हैं, और ठीक उसी पल जब हम सोचते हैं कि अब हम शांत हैं, एक नया दुख जन्म ले लेता है—हर मायने में बिल्कुल नया। शायद इसलिए कि कुछ अनचाही परिस्थितियाँ हमें अपने आप से और भी गहराई से जुड़ने पर मजबूर कर देती हैं; प्यार हमें हर पल जिन दर्दनाक दुविधाओं में डालता है, वे हमें सिखाती हैं और धीरे-धीरे हमारे सामने यह राज़ खोलती हैं कि हम असल में किस चीज़ से बने हैं।

इसके अलावा, भले ही दुख अपने प्रकटीकरण से हमारे काम की कच्ची सामग्री न दे, फिर भी वह हमें प्रेरित करके हमारी मदद करता है। कल्पना और विचार प्रशंसनीय क्रियाविधियाँ हो सकती हैं, लेकिन वे निष्क्रिय भी हो सकती हैं। केवल दुख ही उन्हें गति प्रदान करता है। इसलिए जब फ्रांस्वा ने देखा कि अल्बर्टीन घर के किसी भी खुले दरवाजे से कुत्ते की तरह अंदर आ जाती थी, जहाँ भी जाती अव्यवस्था फैलाती थी, मुझे बर्बाद करती थी, मुझे असीम दुख देती थी, तो उसने कहा (क्योंकि उस समय तक मैं कुछ लेख और अनुवाद कर चुका था), "काश, महोदय ने एक सुशिक्षित छोटी सचिव को रख लिया होता जो उनके सारे कागज़ों को उस लड़की की जगह व्यवस्थित कर देती जो उनका समय बर्बाद करती है," शायद मैं यह सोचकर गलत था कि वह समझदारी की बात कह रही थी। शायद अल्बर्टीन मेरे लिए, साहित्यिक दृष्टिकोण से भी, मेरा समय बर्बाद करने और मुझे दुख देने में उस सचिव से कहीं अधिक उपयोगी थी जो मेरे कागज़ों को व्यवस्थित कर देती। लेकिन फिर भी, जब कोई प्राणी

इतना विकृत होता है (शायद प्रकृति में वह प्राणी मनुष्य है) कि वह कष्ट सहे बिना प्रेम नहीं कर सकता और सत्य जानने के लिए उसे कष्ट सहना ही पड़ता है, तो ऐसे प्राणी का जीवन अंततः अत्यंत थकाऊ हो जाता है। सुखमय वर्ष व्यर्थ ही बीत जाते हैं; हमें कष्ट के आने का इंतजार करना पड़ता है ताकि वह हमें काम करने के लिए प्रेरित करे। प्रारंभिक कष्ट का विचार काम से जुड़ा होता है, हम हर नए कार्य से डरते हैं क्योंकि इससे हमें आने वाले कष्टों की याद दिला दी जाती है, इससे पहले कि हम उनकी कल्पना भी कर सकें। और, यह जानकर कि कष्ट ही जीवन की सबसे अच्छी चीज है, हम मृत्यु को बिना किसी भय के, लगभग मुक्ति के रूप में देखते हैं। फिर भी, अगर यह विचार मुझे कुछ हद तक अप्रिय लगा, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमने जीवन के साथ खिलवाड़ नहीं किया है और दूसरों के जीवन से लाभ उठाकर किताबें नहीं लिखी हैं, बल्कि ठीक इसके विपरीत किया है। महान वर्थर का मामला, अफसोस, मेरा नहीं था। अल्बर्टीन के प्रेम पर एक पल भी विश्वास किए बिना, मैंने बीस बार उसके लिए आत्महत्या करने की इच्छा की; मैंने उसके लिए खुद को बर्बाद कर दिया और अपना स्वास्थ्य नष्ट कर दिया। जब लेखन की बात आती है, तो हमें बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है, बारीकी से देखना पड़ता है और असत्य को त्याग देना पड़ता है। लेकिन जब बात सिर्फ हमारे अपने जीवन की होती है, तो हम झूठ के लिए खुद को बर्बाद कर लेते हैं, बीमार कर लेते हैं, और खुद को मार डालते हैं। सच तो यह है कि (यदि कोई कवि बनने के लिए बहुत बूढ़ा हो चुका हो) उन्हीं झूठों के जाल से ही हम थोड़ी सी सच्चाई निकाल सकते हैं। दुःख अस्पष्ट और घृणित सेवक हैं जिनसे हम संघर्ष करते हैं, जिनके प्रभाव में हम और अधिक गिरते जाते हैं, ऐसे दुष्ट सेवक जिन्हें हम बदल नहीं सकते, लेकिन जो विचित्र और कपटपूर्ण तरीकों से हमें सत्य और मृत्यु की ओर ले जाते हैं।

धन्य हैं वे जिन्होंने मृत्यु से पहले सत्य का सामना किया है और जिनके लिए, भले ही एक के बाद एक सत्य आता हो, मृत्यु से पहले सत्य का समय आ जाता है।

इसके अलावा, मुझे एहसास हुआ कि मेरे बीते जीवन की सबसे तुच्छ घटनाओं ने मिलकर मुझे आदर्शवाद का वह पाठ दिया था जिससे अब मुझे लाभ मिलने वाला था। उदाहरण के लिए, एम. डी चार्लस के साथ मेरी मुलाकातों ने, उनके जर्मन प्रेम से पहले ही, मुझे यही पाठ नहीं दिया था, और वह भी श्रीमती डी गुएरमांटेस या अल्बर्टीन के प्रति मेरे प्रेम से कहीं बेहतर, सेंट-लूप के राहेल के प्रति प्रेम से कहीं बेहतर, यह साबित कर दिया था कि भौतिक चीजें कितनी कम मायने रखती हैं, कि हर चीज को विचार से बनाया जा सकता है, एक ऐसा सत्य जिसे यौन विकृति की घटना, जिसे बहुत कम समझा जाता है, और जिसकी इतनी लापरवाही से निंदा की जाती है, महिलाओं के प्रति प्रेम की घटना से भी कहीं अधिक उजागर करती है, हालांकि वह भी शिक्षाप्रद है; बाद वाला हमें उस स्त्री से सुंदरता को दूर होते हुए दिखाता है जिससे हम अब प्रेम नहीं करते और वह उस चेहरे में निवास करती है जिसे दूसरे लोग बेहद बदसूरत मानते हैं, जो वास्तव में हमें नापसंद हो सकता था और शायद बाद में होगा भी; लेकिन एक बस कंडक्टर की टोपी के नीचे ऐसे चेहरे को देखना और भी उल्लेखनीय है, जो एक भव्य जागीरदार का सारा सम्मान प्राप्त कर रहा है, जिसने इसके लिए एक सुंदर राजकुमारी को त्याग दिया है। क्या हर बार जब मैंने गिलबर्ट, श्रीमती डी गुएरमांटेस और अल्बर्टीन का चेहरा शैंप्स एलिसीज़ में, सड़क पर, किनारे पर फिर से देखा, तो मेरा आश्चर्य इस बात का प्रमाण नहीं है कि स्मृति केवल उसी दिशा में विस्तारित हो सकती है जो उस छाप से अलग होती है जिसके साथ वह पहले मेल खाती थी और जिससे वह धीरे-धीरे अलग होती जाती है? लेखक को इस

बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि यदि विभक्त अपनी नायिकाओं को मर्दाना चेहरा देता है। यह विचित्र विचलन ही विभक्त के लिए अपने द्वारा पढ़ी गई बातों पर सामान्यीकरण लागू करने का एकमात्र साधन है। यदि एम. डी चार्लस ने मोरेल का चेहरा उस बेवफा को न दिया होता जिसके लिए मुसेट नुइट डी'ऑक्टोब्रे या सौवेनिर में आंसू बहाता है, तो वह न तो रोता और न ही समझता, क्योंकि केवल उसी मार्ग से, चाहे वह संकरा और घुमावदार ही क्यों न हो, उसे प्रेम की सच्चाइयों तक पहुँच प्राप्त हुई थी। प्रस्तावनाओं और समर्पणों की बनावटी भाषा से उपजी एक परंपरा के माध्यम से ही लेखक "मेरे पाठक" कहता है। वास्तव में, प्रत्येक पाठक पढ़ते समय स्वयं का ही पाठक होता है। लेखक की रचना एक प्रकार का दृष्टि यंत्र मात्र है जिसे वह पाठक को इसलिए प्रस्तुत करता है ताकि वह पुस्तक में वह देख सके जो शायद वह स्वयं में न देख पाए। पाठक द्वारा पुस्तक में स्वयं को पहचानना ही उसकी सत्यता का प्रमाण है और इसके विपरीत भी, कम से कम कुछ हद तक, क्योंकि दोनों ग्रंथों के बीच का अंतर अक्सर लेखक की अपेक्षा पाठक के कारण अधिक होता है। इसके अलावा, कोई पुस्तक सरल पाठक के लिए अत्यधिक विद्वतापूर्ण या जटिल हो सकती है, और इस प्रकार उसे केवल एक धुंधला दर्पण दिखा सकती है जिससे वह पढ़ न सके। लेकिन अन्य विशिष्टताओं (जैसे उलटा पढ़ना) के कारण पाठक को अच्छी तरह पढ़ने के लिए एक विशेष तरीके से पढ़ना आवश्यक हो सकता है; लेखक को इस पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसके विपरीत, पाठक को पूरी स्वतंत्रता देनी चाहिए और उससे कहना चाहिए: "कोशिश करो कि क्या तुम इससे, उससे या किसी अन्य दर्पण से बेहतर देख पाते हो।"

अगर मुझे सपनों में हमेशा से इतनी दिलचस्पी रही है, तो क्या यह इसलिए नहीं है कि वे समय की कमी को तीव्रता से संतुलित करके हमें

प्रेम में व्यक्तिपरक चीज़ों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं? और यह इस सरल तथ्य के कारण है कि वे उस चीज़ को अत्यंत तेज़ी से वास्तविक बना देते हैं जिसे आम बोलचाल में 'nous mettre une femme dans la peau' कहा जाता है - यानी कुछ मिनटों के लिए किसी बदसूरत औरत के साथ बेतहाशा प्यार में पड़ जाना, जिसके लिए वास्तविक जीवन में वर्षों के अभ्यास, मिलन और - मानो किसी चमत्कारिक डॉक्टर द्वारा आविष्कार किए गए हों - प्रेम के अंतःशिरा इंजेक्शन की आवश्यकता होती है, जैसा कि वे पीड़ा के भी हो सकते हैं; उतनी ही तेज़ी से प्रेम का भाव मिट जाता है और कभी-कभी न केवल रात का प्रेमी गायब होकर फिर से वही जाना-पहचाना बदसूरत रूप ले लेता है, बल्कि कुछ और भी अनमोल चीज़ मिट जाती है - मोहक भावनाओं, कोमलता, आनंद, पछतावे की पूरी तस्वीर, जो मन में धुंधली सी समाई होती है - साइथेरा के लिए जुनून का पूरा भंडार, जिसे हमें जागने के क्षण से पहले याद रखना चाहिए - एक सुंदर सत्य की छायाएँ जो एक धुंधली पेंटिंग की तरह मिट जाती हैं, जिसे फिर से संवारना असंभव है। खैर, शायद यह सपनों के समय के साथ खेले जाने वाले असाधारण खेल के कारण ही था कि वे मुझे इतना आकर्षित करते थे। क्या मैंने एक ही रात में, रात के एक मिनट में, बीते दिनों को न देखा होता, जो उन विशाल दूरियों में खो गए थे जहाँ हम उस समय की अपनी भावनाओं को मुश्किल से ही पहचान पाते हैं, अचानक मुझ पर छा गए, अपनी चमक से मुझे अंधा कर दिया जैसे कि वे उन फीके तारों की जगह विशाल हवाई जहाज हों, जिन पर हम विश्वास करते थे, मुझे वह सब कुछ फिर से देखने को मिला जो कभी मेरे लिए था, मुझे उनकी निकटता की भावना, सदमा, जीवंतता वापस दे दी, और फिर जब मैं जागा तो वे उस दूरी में वापस चले गए जिसे उन्होंने चमत्कारिक रूप से तय किया था,

जिससे कोई यह मान लेता है, हालांकि यह गलत है, कि वे खोए हुए समय को पुनः प्राप्त करने के साधनों में से एक हैं।

मुझे यह अहसास हो गया था कि केवल घोर त्रुटिपूर्ण अवलोकन ही हर चीज़ को वस्तु में समाहित कर देता है, जबकि सब कुछ मन में होता है; मैंने अपनी दादी को वास्तव में कई महीनों बाद खोया था, मैंने लोगों के स्वरूप को इस बात पर बदलते देखा था कि मैं या दूसरे उनके बारे में क्या धारणा बनाते हैं, एक ही व्यक्ति अनेक बन जाता है, इस बात पर कि उसे कितने लोगों ने देखा (इस कृति की शुरुआत में विभिन्न स्वान, उनसे मिलने वालों के अनुसार; लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी, इस बात पर निर्भर करती है कि उन्हें पहले राष्ट्रपति ने देखा था या मैंने) यहाँ तक कि एक ही व्यक्ति कई वर्षों में अनेक बन जाता है (मेरे अपने अनुभव में गुएरमांटेस और स्वान के विभिन्न रूप)। मैंने देखा था कि प्रेम दूसरे को वह प्रदान करता है जो केवल प्रेम करने वाले में होता है। और मुझे यह सब और भी अधिक अहसास हुआ क्योंकि मैंने वस्तुनिष्ठ वास्तविकता और प्रेम के बीच की दूरी को उसकी चरम सीमा तक बढ़ा दिया था; (सेंट-लूप के दृष्टिकोण से राहेल और मेरे दृष्टिकोण से, मेरे और सेंट-लूप के दृष्टिकोण से अल्बर्टीन, एम. डी चार्लस के दृष्टिकोण से मोरेल या बस कंडक्टर या अन्य लोग)। अंततः, एक हद तक एम. डी चार्लस का जर्मन प्रेम, अल्बर्टाइन की तस्वीर पर सेंट-लूप की दृष्टि की तरह, मुझे क्षण भर के लिए, यदि मेरे जर्मन-विरोध से नहीं तो कम से कम इसकी विशुद्ध वस्तुनिष्ठता में मेरे विश्वास से, स्वयं को अलग करने में मदद मिली और मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि शायद यह घृणा के साथ-साथ प्रेम भी था और जर्मनी पर फ्रांस द्वारा अब सुनाए जा रहे उस भयानक फैसले में, जिसे वह मानवता की सीमा से बाहर मानता है, एक ऐसी वस्तुनिष्ठ भावना निहित है जिसने राहेल और अल्बर्टाइन को इतना अनमोल बना

दिया, एक सेंट-लूप के लिए, दूसरी मेरे लिए। दरअसल, यह बात इसलिए संभव प्रतीत हुई कि यह दुष्टता केवल जर्मनी तक ही सीमित नहीं थी, क्योंकि मैंने स्वयं कई प्रेमों का अनुभव किया था, जिनके अंत में प्रत्येक प्रेम का कोई मूल्य नहीं रह गया था, और मैंने अपने देश को लगातार घृणाओं का सामना करते हुए भी देखा था, जिसके कारण वह देशद्रोही प्रतीत हुआ—उन जर्मनों से हज़ार गुना बदतर, जिनके प्रति ये देशद्रोही फ्रांस के साथ विश्वासघात कर रहे थे—रीनाच जैसे ड्रेफसवादी, जिनके साथ देशभक्त अब एक ऐसे देश के विरुद्ध सहयोग कर रहे थे, जिसका प्रत्येक सदस्य अनिवार्य रूप से झूठा, क्रूर जानवर और मूर्ख था, सिवाय उन जर्मनों के जिन्होंने फ्रांसीसी पक्ष का समर्थन किया था, जैसे रोमानिया के राजा और रूस की महारानी। यह सच है कि ड्रेफस विरोधी ने उत्तर दिया होगा: "यह एक ही बात नहीं है।" लेकिन वास्तव में, यह कभी भी एक ही बात नहीं होती, ठीक वैसे ही जैसे यह एक ही व्यक्ति नहीं होता। यदि ऐसा न होता, तो एक समान घटना की उपस्थिति में, जो व्यक्ति इसका शिकार होता है, वह यह विश्वास नहीं कर पाता कि इसमें गुण या दोष अंतर्निहित हैं और वह केवल अपनी स्वयं की व्यक्तिपरक स्थिति को ही दोष देता।

इसलिए, बुद्धि को इस अंतर के आधार पर सिद्धांत गढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होती (कट्टरपंथियों के अनुसार सभाओं की शिक्षा प्रकृति के विरुद्ध है, यहूदी जाति के लिए राष्ट्रवाद को आत्मसात करना असंभव है, जर्मनों की लैटिन जाति के प्रति धर्मनिरपेक्ष घृणा, पीली जातियों का क्षणिक पुनर्वास)। यह व्यक्तिपरक प्रभाव उन तटस्थ जर्मन-समर्थकों में भी समान रूप से स्पष्ट था, जिन्होंने बेल्जियम में जर्मन अत्याचारों की चर्चा होते ही समझने या सुनने की क्षमता खो दी थी। (और, आखिरकार, वे वास्तविक अत्याचार थे।) मैंने टिप्पणी की कि घृणा की व्यक्तिपरक प्रकृति, दृष्टि की

तरह ही, वस्तु में वास्तविक गुण या दोष होने से नहीं रोकती और किसी भी तरह से वास्तविकता को शुद्ध "सापेक्षता" में लुप्त नहीं होने देती। और अगर इतने वर्षों और इतने समय के बीत जाने के बाद, मुझे मानवता के भीतर इस जीवंत ऊर्जा का संचार अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी महसूस हो रहा है, तो यह तब होता जब मैंने अपने जीवन की शुरुआत में ही इसे न समझ लिया होता, जब मैंने कॉम्ब्रे के बगीचे में बर्गोट के उपन्यासों में से एक पढ़ा था। और आज भी, अगर मैं उन भूले हुए पन्नों को पलटता हूँ और एक दुष्ट चरित्र की साजिशें देखता हूँ, तो मैं तब तक किताब नहीं छोड़ सकता जब तक कि मैं सौ पन्ने पलटकर यह सुनिश्चित न कर लूँ कि अंत में खलनायक को उचित रूप से अपमानित किया गया है और वह इतना लंबा जीवित रहता है कि उसे पता चल जाए कि उसके नापाक इरादे नाकाम हो गए हैं। क्योंकि मुझे अब याद नहीं आ रहा कि उन पात्रों का क्या हुआ, इस मामले में वे उन लोगों से अलग नहीं हैं जो आज दोपहर श्रीमती डी गुएरमांटेस के यहाँ दिखाई देंगे, जिनका अतीत, कम से कम उनमें से कई का, इतना धुंधला है मानो मैंने उनके बारे में किसी आधे-भूले उपन्यास में पढ़ा हो।

क्या एग्रीजेंट के राजकुमार ने अंततः मैडम X— से विवाह किया था? या फिर मैडम X— के भाई ने एग्रीजेंट के राजकुमार की बहन से विवाह किया था, या मैं उन्हें किसी ऐसी बात से भ्रमित कर रहा था जो मैंने कभी पढ़ी या सपने में देखी थी? वह सपना मेरे जीवन के उन तथ्यों में से एक था जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया था, जिसने मुझे वास्तविकता के विशुद्ध मानसिक स्वरूप के बारे में आश्वस्त करने में सबसे अधिक सहायक सिद्ध किया था, एक ऐसा सहयोग जिसे मैं अपने काम की रचना में तुच्छ नहीं समझूंगा। जब मैं प्रेम के लिए कुछ अधिक निस्वार्थ भाव से जी रहा था, तो एक सपना मेरी दादी को मेरे बेहद करीब ले आता

था, मानो वह बीते हुए समय के बड़े अंतरालों को भर रही हों, और ऐसा ही अल्बर्टीन के साथ भी हुआ, जिससे मुझे फिर से प्रेम होने लगा क्योंकि, मेरी नींद में, उसने मुझे धोबिन की कहानी का एक संक्षिप्त संस्करण सुनाया था। मुझे विश्वास था कि सपने कभी-कभी इस तरह उन सच्चाइयों और अनुभवों के वाहक बन सकते हैं जो मेरे अकेले प्रयासों या बाहरी दुनिया के अनुभवों से मुझे नहीं मिल सकते, कि वे मुझमें कुछ ऐसी काल्पनिक चीजों के लिए इच्छा या लालसा जगा सकते हैं जो काम करने, आदतों से विरक्ति करने और मूर्त चीजों से खुद को अलग करने की शर्त है। मुझे इस दूसरी प्रेरणा, इस रात्रिकालीन प्रेरणा का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, जो कभी-कभी पहली प्रेरणा की जगह ले सकती है।

मैंने देखा था कि जब अभिजात वर्ग के लोगों का दिमाग (उदाहरण के लिए ड्यूक डी गुएरमांटेस की तरह) अशिष्ट हो जाता है, तो वे भी अशिष्ट हो जाते हैं। "तुम्हें शर्म नहीं आती?" उसने पूछा, ठीक वैसे ही जैसे कॉटार्ड ने पूछा होगा। चिकित्सा जगत में, ड्रेफस मामले में, युद्ध के दौरान, मैंने लोगों को यह मानते देखा था कि सत्य मंत्रियों और डॉक्टरों की संपत्ति है, एक हां या ना जिसे व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती, जो एक रेडियोग्राफिक प्लेट को बिना व्याख्या के यह बताने में सक्षम बनाता है कि किसी बीमार व्यक्ति को क्या हुआ है, जो सत्ता में बैठे लोगों को यह जानने में सक्षम बनाता है कि ड्रेफस दोषी था, यह जानने में सक्षम बनाता है (रोक्स को मौके पर जांच के लिए भेजे बिना) कि क्या सर्रेल के पास रूसियों के साथ-साथ आगे बढ़ने के लिए आवश्यक संसाधन थे। मेरे जीवन का एक भी क्षण ऐसा नहीं था जिसने मुझे यह न सिखाया हो, जैसा कि मैंने कहा है, कि केवल घोर त्रुटिपूर्ण धारणा ही हर चीज को वस्तु में समाहित कर देती है; जबकि इसके विपरीत, सब कुछ मन में होता है। संक्षेप में, अगर मैं विचार करूं तो, मेरे अनुभव का सार मुझे

स्वान से मिला, न कि केवल उनके और गिल्बर्ट से संबंधित बातों से। वही थे जिन्होंने, कॉम्ब्रे के दिनों से ही, मुझे बालबेक जाने की इच्छा दी थी, जहाँ उनके बिना मेरे माता-पिता मुझे भेजने का विचार भी नहीं करते और जिनके बिना मैं अल्बर्टीन को कभी नहीं जान पाता। सच है, जब मैंने पहली बार उसे समुद्र की ओर देखते हुए देखा, तो मैंने उसके चेहरे से कुछ बातें जोड़ दीं। एक अर्थ में, उन बातों को उससे जोड़ना सही था, क्योंकि अगर मैं उस दिन समुद्र के किनारे न गया होता, अगर मैं उसे न जानता, तो ये सारे विचार विकसित न होते (कम से कम किसी और के द्वारा विकसित न किए गए होते)। मैं फिर से गलत था, क्योंकि वह प्रेरणादायक आनंद जिसे हम बाद में किसी स्त्री के सुंदर चेहरे से जोड़ना पसंद करते हैं, हमारी इंद्रियों से आता है और किसी भी मामले में, यह बिल्कुल निश्चित था कि उस समय की अल्बर्टीन, मेरे द्वारा लिखे जाने वाले पन्नों को नहीं समझ पाती। लेकिन बस इसी वजह से (और यह एक चेतावनी है कि बहुत अधिक बौद्धिक वातावरण में न रहें) क्योंकि वह मुझसे इतनी अलग थीं कि उन्होंने मुझे पीड़ा के माध्यम से उत्पादक बनाया, और शुरुआत में तो उस सरल प्रयास से भी जो स्वयं से भिन्न होने की कल्पना करने के लिए आवश्यक था। यदि वह इन पृष्ठों को समझ पातीं, तो वह इन्हें प्रेरित करने में असमर्थ होतीं। लेकिन स्वान के बिना मैं गुएरमांटे परिवार को जान भी नहीं पाता, क्योंकि मेरी दादी ने श्रीमती डी विलेपारिसिस को पुनः नहीं खोजा होता, मैं सेंट-लूप और एम. डी चार्लस से परिचित नहीं होता, जिसके कारण मैं डचेस डी गुएरमांटे को जान पाया और उनके माध्यम से उनकी चचेरी बहन को, और इस प्रकार प्रिंस डी गुएरमांटे के घर में इस समय मेरी उपस्थिति, जहाँ से अचानक मेरे काम का विचार उत्पन्न हुआ (इस प्रकार मुझे स्वान का न केवल विषय बल्कि निर्णय भी ऋणी बनाता है), भी मुझे स्वान से ही प्राप्त हुई, जो मेरे पूरे

जीवन के विस्तार को सहारा देने वाला एक कमजोर आधार है। (इस लिहाज से, गुएरमांटेस का यह पक्ष स्वान के पक्ष से ही निकला था।) लेकिन अक्सर हमारे जीवन की दिशा तय करने वाला व्यक्ति स्वान से कहीं कमतर होता है, बल्कि एक बिल्कुल उदासीन व्यक्ति होता है। किसी सहपाठी के बस इतना कहने से ही मैं बालबेक जाने के लिए तैयार हो जाता कि मुझे किसी लड़की से मिलना चाहिए (जहाँ शायद मैं उससे कभी नहीं मिलता)। इसलिए अक्सर ऐसा होता है कि बाद में किसी ऐसे सहपाठी से मुलाकात हो जाती है जिसे हम पसंद नहीं करते और उससे हाथ मिला लेते हैं, यह जाने बिना कि हमारे जीवन और काम की पूरी दिशा उसके एक आकस्मिक कथन से ही तय हो गई: "तुम्हें बालबेक आना चाहिए।" हम उसके प्रति कोई कृतज्ञता महसूस नहीं करते और न ही यह हमें कृतघ्न साबित करता है। क्योंकि उन शब्दों को कहते समय उसने हमारे लिए होने वाले भयानक परिणामों की कल्पना भी नहीं की थी। पहला आवेग मिलते ही, मेरी संवेदनशीलता और बुद्धि ने उन परिस्थितियों का फायदा उठाया जिनसे एक दूसरे का संबंध स्थापित हुआ, हालांकि उन्हें अल्बर्टीन से मेरे मिलन का उतना ही पूर्वाभास था जितना कि गुएरमांटेस के यहाँ होने वाले नकाबपोश भोज का। निःसंदेह, उनकी भूमिका आवश्यक थी और उनके माध्यम से ही हमारे जीवन का बाहरी स्वरूप, यहाँ तक कि हमारे काम की कच्ची सामग्री भी उनसे ही उत्पन्न हुई। यदि स्वान न होते, तो मेरे माता-पिता मुझे बालबेक भेजने का विचार कभी न करते, लेकिन इससे वे उन कष्टों के लिए उत्तरदायी नहीं हो जाते जो उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से मुझे दिए; ये मेरी अपनी कमजोरी के कारण थे, जैसे उनकी कमजोरी ओडेट द्वारा उन्हें पहुँचाए गए दर्द के लिए जिम्मेदार थी। लेकिन इस प्रकार मेरे जीवन का निर्धारण करके, उन्होंने उन सभी जीवन को नकार दिया जो मैं अन्यथा जी सकती थी। यदि स्वान

ने मुझे बालबेक के बारे में न बताया होता, तो मैं अल्बर्टीन, होटल के भोजन कक्ष, गुएरमांटेस को कभी न जान पाती। मैं कहीं और चली जाती; मुझे और भी लोगों को जानना चाहिए था, मेरी यादें मेरी किताबों की तरह बिल्कुल अलग-अलग तस्वीरों से भरी होतीं, जिनकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती, लेकिन जिनकी अनजानी नवीनता मुझे आकर्षित करती है और मुझे इस बात का अफसोस होता है कि मैं उस तरह से आकर्षित नहीं हुई और अल्बर्टाइन, बालबेक तट, रिवेबेल और गुएरमांटेस हमेशा के लिए मेरे लिए अज्ञात नहीं रह गए।

ईर्ष्या एक कुशल भर्ती अधिकारी की तरह होती है, जो हमारी तस्वीर में खाली जगह देखकर, गली में हमारी मनचाही लड़की को ढूंढ निकालती है। शुरुआत में वह शायद उतनी सुंदर न लगे, लेकिन वह जल्द ही उस खाली जगह को भर देती है और जब हम उससे ईर्ष्या करने लगते हैं तो वह सुंदर बन जाती है।

एक बार जब हम मर जाएंगे, तो हमें अपनी पूरी तस्वीर से कोई खुशी नहीं मिलेगी। लेकिन यह विचार किसी भी तरह से निराशाजनक नहीं है, क्योंकि हम महसूस करते हैं कि जीवन आम तौर पर जितना समझा जाता है उससे कहीं अधिक जटिल है, परिस्थितियाँ भी वैसी ही हैं, और इस जटिलता को साबित करने की बहुत आवश्यकता है। ईर्ष्या जरूरी नहीं कि किसी नज़र से, किसी बात से या चिंतन के परिणाम स्वरूप पैदा हो; यह हमें किसी निर्देशिका के पन्नों के बीच भी मिल सकती है—जिसे पेरिस में 'टूट-पेरिस' और ग्रामीण इलाकों में 'एनुअर डेस शैटो' कहा जाता है। अनमने ढंग से, हमने सुना था कि एक सुंदर लड़की, जिसके बारे में अब हम सोचते भी नहीं थे, कुछ दिनों के लिए अपनी बहन से मिलने पास-डे-कैले गई थी। उतनी ही उदासीनता से हमें पहले यह ख्याल आया था कि शायद इस सुंदर लड़की के साथ एम.ई. ने प्रेम संबंध बनाए थे, जिससे

वह अब कभी नहीं मिलती क्योंकि वह अब उस बार में नहीं जाती जहाँ वह उससे मिलती थी। उसकी बहन कौन और क्या हो सकती है, शायद कोई नौकरानी? विवेक के कारण, हमने उससे कभी नहीं पूछा था। और अब, देखो! संयोगवश एनुएयर डेस शैतो (Châteaux) खोलने पर हमें पता चलता है कि एम. ई. का डनकर्क के पास पास-डे-कैले में एक देहाती घर है। अब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है; उस सुंदर लड़की को खुश करने के लिए उसने उसकी बहन को नौकरानी के रूप में रख लिया है, और अगर वह सुंदर लड़की उसे अब बार में नहीं देखती है तो इसका कारण यह है कि वह उसे अपने घर बुलाता है और यद्यपि वह लगभग पूरे साल पेरिस में रहता है, पास-डे-कैले में रहते हुए भी वह उसके बिना नहीं रह सकता। क्रोध और प्रेम से मदहोश रंग-बिरंगे चित्र बनाता रहता है। लेकिन मान लीजिए कि ऐसा नहीं है, मान लीजिए कि वास्तव में एम. ई. अब उस सुंदर लड़की से नहीं मिलता था और उसने केवल उसकी बहन को अपने भाई को सौंप दिया था जो पूरे साल पास-डे-कैले में रहता है, इसलिए संयोगवश वह अपनी बहन से मिलने उस समय गई जब एम. ई. वहाँ नहीं था, क्योंकि उसने देखा कि उन दोनों के बीच अब कोई प्रेम नहीं रह गया था। जब तक कि बहन वास्तव में शैतो या कहीं और नौकरानी न हो, बल्कि उसका परिवार पास-डे-कैले में रहता हो। हमारी मूल बेचैनी नवीनतम अनुमान के आगे हार मान लेती है जो हमारी ईर्ष्या को शांत करता है। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? शैतो के विवरण के पन्नों में दबी ईर्ष्या ठीक समय पर सामने आई है, क्योंकि अब कैनवास का खाली स्थान भर गया है और पूरी तस्वीर बड़ी कुशलता से रची गई है, ईर्ष्या के कारण उस सुंदर लड़की का आभास हुआ है जिसकी न तो हमें परवाह है और न ही हम उससे ईर्ष्या करते हैं।

उसी क्षण बटलर आकर मुझे बताया कि पहला कार्यक्रम समाप्त हो गया

है और मैं पुस्तकालय छोड़कर ड्राइंग रूम में जा सकता हूँ। इससे मुझे याद आया कि मैं कहाँ हूँ। लेकिन इस बात से मेरी बहस में कोई बाधा नहीं आई कि एक फैशनेबल मनोरंजन, समाज में वापसी, एक नए जीवन की ओर प्रस्थान बिंदु प्रदान कर रही थी, जिसका मार्ग मैं एकांत में नहीं खोज पा रहा था। इसमें कुछ भी असाधारण नहीं था, एक ऐसा प्रभाव जिसने मेरे भीतर के शाश्वत मनुष्य को जगाया था, वह न तो एकांत से जुड़ा था और न ही समाज से (जैसा कि मैंने कभी माना था, जैसा कि शायद पहले था, जैसा कि शायद अब भी हो सकता था, यदि मैं उस लंबे अंतराल से गुजरने के बजाय सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित हुआ होता, जो अब समाप्त होता प्रतीत हो रहा था)। क्योंकि, मुझे सौंदर्य का वह आभास तभी होता था जब वास्तविक अनुभूति पर, चाहे वह कितनी भी तुच्छ क्यों न हो, उससे मिलती-जुलती एक और अनुभूति थोपी जाती थी, जो मुझमें स्वतः पुनर्जन्म लेकर, पहली अनुभूति को कई अवधियों में विस्तारित करती थी और मेरी आत्मा को, जिसमें मेरी सामान्य एकल संवेदनाओं ने एक रिक्त स्थान छोड़ दिया था, एक व्यापक सार से भर देती थी। इसलिए, कोई कारण नहीं था कि मैं ऐसी संवेदनाओं को समाज से भी उतनी ही आसानी से प्राप्त न कर सकूँ जितनी प्रकृति से, क्योंकि वे अनियमित रूप से घटित होती हैं, निस्संदेह एक विशेष उत्तेजना से प्रेरित होती हैं जिसके कारण, जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के सामान्य क्रम से बाहर होता है, तो सबसे सरल चीजें भी ऐसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने लगती हैं जिन्हें आदत हमारे तंत्रिका तंत्र को नहीं देती। मेरा उद्देश्य इसके वस्तुनिष्ठ कारण का पता लगाना था कि यह ठीक और केवल वही संवेदनाएँ क्यों हैं जो कलाकृति की ओर ले जाती हैं, पुस्तकालय में जिन विचारों को मैं एक साथ जोड़ने पर तुला हुआ था, उनका अनुसरण करते हुए, क्योंकि मुझे लगा कि मेरे आध्यात्मिक जीवन की मुक्ति अब इतनी

पूर्ण हो चुकी है कि मैं ड्राइंग रूम में मेहमानों के बीच भी अपने विचारों को उतनी ही सहजता से बनाए रख सकता हूँ जितनी कि पुस्तकालय में अकेले। मुझे उस विशाल समूह के बीच भी अपनी एकांतता बनाए रखने का तरीका पता होना चाहिए। दरअसल, जिस कारण से बाहरी दुनिया की बड़ी घटनाओं का हमारी मानसिक क्षमताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और महाकाव्य काल में रहने वाला एक साधारण लेखक फिर भी साधारण ही रहता है, उसी कारण से समाज में खतरनाक वह सांसारिक प्रवृत्ति थी जो व्यक्ति उसमें लेकर आता था। लेकिन, अपने आप में, यह हमें साधारण नहीं बना देगा, ठीक उसी तरह जैसे वीरों का युद्ध किसी बुरे कवि को महान नहीं बना सकता। किसी भी मामले में, चाहे कलाकृति का इस प्रकार से निर्मित होना सैद्धांतिक रूप से लाभप्रद हो या नहीं, और इस प्रश्न की आगे की जांच की प्रतीक्षा करते हुए, जहाँ तक मेरा संबंध है, यह निर्विवाद था कि जब भी मुझे कोई वास्तविक सौंदर्यबोध प्राप्त हुआ, वह हमेशा इसी प्रकार की संवेदनाओं के परिणामस्वरूप हुआ था। सच है, वे मेरे जीवन में बहुत कम ही आए थे, लेकिन उन्होंने मेरे जीवन पर प्रभुत्व जमाया था, और मैं अतीत से उन ऊँचाइयों में से कुछ को पुनः प्राप्त कर सकता था जिन्हें मैंने गलती से खो दिया था (और मैं ऐसा दोबारा नहीं करना चाहता था)। अब मैं इतना कह सकता हूँ कि यदि मेरे मामले में यह एक विलक्षणता थी, जो मेरे लिए इसके विशेष महत्व के कारण थी, तो मुझे यह जानकर तसल्ली हुई कि यह कुछ लेखकों के मामले में कम स्पष्ट लेकिन पहचानने योग्य और मौलिक रूप से समान विशेषताओं से संबंधित है। क्या मेमोइर्स डी आउट्रे-टोम्बे का सबसे सुंदर भाग मेडेलिन के संबंध में मेरी भावनाओं से मेल नहीं खाता: "कल शाम मैं अकेला टहल रहा था... एक बर्च के पेड़ की सबसे ऊँची शाखा पर बैठी एक श्रश चिड़िया के चहचहाने ने मुझे मेरे विचारों से बाहर निकाल दिया। उसी क्षण उस जादुई

ध्वनि ने मेरे पैतृक घर को मेरी आँखों के सामने ला दिया; मैं उन विपत्तियों को भूल गया जिनका मैं साक्षी रहा था और अचानक अतीत में पहुँचकर, मैंने उस देश को फिर से देखा जहाँ मैंने अक्सर थ्रश को गाते सुना था।" और क्या यह संस्मरणों के दो-तीन सबसे सुंदर अंशों में से एक नहीं है: "खिलते हुए लाल रंग के फूलों के गुच्छे से हेलियोट्रोप की एक कोमल और सूक्ष्म सुगंध निकल रही थी; वह सुगंध हमारे लिए मातृभूमि से आती हवा से नहीं, बल्कि न्यूफ़ाउंडलैंड की एक जंगली हवा से आई थी, जिसका निर्वासित पौधे से कोई संबंध नहीं था, स्मृति और आनंद से कोई सहानुभूति नहीं थी। उस सुगंध में, जिसे सुंदरता ने न तो अपने हृदय में समाहित किया था, न ही अपने मार्ग पर फैलाया था, उस सुगंध में जो भोर के प्रकाश, संस्कृति और जीवन से ओतप्रोत थी, पश्चाताप, निर्वासन और यौवन की सारी उदासी समाहित थी।" फ्रांसीसी साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों में से एक, गेरार्ड डी नर्वल की 'सिल्वी', कॉम्बर्ग के संदर्भ में, ठीक उसी तरह की अनुभूति कराती है जैसे मेमोइर्स डी आउट्रे-टोम्बे में, मेडेलिन के स्वाद और थ्रश पक्षी के चहचहाने में होती है। अंततः, बॉडेलेयर के मामले में, ऐसी यादें कहीं अधिक हैं, स्पष्ट रूप से कम आकस्मिक हैं और इसलिए, मेरी राय में, निर्णायक हैं। कवि स्वयं अधिक विविधता और तत्पश्चात सचेत रूप से एक स्त्री की गंध, उसके बालों और उसके स्तनों में उन प्रेरक उपमाओं की खोज करता है जो उसके लिए "विशाल और गोल आकाश का नीला रंग" और "लपटों और माटों से भरा बंदरगाह" का भाव जगाती हैं। मैं बॉडेलेयर की उन कविताओं को याद करने की कोशिश कर रहा था जो ऐसी संवेदनाओं के रूपांतरण पर आधारित हैं, ताकि मैं खुद को इतने महान लोगों के बीच रख सकूँ और इस बात की पुष्टि कर सकूँ कि जिस काम को करने में मुझे अब कोई झिझक नहीं थी, वह उस प्रयास के योग्य था जो मैं उसे समर्पित करने वाला था। तभी पुस्तकालय

से निकलने वाली सीढ़ियों के नीचे पहुँचते ही, मैं अचानक खुद को विशाल हॉल में और एक ऐसे उत्सव के बीच पाया जो मुझे पहले देखे गए उत्सवों से बिल्कुल अलग लग रहा था और जो एक विशेष रूप प्रकट करने लगा और एक नया महत्व ग्रहण करने लगा। विशाल हॉल में प्रवेश करते ही, अपने द्वारा बनाई जा रही परियोजना में अब तक पहुँचे हुए बिंदु को दृढ़ता से अपने भीतर रखने के बावजूद, एक चौंकाने वाली नाटकीय अनुभूति मेरी इंद्रियों पर छा गई जिसने मेरे उद्यम में सबसे गंभीर बाधाएँ खड़ी कर दीं। ऐसी बाधाएँ जिन्हें मैं निस्संदेह पार कर लेता, लेकिन कलाकृति की शर्तों पर विचार करते रहने के दौरान, वे मेरे तर्क को सौ बार दोहराकर उस विचार को बाधित करने वाली थीं जो मुझे सबसे अधिक संकोच में डालने वाला था। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि मैं घर के मालिक और उनके मेहमानों को क्यों नहीं पहचान पाया, क्यों वे सब ऐसे लग रहे थे जैसे उन्होंने "चेहरा बना लिया हो", लगभग पाउडर लगा रखा हो, जिससे उनका रूप पूरी तरह बदल गया था। राजकुमार अपने मेहमानों का स्वागत करते हुए अभी भी उसी हंसमुख परी राजा की छवि बनाए हुए थे, जो मुझे पहली बार देखने पर उनके बारे में लगी थी, लेकिन अब, ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने खुद अपने मेहमानों पर थोपे गए वेश को अपना लिया हो, उन्होंने सफेद दाढ़ी लगा ली थी और उनके पैर ऐसे भारी-भारी चल रहे थे जैसे उनमें सीसे के तलवे लगे हों। ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी युग के व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहे हों। उनकी मूंछें इतनी सफेद थीं मानो टॉम थम्ब के जंगल की बर्फ उन पर जम गई हो। ऐसा लग रहा था जैसे उनकी मूंछें उनके कसे हुए मुंह को असहज कर रही हों और अपना प्रभाव दिखाने के बाद उन्हें मूंछें हटा देनी चाहिए थीं। सच कहूं तो, मैंने उन्हें केवल कुछ परिचित चेहरों से ही पहचाना। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उस छोटे से लेज़ेन्साक ने अपने चेहरे पर क्या लगाया था, लेकिन जहाँ दूसरे

लोग सफ़ेद हो गए थे, कुछ की आधी दाढ़ी, कुछ की केवल मूंछें, वहीं उसने बिना किसी रंग की मदद के अपने चेहरे को झुर्रियों से और भौंहों को घने बालों से ढक लिया था; इतना ही नहीं, यह सब उस पर बिल्कुल भी जंच नहीं रहा था, उसका चेहरा कठोर और कांस्य जैसा लग रहा था और उसके चेहरे पर एक ऐसी गंभीरता छाई हुई थी कि वह इतना बूढ़ा लग रहा था कि उसे अब जवान कहना नामुमकिन था। उसी क्षण मैं यह सुनकर चकित रह गया कि एक छोटे से बूढ़े व्यक्ति को, जिसकी चांदी जैसी मूंछें किसी राजदूत जैसी थीं, ड्यूक डी चैटेलराउल्ट कहकर संबोधित किया जा रहा था, जिसकी शक्ल मुझे उस नौजवान की याद दिला रही थी जिससे मैं एक बार श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने गया था। जिस पहले व्यक्ति को मैंने अपनी याददाश्त के सहारे उसके चेहरे की स्वाभाविक विशेषताओं को उसके विकृत रूप से अलग करके पहचानने में सफलता प्राप्त की, उस समय मेरा पहला विचार यही होना चाहिए था, और शायद एक पल के लिए यही हुआ भी, कि उसे इतनी अद्भुत ढंग से तैयार किए जाने पर बधाई दूं कि उसे पहचानने में वैसी ही झिझक हुई, जैसी किसी दर्शक को कार्यक्रम की जानकारी होने के बावजूद, एक पल के लिए अवाक रह जाने के बाद, तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठती है, जब कोई महान अभिनेता, जिसमें वह अपने असली रूप से बिल्कुल अलग दिखता है, मंच पर आता है। इस दृष्टि से सबसे असाधारण तो मेरा निजी शत्रु एम. डी'आर्गेनकोर्ट था; वह सचमुच पार्टी का शान था। उन्होंने न केवल अपनी हल्की सफ़ेद दाढ़ी को अविश्वसनीय रूप से सफ़ेद दाढ़ी से बदल दिया था, बल्कि उन्होंने उन छोटे-छोटे भौतिक परिवर्तनों से खुद को इस कदर सजाया था जो व्यक्तित्व को नया रूप देते हैं और उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, और उससे भी बढ़कर, चरित्र को बदल देते हैं। यह आदमी, जिसकी आडंबरपूर्ण और कठोर अकड़ अभी भी मेरी स्मृति में

बसी हुई थी, एक ऐसे बूढ़े भिखारी में बदल गया था जो किसी का सम्मान नहीं करता था, एक ऐसा बूढ़ा बीमार व्यक्ति जो इतना प्रामाणिक था कि उसके अंग कांपते थे और उसके सूजे हुए चेहरे, जो कभी इतने अभिमानी थे, अब भी मूर्खतापूर्ण आनंद से मुस्कुरा रहे थे। इस हद तक पहुँचने पर, वेश बदलने की कला कुछ और बन जाती है, यह एक रूपांतरण बन जाती है। वास्तव में, कुछ छोटी-मोटी बातें इस बात की पुष्टि कर सकती हैं कि यह वास्तव में एम. डी'आर्गेनकोर्ट ही थे जिन्होंने यह अवर्णनीय और मनमोहक दृश्य प्रस्तुत किया था, लेकिन अगर मैं एम. डी'आर्गेनकोर्ट के चेहरे की बनावट को फिर से बनाना चाहता, जिसे मैं पहले जानता था और जो अब, हालांकि उसके पास केवल अपने शरीर का ही उपयोग था, कुछ इतना अलग बनाने में सफल हो गया था, तो मुझे चेहरे के कितने क्रमिक रूपों का पता लगाना पड़ता। यह स्पष्ट रूप से अभिमानी चेहरों की चरम सीमा थी, जहाँ तक वे बिखरने से बच नहीं सकते थे, जबकि वह अकड़ी हुई आकृति एक उबले हुए चिथड़े की तरह इधर-उधर हिल रही थी। श्री डी'आर्गेनकोर्ट के अहंकारी व्यवहार को क्षण भर के लिए नरम कर देने वाली उस विशेष मुस्कान की धुंधली सी याद से ही यह एहसास हुआ कि एक बूढ़े, जर्जर, पुराने कपड़ों के व्यापारी की यह मुस्कान पुराने जमाने के एक सलीकेदार सज्जन का प्रतिनिधित्व कर सकती है। लेकिन यह मानते हुए भी कि श्री डी'आर्गेनकोर्ट का इरादा पुरानी मुस्कान का इस्तेमाल करना था, उनके चेहरे का इतना बड़ा परिवर्तन, उनकी आँखों का भाव-भंगिमा, इतना बदल गया था कि वह भाव किसी और का लग रहा था। इस विकृत बूढ़े व्यक्ति को देखकर मैं लगभग हँस पड़ा, जो अपने ही हास्यास्पद चित्रण में इतना निर्मल था, जितना श्री डी चार्लस, लकवाग्रस्त और विनम्र, दुखद था। रेगार्ड द्वारा रचित और लैबिचे द्वारा अतिरंजित मरणासन्न मसखरे के रूप में एम.

डी'आर्गेनकोर्ट का अभिनय इतना सहज और शिष्ट था कि वह एम. डी'चार्ल्स के किंग लियर की तरह ही सहज और शालीन था, जो अपने सबसे सामान्य परिचित के सामने भी सम्मानपूर्वक नंगा हो जाता था। फिर भी, मैंने उनके इस अद्भुत प्रदर्शन की प्रशंसा करने से परहेज किया। यह मेरी पुरानी घृणा नहीं थी जिसने मुझे रोका, बल्कि उनका अपने आप से इतना अलग रूप धारण कर लेना था कि मुझे ऐसा भ्रम हुआ जैसे मैं किसी ऐसे व्यक्ति के सामने खड़ा हूँ जो उतना ही सौम्य, निहत्था और हानिरहित है जितना कि पहले का आर्गेनकोर्ट अभिमानी, शत्रुतापूर्ण और कुटिल था। वह इतना अलग व्यक्तित्व था कि जनरल डौराकिन की नकल करते हुए इस बर्फ के पुतले को दूसरी बार बचपन में उतरते हुए, इतने हास्यास्पद और सफेद मुस्कान के साथ देखकर मुझे लगा कि मनुष्य भी कुछ कीड़ों की तरह पूर्ण कायापलट से गुजर सकता है। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के शोकेस के शीशे से देख रहा हूँ कि किसी कीट की सबसे तीखी और स्थिर आकृतियाँ किस रूप में बदल गई हैं। इस कोमल प्यूपा को देखकर, जो हिलने-डुलने के बजाय काँप रहा था, मुझे वे भावनाएँ महसूस नहीं हो रही थीं जो एम. डी'आर्गेनकोर्ट हमेशा मेरे मन में जगाते थे। इसलिए मैं चुप रहा, मैंने एम. डी'आर्गेनकोर्ट को उस तमाशे के लिए बधाई नहीं दी जो मानव शरीर के रूपांतरण की सीमाओं को दर्शाता प्रतीत होता था। निश्चित रूप से, किसी थिएटर के मंच पर या किसी वेशभूषा समारोह के दौरान, शिष्टाचार के कारण व्यक्ति कठिनाई को बढ़ा-चढ़ाकर बताने लगता है, यहाँ तक कि विकृत रूप धारण किए व्यक्ति को पहचानना असंभव होने तक की बात कह देता है। इसके विपरीत, यहाँ मेरी अंतरात्मा ने मुझे आगाह किया कि छल-कपट की आवश्यकता है, कि ये प्रशंसाएँ चापलूसी के विपरीत होंगी क्योंकि ऐसा परिवर्तन अपेक्षित नहीं था। और मुझे वह बात समझ में आई

जिसकी मैंने इस ड्राइंग रूम में प्रवेश करते समय कल्पना भी नहीं की थी, कि हर मनोरंजन, चाहे वह कितना भी सरल क्यों न हो, जब समाज से विमुख होने के बहुत समय बाद आयोजित होता है और चाहे उसमें पहले से परिचित कुछ ही लोग एकत्रित हों, तो वह एक वेशभूषा समारोह का प्रभाव देता है, और सबसे सफल समारोह वह होता है जिसमें व्यक्ति वास्तव में दूसरों को देखकर भ्रमित हो जाता है, क्योंकि उनके चेहरे लंबे समय से उनकी इच्छा के बिना ही तैयार किए जा रहे होते हैं और पार्टी समाप्त होने के बाद उन्हें मेकअप से भी नहीं बदला जा सकता। दूसरों को देखकर भ्रमित! अफसोस! हम स्वयं उन्हें भ्रमित करते हैं। मेरे आस-पास के चेहरों को पहचान पाने में मुझे जो कठिनाई हो रही थी, वह उन सभी लोगों को भी महसूस हो रही थी जिन्होंने मेरा चेहरा देखा था, क्योंकि वे मुझ पर उतना ही ध्यान दे रहे थे मानो उन्होंने मुझे पहले कभी नहीं देखा हो या वे मेरे चेहरे से किसी और की याद को अलग करने की कोशिश कर रहे हों।

एम. डी'आर्गेनकोर्ट की इस अद्भुत "परफॉर्मेंस" में मिली सफलता, जो निश्चित रूप से उनके व्यंग्य नाटक की सबसे प्रभावशाली छवि है, मानो कोई अभिनेता ठहाकों के बीच पर्दा गिरने से ठीक पहले मंच पर आखिरी बार अपनी प्रस्तुति दे रहा हो। अगर मेरे मन में उनके प्रति अब कोई द्वेष नहीं था, तो इसका कारण यह था कि वे बचपन की मासूमियत में लौट आए थे और उन्हें मेरे बारे में अपनी तिरस्कारपूर्ण राय याद नहीं थी, न ही उन्हें याद था कि एम. डी चार्लस ने अचानक मेरा हाथ छोड़ दिया था, चाहे इसलिए कि उनमें अब ऐसी कोई भावना बची ही नहीं थी या इसलिए कि मुझ तक पहुँचने के लिए वे शारीरिक विकृतियों से इतनी बदल गई होंगी कि रास्ते में उनका अर्थ पूरी तरह बदल गया होगा, इसलिए एम. डी'आर्गेनकोर्ट मिलनसार प्रतीत होने लगे क्योंकि अब उनमें अपनी

दुर्भावना व्यक्त करने और अपनी चिरस्थायी और परेशान करने वाली हंसी को नियंत्रित करने की शक्ति नहीं बची थी। उनकी तुलना किसी अभिनेता से करना अतिशयोक्ति होगी, क्योंकि उनमें चेतना का अभाव था; वे किसी ऊनी दाढ़ी वाले कांपते हुए गुड़िया की तरह कमरे में इधर-उधर भटकते रहते थे, मानो किसी वैज्ञानिक या दार्शनिक कठपुतली की तरह किसी अंत्येष्टि समारोह या सोरबोन विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते हुए, एक साथ सभी चीजों की व्यर्थता को दर्शाते हुए और प्राकृतिक इतिहास के नमूने का प्रतिनिधित्व करते हुए। वे कठपुतलियों के एक पंच एंड जूडी शो की तरह थे, जिनमें से जिन्हें हम जानते थे, उन्हें पृष्ठभूमि में कई स्तरों पर एक साथ देखकर ही पहचान सकते थे, जिससे उन्हें गहराई मिलती थी और इन पुराने प्रेतों को देखते हुए आंख और स्मृति को संयोजित करने के मानसिक प्रयास की आवश्यकता होती थी। वर्षों के अमूर्त रंगों में डूबी कठपुतलियों का एक पंच एंड जूडी शो, ऐसी कठपुतलियां जो समय को बाहरी रूप देती थीं, वह समय जो आमतौर पर अदृश्य होता है, जो दृश्यता प्राप्त करने के लिए शरीरों पर कब्जा कर लेता है और जहां भी संभव हो, अपनी जादुई लालटेन के साथ प्रदर्शित करता है। कॉम्ब्रे स्थित मेरे कमरे के दरवाज़े के हैंडल पर लगे गोलो की तरह अमूर्त, नया और अपरिचित एम. डी'आर्गेनकोर्ट समय का एक रहस्योद्घाटन था, जिसने उसे आंशिक रूप से दृश्यमान बना दिया। एम. डी'आर्गेनकोर्ट के चेहरे और व्यक्तित्व को निर्मित करने वाले नए तत्वों में वर्षों का समुच्चय पढ़ा जा सकता था, जीवन की प्रतीकात्मक आकृति को पहचाना जा सकता था, जो हमारे सामने स्थायी नहीं है, बल्कि एक निरंतर परिवर्तनशील वातावरण है जिसमें अभिमानी रईस शाम को खुद को एक पुराने कपड़े बेचने वाले के रूप में व्यंग्यचित्रित करता है।

कुछ मामलों में ये बदलाव, ये सकारात्मक परिवर्तन, प्राकृतिक इतिहास

के दायरे से उत्पन्न होते प्रतीत होते थे और किसी व्यक्ति को ऐसा नाम दिया जाना आश्चर्यजनक था, जैसा कि एम. डी'आर्गेनकोर्ट के मामले में था, किसी नई और भिन्न प्रजाति की विशेषताओं के साथ नहीं, बल्कि किसी अन्य व्यक्ति की बाहरी विशेषताओं के साथ। एम. डी'आर्गेनकोर्ट के मामले की तरह, समय ने उस युवती से कुछ अनपेक्षित क्षमताएँ उजागर की थीं, और यद्यपि ये क्षमताएँ विशुद्ध रूप से शारीरिक थीं, फिर भी इनमें नैतिक निहितार्थ प्रतीत होते थे। यदि चेहरे की बनावट बदलती है, यदि वे अलग तरह से जुड़ती हैं, यदि वे धीरे-धीरे लेकिन लगातार सिकुड़ती हैं, तो वे उस बदले हुए रूप के साथ एक नया अर्थ ग्रहण कर लेती हैं। इस प्रकार, एक विशेष महिला, जो पहले नीरस और सतही लगती थी और जिसके गाल अब फूल गए थे और नाक पर एक अप्रत्याशित उभार आ गया था, उसी तरह का आश्चर्य, अक्सर सुखद आश्चर्य, पैदा करती थी, जैसे कोई संवेदनशील और विचारशील टिप्पणी, कोई उत्तम और उच्च कोटि का कार्य जिसकी उससे कभी अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। उस नई नाक के चारों ओर अनपेक्षित क्षितिज खुल गए। दया और कोमलता, जिनकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, उन गालों के साथ संभव हो गईं। उस ठुड्डी से ऐसी उम्मीदें लगाई जा सकती थीं जो पिछली ठुड्डी से अकल्पनीय थीं। चेहरे की ये नई विशेषताएं चरित्र के बदले हुए गुणों का संकेत देती थीं; कठोर, दुबली-पतली लड़की एक सुडौल, उदार विधवा बन गई थी। यह एम. डी'आर्गेनकोर्ट की तरह प्राणीशास्त्रीय अर्थ में नहीं था, बल्कि सामाजिक और नैतिक अर्थ में था कि वह एक अलग व्यक्ति बन गई थी। इन सभी मायनों में, इस तरह की दोपहर की पार्टी अतीत की एक झलक से कहीं अधिक मूल्यवान थी, क्योंकि इसने मुझे अतीत की उन क्रमिक तस्वीरों से कहीं बेहतर कुछ दिया जो मैंने वर्तमान से अलग होते हुए नहीं देखी थीं, अर्थात्, वर्तमान

और अतीत के बीच का संबंध; यह एक तरह का पैनोप्टिकॉन था, जिसे कभी पैनोप्टिकॉन कहा जाता था, लेकिन वर्षों का पैनोप्टिकॉन, किसी स्मारक का नहीं, बल्कि समय के बदलते परिप्रेक्ष्य में स्थित एक व्यक्ति का दृश्य।

जिस स्त्री का प्रेमी एम. डी'आर्गेनकोर्ट था, समय बीतने के साथ उसमें कोई खास बदलाव नहीं आया था, यानी उसका चेहरा उस प्राणी के चेहरे जैसा नहीं हो गया था जो अथाह गहराई में अपनी यात्रा के दौरान लगातार विघटित होता चला गया हो। उस अथाह गहराई की दिशा को हम केवल व्यर्थ तुलनाओं से ही व्यक्त कर सकते हैं, क्योंकि हम उन्हें अंतरिक्ष की दुनिया से ही उधार ले सकते हैं, और चाहे हम उन्हें ऊँचाई, लंबाई या गहराई के संदर्भ में मापें, उनका एकमात्र गुण यही है कि वे हमें इस अकल्पनीय लेकिन प्रत्यक्ष आयाम के अस्तित्व का एहसास कराती हैं। चेहरे को नाम देने के लिए, वर्षों के बीतने के इस क्रम ने मुझे बाद में उन वर्षों का पुनर्रचना करने के लिए विवश किया जिनके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था, ताकि उन्हें उचित क्रम दिया जा सके। इस दृष्टिकोण से और अंतरिक्ष की स्पष्ट समानता से खुद को धोखा खाने से बचाने के लिए, एम. डी'आर्गेनकोर्ट जैसे प्राणी का बिल्कुल नया रूप उस युग की वास्तविकता का एक अद्भुत रहस्योद्घाटन था जो आम तौर पर एक अमूर्तता प्रतीत होती है, ठीक उसी तरह जैसे बौने पेड़ या विशाल बाओबाब अक्षांश में परिवर्तन को दर्शाते हैं। तब जीवन हमें एक परीलोक जैसा प्रतीत होता है जहाँ कोई शिशु को किशोर बनते, मनुष्य को परिपक्व होते और मृत्यु की ओर बढ़ते देख सकता है। और, चूंकि निरंतर परिवर्तन के माध्यम से ही हम यह समझ पाते हैं कि ये प्राणी, जिन्हें काफी अंतरालों पर देखा जाता है, कितने भिन्न हैं, हमें यह अहसास होता है कि हम भी उन्हीं नियमों का पालन कर रहे हैं जिनका पालन ये प्राणी करते हैं

जो इतने रूपांतरित हो चुके हैं कि अब वे वैसे नहीं दिखते, हालांकि वे कभी भी अपने अस्तित्व से विमुख नहीं हुए हैं - सिर्फ इसलिए कि वे कभी भी अपने अस्तित्व से विमुख नहीं हुए हैं - जैसा हमने उन्हें पहले समझा था।

एक युवती जिसे मैं पहले जानती थी, अब बर्फ़ की तरह सफ़ेद और एक छोटी सी द्वेषपूर्ण बूढ़ी औरत जैसी लग रही थी, मानो यह साबित कर रही हो कि अंतिम चरण में पात्रों को पहचान से परे बनाना ज़रूरी है। लेकिन उसका भाई इतना सीधा, इतना सटीक बना रहा कि उसकी ऊपर उठी हुई मूंछों का सफ़ेद होना इतने युवा चेहरे पर आश्चर्यजनक लग रहा था। पूरी तरह से काली दाढ़ियों का बर्फीला सफ़ेद रंग उस दोपहर की पार्टी के मानवीय परिदृश्य को उदास बना रहा था, जैसे गर्मी के पहले भूरे पत्ते, जिनका आनंद लेना अभी शुरू ही हुआ हो कि पतझड़ आ जाए। इस प्रकार मैं, जो बचपन से ही दिन-प्रतिदिन दूसरों और खुद से प्राप्त अपनी एक निश्चित छवि के साथ जी रही थी, इन सभी लोगों के रूपांतरण को देखने के बाद पहली बार यह महसूस कर पाई कि जो समय उनके लिए बीत चुका है, वह मेरे लिए भी बीत चुका है और इस अहसास ने मुझे व्याकुल कर दिया। हालांकि उनकी उम्र बढ़ना मेरे लिए उदासीन था, अब जब उनकी उम्र मेरी उम्र के आने का संकेत दे रही थी, तो मैं बहुत दुखी थी। यह आगमन एक के बाद एक रुक-रुक कर दिए गए मौखिक प्रहारों से घोषित किया गया था, जो मेरे कानों को कयामत के दिन के तुरही की आवाज़ों की तरह सुनाई दिए। पहला प्रहार डचेस डी गुएरमांटेस ने किया; मैंने अभी-अभी उन्हें दो पंक्तियों में खड़े लोगों के बीच से गुज़रते देखा था, जो उनकी पोशाक और सौंदर्यबोध की अद्भुत कारीगरी को समझे बिना, उनके लाल बालों वाले सिर, काले फीते के पंखों से निकलते हुए रत्नों से जकड़े हुए सैल्मन मछली जैसे शरीर को देखकर मोहित हो गए थे। वे

उनकी वंशानुगत सुडौल आकृति को ऐसे निहार रहे थे मानो किसी प्राचीन रत्नों से सजी मछली को निहार रहे हों, जिसमें गुएरमांटेस परिवार की रक्षा करने वाली शक्ति समाहित हो। "आह!" मुझे देखकर वह बोलीं, "तुम्हें देखकर कितनी खुशी हुई, मेरे सबसे पुराने दोस्त!" कॉम्ब्रे में बिताए अपने युवावस्था के घमंड में, जिसने मुझे कभी भी खुद को उन मित्रों में गिनने की अनुमति नहीं दी, जिन्होंने वास्तव में उस रहस्यमयी गुएरमांटेस के जीवन को साझा किया था, जैसे कि एम. डी ब्रेउटे, एम. डी फॉरेस्टिल या स्वान, या कई अन्य मृत मित्रों में से एक। शायद मुझे प्रसन्नता होती, लेकिन इसके बजाय मैं बेहद दुखी थी। "उसकी सबसे पुरानी दोस्त!" मैंने सोचा, "वह बढ़ा-चढ़ाकर बोल रही है, शायद सबसे पुरानी दोस्तों में से एक हो, लेकिन क्या मैं सचमुच—" उसी क्षण राजकुमार के भतीजों में से एक मेरे पास आया और बोला: "तुम जो एक पुरानी पेरिसवासी हो।" एक पल बाद मुझे एक नोट दिया गया। मैंने अपने आगमन पर युवा लेटूरविल्स में से एक को देखा था, जिसका डचेस से क्या रिश्ता था, यह मुझे याद नहीं था, लेकिन वह मुझे थोड़ा-बहुत जानता था। वह अभी-अभी सेंट-साइर से निकले थे और मैंने मन ही मन सोचा कि वह सेंट-लूप की तरह ही एक आकर्षक परिचित होंगे, जो मुझे सैन्य मामलों और उनमें होने वाले आकस्मिक परिवर्तनों से परिचित करा सकते हैं। इसलिए मैंने उनसे कहा कि मैं उनसे बाद में मिलूंगा ताकि हम साथ में भोजन कर सकें, जिसके लिए उन्होंने मेरा हार्दिक धन्यवाद किया। लेकिन मैं पुस्तकालय में बहुत देर तक सपने देखता रहा और उन्होंने जो नोट छोड़ा था, उसमें उन्होंने बताया कि वह इंतजार नहीं कर सकते और मुझे अपना पता दे दिया। इस प्रिय साथी ने अपने पत्र का अंत इस प्रकार किया: "आदरपूर्वक, आपका युवा मित्र, लेटूरविले"। "युवा मित्र!" मैं पहले तीस साल बड़े लोगों को इसी तरह संबोधित किया करता था, जैसे कि लेग्रैंडिन। वह सब-

लेफ्टिनेंट, जिसे मैं अपना साथी मानता था, खुद को मेरा युवा मित्र कहता था। इसलिए तब से केवल सैन्य पद्धतियों में ही बदलाव नहीं आया था और एम. डी लेटूरविले के दृष्टिकोण से मैं उनका साथी नहीं बल्कि एक बुजुर्ग सज्जन था और मैं एम. डी लेटूरविले से इस कदर अलग हो गया था कि मुझे ऐसा लगता था मानो किसी अदृश्य कम्पास की खुली भुजाओं ने मुझे उस युवा उप-लेफ्टिनेंट से इतनी दूरी पर रख दिया हो कि जो खुद को मेरा युवा मित्र कहता था, उसके लिए मैं एक बुजुर्ग सज्जन था।

लगभग तुरंत बाद किसी ने ब्लोच का ज़िक्र किया और मैंने पूछा कि क्या वे युवा ब्लोच की बात कर रहे हैं या उनके पिता की (जिनकी युद्ध के दौरान मृत्यु हो गई थी, मुझे इसकी जानकारी नहीं थी)। बताया गया कि फ्रांस पर आक्रमण के समय वे भावनात्मक रूप से टूट गए थे। डचेस ने कहा, "मुझे नहीं पता था कि उनके कोई बच्चे थे, यहाँ तक कि उनकी शादी भी हुई थी, लेकिन ज़ाहिर है कि हम उनके पिता की बात कर रहे हैं क्योंकि उनमें जवानी का कोई अंश नहीं दिखता।" उन्होंने हंसते हुए आगे कहा, "उनके बड़े बेटे भी हो सकते थे।" तब मुझे एहसास हुआ कि वे मेरे पुराने दोस्त की बात कर रही थीं। संयोग से, कुछ मिनट बाद ही वे आ गए और मुझे उन्हें पहचानने में मुश्किल हुई। उन्होंने अब जैक्स डू रोज़ियर नाम अपना लिया था, जिसके तहत हेब्रोन की मीठी घाटी और इज़राइल के बंधन की खुशबू को पहचानना मेरे दादाजी की नाक जितना मुश्किल होता, जिसे मेरे दोस्त ने आखिरकार तोड़ दिया था। एक आधुनिक अंग्रेज़पन ने उनके रूप को पूरी तरह बदल दिया था और जो कुछ भी मिटाया जा सकता था, उसे प्लास्टर के सांचे में ढाल दिया गया था। उनके पहले के घुंघराले बाल अब सीधे कर लिए गए थे, बीच से मांग निकाली गई थी और मेकअप से चमक रहे थे। उनकी नाक अब भी लाल और उभरी हुई थी और ऐसा लग रहा था जैसे किसी तरह के स्थायी जुकाम से

सूजी हुई हो, शायद इसी वजह से वे आलस से अपनी बात धीमी और बेढंगे तरीके से कहते थे। क्योंकि उन्होंने अपने रंग के अनुसार बाल संवारने के साथ-साथ अपनी नाक की पुरानी आवाज़ में एक अजीब सी अरुचि भी जोड़ ली थी, जो उनकी सूजी हुई नाक के अनुरूप थी। और हेयरड्रेसिंग, मूंछें हटवाने, उनके स्टाइलिश अंदाज़ और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति की बदौलत, उनकी वह यहूदी नाक ऐसे गायब हो गई थी जैसे किसी कूबड़ को सावधानीपूर्वक छुपाकर सीधा कर लिया जाए। लेकिन ब्लोच के चेहरे का महत्व सबसे ज़्यादा एक शानदार चश्मे ने बदल दिया था। इस चश्मे से ब्लोच के चेहरे पर जो यांत्रिक प्रभाव पड़ा, उससे वे उन सभी मुश्किल कामों से मुक्त हो गए जो एक इंसान के चेहरे को करने पड़ते हैं, जैसे कि मिलनसार दिखना, हास्य, अच्छा स्वभाव और प्रयास व्यक्त करना। ब्लोच के चेहरे पर उसकी मौजूदगी ने यह सोचने की ज़रूरत ही खत्म कर दी कि वह सुंदर है या नहीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई दुकानदार आपको कोई अंग्रेज़ी चीज़ दिखाता है और कहता है कि यह "शानदार" है, और आप यह सोचने की हिम्मत ही नहीं करते कि आपको वह पसंद है या नहीं। फिर वह अपने शीशे के पीछे एक घमंडी, दूर और सहज मुद्रा में बैठ गया, मानो वह आठ गुना दर्पण हो, और अपने सपाट बालों और चश्मे के अनुसार अपने चेहरे को ढालकर उसने अपने भावों से कुछ भी व्यक्त नहीं किया। ब्लोच के उस चेहरे पर वह नीरस और आत्ममुग्ध भाव, सिर की वे कमज़ोर हरकतें, जो जल्द ही स्थिर हो जाती हैं, छाई हुई थीं, और जिनसे मैं एक आत्मसंतुष्ट बूढ़े सज्जन के घिसे-पिटे ज्ञान को जोड़ देता, अगर मैंने अंत में यह न पहचाना होता कि मेरे सामने बैठा व्यक्ति मेरा एक पुराना दोस्त है, जिसे मेरी यादों ने जवानी की उस जीवंतता से भर दिया था, जो अब उसमें पूरी तरह से गायब लग रही थी। मैंने उसे जीवन के शुरुआती दौर में जाना था, वह मेरा सहपाठी था और

अनजाने में ही मैं उसे अपने जैसा ही समझता था, मानो हम दोनों ही जवानी के दौर में जी रहे हों। मैंने सुना था कि वह अपनी उम्र के हिसाब से काफी बूढ़ा दिखता है और उसके चेहरे पर उम्र के कुछ जाने-पहचाने लक्षण देखकर मैं हैरान रह गया। तब मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में वह बूढ़ा था और जीवन कई वर्षों तक जीवित रहने वाले किशोरों को ही बूढ़ा बना देता है।

मेरी तबीयत ठीक न होने की बात सुनकर किसी ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे उस समय फैल रही फ्लू की चपेट में आने का डर तो नहीं है? तभी एक अन्य दयालु व्यक्ति ने मुझे दिलासा देते हुए कहा, "डरो मत, यह सिर्फ युवाओं को ही होती है, तुम्हारी उम्र के लोगों को इससे ज्यादा खतरा नहीं होता।" मैंने देखा कि नौकरों ने मुझे पहचान लिया था और मेरा नाम फुसफुसाकर पुकारा। एक महिला ने कहा कि उसने उन्हें अपनी स्थानीय भाषा में कहते सुना था: "देखो, बूढ़ा जा रहा है—" (इसके बाद मेरा नाम लिया गया।)

जब मैंने डचेस डी गुएरमांटेस को यह कहते सुना, "बेशक! मैं मार्शल को जानती थी? लेकिन मैं उन लोगों को भी जानती थी जो कहीं अधिक प्रतिनिधि थे, डचेस डी गैलियरा, पॉलीन डी पेरिगोर्ड, मोनसिग्नोर डुपानलूप," तो मुझे भोलेपन से इस बात का अफसोस हुआ कि मैं उन लोगों को नहीं जानती थी जिन्हें वह पुराने शासनकाल के अवशेष कह रही थीं। मुझे याद रखना चाहिए था कि हम पुराने शासनकाल को केवल उसके अंत के रूप में देखते हैं; क्षितिज पर जो कुछ भी दिखाई देता है वह एक रहस्यमय भव्यता धारण कर लेता है और एक ऐसे संसार का अंतिम अध्याय प्रतीत होता है जिसे हम फिर कभी नहीं देख पाएंगे; लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, जल्द ही हम स्वयं ही अपने पीछे आने वाली पीढ़ियों के लिए क्षितिज पर होते हैं, क्षितिज पीछे हटता जाता है और जो

संसार समाप्त प्रतीत होता था वह फिर से शुरू हो जाता है। "जब मैं एक युवती थी," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने आगे कहा, "मैंने डचेस डी डिनो को भी देखा था। आप जानते हैं, मैं अब पच्चीस वर्ष की नहीं हूँ।" उनके अंतिम शब्दों ने मुझे निराश किया; उन्हें ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं थी, एक बूढ़ी औरत के लिए यह ठीक ही होता। "जहाँ तक आपकी बात है," उन्होंने आगे कहा, "आप हमेशा एक जैसे ही हैं, आपमें ज़रा भी बदलाव नहीं आया है," और इस बात ने मुझे उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ दी जितना कि अगर उन्होंने इसके विपरीत कहा होता, क्योंकि यह बात अपने आप में ही इस तथ्य को साबित करती थी कि कितना समय बीत चुका है। "आप कमाल हैं, मेरे प्यारे दोस्त। आप हमेशा जवान लगते हैं," यह एक उदास टिप्पणी थी क्योंकि इसमें तभी अर्थ है जब हम वास्तव में, भले ही दिखने में नहीं, बूढ़े हो चुके होते हैं। और उन्होंने मुझे यह कहकर अंतिम झटका दिया: "मुझे हमेशा इस बात का अफ़सोस रहा है कि आपकी शादी नहीं हुई। लेकिन, कौन जानता है! आख़िरकार, शायद आप ऐसे ही ज़्यादा खुश हैं। आप युद्ध में बेटों को जन्म देने लायक उम्र के हो चुके होते और अगर वे बेचारे रॉबर्ट सेंट-लूप (मैं अक्सर उनके बारे में सोचता हूँ) की तरह मारे गए होते, तो आपकी संवेदनशीलता के कारण आप उन्हें झेल नहीं पाते।" और मैं खुद को उस पहले सत्य-प्रदर्शक दर्पण में देख सकता था जो मुझे उन बूढ़े लोगों की आँखों में मिल सकता था जो अपनी राय में मेरी तरह ही जवान बने हुए थे, और जब मैंने खुद को बुढ़ापे के उदाहरण के रूप में पेश किया, ताकि वे इसे नकार दें, तो उनकी नज़र से यह ज़रा भी ज़ाहिर नहीं होता था कि वे मुझे खुद से अलग देख रहे हैं। क्योंकि हम खुद को वैसे नहीं देखते जैसे हम हैं, अपनी उम्र को वैसे नहीं देखते जैसे वह है, बल्कि हममें से हर कोई इसे दूसरे में देखता है जैसे किसी दर्पण में। और, निस्संदेह, बहुत से लोग यह जानकर मुझसे कम दुखी होते कि वे

बूढ़े हो गए हैं। शुरुआत में, कुछ लोग बुढ़ापे का सामना मृत्यु की तरह ही उदासीनता से करते हैं, इसलिए नहीं कि उनमें दूसरों से अधिक साहस है, बल्कि इसलिए कि उनमें कल्पनाशीलता कम है। लेकिन एक ऐसा व्यक्ति जिसके मन में बचपन से ही एक ही विचार रहा हो, जिसकी निष्क्रियता और नाजुक स्वास्थ्य, केवल इसलिए कि वे उस विचार की पूर्ति में देरी का कारण बनते हैं, उसके हर व्यर्थ दिन को निरर्थक बना देते हैं क्योंकि वह रोग जो उसके शरीर को वृद्ध करता है, उसकी आत्मा के वृद्ध होने की प्रक्रिया को धीमा कर देता है, ऐसा व्यक्ति उस व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक व्याकुल हो जाता है जब उसे यह अहसास होता है कि वह समय में जीना कभी नहीं छोड़ा है, बजाय उस व्यक्ति के जिसके पास कोई आंतरिक जीवन नहीं है, जो स्वयं को कैलेंडर के अनुसार नियंत्रित करता है और अचानक उन वर्षों के योग को नहीं खोज पाता जिन्हें वह प्रतिदिन, भले ही अनजाने में, जोड़ता रहा है। लेकिन मेरे दर्द का एक और भी गंभीर कारण था; मैंने समय की उस विनाशकारी क्रिया को ठीक उसी क्षण खोजा जब मैं कलाकृति में समय से परे की वास्तविकताओं को स्पष्ट करना, उनका बौद्धिक विश्लेषण करना चाहता था।

इस पार्टी में मौजूद कुछ लोगों के मामले में, समाज से मेरी अनुपस्थिति के दौरान लगातार बदलते चेहरों ने उनमें इतना पूर्ण परिवर्तन ला दिया था, इतना कायापलट कि मैं उनके साथ किसी रेस्तरां में सौ बार भोजन कर लेता, फिर भी मुझे यह एहसास नहीं होता कि मैं उन्हें पहले से जानता था, ठीक वैसे ही जैसे मैं किसी गुप्त शासक की राजसी गरिमा या किसी अजनबी की बुराई का अनुमान नहीं लगा सकता था। नामों के मामले में यह तुलना अपर्याप्त है, क्योंकि कोई भी अपने सामने बैठे किसी अनजान व्यक्ति को अपराधी या राजा मान सकता है, जबकि जिन्हें मैं जानता था, या यों कहें कि जिन लोगों को मैं जानता था और जिनका नाम उनसे

मिलता-जुलता था, वे इतने अलग थे कि मैं उन्हें एक ही व्यक्ति नहीं मान सकता था। फिर भी, जैसा कि मैं संप्रभुता या बुराई के विचार को प्रारंभिक बिंदु मानकर करता, जिससे हमें अजनबी (जिसके साथ आँखों पर पट्टी बांधकर आसानी से सौहार्दपूर्ण या विपरीत व्यवहार किया जा सकता है) में एक विशिष्ट या संदिग्ध रूप दिखाई देता है, मैंने अपने लिए पूरी तरह से अनजान एक महिला के चेहरे में यह धारणा पैदा करने का प्रयास किया कि वह श्रीमती सज़ेरत थीं। और अंत में मैंने उस चेहरे के बारे में अपनी पुरानी धारणा को पुष्ट किया, जो मेरे लिए पूरी तरह से अनजान ही रहता, मानो किसी दूसरी औरत का चेहरा हो, क्योंकि उसमें से वे मानवीय गुण पूरी तरह से गायब हो गए थे जिन्हें मैं जानता था, मानो वह किसी पुरुष का चेहरा हो जो बंदर बन गया हो। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि नाम और उसकी पहचान के बयान ने मुझे इस मुश्किल के बावजूद समस्या को सुलझाने का रास्ता दिखाया। हालाँकि, कभी-कभी पुरानी तस्वीर इतनी स्पष्टता से मेरे सामने आ जाती थी कि मैं उन दोनों का सामना कर सकूँ और जैसे कोई गवाह किसी आरोपी के सामने खड़ा हो, मुझे कहना पड़ता था: "नहीं, मैं उसे नहीं पहचानता।"

एक युवती ने मुझसे पूछा, "क्या हम साथ में किसी रेस्टोरेंट में खाना खाने चलें?" और जब मैंने जवाब दिया, "खुशी से, अगर आपको किसी युवक के साथ अकेले खाना खाने में कोई आपत्ति न हो," तो मैंने अपने आस-पास के लोगों को हंसते हुए सुना और जल्दी से कहा, "या यूं कहें कि किसी बूढ़े के साथ।" मुझे एहसास हुआ कि जिन शब्दों पर हंसी आ रही थी, वे वैसे ही थे जैसे मेरी माँ मेरे बारे में बात करते समय इस्तेमाल करती होंगी; मेरी माँ के लिए मैं हमेशा बच्चा ही रहा और मुझे लगा कि मैं खुद को उनके नज़रिए से देख रहा हूँ। अगर मैंने भी, उनकी तरह, अपने बचपन से आए बदलावों को महसूस किया होता, तो वे बहुत पुराने

बदलाव होते क्योंकि मैं उस बिंदु पर रुक गया था जहाँ लोग कभी-कभी, सच होने से पहले ही, कहा करते थे, "अब तो वह सचमुच जवान हो गया है।" यही बात मैं अब सोच रहा था, लेकिन बहुत देर से। मुझे यह एहसास नहीं हुआ था कि मैं कितना बदल गया हूँ, लेकिन मुझ पर हंसने वाले लोगों को कैसे पता चला? मेरे बाल सफेद नहीं थे, मेरी मूंछें काली थीं। मैं उनसे पूछना चाहता था कि यह भयानक सच्चाई कैसे सामने आई। और अब मुझे समझ आया कि बुढ़ापा क्या होता है—बुढ़ापा, जो शायद सभी वास्तविकताओं में से एक ऐसी वास्तविकता है जिसके बारे में हम सबसे लंबे समय तक केवल एक अमूर्त धारणा बनाकर रखते हैं, कैलेंडर देखते हैं, चिट्ठियों पर तारीख लिखते हैं, दोस्तों की शादियाँ देखते हैं, उनके बच्चों को देखते हैं, और डर या आलस्य के कारण इसके महत्व को नहीं समझते, जब तक कि एक दिन एम. डी'आर्गेनकोर्ट जैसी कोई अनजान शख्सियत हमें यह नहीं सिखा देती कि हम एक नई दुनिया में जी रहे हैं; जब तक कि हम, जो उन्हें उनके दादा जैसे लगते हैं, अपनी किसी महिला मित्र के पोते को साथी की तरह मानते हैं और वे ऐसे हंसते हैं जैसे किसी मजाक पर हंस रहे हों। और तब मुझे मृत्यु, प्रेम, मन के सुख, दुःख की उपयोगिता और कर्तव्य का अर्थ समझ आया। क्योंकि अगर नामों का अर्थ मेरे लिए खो गया था, तो शब्दों ने उसे प्रकट कर दिया था। छवियों की सुंदरता चीजों के पीछे छिपी होती है, विचारों की सुंदरता आगे, इसलिए पहली चीजें हमें आश्चर्यचकित नहीं करतीं जब हम उन तक पहुंचते हैं और दूसरी चीजों को हम तभी समझते हैं जब हम उनसे आगे निकल जाते हैं।

समय के बीतने के संबंध में मैंने जो कड़वी सच्चाई जान ली थी, उससे मेरे विचार और भी समृद्ध हुए और मेरी पुस्तक की सामग्री में और भी इजाफा हुआ। चूंकि मैंने यह तय कर लिया था कि मेरी पुस्तक में केवल शुद्ध

अंतर्ज्ञान, यानी समय से परे के अंतर्ज्ञान ही शामिल नहीं हो सकते, इसलिए जिन सत्यों के साथ मैं इसे प्रस्तुत करना चाहता था, उनमें समय से संबंधित सत्य, वह समय जिसमें मनुष्य, समाज और राष्ट्र समाहित होते हैं और बदलते हैं, का भी महत्वपूर्ण स्थान होगा। मुझे केवल उन परिवर्तनों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए जिनके आगे मनुष्य का स्वरूप अवश्य ही झुकता है, जिनके नए उदाहरण हर क्षण सामने आते रहते हैं। अपने उस कार्य को, जिसे मैंने क्षणिक विचलितता से बचने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ शुरू किया था, मैं अपने परिचितों से लगातार "आप कैसे हैं?" पूछता और बातें करता रहा। इसके अलावा, उम्र का असर उन सभी पर एक जैसा नहीं था। किसी ने मेरा नाम पूछा और मुझे बताया गया कि मेरा नाम एम. डी कैम्ब्रेमर है। यह दिखाने के लिए कि उसने मुझे पहचान लिया है, उसने पूछा: "क्या आपको अभी भी घुटन महसूस होती है?" मेरे हां में जवाब देने पर, उसने आगे कहा: "आप देखते हैं कि यह आपकी दीर्घायु को नहीं रोकता," मानो मैं शतायु हूं। मैं उससे बात कर रहा था और मेरी नज़रें उसकी दो-तीन विशेषताओं पर टिकी हुई थीं, जिन्हें मैं अपने विचारों में समेटकर उसकी शख्सियत की उन यादों का सार निकाल रहा था जो उसके वर्तमान स्वरूप से बिल्कुल अलग थीं। उसने एक पल के लिए अपना सिर आधा घुमाया और तब मैंने देखा कि उसके गालों पर उभरे बड़े-बड़े लाल धब्बों के कारण वह पहचान से परे हो गया था। इन धब्बों के कारण वह अपना मुँह और आँखें ठीक से खोल नहीं पा रहा था। मैं इतना अवाक रह गया कि यह दिखाना नहीं चाहता था कि मैंने इस तरह के एंथ्रेक्स को देख लिया है, जिसका ज़िक्र पहले उसे ही करना चाहिए था। लेकिन चूंकि, एक बहादुर बीमार की तरह, उसने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया और हँस पड़ा, तो मुझे डर था कि अगर मैं नहीं पूछता तो मैं बेअदब लगूँगा और अगर पूछता तो बेअदब। "लेकिन क्या बुढ़ापे में ये कम

नहीं होते?" उसने घुटन भरी भावना का ज़िक्र करते हुए पूछा। मैंने उसे बताया कि नहीं। “खैर, मेरी बहन को अब पहले से बहुत कम तकलीफ होती है,” उन्होंने विरोधाभास भरे लहजे में कहा, मानो मेरे मामले में भी ऐसा ही हो, मानो उम्र कोई ऐसा उपाय हो जो श्रीमती डी गौकोर्ट के लिए कारगर साबित हुआ हो और इसलिए मेरे लिए भी लाभकारी हो। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन अब पास आ रही थीं और मुझे डर लगने लगा कि कहीं मैं उनके पति के चेहरे पर जो टिप्पणी की थी, उस पर खेद न जताकर असंवेदनशील न लगूँ, फिर भी मैंने पहले बोलने की हिम्मत नहीं की। “आपको उन्हें फिर से देखकर खुशी हुई होगी,” उन्होंने कहा। “क्या वे ठीक हैं?” मैंने हिचकिचाते हुए पूछा। “जैसा आप देख रहे हैं,” उन्होंने जवाब दिया। उन्होंने उस उभार पर कभी ध्यान ही नहीं दिया था जो मेरी दृष्टि को भा रहा था और जो समय के साथ मार्क्विस के चेहरे पर धीरे-धीरे और लगातार बढ़ता गया था, इतना कि मार्क्विस को इसका पता ही नहीं चला। जब श्री डी कैम्ब्रेमर ने मेरे घुटन के दौरों के बारे में मुझसे पूछताछ समाप्त की, तो मेरी बारी थी किसी से दबे स्वर में पूछने की कि क्या मार्क्विस की माँ अभी भी जीवित हैं। वे जीवित थीं। समय के बीतने को समझने में, पहला कदम ही मायने रखता है। पहले तो यह एहसास दर्दनाक होता है कि इतना समय बीत गया है, बाद में आश्चर्य होता है कि और समय क्यों नहीं बीता। शुरुआत में तो यह मानना मुश्किल होता है कि तेरहवीं शताब्दी इतनी दूर है, और बाद में यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि उस काल के कोई गिरजाघर बचे भी हैं, जबकि फ्रांस में उनकी संख्या अनगिनत है। कुछ ही पलों में मेरे भीतर भी वही धीमी प्रक्रिया घटित हुई जो उन लोगों के साथ होती है जिन्हें अपने परिचित की उम्र साठ वर्ष देखकर मुश्किल से विश्वास होता है, और पंद्रह वर्ष बाद भी उन्हें उतना ही अविश्वास होता है जब वे सुनते हैं कि वह अभी भी जीवित

है और उसकी उम्र पचहत्तर वर्ष से अधिक नहीं है। मैंने एम. डी कैम्ब्रेमर से पूछा कि उनकी माताजी कैसी हैं। उन्होंने उत्तर दिया, "पहले की तरह ही शानदार," एक ऐसे विशेषण का प्रयोग करते हुए जो उन समुदायों के विपरीत है जो वृद्ध माता-पिता के प्रति दयाहीन व्यवहार करते हैं, और कुछ परिवारों में उन वृद्ध लोगों के लिए लागू होता है जिनकी शारीरिक क्षमताएं, जैसे सुनना, चर्च जाना और शोक को बिना उदास हुए सहन करना, उन्हें अपने बच्चों की नजरों में अत्यंत नैतिक सौंदर्य प्रदान करती हैं।

अगर कुछ औरतें मेकअप से अपनी उम्र जताती थीं, तो कुछ ऐसे मर्द, जिनके चेहरों पर मैंने कभी कॉस्मेटिक्स नहीं देखे थे, अब उन्हें इस्तेमाल करना बंद करके अपनी उम्र को और भी बढ़ा रहे थे, क्योंकि अब उन्हें लोगों को लुभाने की कोई चिंता नहीं थी। इनमें से एक थे लेग्रैंडिन। उनके होंठों और गालों का गुलाबी रंग, जिसे मैंने कभी बनावटी नहीं समझा था, गायब हो गया था। इससे उनकी त्वचा का रंग फीका पड़ गया था और उनके लंबे, उदास चेहरे किसी मिस्र के देवता की तरह तराशे और सलीके से गढ़े हुए लग रहे थे। एक देवता! मानो कोई मृत्यु के मुंह से लौटा हो। उन्होंने न सिर्फ खुद को रंगने का साहस खो दिया था, बल्कि मुस्कुराने का, अपने हाव-भाव में जान डालने का और जोश से बात करने का भी साहस खो दिया था। उन्हें इतना पीला, इतना हारा हुआ देखना हैरान करने वाला था, वे बस कभी-कभार ही कोई शब्द बोलते थे, जो मृतकों के स्मरण किए जाने पर बोले गए शब्दों की तरह महत्वहीन थे। यह सोचकर हैरानी होती थी कि किस बात ने उन्हें जीवंत, बातूनी और मनोरंजक होने से रोक रखा था, जैसे किसी प्रेतात्मा से संपर्क करने के दौरान, एक ऐसे व्यक्ति की आत्मा के तुच्छ उत्तर देखकर आश्चर्य होता है जो जीवित रहते हुए प्रतिभाशाली था, जबकि प्रश्नों में दिलचस्प मोड़ आ सकते थे। और

यह एहसास होता था कि बुढ़ापे ने रंगीन और सजग लेग्रैंडिन की जगह एक फीकी और कमजोर परछाई को ला दिया था। कुछ लोगों के बाल सफेद नहीं होते। मैंने यह तब देखा जब प्रिंस डी गुएरमांटेस का बूढ़ा सेवक अपने मालिक से बात करने गया। उनके गालों से निकली घनी मूंछें, उनकी गर्दन की तरह, उस लाल-गुलाबी रंग को बरकरार रखे हुए थीं, जिसे देखकर यह संदेह नहीं किया जा सकता था कि उन्होंने डचेस डी गुएरमांटेस की तरह रंगाई करवाई थी। लेकिन इस वजह से वे कम बूढ़े नहीं लगते थे। बस यही महसूस होता था कि मनुष्य की कुछ प्रजातियाँ वनस्पति जगत में काई और लाइकेन की तरह होती हैं जो सर्दियों के आने पर नहीं बदलतीं।

जिन मेहमानों के चेहरे अभी भी वैसे ही थे, उनमें उम्र का असर अलग तरह से दिखाई दे रहा था; उन्हें चलने में ही परेशानी होती थी; पहले तो उनके पैरों में कुछ गड़बड़ लगती थी, बाद में समझ आता था कि उम्र ने उनके पैरों में सीसे के तलवे लगा दिए हैं। कुछ, जैसे एग्रीजेंटे के राजकुमार, उम्र से और भी खूबसूरत हो गए थे। लंबे, पतले, उदास दिखने वाले इस आदमी के बाल मानो हमेशा लाल ही रहते थे। कीड़ों की तरह एक कायापलट के बाद, उनके लाल बाल, पुराने कपड़े की तरह, सफेद हो गए थे। उनकी छाती में एक अभूतपूर्व और लगभग योद्धा जैसी उभार आ गई थी, जिसके कारण शायद उन्हें अपने नाजुक खोल को बार-बार तोड़ना पड़ता होगा; उनकी आँखों में एक आत्म-जागरूकता भरी गंभीरता झलक रही थी, जो सभी के प्रति एक नई दयालुता से चमक रही थीं। और चूंकि, उनमें आए बदलाव के बावजूद, अब के उस जोशीले राजकुमार और मेरी स्मृति में संजोए चित्र में अभी भी कुछ समानता थी, तो मैं समय की उस सृजनात्मक शक्ति से भर गया जो किसी व्यक्ति की एकता और जीवन के नियमों का सम्मान करते हुए, उसके रूप को बदलने और एक

ही व्यक्ति के दो अलग-अलग पहलुओं में स्पष्ट अंतर पैदा करने का साधन खोज लेती है। कई लोगों को तुरंत पहचाना जा सकता था, लेकिन वे अपने ही उन भद्दे चित्रों की तरह थे जिनमें किसी निर्दयी और द्वेषपूर्ण कलाकार ने एक के चेहरे की बनावट को कठोर बना दिया था, दूसरे के चेहरे की ताजगी या दुबलेपन को छीन लिया था और तीसरे के चेहरे को काला कर दिया था। इन छवियों की तुलना अपनी स्मृति में संजोए चित्रों से करने पर, मुझे अब दिखाई गई छवियां कम पसंद आईं, ठीक उसी तरह जैसे हम किसी मित्र की तस्वीर को नापसंद करते हैं और उसे अस्वीकार कर देते हैं क्योंकि हमें वह अच्छी नहीं लगती। मैं उनमें से हर एक से, जिसने मुझे अपना चित्र दिखाया, कहना चाहता था: "नहीं, वह वाला नहीं, वह तुम्हारे साथ न्याय नहीं करता, वह तुम नहीं हो।" मुझे ये कहने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए थी: "तुम्हारी खूबसूरत सीधी नाक की जगह अब तुम्हारे पिता जैसी टेढ़ी नाक आ गई है"; दरअसल, ये एक नई पारिवारिक नाक थी। संक्षेप में, कलाकार समय ने इन सभी मॉडलों को इस तरह बनाया था कि वे हूबहू न होते हुए भी पहचाने जा सकें, ऐसा इसलिए नहीं कि उसने चापलूसी की थी, बल्कि इसलिए कि उसने उन्हें बूढ़ा बना दिया था। वो कलाकार बहुत धीरे-धीरे काम करता है। इस प्रकार, ओडेट के चेहरे की प्रतिकृति, जिसका एक धुंधला रेखाचित्र मैंने बर्गोट को पहली बार देखने पर गिल्बर्ट के चेहरे में देखा था, समय के साथ इतनी सटीक रूप से साकार हो गई थी (जैसा कि आगे देखा जाएगा), जैसे चित्रकार किसी काम को लंबे समय तक संभाल कर रखते हैं और उसमें साल दर साल कुछ न कुछ जोड़ते जाते हैं। कई मामलों में मैंने न केवल लोगों को पहचाना, बल्कि उन्हें उनके पुराने रूप में भी पहचाना, जैसे स्की, उदाहरण के लिए, जो एक सूखे फूल या फल से ज्यादा नहीं बदला था, उन शौकिया "कलाकारों" का एक प्रतीक जो बुढ़ापे में भी

बेअसर और अपूर्ण बने रहते हैं। स्की का प्रयोग अधूरा ही रह गया, जिससे कला के बारे में मेरे सिद्धांत पुष्ट हो गए। इसी तरह प्रभावित अन्य लोग किसी भी अर्थ में शौकिया नहीं थे; वे समाज के ऐसे लोग थे जिन्हें किसी चीज में रुचि नहीं थी, जिन पर उम्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था और अगर उनके चेहरे पर झुर्रियों की लकीरें आ गई थीं और बालों में सफेदी छा गई थी, तब भी वे गोल-मटोल और अठारह साल के युवा जैसे ही चुलबुले थे। वे बूढ़े नहीं थे, बल्कि अठारह साल के बेहद मुरझाए हुए नौजवान थे। वर्षों के मुरझाने वाले प्रभावों को मिटाने के लिए बहुत कम प्रयास की आवश्यकता होती, और मृत्यु को उनके चेहरों को फिर से जवानी लौटाने में उतनी ही आसानी होती जितनी किसी हल्के से गंदे चित्र को उसकी मूल चमक लौटाने में होती है। मैंने उस भ्रम पर भी विचार किया जो हमें किसी वृद्ध हस्ती को सद्गुण, न्याय और आत्मा की सुंदरता से युक्त मानने पर मजबूर करता है, मेरा मानना था कि ऐसे प्रसिद्ध लोग चालीस साल पहले बेहद युवा रहे होंगे और यह मानने का कोई कारण नहीं था कि वे अब भी उतने ही घमंडी, धूर्त, आत्मनिर्भर और चालाक नहीं होंगे।

लेकिन इन सब के बिल्कुल विपरीत, जब मैंने उन पुरुषों और महिलाओं से बात की जो पहले असहनीय लगते थे, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि उनके लगभग सारे दोष दूर हो चुके थे। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जीवन ने उनकी महत्वाकांक्षाओं को निराश या संतुष्ट किया था और इस तरह उन्हें अहंकार या कड़वाहट से मुक्त कर दिया था। एक समृद्ध विवाह, जो प्रयास और आडंबर दोनों को अनावश्यक बना देता है, शायद पत्नी का प्रभाव भी, और धीरे-धीरे विकसित हुआ वह आत्म-बोध जो उन मूल्यों से अलग था जिन पर युवावस्था में लोग पूरी तरह विश्वास करते थे, ने उनके व्यक्तित्व को निखारा और उनके गुणों को उजागर किया। उम्र के साथ

ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व बदल गया, मानो पतझड़ के रंगों में पेड़ एक नया रूप धारण कर लेते हों। उनके मामले में, उम्र ने स्वयं को नैतिकता के एक ऐसे रूप में प्रकट किया जो उनमें पहले नहीं थी, जबकि दूसरों के मामले में यह शारीरिक थी और मेरे लिए इतनी नई थी कि श्रीमती डी सौव्रे जैसी कोई व्यक्ति एक ही समय में परिचित और अजनबी दोनों लगीं। वह मेरे लिए अजनबी थी, क्योंकि मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह वही हैं। उनके अभिवादन का जवाब देते हुए, मैं अनजाने में यह महसूस कर रहा था कि मैं यह समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि मैं तीन-चार लोगों में से किसे प्रणाम कर रहा हूँ (जिनमें श्रीमती डी सोव्रे शामिल नहीं थीं)। मेरी यह विनम्रता उन्हें ज़रूर आश्चर्यचकित कर गई होगी, क्योंकि अगर वह मेरी कोई करीबी दोस्त होतीं, तो कहीं मैं उनसे दूरी न बना लूँ, इसलिए मैंने अपनी पहचान को लेकर अनिश्चितता को मुस्कुराते हुए गर्मजोशी से हाथ मिलाकर दूर कर दिया। दूसरी ओर, उनका नया रूप मुझे जाना-पहचाना लगा। यह वह रूप था जिसे मैंने अपने जीवन में अक्सर हष्ट-पुष्ट, वृद्ध महिलाओं में देखा था, तब मुझे यह संदेह भी नहीं था कि कई साल पहले वे श्रीमती डी सोव्रे जैसी दिखती होंगी। यह रूप उनके पुराने रूप से इतना अलग था कि मुझे लगा जैसे वह किसी परी कथा की पात्र हों, जो पहले एक युवती के रूप में, फिर एक हष्ट-पुष्ट महिला के रूप में और अंत में, निस्संदेह, लड़खड़ाती, झुकी हुई कमर वाली बूढ़ी औरत में बदल जाती है। वह किनारे से दूर एक थकी हुई तैराक की तरह लग रही थी, जो समय की लहरों से जूझते हुए किसी तरह अपना सिर बचाए हुए थी, जो उसे डुबो रही थीं। उसके अनिश्चित चेहरे को देर तक देखने के बाद, जो एक धोखेबाज याददाश्त की तरह डगमगा रहा था और अतीत की यादों को सहेज नहीं पा रहा था, मैंने किसी तरह उन गालों पर उम्र के साथ बने चौकोर और षट्भुजाकार निशानों को मिटाने

का एक छोटा सा खेल खेलकर कुछ हद तक उसे समझने की कोशिश की। लेकिन उम्र ने महिलाओं के चेहरों पर हमेशा ज्यामितीय आकृतियाँ ही नहीं बनाई थीं। डचेस डी गुएरमांटेस के गाल, जो आश्चर्यजनक रूप से अपरिवर्तित रहे थे, हालांकि अब वे नूगा से बने प्रतीत हो रहे थे, उनमें मैंने हरे रंग का एक निशान, कुचले हुए खोल का एक छोटा सा टुकड़ा और एक ऐसी मांसलता देखी जिसे परिभाषित करना मुश्किल था क्योंकि यह मिस्टलेटो बेरी से भी हल्की और कांच के मोती से भी कम पारदर्शी थी।

कुछ पुरुष लंगड़ाकर चल रहे थे और यह स्पष्ट था कि यह किसी वाहन दुर्घटना के कारण नहीं बल्कि दिल का दौरा पड़ने के कारण था, और जैसा कि लोग कहते हैं, उनका एक पैर कब्र में था। यह स्थिति श्रीमती डी फ्रैंकेटोट जैसी अर्ध-लकवाग्रस्त महिलाओं के लिए और भी भयावह थी, जो तहखाने के पत्थरों में फंसे अपने वस्त्रों को खींच पाने में असमर्थ प्रतीत हो रही थीं, मानो वे अपना संतुलन खो बैठी हों। सिर झुकाए, शरीर जीवन और मृत्यु के बीच की उस वक्र रेखा में झुका हुआ था, मानो वे अपने अंतिम अंत की ओर बढ़ रही हों। उन्हें ले जा रहे परवलयिक गति का कोई प्रतिरोध नहीं कर सकता था। कांपते हुए उठने की कोशिश में उनकी कांपती उंगलियां उनका साथ नहीं दे पा रही थीं। सफेद बालों से ढके कुछ चेहरों पर कठोरता थी, उनकी पलकें मृत्यु के कगार पर थीं, उनके लगातार हिलते होंठ मानो मरते हुए की प्रार्थना बुदबुदा रहे हों।

यदि किसी चेहरे का रेखीय आकार बरकरार रहता, तो सुनहरे या काले बालों की जगह सफेद बाल लगाने से वह किसी दूसरे चेहरे जैसा दिखने लगता था। रंगमंच के वेशभूषा विशेषज्ञ जानते हैं कि पाउडर से सजी विग किसी व्यक्ति को इस कदर भेस बदल देती है कि उसे पहचानना मुश्किल हो जाता है। युवा मार्क्विस डी ब्यूसेर्जेंट, जिनसे मैं श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के बॉक्स में मिला था, जब वे उप-लेफ्टिनेंट थे और श्रीमती डी गुएरमांटेस

अपनी बहन के बॉक्स में थीं, उनके चेहरे की बनावट अभी भी बिल्कुल नियमित थी, बल्कि इसलिए और भी अधिक, क्योंकि धमनीकाठिन्य के कारण शारीरिक कठोरता ने उनके चेहरे की भावहीनता को और भी बढ़ा दिया था और उनके चेहरे को मांटेग्ना या माइकल एंजेलो की किसी कृति की तरह तीव्र और लगभग विकृत गतिहीन बना दिया था। उनकी पहले ईंट जैसी लाल त्वचा अब पीली पड़ गई थी; चांदी जैसे बाल, थोड़ा मोटापा, डॉज जैसी गरिमा और एक पुरानी थकान जिसके कारण उन्हें लगातार नींद की लालसा रहती थी, इन सबने मिलकर एक नई और प्रभावशाली भव्यता का निर्माण किया था। सुनहरे बालों की जगह सफेद दाढ़ी के एक आयताकार टुकड़े ने इतनी खूबसूरती से ले ली थी कि जब मैंने देखा कि मेरे पूर्व सब-लेफ्टिनेंट को अब पांच पट्टियाँ मिल गई हैं, तो मेरा पहला विचार उन्हें कर्नल पदोन्नति पर बधाई देने का नहीं था, बल्कि इस बात पर बधाई देने का था कि वे इतने पूर्ण रूप से कर्नल बन गए थे कि ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने न केवल वर्दी बल्कि अपने पिता कर्नल का गंभीर और संजीदा रूप भी अपना लिया हो। एक अन्य व्यक्ति के मामले में, सुनहरे बालों की जगह सफेद दाढ़ी आ गई थी, लेकिन चूंकि उनका चेहरा हंसमुख, मुस्कुराता हुआ और युवा बना रहा, इससे वे अधिक लाल और ऊर्जावान दिखाई देने लगे और उनकी आँखों की चमक बढ़ने से, इस युवा दिखने वाले सांसारिक व्यक्ति को एक पैगंबर जैसा रूप मिल गया। सफेद बालों और अन्य तत्वों के कारण होने वाला परिवर्तन, विशेष रूप से महिलाओं में, मेरा ध्यान इतना आकर्षित नहीं करता यदि इसमें केवल रंग परिवर्तन शामिल होता, क्योंकि रंग परिवर्तन आँखों को भा सकता है जबकि व्यक्तित्व परिवर्तन मन को परेशान करता है। दरअसल, किसी को पहचानना, और उससे भी बढ़कर, जिसे आप पहचान नहीं पाए हैं, उसे फिर से पहचानना, दो विरोधाभासी बातों को एक ही नाम के अंतर्गत

सोचना है। यह वही है जैसे यह कहना कि जो यहाँ था, जिस व्यक्ति को हम याद करते हैं, वह अब यहाँ नहीं है और जो यहाँ है, उसे हम कभी जान ही नहीं पाए। इसका अर्थ है एक ऐसे रहस्य को भेदना जो लगभग मृत्यु के रहस्य जितना ही जटिल है, और यह वास्तव में मृत्यु की प्रस्तावना और अग्रदूत है। क्योंकि मैं जानता था कि इन परिवर्तनों का क्या अर्थ है और वे किस ओर इशारा करते हैं, और इसलिए महिलाओं के बालों का सफेद होना, अन्य कई परिवर्तनों के साथ, मुझे बहुत प्रभावित किया। किसी ने एक नाम लिया और मैं यह जानकर स्तब्ध रह गया कि यह नाम एक ही समय में मेरी पूर्व गोरी नृत्य साथी और मेरे पास से धीरे-धीरे गुज़रने वाली उस हष्ट-पुष्ट वृद्ध महिला दोनों पर लागू होता है। चेहरे की हल्की गुलाबी रंगत को छोड़कर, शायद उनका नाम ही इन दो महिलाओं में एकमात्र समानता थी जो एक-दूसरे से इतनी भिन्न थीं—एक मेरी स्मृति में और दूसरी गुएरमांटेस के स्वागत समारोह में—एक भोली-भाली युवती और एक नाटकीय विधवा। मेरी नर्तकी ने उस विशाल शरीर को अपने अधीन कर लिया था, उसने अपनी भारी-भरकम चाल को एक लयबद्ध ताल की तरह धीमा कर लिया था, उसकी जवानी की बस यही निशानी बची थी, उसके गाल बेशक पहले से ज़्यादा भरे हुए थे लेकिन पहले की तरह ही उन पर झाइयाँ थीं, उस कभी की नाज़ुक गोरी लड़की की जगह अब यह बूढ़ा तोंददार मार्शल आ गया था, जीवन ने एक मीनार को गुंबद से बदलने के लिए ज़रूरी विनाश और पुनर्निर्माण से कहीं ज़्यादा किया होगा, और जब याद आता है कि यह प्रक्रिया किसी निर्जीव पदार्थ पर नहीं बल्कि मांस पर की गई थी जो केवल अगोचर रूप से बदलता है, तो इस रूप और उस प्राणी के बीच का ज़बरदस्त अंतर जिसे मैं याद करता था, उसे एक ऐसे अतीत में ले गया जो दूर का नहीं, बल्कि लगभग अविश्वसनीय था। दोनों पहलुओं को फिर से जोड़ना, दोनों

प्राणियों को एक ही नाम से पुकारना मुश्किल था; क्योंकि जिस प्रकार किसी मृत शरीर के जीवित होने या जीवित व्यक्ति के आज मृत हो जाने को समझना कठिन होता है, ठीक उसी प्रकार यह कल्पना करना भी लगभग उतना ही कठिन है (क्योंकि यौवन का अंत, शक्ति और जीवंतता से परिपूर्ण व्यक्तित्व का विनाश एक शून्य की शुरुआत है), कि जो युवती कभी युवा थी वह अब वृद्ध हो गई है, जब उस वृद्ध स्त्री का रूप युवती के रूप के साथ इस प्रकार रखा जाता है कि वह उसे पूरी तरह से नकार देती है, और सपने में दिखने पर कभी वृद्ध, कभी युवती, फिर से वृद्ध दिखाई देती हैं, और यह विश्वास करना असंभव हो जाता है कि यह कभी वह थी, कि उस व्यक्ति का सार स्वयं वही है जो कहीं और नहीं गया, बल्कि समय के कुशल हेरफेर के कारण यह बन गया है, कि वही सार कभी उसी शरीर से अलग नहीं हुआ—यदि नाम और मित्रों की सकारात्मक गवाही न होती, जिसके आधार पर तांबे के पत्थर, जो कभी गेहूं की बालियों के सुनहरे रंग के बीच बिखरे हुए थे और आज बर्फ के नीचे दबे हुए हैं, विश्वसनीयता का आभास देते हैं। मानव चेहरे की भूविज्ञान में इस तरह की क्रांति के बाद बीते समय के बारे में सोचकर भय उत्पन्न हो जाता था, नाक के पास हुए कटावों को देखकर, गालों पर जमे विशाल जमाव को देखकर, जो चेहरे को अपने अपारदर्शी और कठोर आवरण से ढक लेते थे। मैंने हमेशा किसी विशेष क्षण में अपनी स्वयं की वैयक्तिकता को एक पॉलीपस के समान समझा है, जिसकी आँख, एक स्वतंत्र जीव होने के बावजूद, मन के आदेश के बिना धूल के कणों पर झपकी लेती है, और तो और, जिसकी आंतें एक अज्ञात परजीवी से संक्रमित होती हैं, बिना बुद्धि को इसकी जानकारी हुए, और इसी प्रकार आत्मा को जीवन के दौरान एक दूसरे से अलग-अलग कई स्वरूपों की श्रृंखला के रूप में समझा है, जो बारी-बारी से मरते हैं या फिर से जीवित हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे

शाम ढलते ही कॉम्ब्रे में अलग-अलग स्वरूप बारी-बारी से मुझ पर हावी हो जाते थे। लेकिन मैंने यह भी देखा है कि ये नैतिक कोशिकाएँ जो किसी प्राणी का निर्माण करती हैं, स्वयं प्राणी से अधिक टिकाऊ होती हैं। मैंने सेंट-लूप में गुएरमांटे परिवार की बुराइयों और बहादुरी को फिर से उभरते देखा था, जैसे मैंने स्वान के अजीब और तेज़ी से हुए बदलावों और फिर उसके प्रति वफादार यहूदीवाद को देखा था। मुझे यह फिर से ब्लोच में दिखाई दिया। अपने पिता को खोने के बाद, यहूदी परिवारों में अक्सर मौजूद रहने वाली प्रबल पारिवारिक भावना के अलावा, यह विचार कि उसके पिता सभी से श्रेष्ठ थे, ने उसके प्रति उसके प्रेम को एक पंथ का रूप दे दिया था। वह उन्हें खोने का दर्द सहन नहीं कर सका और लगभग एक साल तक एक मानसिक अस्पताल में बंद रहा। उसने मेरी संवेदनाओं का जवाब गहरी भावना से, लेकिन लगभग घमंडी लहजे में दिया, क्योंकि वह मुझे उस प्रतिष्ठित व्यक्ति से परिचित होने के लिए बहुत ईर्ष्यालु समझता था, जिसकी चाल-ढाल और कद-काठी वह खुशी-खुशी किसी ऐतिहासिक संग्रहालय को दे देता। और अपने पारिवारिक भोजन पर (क्योंकि डचेस डी गुएरमांटे के विश्वास के विपरीत, वह विवाहित था) वही क्रोध जो श्री ब्लोच वरिष्ठ को श्री निस्सिम बर्नार्ड के प्रति प्रेरित करता था, वही क्रोध ब्लोच को अपने ससुर के प्रति प्रेरित करता था। उसने उन पर भी वैसे ही हमले किए। ठीक उसी तरह जब मैंने कॉटार्ड, ब्रिचोट और कई अन्य लोगों की बातें सुनीं, तो मुझे लगा कि संस्कृति और फैशन के माध्यम से एक ही लहर पूरे अंतरिक्ष में भाषण और विचार के समान तरीकों को फैलाती है, और ठीक उसी तरह, समय की पूरी अवधि में, महान मौलिक धाराएँ युगों की गहराई से एक ही क्रोध, एक ही दुख, एक ही घमंड, एक ही उन्माद को पीढ़ियों तक उठाती हैं, प्रत्येक खंड एक ही श्रृंखला के विभिन्न स्तरों के मानदंडों को स्वीकार करता है और क्रमिक

स्क्रीन पर परछाइयों की तरह, उन चित्रों को पुन: उत्पन्न करता है जो ब्लोच और उनके ससुर, एम. ब्लोच सीनियर और एम. निस्सिम बर्नार्ड और अन्य लोगों, जिन्हें मैं कभी नहीं जानता था, के बीच हुई झड़पों के समान होते हैं, हालांकि अक्सर उनसे कम महत्वहीन होते हैं।

वहाँ कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें मैं जानता था और जिनके रिश्तेदारों से भी मेरी जान-पहचान थी, लेकिन मुझे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि उनमें एक समानता है। लेग्रैंडिन जिस सफेद बालों वाले बूढ़े साधु में बदल गए थे, उनकी प्रशंसा करते हुए, मैंने अचानक देखा, या यूँ कहूँ कि एक प्राणी विज्ञानी की संतुष्टि के साथ खोजा, कि उनके चिकने गालों की बनावट उनके युवा भतीजे, लियोनोर डी कैम्ब्रेमर के गालों जैसी ही थी, जो हालाँकि उनसे बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं थे। इस प्रारंभिक समानता में मैंने एक और समानता जोड़ी जिसे मैंने अब तक नहीं देखा था, फिर अन्य भी, जिनमें से कोई भी उस युवापन का सार नहीं था जो आमतौर पर मुझे उनकी युवावस्था में दिखाई देता था, इसलिए जल्द ही मेरे मन में उनकी एक तरह की व्यंग्यचित्र छवि बन गई, जो शाब्दिक समानता से कहीं अधिक गहरी और सजीव थी। उनके चाचा अब मुझे युवा कैम्ब्रेमर जैसे लग रहे थे, जिन्होंने मजे के लिए उस बूढ़े व्यक्ति का रूप धारण कर लिया था जो वे अंततः बनेंगे, इतनी पूरी तरह से कि यह न केवल अतीत की युवावस्था का रूप था, बल्कि आज की युवावस्था का रूप भी था जिसने मुझे समय का इतना तीव्र बोध कराया।

महिलाओं ने उस खास आकर्षण को बरकरार रखने की कोशिश की जिसने उन्हें सबसे अलग बनाया था, लेकिन समय के साथ उनके चेहरों पर आई नई चमक ने इसकी इजाज़त नहीं दी। सुंदरता से गढ़े गए चेहरे के भाव खो जाने पर, उन्होंने बचे-खुचे भावों से एक नया रूप गढ़ने की कोशिश की। चेहरे के केंद्र को, भले ही गुरुत्वाकर्षण को नहीं, विस्थापित

करके और नए स्वरूप के अनुरूप चेहरे की विशेषताओं को पुनर्गठित करके, उन्होंने पचास वर्ष की आयु में एक नई तरह की सुंदरता का निर्माण करना शुरू किया, ठीक वैसे ही जैसे कोई पुरुष जीवन के अंतिम पड़ाव में कोई नया पेशा अपनाता है या जैसे अंगूर की खेती के लिए अनुपयुक्त मिट्टी का उपयोग चुकंदर उगाने के लिए किया जाता है। इससे नए चेहरे के भावों के चारों ओर एक नई जवानी खिल उठी। लेकिन जो महिलाएं बहुत सुंदर या बहुत बदसूरत थीं, वे इन परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर सकीं। सुंदर महिलाएं, जो अपरिवर्तनीय रेखाओं पर संगमरमर की तरह ढली हुई थीं, एक मूर्ति की तरह बिखर गईं, जबकि बदसूरत महिलाओं को, जिनके चेहरे में कोई दोष था, उनसे भी अधिक लाभ मिला। शुरुआत में, केवल उन्हीं को तुरंत पहचाना जा सकता था। मुझे पता था कि पेरिस में उनके जैसे दो चेहरे नहीं थे, जिसकी वजह से मैं उन्हें एक पार्टी में पहचान पाया, जहाँ मैंने किसी को नहीं पहचाना था। और वे उम्रदराज भी नहीं लग रहे थे। उम्र तो इंसान का स्वभाव है और राक्षस होने के नाते वे व्हेल से ज़्यादा बदले नहीं थे। कुछ और पुरुष और महिलाएं भी थीं जो उम्रदराज नहीं लग रही थीं; उनका शरीर पतला था, चेहरे पहले जैसे ही जवान थे। लेकिन, अगर कोई उनसे बात करने के लिए पास जाता, तो चिकनी त्वचा और कोमल आकृति वाला चेहरा अलग दिखने लगता और जैसे सूक्ष्मदर्शी से किसी वनस्पति को देखते हैं, वैसे ही पानी या खून से सने धब्बे दिखाई देने लगते। मैंने अपनी चिकनी समझी हुई त्वचा पर कई चिकने निशान देखे जिनसे मुझे घिन आ गई। चेहरे की आकृति भी इस फैलाव को रोक नहीं पाई; पास से देखने पर नाक मुड़ी हुई और गोल हो गई थी, उस पर भी चेहरे के बाकी हिस्सों की तरह ही तैलीय धब्बे छा गए थे और जब आंखें आंखों से मिलतीं, तो आंखें गड्ढों में गायब हो जातीं, जिससे उस पुराने चेहरे से समानता खत्म हो

जाती जिसे देखकर लगता था कि हमने उसे फिर से खोज लिया है। इस प्रकार, जो मेहमान दूर से जवान दिखते थे, पास आने पर बूढ़े हो जाते थे और चेहरे की आकृतियों का फैलाव और फैलाव साफ दिखाई देता था। दरअसल, उनकी उम्र इस बात पर निर्भर करती प्रतीत होती थी कि दर्शक उन्हें किस तरह से देखता है, ताकि उन्हें युवा समझ सके, क्योंकि उन्हें केवल एक निश्चित दूरी से देखा जाता था, जो कि दूरदृष्टि वाले व्यक्ति को ऑप्टिशियन द्वारा प्रदान किए गए चश्मे के अभाव में वस्तु को छोटा कर देती है; उनकी उम्र, पानी के गिलास में मौजूद कणों की तरह, वर्षों की वृद्धि से कम, बल्कि दर्शक की दृष्टि के विस्तार के कारण निर्धारित होती थी।

सामान्यतः सफेद बालों की मात्रा समय की गहराई का सूचक होती थी, ठीक वैसे ही जैसे पर्वत शिखर जो देखने में अन्य शिखरों के समान लगते हैं, जब तक कि उनकी बर्फीली सफेदी उनकी ऊँचाई को प्रकट नहीं कर देती। और यह बात भी हमेशा सच नहीं होती थी, विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में। उदाहरण के लिए, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के बाल, जब भूरे थे, तो उनकी उभरी हुई भौंहों के चारों ओर चांदी के रेशम की तरह चमकते थे, लेकिन अब सफेद हो जाने के बाद वे ऊन और रुई से बने प्रतीत होते थे और मैली बर्फ जैसे दिखते थे। यह भी देखा गया कि सुनहरे बालों वाली नर्तकियों ने न केवल अपने सफेद बालों के साथ-साथ उन डचेसों की मित्रता भी प्राप्त कर ली थी जिन्हें वे पहले नहीं जानती थीं, बल्कि पहले केवल नृत्य करने वाली नर्तकियों की कला ने भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। और अठारहवीं शताब्दी की उन प्रतिष्ठित महिलाओं की तरह जो धार्मिक हो गईं, वे घनवादी चित्रों से भरे फ्लैटों में रहती थीं, जहाँ एक घनवादी चित्रकार केवल उनके लिए काम करता था और वे केवल उसी के लिए जीती थीं।

जिन वृद्ध पुरुषों के चेहरे बदल चुके थे, वे अपने चेहरे पर स्थायी रूप से उन क्षणिक भावों को अंकित करने का प्रयास करते थे जो वे किसी विशेष मुद्रा के लिए अपनाते थे, यह सोचकर कि इससे उनकी दिखावट बेहतर हो जाएगी या उसकी कमियां छिप जाएंगी; ऐसा लगता था मानो वे स्वयं के अपरिवर्तनीय स्नैपशॉट बन गए हों।

इन सभी लोगों ने अपना वेश बदलने में इतना समय लगाया था कि आम तौर पर वे अपने साथ रहने वालों की नज़र से बच जाते थे, बल्कि कई बार उन्हें मोहलत भी मिल जाती थी और इस दौरान वे जीवन के अंतिम समय तक अपने असली रूप में बने रहते थे। लेकिन यह टाला गया वेश तब और भी जल्दी पूरा हो जाता था और किसी भी हालत में अपरिहार्य था। इसी तरह मैं श्रीमती X को हमेशा से जानती थी— आकर्षक और आत्मविश्वास से भरी हुई, और वह लंबे समय तक ऐसी ही रहीं, बल्कि बहुत लंबे समय तक, क्योंकि जैसे कोई व्यक्ति अंधेरा होने से पहले अपना तुर्की वेश बदलना न भूले, वैसे ही उन्होंने आखिरी क्षण तक इंतजार किया और जल्दबाजी में खुद को उस बूढ़ी तुर्की महिला में बदल लिया, जो पहले उनकी माँ जैसी दिखती थी।

पार्टी में मेरी मुलाकात अपने एक पुराने दोस्त से हुई, जिसे मैं पिछले दस सालों में लगभग हर दिन देखता था। किसी ने हम दोनों का फिर से परिचय कराया। जैसे ही मैं उसके पास गया, उसने उसी जानी-पहचानी आवाज़ में कहा: "इतने सालों बाद कितनी खुशी हुई!" लेकिन मेरे लिए तो यह एक बड़ा आश्चर्य था! उसकी आवाज़ किसी उन्नत रिकॉर्डिंग मशीन से आती हुई लग रही थी, क्योंकि हालांकि वह मेरे दोस्त की ही आवाज़ थी, लेकिन एक ऐसे बूढ़े, सांवले आदमी के मुंह से निकली जिसे मैं नहीं जानता था, और ऐसा लग रहा था जैसे किसी यांत्रिक तरकीब से मेरे पुराने साथी की आवाज़ इस मोटे-ताज़े बूढ़े आदमी में समा गई हो। फिर

भी मैं जानता था कि वह वही है, क्योंकि इतने समय बाद हमारा परिचय कराने वाला व्यक्ति मज़ाक करने वाला नहीं था। उसने कहा कि मैं बदला नहीं हूँ, जिससे मैं समझ गया कि वह खुद को बदला हुआ नहीं मानता। फिर मैंने उसे दोबारा देखा और सिवाय इसके कि वह बहुत मोटा हो गया था, उसने अपने पुराने व्यक्तित्व का काफी हिस्सा बरकरार रखा था। फिर भी, मुझे यह मानना असंभव लग रहा था और मैंने उसे याद करने की कोशिश की। जवानी में उनकी नीली आँखें हमेशा मुस्कुराती और मटकती रहती थीं, मानो किसी ऐसी चीज़ की तलाश में हों जिसके बारे में मुझे पता नहीं था। शायद वह एक निस्वार्थ सत्य था, जिसे शायद एक लड़के के पारिवारिक मित्रों के प्रति क्षणभंगुर सम्मान के साथ निरंतर संदेह में खोजा जा रहा था। एक प्रभावशाली, सक्षम और निरंकुश राजनेता बनने के बाद, उनकी वे नीली आँखें, जो कभी अपनी खोज में सफल नहीं हुईं, स्थिर हो गईं और इससे उनमें एक तीखी अभिव्यक्ति आ गई, जैसे कोई भौंहें तन गई हों। वहीं, उल्लास, अचेतनता और मासूमियत षड्यंत्र और कपट में बदल गई। वे पूरी तरह से एक अलग व्यक्ति बन गए थे—फिर अचानक, मेरे एक शब्द के जवाब में, वे खिलखिलाकर हँस पड़े, वही जानी-पहचानी हँसी जो उनके दिनों की निरंतर चंचल निगाहों के अनुरूप थी। संगीत के दीवाने मानते हैं कि X द्वारा रचित Z का संगीत बिल्कुल अलग हो जाता है। ये ऐसे सूक्ष्म अंतर हैं जिन्हें आम लोग समझ नहीं पाते, लेकिन एक नुकीली नीली पेंसिल की तरह तेज, थोड़ी एक तरफा, आँख के नीचे एक बच्चे की दबी हुई बेकाबू हँसी, केवल संगीत रचना में अंतर से कहीं अधिक है। जब उसकी हंसी थम गई, तो मैं अपने दोस्त को फिर से याद करना चाहता था, लेकिन ओडिसी में यूलिसिस की तरह, जो अपनी मृत माँ के शरीर पर गिर पड़ा था, एक माध्यम की तरह जो किसी प्रेत से उसकी पहचान जानने के लिए व्यर्थ ही उत्तर प्राप्त करने की

कोशिश कर रहा था, एक विद्युत प्रदर्शनी में आए दर्शक की तरह जो फोनोग्राफ से आने वाली आवाज को किसी इंसान की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं कर पा रहा था, मैं अपने दोस्त को पहचानना बंद कर दिया।

हालांकि, यह बात ध्यान में रखना आवश्यक है कि समय की गति कुछ मामलों में तेज या धीमी हो सकती है। चार-पाँच साल पहले, संयोग से मेरी मुलाकात सड़क पर विस्काउंटेस डी सेंट फियाक्रे (गुएरमांटेस के मित्र की बहू) से हुई थी। उनके सुडौल चेहरे से ऐसा लगता था मानो वे हमेशा जवान रहेंगी और वास्तव में वे अभी भी जवान थीं। लेकिन अब, उनकी मुस्कान और अभिवादन के बावजूद, मैं उन्हें पहचान नहीं पाया क्योंकि उनके चेहरे की बनावट इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसे फिर से संवारना असंभव था। दरअसल, तीन साल से वे कोकीन और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन कर रही थीं। उनकी गहरी और काली आँखों में झुर्रियाँ पड़ गई थीं, उनके मुँह में एक अजीब सी फड़कन थी। ऐसा लगता है कि वे इस स्वागत समारोह के लिए उठी थीं, जबकि उनकी आदत महीनों तक बिस्तर या सोफे पर पड़े रहने की थी। समय की कुछ ऐसी एक्सप्रेस और स्पेशल ट्रेनें होती हैं जो समय से पहले बुढ़ापा लाती हैं, लेकिन समानांतर रूप से लगभग उतनी ही तेज़ वापसी ट्रेनें भी चलती हैं। मैंने एम. डी कौरगिवाक्स को उनका बेटा समझ लिया था; वह देखने में जवान लग रहा था और हालांकि उसकी उम्र पचास से अधिक रही होगी, फिर भी वह तीस वर्ष से अधिक का नहीं लग रहा था। उसने एक बुद्धिमान डॉक्टर से सलाह ली थी, शराब और नमक से परहेज किया था और इस तरह वह फिर से तीस वर्ष का हो गया था, बल्कि लगभग तीस वर्ष का ही, क्योंकि उसने उसी सुबह अपने बाल कटवाए थे।

एक विचित्र बात यह है कि उम्र बढ़ने की प्रक्रिया कुछ सामाजिक रीति-

रिवाजों से प्रभावित होती प्रतीत होती थी। वे प्रतिष्ठित सज्जन, जो सादे अल्पाका चमड़े और पुराने भूसे के हैट पहनने के आदी थे, जिन्हें कोई संभ्रांत व्यक्ति अपने सिर पर नहीं पहनता, वे भी उन्हीं बागवानों और किसानों की तरह बूढ़े हो गए थे जिनके बीच वे रहते थे। उनके गालों पर जगह-जगह भूरे धब्बे पड़ गए थे और उनके चेहरे पीले पड़ गए थे और किताब की तरह धंस गए थे। और मैंने उन लोगों के बारे में भी सोचा जो वहाँ नहीं थे क्योंकि वे हो नहीं सकते थे, कि कैसे उनके सचिव, उन्हें जीवित होने का भ्रम देने के प्रयास में, उन्हें उन टेलीग्रामों में से एक के द्वारा बहाना बनाकर अनुपस्थित रहने की अनुमति देते थे जो राजकुमारी को कभी-कभी उन लोगों से मिलते थे जो वर्षों से बीमार या मरणासन्न थे, जो अब उठ नहीं सकते थे और न ही हिल-डुल सकते थे, और तुच्छ या उत्साही आगंतुकों से घिरे हुए थे, पहले वाले जिज्ञासु पर्यटकों की तरह आकर्षित होते थे, दूसरे तीर्थयात्रियों की आस्था से प्रेरित होते थे, बंद आँखों से अपनी प्रार्थना पुस्तक को पकड़े हुए, उनके बिस्तर के कपड़े आंशिक रूप से एक शव के कफन की तरह पीछे की ओर फेंके हुए थे, पीली, फैली हुई त्वचा के नीचे एक कंकाल में तराशे हुए, जैसे किसी मकबरे पर संगमरमर।

कुछ महिलाओं को पहचानना तो निश्चित था क्योंकि उनके चेहरे लगभग वैसे ही थे और उन्होंने अपने सफ़ेद बालों को पतझड़ के पत्तों की तरह मौसम के अनुरूप संवारा था। लेकिन कुछ महिलाओं और पुरुषों की पहचान करना इतना मुश्किल था—उदाहरण के लिए, उस सांवली, कामुक महिला और अब के बूढ़े साधु के बीच—कि उनके इस बदलाव को देखकर अभिनेता की कला की बजाय उस अद्भुत नकलची की कला का ख्याल आता था, जिसका आदर्श फ्रेगोली हैं। वह बूढ़ी औरत रोने ही वाली है क्योंकि वह जानती है कि उसकी वह अनिश्चित और उदास मुस्कान, जो

कभी उसका आकर्षण थी, बुढ़ापे के मुखौटे को भी रोशन नहीं कर सकती। अब, लोगों को खुश करने की कोशिशों से निराश होकर, वह इसे एक नाटकीय मुखौटे की तरह इस्तेमाल करने में और भी माहिर हो गई है, मानो लोगों को हंसाने के लिए। लेकिन लगभग सभी महिलाओं के मामले में, उम्र से लड़ने के उनके प्रयासों की कोई सीमा नहीं थी; उन्होंने अपने चेहरे का आईना उस सुंदरता की ओर रखा, जो डूबते सूरज की तरह गायब हो रही थी, जिसकी आखिरी किरणों को वे दिल से थामे रखना चाहती थीं। कुछ ने चेहरे की सफेदी को और निखारने की कोशिश की, धमकी भरे डिम्पल की तीक्ष्णता को त्याग दिया, एक हताश और निहत्थी मुस्कान के प्रतिरोध को दबा दिया, जबकि अन्य, यह महसूस करते हुए कि उनकी सुंदरता अंततः उनसे दूर हो गई है, अभिव्यक्ति में शरण ली, जैसे कोई आवाज की कमी को शब्द-चयन की कला से पूरा करता है, और एक रूठे हुए होंठ, एक व्यंग्यात्मक मुस्कान, एक विचारशील निगाह, या एक ऐसी मुस्कान को थामे रहे जिसमें मांसपेशियों के तालमेल की कमी रोने का आभास देती थी।

जब ये सारे विचार मेरे मन में उमड़ रहे थे, तभी एक हष्ट-पुष्ट महिला ने मुझे शुभ दोपहर कहा। एक पल के लिए मैं उन्हें जवाब देने में हिचकिचाई, कहीं वह मुझे कोई और न समझ लें। फिर उनके आत्मविश्वास ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि कहीं वह कोई ऐसी महिला तो नहीं थीं जिनसे मेरा कभी घनिष्ठ संबंध रहा हो। मैंने बनावटी मुस्कान बिखेरी, जबकि मेरी निगाहें उनके चेहरे में उस नाम को ढूंढ रही थीं जो मुझे नहीं मिल रहा था। ठीक वैसे ही, मैट्रिक परीक्षा देने वाला एक अनिश्चित उम्मीदवार परीक्षक के चेहरे पर उस उत्तर को खोजता है जिसे अपने स्मृति में खोजना उसके लिए अधिक बुद्धिमानी होती। इसलिए मैं मुस्कुराई और उस हष्ट-पुष्ट महिला के चेहरे को निहारती रही। वे श्रीमती डी फोर्शेविल

जैसी लग रही थीं और मेरी मुस्कान सम्मान से भर गई और मेरी दुविधा दूर होने लगी, तभी एक पल बाद उस हष्ट-पुष्ट महिला ने कहा: "आप मुझे माँ समझ रही थीं, मुझे पता है मैं बिल्कुल उन्हीं की तरह दिखने लगी हूँ," और मैंने गिलबर्ट को पहचान लिया।

इसके अलावा, यहाँ तक कि उन पुरुषों में भी, जिनमें केवल मामूली बदलाव आया था, जिनकी मूंछें ही सफेद हो गई थीं, यह महसूस होता था कि यह बदलाव केवल भौतिक नहीं था। उन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो वे किसी रंगीन धुंध या काँच से देख रहे हों, जिसने उनके चेहरे को धुंधला कर दिया था और जो कुछ वे हमें देखने देते थे, उसे मानो वास्तविक रूप में प्रकट कर दिया था, हालाँकि वास्तविकता में वह बहुत दूर था, स्थान के अर्थ में नहीं, बल्कि मूल रूप से, जैसे किसी दूसरे किनारे पर हों, जहाँ से उन्हें हमें पहचानने में उतनी ही कठिनाई हो रही थी जितनी हमें उन्हें। शायद श्रीमती डी फोर्शेविल, जो मुझे ऐसी लग रही थीं मानो उन्हें पैराफिन का इंजेक्शन लगाया गया हो, जो त्वचा को फुलाता है और उसे लटकने से रोकता है, एक ऐसे पुराने जमाने की वेश्या की तरह दिख रही थीं, जिसे हमेशा के लिए संरक्षित कर दिया गया हो। "तुमने मुझे मेरी माँ समझ लिया," गिल्बर्ट ने कहा था और यह सच था। इस लिहाज से यह बेटी के लिए एक तारीफ़ थी। इसके अलावा, केवल अंतिम नाम वाली महिला में ही नहीं, बल्कि कई अन्य महिलाओं में भी परिचित चेहरे के भाव फिर से उभर आए थे, जो तब तक उनके चेहरे पर बीज के मुड़े हुए हिस्सों की तरह अदृश्य थे, जिनके अंततः खुलने का कभी अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। इस प्रकार, दोनों में से एक की विशाल मातृ अस्थि-भंगिमा पचास वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते एक ऐसी नाक में बदल गई जो तब तक अटल रूप से सीधी थी। एक बैंकर की दूसरी बेटी के मामले में, उसके फूल जैसी ताजगी का रंग पिता द्वारा उदारतापूर्वक

इस्तेमाल किए गए सोने के प्रतिबिंब से तांबे जैसा हो गया था। कुछ तो अंततः उस इलाके से मिलते-जुलते दिखने लगे जहाँ वे रहते थे, उनके चेहरे पर रू डे ल'आर्केड, एवेन्यू डू बोइस या रू डे ल'एलिसी की झलक दिखाई देती थी। लेकिन सबसे बढ़कर, उन्होंने अपने माता-पिता के चेहरे के भावों को हूबहू दोहराया।

हम इस सोच से शुरुआत करते हैं कि लोग हमेशा एक जैसे ही रहते हैं, और फिर पता चलता है कि वे बूढ़े हो गए हैं। लेकिन अगर हम उन्हें पहले से ही बूढ़ा मानकर चलें, तो वे उतने बुरे नहीं लगते। ओडेट के मामले में बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी; जब हमें उनकी उम्र पता थी और हम उन्हें एक बूढ़ी औरत मानते थे, तब उनका रूप कालक्रम के नियमों के लिए रेडियम के संरक्षण से भी कहीं अधिक चमत्कारिक चुनौती जैसा लग रहा था। अगर मैंने उन्हें पहली बार में नहीं पहचाना, तो इसका कारण यह नहीं था कि वे बदल गई थीं, बल्कि यह था कि वे बदली ही नहीं थीं। पिछले एक घंटे में यह महसूस करते हुए कि समय लोगों में कितना बदलाव लाता है और उनके व्यक्तित्व को फिर से जानने के लिए कितना कुछ घटाना पड़ता है, मैंने बूढ़ी ओडेट में बीते हुए वर्षों की संख्या जोड़ दी, और नतीजा यह हुआ कि मेरे सामने एक ऐसी शख्सियत आ गई जो निश्चित रूप से ओडेट नहीं हो सकती थी, क्योंकि वह शख्सियत तो पुराने दिनों की ओडेट ही थी।

कौन सा प्रभाव पेंट का था और कौन सा डाई का? उसके सुनहरे बाल पीछे की ओर इस तरह सँवारे हुए थे जैसे किसी गुड़िया का झुर्रीदार जूड़ा हो, और उसके चेहरे पर गुड़िया जैसी हैरानी का भाव था। उसके ऊपर 1878 की प्रदर्शनी के समय की भूसे से बनी एक सपाट नाविक टोपी थी (जिसमें वह निश्चित रूप से शामिल रही थी और अगर वह तब भी उतनी ही उम्र की होती जितनी अब है, तो वह उस प्रदर्शनी की सबसे आकर्षक

विशेषताओं में से एक होती)। वह ऐसी लग रही थी मानो कोई युवती 1878 की प्रदर्शनी पर आधारित क्रिसमस रिव्यू में कोई भूमिका निभा रही हो।

हमारे पास से, पूर्व-बुलंगिस्ट काल के एक मंत्री, जो दोबारा मंत्री बन चुके थे, गुजरे। वे महिलाओं को दाएं-बाएं झुककर अभिवादन कर रहे थे, उनके चेहरे पर एक कंपकंपी भरी और भावहीन मुस्कान थी, मानो वे अतीत में कैद हों, किसी अदृश्य शक्ति द्वारा नियंत्रित एक छोटे से प्रेत की तरह, जिसने उनका आकार छोटा कर दिया था और उनके स्वरूप को इस तरह बदल दिया था कि वे मानो स्वयं की ही एक पुष्ट प्रतिकृति लग रहे थे। यह पूर्व प्रधानमंत्री, जो अब फाउबर्ग सेंट-जर्मेन द्वारा पोषित थे, कभी आपराधिक कार्यवाही के शिकार थे और समाज और जनता द्वारा तिरस्कृत किए गए थे। लेकिन दोनों समूहों में सामाजिक तत्वों के नवीनीकरण और व्यक्तिगत भावनाओं के विलुप्त होने के कारण, यादें मिट गईं, किसी ने उन्हें याद नहीं किया और उन्हें सम्मानित किया गया। कोई भी अपमान इतना बड़ा नहीं होता कि किसी व्यक्ति का मनोबल तोड़ दे, यदि वह यह ध्यान में रखे कि कुछ वर्षों के अंत में हमारी दबी हुई गलतियाँ अदृश्य धूल बन जाएंगी, जिस पर प्रकृति के फूल शांति से मुस्कुराएंगे। समय के साथ नए और पुराने सामाजिक वर्गों के बीच बने संतुलन के कारण, क्षण भर के लिए संकट में घिरे व्यक्ति आसानी से उन पर अपना अधिकार जमा लेते हैं और उनके आदर और प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं। बस, यह समय का काम है; और अपनी परेशानियों के क्षण में, वह इसलिए दुखी थे क्योंकि सामने बैठी युवा दूधवाली ने भीड़ को उन्हें धोखेबाज कहते और उनके संकट में होने पर उन पर मुट्ठी लहराते हुए सुना था। युवा दूधवाली चीजों को समय के परिप्रेक्ष्य में नहीं देखती और इस बात से अनभिज्ञ है कि जिन पुरुषों को सुबह के अखबार में चापलूसी

की खुशबू मिलती है, वे कल बदनाम थे और जो व्यक्ति अभी-अभी जेल से भागा है, शायद उस युवा दूधवाली के बारे में सोचते हुए, और जिसमें सहानुभूति प्राप्त करने के लिए सुलह के शब्द कहने की विनम्रता नहीं थी, वह एक दिन प्रेस द्वारा महिमामंडित किया जाएगा और डचेस द्वारा चाहा जाएगा। समय पारिवारिक झगड़ों को भी सुलझाता है। प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर में एक दंपति थे, जिनमें से प्रत्येक का एक चाचा था; ये दोनों चाचा केवल द्वंद्वयुद्ध से संतुष्ट नहीं थे, बल्कि उन्होंने एक-दूसरे को अपने प्रतिनिधि के रूप में अपना दरबारी या नौकर भेजा था, ताकि उन्हें यह दिखाकर अपमानित किया जा सके कि वे सज्जनता के योग्य नहीं हैं। ऐसी कहानियाँ तीस साल पहले अखबारों में दबी पड़ी थीं और किसी को इनके बारे में कुछ पता नहीं था। इस प्रकार, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस का कमरा रोशन और विस्मृत, एक शांत कब्रिस्तान की तरह फूलों से भरा हुआ था। वहाँ समय ने न केवल अतीत को मिटा दिया था, बल्कि नए संबंधों को संभव और सृजित भी किया था।

अब वापस हमारे राजनेता की बात करते हैं। उनके शारीरिक स्वरूप में आए बदलाव के बावजूद, जो कि जनता में उनके द्वारा जगाए गए नैतिक परिवर्तन जितना ही पूर्ण था, दूसरे शब्दों में कहें तो, प्रधानमंत्री पद से कई वर्ष बीत जाने के बावजूद, वे फिर से मंत्री बन गए थे। वर्तमान प्रधानमंत्री ने चालीस वर्ष पूर्व वाले प्रधानमंत्री को नए मंत्रिमंडल में पद दिया था, ठीक उसी प्रकार जैसे नाट्य प्रबंधक अपनी किसी पूर्व महिला सहयोगी को कोई भूमिका सौंपते हैं, जो लंबे समय से सेवानिवृत्त हो चुकी हो, लेकिन जिसे वे युवा कलाकारों की तुलना में अधिक कुशलता से निभाने में सक्षम मानते हों, जिसकी दयनीय स्थिति से वे भलीभांति परिचित हों और जो लगभग अस्सी वर्ष की आयु में भी यह दर्शाती हो कि उम्र ने उनकी कलात्मक अखंडता को नगण्य रूप से प्रभावित किया है, जो

उनकी मृत्यु के कुछ ही दिनों के भीतर जनता को चकित कर देती है। श्रीमती डी फोर्शेविल का रूप इतना अद्भुत था कि कोई यह नहीं कह सकता था कि वह जवान हो गई हैं, बल्कि ऐसा लगता था मानो अपने गहरे लाल रंग के साथ वह फिर से खिल उठी हों। 1878 की सार्वभौमिक प्रदर्शनी का साक्षात अवतार होने के साथ-साथ, वह आज किसी बागवानी प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण भी हो सकती थीं। कम से कम मुझे तो ऐसा लगा जैसे वह कह रही हों: "मैं 1878 की प्रदर्शनी हूँ" बल्कि "मैं 1892 की अकासिया की गली हूँ।" मुझे ऐसा लगा मानो वह आज भी उसका हिस्सा हैं। और, क्योंकि उनमें कोई बदलाव नहीं आया था, वह मानो जीवित ही नहीं थीं, एक निर्जलित गुलाब की तरह। जब मैंने उन्हें शुभ दोपहर कहा, तो उन्होंने एक पल के लिए व्यर्थ ही मेरे चेहरे को पहचानने की कोशिश की। मैंने उसे वह दिया और तुरंत ही, उसके जादुई प्रभाव से, उम्र के कारण मुझ पर छाए अर्बूसियर या कंगारू जैसे दिखने वाले भाव गायब हो गए, और वह मुझसे अपनी उस खास आवाज़ में बात करने लगी, जिसे छोटे थिएटरों में खूब सराहा जाता था, और जो लोगों को दोपहर के भोजन पर उससे मिलने पर इतना मोहित कर देती थी कि वे उसके हर शब्द का भरपूर आनंद ले सकते थे। उस आवाज़ में वही व्यर्थ की आत्मीयता, वही हल्का सा अंग्रेज़ी लहजा बरकरार था। फिर भी, जैसे उसकी आँखें किसी दूर किनारे से मुझे देख रही हों, उसकी आवाज़ उदास थी, लगभग ओडिसी के मृतकों की तरह विनती भरी। ओडेट को अभिनय जारी रखना चाहिए था। मैंने उसकी जवानी की तारीफ की। उसने जवाब दिया: "तुम बहुत प्यारे हो, मेरे प्रिय, धन्यवाद।" और चूंकि उसके लिए किसी भी भावना को, चाहे वह कितनी भी सच्ची क्यों न हो, बिना फैशन के प्रति अपनी चिंता दिखाए व्यक्त करना मुश्किल था, इसलिए उसने कई बार दोहराया: "बहुत-बहुत धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद।" और मैं, जो

पहले केवल बोइस में उसकी एक झलक पाने के लिए लंबी यात्राएँ करता था, जो पहली बार उसके घर जाकर उसके होठों से निकले शब्दों को मोतियों की तरह सुनता था, अब उसके साथ बिताए पल मुझे अंतहीन लगते थे; मुझे समझ नहीं आता था कि क्या कहूँ और मैं उसे छोड़कर चला गया। अफसोस, वह हमेशा ऐसी ही नहीं रही। तीन साल से भी कम समय बाद, मैंने उसे गिल्बर्ट द्वारा दी गई एक शाम की पार्टी में देखा, वह दूसरी बार बचपन में तो नहीं जी रही थी, लेकिन कुछ हद तक कमजोर हो चुकी थी, अब वह अपने चेहरे पर नकाब जैसे भावों को छुपा नहीं पा रही थी—सोचना कहना भी बहुत होगा—वह अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रही थी, अपना सिर इधर-उधर हिला रही थी, होंठ सिकोड़ रही थी, अपने कंधों को हर उस भावना पर हिला रही थी जो उसे महसूस हो रही थी, जैसे कोई शराबी आदमी या बच्चा या कुछ ऐसे प्रेरित कवि जो अपने परिवेश से बेखबर, जब वे किसी के साथ या मेज पर होते हैं तो अपनी कविताएँ रचते हैं, और अपनी चकित मेज़बान को चौंकाते हुए, अपनी भौंहें सिकोड़ते हैं और मुँह बनाते हैं। श्रीमती डी फोर्शेविल की भावनाएँ—सिवाय उस एक भावना के जो उन्हें गिल्बर्ट की पार्टी में ले आई थी, अपने प्रिय बच्चे के प्रति कोमलता, इतने शानदार मनोरंजन पर उनका गर्व, एक ऐसा गर्व जो माँ के उस दुख को छुपा नहीं सका कि अब उसकी कोई अहमियत नहीं रही—ये भावनाएँ कभी सुखद नहीं थीं और उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार के खिलाफ उनके निरंतर आत्मरक्षा से प्रेरित थीं, एक बच्चे की डरपोक रक्षा। लोग अक्सर कहते सुनाई देते थे: "मुझे नहीं पता कि श्रीमती डी फोर्शेविल मुझे पहचानती हैं या नहीं, शायद मुझे फिर से परिचय कराना चाहिए।" "आप ऐसा मत कीजिए," (किसी ने ऊँची आवाज़ में उत्तर दिया, यह जाने बिना और परवाह किए बिना कि गिल्बर्ट की माँ हर शब्द सुन सकती है) "आपको इसमें कोई मज़ा नहीं आएगा।

उन्हें अकेला छोड़ दीजिए। वह थोड़ी नासमझ हैं।" चुपके से, श्रीमती... डी फोर्शेविल ने अपनी अभी भी सुंदर आँखों से अपमानजनक वक्ताओं पर एक नज़र डाली, फिर जल्दी से नज़रें हटा लीं, कहीं ऐसा न लगे कि उन्होंने सुन लिया है। इस आघात से झुकते हुए, उन्होंने कांपते सिर और धड़कते सीने से अपने कमजोर गुस्से को नियंत्रित किया और एक अन्य उतने ही निर्दयी अतिथि की ओर देखा। वह बहुत अधिक विचलित भी नहीं लग रही थीं, क्योंकि वह कई दिनों से बीमार थीं और उन्होंने अपनी बेटी को पार्टी स्थगित करने का संकेत दिया था, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया था। श्रीमती डी फोर्शेविल का अपनी बेटी के प्रति प्रेम कम नहीं हुआ था; डचेस की उपस्थिति, नए महल के प्रति कंपनी द्वारा दिखाई गई प्रशंसा ने उनके हृदय को आनंद से भर दिया था, और जब मार्क्विज़ डी सेब्रान की घोषणा हुई, जो बड़ी मेहनत से फैशन के शिखर का प्रतिनिधित्व कर रही थीं, तो श्रीमती डी फोर्शेविल ने महसूस किया कि वह एक अच्छी और दूरदर्शी माँ थीं और उन्होंने अपना मातृत्व कर्तव्य पूरा कर लिया था। तिरस्कारपूर्ण मेहमानों के एक नए समूह ने एक और एकांत वार्तालाप को जन्म दिया, यदि केवल हावभाव द्वारा व्यक्त की जाने वाली मूक भाषा को बातचीत कहा जा सकता है। वह पहले से कहीं अधिक सुंदर हो गई थी, असीम सहानुभूति की पात्र बन गई थी क्योंकि अब पूरी दुनिया ने उसे धोखा दिया था जिसने कभी स्वान और बाकी लोगों को धोखा दिया था; अब जब भूमिकाएँ उलट गई थीं, वह पुरुषों के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए बहुत कमजोर हो गई थी। और जल्द ही वह मौत से भी खुद का बचाव करने में असमर्थ हो जाएगी। उस आशंका के बाद, आइए तीन साल पीछे चलते हैं, प्रिंस डी गुएरमांटेस के यहाँ हुए स्वागत समारोह में।

ब्लोच ने मुझसे घर के मालिक से परिचय कराने के लिए कहा, तो मैंने ज़रा भी आनाकानी नहीं की। प्रिंस डी गुएरमांटेस की शाम की पार्टी में

पहली बार जो शर्मिंदगी मैंने महसूस की थी, वह तब तो स्वाभाविक लग रही थी, लेकिन अब उनके किसी मेहमान का उनसे परिचय कराना उतना ही आसान लग रहा था जितना किसी बिना बुलाए व्यक्ति को उनके घर लाना। क्या ऐसा इसलिए था कि उन पुराने दिनों के बाद से मैं उस समाज का एक करीबी, भले ही लंबे समय से भुला दिया गया करीबी, सदस्य बन गया था, जिसमें मैं कभी अजनबी था? या फिर इसलिए कि दुनियादारी न जानने के कारण, अब मेरी झिझक दूर हो चुकी थी, तो उस तरह की शर्मिंदगी का मेरे लिए कोई महत्व ही नहीं था? या फिर, क्या ऐसा इसलिए था कि इन लोगों ने धीरे-धीरे मेरे सामने अपने पहले, दूसरे और तीसरे दिखावटी रूप को त्याग दिया था और मैंने राजकुमार के तिरस्कारपूर्ण व्यवहार के पीछे लोगों को जानने की, उन लोगों से भी जान-पहचान बनाने की मानवीय इच्छा को महसूस किया, जिन्हें वह तुच्छ समझते थे? अंततः, क्या यह इसलिए था कि राजकुमार भी उन अन्य लोगों की तरह बदल गया था, जो अपनी जवानी और परिपक्वता में अहंकारी थे, लेकिन बुढ़ापे ने उन्हें नरम कर दिया था (खासकर इसलिए कि वे लंबे समय से उन लोगों को जानते थे जिनके पूर्ववर्तियों के विरुद्ध उन्होंने प्रतिक्रिया व्यक्त की थी और जिनके साथ अब वे अपने परिचितों के अच्छे संबंध रखते थे), खासकर यदि बुढ़ापा उन सद्गुणों या अवगुणों से सहायता प्राप्त करता है जो सामाजिक संबंधों को व्यापक बनाते हैं या किसी सामाजिक क्रांति से जो राजकुमार के ड्रेफसवाद में परिवर्तन जैसे राजनीतिक रूपांतरण का कारण बनती है?

ब्लोच ने मुझसे वैसे ही पूछताछ की जैसे मैं समाज में प्रवेश करते समय दूसरों से करता था, और जैसा मैं अब भी करता हूँ, उन लोगों के बारे में जिन्हें मैं पहले सामाजिक रूप से जानता था और जो अब उतने ही दूर, उतने ही अलग-थलग थे, जितने कि वे कॉम्ब्रे के लोग जिन्हें मैं अक्सर

समझने की कोशिश करता था। लेकिन कॉम्ब्रे बाहरी दुनिया से इतना अलग और उससे मेल न खाने वाला था कि वह एक पहेली के टुकड़े की तरह था जिसे फ्रांस के नक्शे में फिट नहीं किया जा सकता था। "तो क्या मैं स्वान या एम. डी चार्लस के बारे में अपने ज्ञान से प्रिंस डी गुएरमांटेस के बारे में कुछ भी नहीं समझ सकता?" ब्लोच ने पूछा। कुछ समय तक मैं उनकी बातों को कहने का तरीका अपनाता था और अब वह अक्सर मेरी नकल करते थे। "बिल्कुल।" "लेकिन वे वास्तव में कैसे भिन्न थे?" "इसे समझने के लिए आपको उन्हें एक साथ बात करते हुए सुनना होगा। अब स्वान मर चुके हैं और एम. डी चार्लस भी जल्द ही गुजर जाएंगे। लेकिन अंतर बहुत बड़ा था।" और जब ब्लोच की आँखें इन अद्भुत लोगों की बातचीत के बारे में सोचकर चमक उठीं, तो मैं सोच रही थी कि मैंने उनकी संगति में अपने आनंद को कुछ ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया है, क्योंकि मुझे कभी ऐसी अनुभूति नहीं हुई थी जब तक मैं अकेली नहीं थी और अपनी कल्पना में उन्हें अलग-अलग नहीं देख पाई थी। क्या ब्लोच को इसका एहसास हुआ? "शायद आपने इसे कुछ ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया है," उन्होंने टिप्पणी की। "हमारी मेज़बान, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस को देखिए, मुझे पता है कि वह अब युवा नहीं हैं, लेकिन फिर भी, अभी कुछ ही समय पहले आपने उनके अतुलनीय आकर्षण और अद्भुत सुंदरता के बारे में बात की थी। मैं मानती हूँ कि उनमें भव्य शिष्टाचार है और उनकी आँखें भी वैसी ही असाधारण हैं जैसा आपने मुझे बताया था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह इतनी अद्भुत हैं। ज़ाहिर है कि वह उच्च कुल की हैं, लेकिन फिर भी..." मुझे ब्लोच को समझाना पड़ा कि हम एक ही व्यक्ति की बात नहीं कर रहे थे। प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की मृत्यु हो चुकी थी और जर्मन पराजय से तबाह राजकुमार ने पूर्व श्रीमती से विवाह कर लिया था। वेरदुरिन, जिसे ब्लोच पहचान नहीं पाया था। "आप गलत

हैं, मैंने इस साल के गोथा के बारे में जानकारी ली है," ब्लोच ने भोलेपन से स्वीकार किया, "और मुझे पता चला कि प्रिंस डी गुएरमांटेस इसी हवेली में रह रहे थे और उन्होंने किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से शादी की थी। एक मिनट रुकिए, अब मुझे याद आया, सिडोनी, डचेस डी ड्यूरास, जिनका जन्म नाम डेस बेउक्स था।" यह सच था, क्योंकि श्रीमती वेरदुरिन ने अपने पति की मृत्यु के कुछ समय बाद ही बूढ़े और बर्बाद हो चुके ड्यूक डी ड्यूरास से शादी कर ली थी, जिससे वह प्रिंस डी गुएरमांटेस की चचेरी बहन बन गईं और शादी के दो साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने श्रीमती वेरदुरिन के लिए एक बहुत ही उपयोगी बदलाव का साधन प्रदान किया था, जिन्होंने तीसरी शादी के बाद प्रिंसेस डी गुएरमांटेस का पद संभाला था और अब फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में एक महत्वपूर्ण पद पर थीं, जिससे कॉम्ब्रे के लोग बहुत आश्चर्यचकित होते, जहाँ रू डे ल'ओइसो की महिलाएं, श्रीमती गौपिल की बेटी और श्रीमती... सज़ेरत की बहू ने, श्रीमती वर्दुरिन के राजकुमारी डी गुएरमांटेस बनने से कई साल पहले, हँसते हुए कहा था: "ड्यूशेस डी ड्यूरास!" मानो श्रीमती वर्दुरिन रंगमंच पर कोई भूमिका निभा रही हों। जातिगत सिद्धांत के अनुसार, उन्हें श्रीमती वर्दुरिन के रूप में ही मरना चाहिए था और यह उपाधि, जो उनकी नज़र में कभी कोई नया सामाजिक सम्मान नहीं दिला सकती थी, केवल उनके बारे में चर्चा का विषय बनने का बुरा प्रभाव डालती थी; यह अभिव्यक्ति, जो सभी सामाजिक वर्गों में एक ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग की जाती है जिसका कोई प्रेमी हो, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में उन लोगों के लिए भी प्रयोग की जाती थी जो पुस्तकें प्रकाशित करते थे और कॉम्ब्रे बुर्जुआ वर्ग में उन लोगों के लिए जो किसी न किसी कारण से अनुपयुक्त विवाह करते थे। जब श्रीमती वर्दुरिन ने राजकुमार डी गुएरमांटेस से विवाह किया, तो उन्होंने कहा होगा कि वह एक पाखंडी गुएरमांटेस, एक धोखेबाज है। मेरे

लिए, यह अहसास कि प्रिंसेस डी गुएरमांटेस अभी भी अस्तित्व में थीं, जिनका उस महिला से कोई संबंध नहीं था जिसने मुझे इतना मोहित किया था और जो अब इस दुनिया में नहीं थीं, जिसे मृत्यु ने बेसहारा छोड़ दिया था, अत्यंत दुखद था, ठीक वैसे ही जैसे प्रिंसेस हेडविज की संपत्ति, जैसे कि उनका महल और अन्य सब कुछ, किसी और के हाथों में जाते देखना। नाम का उत्तराधिकार अन्य उत्तराधिकारों की तरह दुखद होता है और एक तरह का अतिक्रमण प्रतीत होता है; और नई प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की यह निरंतर धारा सहस्राब्दी तक बहती रहेगी, विभिन्न महिलाओं द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी धारण किया जाने वाला नाम हमेशा एक जीवित प्रिंसेस डी गुएरमांटेस का ही रहेगा, एक ऐसा नाम जो मृत्यु को नकारता है, जो परिवर्तन और हृदय पीड़ा से बेपरवाह है और जो इसे धारण करने वालों को समुद्र की तरह अपनी शांत और शाश्वत स्थिरता में समेट लेता है।

लेकिन, उस स्थायित्व के विपरीत, पूर्व के नियमित सदस्यों ने दावा किया कि समाज पूरी तरह बदल गया है, कि अब ऐसे लोगों का स्वागत किया जाता है जो उनके समय में कभी नहीं होते और जैसा कि कहा जाता है, यह "सच भी है और सच नहीं भी"। यह सच नहीं था क्योंकि वे समय के चक्र को ध्यान में नहीं रख रहे थे, जिसका परिणाम यह है कि वर्तमान पीढ़ी नए लोगों को उनके आगमन के बिंदु पर देखती है जबकि पिछली पीढ़ी उन्हें उनके प्रस्थान के बिंदु पर देखती थी। और जब बाद वाली पीढ़ी समाज में प्रवेश करती है, तो कुछ नए लोग आते हैं जिनके प्रस्थान के बिंदु को दूसरे लोग याद रखते हैं। एक पीढ़ी बदलाव लाती है जबकि कोलबर्ट जैसे बुर्जुआ नाम को कुलीन बनने में सदियाँ लग जाती हैं। दूसरी ओर, यह सच भी था, क्योंकि यदि लोगों की सामाजिक स्थिति बदलती है, तो सबसे अमिट विचार और रीति-रिवाज (साथ ही भाग्य, विवाह और

राष्ट्रीय घृणा) भी बदल जाते हैं, जिनमें केवल फैशनेबल लोगों के साथ मेलजोल रखने का विचार भी शामिल है। न केवल दिखावटीपन अपना रूप बदलता है बल्कि यह युद्ध की तरह भुलाया जा सकता है और कट्टरपंथी और यहूदी जॉकी क्लब में शामिल हो सकते हैं।

निश्चित रूप से, जिन चेहरों को मैं जानता था, उनमें आया बाहरी बदलाव भी दिन-प्रतिदिन हो रहे आंतरिक परिवर्तन का ही प्रतीक था। शायद ये लोग हर दिन वही काम करते रहे, लेकिन इन चीजों और अपने संपर्क में आने वाले लोगों के बारे में उनकी सोच, जिनमें जीवन की थोड़ी सी झलक थी, कुछ वर्षों बाद इस रूप में सामने आई कि वही चीजें और लोग एक ही नाम से अलग दिखने लगे, और यह अजीब होता अगर इन लोगों के चेहरे न बदले होते।

यदि इन बीस वर्षों की अवधि में, गुटों के समूह ध्वस्त होकर नए सितारों के अनुरूप पुनर्निर्मित हुए थे, जो स्वयं लुप्त होने और फिर से प्रकट होने के लिए नियत थे, तो लोगों की आत्माओं में क्रिस्टलीकरण और विक्षेपण के बाद नए क्रिस्टलीकरण हुए थे। यदि डचेस डी गुएरमांटेस मेरे लिए अनेक व्यक्ति थीं, तो फलां-फलां व्यक्ति ड्रेफस कांड से पहले के काल में श्रीमती डी गुएरमांटेस या श्रीमती स्वान का पसंदीदा रहा होगा, और बाद में कट्टरपंथी या मूर्ख बन गया होगा क्योंकि ड्रेफस कांड ने उनके सामाजिक मूल्यों को बदल दिया था और लोगों को उन दलों के इर्द-गिर्द पुनर्गठित किया था जो तब से विघटित और पुनर्निर्मित हो चुके हैं। समय विशुद्ध रूप से बौद्धिक संबंधों में अपना प्रभाव जोड़कर हमें शक्तिशाली रूप से प्रभावित करता है; यह समय का बीत जाना ही है जो हमें अपनी घृणा, अपनी अवमानना और उन कारणों को भुला देता है जिन्होंने उन्हें जन्म दिया था। यदि किसी ने पहले युवा श्रीमती की फैशनेबल सुंदरता का विश्लेषण किया होता... लियोनोर डी कैम्ब्रेमर को यह पता चल जाता कि

वह हमारे आंगन के दुकानदार, यानी जुपियन की भतीजी थी, और उसकी प्रतिष्ठा में विशेष रूप से यह बात जुड़ गई थी कि उसके पिता एम. डी चार्लस के लिए नौकर-चाकर मुहैया कराते थे। फिर भी, इन सबने मिलकर एक असाधारण चमक पैदा कर दी थी, जिसके दूरगामी कारण समाज में नए आए अधिकांश लोगों को अज्ञात थे और जो लोग इनसे परिचित थे वे इन्हें भूल चुके थे और आज की चमक को कल की बदनामी से कहीं अधिक महत्व देते थे, क्योंकि हम हमेशा किसी भी नाम को उसके वर्तमान मूल्य के अनुसार ही आंकते हैं। इसलिए इन सामाजिक परिवर्तनों की रुचि इस बात में थी कि वे भी बीते समय का परिणाम और स्मृति की एक घटना थे।

उपस्थित लोगों में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति भी मौजूद था, जिसने हाल ही में एक कुख्यात मुकदमे में गवाही दी थी, जिसका महत्व उसकी उच्च नैतिक सत्यनिष्ठा पर निर्भर था। इसी सत्यनिष्ठा के सम्मान में न्यायाधीश और वकील ने सर्वसम्मति से सिर झुकाया था और दो लोगों को दोषी ठहराया गया था। उसके प्रवेश करते ही सभी में रुचि और सम्मान का भाव फैल गया। वह मोरेल था। शायद मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो जानता था कि उसे पहले एम. डी चार्लस ने, फिर सेंट-लूप ने और साथ ही सेंट-लूप के एक मित्र ने अपने यहाँ रखा था। हमारी साझा यादों के बावजूद, उसने मुझे सौहार्दपूर्वक, हालांकि कुछ संकोच के साथ, शुभ दिन की शुभकामनाएं दीं। उसने बालबेक में हमारी मुलाकात के समय को याद किया और वे यादें उसके लिए यौवन की सुंदरता और उदासी का प्रतीक थीं।

लेकिन कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें मैं पहचान नहीं पाया क्योंकि मैं उन्हें जानता नहीं था। समय ने समाज की संरचना पर अपना प्रभाव डाला था, ठीक वैसे ही जैसे लोगों पर। वह परिवेश, जिसकी विशिष्ट प्रकृति यूरोप के

महान शाही नामों को आकर्षित करने वाले संबंधों और गैर-कुलीन वर्ग के किसी भी तत्व को उससे अलग करने वाले विकर्षण से परिभाषित थी, जहाँ मैंने गुएरमांटेस नाम के लिए एक भौतिक शरण पाई थी, जिसे उसने अपनी अंतिम वास्तविकता प्रदान की थी, स्वयं उस मूल संरचना में एक गहरा परिवर्तन देख चुका था जिसे मैं स्थिर मानता था। जिन लोगों को मैंने बिल्कुल अलग सामाजिक समूहों में देखा था और जो मुझे लगता था कि इस समूह में कभी प्रवेश नहीं कर सकते, उनकी उपस्थिति ने मुझे उस घनिष्ठ आत्मीयता से कम आश्चर्यचकित किया जिसके साथ उनका स्वागत किया गया और उन्हें उनके पहले नामों से पुकारा गया; अभिजात वर्ग के पूर्वाग्रहों और अभिमान का एक निश्चित समूह, जो हाल तक स्वचालित रूप से गुएरमांटेस नाम को हर उस चीज़ से बचाता था जो उससे मेल नहीं खाती थी, अब काम करना बंद कर चुका था।

कुछ प्रतिष्ठित विदेशी, जिन्होंने मेरे समाज में प्रवेश करने के समय भव्य भोज आयोजित किए थे, जिनमें वे केवल प्रिंसेस डी गुएरमांटेस, डचेस डी गुएरमांटेस और प्रिंसेस डी पार्म को आमंत्रित करते थे, और जब वे उन महिलाओं के घरों में जाते थे तो उन्हें विशेष स्थान दिया जाता था, और उस समय के समाज में उन्हें सबसे प्रतिष्ठित माना जाता था, जो शायद वे थे भी, अब बिना कोई निशान छोड़े गायब हो गए थे। क्या वे किसी राजनयिक मिशन पर थे या घर पर ही रह रहे थे? शायद किसी घोटाले, आत्महत्या, क्रांति ने उन्हें समाज में लौटने से रोक दिया हो या शायद वे जर्मन थे? खैर, उनका नाम केवल उनकी पूर्व प्रतिष्ठा से ही गौरवान्वित होता था और अब किसी के पास नहीं था: लोग यह भी नहीं जानते थे कि मैं किन लोगों की बात कर रहा हूँ और अगर मैं उनके नाम बताने की कोशिश करता तो वे उन्हें "रास्ताक्वाएर्स" समझते थे।

पुराने सामाजिक नियमों के अनुसार, जिन लोगों को वहाँ नहीं होना चाहिए

था, उनके सबसे अच्छे दोस्त, मेरे लिए अत्यंत आश्चर्य की बात थी, अत्यंत उच्च कुल के लोग थे जो केवल अपने नए परिचितों के कारण ही प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर आए थे। इस नए समाज की सबसे बड़ी विशेषता वर्ग भेदों को मिटाने की उसकी अद्भुत क्षमता थी।

एक मशीन के तनावग्रस्त स्प्रिंग मुड़ गए थे या टूट गए थे और काम करना बंद कर चुके थे। हजारों अजनबी शरीर उसमें घुस गए थे, उसकी समरूपता, उसकी विशिष्टता, उसका रंग छीन लिया था। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन, एक बूढ़ी डचेस की तरह, अपने ड्राइंग रूम में घुसने वाले, उसका ऑरेंज जूस पीने वाले और अपनी रखेलों को उससे मिलवाने वाले उद्दंड नौकरों को दबी मुस्कान से जवाब देता था। एक बार फिर मुझे समय के बीत जाने का, मेरे लुप्त अतीत के एक हिस्से के मिट जाने का एहसास हुआ। यह एहसास मुझे इस सुसंगत एकता (जो गुएरमांटेस का सैलून था) के विनाश से उतना जीवंत नहीं लगा, जितना कि उन तत्वों की उपस्थिति, पुनरावृत्ति और समन्वय को हजारों अर्थों, हजारों कारणों से समझाया जा सकता था, जितना कि इस तथ्य से कि उन अर्थों और बारीकियों की चेतना, जिसके कारण उपस्थित व्यक्ति वहाँ इसलिए था क्योंकि वह वहाँ का था, क्योंकि वह वहाँ अधिकार से था, जबकि दूसरा जो उसे धक्का दे रहा था वह एक संदिग्ध नवागंतुक था, स्वयं नष्ट हो गई थी। वह अज्ञानता केवल सामाजिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और हर प्रकार की थी। व्यक्तियों की स्मृति उनके जीवनकाल के साथ मेल नहीं खाती, और जो युवा अपने बड़ों के अनुभवों से वंचित थे, अब समाज के सदस्य बनकर, कुलीनता के लिहाज़ से पूरी तरह से सक्षम हैं। कुछ लोगों की शुरुआत अज्ञात या भुला दी गई है, और वे उन्हें वहीं ले जाते हैं जहाँ वे उन्हें पाते हैं, उनके उत्थान या पतन के बिंदु पर, यह मानते हुए कि यह हमेशा से ऐसा ही था, कि प्रिंसेस डी गुएरमांटेस और ब्लोच हमेशा सर्वोच्च

पद पर रहे थे और क्लेमेंसो और विवियानी हमेशा से कंजर्वेटिव थे। और, जैसा कि कुछ तथ्यों का ऐतिहासिक काल दूसरों की तुलना में अधिक होता है, ड्रेफस कांड की घृणित स्मृति उनके मन में उनके पिता द्वारा बताई गई बातों के कारण धुंधली सी बनी रही, और यदि उन्हें बताया जाता कि क्लेमेंसो ड्रेफस समर्थक थे, तो वे जवाब देते: "यह संभव नहीं है; आप गलती कर रहे हैं, वह दूसरी तरफ थे।" संदिग्ध अतीत वाले मंत्रियों और पूर्व वेश्याओं को सद्गुणों का प्रतीक माना जाता था। किसी ने एक अच्छे परिवार के युवक से पूछा कि क्या गिल्बर्ट की माँ के अतीत में कुछ अस्पष्टता तो नहीं थी, तो उस युवा कुलीन ने उत्तर दिया कि वास्तव में, उनकी माँ ने अपने जीवन के शुरुआती दौर में स्वान नामक एक साहसी व्यक्ति से शादी की थी, लेकिन बाद में उन्होंने समाज के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक, कॉम्टे डी फोर्शेविल से विवाह किया। निःसंदेह उस ड्राइंग रूम में मौजूद कुछ लोग, उदाहरण के लिए डचेस डी गुएरमांटेस, इस कथन पर मुस्कुराए होंगे (स्वान की सामाजिक योग्यताओं से इनकार करना मुझे हास्यास्पद लगा, हालाँकि पहले कॉम्ब्रे में रहते हुए मैं अपनी परदादी की तरह यह मानती थी कि स्वान राजकुमारियों को जान ही नहीं सकता था), और ऐसा ही अन्य महिलाएं भी मुस्कुराई होंगी जो वहाँ मौजूद थीं, लेकिन जो अब शायद ही कभी समाज में जाती थीं, जैसे डचेस डी मोंटमोरेंसी, डी मौची, डी सागन, जो स्वान की घनिष्ठ मित्र थीं, हालाँकि उन्होंने फोर्शेविल को कभी नहीं देखा था, जो उनके समाज में आने-जाने के दौरान अज्ञात थे। लेकिन समाज, जैसा कि वह पहले था, केवल उन चेहरों की तरह मौजूद था जो बदल चुके थे और सुनहरे बाल जो अब सफेद हो चुके थे, उन लोगों की यादों में जिनकी संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही थी। युद्ध के दौरान ब्लोच ने घूमना-फिरना और अपने पुराने ठिकानों पर जाना छोड़ दिया, जहाँ उनकी छवि अच्छी नहीं थी। दूसरी

ओर, उन्होंने रचनाएँ प्रकाशित करना जारी रखा, जिनकी कुतर्कशीलता को मैंने जानबूझकर अस्वीकार किया, ताकि मैं उससे बहक न जाऊँ, लेकिन फिर भी, समाज के युवा पुरुषों और महिलाओं को उनकी असाधारण बौद्धिक गहराई, यहाँ तक कि एक प्रकार की प्रतिभा का आभास हुआ। अपने पूर्व और वर्तमान सांसारिकता से पूरी तरह से अलग होने के बाद ही उन्होंने अपने जीवन के एक नए चरण में प्रवेश किया और एक पुनर्निर्मित समाज में एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में उभरे। युवा पुरुष, निश्चित रूप से, समाज में उनकी शुरुआती पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ थे और उन्हें जो कुछ नाम याद थे, वे सेंट-लूप के पूर्व मित्रों के थे, जिससे उनकी वर्तमान प्रतिष्ठा को एक प्रकार की पूर्वव्यापी और अस्पष्ट लचीलापन प्राप्त हुआ। किसी भी मामले में, वे उन्हें उन प्रतिभाशाली पुरुषों में से एक लगते थे जो हर दौर में अच्छे समाज में फले-फूले हैं और किसी ने नहीं सोचा था कि वे कभी इसके विपरीत थे।

प्रिंस डी गुएरमांटेस से बात खत्म करने के बाद, ब्लोच ने मुझे अपने साथ ले लिया और एक युवती से मिलवाया जिसने डचेस डी गुएरमांटेस को मेरे बारे में अक्सर बात करते सुना था। जहाँ नई पीढ़ी के लोग डचेस डी गुएरमांटेस को इसलिए खास नहीं मानते थे क्योंकि वह अभिनेत्रियों और अन्य लोगों को जानती थीं, वहीं उनके परिवार की बुजुर्ग महिलाएं उन्हें हमेशा असाधारण मानती थीं। इसका एक कारण यह था कि वे उनके उच्च कुल और शाही परिवार की प्रतिष्ठा से परिचित थीं और उनके उन लोगों से घनिष्ठ संबंध थे जिन्हें मैडम डी फोर्शेविल अपनी बनावटी अंग्रेजी में "राजपरिवार" कहती थीं। इसके अलावा, वह पारिवारिक पार्टियों में जाना पसंद नहीं करती थीं, उनसे बेहद ऊब जाती थीं और वे जानती थीं कि उन पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता। उनके नाट्य और राजनीतिक संबंध, जिन्हें पूरी तरह से गलत समझा गया था, ने उनकी

नज़रों में उनकी अहमियत और इसलिए उनकी प्रतिष्ठा को और बढ़ा दिया। इसलिए, जहाँ एक ओर राजनीतिक और कलात्मक क्षेत्रों में वह कुछ हद तक एक अवर्णनीय व्यक्तित्व थीं, मानो फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की एक ऐसी चहेती हों जो राज्य के उप-सचिवों और नाट्य सितारों के साथ घूमती हों, वहीं फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में अगर कोई भव्य पार्टी देता था, तो लोग कहते थे: "क्या मैरी सोस्थेन्स को आमंत्रित करने का कोई फायदा है? वह नहीं आएंगी। फिर भी, दिखावे के लिए—लेकिन वह नहीं आएंगी।" और अगर देर शाम को मैरी सोस्थेन्स एक शानदार पोशाक में दिखाई देतीं और अपने सभी रिश्तेदारों के प्रति कठोर तिरस्कार भरी नज़र से दरवाजे पर खड़ी हो जातीं, अगर वह शायद एक घंटे के लिए भी रुकतीं, तो पार्टी देने वाली महिला के लिए वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पार्टी होती थी, ठीक उसी तरह जैसे शुरुआती दिनों में सारा बर्नहार्ड ने एक नाट्य प्रबंधक को अपनी सहायता का वादा किया था, जिस पर उसने भरोसा नहीं किया, और न केवल आया बल्कि असीम आज्ञाकारिता और सरलता के साथ एक के बजाय बीस प्रस्तुतियाँ दीं। मैरी सोस्थेन्स की उपस्थिति, जिनसे मंत्री लोग तिरस्कारपूर्ण ढंग से बात करते थे, हालांकि वे फिर भी उनमें से अधिकाधिक लोगों से मेलजोल बढ़ाती रहीं (यही तो दुनिया का रिवाज है), ने उस शाम की पार्टी को, जिसमें केवल सबसे विशिष्ट महिलाएं ही शामिल थीं, उस "सीज़न" (जैसा कि श्रीमती डी फोर्शेविल ने कहा होगा) में अन्य सभी विधवा डचेस द्वारा दी गई पार्टियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ बना दिया, जिनमें मैरी सोस्थेन्स, जो उस समय की सबसे फैशनेबल महिलाओं में से एक थीं, ने उपस्थित होने की जहमत तक नहीं उठाई थी। जिस युवती से ब्लोच ने मेरा परिचय कराया था, उसका नाम मुझे बिल्कुल भी ज्ञात नहीं था और विभिन्न गुएरमांटे परिवार के सदस्यों के नाम शायद उसे भी अच्छी तरह से ज्ञात नहीं थे, क्योंकि

उसने एक अमेरिकी महिला से पूछा कि श्रीमती डी सेंट-लूप रिसेप्शन में उपस्थित सबसे प्रतिष्ठित लोगों के साथ इतनी घनिष्ठ कैसे हो गईं। यह अमेरिकी महिला कॉम्टे डी फुर्सी की पत्नी थी, जो फोर्शेविल परिवार का एक गुमनाम रिश्तेदार था और उसके लिए समाज की हर उस चीज का प्रतीक था जो सबसे शानदार थी। तो उसने सहज भाव से उत्तर दिया: "यह केवल इसलिए है क्योंकि वह फोर्शेविल परिवार में पैदा हुई थी, इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता।" हालाँकि श्रीमती डी फुर्सी भोलेपन से फोर्शेविल नाम को सेंट-लूप से श्रेष्ठ मानती थीं, कम से कम वह जानती थीं कि सेंट-लूप कौन था। लेकिन ब्लोच और डचेस डी गुएरमांटेस की यह आकर्षक सहेली इस बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ थी और कुछ हद तक हैरान भी थी, जब एक युवा लड़की ने उससे पूछा कि श्रीमती... डी सेंट-लूप उनके मेज़बान, प्रिंस डी गुएरमांटेस से संबंधित थे, उसने सद्भावना से उत्तर दिया: "फोर्चेविल्स के माध्यम से", यह जानकारी उस युवती ने मानो उसे सब कुछ पता हो, अपनी एक सहेली को दी, जो गुस्सैल और उत्तेजित स्वभाव की थी, और जब एक सज्जन ने उसे बताया कि गिलबर्टे फोर्चेविल्स के माध्यम से गुएरमांटेस परिवार से संबंधित नहीं थी, तो वह मुर्गे की तरह लाल हो गई। जबकि वह यह सोचकर कि उसने गलती की है, उसकी बात मान ली और उसे फैलाने में ज़रा भी संकोच नहीं किया। इस अमेरिकी महिला के लिए, डिनर पार्टियाँ और सामाजिक समारोह एक तरह से बर्लिट्ज़ स्कूल थे। वह बिना किसी अर्थ की जानकारी के सुने हुए नामों को दोहराती थी। कोई किसी को समझा रहा था कि गिलबर्टे को टैनसनविले अपने पिता, एम. डी फोर्चेविल से विरासत में नहीं मिला था, बल्कि यह उसके पति की पारिवारिक संपत्ति थी, जो गुएरमांटेस की जागीर के पास थी और मूल रूप से श्रीमती के कब्जे में थी। डी मार्सेंट्स की संपत्ति, भारी गिरवी रखे जाने के कारण, गिलबर्ट ने शादी के दहेज के

रूप में वापस खरीद ली थी। अंत में, पुराने विचारों वाले एक सज्जन ने स्वान के सागन और मौची परिवारों के मित्र होने की बात याद करते हुए, ब्लोच के अमेरिकी मित्र से पूछा कि मैं स्वान को कैसे जानता हूँ, तो ब्लोच ने उन्हें बताया कि मैं उनसे श्रीमती डी गुएरमांटेस के यहाँ मिला था, उन्हें यह जानकारी नहीं थी कि मैं उन्हें देश में हमारे पड़ोसी होने के कारण और मेरे दादाजी के बचपन में उनके परिचित होने के कारण जानता था। ऐसी गलतियाँ, जिन्हें सभी रूढ़िवादी समाजों में गंभीर माना जाता है, सबसे प्रसिद्ध पुरुषों द्वारा भी की गई हैं। सेंट-साइमन, यह साबित करने के लिए कि लुई XIV की अज्ञानता इतनी अधिक थी कि "इसके कारण वह कभी-कभी सार्वजनिक रूप से सबसे बड़ी बेतुकी हरकतें कर बैठते थे", इसके केवल दो उदाहरण देते हैं; पहला यह कि राजा को यह जानकारी नहीं थी कि रेनेल क्लेरमोंट-गैलेरंडे परिवार से और सेंट-हेरेम मोंटमोरिन परिवार से संबंधित थे, इसलिए उन्होंने उनके साथ कोई सम्मान नहीं दिखाया। जहां तक सेंट-हेरेम का सवाल है, हमें यह जानकर तसल्ली मिलती है कि राजा की मृत्यु किसी गलती के कारण नहीं हुई थी, क्योंकि एम. डे ला रोशेफौकॉल्ड ने "बहुत बाद में" उनकी गलती सुधार दी थी। सेंट-साइमन कुछ दया भाव से कहते हैं, "इसके अलावा, उन्हें (राजा को) यह समझाना पड़ा कि वे कौन से परिवार थे जिनका नाम उन्हें कुछ भी नहीं बताता था।" विस्मृति जो हाल के अतीत को इतनी जल्दी दफन कर देती है, और सामान्य अज्ञानता, प्रतिक्रियात्मक रूप से इस तथ्य को जन्म देती है कि लोगों की वंशावली, उनकी वास्तविक सामाजिक स्थिति, और यह कि कोई विवाह प्रेम के लिए था, धन के लिए था या किसी अन्य कारण से, कुछ दुर्लभ ज्ञान को ही विद्वत्ता मान लिया जाता है; यह ज्ञान उन समाजों में बहुत महत्व रखता है जहां रूढ़िवादी सोच हावी होती है, और मेरे दादाजी को कॉम्ब्रे और पेरिस के बुर्जुआ वर्ग के बारे में यह ज्ञान

भरपूर मात्रा में प्राप्त था। सेंट-साइमन इस ज्ञान को इतना महत्व देते थे कि राजकुमार डी कोंटी की असाधारण बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करते हुए, विज्ञान का उल्लेख करने से पहले ही, या यूँ कहें कि मानो विज्ञान ही सबसे महत्वपूर्ण विषय हो, उन्होंने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके पास "एक अत्यंत सुंदर, प्रकाशमान, न्यायप्रिय, सटीक, व्यापक, असीम रूप से समृद्ध, ज्ञान से भरपूर बुद्धि थी, जो कुछ भी नहीं भूलती थी, जो वंशावली, उसके भ्रमों और वास्तविकताओं से परिचित थी, विशिष्ट शिष्टाचार से परिपूर्ण थी, पद और योग्यता का सम्मान करती थी, और हर तरह से यह दर्शाती थी कि कुलीन राजकुमारों को कैसा होना चाहिए और वे अब कैसे नहीं हैं। उन्होंने उनके सत्ता हथियाने के बारे में भी विस्तार से बताया और ऐतिहासिक साहित्य और वार्तालापों के माध्यम से, उनके जन्म और व्यवसाय में क्या प्रशंसनीय था, इसका आकलन करने के साधन प्राप्त किए।" कम प्रतिभाशाली ढंग से, लेकिन उतनी ही सटीकता के साथ, मेरे दादाजी कॉम्ब्रे और पेरिस के बुर्जुआ वर्ग के बारे में सब कुछ जानते थे और उसका उतना ही आनंद लेते थे। उस तरह के शौकीन जो जानते थे कि गिल्बर्ट न तो फोर्शेविल थे और न ही श्रीमती... डी कैम्ब्रेमर मेसेग्लिस और सबसे छोटे वैलेंटोनाइस की संख्या कम नहीं थी। संख्या कम थी, और शायद वे उच्च कुलीन वर्ग से भी नहीं थे (यह ज़रूरी नहीं कि धर्मनिष्ठ या कैथोलिक ही स्वर्णिम कथा या तेरहवीं शताब्दी की रंगीन खिड़कियों के बारे में सबसे अधिक जानकार हों), बल्कि अक्सर एक द्वितीयक कुलीन वर्ग बनाते थे, जो उस विषय में अधिक रुचि रखते थे जिससे उनका शायद ही कोई संपर्क होता था और इसी कारण उनके पास अध्ययन के लिए अधिक समय होता था। उनके सदस्य संतुष्टिपूर्वक मिलते और एक-दूसरे से परिचित होते थे, स्वादिष्ट भोजों का आनंद लेते थे जिनमें वंशावली पर चर्चा होती थी, ठीक वैसे ही जैसे पुस्तक प्रेमियों

का समाज या रीम्स के मित्र समूह में होती है। महिलाओं को ऐसी सभाओं में आमंत्रित नहीं किया जाता था, लेकिन जब पति घर लौटते थे, तो वे अपनी पत्नियों से कहते थे: "मैं एक बहुत ही रोचक रात्रिभोज में गया था; एम. डी ला रास्पेलियर वहाँ थे और उन्होंने हमें यह समझाकर मंत्रमुग्ध कर दिया कि सुंदर पुत्री वाली श्रीमती डी सेंट-लूप का जन्म फोर्शेविल में हुआ ही नहीं था। यह एक सच्ची प्रेम कहानी है।"

ब्लोच और डचेस डी गुएरमांटेस की मित्र वह युवती न केवल सुरुचिपूर्ण और आकर्षक थी, बल्कि बुद्धिमान भी थी और उससे बातचीत सुखद थी, लेकिन मेरे लिए यह एक मुश्किल विषय था क्योंकि न केवल प्रश्नकर्ता का नाम मेरे लिए नया था, बल्कि उन कई लोगों के नाम भी मेरे लिए अपरिचित थे जिनका उसने उल्लेख किया था और जो अब स्पष्ट रूप से समाज का आधार बन चुके थे। दूसरी ओर, यह एक तथ्य था कि, उसकी इच्छा के अनुसार कि मैं उसे कुछ बातें बताऊं, मैंने कई ऐसे लोगों का उल्लेख किया जिनका उसके लिए कोई महत्व नहीं था; वे तो मानो विस्मृति में खो गए थे, जो केवल अपने व्यक्तित्व की चमक से जगमगाते थे और किसी प्रसिद्ध कुलीन परिवार की तरह प्रतिष्ठित नहीं थे, जिसका सटीक नाम वह युवती शायद ही जानती थी। वह उन लोगों के जन्म के बारे में गलत धारणाएँ बना रही थी जिनके नाम उसने पिछली शाम एक रात्रिभोज में सुने थे, और अधिकतर मामलों में उसने उन्हें पहले कभी नहीं सुना था, क्योंकि वह मेरे समाज छोड़ने के कुछ वर्षों बाद ही समाज में प्रवेश करने लगी थी (आंशिक रूप से इसलिए कि वह अभी भी युवा थी, लेकिन इसलिए भी कि वह फ्रांस में थोड़े समय से ही रह रही थी और लोगों को तुरंत नहीं जान पाई थी)। इसलिए, यदि हमारे पास नामों की एक समान शब्दावली थी, तो जिन व्यक्तियों को हम उन नामों से जोड़ते थे वे अलग-अलग थे। मुझे नहीं पता कि श्रीमती लेरोई का नाम मेरे मुँह से

कैसे निकला, लेकिन संयोग से, मेरी प्रश्नकर्ता ने इसे श्रीमती डी गुएरमांटेस की किसी पुरानी सहेली से सुना था जो उनसे मेल-मिलाप कर रही थी। लेकिन जैसा होना चाहिए था वैसा नहीं हुआ, जैसा कि उस घमंडी युवती के तिरस्कारपूर्ण उत्तर से स्पष्ट था: "ओह! मैं जानती हूँ कि श्रीमती लेरोई कौन हैं! वह बर्गोट की पुरानी दोस्त थीं," उनके लहजे से यह आभास होता था कि "एक ऐसी व्यक्ति जिसे मैं अपने घर में नहीं चाहूँगी।" मैं जानती थी कि श्रीमती डी गुएरमांटेस की पुरानी दोस्त, जो गुएरमांटेस परिवार की भावना से ओतप्रोत एक पूर्ण समाजसेवी थीं, जिनकी एक विशेषता यह थी कि वे कुलीन वर्ग के साथ मेलजोल को महत्व नहीं देती थीं, इतनी असभ्य और गुएरमांटेस विरोधी नहीं थीं कि वे कहतीं: "श्रीमती लेरोई जो सभी महामहिमों और डचेस को जानती थीं" बल्कि उन्होंने उन्हें "एक मनोरंजक महिला" बताया था। "एक दिन उन्होंने बर्गोट से ऐसा-ऐसा कहा था।" लेकिन जो लोग इन मामलों के बारे में कुछ नहीं जानते, उनके लिए इस तरह की बातचीत की जानकारी वैसी ही है जैसी प्रेस जनता को देती है, जो अपने अखबार के अनुसार, या तो एम. लुबेट या एम. रीनाच को लुटेरा या सम्मानित नागरिक मानती है। मेरी युवा प्रश्नकर्ता की दृष्टि में, श्रीमती लेरोई अपने प्रारंभिक काल में एक प्रकार की श्रीमती वर्दुरिन थीं, लेकिन कम प्रतिष्ठा वाली और उनका छोटा सा परिवार बर्गोटे तक ही सीमित था। संयोगवश, यह युवती उन अंतिम लोगों में से थी जिन्हें श्रीमती लेरोई का नाम सुनने की संभावना थी। आज उनके बारे में कोई कुछ नहीं जानता, जो वास्तव में ठीक ही है। उनका नाम श्रीमती डी विलेपारिसिस के मरणोपरांत संस्मरणों की सूची में भी नहीं है, हालांकि श्रीमती लेरोई उनके मन में हमेशा बसी रहीं। मार्क्विज़ ने श्रीमती लेरोई का उल्लेख इसलिए नहीं छोड़ा क्योंकि वह अपने जीवनकाल में उनके प्रति विशेष रूप से मित्रवत नहीं थीं, बल्कि इसलिए

कि न तो श्रीमती लेरोई का जीवन और न ही उनकी मृत्यु में उनकी कोई रुचि थी, इसलिए मार्क्विज़ की चुप्पी सामाजिक नाराजगी से अधिक साहित्यिक सूझबूझ से प्रेरित थी। ब्लोच की होशियार युवा मित्र के साथ मेरी बातचीत सुखद रही, लेकिन हमारी दो अलग-अलग शब्दावलियों के कारण वह असहज हो गईं, हालांकि यह मेरे लिए ज्ञानवर्धक रही। हम जानते हैं कि वर्ष बीतते हैं, बुढ़ापा जवानी को जगह देता है, सबसे मजबूत दौलत और सिंहासन भी लुप्त हो जाते हैं, प्रसिद्धि क्षणभंगुर होती है, फिर भी इस ज्ञान को स्वयं के प्रति सचेत करने और समय के साथ घूमते इस ब्रह्मांड की छाप को अपनी मानसिक दृष्टि पर स्वीकार करने का हमारा तरीका स्थिर है। इसलिए हम हमेशा उन्हें जवान ही देखते हैं जिन्हें हमने जवानी में देखा था और जिन्हें हमने बूढ़े के रूप में देखा था, उन्हें हम बुढ़ापे के गुणों से सजाते हैं, और हम बिना किसी संकोच के एक करोड़पति की साख और एक राजा की सुरक्षा पर भरोसा करते हैं, भले ही हमारा विवेक हमें बताता हो कि कल दोनों ही शक्तिहीन हो सकते हैं। समाज के सीमित दायरे में, एक सरल समस्या की तरह जो उसी क्रम की एक जटिल समस्या की ओर ले जाती है, इस युवती के साथ मेरी बातचीत में उत्पन्न अस्पष्टता, जो पच्चीस वर्षों के अंतराल पर एक ही समाज में रहने के कारण उत्पन्न हुई, ने मुझे इतिहास के महत्व से अवगत कराया और संभवतः इसके प्रति मेरी अपनी समझ को मजबूत किया। सच्चाई यह है कि वास्तविक स्थिति की यह अज्ञानता, जो हर दस साल में नवनिर्वाचितों को इस कदर प्रेरित करती है कि वे मानो अतीत को कभी न कभी महसूस करते ही नहीं थे, जो एक नए अमेरिकी को यह जानने से रोकती है कि एम. डी चार्लस उस समय पेरिस में सर्वोच्च सामाजिक पद पर थे जब ब्लोच का कोई पद नहीं था, और स्वान, जिसने एम. बोंटेम्प्स के लिए काम किया, वेल्स के राजकुमार का घनिष्ठ मित्र था, यह अज्ञानता न

केवल नए आने वालों में बल्कि आस-पास के समाजों में भी मौजूद है, और अंतिम नाम वाले के मामले में, जैसा कि अन्य के मामले में है, यह समय का भी एक प्रभाव है (जो अब सामाजिक वक्र के बजाय व्यक्ति पर पड़ता है)। निःसंदेह हम अपना परिवेश और जीवन शैली बदल सकते हैं, लेकिन हमारी स्मृति, हमारे समान व्यक्तित्व के धागे को थामे हुए, क्रमिक अवधियों में, उन समाजों की स्मृतियों से जुड़ जाती है जिनमें हम चालीस साल पहले रहते थे। प्रिंस डी गुएरमांटेस के यहाँ ब्लोच को वह विनम्र यहूदी वातावरण पूरी तरह से याद था जिसमें वह अठारह वर्ष की आयु में रहे थे, और स्वान को, जब वह अब श्रीमती से प्रेम नहीं करते थे। स्वान, जो कोलंबिन के रेस्तरां में चाय परोसने वाली एक महिला थी (जिसे कुछ समय के लिए मैडम स्वान फैशन का हिस्सा मानती थीं, जैसे कि वह थे डे ला रुए रॉयल को मानती थीं), अपने सामाजिक रुतबे को भली-भांति जानती थीं, क्योंकि उन्हें ट्विकेनहैम याद था और वे यह भी जानती थीं कि वे डचेस डी ब्रोगली के रेस्तरां के बजाय कोलंबिन के रेस्तरां जाना क्यों पसंद करती थीं। वे यह भी अच्छी तरह जानती थीं कि अगर वे हज़ार गुना कम "शानदार" भी होतीं, तो भी उन्हें कोलंबिन या होटल रिट्ज़ जाने से कोई नहीं रोक पाता, क्योंकि वहाँ कोई भी जा सकता है जो पैसे देता है। निःसंदेह ब्लोच या स्वान के दोस्तों को भी उस गुमनाम यहूदी समाज और ट्विकेनहैम के निमंत्रण याद थे, और इस प्रकार स्वान और ब्लोच के दोस्तों ने, उनके धुंधले स्वरूपों की तरह, अपनी स्मृति में आज के सुरुचिपूर्ण ब्लोच को पहले के घिनौने ब्लोच से या बुढ़ापे में कोलंबिन के रेस्तरां जाने वाले स्वान को बकिंघम पैलेस के स्वान से अलग नहीं किया। लेकिन, असल जिंदगी में, वे दोस्त कुछ हद तक स्वान के पड़ोसी थे; उनका जीवन उनके जीवन के इतने करीब बीता था कि उनकी यादों में स्वान की छवि समाई हुई थी; जबकि स्वान से दूर रहने वाले अन्य लोगों

के मामले में, जो सामाजिक रूप से तो नहीं, लेकिन घनिष्ठता से उनसे दूर थे, जिन्होंने उन्हें कम ही जाना था और जिनसे उनकी मुलाकातें कम ही हुई थीं, उनकी असंख्य यादों ने उनके व्यक्तित्व के बारे में सतही धारणाएँ बना दी थीं। और, ऐसे अजनबी, तीस साल बाद, किसी व्यक्ति के अतीत के बारे में इतनी सटीक जानकारी नहीं रख पाते कि वर्तमान में उनके लिए वह व्यक्ति कैसा दिखता है, उसे बदल सकें। मैंने समाज में लोगों को स्वान के अंतिम वर्षों के बारे में यह कहते सुना था, मानो यही उनकी प्रसिद्धि का कारण हो: "क्या आप उस स्वान की बात कर रहे हैं जो कोलंबिन के यहाँ जाता है?" अब, मैंने उन लोगों को सुना जिन्हें बेहतर जानकारी होनी चाहिए थी, ब्लोच का जिक्र करते हुए, "क्या आपका मतलब गुएरमांटेस ब्लोच से है, जो गुएरमांटेस का घनिष्ठ मित्र था?" ये गलतियाँ, जो जीवन को दो भागों में बाँट देती हैं और उसे वर्तमान में अलग-थलग कर देती हैं, एक दूसरे व्यक्ति का निर्माण करती हैं, बीते कल की रचना, एक ऐसा व्यक्ति जो केवल अपनी वर्तमान आदतों का सार है (जबकि उसके भीतर वह निरंतरता है जो उसे उसके अतीत से जोड़ती है)। ये गलतियाँ भी समय का परिणाम हैं, लेकिन ये कोई सामाजिक घटना नहीं हैं, ये स्मृति की घटना हैं। उसी क्षण एक बिल्कुल अलग तरह का उदाहरण सामने आया, यह सच है, लेकिन इसी कारण से यह और भी अधिक प्रभावशाली था, उन विस्मृतियों का जो लोगों के बारे में हमारी धारणा को बदल देती हैं। श्रीमती डी गुएरमांटेस के युवा भतीजे, मार्क्विस डी विलेमांडोइस ने पहले मेरे प्रति लगातार अभद्रता दिखाई थी, जिसके कारण मैंने प्रतिशोध की भावना से उनके प्रति इतना आक्रामक रवैया अपनाया कि हम मौन रूप से शत्रु बन गए थे। प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ दोपहर की पार्टी में जब मैं समय के बारे में सोच रहा था, तभी उन्होंने मुझसे परिचय कराने की इच्छा जताई और फिर बताया कि उन्हें

लगा था कि मैं उनके माता-पिता को जानता हूँ, उन्होंने मेरे कुछ लेख पढ़े हैं और मुझसे जान-पहचान बनाना या फिर से बनाना चाहते हैं। यह सच है कि बढ़ती उम्र के साथ, कई बड़े और घमंडी लोगों की तरह, उनका अहंकार कम हो गया था और इसके अलावा, मेरे द्वारा लिखे गए लेखों (वैसे तो मामूली महत्व के) के कारण उनके समूह में मेरी चर्चा हो रही थी। लेकिन उनकी सौहार्दपूर्णता और आगे बढ़ने के ये कारण मात्र गौण थे। मुख्य कारण, या कम से कम वह कारण जिसने अन्य कारणों को जन्म दिया, यह था कि या तो उनकी याददाश्त मुझसे कमजोर थी या वे मेरे जवाबों को उतना महत्व नहीं देते थे जितना मैं उनके हमलों को देता था, क्योंकि उनकी नजरों में मैं उनसे कम महत्वपूर्ण था, इसलिए वे हमारी दुश्मनी को पूरी तरह से भूल गए थे। ज़्यादा से ज़्यादा, मेरा नाम सुनकर उसे याद आया कि उसने मुझे या मेरे किसी रिश्तेदार को अपनी किसी चाची के घर पर देखा था। उसे ठीक से याद नहीं था कि वह मुझसे पहले मिला था या नहीं, इसलिए वह तुरंत अपनी चाची के बारे में बात करने लगा, जिसके घर पर उसे लगा कि वह मुझसे मिला होगा। उसे याद था कि उसने वहाँ मेरे बारे में अक्सर सुना था, लेकिन उसे हमारी लड़ाई याद नहीं थी। अक्सर किसी व्यक्ति की याद में उसका नाम ही रह जाता है, न केवल उसकी मृत्यु के बाद, बल्कि उसके जीवित रहते हुए भी। और उसके बारे में हमारी यादें इतनी धुंधली और अजीब होती हैं, अतीत की वास्तविकता से इतनी कम मेल खाती हैं कि भले ही हम यह पूरी तरह भूल जाते हैं कि हम लगभग उससे द्वंद्वयुद्ध करने वाले थे, हमें याद रहता है कि जब वह बच्चा था, तो उसने चैंप्स एलिसीज़ में अजीब दिखने वाले पीले रंग के गैटर पहने थे, जिसके बारे में, भले ही हम उसे याद दिलाते रहें, उसे कुछ याद नहीं है। ब्लोच एक लकड़बग्घे की तरह उछलता हुआ अंदर आया। मैंने सोचा, "वह एक ऐसे ड्राइंग रूम में आ रहा है जिसमें वह

बीस साल पहले कभी नहीं घुस सकता था।" लेकिन वह बीस साल बड़ा भी हो गया था और मौत के करीब था, इससे उसे क्या फायदा होगा? उसे गौर से देखने पर, मैंने उसके चेहरे पर, जिस पर अब रोशनी पड़ रही थी, एक बूढ़े शाइलॉक का लगभग डरावना चेहरा देखा, जो दूर से और कम रोशनी में देखने पर जवानी की उमंग लिए हुए लग रहा था, चाहे वह उमंग सचमुच उसमें बची हो या मैंने उसे महसूस किया हो। मंच पर आने के पल का बेसब्री से इंतज़ार करते हुए, अपनी पहली पंक्तियाँ गुनगुनाते हुए, वह पर्दे के पीछे खड़ा था। दस साल बाद वह इन ड्राइंग रूमों में भारी कालीनों पर पैर घसीटते हुए लंगड़ाता हुआ आएगा, आखिरकार एक उस्ताद बनकर, और ला ट्रेमोइल्स जाने से ऊबकर मर जाएगा। इससे उसे क्या फायदा होगा?

इन सामाजिक परिवर्तनों से मैं उन महत्वपूर्ण सच्चाइयों को बेहतर ढंग से उजागर कर सका जो मेरे काम के एक हिस्से में एकीकरण कारक के रूप में काम कर सकें, और यह कि ये परिवर्तन, जैसा कि मुझे शुरू में लगा था, हमारे समय की विशेषता नहीं थे। जिस समय मैं मुश्किल से गुएरमांटेस के समूह में प्रवेश कर रहा था, मैं आज के ब्लोच से भी अधिक नवागंतुक था, और मैंने उस समय ऐसे मानवीय तत्वों को देखा होगा जो, हालांकि उसमें एकीकृत थे, फिर भी उससे पूरी तरह से अपरिचित थे। ये नए एकत्रित तत्व पुराने समूह के लिए अजीब तरह से नए प्रतीत हुए होंगे, जिनसे मैं उन्हें अलग नहीं कर पाया। ड्यूक मानते थे कि ये लोग हमेशा से फाउबर्ग के सदस्य रहे हैं, और वे या तो स्वयं नवधनी थे, या यदि नहीं, तो उनके पिता या दादा थे। इसलिए, उस समाज को प्रतिभाशाली बनाने वाली बात उसके सदस्यों का गुण नहीं था, बल्कि लोगों को लगभग पूरी तरह से आत्मसात करने की उसकी क्षमता थी, जो पचास साल बाद भी उतने ही अच्छे प्रतीत होंगे जितने कि आज उसके सदस्य हैं। अतीत में

भी, जिसके साथ मैंने गुएरमांटेस नाम को पूर्ण सम्मान देने के लिए जोड़ा था, और इसके पीछे उचित कारण भी था, क्योंकि लुई XIV के शासनकाल में अर्ध-शाही गुएरमांटेस आज की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ थे, वह घटना जिसका मैंने अध्ययन किया था, उतनी ही स्पष्ट थी। उदाहरण के लिए, क्या उन्होंने उस समय कोलबर्ट परिवार के साथ विवाह संबंध नहीं बनाए थे, जिसे आज उच्च कोटि का माना जाता है, क्योंकि रोशेफौकॉल्ड कोलबर्ट को एक अच्छा जीवनसाथी मानते हैं। लेकिन गुएरमांटेस ने कोलबर्ट परिवार के साथ इसलिए गठबंधन नहीं किया था कि कोलबर्ट परिवार, जो उस समय साधारण बुर्जुआ थे, कुलीन थे, बल्कि वे खुद गुएरमांटेस परिवार में विवाह करके कुलीन बन गए थे। यदि उस परिवार के वर्तमान प्रतिनिधि की मृत्यु के साथ हौसनविले का नाम मिट जाता है, तो संभवतः उन्हें यह विशिष्टता श्रीमती के वंशज होने से प्राप्त होगी। डी स्टेल के मामले में, क्रांति से पहले, राज्य के प्रमुख सज्जनों में से एक, एम. डी'हॉसनविले ने एम. डी ब्रोगली के प्रति अपने अहंकार को संतुष्ट करते हुए, एम. डी स्टेल के पिता को जानने की जहमत तक नहीं उठाई और उन्हें एम. डी ब्रोगली से मिलवाने में भी कोई संकोच नहीं किया, ठीक वैसे ही जैसे एम. डी ब्रोगली ने एम. डी'हॉसनविले से नहीं करवाया होता। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उनका अपना बेटा, उनके मित्र के बेटे, कोरिन की लेखिका की पोती से शादी करेगा। डचेस डी गुएरमांटेस के मुझसे बात करने के तरीके से मुझे एहसास हुआ कि मैं समाज में एक ऐसे साधारण, फैशनेबल व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान बना सकता था, जिसे हमेशा से कुलीन वर्ग का माना जाता रहा हो, जैसे स्वान पहले के दिनों में और उनके बाद एम. लेब्रून और एम. एम्पेयर, ये सभी डचेस डी ब्रोगली के मित्र थे, जो स्वयं शुरुआत में, एक तरह से, उच्च समाज में नहीं थीं। पहली बार जब मैंने श्रीमती के यहाँ

भोजन किया था... डी गुएरमांटेस के बारे में सोचते हुए, मैं एम. डी ब्यूसरफ्यूइल जैसे लोगों को कितनी बार चौंकाता रहा होगा, अपनी उपस्थिति से कम, बल्कि उन टिप्पणियों से ज़्यादा जिनसे पता चलता था कि मैं उनके अतीत से जुड़े संबंधों से पूरी तरह अनभिज्ञ था और जिनसे उनके सामाजिक अनुभव का स्वरूप बनता था। बुढ़ापे में भी ब्लोच गुएरमांटेस के सैलून की यादों को संजो कर रखते होंगे, क्योंकि अब वह उन्हें इतना पुराना लगता होगा कि कुछ दखलअंदाजी और अज्ञानता पर उन्हें भी एम. डी ब्यूसरफ्यूइल जैसी ही हैरानी और नाराजगी महसूस होती होगी। इसके अलावा, उन्होंने अपने आसपास के लोगों में चतुराई और विवेक के गुण विकसित किए होंगे और बांटे होंगे, जिन्हें मैं एम. डी नॉरपोइस जैसे लोगों का विशेष गुण मानता था और जो उन लोगों में पाए जाते हैं जिनमें हमें इनकी कमी दिखती है। साथ ही, गुएरमांटेस के समूह में शामिल होना मेरे लिए एक अपवाद था। लेकिन जब मैं अपने आप से और अपने तात्कालिक परिवेश से दूर हुआ, तो मैंने पाया कि यह सामाजिक घटना उतनी अलग-थलग नहीं थी जितनी पहली नज़र में लग रही थी, और जिस कॉम्ब्रे बेसिन में मेरा जन्म हुआ था, वहाँ से कई जलधाराएँ, मेरी ही तरह, उस जलकुंड से ऊपर उठ उठी थीं जो उनका स्रोत था। बेशक, परिस्थितियाँ और व्यक्तिगत स्वभाव हमेशा इसमें भूमिका निभाते हैं, और लेग्रैंडिन (अपने भतीजे के विचित्र विवाह के माध्यम से) ने इस परिवेश में अलग-अलग तरीकों से प्रवेश किया था, ओडेट की बेटी इससे संबंधित हो गई थी, स्वान और अंत में मैं स्वयं भी इसमें शामिल हो गया था। अपने जीवन में सिमटे हुए, इसे भीतर से देखने वाले मेरे लिए, लेग्रैंडिन का तरीका मेरे लिए अप्रासंगिक प्रतीत हुआ और किसी और दिशा में जाता हुआ दिखाई दिया, ठीक उसी तरह जैसे कोई गहरी घाटी से बहती नदी के प्रवाह का अनुसरण करता है तो उसे यह नहीं

दिखता कि घुमावों के बावजूद, यह एक ही धारा है। लेकिन, एक सांख्यिकीविद् के व्यापक दृष्टिकोण से, जो भावनाओं और व्यक्ति की मृत्यु के कारणों को अनदेखा करते हुए केवल एक वर्ष में मरने वाले लोगों की संख्या गिनता है, यह देखा जा सकता है कि कई लोग उसी परिवेश से शुरुआत करते हैं जिससे इस वृत्तांत की शुरुआत हुई है, और एक बिल्कुल अलग परिवेश में पहुँच जाते हैं। यह संभव है कि, जिस प्रकार प्रत्येक वर्ष औसतन विवाह होते हैं, उसी प्रकार किसी भी समृद्ध और परिष्कृत बुर्जुआ परिवेश में स्वान, लेग्रैंडिन, मेरे और ब्लोच जैसे लगभग समान अनुपात में लोग होते, जिन्हें "समाज" के सागर में पुनः खोजा जाता। इसके अलावा, वे पहचानने योग्य हैं, क्योंकि यदि युवा कॉम्टे डी कैम्ब्रेमर ने अपनी शालीनता, विशिष्टता और आधुनिकता से समाज को प्रभावित किया, तो मैंने उनके गुणों में, उनकी सुंदरता और प्रबल महत्वाकांक्षा में, उनके चाचा लेग्रैंडिन के लक्षण देखे, जो मेरे माता-पिता के एक पुराने और बहुत ही बुर्जुआ मित्र थे, हालांकि उनका आचरण अभिजात्य था।

दयालुता, जो कि परिपक्वता का ही दूसरा नाम है, ब्लोच की तुलना में कहीं अधिक कठोर स्वभाव वाले लोगों को भी मधुर बना देती है, और न्याय की भावना की तरह ही व्यापक है, जो अगर हम सही हों तो हमें किसी पक्षपाती न्यायाधीश से उतना ही कम डरने पर मजबूर करती है जितना कि किसी मित्र से। और ब्लोच के पोते-पोतियां जन्म से ही सुसंस्कृत और विवेकशील होंगे। शायद ब्लोच अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचे थे। लेकिन मैंने गौर किया कि जो व्यक्ति पहले किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए दो घंटे की रेल यात्रा करने को विवश बताता था जो उससे मिलना भी नहीं चाहता था, अब जब उसे न केवल दोपहर के भोजन और रात के खाने के लिए बल्कि यहाँ-वहाँ दो सप्ताह बिताने के

लिए भी कई निमंत्रण मिलते हैं, तो वह उनमें से कई को बिना कुछ कहे या डींग मारे ठुकरा देता है। उम्र और सामाजिक स्थिति के साथ उसमें कर्म और वाणी दोनों में विवेक आ गया था, एक प्रकार का सामाजिक बुढ़ापा, ऐसा कहा जा सकता है। निस्संदेह ब्लोच पहले उतने ही अविवेकी थे जितने कि दयालुता और मित्रतापूर्ण सेवा करने में असमर्थ। लेकिन सामाजिक दृष्टि से कुछ दोष और कुछ गुण किसी एक व्यक्ति से उतने संबंधित नहीं होते जितना कि उसके जीवन के किसी विशेष काल से। ये उन व्यक्तियों के लिए लगभग बाह्य होते हैं जो अपने प्रकाश के प्रक्षेपण से गुजरते हैं, जैसे कि विभिन्न संक्रांतियों में जो पूर्व-अस्तित्व वाली, सार्वभौमिक और अपरिहार्य हैं। जो चिकित्सक यह पता लगाना चाहते हैं कि किसी विशेष दवा ने पेट की अम्लता को कम किया है या बढ़ाया है, क्या यह उसके स्रावों को तेज करती है या धीमा करती है, उन्हें जो परिणाम प्राप्त होते हैं, वे उस पेट के स्रावों के अनुसार भिन्न नहीं होते जिनसे उन्होंने थोड़ा सा गैस्ट्रिक रस निकाला है, बल्कि दवा की क्रिया के माध्यम से प्रारंभिक या बाद के चरण में प्रकट होने वाले प्रभावों के अनुसार भिन्न होते हैं।

* * *

इस प्रकार, अपने अस्तित्व के प्रत्येक क्षण में, गुएरमांटेस का नाम, जिसे अपने भीतर और अपने आसपास के सभी नामों की एकता के रूप में माना जाता है, कुछ बिखराव से गुजरा, नए तत्वों को शामिल किया, ठीक वैसे ही जैसे बगीचों में जहां फूल अभी-अभी कलियों में हैं और मुरझाए हुए फूलों की जगह लेने वाले हैं, वे उस समूह से अविभाज्य हैं जो उन लोगों को छोड़कर सभी को एक जैसा प्रतीत होता है जिन्होंने नए आने वालों को नहीं देखा है और अपने मन में उन लोगों की सटीक छवि बनाए रखी है जो गायब हो गए हैं।

आज दोपहर की पार्टी में एकत्रित हुए या इसकी यादों में बसे कई लोगों ने मुझे उन विभिन्न परिस्थितियों में उसके क्रमिक स्वरूपों के बारे में बताया। वह व्यक्ति मेरे सामने फिर से उसी रूप में प्रकट हुआ जैसा वह पहले था, और ऐसा करते हुए, उसने मेरे अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया, जैसे किसी ग्रामीण इलाके में अलग-अलग परिप्रेक्ष्य, जहाँ एक पहाड़ी या महल कभी दाईं ओर, कभी बाईं ओर दिखाई देता है, किसी जंगल पर हावी होता है या किसी घाटी से निकलता है, इस प्रकार यात्री को उस रास्ते में दिशा और ऊँचाई में होने वाले परिवर्तनों की याद दिलाता है जिस पर वह चल रहा है। जैसे-जैसे मैं पीछे की ओर जाता गया, मुझे अंततः उसी व्यक्ति की तस्वीरें मिलीं, जो इतने लंबे अंतरालों से अलग थीं, इतनी अलग-अलग व्यक्तित्वों द्वारा प्रस्तुत की गई थीं, इतने अलग-अलग अर्थों के साथ कि, आमतौर पर, जब मुझे लगता था कि मेरा उनसे संपर्क हो गया है, तो मैं उन्हें अपनी स्मृति से हटा देता था, और अक्सर यह मानना बंद कर देता था कि वे वही लोग हैं जिन्हें मैं पहले जानता था। मुझे उन्हें, व्युत्पत्ति की तरह, उनके मूल अर्थ से जोड़ने के लिए संयोगवश प्रकाश की आवश्यकता थी। मैडम। स्वान झाड़ी के दूसरी तरफ से मेरी ओर कुछ कांटेदार गुलाब फेंक रहा था, उसकी नज़रें ऐसी थीं जिन्हें मैंने बाद में वासना का भाव समझा; कॉम्ब्रे की गपशप के अनुसार, श्रीमती स्वान का प्रेमी, उसी झाड़ी के पीछे से मुझे घूर रहा था, उसकी नज़रें भी वैसी नहीं थीं जैसा मैंने उस समय समझा था और जो तब से पूरी तरह बदल चुका था जब मैं उसे बालबेक में कैसिनो के पास एक नोटिस देख रहे सज्जन के रूप में पहचानने में असफल रहा था, और जिसके बारे में मैं हर दस साल में एक बार सोचता था, और खुद से कहता था: "वह एम. डी चार्लस थे, कितना अजीब!", डॉ. परसेपीड की शादी में श्रीमती डी गुएरमांटेस, मेरे परदादा की शादी में गुलाबी रंग की पोशाक में

श्रीमती स्वान, श्रीमती... लेग्रैंडिन की बहन डी कैम्ब्रेमर, जो इतनी बुद्धिमान थीं कि उन्हें डर था कि कहीं हम उनसे हमारा परिचय न करवा लें, और स्वान, सेंट-लूप आदि की कई और तस्वीरें, जिन्हें याद करके मैं कभी-कभी इन अलग-अलग लोगों से अपने संबंधों की शुरुआत में मुखपृष्ठ की तरह इस्तेमाल करना पसंद करता था, लेकिन वास्तव में वे मुझे मात्र कल्पनाएँ लगती थीं, न कि उस व्यक्ति की छाप जिससे अब मेरा कोई संबंध नहीं था। यह केवल इतना ही नहीं है कि कुछ लोगों में याद रखने की शक्ति होती है और दूसरों में नहीं (तुर्की राजदूतों की तरह स्थायी विस्मृति की स्थिति में रहने के बिना), जिसके कारण बाद वाले हमेशा जगह बना लेते हैं—एक सप्ताह में नई घटना गायब हो जाती है या अगले सप्ताह उसे मिटा दिया जाता है—और फिर पिछली घटना का खंडन करने वाली नई खबर सामने आ जाती है। भले ही याददाश्त बराबर हो, दो व्यक्ति एक ही बात को याद नहीं रखते। एक व्यक्ति शायद ही किसी ऐसे कार्य पर ध्यान देगा जिसके लिए दूसरा व्यक्ति गहरा पश्चाताप महसूस करेगा, जबकि वह दूसरे द्वारा लगभग अनजाने में कहे गए शब्द को सद्भावना के विशेष संकेत के रूप में पकड़ लेगा। पूर्वाग्रह में गलत न होने की भावना से प्रेरित स्वार्थ हमें उस पूर्वाग्रह को याद रखने की अवधि सीमित कर देता है और हमें यह विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करता है कि हमने कभी ऐसा पूर्वाग्रह नहीं किया। अंततः, एक गहरा और निस्वार्थ हित स्मृतियों को इतनी गहराई से विश्लेषित कर देता है कि एक कवि, जो लगभग सभी तथ्यों को भूल चुका है, फिर भी उनकी एक धुंधली सी छाप शेष रह जाती है। इन सब के परिणामस्वरूप, बीस वर्षों की अनुपस्थिति के बाद, अपेक्षित आक्रोश के स्थान पर अनैच्छिक और अवचेतन क्षमा प्राप्त होती है, और दूसरी ओर, ऐसी घृणाएँ उत्पन्न होती हैं जिनका कारण स्पष्ट नहीं किया जा सकता (क्योंकि व्यक्ति अपने द्वारा

बनाई गई बुरी छाप को भूल चुका होता है)। व्यक्ति तिथियों को उसी प्रकार भूल जाता है जैसे वह उन लोगों के इतिहास को भूल जाता है जिन्हें वह सबसे अच्छी तरह जानता है। और चूंकि श्रीमती डी गुएरमांटेस द्वारा ब्लोच को पहली बार देखे हुए बीस वर्ष बीत चुके थे, इसलिए वह कसम खाकर कहतीं कि वह उनके समूह में पैदा हुआ था और दो वर्ष की आयु में डचेस डी चार्ट्रेस द्वारा पाला-पोसा गया था।

अपने जीवनकाल में ये लोग कितनी बार मेरी दृष्टि में लौटे, जिनकी भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ अलग-अलग रूपों और उद्देश्यों के लिए एक जैसी विशेषताएँ प्रस्तुत करती प्रतीत होती थीं; और मेरे अपने जीवन की विविधता, उन मोड़ों पर जहाँ इन सभी जिंदगियों का ताना-बाना बुना गया था, उन जिंदगियों से मिलकर बनी थी जो मुझसे सबसे दूर प्रतीत होती थीं, मानो जीवन ने अपने विविध उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सीमित संख्या में ही धागे दिए हों। उदाहरण के लिए, मेरे विभिन्न अतीत में मेरे चाचा एडोल्फ़ से मिलने जाना, मार्शल की चचेरी बहन श्रीमती डी विलेपारिसिस के भतीजे से मिलना, लेग्रैंडिन और उसकी बहन से मिलना, और हमारे घर के आंगन में फ्रांकोइस के दोस्त, पूर्व जैकेट बनाने वाले से मिलना, इन सबसे अधिक अलग क्या था? और अब ये सभी अलग-अलग सूत्र आपस में जुड़कर यहाँ सेंट-लूप परिवार का ताना-बाना बुन रहे थे, वहाँ युवा कैम्ब्रेमर्स का, और मोरेल तथा कई अन्य लोगों का भी, जिनके मेल से ऐसी सघन परिस्थितियाँ बन गई थीं कि ऐसा लगता था मानो वे एक ऐसी एकता का निर्माण कर रहे हों जिसमें पात्र मात्र अंश मात्र हों। और मेरा जीवन इतना लंबा हो चुका था कि मैंने अपनी स्मृति के परस्पर विरोधी क्षेत्रों में एक से अधिक मामलों में एक दूसरे को पूरा करने वाला अस्तित्व पा लिया था। एल्स्टिर, जिसकी प्रसिद्धि अब सुनिश्चित हो चुकी थी, उसमें मैं वर्दुरिन्स, कॉटार्ड्स की अपनी शुरुआती यादें, रिवेबेल

रेस्तरां में उस सुबह की बातचीत जब मैं पहली बार अल्बर्टीन से मिला था, और कई अन्य लोगों की यादें जोड़ सकता था। इसी प्रकार, एक संग्राहक जिसे वेदी के पर्दे का एक हिस्सा दिखाया जाता है, उसे वह गिरजाघर, संग्रहालय या निजी संग्रह याद आ जाता है जिसमें बाकी हिस्से बिखरे हुए हैं (जैसे कि बिक्री सूची देखकर या प्राचीन वस्तुओं के डीलरों के बीच खोज करके, वह अंततः अपने पास मौजूद वस्तु का जुड़वां हिस्सा खोज लेता है जो उन्हें एक जोड़ी बना देता है और इस प्रकार वह मानसिक रूप से पर्दे और पूरी वेदी को पुनः स्थापित कर सकता है)। जैसे चरखे से कुएं में डाली या खींची गई बाल्टी समय-समय पर रस्सी या किनारों को छूती है, वैसे ही मेरे जीवन में शायद ही कोई व्यक्ति या घटना ऐसी रही हो जिसने कभी न कभी अलग-अलग भूमिकाएँ न निभाई हों। यदि वर्षों बाद मैं अपनी स्मृति में सबसे सरल सामाजिक संबंध या किसी भौतिक वस्तु को पुनः खोज पाता हूँ, तो मुझे यह अहसास होता है कि जीवन लगातार उसके चारों ओर धागे बुनता रहा है जो अंततः एक प्राचीन उद्यान में जल-नाली के पन्ना आवरण की तरह एक सुंदर मखमली आवरण बन जाता है।

ये लोग न केवल देखने में, बल्कि अपने आप में भी स्वप्न-सम्भावों जैसे थे; उनकी जवानी और प्रेम उनके लिए एक सपने जैसे बन गए थे। वे अपने सारे मनमुताव और नफरत भुला चुके थे, और यह पक्का करने के लिए कि यह वही व्यक्ति है जिससे उन्होंने दस साल से बात नहीं की थी, उन्हें एक ऐसे प्रमाण की आवश्यकता होती जो उस सपने की तरह अस्पष्ट होता जिसमें किसी अनजान व्यक्ति ने उनका अपमान किया हो। ऐसे सपने ही राजनीतिक जीवन के उन विरोधाभासों को दर्शाते हैं जहाँ कभी एक-दूसरे पर हत्या और राजद्रोह का आरोप लगाने वाले लोग आज एक ही सरकार के सदस्य हैं। और प्रेम-प्रसंग के बाद के दिनों में बूढ़े लोगों के

लिए सपने मृत्यु की तरह धुंधले हो जाते हैं। ऐसे दिनों में किसी को भी राष्ट्रपति से कोई प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं थी; वे सब कुछ भूल चुके थे। कुछ दिनों के आराम के बाद, सार्वजनिक मामलों की यादें उन्हें अचानक, जैसे किसी सपने में, लौट आईं। कभी-कभी मेरे मन में केवल एक ही छवि नहीं उभरती थी, बल्कि उस व्यक्ति की छवि भी उभरती थी जिसे मैं बाद में इतना अलग पाया। उन्हीं वर्षों के दौरान जब बर्गोट मुझे एक प्यारे, दिव्य बूढ़े व्यक्ति लगते थे, मैं स्वान की धूसर टोपी और उनकी पत्नी के बैंगनी लबादे को देखकर स्तब्ध रह जाता था, डचेस डी गुएरमांटेस के चारों ओर फैली नस्ल की चकाचौंध से, यहाँ तक कि ड्राइंग रूम में भी, मानो मैं भूतों को घूर रहा हूँ; लगभग काल्पनिक उत्पत्ति वाले रिश्ते जो बाद में इतने सामान्य हो गए कि ये मनमोहक मिथक अतीत में धूमकेतु की चमकती पूंछ द्वारा आकाश में प्रक्षेपित चमक के साथ फैल गए। और यहाँ तक कि श्रीमती डी सौव्रे के साथ मेरे जैसे रिश्ते, जो रहस्य में शुरू नहीं हुए थे, जो आज इतने कठोर और सांसारिक हैं, अपनी शुरुआत में एक मुस्कान में प्रकट हुए, शांत, कोमल और चापलूसी से भरी मुस्कान, समुद्र के किनारे एक दोपहर की पूर्णता में, पेरिस में एक वसंत शाम में, शानदार गाड़ियों, धूल के बादलों और पानी की तरह बहती धूप के बीच व्यक्त की गई। और शायद श्रीमती... डी सौव्रे का कोई महत्व नहीं होता अगर उन्हें उन स्मारकों की तरह उनके ढांचे से अलग कर दिया जाता - उदाहरण के लिए सैल्यूट - जो अपनी किसी महान सुंदरता के बिना भी अपने स्थान के लिए इतने परिपूर्ण हैं, और उन्हें स्मृतियों के एक संग्रह में अपना स्थान दिया जाता जिसे मैंने एक निश्चित मूल्य पर आंका, एक दूसरे के साथ लेते हुए, श्रीमती डी सौव्रे के व्यक्तित्व के विशेष मूल्य में बहुत गहराई से जाए बिना।

जिन लोगों में शारीरिक और सामाजिक परिवर्तन आए थे, उनके बारे में

एक बात जिसने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, वह थी एक-दूसरे के प्रति उनकी अलग-अलग धारणाएँ। पुराने समय में लेग्रैंडिन ब्लोच से घृणा करते थे और उनसे कभी बात नहीं करते थे; अब वे उनके प्रति अत्यंत सौहार्दपूर्ण थे। इसका कारण ब्लोच की अधिक प्रमुख स्थिति बिल्कुल नहीं थी, जो इस मामले में नगण्य थी, क्योंकि सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक रूप से उन लोगों की स्थिति में भी परिवर्तन लाते हैं जो उनसे प्रभावित होते हैं। नहीं। बात यह थी कि लोग, यानी वे लोग जिन्हें हम देखते हैं, जब हम उन्हें पीछे मुड़कर देखते हैं तो एक समान छवि नहीं बनाए रखते। वे हमारी विस्मृति के साथ विकसित होते हैं। कभी-कभी तो हम उन्हें दूसरों के साथ भ्रमित करने तक चले जाते हैं। "ब्लोच, वह आदमी जो कॉम्ब्रे से आया था," और जब उन्होंने ब्लोच कहा, तो उनका मतलब मुझसे था। इसके विपरीत, श्रीमती सज़ेरत को विश्वास था कि फिलिप द्वितीय पर ऐतिहासिक शोध प्रबंध मैंने लिखा है, जबकि वह ब्लोच द्वारा लिखा गया था। इन बदलावों के अलावा, हम अपने साथ हुए बुरे बर्ताव, उनकी अप्रियता को भूल जाते हैं, हम यह भूल जाते हैं कि पिछली बार हम बिना हाथ मिलाए अलग हुए थे, और इसके विपरीत, हमें वह पुराना दौर याद आता है जब हमारे संबंध अच्छे थे। ब्लोच के प्रति लेग्रैंडिन की सौहार्दता उसी पुराने दौर से जुड़ी थी, चाहे इसलिए कि वह अपने अतीत के एक चरण को भूल गए थे या उन्होंने उसे अनदेखा करना बेहतर समझा हो, वास्तव में, यह क्षमा, विस्मरण और उदासीनता का मिश्रण था, जो समय का भी एक प्रभाव है। इसके अलावा, प्रेम में भी, एक-दूसरे की यादें एक जैसी नहीं होतीं। मैंने देखा है कि अल्बर्टीन मुझे हमारी जान-पहचान के शुरुआती दिनों में कही गई किसी बात को सबसे अनोखे तरीके से याद दिलाती थी, जिसे मैं पूरी तरह से भूल चुका था, जबकि उसे एक और बात बिल्कुल याद नहीं थी जो मेरे दिमाग में पत्थर की तरह हमेशा के

लिए बैठ गई थी। हमारे समानांतर जीवन उन रास्तों की तरह हैं जिनके किनारों पर कुछ-कुछ दूरी पर समरूप रूप से रखे फूलदान हैं, लेकिन वे एक-दूसरे के सामने नहीं हैं। यह और भी अधिक समझने योग्य है कि व्यक्ति को शायद ही याद रहता है कि वे लोग कौन थे जिन्हें वह थोड़ा-बहुत जानता था, या उसे उनके बारे में कुछ और याद आ जाता है, कुछ ऐसा जो उन लोगों द्वारा सुझाया गया हो जिनके बीच वह उनसे फिर से मिलता है, जिन्होंने अभी-अभी उनसे परिचय किया है और उन्हें ऐसे गुण और स्थान प्रदान करते हैं जो उनके पास कभी नहीं थे, लेकिन जिसे विस्मृत व्यक्ति पूरी तरह से स्वीकार करता है।

निस्संदेह, जीवन ने इन लोगों को अलग-अलग अवसरों पर मेरे सामने लाकर, उन्हें ऐसी परिस्थितियों में प्रस्तुत किया था जिससे उनके बारे में मेरी समझ सीमित हो गई और मैं उनके मूल स्वभाव को नहीं जान पाया। यहाँ तक कि उन गुएरमांटे लोगों में से, जो मेरे लिए इतने अद्भुत सपने लेकर आए थे, जब मैं पहली बार उनके पास पहुँचा, तो एक मेरी दादी की एक पुरानी दोस्त के रूप में प्रकट हुआ, और दूसरा उस सज्जन के रूप में जिसने मुझे कैसीनो के मैदान में बड़ी अप्रिय नज़र से देखा था (क्योंकि हमारे और अन्य प्राणियों के बीच आकस्मिकताओं की एक सीमा रेखा होती है, जैसा कि मैंने कॉम्ब्रे में अपनी पढ़ाई से जाना था, कि धारणाओं की एक सीमा रेखा होती है जो वास्तविकता और मन को पूर्ण रूप से संपर्क में आने से रोकती है)। इसलिए, घटना के बाद ही, जब मैंने उन्हें एक नाम से जोड़ा, तब जाकर मेरा उनसे परिचय गुएरमांटे लोगों से परिचय में परिवर्तित हुआ। लेकिन शायद यही वह बात थी जिसने मुझे जीवन को और अधिक काव्यात्मक बना दिया, जब मैंने उस रहस्यमय जाति के बारे में सोचा, जिनकी आँखें भेदक थीं और चोंच पक्षियों जैसी थीं, वह गुलाबी, सुनहरी, पहुँच से बाहर की जाति, जिसे अंधाधुंध और

भिन्न परिस्थितियों ने इतनी स्वाभाविक रूप से मेरे अवलोकन, मेरे संपर्क, यहाँ तक कि मेरी आत्मीयता के सामने प्रस्तुत किया था कि जब मैं मैडम डी स्टरमारिया से मिलना चाहती थी या अल्बर्टीन के लिए कपड़े सिलवाना चाहती थी, तो मैं गुएरमांटे परिवार से वैसे ही संपर्क करती थी जैसे अपने सबसे मददगार दोस्तों से। निश्चित रूप से, कभी-कभी उनसे मिलने जाना मुझे उतना ही उबाऊ लगता था जितना समाज में अपने परिचितों से मिलना। डचेस डी गुएरमांटे का आकर्षण, यहाँ तक कि बर्गोट के कुछ सेवकों की तरह, मुझे केवल दूर से ही दिखाई देता था और उनके पास आने पर गायब हो जाता था, क्योंकि वह मेरी स्मृति और मेरी कल्पना में बसा हुआ था, और फिर भी, गुएरमांटे परिवार, गिल्बर्ट की तरह, समाज के अन्य लोगों से इस मायने में अलग था कि उनकी जड़ें मेरे अतीत में अधिक गहराई से जमी हुई थीं, जब मैं अधिक सपने देखती थी और व्यक्तियों में अधिक विश्वास करती थी। उनमें से किसी एक से बात करते समय अतीत मुझे थकावट से भर देता था, क्योंकि यह मेरे बचपन की उन कल्पनाओं से जुड़ा था जो कभी सबसे सुंदर और पहुंच से बाहर लगती थीं, और मुझे उनके मूल्य को उस कीमत से भ्रमित करके खुद को दिलासा देना पड़ता था जिस पर मेरी इच्छा ने उन्हें ऐसे आंका था जैसे कोई व्यापारी जिसका हिसाब-किताब अस्त-व्यस्त हो। लेकिन अन्य प्राणियों के साथ मेरे अतीत के संबंध उन तीव्र और निराशापूर्ण सपनों से और भी बढ़ गए थे जिनसे मेरा जीवन इतना समृद्ध रूप से, इतना पूर्ण रूप से उनके प्रति समर्पित होकर खुला था कि मैं मुश्किल से समझ पाता था कि आखिर कैसे उनसे मुझे एक तिरस्कृत और अनचाही आत्मीयता की यह निष्फल, संकीर्ण, शोकपूर्ण पट्टी ही मिली जिसमें मुझे उनके रहस्य, उनके उत्साह और उनकी सुंदरता का कोई निशान नहीं मिला।

* * *

"मार्क्विस डी अर्पाजोन का क्या हुआ?" श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने पूछा। "उनकी मृत्यु हो गई है," ब्लोच ने उत्तर दिया। "आप उन्हें कोम्टेस डी अर्पाजोन से भ्रमित कर रही हैं जिनकी मृत्यु पिछले साल हुई थी," प्रिंसेस डी माल्टे चर्चा में शामिल हुईं। एक बहुत ही धनी बूढ़े पति की युवा विधवा, एक महान नाम की मालकिन, उनकी शादी के लिए बहुत मांग थी और इसी से उन्हें बहुत आत्मविश्वास मिला था। "मार्क्विस डी अर्पाजोन की भी मृत्यु लगभग एक साल पहले हुई थी।" "मैं आपको विश्वास दिला सकती हूँ कि एक साल नहीं हुआ है," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने उत्तर दिया। "मैं एक साल से भी कम समय पहले उनके घर पर एक संगीत पार्टी में थी।" ब्लोच इस चर्चा में ठीक उसी तरह हिस्सा नहीं ले सकता था जैसे कोई समाज का अय्याश, क्योंकि वृद्ध लोगों की ये सभी मौतें उससे बहुत दूर थीं, चाहे उम्र के भारी अंतर के कारण हो या फिर एक ऐसे समाज में उसके हाल ही में प्रवेश के कारण, जिसमें वह मानो किनारे से ही प्रवेश कर रहा था, एक ऐसे दौर में जो पतन की ओर बढ़ रहा था और जिसमें एक अपरिचित अतीत की यादें उसे रोशन नहीं कर पा रही थीं। और उसी उम्र और उसी समाज के लोगों के लिए मृत्यु का महत्व कम हो गया था। इसके अलावा, हर दिन लोग मृत्यु के कगार पर होते थे, जिनमें से कुछ ठीक हो जाते थे जबकि कुछ दम तोड़ देते थे, इसलिए यह निश्चित नहीं था कि जिस व्यक्ति को हम शायद ही कभी देखते थे, वह अपनी ठंड से उबर गया है या उसकी मृत्यु हो गई है। उन वृद्ध क्षेत्रों में मौतें बढ़ती गईं और जीवन अनिश्चित होता चला गया। दो पीढ़ियों और दो समाजों के इस चौराहे पर, जो विभिन्न कारणों से मृत्यु को पहचानने में असमर्थ थे, मृत्यु जीवन के साथ घुलमिल गई, पूर्व को सामाजिक रूप से स्वीकार कर लिया गया और वह एक घटना बन गई, जो किसी व्यक्ति को कमोबेश परिभाषित करती थी, बिना इस बात के कि इस घटना का उल्लेख करने

का अर्थ यह था कि उस व्यक्ति के लिए यह सब कुछ समाप्त कर देती है। तो लोग कहते थे: "तुम भूल गए। फलां व्यक्ति मर गया है," या वे यह भी कह सकते थे: "उसे पुरस्कार मिले हैं, वह अकादमी का सदस्य है," या —जिसका मतलब वही था क्योंकि इससे उसका पार्टियों में आना बंद हो जाता था—"वह सर्दियों में दक्षिण में रहने चला गया है," या "उसे पहाड़ों पर जाने का आदेश मिला है।" प्रसिद्ध व्यक्तियों के मामले में, उनके द्वारा छोड़ी गई चीज़ें लोगों को यह याद दिलाने में मदद करती थीं कि वे मर चुके हैं। लेकिन समाज के आम सदस्यों के मामले में, लोग इस बात को लेकर असमंजस में पड़ जाते थे कि वे मरे हैं या नहीं, आंशिक रूप से इसलिए कि वे उन्हें अच्छी तरह से नहीं जानते थे और उनका अतीत भूल चुके थे, लेकिन ज़्यादातर इसलिए कि उन्हें भविष्य की कोई परवाह नहीं थी। और समाज में विवाह, अनुपस्थिति, ग्रामीण इलाकों में सेवानिवृत्ति और वृद्ध लोगों की मृत्यु को समझने में लोगों को जो कठिनाई होती थी, वह मृतकों के महत्वहीन होने और जीवितों की उदासीनता को समान रूप से दर्शाती थी।

“लेकिन अगर वह मरी नहीं है तो उसे और उसके पति को अब कोई क्यों नहीं देखता?” एक बूढ़ी कुंवारी औरत ने पूछा, जो खुद को बुद्धिमान समझती थी। “मैं तुम्हें बताती हूँ,” उसकी माँ ने जवाब दिया, जो पचास साल की होने के बावजूद कभी कोई पार्टी नहीं छोड़ती थी, “क्योंकि वे बूढ़े हैं और इस उम्र में लोग बाहर नहीं जाते।” ऐसा लग रहा था मानो कब्रिस्तान के सामने बूढ़े लोगों का एक बंद शहर बसा हो, जहाँ कोहरे में हमेशा दीपक जलते रहते हों। श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे ने यह कहकर बहस समाप्त की कि काउंटेस डी अर्पाजोन की मृत्यु एक साल पहले लंबी बीमारी के बाद हो गई थी, लेकिन मार्क्विज़ डी अर्पाजोन की भी अचानक “किसी मामूली कारण से” मृत्यु हो गई थी, एक ऐसी मृत्यु जो उन सभी

के जीवन से मिलती-जुलती थी और इसी तरह उन्होंने समझाया कि उनकी मृत्यु किसी को पता चले बिना हो गई थी और गलती करने वालों को क्षमा कर दिया। यह सुनकर कि श्रीमती... डी'अर्पाजोन सचमुच मर चुकी थीं, यह सुनकर बुढ़िया ने घबराकर अपनी माँ की ओर देखा। उसे डर था कि कहीं उनकी समकालीन किसी महिला की मृत्यु की खबर उनके लिए गहरा सदमा न हो। उसे आशंका थी कि लोग उसकी माँ की मृत्यु का ज़िक्र करते हुए कहेंगे, "उनकी मृत्यु श्रीमती डी'अर्पाजोन की मृत्यु के सदमे से हुई।" लेकिन इसके विपरीत, जब भी उनकी उम्र की कोई महिला गुज़र जाती थी, तो उनकी माँ का भाव ऐसा होता था मानो उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वियों को मात दे दी हो। उनकी मृत्यु ही उनके लिए अपने अस्तित्व के प्रति सुखद जागरूकता का एकमात्र ज़रिया थी। बुढ़िया जानती थी कि उसकी माँ को यह कहने में कोई अफ़सोस नहीं था कि श्रीमती डी'अर्पाजोन उन घरों में एकांतवास में रहती थीं जहाँ से बूढ़े और थके हुए लोग शायद ही कभी बाहर निकलते हैं। उसने यह भी गौर किया कि मार्क्विज़ के उस अंतिम निवास में प्रवेश करने की खबर सुनकर वह और भी कम दुखी थीं जहाँ से कोई वापस नहीं आता। माँ की इस उदासीनता ने बुढ़िया के तीखे व्यंग्य को और भी बढ़ा दिया। और बाद में, अपने दोस्तों का मनोरंजन करने के लिए, उसने अपनी माँ के उस जीवंत अंदाज़ की हास्यपूर्ण नकल की, जिसमें वह हाथ मलते हुए कहती थी: "हे भगवान, बेचारी श्रीमती डी'अर्पाजोन का निधन हो गया।" इस तरह उसने उन लोगों को भी प्रसन्न कर दिया जिन्हें जीवित रहने की खुशी के लिए मृत्यु की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि हर मृत्यु जीवित बचे लोगों के लिए जीवन को सरल बना देती है; यह उन्हें कृतज्ञता और मिलने-जुलने के दायित्व से मुक्त कर देती है। फिर भी, जैसा कि मैंने कहा है, एम. वर्दुरिन की मृत्यु का एल्स्टिर ने इस तरह स्वागत नहीं किया।

* * *

एक महिला बाहर गई क्योंकि उसे दोपहर के अन्य समारोहों में जाना था और दो रानियों के साथ चाय पीनी थी। वह वही संभ्रांत महिला थी जिसे मैं पहले जानता था, प्रिंसेस डी निसाउ। उसके शरीर में कुछ बदलाव आ गया था—जिससे उसका सिर पहले से नीचे झुका हुआ लग रहा था, मानो "एक पैर कब्र में" हो—लेकिन ऐसा लग रहा था मानो उसकी उम्र का कोई असर नहीं हुआ हो। अपनी ऑस्ट्रियाई नाक और मनमोहक हावभाव के साथ वह आज भी मैरी-एंटोनेट जैसी ही लग रही थी, मानो हजारों तरह के सौंदर्य प्रसाधनों के इस्तेमाल से उसका चेहरा बैंगनी रंग का हो गया हो। उसके चेहरे पर एक उदास, कोमल भाव था, मानो उसे मजबूरी में जाना पड़ रहा हो, लेकिन वह वापस आने का मीठा वादा कर रही हो, और कई खास निमंत्रणों के कारण चुपचाप चली गई हो। लगभग सिंहासन के पास जन्मी, तीन बार विवाहित, बड़े-बड़े धनपतियों द्वारा लंबे समय तक आलीशान संरक्षण में पली-बढ़ी, उसके अनगिनत अतीत की उलझी हुई यादें, और उसकी सनकें तो कहने की ज़रूरत ही नहीं, उस पर उतनी ही हल्की थीं जितनी उसकी खूबसूरत गोल आँखें, उसका रंगा हुआ चेहरा और उसकी बैंगनी पोशाक। जब वो मुझसे विदा लेते हुए गुज़री, तो मैंने झुककर अभिवादन किया और उसने मेरा हाथ पकड़कर अपनी बैंगनी गोल आँखों से मुझे ऐसे देखा मानो कह रही हो: "कितने समय से हम नहीं मिले, अगली बार इस बारे में बात करते हैं।" उसने मेरा हाथ दबाया, उसे ठीक से पता नहीं था कि उस शाम जब उसने मुझे डचेस डी गुएरमांटेस के यहाँ से निकाला था, तब हमारे बीच कोई मुलाक़ात हुई थी या नहीं। उसने बस एक मौका लिया, मानो कुछ ऐसा इशारा कर रही हो जो कभी हुआ ही नहीं था, और ऐसा करना उसके लिए मुश्किल नहीं था क्योंकि वो स्ट्रॉबेरी टार्ट खाते हुए कोमल लग रही थी और संगीत खत्म होने से पहले

जाने की मजबूरी के बारे में उसने निराशा और तसल्ली से भरे त्याग का भाव दिखाया। इसके अलावा, मेरे साथ हुई घटना के बारे में अपनी अनिश्चितता में, उसका ये दबे-छिपे हाथ दबाना ज़्यादा देर तक नहीं रुका और उसने एक शब्द भी नहीं कहा। उसने बस मुझे इस तरह देखा जैसे कह रही हो: "कितने समय से! कितने समय से!" जैसे ही उसकी दृष्टि में उसके पति, वे सभी पुरुष जिन्होंने उसे अपने पास रखा था, दो युद्ध - सब कुछ गुज़र गया, उसकी तारों जैसी आँखें, जैसे ओपल में तराशी गई खगोलीय घड़ियाँ, एक के बाद एक उन सभी गंभीर अतीत के क्षणों को याद कर रही थीं, जिन्हें वह हर बार अभिवादन करते समय याद करती थी, जो हमेशा एक बहाना होता था। वह मुझे छोड़कर दरवाजे की ओर चली गई ताकि मुझे परेशान न करे, यह दिखाने के लिए कि अगर वह रुककर मुझसे बात नहीं करती है, तो इसका कारण यह है कि उसे स्पेन की रानी को प्रतीक्षा न कराने के लिए मेरा हाथ थामे रहने में जो समय बर्बाद हुआ था, उसकी भरपाई करनी थी। वह दौड़ती हुई गति से दरवाजे से बाहर निकल गई। और वास्तव में, वह अपनी कब्र की ओर दौड़ रही थी।

इसी बीच, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस अपने नकली दांतों के कारण धातु जैसी आवाज़ में उत्तेजित होकर बार-बार दोहरा रही थीं: "बस, हम एक समूह बनाएंगे। मुझे युवाओं की बुद्धिमत्ता बहुत पसंद है, वे कितना सहयोग करते हैं! आह, आप तो कमाल के जादूगर हैं!" वह अपनी गोल आंख में लगे बड़े चश्मे से बात कर रही थीं, जो आंशिक रूप से मनोरंजक और आंशिक रूप से अपनी बात को ठीक से न रख पाने के लिए माफी मांग रही थी, लेकिन अंत में उन्होंने "सहयोग" करने और "एक समूह बनाने" का फैसला कर लिया।

* * *

मैं गिलबर्टे डी सेंट-लूप के बगल में बैठ गया। हमने रॉबर्ट के बारे में बहुत बातें कीं। गिलबर्टे ने आदरपूर्वक उनका ज़िक्र एक ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में किया, जिनकी वह प्रशंसा करती थीं और जिन्हें समझती थीं। हमने एक-दूसरे को याद दिलाया कि युद्ध कला के बारे में उन्होंने पहले जो विचार व्यक्त किए थे (क्योंकि उन्होंने अक्सर टैन्सनविले और डोनसिएरेस में और बाद में भी उन्हीं सिद्धांतों को दोहराया था), वे हाल ही के एक भाषण से सही साबित हुए थे। "मैं आपको बता नहीं सकता कि डोनसिएरेस में उन्होंने मुझसे जो छोटी से छोटी बात कही थी, वह आज भी मुझे उतनी ही प्रभावित करती है जितनी युद्ध के दौरान करती थी। जब हम बिछड़ गए और फिर कभी नहीं मिले, तब उनके आखिरी शब्द यही थे कि वे नेपोलियन युग के जनरल हिंडेनबर्ग से नेपोलियन युग की ही तरह की लड़ाई की उम्मीद कर रहे थे, जिसका उद्देश्य दो दुश्मनों को अलग करना था, शायद, उन्होंने कहा, अंग्रेजों और हमें। रॉबर्ट की मृत्यु के लगभग एक साल बाद, एक आलोचक, जिनकी वे बहुत प्रशंसा करते थे और जिन्होंने स्पष्ट रूप से उनके सैन्य विचारों पर गहरा प्रभाव डाला था, एम. हेनरी बिडू ने कहा कि मार्च 1918 में हिंडेनबर्ग का आक्रमण 'एक खेमे में दो दुश्मनों के खिलाफ एक अलगाव की लड़ाई थी, एक ऐसा युद्धाभ्यास जिसे सम्राट ने 1796 में एपेंनाइन पर्वतमाला पर सफलतापूर्वक अंजाम दिया था और 1815 में बेल्जियम में असफल रहे थे।' इससे कुछ समय पहले रॉबर्ट लड़ाइयों की तुलना नाटकों से कर रहे थे, जिनमें कभी-कभी लेखक का अर्थ समझना मुश्किल होता है क्योंकि वह कहानी के दौरान कथानक बदल देता है। अब, जर्मन आक्रमण की इस व्याख्या के बारे में। 1918 के रॉबर्ट निश्चित रूप से एम. बिडू की राय से सहमत नहीं होते। लेकिन अन्य आलोचकों का मानना है कि एमियंस की दिशा में हिंडेनबर्ग की सफलता, फिर उनका जबरन रुकना, फिर

फ्लैंडर्स में उनकी सफलता, और फिर से रुकना, ने संयोगवश एमियंस और बाद में बोलोग्ने को ऐसे लक्ष्य बना दिया जिनकी उन्होंने पहले से योजना नहीं बनाई थी। और चूंकि हर कोई नाटक का अपने तरीके से पुनर्निर्माण कर सकता है, कुछ लोग इस आक्रमण में पेरिस पर एक भयानक मार्च का खतरा देखते हैं, जबकि अन्य इसे अंग्रेजी सेना को नष्ट करने के लिए अव्यवस्थित प्रहार मानते हैं। और भले ही जनरल के आदेश एक या दूसरी धारणा के विपरीत हों, आलोचक हमेशा यह कह सकेंगे, जैसा कि मौनेट-सुली ने कोक्वेलिन के बारे में कहा था, जिन्होंने दावा किया था कि 'मिसेंथ्रोप' वह निराशाजनक नाटक नहीं था जैसा उन्होंने इसे दिखाया था (क्योंकि मोलियर के समकालीन गवाही देते हैं कि उनकी व्याख्या हास्यपूर्ण थी और लोगों को हंसाती थी): "तो फिर, मोलियर ने गलती की।"

“और तुम्हें याद है,” गिलबर्ट ने जवाब दिया, “उन्होंने हवाई जहाजों के बारे में जो कहा था, उन्होंने उसे बड़े ही आकर्षक ढंग से व्यक्त किया था, हर सेना सौ आँखों वाला एक आर्गस होना चाहिए। अफसोस, वे अपनी भविष्यवाणी की पुष्टि देखने के लिए जीवित नहीं रहे।” “ओह, हाँ, वे जीवित रहे,” मैंने उत्तर दिया, “वे अच्छी तरह जानते थे कि सोम्मे की लड़ाई में, वे दुश्मन की आँखों को भेदकर, उसके हवाई जहाजों और बंदी गुब्बारों को नष्ट करके उसे अंधा करना शुरू कर रहे थे।” “ओह हाँ! उन्होंने ऐसा ही किया।” जब से वह अपने मन में जीने लगी थी, वह कुछ हद तक विद्वतापूर्ण हो गई थी। "और यह वही थे जिन्होंने पुरानी पद्धतियों की वापसी की भविष्यवाणी की थी। क्या आप जानते हैं कि इस युद्ध में मेसोपोटामिया के अभियान" (उन्होंने उस समय ब्रिचोट के लेखों में यह पढ़ा होगा) "ज़ेनोफ़ोन की वापसी की याद दिलाते रहते हैं; टाइग्रिस से यूफ्रेट्स तक जाने के लिए अंग्रेज़ कमांडर ने डोंगी, लंबी संकरी नावों, उस

देश की गोंडोलाओं का इस्तेमाल किया, जिनका इस्तेमाल प्राचीन चालडियन करते थे।" उनके शब्दों ने मुझे अतीत में ठहराव का वह एहसास दिलाया जो कुछ स्थानों पर एक विशिष्ट गुरुत्वाकर्षण द्वारा इस हद तक स्थिर हो जाता है कि व्यक्ति उसे ठीक वैसे ही पाता है जैसा वह था। मैं स्वीकार करता हूँ कि, रॉबर्ट से कुछ ही दूरी पर स्थित बालबेक में अपनी पढ़ाई के बारे में सोचते हुए, मैं बहुत प्रभावित हुआ था - जैसा कि मैं मैडम को खोजने पर हुआ था। डी सेविग्ने द्वारा फ्रांसीसी ग्रामीण इलाकों में की गई घेराबंदी - कुट-अल-अमारा (कुट-द-एमिर, जैसा कि हम वॉक्स-ले-विकॉन्टे, बोइल्यू-ल'एवेक कहते हैं, जैसा कि कॉम्ब्रे के पादरी ने कहा होता यदि व्युत्पत्ति विज्ञान के प्रति उनकी प्यास प्राच्य भाषाओं तक फैली होती) की घेराबंदी के संबंध में, बगदाद के पास उस नाम बसोराह की पुनरावृत्ति का अवलोकन करना, जिसके बारे में हम हजार और एक रातों में बहुत कुछ सुनते हैं, जहां से, जनरल टाउनसेंड से बहुत पहले, खलीफाओं के समय में सिंदबाद नाविक, जब भी बगदाद से निकलता या लौटता था, तो जहाज पर चढ़ता या उतरता था।

मैंने कहा, "युद्ध का एक पहलू ऐसा था जिसे वह समझने लगा था, और वह यह है कि यह मानवीय है, इसे प्रेम या घृणा की तरह जिया जाता है, इसे एक प्रेम कहानी की तरह बयान किया जा सकता है, और इसलिए यदि लोग बार-बार यह दोहराते रहें कि रणनीति एक विज्ञान है, तो इससे उन्हें इसे समझने में मदद नहीं मिलती क्योंकि यह रणनीतिक नहीं है। दुश्मन हमारी योजनाओं को उतना ही नहीं जानता जितना हम अपनी प्रेमिका के इरादे को जानते हैं, और शायद हम भी अपने इरादे नहीं जानते। मार्च 1918 के आक्रमण में क्या जर्मनों का उद्देश्य एमियंस पर कब्जा करना था? हम इसके बारे में कुछ नहीं जानते। शायद वे भी नहीं जानते थे और एमियंस की ओर पश्चिम की ओर उनका बढ़ना ही उनकी

योजना का आधार था। युद्ध को वैज्ञानिक मानते हुए भी, इसे एल्स्टिर द्वारा समुद्र के चित्रण की तरह चित्रित करना आवश्यक है, एक अन्य इंद्रिय का उपयोग करके और कल्पना और विश्वासों को प्रारंभिक बिंदु बनाकर, उन्हें धीरे-धीरे सुधारना, जैसे दोस्तोवस्की ने एक जीवन का वर्णन किया था। इसके अलावा, यह बहुत स्पष्ट है कि युद्ध रणनीतिक से कहीं अधिक चिकित्सीय है क्योंकि यह अपने साथ अनपेक्षित दुर्घटनाएँ लाता है जिन्हें चिकित्सक टालने की आशा करता है, जैसे कि..." रूसी क्रांति।"
इस पूरी बातचीत के दौरान, गिलबर्ट ने रॉबर्ट के बारे में जिस आदर से बात की, वह मानो अपने मृत पति की बजाय मेरी पूर्व मित्र के प्रति अधिक सम्मानजनक प्रतीत हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह कह रही हो: "मैं जानती हूँ कि आप उनकी कितनी प्रशंसा करते थे, विश्वास कीजिए, मैं जानती और समझती थी कि वे कितने श्रेष्ठ व्यक्ति थे।" फिर भी, उनकी स्मृति के प्रति जो प्रेम अब उनके मन में नहीं था, शायद वही उनके वर्तमान जीवन की विचित्रताओं का दूरगामी कारण रहा हो। क्योंकि एंड्री अब गिलबर्ट की घनिष्ठ मित्र बन चुकी थीं। यद्यपि एंड्री कुछ समय से, मुख्यतः अपने पति की प्रतिभा के कारण, गुएरमांटेस समूह में तो नहीं, लेकिन अपने पूर्व समाज की तुलना में कहीं अधिक प्रतिष्ठित समाज में प्रवेश करने लगी थीं, फिर भी लोग इस बात से चकित थे कि मार्क्विज़ डी सेंट-लूप उनकी सबसे अच्छी मित्र बनने के लिए तैयार हो गईं। यह तथ्य गिलबर्ट की कलात्मक जीवन और सामाजिक त्याग के प्रति उनकी प्राथमिकता का संकेत प्रतीत होता था। शायद यही इसका वास्तविक कारण हो। हालाँकि, मेरे मन में एक और विचार आया, क्योंकि मैं हमेशा से इस बात से आश्वस्त रहा हूँ कि कहीं भी एकत्रित की गई छवियाँ आम तौर पर एक पूर्व समूह का प्रतिबिंब या किसी न किसी रूप में प्रभाव होती हैं, जो दूसरे समूह से भिन्न होते हुए भी उससे समरूप होती हैं, जबकि

वह समूह दूसरे समूह से अत्यंत दूर होता है। मैंने सोचा कि यदि एंड्री, उसके पति और गिल्बर्ट को हर शाम एक साथ देखा जाता था, तो संभवतः इसका कारण यह था कि कई वर्ष पहले एंड्री के भावी पति राहेल के साथ रहे थे और फिर एंड्री के लिए उसे छोड़ दिया था। यह संभव है कि गिल्बर्ट एक ऐसे समाज में रहती थी जो उनसे बहुत दूर और श्रेष्ठ था, इसलिए उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। लेकिन उसे इसके बारे में बाद में पता चला होगा जब एंड्री ऊपर गई और वह इतनी नीचे आई कि वे मिल सकें। तब वह महिला जिसके लिए एक पुरुष ने राहेल को छोड़ दिया था, जबकि राहेल उसे रॉबर्ट से अधिक पसंद करती थी, गिल्बर्ट की नज़रों में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी होगी।

शायद इसी तरह, एंड्री को देखकर गिलबर्ट को रॉबर्ट के प्रति अपने युवा प्रेम की यादें ताजा हो गईं और एंड्री के प्रति सम्मान भी जागा, जिसे वह व्यक्ति आज भी प्यार करता था जिसे राहेल बहुत पसंद करती थी, और गिलबर्ट जानती थी कि सेंट-लूप राहेल को खुद से ज्यादा पसंद करती थी। शायद, दूसरी ओर, इन यादों का गिलबर्ट के इस कलात्मक जोड़े के प्रति लगाव में कोई भूमिका नहीं थी और यह कई अन्य मामलों की तरह, समाज की महिलाओं में नए अनुभव प्राप्त करने और साथ ही खुद को नीचा दिखाने की आम प्रवृत्ति का ही परिणाम था। शायद गिलबर्ट रॉबर्ट को उसी तरह पूरी तरह भूल गई थी जैसे मैं अल्बर्टीन को भूल गई थी और भले ही वह जानती थी कि कलाकार ने राहेल को एंड्री के लिए छोड़ा था, उसने कभी इस बारे में सोचा भी नहीं क्योंकि इससे उनके प्रति उसकी पसंद में कोई फर्क नहीं पड़ा। मेरी पहली व्याख्या संभव या सही है या नहीं, यह जानने का एकमात्र तरीका संबंधित पक्षों के साक्ष्य से ही संभव था, और वह भी तब जब वे स्पष्टता और ईमानदारी से अपना विश्वास प्रकट करें। और पहला तो बहुत कम मिलता है, दूसरा तो कभी

नहीं।

"लेकिन तुम इस भीड़-भाड़ वाले रिसेप्शन में कैसे आ गए?" गिल्बर्ट ने पूछा। "तुम्हारी आदत तो ऐसी भीड़-भाड़ वाली जगहों पर आने की नहीं है। मुझे उम्मीद थी कि मैं तुमसे कहीं और मिलूँगी, बजाय मेरी मौसी की इन बेतरतीब पार्टियों के; तुम्हें पता है न, वह मेरी मौसी हैं," उसने धीरे से कहा; क्योंकि Mme. Verdurin के परिवार में आने से काफी पहले ही वह Mme. de Saint–Loup बन चुकी थी, इसलिए वह खुद को शुरू से ही एक Guermantes मानती थी और, नतीजतन, अपने चाचा के Mme. Verdurin के साथ हुए 'बेमेल विवाह' (mésalliance) से खुद को प्रभावित महसूस करती थी—हालाँकि यह सच है कि उसने परिवार वालों को Mme. Verdurin का मज़ाक उड़ाते हुए हज़ार बार सुना था, जबकि, ज़ाहिर है, जब वह खुद वहाँ नहीं होती थी, तभी वे Saint–Loup और उसके अपने बेमेल विवाह का ज़िक्र करते थे। इसके अलावा, वह इस 'साधारण' मौसी के प्रति और भी ज़्यादा तिरस्कार दिखाती थी, क्योंकि Princesse de Guermantes—एक तरह की विचित्रता के कारण, जो बुद्धिमान लोगों को फैशन की गुलामी से बचने के लिए प्रेरित करती है, और साथ ही उम्रदराज़ लोगों की उन यादों की ज़रूरत के कारण, जो उनकी नई हासिल की गई हैसियत के लिए एक पृष्ठभूमि का काम करती हैं—गिल्बर्ट के बारे में कहती थीं: "यह मेरे लिए कोई नया रिश्ता नहीं है; मैं इस लड़की की माँ को बहुत अच्छी तरह जानती थी—अरे, वह तो मेरी चचेरी बहन Marsantes की बहुत अच्छी दोस्त थी। उसी के घर पर वह गिल्बर्ट के पिता से मिली थी। जहाँ तक बेचारे Saint–Loup की बात है, मैं उसके पूरे परिवार को जानती थी; उसका चाचा एक ज़माने में La Raspelière में मेरा बहुत करीबी दोस्त था।" "तुम देख रहे हो न, Verdurin लोग बिल्कुल भी 'बोहेमियन'

(अपरंपरागत) नहीं थे," जब लोग Princesse de Guermantes को इस तरह बात करते सुनते, तो मुझसे कहते, "वे तो Mme. de Saint–Loup के परिवार के पुराने दोस्त थे।" शायद मैं ही अकेला ऐसा व्यक्ति था, जिसे अपने दादाजी के ज़रिए यह पता था कि Verdurin लोग सचमुच बोहेमियन नहीं थे, लेकिन इसकी वजह यह नहीं थी कि वे Odette को जानते थे। लेकिन अतीत के बारे में ऐसी कहानियाँ गढ़ना, जिनके बारे में कोई कुछ नहीं जानता, उतना ही आसान है, जितना कि उन देशों की यात्राओं के बारे में बताना, जहाँ कोई कभी गया ही न हो। "अच्छा," गिलबर्ट ने बात खत्म करते हुए कहा, "चूँकि तुम कभी-कभी अपने 'आइवरी टावर' (एकांत की दुनिया) से बाहर निकलते ही हो, तो क्या मेरे घर पर होने वाली एक छोटी-सी, निजी पार्टी में तुम्हें मज़ा नहीं आएगा? मैं ऐसे लोगों को बुलाऊँगी जिनकी सोच तुमसे मिलती-जुलती हो और जो तुम्हें ज़्यादा पसंद आएँ। तुम्हारे लिए इस तरह की बड़ी-बड़ी पार्टियाँ ठीक नहीं हैं। मैंने तुम्हें अपनी मौसी ओरियन से बात करते देखा था; हो सकता है कि उनमें दुनिया की सारी अच्छी खूबियाँ हों, लेकिन अगर हम यह कहें कि वह 'बुद्धिजीवियों के खास वर्ग' (élite of the mind) से ताल्लुक नहीं रखतीं, तो क्या यह उन पर कोई झूठा इल्ज़ाम होगा? नहीं, ऐसा नहीं है।" मैं गिलबर्ट को वे विचार नहीं बता सका जो पिछले एक घंटे से मेरे मन में चल रहे थे; लेकिन मुझे लगा कि वह शायद मेरा ध्यान बँटाने में मदद कर सकती है—ऐसा ध्यान जो मुझे डचेस डी गुएरमांटेस के साथ साहित्य पर चर्चा करके नहीं मिलता, और न ही गिलबर्ट के साथ चर्चा करके मिलता। बेशक, मैंने अगले दिन से फिर से एकांत में रहने का पक्का इरादा कर लिया था—लेकिन इस बार, एक असली मकसद के साथ। यहाँ तक कि अपने ही घर में भी, मैं काम करने के घंटों के दौरान किसी को मुझसे मिलने नहीं आने दूँगा; क्योंकि मेरे

काम के प्रति मेरा फ़र्ज़, शिष्ट या दयालु होने के फ़र्ज़ से कहीं ज़्यादा ज़रूरी था। निस्संदेह, जो लोग मुझसे लंबे समय से नहीं मिले थे, वे आएँगे; और यह मानकर कि मैं अब पूरी तरह ठीक हो गया हूँ, वे मुझसे मिलने की ज़िद करेंगे। जब उनका दिन भर का काम खत्म हो जाएगा या बीच में रुक जाएगा, तो वे मुझसे मिलने पर ज़ोर देंगे—ठीक वैसे ही जैसे कभी मुझे सेंट-लूप की ज़रूरत महसूस होती थी। ऐसा इसलिए होता है, जैसा कि कोम्ब्रे में हुआ था—जब मेरे माता-पिता ने मुझे उस समय डाँटा था, जब उन्हें बिना बताए, मैं अपने जीवन का सबसे नेक और सराहनीय फ़ैसला ले रहा था—कि इंसानों के लिए तय की गई 'भीतरी घड़ियाँ' (internal timepieces) एक ही समय पर नहीं चलतीं। किसी की घड़ी आराम का समय बताती है, तो किसी की काम का; किसी की घड़ी जज के फ़ैसले का समय बताती है, जबकि अपराधी ने बहुत पहले ही अपने किए पर पछतावा कर लिया होता है और उसकी 'भीतरी शुद्धि' का समय तो उससे भी पहले आ चुका होता है। लेकिन जो लोग मुझसे मिलने आएँगे या मुझे बुलवाएँगे, मैं उनमें इतनी हिम्मत जुटाऊँगा कि उन्हें यह जवाब दे सकूँ: कि मेरा कुछ बेहद ज़रूरी मामलों को लेकर एक 'अर्जेंट अपॉइंटमेंट' है—जिन्हें बिना किसी और देरी के सुलझाना मेरे लिए अनिवार्य है—और वह 'अपॉइंटमेंट' किसी और के साथ नहीं, बल्कि खुद अपने आप से है; और यह मेरे लिए सबसे ज़्यादा अहमियत रखता है। और फिर भी—हालाँकि हमारे 'असली स्वरूप' (real self) और हमारे 'बाहरी स्वरूप' (other) के बीच असल में कोई खास रिश्ता नहीं होता—लेकिन उनके एक जैसे नाम और एक ही शरीर में होने की वजह से, वह 'आत्म-त्याग' (abnegation) जो हमें अपने आसान फ़र्ज़ों और यहाँ तक कि अपनी खुशियों को भी कुर्बान करने की हिम्मत देता है, दूसरों को अक्सर 'स्वार्थ' (egoism) जैसा ही लगता है। इसके अलावा, क्या मैं उनसे दूर जाकर

इसलिए नहीं रहने वाला था ताकि मैं उनके बारे में सोच सकूँ—उन लोगों से दूर जो शिकायत करते कि उन्होंने मुझे कभी देखा ही नहीं—और उनके बारे में इतनी गहराई से सोच सकूँ जितना मैं उनकी मौजूदगी में नहीं कर सकता था? ऐसा इसलिए ताकि मैं उन्हें उनके असली रूप से परिचित करा सकूँ, उन्हें खुद को पहचानने में मदद कर सकूँ। अगर मैं सालों तक अपनी रातें यूँ ही बर्बाद करता रहता, और उनके कहे शब्दों को अपनी ही व्यर्थ गूँज में खो जाने देता, तो इससे क्या फ़ायदा होता? ऐसा मैं सिर्फ़ सामाजिक मेल-जोल के उस बेफ़ायदा सुख के लिए करता, जिसमें किसी भी गहरी सोच के लिए कोई जगह नहीं होती। क्या यह ज़्यादा बेहतर नहीं होता कि मैं उनके हाव-भाव, उनके शब्दों, उनके जीवन और उनके स्वभाव को नियंत्रित करने वाले नियमों को समझने और उन्हें शब्दों में ढालने की कोशिश करता? दुर्भाग्य से, मुझे अपनी उस आदत से लड़ना पड़ेगा जिसमें मैं खुद को दूसरों की जगह पर रखकर सोचता हूँ; हालाँकि यह आदत किसी रचना की कल्पना करने में तो मददगार हो सकती है, लेकिन उसे पूरा करने की प्रक्रिया को धीमा कर देती है। क्योंकि, अत्यधिक शिष्टाचार के चलते हम दूसरों के लिए न केवल अपने सुख का, बल्कि अपने कर्तव्य का भी बलिदान कर देते हैं—भले ही खुद को दूसरों की जगह पर रखकर सोचना, कर्तव्य का ही कोई रूप क्यों न हो।

और अगर यह मददगार होता, तो भी पीछे रहना—जब आगे कोई सेवा नहीं की जा सकती—सच के विपरीत, हमारी खुशी जैसा लगता है। और दोस्तों के बिना, बातचीत के बिना जीवन को दुखद मानने के बजाय—जैसा कि कुछ महान लोगों ने माना है—मैंने महसूस किया कि दोस्ती में खर्च होने वाली ताकत और उत्साह, एक तरह का 'नकली पासपोर्ट' है जो हमें किसी ऐसी निजी करीबी की ओर ले जाता है जिसका कोई नतीजा नहीं निकलता, और जो हमें उस सच्चाई से दूर कर देता है जहाँ वे हमें

पहुँचा सकते थे। लेकिन फिर भी, अगर मुझे आराम और सामाजिक मेलजोल के पलों की ज़रूरत पड़ती, तो मुझे लगा कि उन बौद्धिक बातचीत के बजाय—जिन्हें समाज के लोग लेखकों के लिए दिलचस्प मानते हैं—युवा, खिली-खिली लड़कियों के साथ हल्का-फुल्का प्यार ही वह खुराक होगी, जिसकी इजाज़त मैं अपनी कल्पना को ज़्यादा से ज़्यादा दे सकता था; ठीक उस मशहूर घोड़े की तरह जिसे गुलाबों के अलावा कुछ नहीं खिलाया जाता था। अचानक, मुझे फिर से उसी चीज़ की चाहत हुई जिसका सपना मैंने 'बालबेक' में देखा था—जब मैंने अल्बर्टिन और आंद्रे को समुद्र के किनारे अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करते देखा था, इससे पहले कि मैं उन्हें जानता भी था। लेकिन अफ़सोस, जिनकी मुझे अब इतनी ज़्यादा चाहत थी, वे मुझे अब कहीं नहीं मिल सकते थे। वे साल, जिन्होंने आज देखे गए सभी लोगों को—खुद गिल्बर्ट सहित—बदल दिया था, उन्होंने निस्संदेह बाकी बचे लोगों को भी—और अगर अल्बर्टिन की मृत्यु न हुई होती, तो उसे भी—उन लड़कियों से बिल्कुल अलग औरतें बना दिया होगा, जिन्हें मैं याद करता था। उनके इस बदलाव के विचार से मुझे बहुत दुख हुआ, क्योंकि समय के बदलाव हमारी यादों में बसी तस्वीरों को नहीं बदलते। किसी इंसान में आए बदलाव और यादों की स्थिरता के बीच का विरोधाभास—यह एहसास कि हमारी यादों में जो चीज़ ताज़ा है, वह असल में अब पुरानी पड़ चुकी है—और यह कि हमारे अंदर बसी उस सुंदरता तक पहुँचने का कोई बाहरी ज़रिया नहीं है, जिसके एक बार फिर दीदार के लिए हमारे मन में इतनी गहरी तड़प उठती है—इससे ज़्यादा दर्दनाक कुछ भी नहीं है। बहुत पहले की उन लड़कियों के लिए मेरे मन में जो तीव्र इच्छा जागी थी—जिसे मेरी यादों ने फिर से जगा दिया था—वह तब तक शांत नहीं हो सकती थी, जब तक मैं उसकी पूर्ति किसी दूसरी उतनी ही युवा लड़की में न खोज लेता। मुझे अक्सर यह शक

होता था कि जिस इंसान की हम चाहत करते हैं, उसमें जो चीज़ हमें 'अद्वितीय' लगती है, वह असल में सिर्फ़ उसी इंसान की अपनी नहीं होती। लेकिन समय बीतने के साथ मुझे इसका और भी पक्का सबूत मिल गया; क्योंकि बीस साल बाद, अब मैं उन लड़कियों को नहीं चाहता था जिन्हें मैं पहले जानता था, बल्कि मैं उन लड़कियों को चाहता था जिनमें वैसी ही जवानी हो। इसके अलावा, यह सिर्फ़ शारीरिक इच्छा का जागना ही नहीं है—जिसका वास्तविकता से कोई मेल नहीं होता—क्योंकि यह समय के बीतने को नज़रअंदाज़ कर देता है। कभी-कभी मैं प्रार्थना करता था कि, किसी चमत्कार से, मेरी दादी और अल्बर्टिन, मेरी समझ के विपरीत, जीवित बच गई हों और मेरे पास आ जाएँ। मुझे लगता था कि मैं उन्हें देख रहा हूँ; मेरा दिल उनकी ओर लपक उठता था। लेकिन मैं भूल गया था कि, अगर वे जीवित होतीं, तो अल्बर्टिन का रूप-रंग लगभग वैसा ही होता जैसा बालबेक में श्रीमती कोटार्ड का था, और मेरी दादी, पचानवे साल की उम्र में, वह सुंदर, शांत और मुस्कुराता हुआ चेहरा नहीं दिखातीं जिसकी कल्पना मैं अब भी मनमाने ढंग से करता था—ठीक वैसे ही जैसे हम ईश्वर-पिता की दाढ़ी वाली छवि बनाते हैं, या जैसे सत्रहवीं सदी में, होमर के नायकों को, कालक्रम की परवाह किए बिना, रईसों की संगति में चित्रित किया जाता था। मैंने गिलबर्ट की ओर देखा और मेरे मन में यह विचार नहीं आया, "मैं तुम्हें फिर से देखना चाहूँगा।" लेकिन मैंने उससे कहा कि अगर वह मुझे कुछ युवतियों से मिलवाए, तो मुझे निश्चित रूप से बहुत खुशी होगी—ऐसी युवतियाँ जिनसे मैं और कुछ नहीं चाहूँगा, सिवाय इसके कि वे मेरे पुराने दिनों की यादों और उदासी को फिर से जगा दें; और शायद, किसी अप्रत्याशित दिन, मुझे एक पवित्र चुंबन का सौभाग्य प्रदान करें। जिस तरह एल्स्टिर को अपनी पत्नी में वह वेनिस-सुंदरी का रूप देखना पसंद था जिसे वह अक्सर अपनी कलाकृतियों में चित्रित

करता था, उसी तरह मैंने भी एक प्रकार के 'सौंदर्य-संबंधी अहंकार' के कारण उन सुंदर स्त्रियों की ओर आकर्षित होने को उचित ठहराया, जो शायद मुझे कष्ट पहुँचा सकती थीं; और मैंने भविष्य की गिलबर्टों, भविष्य की 'डचेस डी गुएरमांटेस' और अल्बर्टिनों के प्रति एक प्रकार की 'मूर्ति-पूजा' विकसित कर ली—ऐसी स्त्रियाँ जिनके बारे में मुझे लगता था कि वे मुझे उसी तरह प्रेरित कर सकती हैं, जैसे कोई मूर्तिकार प्राचीन संगमरमर की भव्य मूर्तियों के बीच खड़े होकर प्रेरित होता है। फिर भी, मुझे यह याद रखना चाहिए था कि मेरे हर अनुभव से पहले, उस रहस्य की अनुभूति होती थी जो उन अनुभवों में व्याप्त था; और यह कि, गिलबर्ट से मुझे युवतियों से मिलवाने के लिए कहने के बजाय, मेरे लिए यह कहीं बेहतर होता कि मैं उन तटों की यात्रा करता जहाँ कोई भी चीज़ उन्हें हमसे नहीं जोड़ती—जहाँ उनके और हमारे बीच एक अगम्य खाई है; जहाँ, भले ही वे समुद्र तट पर, हमसे बस दो कदम की दूरी पर स्नान करने वाली हों, फिर भी वे हमसे 'असंभव' की दीवार द्वारा अलग होती हैं। इसी तरह, मेरे मन में व्याप्त रहस्य की भावना ने सबसे पहले गिलबर्ट को, फिर 'डचेस डी गुएरमांटेस' को, अल्बर्टिन को, और न जाने कितनी ही अन्य स्त्रियों को अपने भीतर प्रतिष्ठित कर लिया था। यह सच है कि जो अज्ञात था और जिसे जानना लगभग असंभव था, वह अब सामान्य, परिचित, उदासीन या कष्टप्रद बन चुका था; फिर भी, उसमें अपने पुराने आकर्षण का कुछ अंश अब भी शेष था। और, सच कहूँ तो (जैसा कि उन कैलेंडरों में होता है जो डाकिया हमारे लिए तब लाता है जब उसे अपना क्रिसमस का तोहफ़ा चाहिए होता है), मेरी ज़िंदगी का एक भी साल ऐसा नहीं गुज़रा जिसके पहले पन्ने पर या जिसके दिनों के बीच में उस औरत की तस्वीर न हो जिसकी मैं उस समय चाहत रखता था; कभी-कभी यह तस्वीर और भी ज़्यादा मनमानी होती थी क्योंकि मैंने उस औरत को देखा

भी नहीं होता था—जैसे, उदाहरण के लिए, मैडम पुटबस की नौकरानी, मैडमोइसेल डी'ऑर्गेविल, या कोई और लड़की जिसका नाम मैंने किसी 'सोसायटी कॉलम' में दूसरी आकर्षक नर्तकियों के नामों के बीच देखा होता था। मैं उसे सुंदर समझता था, मुझे उससे प्यार हो गया था, मैंने एक आदर्श हस्ती की कल्पना कर ली थी—उस देहाती इलाके की रानी, जहाँ —जैसा कि मुझे 'एन्युएअर डेस शैतो' (Annuaire des Châteaux) से पता चला था—उसके परिवार की एक जागीर थी। उन औरतों के मामले में, मैं...

सुना था कि वह कुछ सुनाने वाली है, क्योंकि इससे डचेस के साथ उसकी नज़दीकी साबित होती। डचेस, जो बहुत लंबे समय से खुद को फ़ैशन की अगुआ मानती आ रही थी (और यह नहीं समझती थी कि ऐसी स्थिति सिर्फ़ उन्हीं लोगों के मन में होती है जो इसमें विश्वास करते हैं, और यह कि कई नए लोग तो उसे तब तक कोई हैसियत वाला नहीं मानते जब तक वे फ़ैशन-कॉलम में उसका नाम न देख लें और यह न जान लें कि वह हर जगह जाती है), आजकल फ़ॉबर्ग सेंट-जर्मेन में बहुत कम ही जाती थी; उसका कहना था कि वहाँ जाकर वह ऊब जाती है। इसके ठीक उलट, वह किसी न किसी अभिनेत्री के साथ दोपहर का खाना खाती थी, जिसकी संगति उसे पसंद आती थी।

डचेस अब भी बाल्थी और मिस्टिंगुएट को आमंत्रित करने में हिचकिचा रही थीं, जिन्हें वह बहुत प्यारी मानती थीं, क्योंकि उन्हें एम. डी गुएरमांटेस के साथ किसी अनबन का डर था, लेकिन फिर भी राहेल उनकी दोस्त थीं। इससे नई पीढ़ी ने, उनके नाम के बावजूद, यह निष्कर्ष निकाला कि डचेस डी गुएरमांटेस एक दिखावटी शख्सियत थीं, जो कभी "असली" नहीं

बन पाईं। यह सच है कि श्रीमती डी गुएरमांटेस अब भी कुछ ऐसे सम्राटों को दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करने का प्रयास करती थीं, जिनकी मित्रता के लिए दो अन्य महान महिलाएं उनकी प्रतिद्वंद्वी थीं। लेकिन वे शायद ही कभी पेरिस आते थे और साधारण लोगों को जानते थे, और चूंकि डचेस, गुएरमांटेस के पुराने रीति-रिवाजों के प्रति झुकाव के कारण (क्योंकि भले ही सभ्य लोग उन्हें बोर करते थे, उन्हें अच्छे शिष्टाचार पसंद थे) घोषणा करती थीं, "महामहिम ने डचेस डी गुएरमांटेस को आदेश दिया है, कृपा की है, इत्यादि," इसलिए इन सूत्रों से अनभिज्ञ नए लोगों ने मान लिया कि डचेस का पद कम हो गया है। श्रीमती डी गुएरमांटेस से... डी गुएरमांटेस के दृष्टिकोण से, राहेल के साथ उनकी घनिष्ठता यह संकेत दे सकती है कि फैशन की उनकी निंदा को पाखंडी दिखावा मानना हमारी गलती थी, जबकि मैडम डी सैंटे-यूवर्टे के यहाँ जाने से उनका इनकार बुद्धि के बजाय घमंड के कारण प्रतीत होता था और मार्क्विस की मूर्खता पर उनकी आपत्ति को उनकी घमंडी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में विफलता के कारण माना जा सकता था। लेकिन राहेल के साथ यह घनिष्ठता यह भी दर्शा सकती है कि डचेस की बुद्धि सीमित, असंतुष्ट और बहुत देर से खुद को व्यक्त करने की इच्छुक थी, साथ ही बौद्धिक वास्तविकताओं की पूर्ण अज्ञानता और एक कल्पनाशील भावना थी जो उच्च पदस्थ महिलाओं को यह कहने पर मजबूर करती है, "कितना मज़ा आएगा" और अपनी शामें वास्तव में सबसे कष्टदायक ऊब में समाप्त करती हैं, खुद को ऐसे व्यक्ति पर थोपती हैं जिससे उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं होता, ताकि वे शाम के लबादे में एक पल के लिए उसके बिस्तर के पास खड़ी रह सकें, जिसके बाद, यह देखकर कि बहुत देर हो चुकी है, वे सोने चली जाती हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि कुछ समय के लिए बहुमुखी प्रतिभा वाली

डचेस को गिल्बर्ट के प्रति तीव्र अरुचि थी, जिसके कारण राहेल का स्वागत करने में उन्हें विशेष आनंद आया होगा। इसी कारण उन्होंने गुएरमांटे परिवार के एक सिद्धांत को दोहराया, अर्थात्, उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि वे आपस में झगड़ा या शोक नहीं कर सकते थे। यह एक प्रकार की "यह मेरा काम नहीं है" वाली स्वतंत्रता थी, जिसे उन्होंने एम. डी चार्लस के संबंध में अपनाना उचित समझा था, क्योंकि यदि वे उनका साथ देते, तो उनका हर किसी से झगड़ा हो जाता। राहेल की बात करें तो, अगर उसने डचेस से दोस्ती करने के लिए वाकई काफी मेहनत की थी (वह मेहनत जिसे डचेस उसके बनावटी तिरस्कार और दिखावटी अशिष्टता में नहीं समझ पाई थी, जिसके कारण उसे लगा कि अभिनेत्री बिल्कुल भी घमंडी नहीं है), तो निस्संदेह यह कठोर बोहेमियन लोगों द्वारा समाज के लोगों के प्रति दिखाए जाने वाले आकर्षण के कारण हुआ होगा, जो बोहेमियन लोगों के समाज के लोगों के प्रति आकर्षण के समानांतर है। यह दोहरी प्रतिक्रिया राजनीतिक व्यवस्था में उन देशों द्वारा दिखाई गई पारस्परिक जिज्ञासा और सहयोगी बनने की इच्छा के अनुरूप है जिन्होंने एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध लड़ा है। लेकिन डचेस से दोस्ती करने की राहेल की इच्छा का एक और भी अजीब कारण हो सकता है। मैडम डी गुएरमांटेस के घर में और उन्हीं से उसे एक बार सबसे बड़ा अपमान सहना पड़ा था। राहेल भूली नहीं थी, हालांकि धीरे-धीरे उसने इसे माफ कर दिया था, लेकिन डचेस को इससे जो अद्वितीय प्रतिष्ठा मिली थी, वह उसकी नजरों में कभी मिट नहीं सकती थी। जिस वार्तालाप से मैं गिल्बर्ट का ध्यान आकर्षित करना चाहता था, सौभाग्यवश वह बाधित हो गया, क्योंकि घर की मालकिन राहेल को लेने आई थी, क्योंकि उसके पाठ का समय आ गया था, इसलिए वह डचेस को छोड़कर मंच पर आ गई।

इन घटनाओं के बीच पेरिस के दूसरे छोर पर एक बिलकुल अलग तरह का नजारा देखने को मिल रहा था। ला बर्मा ने अपनी बेटी और दामाद के सम्मान में कुछ लोगों को चाय पर बुलाया था, लेकिन मेहमान आने में कोई जल्दी नहीं दिखा रहे थे। यह जानकर कि राहेल प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पर कविता पाठ करने वाली थीं (जिससे ला बर्मा को बहुत बड़ा झटका लगा, क्योंकि वह एक महान कलाकार थीं और राहेल अभी भी उनके लिए एक दरबारी थीं जिन्हें छोटी भूमिकाएँ दी जाती थीं, क्योंकि सेंट-लूप उनके स्टेज के कपड़ों का खर्च उठाते थे, उन नाटकों में जिनमें ला बर्मा मुख्य भूमिका निभाती थीं), उन्हें और भी ज्यादा झटका तब लगा जब शहर में यह खबर फैली कि निमंत्रण प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के नाम से भेजे गए थे, लेकिन असल में राहेल ही वहाँ मेहमानों का स्वागत कर रही थीं। ला बर्मा ने अपने कुछ वफादार दोस्तों को बार-बार पत्र लिखकर कहा कि वे उनकी चाय पार्टी में जरूर आएं, क्योंकि वे जानते थे कि वे भी प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के दोस्त थे जब वह श्रीमती वर्दुरिन थीं। लेकिन घंटे बीतते गए और कोई नहीं आया। जब ब्लोच को जाने के लिए कहा गया तो उसने भोलेपन से जवाब दिया: "नहीं, मैं प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ जाना पसंद करूँगा।" और, अफसोस, बाकी सभी ने भी ऐसा ही करने का मन बना लिया था। ला बेरमा, एक जानलेवा बीमारी से ग्रसित थीं, जिसके कारण वे बहुत कम मौकों पर ही समाज में जा पाती थीं। उनकी हालत और बिगड़ गई थी, क्योंकि अपने बीमार और आलसी दामाद द्वारा बेटी की विलासिता की माँग पूरी न कर पाने के कारण, वह फिर से मंच पर जाने लगी थीं। वह जानती थीं कि वह अपना जीवन छोटा कर रही हैं, लेकिन उन्हें केवल अपनी बेटी को खुश करने की चिंता थी, जिसे उनकी प्रसिद्धि का बहुत सम्मान प्राप्त था, और अपने दामाद को भी, जिससे वह नफरत करती थीं लेकिन उसकी

चापलूसी भी करती थीं, क्योंकि वह जानती थीं कि उनकी बेटी उसे बहुत प्यार करती है, और उन्हें डर था कि अगर उन्होंने उसे नहीं मनाया, तो वह बदले की भावना से उन्हें अलग कर देगा। ला बेरमा की बेटी, जो पूरी तरह से क्रूर नहीं थी और अपनी माँ का इलाज कर रहे डॉक्टर द्वारा गुप्त रूप से पसंद की जाती थी, इस बात से सहमत हो गई कि फ्रेड्रे के ये प्रदर्शन बीमार माँ के लिए बहुत खतरनाक नहीं थे। एक तरह से उसने डॉक्टर को ऐसा कहने पर मजबूर कर दिया था और डॉक्टर द्वारा मना की गई कई बातों में से केवल वही बात मानी थी जिसे उसने अनदेखा किया था; वास्तव में डॉक्टर ने कहा था कि ला बर्मा के प्रदर्शन में कोई बुराई नहीं है, अपनी प्रेमिका को खुश करने के लिए, और शायद अज्ञानता के कारण भी, यह जानते हुए कि बीमारी लाइलाज है, इस सिद्धांत पर कि बीमारों के कष्टों को कम करने से लाभ होता है तो आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है, शायद मूर्खतापूर्ण ढंग से यह सोचकर भी कि इससे ला बर्मा स्वयं प्रसन्न होगी और इसलिए उसका भला होगा, एक मूर्खतापूर्ण धारणा जिसमें उसने खुद को सही ठहराया जब ला बर्मा के बच्चों द्वारा उसे एक बक्सा भेजा गया जिसके लिए उसने अपने सभी मरीजों को अधर में छोड़ दिया था, और उसने उसे मंच पर उतनी ही जीवंत पाया जितनी वह अपने घर में मरणासन्न दिखाई देती थी। और वास्तव में, हमारी आदतें काफी हद तक हमारे शरीर को भी ऐसे जीवन के अनुकूल बना देती हैं जो पहले असंभव लगता था। हम सभी ने एक कमजोर दिल वाले बूढ़े सर्कस कलाकार को ऐसे करतब करते देखा है जिन्हें देखकर कोई विश्वास नहीं कर सकता कि उसका दिल सहन कर पाएगा। ला बेरमा भी उतनी ही अनुभवी रंगमंच कलाकार थीं, जिनके अंग अभिनय के इतने अनुकूल हो गए थे कि विवेक को दरकिनार करते हुए, वे दर्शकों को बिना पता चले, एक काल्पनिक तंत्रिका संबंधी बीमारी से पीड़ित होने का भ्रम पैदा कर

सकती थीं। हिप्पोलिटे की घोषणा के दृश्य के बाद, हालांकि ला बेरमा उस भयानक रात को भली-भांति जानती थीं, जिसमें वे लौट रही थीं, उनके प्रशंसकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया और उन्हें पहले से कहीं अधिक सुंदर घोषित किया। वे भयानक पीड़ा की स्थिति में लौटीं, लेकिन अपनी बेटी के लिए नोट लाने को लेकर खुश थीं, जिन्हें वे गलियों में पली-बढ़ी बच्ची की चंचलता से अपनी मोजे में छिपाकर रखती थीं और फिर गर्व से उन्हें निकालती थीं, एक मुस्कान या चुंबन की उम्मीद में। दुर्भाग्य से, इन नोटों से दामाद और बेटी ने अपनी मां के बगल वाले घर में कुछ नई सजावट ही करवाई, जिसके परिणामस्वरूप लगातार हथौड़ों की आवाज से उस महान त्रासदी कलाकार की नींद भंग हो रही थी, जिसकी उन्हें बहुत आवश्यकता थी। फैशन के बदलते रुझानों और श्रीमान डी एक्स या डी वाई की पसंद के अनुरूप, जिनका वे स्वागत करने की आशा कर रहे थे, उन्होंने घर के हर कमरे को फिर से सजाया। ला बर्मा को यह एहसास हो गया कि नींद, जो अकेले उनके कष्टों को शांत कर सकती थी, उनसे दूर हो गई है, इसलिए उन्होंने फिर कभी न सोने का निश्चय कर लिया, हालांकि उनके मन में उन दिखावटी चीजों के प्रति एक गुप्त तिरस्कार था जो उनकी मृत्यु को शीघ्र कर रही थीं और उनके अंतिम दिनों को यातनापूर्ण बना रही थीं। निःसंदेह, वह फैशन के ऐसे फरमानों से घृणा करती थीं क्योंकि उनमें उन चीजों के प्रति स्वाभाविक आक्रोश होता है जो हमें हानि पहुँचाती हैं और जिनसे हम बच नहीं सकते। लेकिन यह इसलिए भी था क्योंकि अपने भीतर की प्रतिभा से अवगत होकर, उन्होंने अपनी युवावस्था में ही उनकी निरर्थकता का अहसास कर लिया था और उस परंपरा के प्रति वफादार रहीं जिसका उन्होंने हमेशा सम्मान किया था और जिसकी वह स्वयं अवतार थीं, जिसने उन्हें चीजों और लोगों को उसी तरह आंकने पर मजबूर किया जैसे वह

तीस साल पहले करतीं—उदाहरण के लिए, राहेल को उस फैशनेबल अभिनेत्री के रूप में नहीं, बल्कि उस छोटी वेश्या के रूप में, जैसी वह कभी थीं। वास्तव में, ला बर्मा अपनी बेटी से बेहतर नहीं थीं; यह उनकी वंशानुगतता और प्रशंसा के प्रभाव से ही था कि उनकी बेटी को उनका अहंकार, निर्मम उपहास और अचेतन क्रूरता मिली थी। लेकिन, ला बर्मा ने अपनी बेटी को अपने दोषों से भर कर खुद को बचा लिया था। और अगर ला बर्मा की बेटी के घर में काम करने वाले लोग न भी होते, तो भी वह अपनी माँ को जवानी के उस निर्मम और गैर-जिम्मेदार आकर्षण से थका देती, जो बुढ़ापे को आत्मसात करने के पागलपन से भर देता है। हर दिन दोपहर के भोजन की पार्टी होती थी और वे ला बर्मा को स्वार्थी समझते अगर वह उन्हें उस आनंद से वंचित कर देतीं, या यहाँ तक कि वहाँ मौजूद भी नहीं होतीं, क्योंकि वे प्रतिष्ठित माँ की जादुई उपस्थिति पर भरोसा करते थे, जो बड़ी मुश्किल से नए सामाजिक संबंध बनाती थी, जिन्हें जबरदस्ती लाना पड़ता था। वे इन नए परिचितों को कहीं और किसी पार्टी में ला बर्मा को लाने का "वादा" करते थे ताकि उन्हें "शिष्टता" दिखा सकें। और बेचारी माँ, जो अपने भीतर घर कर चुकी मृत्यु से गंभीर संवाद में मशगूल थी, को उठकर बाहर जाना पड़ा। दरअसल, उस समय रेजेन अपनी प्रतिभा के चरम पर विदेशों में ज़बरदस्त सफलता के साथ प्रदर्शन कर रही थी और दामाद, ला बर्मा को फीका पड़ने से बचाने के लिए चिंतित था, इसलिए वह परिवार के लिए भी उतनी ही प्रसिद्धि चाहता था और ला बर्मा को ऐसे दौरों पर जाने के लिए मजबूर कर रहा था, जिनके दौरान उसे मॉर्फिया के इंजेक्शन लगवाने पड़ते थे, जो उसकी गुर्दों की स्थिति के कारण किसी भी क्षण उसकी मृत्यु का कारण बन सकते थे। फैशन और सामाजिक प्रतिष्ठा का वही आकर्षण राजकुमारी डी गुएरमांटेस की पार्टी के दिन एक एयर-पंप की तरह काम कर रहा था और ला बर्मा

के सबसे वफादार प्रशंसकों को हाइड्रोलिक सक्शन की शक्ति से वहाँ खींच लाया था, जबकि उसके अपने घर में पूर्ण शून्य और मृत्यु का सन्नाटा था। एक युवक यह सोचकर आया था कि ला बर्मा की पार्टी उतनी ही शानदार होगी या नहीं। जब उसने समय बीतते देखा और महसूस किया कि सबने उसे भुला दिया है, तो उसने चाय मंगवाई और मेज पर ऐसे बैठ गई जैसे किसी अंतिम संस्कार में बैठी हो। ला बेरमा के चेहरे पर अब उसकी कोई झलक नहीं थी, जिसकी तस्वीर ने मुझे बहुत पहले उपवास की एक शाम को इतना भावुक कर दिया था; जैसा कि लोग कहते हैं, उसके चेहरे पर मृत्यु लिखी हुई थी। इस समय वह सचमुच एरेक्थियम के संगमरमर जैसी लग रही थी। उसकी कठोर नसें आधी पत्थर जैसी जम गई थीं, उसके गालों पर खनिज जैसी कठोरता के साथ लंबी-लंबी लकीरें बनी हुई थीं। उसकी मरती हुई आँखें उस भयानक पत्थर जैसे मुखौटे के विपरीत अपेक्षाकृत जीवंत थीं और पत्थरों के बीच सोए हुए साँप की तरह मंद चमक रही थीं। फिर भी, वह युवक जो शिष्टाचारवश मेज पर बैठा था, लगातार समय देख रहा था, क्योंकि वह गुएरमांटेस के घर पर चल रही शानदार पार्टी की ओर आकर्षित था। ला बेरमा के मन में उन दोस्तों के लिए एक शब्द भी शिकायत नहीं थी जिन्होंने भोलेपन से यह सोचकर उसे छोड़ दिया था कि उसे पता नहीं होगा कि वे गुएरमांटेस के घर गए हैं। वह बस इतना बुदबुदाई: "सोचो, रेचल प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर पार्टी दे रही है; ऐसा नज़ारा देखने के लिए पेरिस आना ही पड़ेगा!" और चुपचाप, गंभीर धीमी गति से, वर्जित केक खाने लगी, मानो किसी अंतिम संस्कार में भाग ले रही हो। चाय पार्टी और भी निराशाजनक इसलिए थी क्योंकि दामाद इस बात से बहुत नाराज़ था कि रेचल, जिसे वह और उसकी पत्नी अच्छी तरह जानते थे, ने उन्हें आमंत्रित नहीं किया था। उसकी निराशा और भी बढ़ गई क्योंकि

आमंत्रित युवक ने उससे कहा कि वह रेचल को अच्छी तरह जानता है, और अगर वह तुरंत गुएरमांटेस के घर जाए, तो वह उससे आखिरी समय में उस तुच्छ जोड़े को आमंत्रित करने के लिए कह सकता है। लेकिन ला बर्मा की बेटी जानती थी कि उसकी माँ रेचल को कितना नीचा समझती है और उस पूर्व वेश्या से निमंत्रण माँगना उसे जान से मारने के बराबर होता, इसलिए उसने युवक और अपने पति से कहा कि ऐसा करना नामुमकिन है। लेकिन चाय के दौरान उसने मनोरंजन से वंचित और अपनी उस उबाऊ माँ से ऊबकर अपना बदला लिया। बाद वाली ने अपनी बेटी की नाराज़गी को अनदेखा करने का नाटक किया और बीच-बीच में अपने इकलौते मेहमान, उस नौजवान से धीमी आवाज़ में कुछ दोस्ताना शब्द कहे। लेकिन जल्द ही वह बवंडर, जो सबको गुएरमांटे के घर ले जा रहा था और मुझे भी वहाँ ले गया था, हावी हो गया; वह उठा और चला गया, फ्रेड्रे को या मौत को, पता नहीं कौन, अपनी बेटी और दामाद के साथ अंतिम संस्कार के केक खाने के लिए छोड़कर।

गिलबर्ट और मेरी बातचीत राहेल की आवाज़ से बाधित हो गई, जो अभी-अभी खड़ी हुई थी। उसका प्रदर्शन बुद्धिमत्तापूर्ण था, क्योंकि उसने कविता की एकता को पाठ से अलग, पूर्व-विमीय मान लिया था और ऐसा लग रहा था मानो हम उसका केवल एक अंश सुन रहे हों, जैसे कि हम कुछ क्षणों के लिए किसी कलाकार को सड़क पर चलते हुए सुन रहे हों। लेकिन श्रोता उस महिला को घुटने मोड़ते और बाहें फैलाते देखकर चकित रह गए, मानो वह उनमें किसी अदृश्य सत्ता को थामे हुए हो, फिर अचानक उसके पैर टेढ़े हो गए और वह विनती भरे स्वर में बहुत ही परिचित पंक्तियाँ सुनाने लगी।

लगभग सभी को पता एक कविता की घोषणा से संतोष मिला था। लेकिन जब उन्होंने कविता शुरू होने से पहले राहेल को खोई हुई सी इधर-

उधर देखते हुए, गिड़गिड़ाते हाथों को उठाते हुए और हर शब्द के साथ सिसकते हुए देखा, तो सभी को उसकी अतिशयोक्ति पर शर्मिंदगी और हैरानी हुई। किसी ने कभी सोचा भी नहीं था कि कविता पाठ करना इस तरह का होता है। लेकिन धीरे-धीरे इसकी आदत पड़ जाती है और शुरुआती असहजता भूल जाती है; व्यक्ति प्रस्तुति का विश्लेषण करने लगता है और मन ही मन पाठ के विभिन्न रूपों की तुलना करने लगता है ताकि वह खुद से कह सके कि कौन सा रूप बेहतर है और कौन सा बदतर। यह वैसा ही है जैसे किसी वकील को पहली बार किसी आम मुकदमे में आगे बढ़ते हुए, अपने गाउन की तहों से अपना हाथ निकालते हुए और धमकी भरे लहजे में बोलते हुए देखकर, कोई अपने पड़ोसियों की ओर देखने की हिम्मत नहीं करता। यह हास्यास्पद लगता है, लेकिन शायद, आखिरकार, यह शानदार है और देखने की उत्सुकता बनी रहती है। सभी ने एक-दूसरे को देखा, यह नहीं जानते हुए कि कैसा चेहरा बनाएँ; कुछ युवा, जिनका व्यवहार कम संयमित था, हँसी के ठहाकों को दबा लिया। प्रत्येक व्यक्ति अपने बगल वाले पर चुपके से नज़र डालता था, ठीक वैसे ही जैसे किसी फैशनेबल डिनर में कोई अपने से अधिक जानकार मेहमान को देखता है, जब उसकी थाली के किनारे कोई अजीब सा उपकरण, जैसे लॉबस्टर फोर्क या चीनी छानने वाला यंत्र, जिसे चलाना नहीं आता, देखता है, और यह उम्मीद करता है कि वह उसे इस्तेमाल कर रहा है ताकि उसकी नकल कर सके। ऐसा ही व्यवहार तब भी होता है जब कोई ऐसा श्लोक सुनाता है जिसे आप नहीं जानते लेकिन जानने का दिखावा करना चाहते हैं, और जैसे किसी दरवाजे पर किसी और को रास्ता देते हुए, आप उस श्लोक को पहचानने का आनंद किसी अधिक जानकार व्यक्ति को दे देते हैं, मानो आप उस पर कोई एहसान कर रहे हों। इस प्रकार, जो लोग सुन रहे थे, वे सिर झुकाए और उत्सुक

आँखों से दूसरों के हँसी, आलोचना, आँसू या ताली बजाने की पहल का इंतजार कर रहे थे। श्रीमती डी फोर्शेविल, जो विशेष रूप से गुएरमांटेस से आई थीं, जहाँ से डचेस को, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वस्तुतः निष्कासित कर दिया गया था, ने एक सजग और तनावपूर्ण मुद्रा अपनाई जो लगभग पूरी तरह से अप्रिय थी। ऐसा या तो यह दिखाने के लिए था कि वह सब कुछ जानती हैं और केवल एक सामाजिक महिला के रूप में उपस्थित नहीं हैं, या साहित्य में कम पारंगत लोगों के प्रति शत्रुता के कारण जो उनसे किसी और विषय पर बात कर सकते थे, या इसलिए कि वह पूरी एकाग्रता से यह तय करने की कोशिश कर रही थीं कि उन्हें यह पसंद है या नहीं, क्योंकि यद्यपि शायद उन्हें यह "दिलचस्प" लगा, लेकिन कुछ छंदों के पाठ का तरीका उन्हें "पसंद" नहीं आया। यह रवैया शायद राजकुमारी डी गुएरमांटेस द्वारा अधिक उचित रूप से अपनाया जाना चाहिए था। लेकिन चूंकि यह उनका अपना घर था और वह जितनी अमीर थीं उतनी ही कंजूस भी हो गई थीं, इसलिए उन्होंने राहेल को केवल पाँच गुलाब देने और उनके लिए तालियों की गड़गड़ाहट का इंतजाम करने का फैसला किया। उन्होंने उत्साह जगाया और अपनी खुशी की ऊँची आवाज़ों से सबका दिल जीत लिया। केवल इसी मामले में वह फिर से वर्दुरिन बन गईं; ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी खुशी के लिए कविताएँ सुन रही हो, सचमुच चाहती हो कि उन्हें केवल वही सुनाए और यह महज़ संयोग था कि पाँच सौ लोग उसकी अनुमति से गुप्त रूप से उसका आनंद लेने आए थे। हालाँकि, मैंने देखा, पर इससे मेरे अहंकार को कोई संतुष्टि नहीं मिली क्योंकि वह बूढ़ी और बदसूरत हो चुकी थी, कि राहेल ने मुझे चुपके से आँख मारी। पूरी कविता पाठ के दौरान, उसने अपनी सूक्ष्म लेकिन भावपूर्ण मुस्कान से मुझे यह संकेत दिया कि वह अपनी ओर आकर्षित होने के लिए मेरी सहमति मांग रही थी। लेकिन कुछ बूढ़ी औरतें, जो

कविता पाठ की आदी नहीं थीं, अपने पड़ोसियों से दबी आवाज़ में बोलीं: "क्या तुमने वह देखा?" उनका इशारा अभिनेत्री के उस हास्य-व्यंग्यपूर्ण अभिनय की ओर था जो उनके लिए कुछ ज़्यादा ही था। डचेस डी गुएरमांटेस ने राय में आए बदलाव को भांप लिया और कलाकार की सफलता सुनिश्चित करने के लिए, एक कविता के बीच में ही, जिसे वह समाप्त मान रही थी, "अद्भुत!" कह उठीं। इस पर कई मेहमानों ने प्रशंसा का भाव दिखाते हुए उस विस्मयबोध को और भी बल दिया। उनका उद्देश्य कविता पाठ की सराहना करना कम और डचेस के साथ उनके संबंधों को दर्शाना अधिक था। कविता समाप्त होने पर हम राहेल के पास थे, जिन्होंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को धन्यवाद दिया और चूंकि मैं भी उनके साथ था, इसलिए उन्होंने इस अवसर का लाभ उठाते हुए मुझसे विनम्रतापूर्वक बात की। तब मुझे एहसास हुआ कि एम. डी वोगौबर्ट के बेटे की भावुक निगाह, जिसे मैंने किसी और के लिए अभिवादन समझा था, के विपरीत राहेल की भावपूर्ण मुस्कान, निमंत्रण के बजाय, केवल मुझे पहचानने और उनके सामने झुकने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से थी। अभिनेत्री ने डचेस से नज़ाकत भरे लहजे में कहा, "मुझे यकीन है कि वह मुझे नहीं जानते।" मैंने दृढ़ता से कहा, "इसके विपरीत, मैंने आपको तुरंत पहचान लिया।"

यदि वह महिला ला फॉन्टेन की कुछ सबसे सुंदर कविताएँ सुनाते समय, चाहे सद्भावना से, मूर्खता से या शर्मिंदगी से, मेरे पास आने की असहजता के बारे में ही सोच रही थी, तो उसी समय ब्लोच केवल यही सोच रहा था कि वह कैसे किसी घिरे हुए शहर से भाग रहे व्यक्ति की तरह, यदि शवों के ऊपर से नहीं तो कम से कम अपने पड़ोसियों के पैरों पर से कूदकर, कविता पाठ समाप्त होते ही अभिनेत्री को बधाई दे, चाहे यह कर्तव्य की गलत भावना से हो या दिखावा करने की इच्छा से। "यह सुंदर था," उसने

उससे कहा और इस प्रकार अपनी इच्छा पूरी करने के बाद, उसने उसकी ओर पीठ फेर ली और अपनी सीट पर वापस बैठते समय इतना शोर किया कि राहेल को अपनी दूसरी कविता शुरू करने से पहले कई मिनट इंतजार करना पड़ा। यह 'ड्यूक्स पिजन्स' कविता थी और जब यह समाप्त हुई, तो श्रीमती डी मोनिउवल श्रीमती के पास गईं। डी सेंट-लूप, जो जानती थी कि अच्छी पढ़ी-लिखी है, लेकिन उसे याद नहीं था कि उसमें अपने पिता की सूक्ष्म और व्यंग्यात्मक बुद्धि है, ने उससे पूछा: "यह ला फॉन्टेन की कहानियों में से एक है, है ना?" उसे ऐसा लग रहा था, लेकिन वह निश्चित नहीं थी, क्योंकि वह कहानियों को थोड़ा-बहुत ही जानती थी और मानती थी कि वे बच्चों की कहानियाँ हैं जो समाज में सुनाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। निस्संदेह उस महिला ने सोचा होगा कि इतनी सफलता पाने के लिए कलाकार ने उनका व्यंग्य किया होगा। गिलबर्ट, जो तब तक भावहीन थी, ने इस धारणा की पुष्टि की, क्योंकि वह राहेल को नापसंद करती थी और यह जताना चाहती थी कि इस तरह की भाषा में कहानियों का कुछ भी शेष नहीं रह जाता, इसलिए उसका जवाब उस द्वेषपूर्ण लहजे में था जिससे आम लोग यह समझने में असमंजस में पड़ गए कि स्वान का असली मतलब क्या था। हालाँकि वह स्वान की बेटी थी, वह उससे कहीं अधिक आधुनिक थी—जैसे मुर्गी द्वारा पाली गई बत्तख—और आम तौर पर थोड़ी आलसी होने के कारण, वह यह कहकर संतुष्ट हो जाती: "मुझे यह बहुत मार्मिक लगा, एक मनमोहक संवेदनशीलता", लेकिन गिलबर्ट ने मैडम को जवाब दिया। स्वान की कल्पनाशील शैली में डी मोनरिउवल ने कहा, जिसे लोग अक्सर शाब्दिक रूप से लेने की गलती करते थे: "एक चौथाई दुभाषिए की कल्पना है, एक चौथाई पागलपन है, एक चौथाई अर्थहीन है, शेष ला फॉन्टेन का है," जिससे श्रीमती डी मोनरिउवल यह दावा करने में सक्षम हुईं कि लोग जो

सुन रहे थे वह ला फॉन्टेन का 'ड्यूक्स पिजन्स' नहीं था, बल्कि एक ऐसी रचना थी जिसका अधिक से अधिक एक चौथाई हिस्सा ला फॉन्टेन का था, जिस पर किसी को भी उनकी असाधारण अज्ञानता के कारण आश्चर्य नहीं हुआ।

लेकिन ब्लोच के दोस्तों में से एक के देर से आने के कारण, उन्होंने राहेल के प्रदर्शन का शानदार वर्णन किया, उसकी खूबियों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने में उन्हें एक अजीब सा आनंद मिला और उन्होंने किसी से आधुनिक भाषा शैली के बारे में बातें कीं, जबकि इससे उन्हें ज़रा भी संतुष्टि नहीं मिली थी। फिर ब्लोच ने अतिरंजित भावनाओं के साथ कर्कश आवाज़ में राहेल को फिर से बधाई दी, उन्हें प्रतिभाशाली बताया और अपने दोस्त का परिचय कराया, जिसने कहा कि उसने कभी किसी की इतनी प्रशंसा नहीं की। राहेल, जो अब समाज की उच्च वर्ग की महिलाओं को जानती थीं और अनजाने में उनकी नकल करती थीं, ने जवाब दिया: "मैं आपकी प्रशंसा से प्रसन्न और सम्मानित महसूस कर रही हूँ।" ब्लोच के दोस्त ने राहेल से पूछा कि उन्हें ला बेर्मा कैसी लगी। "बेचारी औरत! लगता है वो गरीबी की हालत में है। मैं ये नहीं कहूँगी कि उसमें कोई प्रतिभा नहीं थी, हालाँकि उसकी प्रतिभा असल में प्रतिभा नहीं थी, क्योंकि असल में उसे डरावनी चीज़ें ही पसंद थीं, लेकिन वो वाकई काम की थी, वो जोश से भरी हुई थी और एक नेक और उदार इंसान थी, जिसने दूसरों के लिए खुद को बर्बाद कर लिया। उसने लंबे समय से कुछ नहीं कमाया है क्योंकि अब जनता को उसके अभिनय में कोई दिलचस्पी नहीं रही। सच कहूँ तो," उसने हँसते हुए कहा, "मुझे आपको बताना होगा कि मेरी उम्र इतनी कम थी कि मैं उसके आखिरी दौर तक उसे सुन नहीं पाई, जब मैं राय बनाने के लिए बहुत छोटी थी।" "क्या वो कविताएँ अच्छी तरह सुनाती थी?" ब्लोच की दोस्त ने उसकी तारीफ़ करने के लिए ये सवाल पूछा: "इस बारे

में," उसने जवाब दिया, "वो एक पंक्ति भी नहीं सुना सकती थी, वो गद्य, चीनी, वोलापुक, जो भी आपको पसंद हो, कविता को छोड़कर सब कुछ सुनाती थी। इसके अलावा, जैसा कि मैं आपको बता रही हूँ, मैंने उसे मुश्किल से ही सुना है और वो भी बिल्कुल आखिरी समय में," अपनी जवानी दिखाने के लिए, "लेकिन मुझे बताया गया है कि पहले भी उसकी हालत कोई बेहतर नहीं थी, बल्कि इसके उलट थी।"

मुझे यह अहसास हुआ कि समय बीतने से कलाओं में प्रगति होना आवश्यक नहीं है। और जिस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी का एक लेखक, जिसे फ्रांसीसी क्रांति, वैज्ञानिक खोजों और युद्ध का ज्ञान नहीं था, उसी काल के दूसरे लेखक से श्रेष्ठ हो सकता है, और जिस प्रकार फागन शायद डु बोल्बोन के समान ही महान चिकित्सक थे (यहाँ प्रतिभा की श्रेष्ठता ज्ञान की कमी को पूरा करती है), उसी प्रकार ला बर्मा राहेल से सौ गुना अधिक महान थीं और समय ने उन्हें एल्स्टिर के साथ शीर्ष स्थान पर रखकर उनकी प्रतिभा को अमर कर दिया।

सेंट-लूप की पूर्व प्रेमिका द्वारा ला बेर्मा का उपहास करना कोई आश्चर्य की बात नहीं है; युवावस्था में तो वह ऐसा करती ही होगी, तो अब क्यों नहीं करेगी? मान लीजिए एक उच्च बुद्धि और मिलनसार स्वभाव वाली समाज की महिला अभिनेत्री बन जाती है, अपने नए पेशे में अपार प्रतिभा दिखाती है और उसे हर तरह की सफलता मिलती है। कुछ समय बाद यदि कोई उसके साथ हो, तो वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाएगा कि वह ऐसी भाषा बोल रही है जो उसकी अपनी नहीं बल्कि रंगमंच के लोगों की है, वह अपने सहकर्मियों के प्रति उनके विशिष्ट प्रकार के असभ्य व्यवहार को अपना लेती है और उन सभी आदतों को अपना लेती है जो तीस वर्षों से मंच पर काम कर रहे लोगों में होती हैं। राहेल ने भी समाज में न रहते हुए भी ऐसा ही व्यवहार किया।

श्रीमती डी गुएरमांटेस, अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में, नई जिज्ञासाओं से घिरी हुई थीं। समाज के पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा था। जैसा कि हम देख चुके हैं, समाज में सर्वोच्च स्थान पर होना उनके लिए उतना ही स्पष्ट था जितना पृथ्वी के ऊपर नीले आकाश की ऊँचाई। उन्हें यह आवश्यक नहीं लगा कि वे उस पद को बरकरार रखें जिसे वे अटूट मानती थीं। दूसरी ओर, वे अपना पठन-पाठन बढ़ाना और अधिक प्रदर्शनों में भाग लेना चाहती थीं। पहले की तरह, सभी विशिष्ट और प्रतिष्ठित लोग छोटे से बगीचे में सुगंधित हवाओं और पराग के बादलों के बीच संतरे का रस पीने के लिए इकट्ठा होते थे, और शाम को समाज की सर्वोत्तम चीजों के प्रति उनके ज्ञान और रुचि से मनोरंजन करते थे, अब एक अलग तरह की भूख ने उन्हें किसी साहित्यिक विवाद के कारणों को जानने, उसके नायकों और अभिनेत्रियों से मिलने के लिए प्रेरित किया। उनके थके हुए मन को एक नए प्रेरक की आवश्यकता थी। ऐसे लोगों से जान-पहचान बनाने के लिए, अब वह उन महिलाओं से संपर्क साधने लगी जिनसे पहले वह ताश के पत्ते भी नहीं बदलती थीं, और जो डचेस से मिलने की उम्मीद में किसी न किसी पत्रिका के निर्देशक के साथ अपनी घनिष्ठता का बखान करती थीं। पहली अभिनेत्री जिसे उसने आमंत्रित किया, वह खुद को एक अद्भुत सामाजिक परिवेश में प्रवेश पाने वाली एकमात्र महिला मानती थी, जो दूसरी अभिनेत्री को तब कम अद्भुत लगा जब उसने देखा कि उससे पहले कौन-कौन आ चुका था। डचेस को लगता था कि उसकी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है क्योंकि उसे अपनी कुछ शाम की पार्टियों में रॉयल्टी मिलती थी। वास्तव में, वह, जो बेदाग वंश की एकमात्र प्रतिनिधि थी, स्वयं जन्म से गुएरमांटेस थी, जो "डचेस डी गुएरमांटेस" के बजाय "गुएरमांटेस" के नाम से हस्ताक्षर कर सकती थी, जो अपनी भाभी के लिए किसी असीम रूप से अनमोल व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती थी,

जैसे जल से बचाया गया मूसा, मिस्र में भागा हुआ ईसा मसीह, मंदिर से भागा हुआ लुई 17वां, शुद्धतम नस्ल की, अब उसने यह सब त्याग दिया, निस्संदेह, मानसिक पोषण की उस जन्मजात आवश्यकता के लिए जिसने मैडम के सामाजिक अलगाव का कारण बना। डी विलेपारिसिस की तरह, वह खुद भी एक तरह से मैडम डी विलेपारिसिस बन चुकी थीं, जिनके घर में घमंडी औरतें किसी से मिलने से डरती थीं और नौजवान, बिना यह जाने कि पहले क्या हुआ था, उनकी बनाई हुई बात को देखकर, उन्हें घटिया किस्म की, बुरे दौर की, नीची जाति की गुरमांटेस समझ बैठते थे। अपने नए माहौल में भी वह अपनी सोच से कहीं ज़्यादा वैसी ही रहीं जैसी पहले थीं और यह मानती रहीं कि ऊब जाना बौद्धिक श्रेष्ठता का प्रतीक है। उन्होंने इस भावना को इतनी उग्रता से व्यक्त किया कि उनकी आवाज़ कर्कश लगने लगी। जब मैंने उनसे ब्रिचोट के बारे में बात की, तो उन्होंने कहा: "उन्होंने मुझे बीस साल तक काफी ऊबा दिया है," और जब मैडम डी कैम्ब्रेमर ने उन्हें "शोपेनहावर ने संगीत के बारे में जो कहा है" उसे दोबारा पढ़ने का सुझाव दिया, तो उन्होंने उस टिप्पणी पर तीखी प्रतिक्रिया दी: "दोबारा पढ़ो! वह तो अनमोल है! कृपया वह मत पढ़ो।" तब बूढ़े एल्बोन मुस्कुराए क्योंकि उन्होंने गुरमांटेस की भावना के एक रूप को पहचान लिया था।

"लोग जो चाहें कह सकते हैं, यह प्रशंसनीय है, इसमें सही भाव और चरित्र है, यह एक बुद्धिमान प्रस्तुति है, किसी ने भी कभी इस तरह के छंद नहीं पढ़े," डचेस ने राहेल के बारे में कहा, इस डर से कि गिलबर्टे उनका उपहास न करे। गिलबर्टे अपनी चाची से टकराव से बचने के लिए दूसरे समूह में चली गईं, जो वास्तव में राहेल के बारे में बात करते समय बेहद नीरस हो जाती थीं। लेकिन यह देखते हुए कि सर्वश्रेष्ठ लेखक उम्र बढ़ने या अत्यधिक लेखन के कारण अपनी प्रतिभा खो देते हैं, समाज की

महिलाओं में उम्र के साथ हास्यबोध कम होना स्वाभाविक है। स्वान को डचेस डी गुएरमांटेस की तीखी बुद्धि में प्रिंसेस डेस लाउम्स की कोमलता की कमी खलती दिखी। जीवन के अंतिम पड़ाव में, थोड़ी सी भी मेहनत से थक जाने वाली श्रीमती डी गुएरमांटेस ने असंख्य मूर्खतापूर्ण टिप्पणियाँ कीं। यह सच है कि कभी-कभी, यहाँ तक कि आज दोपहर भी, वह फिर से वही महिला बन गईं जिन्हें मैं कभी जानती थी और उन्होंने समाज के मामलों पर अपने पुराने जोश के साथ बात की। लेकिन उन चमकदार शब्दों और मोहक आकर्षण के बावजूद, जिन्होंने इतने वर्षों तक पेरिस के सबसे प्रतिष्ठित पुरुषों को अपने वश में रखा था, उनकी हाज़िरजवाबी मानो बेजान सी थी। जब वह कुछ मज़ाकिया कहने वाली होतीं, तो उतने ही सेकंड रुकतीं जितने पहले रुकती थीं, लेकिन जब मज़ाक निकलता, तो उसका कोई मतलब नहीं रह जाता था। हालांकि, बहुत कम लोगों ने इस बात पर ध्यान दिया। उनकी बातचीत की निरंतरता ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उनमें अभी भी वही जोश बाकी है, जैसे कुछ लोगों को खास तरह के केक पसंद होते हैं और वे उन्हें खरीदने के लिए उसी दुकान पर जाते हैं, भले ही वे खराब हो गए हों। युद्ध के दौरान भी डचेस में इस गिरावट के लक्षण दिखाई देने लगे थे। अगर कोई संस्कृति शब्द का इस्तेमाल करता, तो वह रुक जातीं, मुस्कुरातीं, उनका खूबसूरत चेहरा चमक उठता और वह कहतीं: "ला के के के कुल्टुर" और अपने उन दोस्तों को, जो गुएरमांटे परिवार के कट्टर प्रशंसक थे, ज़ोर से हँसा देतीं। यह तो वही सांचा, वही लहजा, वही मुस्कान थी जिसने पहले बर्गोट को प्रसन्न किया था। अगर बर्गोट जीवित होते, तो वे अपने संक्षिप्त वाक्य, अपने विस्मयादिबोधक शब्द, अपने रहस्यमयी क्षण, अपने विशेषण, सब कुछ वैसे ही रखते। लेकिन नए लोग कभी-कभी अचंभित हो जाते थे और अगर वे किसी ऐसे दिन आ जाते जब वह न तो पूरी तरह से होश में होतीं,

तो वे कहते, "वह कितनी मूर्ख है।" इसके अलावा, डचेस ने अपने निम्न स्तर में उतरने का समय इस तरह चुना कि इसका असर उनके परिवार के उन सदस्यों पर न पड़े जिनसे उन्हें कुलीन प्रतिष्ठा प्राप्त थी। कला की संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाते हुए, यदि वह किसी मंत्री या चित्रकार को रंगमंच पर आमंत्रित करतीं और वह उनसे भोलेपन से पूछता कि क्या उनकी भाभी या पति दर्शक दीर्घा में हैं, तो डचेस अपनी धृष्टता से उन्हें डरा देतीं और तिरस्कारपूर्वक उत्तर देतीं: "मुझे नहीं पता। जब मैं बाहर जाती हूँ तो मुझे अपने परिवार की परवाह नहीं होती। राजनेताओं और कलाकारों के लिए मैं विधवा हूँ।" इस तरह वह अति-उल्लेख करने वाले नवधनी को एम. डी मार्सैंट्स और बेसिन से फटकार और खुद को फटकार से बचा लेतीं।

मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को बताया कि मैं एम. डी चार्लस से मिली थी। उन्होंने उन्हें उनकी वास्तविक स्थिति से कहीं अधिक बिगड़ा हुआ समझा, क्योंकि समाज में लोगों की यह आदत होती है कि वे अपने आस-पास के लोगों में, जिनमें बुद्धि लगभग एक समान होती है, और एक ही व्यक्ति में जीवन के विभिन्न चरणों में भी अंतर देखते हैं। उन्होंने आगे कहा: "वे हमेशा मेरी सास की हूबहू छवि थे और यह समानता अब पहले से कहीं अधिक स्पष्ट है।" इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। हम जानते हैं कि कुछ स्त्रियाँ कुछ पुरुषों में पूरी तरह से प्रतिबिंबित होती हैं, केवल लिंग का अंतर होता है। हम इसे गलती की सज़ा नहीं कह सकते, क्योंकि लिंग व्यक्तित्व को प्रभावित करता है और नारीवाद स्त्रीत्व में बदल जाता है, संकोच संवेदनशीलता में, इत्यादि। इससे किसी पुरुष का चेहरा, भले ही दाढ़ी वाला हो, उसकी माँ के चित्र से मेल खाने वाली रेखाओं से प्रभावित होने से नहीं रुकता। बूढ़े एम. डी चार्लस का केवल एक खंडहर ही बचा था, लेकिन चर्बी और चावल के पाउडर की परतों के नीचे एक सुंदर स्त्री

की शाश्वत युवावस्था के अवशेष पहचाने जा सकते थे।
“आपको देखकर मुझे कितनी खुशी हो रही है, यह मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती,” डचेस ने आगे कहा, “अरे वाह, हम आखिरी बार कब मिले थे?” “मैडम डी'एग्रीजेंट के घर गई थी, जहाँ मैं अक्सर आपको देखा करती थी।” “अरे हाँ, बिल्कुल, मैं अक्सर वहाँ जाती थी, मेरी प्यारी सहेली, क्योंकि उस समय बेसिन को उनसे प्यार था। मैं हमेशा उनकी उस खास सहेली के साथ ही पाई जाती थी, क्योंकि वह मुझसे कहते थे: 'ध्यान रखना, उनसे मिलने जाना।' मुझे यह स्वीकार करना होगा कि जब उनकी भूख मिट जाती थी, तो वह मुझे इस तरह 'मिलने के लिए बुलाते' थे, जो थोड़ा परेशान करने वाला था। मुझे इसकी आदत हो गई थी, लेकिन सबसे थकाने वाला हिस्सा यह था कि उनके रिश्ते खत्म हो जाने के बाद भी मुझे उन्हें निभाना पड़ता था। यह बात मुझे हमेशा विक्टर ह्यूगो की कविता 'Emporte le bonheur et laisse–moi l'ennui' की याद दिलाती थी।” मैंने इसे मुस्कुराते हुए कविता की तरह स्वीकार कर लिया, लेकिन यह उचित नहीं था। कम से कम वह मुझे अपनी रखैलियों के बारे में बेवफ़ा होने की छूट तो दे सकता था; अपने हिसाब-किताब निपटाने में वह इतना मशगूल हो चुका था कि मुझे दोपहर में अपने लिए समय ही नहीं मिलता था। खैर, वे दिन आज के मुकाबले मीठे लगते हैं। मुझे यह अच्छा लग सकता है कि वह फिर से मेरे प्रति बेवफ़ा हो गया है क्योंकि इससे मुझे जवानी का एहसास होता है। लेकिन मुझे उसका पहले वाला अंदाज़ ज़्यादा पसंद था। शायद उसने इतने लंबे समय से ऐसा कुछ नहीं किया था कि उसे पता ही नहीं था कि इसे कैसे शुरू किया जाए। लेकिन फिर भी, हम दोनों की आपस में अच्छी बनती है। हम साथ में बातें करते हैं और एक-दूसरे को पसंद भी करते हैं।” डचेस ने यह इसलिए कहा क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं मैं यह न सोच लूँ कि वे पूरी तरह अलग

हो गए हैं और, जैसा कि लोग किसी के बहुत बीमार होने पर कहते हैं: “उसे अभी भी बातें करना पसंद है, मैं आज सुबह एक घंटे तक उसे पढ़कर सुना रही थी,” उन्होंने आगे कहा: “मैं उसे बता दूँगी कि आप यहाँ हैं, वह आपसे मिलना चाहेंगे,” और वह ड्यूक के पास चली गईं जो एक महिला से बात करते हुए सोफे पर बैठे थे। लेकिन जब उन्होंने अपनी पत्नी को अपनी ओर आते देखा, तो वे इतने गुस्से में दिखे कि उनके पास पीछे हटने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। "उनकी सगाई हो गई है; मुझे नहीं पता कि वे क्या कर रहे हैं, हम अभी देखेंगे," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, और मुझे स्थिति का जो भी अर्थ निकालना था, उसके लिए छोड़ दिया। ब्लोच हमारे पास आए और अपने अमेरिकी मित्र के नाम से पूछा कि वहाँ बैठी युवा डचेस कौन है। मैंने उन्हें बताया कि वह एम. डी ब्रेउटे की भतीजी हैं, जिनके बारे में ब्लोच, जिन्होंने उनका नाम कभी नहीं सुना था, जानकारी चाहते थे। "आह, ब्रेउटे!" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मेरी ओर देखते हुए कहा, "तुम्हें याद है! अरे वाह, कितना समय हो गया!" फिर ब्लोच की ओर मुड़ते हुए, "वह एक घमंडी व्यक्ति थे; उनके लोग मेरी सास के पास रहते थे। इसमें तुम्हारी दिलचस्पी नहीं होगी, यह मेरे पुराने दोस्त के लिए मजेदार है," उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, "पुराने दिनों में वह उनके बारे में सब कुछ जानते थे, जैसे मैं जानती थी।" ये शब्द और श्रीमती डी गुएरमांटेस के व्यवहार की कई बातें बीते समय की झलक दिखाती थीं। उनके दोस्त और विचार उस समय से इतने बदल गए थे कि अब वे अपने प्यारे बेबेल को घमंडी समझने लगी थीं। दूसरी ओर, बेबेल न केवल समय के साथ पीछे छूट गए थे, बल्कि एक बात जो मुझे समाज में प्रवेश करते समय समझ नहीं आई थी, और जिसे मैंने तब महसूस नहीं किया था जब मैं उन्हें पेरिस के उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक मानती थी जिनका नाम हमेशा उनके सामाजिक इतिहास से जुड़ा

रहेगा, जैसे लुई 14 के शासनकाल में कोलबर्ट का, उन्हें एक देहाती व्यक्ति के रूप में भी जाना जाता था, और इसी हैसियत से प्रिंसेस डेस लाउम्स का उनसे संबंध था। फिर भी, यह ब्रेओटे, अपनी कभी की चतुराई खो चुका था, एक ऐसे अतीत में सिमट गया था जिसने उसे पुराना साबित कर दिया था और यह भी कि डचेस और उसके करीबी लोग उसे पूरी तरह से भूल चुके थे। इसके बावजूद, डचेस और मेरे बीच एक ऐसा संबंध बन गया जिस पर मुझे ओपेरा कॉमिक में उस पहली शाम को कभी विश्वास नहीं हो सकता था जब वह मुझे अपनी समुद्री गुफा में एक समुद्री देवता की तरह दिखाई दिया था, क्योंकि उसे याद था कि मैं उसे जानता था, इसलिए मैं उसका दोस्त था, भले ही मैं उसके समान सामाजिक दायरे का न होता, लेकिन मैं वहां मौजूद अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक समय से उस दायरे में आता-जाता रहा था; उसे वह याद था, लेकिन फिर भी इतनी स्पष्टता से नहीं कि वह कुछ ऐसे विवरण याद रख सके जो उस समय मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे, कि मुझे गुएरमांटेस के ग्रामीण घर में आमंत्रित नहीं किया गया था और जब वह मैडम के पास आई थी तब मैं कॉम्ब्रे का एक साधारण बुर्जुआ ही था। परसेपीड के विवाह समारोह में, सेंट-लूप के तमाम अनुरोधों के बावजूद, उन्होंने ओपेरा कॉमिक में ब्रेओटे के साथ प्रस्तुति के बाद वाले वर्ष में मुझे अपने घर आमंत्रित नहीं किया। मेरे लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि ठीक उसी समय डचेस डी गुएरमांटेस का जीवन मुझे एक ऐसे स्वर्ग के समान प्रतीत हुआ जिसमें मैं प्रवेश नहीं कर सकता था, लेकिन उनके लिए यह वही उदासीन जीवन था जिसकी उन्हें आदत थी, और बाद में उनके घर पर मेरे अक्सर भोजन करने और उससे भी पहले उनकी चाची और भतीजे का मित्र होने के कारण, उन्हें अब याद नहीं था कि हमारी घनिष्ठता किस समय शुरू हुई थी और न ही उन्हें इस बात का एहसास था कि इसे कई

साल पहले शुरू करना कितना गलत था। क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता था मानो मैं श्रीमती को पहले से जानता था। उस अद्भुत गुएरमांटेस नाम की महिला, डी गुएरमांटेस, जिसने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में मेरा स्वागत सुनहरे अक्षरों वाले नाम से किया था, जब मैं केवल एक महिला के साथ भोजन कर रहा था, जो तब भी मेरे लिए अन्य महिलाओं से अधिक कुछ नहीं थी और जिसने मुझे नेरीड्स के जलमग्न साम्राज्य में उतरने के लिए नहीं, बल्कि अपनी चचेरी बहन के कमरे में शाम बिताने के लिए आमंत्रित किया था। "अगर आप ब्रेओटे के बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं, जो इसके लायक नहीं है," उसने ब्लोच से कहा, "मेरे दोस्त से पूछिए जो उससे सौ गुना बेहतर है। वह मेरे घर पर ब्रेओटे के साथ पचास बार भोजन कर चुका है। क्या आप उससे मेरे घर पर ही नहीं मिले थे? खैर, आप स्वान से वहीं मिले थे।" और मुझे उतना ही आश्चर्य हुआ कि उसने यह कल्पना की कि मैं एम. डी ब्रेओटे से उसके घर के अलावा कहीं और मिला होऊंगा और उसे जानने से पहले उस मंडली में आता-जाता रहा होऊंगा, जितना कि यह देखकर कि उसने यह कल्पना की कि मैं स्वान से पहली बार उसके घर पर मिला था। गिलबर्ट की तुलना में कम झूठ बोलते हुए, जब उसने कहा कि ब्रेउटे "मेरे पुराने पड़ोसियों में से एक थे; मुझे उनसे टैनसनविले के बारे में बात करना अच्छा लगता था," जबकि वे उन दिनों टैनसनविले में स्वान के घर नहीं जाते थे, मैं शायद यह कह सकती थी: "वे एक देहाती पड़ोसी थे जो अक्सर शाम को हमसे मिलने आते थे," स्वान के संदर्भ में, जिन्होंने वास्तव में गुएरमांटे परिवार से बिल्कुल अलग बातें याद कीं। "इसे समझाना थोड़ा मुश्किल है," उसने आगे कहा। "वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके लिए 'महामहिम' का बहुत महत्व था। उन्होंने गुएरमांटे परिवार के लोगों और मेरी सास और श्रीमती डी वारम्बोन के बारे में कई मज़ेदार किस्से सुनाए, इससे पहले कि वे प्रिंसेस डी पार्म की सेवा

में थीं। लेकिन अब श्रीमती डी वारम्बोन की परवाह कौन करता है? मेरी सहेली को इन सब बातों की जानकारी थी, लेकिन अब यह सब बीत चुका है, वे ऐसे लोग हैं जिनके नाम भुला दिए गए हैं और, सच कहें तो, वे जीवित रहने के लायक भी नहीं थे।" और मुझे एहसास हुआ, समाज की उस एकीकृत छवि के बावजूद, जहाँ वास्तव में सामाजिक संबंध अपने चरम पर होते हैं, जहाँ हर किसी के बारे में सब कुछ पता चल जाता है, फिर भी उसके कुछ ऐसे क्षेत्र रह जाते हैं जिनमें समय के साथ ऐसे बदलाव आते हैं जिन्हें वे लोग नहीं समझ पाते जो समाज में तब प्रवेश करते हैं जब उसका स्वरूप बदल चुका होता है। "श्रीमती डी वरामबोन एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व थीं जो अविश्वसनीय रूप से मूर्खतापूर्ण बातें कहती थीं," डचेस ने आगे कहा, समय के प्रभाव से उत्पन्न होने वाली उस समझ से परे कविता के प्रति असंवेदनशील, और केवल मेइल्हाक शैली के साहित्य और गुएरमांटेस की भावना के साथ आत्मसात करने योग्य मानवीय तत्वों को निकालने में रुचि रखते हुए, "एक समय उन्हें लगातार खांसी की गोलियां चबाने का जुनून था जिन्हें"—वह खुद ही हंस पड़ीं जब उन्हें वह नाम याद आया जो पहले इतना परिचित था, अब उन लोगों के लिए इतना अनजान था जिनसे वह बात कर रही थीं—"पास्टिल्स गेराउडेल।" 'श्रीमती डी वरामबोन,' मेरी सास ने उनसे कहा, "'अगर तुम ये गेराउडेल पास्टिल्स निगलती रहोगी, तो तुम्हें पेट दर्द हो जाएगा।'" "लेकिन, श्रीमती डचेस," श्रीमती डी वारम्बोन ने उत्तर दिया, "मैं अपने पेट को कैसे नुकसान पहुंचा सकती हूँ, क्योंकि वे श्वसन नलिकाओं में जाते हैं?" यह वही थीं जिन्होंने कहा था, "डचेस के पास इतनी सुंदर गाय है कि वह घोड़े जैसी दिखती है।" श्रीमती डी गुएरमांटेस श्रीमती डी वारम्बोन के बारे में सैकड़ों कहानियां सुनाती रहतीं, लेकिन ब्लोच की स्मृति में यह नाम श्रीमती डी वारम्बोन, एम. डी ब्रेउटे, प्रिंस डी एग्रीजेंट के उल्लेख से

हमारे भीतर जागृत होने वाली किसी भी भावना को नहीं जगाता था, जिन्होंने शायद इसी कारण से अपनी आँखों में एक ऐसा आकर्षण पैदा किया था जिसे मैं अतिरंजित जानता था लेकिन समझता था, हालांकि इसलिए नहीं कि मैंने इसे महसूस किया था, क्योंकि हमारी अपनी कमजोरियां और मूर्खताएं हमें दूसरों की कमजोरियों के प्रति अधिक उदार नहीं बनाती हैं, भले ही हमने उन्हें उजागर किया हो।

डचेस के मन में अतीत इतना बदल चुका था, या मेरे मन में जो सीमाएँ थीं, वे उनके मन में हमेशा से ही गायब थीं, कि मेरे लिए जो एक महत्वपूर्ण घटना थी, वह उनके लिए अनदेखी रह गई और उन्होंने मुझे एक ऐसा सामाजिक अतीत दिया जिसे उन्होंने बहुत दूर धकेल दिया। डचेस भी अतीत के उसी विचार को साझा करती थीं जो मैंने अभी-अभी ग्रहण किया था, और मेरे उस भ्रम के विपरीत जिसने इसे छोटा कर दिया था, उन्होंने इसे लंबा कर दिया, विशेष रूप से उस अस्पष्ट सीमा रेखा को ध्यान में न रखते हुए जो उस समय को दर्शाती है जब वह मेरे लिए केवल एक नाम थीं, मेरे प्रेम का पात्र थीं—और उस समय को जब वह समाज में किसी अन्य महिला की तरह एक साधारण महिला बनकर रह गई थीं। इसके अलावा, मैं उनके घर केवल उसी दूसरे दौर में गया था जब वह मेरे लिए एक अलग इंसान बन चुकी थीं। लेकिन ये अंतर उनकी नजरों से ओझल रहे और उन्हें यह ज्यादा अजीब नहीं लगा होगा कि मैं दो साल पहले उनके घर गया था क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि वह उस समय मेरे लिए एक अलग इंसान थीं, उनका व्यक्तित्व उनके लिए, मेरे जैसे, असंबद्ध नहीं था।

मैंने डचेस को बताया कि ब्लोच का मानना है कि आज पूर्व राजकुमारी डी गुएरमांटेस ही मेहमानों का स्वागत कर रही हैं। "यह मुझे उस पहली शाम की याद दिलाता है जब मैं राजकुमारी डी गुएरमांटेस के घर गई थी और

मुझे लगा था कि मुझे आमंत्रित नहीं किया गया है और वे मुझे बाहर निकाल देंगे, तब आपने लाल पोशाक और लाल जूते पहने थे।" "अरे वाह, कितना समय बीत गया!" उन्होंने उत्तर दिया, इस प्रकार समय के बीतने पर जोर देते हुए। उन्होंने उदास निगाहों से दूर देखा, लेकिन विशेष रूप से लाल पोशाक का जिक्र किया। मैंने उनसे उसका वर्णन करने को कहा, जो उन्होंने विनम्रता से किया। "आजकल ऐसी पोशाकें नहीं पहनी जातीं। तब ये फैशन में थीं।" "लेकिन यह सुंदर थी, है ना?" वह हमेशा कुछ भी ऐसा कहने से डरती थीं जो उनके हित में न हो। "हाँ, मुझे यह बहुत सुंदर लगी थी। यह अब फैशन में नहीं है, लेकिन फिर से होगी। सभी फैशन वापस आते हैं, पोशाक में, संगीत में, चित्रकला में," उन्होंने इस दर्शन में कुछ मौलिकता की कल्पना करते हुए जोर देकर कहा। बुढ़ापे की उदासी ने उन्हें एक ऐसी सुस्ती दी थी जो उनकी मुस्कान में छिपी हुई थी। "क्या आपको यकीन है कि वे लाल जूते थे; मुझे तो वे सोने के लगे थे?" मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मेरी याददाश्त बिल्कुल सटीक थी, लेकिन मैंने उन परिस्थितियों का विस्तार से वर्णन नहीं किया जिनके कारण मैं इतना निश्चित था। "आपको याद रखना कितना प्यारा है," उन्होंने कोमलता से कहा, क्योंकि महिलाएं अपनी सुंदरता को याद रखने वालों को आकर्षक कहती हैं, जैसे कलाकार अपनी कृतियों को याद रखने वालों को कहते हैं। इसके अलावा, अतीत चाहे कितना भी पुराना क्यों न हो, डचेस जैसी दृढ़ निश्चयी महिला उसे भूलने वाली नहीं होतीं। "क्या आपको याद है," उन्होंने मुझे अपनी पोशाक और जूतों को याद रखने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा, "बेसिन और मैं आपको उस शाम वापस लाए थे और आधी रात के बाद एक लड़की आपसे मिलने आई थी। बेसिन रात के उस समय आपके मेहमानों के आने पर खूब हँसा था।" मुझे वास्तव में याद था कि प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ शाम की पार्टी के बाद अल्बर्टीन उस रात मुझसे मिलने

आई थी। मुझे यह बात डचेस की तरह ही अच्छी तरह याद थी, जिनके प्रति अल्बर्टीन अब उतनी ही उदासीन थी जितनी वह मैडम के प्रति होती। अगर डी गुएरमांटेस को पता होता कि जिस युवती के कारण मैं उनके घर नहीं गया था, वह अल्बर्टाइन थी, तो क्या होता? हमारे दिलों से उन बेचारे मृतकों का गम मिट जाने के बहुत समय बाद भी, उनकी निर्जीव राख एक मिश्रण की तरह अतीत की घटनाओं में घुलमिल जाती है, और भले ही हम उनसे अब प्रेम न करते हों, जब हम उस कमरे, उस रास्ते, उस सड़क को याद करते हैं जहाँ वे रहते थे या जिस पर वे हमारे साथ चले थे, तो हम विवश हो जाते हैं, ताकि वह स्थान जहाँ वे रहते थे, खाली न रह जाए, उनके बारे में सोचने के लिए, भले ही हमें न तो कोई अफ़सोस हो, न ही हम उनका नाम लें, न ही उनकी पहचान करें। (श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उस लड़की की पहचान नहीं की जो उस शाम आने वाली थी, उन्होंने उसका नाम कभी नहीं जाना था और केवल समय और परिस्थितियों के कारण ही उसका ज़िक्र किया था।) ये जीवित रहने के अंतिम और सबसे कम वांछनीय रूप हैं।

यदि डचेस ने राहेल के बारे में बाद में जो राय व्यक्त की, वह अपने आप में उदासीन थी, तो भी मुझे उसमें दिलचस्पी थी क्योंकि उसने भी घड़ी के एक नए अध्याय की शुरुआत की थी। डचेस उस शाम की पार्टी को नहीं भूली थीं जिसमें राहेल मौजूद थीं, ठीक वैसे ही जैसे राहेल नहीं भूली थीं और उनकी याददाश्त में जरा भी बदलाव नहीं आया था। उन्होंने कहा, "मुझे आपको बताना होगा कि मुझे उनकी कविताएँ सुनना और उनकी सफलता देखना और भी अधिक रुचिकर लगता है, क्योंकि मैंने उन्हें उस समय खोजा, सराहा, संजोया और आगे बढ़ाया जब उन्हें नजरअंदाज किया जाता था और उन पर हँसा जाता था। मेरे प्रिय मित्र, आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि उन्हें पहली बार सार्वजनिक रूप से मेरे

घर पर सुना गया था। हाँ, जबकि मेरी नई चचेरी बहन जैसे सभी तथाकथित उन्नत लोग"—उन्होंने व्यंग्यपूर्वक प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की ओर इशारा किया, जो उनके लिए अभी भी श्रीमती थीं। वर्दुरिन ने कहा, "मैं उसे भूखा मरने देता, उसकी बात सुनने की ज़हमत भी नहीं उठाता। मैंने उसे दिलचस्प समझा और उसे अपने घर में सबसे समझदार श्रोताओं के सामने प्रस्तुति देने का सम्मान दिया। मैं कह सकता हूँ, हालाँकि यह मूर्खतापूर्ण और आडंबरपूर्ण लगता है, क्योंकि प्रतिभा को मूल रूप से संरक्षण की आवश्यकता नहीं होती, कि मैंने ही उसे आगे बढ़ाया। बेशक उसे मेरी ज़रूरत नहीं थी।" मैंने विरोध का इशारा किया और देखा कि श्रीमती डी गुएरमांटेस इसे सहर्ष स्वीकार करने को तैयार थीं। "आप स्पष्ट रूप से सोचते हैं कि प्रतिभा को समर्थन की आवश्यकता होती है? शायद, आखिरकार, आप सही हैं। आप वही दोहरा रहे हैं जो डुमास ने पहले मुझसे कहा था। इस मामले में, अगर मैं कुछ भी योगदान देता हूँ, चाहे वह कितना भी कम हो, प्रतिभा में नहीं, बल्कि उसके जैसी कलाकार की प्रतिष्ठा में, तो मैं अत्यंत सम्मानित महसूस करता हूँ।" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने इस विचार को त्यागना बेहतर समझा कि प्रतिभा फोड़े की तरह फूट पड़ती है, क्योंकि यह उनके लिए अधिक प्रशंसनीय था, लेकिन इसलिए भी क्योंकि कुछ समय से वह नए लोगों से मिल रही थीं और काफी थक चुकी थीं, इसलिए उन्होंने जानकारी प्राप्त करने और दूसरों की राय पूछने के माध्यम से विनम्रता का अभ्यास किया ताकि वह अपनी राय बना सकें। “मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है,” उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “कि समाज कहलाने वाले इस बुद्धिमान वर्ग को इसमें कुछ भी नज़र नहीं आया। उन्होंने उसका विरोध किया और उसका उपहास उड़ाया। मैं उन्हें बता सकती थी कि यह मौलिक और अनोखा था, पहले जो कुछ भी किया गया था उससे कुछ अलग था,

लेकिन किसी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि उन्होंने कभी भी किसी भी बात पर मेरा विश्वास नहीं किया। यही हाल उस रचना का भी था जो उसने सुनाई, मेटरलिंक की एक रचना। अब तो वह मशहूर है, लेकिन तब सब उस पर हँसते थे, हालाँकि मैं उसे प्रशंसनीय मानती थी। यह बात मुझे खुद भी हैरान करती है कि मैं तो बस एक देहाती लड़की थी, जिसकी शिक्षा भी एक देहाती लड़की जैसी थी, फिर भी मुझे उस तरह की चीज़ें इतनी पसंद आती थीं। बेशक, मैं इसका कारण नहीं बता सकती थी, लेकिन उससे मुझे आनंद मिलता था, वह मुझे भावुक कर देती थी। बेसिन, जो बिल्कुल भी संवेदनशील नहीं है, वह भी मुझ पर उसके प्रभाव से हैरान रह गया। उस समय उसने कहा था: 'मैं नहीं चाहता कि तुम ये बेतुकी बातें सुनो, ये तुम्हें बीमार कर देती हैं,' और यह सच था। लोग मुझे कठोर औरत समझते हैं, जबकि असल में मैं बहुत संवेदनशील हूँ।"

इसी क्षण एक अप्रत्याशित घटना घटी। एक नौकर राहेल को यह बताने आया कि ला बर्मा की बेटी और दामाद उससे बात करना चाहते हैं। हमने देखा है कि जब पति ने राहेल से निमंत्रण लेने की कोशिश की थी, तब बेटी ने उसका विरोध किया था। लेकिन, उस युवक के जाने के बाद, अपनी माँ के साथ अकेले रह गए दंपति ऊब गए थे, और दूसरों के मनोरंजन करने का विचार उन्हें सता रहा था; संक्षेप में, ला बर्मा के अपने शयनकक्ष में जाकर गुस्सा करने का फायदा उठाते हुए, उन्होंने जल्दी से अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, एक गाड़ी बुलाई और बिना बुलाए राजकुमारी डी गुएरमांटेस के घर पहुँच गए। राहेल को स्थिति समझ में नहीं आई, लेकिन मन ही मन खुश होकर, उसने घमंडी लहजे में नौकर से कहा कि उसे परेशान नहीं किया जा सकता, उन्हें लिखकर अपने इस असामान्य कदम का कारण बताना होगा। नौकर एक कार्ड लेकर लौटा

जिस पर ला बर्मा की बेटी ने लिखा था कि वह और उसके पति राहेल का पाठ सुनने के आनंद से खुद को रोक नहीं पाए और उसने राहेल से अंदर आने की अनुमति मांगी। राहेल ने बहाने और अपनी जीत पर गर्व करते हुए जवाब दिया कि उसे बहुत खेद है, लेकिन पाठ समाप्त हो चुका है। प्रतीक्षालय में, नौकर एक-दूसरे को आँख मार रहे थे जबकि दंपति व्यर्थ ही प्रवेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपनी बेइज्जती की शर्म, अपनी तुच्छता का एहसास, अपनी माँ की नज़रों में राहेल का महत्वहीन होना, ला बर्मा की बेटी को उस कदम को अंत तक उठाने के लिए प्रेरित किया जो उसने केवल मनोरंजन के लिए उठाया था। उसने राहेल को संदेश भेजा कि अगर वह उसका पाठ न भी सुन पाए तो भी उससे हाथ मिलाना एक एहसान होगा। राहेल उस समय एक इतालवी राजकुमार से बात कर रही थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह उसकी अपार संपत्ति पर नज़र गड़ाए हुए है, जिसका स्रोत उसके सामाजिक संबंधों के कारण कुछ हद तक छिपा हुआ था। उसने परिस्थितियों के उलटफेर का जायजा लिया, जिसने अब प्रतिष्ठित बर्मा के बच्चों को उसके चरणों में ला खड़ा किया था। घटना की जानकारी सभी को बड़े ही आकर्षक ढंग से देने के बाद, उसने उस युवा जोड़े को अंदर आने का संदेश भेजा, और वे बिना दोबारा पूछे ही अंदर चले गए। इस तरह उन्होंने ला बर्मा की सामाजिक प्रतिष्ठा को एक ही झटके में चकनाचूर कर दिया, जैसे उन्होंने पहले ही उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया था। राहेल समझ गई थी कि उसका यह विनम्र व्यवहार उसे अधिक दयालु और उस युवा जोड़े को उसके इनकार से भी अधिक नीचा साबित करेगा। इसलिए उसने उनका खुले दिल से स्वागत किया और एक प्रतिष्ठित संरक्षिका की तरह, जो अपनी शान-शौकत को एक तरफ रख सकती है, कहा: "हाँ, मुझे आपको देखकर बहुत खुशी हुई, राजकुमारी आपसे बहुत प्रभावित होंगी।" चूंकि उसे यह नहीं पता था कि

थिएटर में उसे ही आमंत्रित करना होता है, इसलिए शायद उसे डर था कि अगर वह ला बर्मा के बच्चों को अंदर आने से मना कर देती, तो वे उसकी सद्भावना पर नहीं, बल्कि उसके प्रभाव पर संदेह करेंगे, क्योंकि सद्भावना तो उसके लिए कोई मायने नहीं रखती। डचेस डी गुएरमांटेस सहज रूप से दूर हट गया, क्योंकि समाज को खुश करने के लिए कोई भी व्यक्ति जितना अधिक दिखावा करता है, उसकी नज़र में उसकी प्रतिष्ठा उतनी ही कम हो जाती है। उस समय तो उसे सिर्फ राहेल की दयालुता का एहसास हो रहा था और अगर ला बेरमा के बच्चे उससे मिलवाए जाते तो वह उनसे मुंह मोड़ लेती। इसी बीच, राहेल उन मीठे शब्दों को गढ़ रही थी जिनसे वह अगले दिन ला बेरमा को मंच के पीछे घेर लेगी: "मैं बहुत दुखी और परेशान थी कि आपकी बेटी को प्रतीक्षा कक्ष में इंतज़ार करना पड़ा। काश मुझे पता होता! उसने मुझे एक के बाद एक कार्ड भेजे।" ला बेरमा को यह अपमान देने में उसे बहुत खुशी हो रही थी। शायद, अगर उसे पता होता कि यह एक घातक प्रहार होगा, तो वह हिचकिचाती। लोग दूसरों को सताना पसंद करते हैं, लेकिन खुद को पूरी तरह गलत साबित किए बिना और उन्हें जान से मारे बिना नहीं। इसके अलावा, उसकी गलती क्या थी? वह कुछ दिनों बाद हंसते हुए कह सकती थी: "यह तो हद हो गई! मेरा इरादा उसके बच्चों के साथ उससे कहीं ज़्यादा अच्छा व्यवहार करने का था जितना उसने मेरे साथ किया, और अब वे मुझ पर उसे जान से मारने का आरोप लगा रहे हैं। मैं डचेस को गवाह के तौर पर पेश करती हूँ।" ऐसा प्रतीत होता है मानो महान अभिनेताओं के बच्चे रंगमंच के जीवन की सारी बुराइयों और दिखावे को विरासत में पा लेते हैं, लेकिन वे उस दृढ़ संकल्प को पूरा नहीं कर पाते जो इस माँ के जीवन में निहित है। महान अभिनेत्रियाँ अक्सर घरेलू साजिशों का शिकार होकर मर जाती हैं, जो उनके इर्द-गिर्द बुनी जाती हैं, जैसा कि अक्सर उन नाटकों के अंत में होता

है जिनमें वे अभिनय करती हैं।

जैसा कि हम देख चुके हैं, गिलबर्ट राहेल के विषय पर अपनी चाची के साथ किसी भी तरह के विवाद से बचना चाहती थी। उसने ऐसा करके दिखाया; मैडम डी गुएरमेंटेस के विरोध में ओडेट की बेटी का बचाव करना आसान नहीं था, क्योंकि डचेस ने मुझे ड्यूक की बेवफाई के नए रूप के बारे में जो बताया था, उसके कारण उनकी शत्रुता बहुत तीव्र थी। यह बेवफाई मैडम डी फोर्शेविल के साथ थी, जो उनकी उम्र जानने वालों के लिए भले ही आश्चर्यजनक लगे।

जब श्रीमती डी फोर्शेविल की वर्तमान उम्र याद आती है, तो यह वाकई असाधारण लगती है। लेकिन ओडेट ने शायद बहुत कम उम्र में ही वेश्या का जीवन शुरू कर दिया था। और हम ऐसी महिलाओं से मिलते हैं जो हर दस साल में नए प्रेम प्रसंगों में फिर से जन्म लेती हैं और कभी-कभी किसी युवा पत्नी को निराशा में धकेल देती हैं क्योंकि उनके पति उन्हें छोड़कर उनके पास चले जाते हैं, जबकि असल में उन्हें लगता था कि वे मर चुकी हैं।

डचेस का जीवन अत्यंत दुखमय था, और इसका एक कारण एम. डी गुएरमांटेस के सामाजिक स्तर में गिरावट का कारण भी बना। बढ़ती उम्र के कारण संयमित हो चुके, हालांकि अभी भी हृष्ट-पुष्ट, उन्होंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के प्रति बेवफाई करना छोड़ दिया था, लेकिन अचानक श्रीमती डी फोर्शेविल के प्रति आसक्त हो गए, और उन्हें यह भी पता नहीं था कि वे इस संबंध में कैसे उलझ गए।

यह प्रेम प्रसंग इतना बढ़ गया था कि इस अंतिम प्रेम प्रसंग में, बूढ़े व्यक्ति ने अपने पहले के प्रेम प्रसंगों की नकल करते हुए, अपनी प्रेमिका को इतना एकांत में रखा कि यदि अल्बर्टीन के लिए मेरा प्रेम स्वान के ओडेट के प्रति प्रेम का कई गुना रूप था, तो एम. डी गुएरमांटेस का प्रेम

अल्बर्टीन के प्रति मेरे प्रेम की याद दिलाता था। उसे उसके साथ ही भोजन करना पड़ता था और वह हमेशा उसके घर पर ही रहता था। वह इस बात का बखान अपने उन मित्रों से करती थी, जो उसके बिना ड्यूक को कभी नहीं जान पाते और जो उससे परिचय करने के लिए उसके घर आते थे, ठीक वैसे ही जैसे लोग किसी वेश्या से मिलने उसके प्रेमी राजा से मिलने आते हैं। यह सच है कि श्रीमती डी फोर्शेविल लंबे समय से समाज में सक्रिय थीं। लेकिन जीवन के अंतिम पड़ाव में, एक ऐसे अभिमानी बूढ़े व्यक्ति के साथ जीवन बिताने के लिए नए सिरे से शुरुआत करते हुए, जिसने उसके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उसने खुद को नीचा कर लिया। वह केवल उसकी खुशी के लिए ही प्रयास करती, उसके लिए पेग्नॉयर खरीदती और उसकी पसंद का खाना मंगवाती, अपने दोस्तों को यह कहकर खुश करती कि उसने उनके बारे में उससे बात की है, जैसे उसने मेरे परदादा को बताया था कि उसने उनके बारे में ग्रैंड-ड्यूक से बात की थी, जिसने फिर उन्हें सिगरेट भेजी थी। संक्षेप में, समाज में अपनी सुरक्षित स्थिति के बावजूद, परिस्थितियों के दबाव में वह एक बार फिर वही बनने लगी जो वह मेरे लिए बचपन में थी, गुलाबी पोशाक वाली महिला। बेशक, मेरे चाचा एडोल्फ की मृत्यु कई साल पहले हो चुकी थी। लेकिन क्या पुराने लोगों की जगह नए लोगों का आना हमें उसी जीवन को दोबारा शुरू करने से रोकता है? निस्संदेह उसने लालच के कारण खुद को नई परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लिया, लेकिन इसलिए भी क्योंकि जब उसकी बेटी की शादी हुई तो सामाजिक रूप से उसकी कुछ मांग तो थी, लेकिन गिलबर्ट की सेंट-लूप से शादी के बाद वह हाशिए पर चली गई थी। वह जानती थी कि ड्यूक वही करेगा जो उसे पसंद होगा, कि वह उसके लिए कई डचेस लाएगा जो अपनी दोस्त ओरियान से संबंध बनाने में संकोच नहीं करेंगी और शायद, नाराज डचेस की कीमत पर अपनी

नारीवादी प्रतिद्वंद्विता की भावना को संतुष्ट करने की संभावना से भी प्रेरित थी। ड्यूक डी गुएरमांटेस के विशेष कौरवॉइसियर भतीजे, श्रीमती डी मार्सैंटेस और प्रिंसेस डी ट्रानिया, श्रीमती डी फोर्शेविल के पास विरासत की उम्मीद में गए, इस बात की परवाह किए बिना कि इससे श्रीमती डी गुएरमांटेस को दुख होगा या नहीं। श्रीमती डी गुएरमांटेस के तिरस्कार से आहत ओडेट ने उनके बारे में बहुत बुरी बातें कहीं। श्रीमती डी गुएरमांटेस के साथ यह संबंध... डी फोर्शेविल द्वारा निर्मित कृति, जो उनकी प्रारंभिक कृतियों की मात्र नकल थी, के कारण ड्यूक डी गुएरमांटेस दूसरी बार जॉकी क्लब के अध्यक्ष और एकेडेमी डेस बेउक्स आर्ट्स के मानद सदस्य चुने जाने से चूक गए, ठीक उसी प्रकार जैसे एम. डी चार्लस का जुपियन के साथ सार्वजनिक संबंध यूनियन क्लब और सोसाइटी ऑफ फ्रेंड्स ऑफ ओल्ड पेरिस के अध्यक्ष चुने जाने में उनकी विफलता का कारण बना। इस प्रकार, रुचियों में इतने भिन्न ये दोनों भाई, एक ही प्रकार की आलस्य और इच्छाशक्ति की कमी के कारण बदनाम हो गए, जो उनके दादा, फ्रांसीसी अकादमी के सदस्य, के मामले में अधिक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी, जिसके कारण एक की सामान्य प्रवृत्तियाँ और दूसरे की असामान्य आदतें दोनों के पतन का कारण बनीं।

बूढ़े ड्यूक अब बाहर नहीं जाते थे, वे अपना दिन-शाम ओडेट के घर में ही बिताते थे। लेकिन आज, चूंकि वह स्वयं प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की पार्टी में आई थीं, इसलिए अपनी पत्नी से मिलने की झुंझलाहट के बावजूद वे उनसे कुछ पल के लिए मिलने चले गए। मैं कह सकता हूँ कि अगर डचेस ने मेरा ध्यान उनकी ओर न दिलाया होता तो मैं उन्हें पहचान भी नहीं पाता। वे अब एक खंडहर के सिवा कुछ नहीं थे, पर एक भव्य खंडहर; खंडहर से भी कहीं अधिक भव्य, उनमें एक तूफ़ान से क्षत-विक्षत चट्टान जैसी रोमांटिक सुंदरता थी। पीड़ा की लहरों से, अपनी पीड़ा के क्रोध से,

हर तरफ से झुलसा हुआ उनका चेहरा, विशाल समुद्रों में लगभग डूबे हुए ग्रेनाइट के एक टुकड़े की तरह धीरे-धीरे टूट रहा था, फिर भी उस शैली, उस सौम्यता को बरकरार रखे हुए था जिसकी मैं हमेशा प्रशंसा करता था। यह एक सुंदर प्राचीन मूर्ति की तरह विकृत हो गया था जिसे हम पुस्तकालय में एक आभूषण के रूप में पाकर प्रसन्न होते हैं। लेकिन ऐसा प्रतीत होता था मानो यह अपने वास्तविक काल से भी पुराने काल का हो, न केवल इसलिए कि इसकी बनावट में पहले की सुंदरता के स्थान पर एक खुरदुरापन और टूटन आ गई थी, बल्कि इसलिए भी कि बिगड़ते स्वास्थ्य, मृत्यु से जूझने और जीवित रहने के कठिन संघर्ष के कारण उत्पन्न अनैच्छिक भाव ने इसके चेहरे की पुरानी कोमलता और उमंग को प्रतिस्थापित कर दिया था। धमनियों ने अपनी सारी कोमलता खो दी थी और कभी भावपूर्ण रहे चेहरे पर एक गढ़ी हुई कठोरता की छाप छोड़ दी थी। और, अनजाने में ही, ड्यूक ने अपनी गर्दन, गालों और भौंहों की बनावट से एक ऐसे व्यक्ति को प्रकट किया जो हर पल को दृढ़ता से थामे रहने के लिए विवश था और मानो किसी दुखद तूफान में फँसा हुआ हो, उसके विरल सफेद बाल उसके चेहरे के उभरे हुए हिस्से पर बिखर रहे थे। और जैसे आने वाला तूफ़ान अपने सामने सब कुछ बहा ले जाता है और चट्टानों को, जो तब तक किसी और रंग की होती हैं, एक अजीब और रहस्यमयी परछाई देता है, वैसे ही मुझे पता था कि उसके कठोर, झुर्रीदार गालों का सीसे जैसा भूरा रंग, उसके बिखरे बालों की ऊनी सफेदी, उसकी लगभग अंधी आँखों में ठहरती टिमटिमाती रोशनी, एक ऐसे अद्भुत रंग पैलेट से लिए गए बहुत ही वास्तविक रंग थे, जिससे बुढ़ापे की भविष्यसूचक छायाओं और मृत्यु की भयावह निकटता को अद्वितीय ढंग से चित्रित किया गया था। ड्यूक कुछ ही पलों के लिए रुका, लेकिन मेरे लिए यह देखने के लिए काफी था कि ओडेट अपने छोटे शिष्यों के सामने

उसका मज़ाक उड़ा रही थी। लेकिन यह अजीब था कि जो कभी मंच-राजा की मुद्रा में लगभग हास्यास्पद लगता था, अब एक नेक भाव से परिपूर्ण था, जो उसके भाई से मिलता-जुलता था, जिसे बुढ़ापे ने भी क्षीण कर दिया था। और अपने भाई की तरह, जो कभी इतना अभिमानी था, हालांकि एक अलग तरीके से, वह लगभग सम्मानजनक प्रतीत होता था। क्योंकि वह एम. डी. चार्लस के पतन का शिकार नहीं हुआ था, जो एक विक्षिप्त रोगी की तरह उन लोगों के सामने झुकने को विवश हो गया था जिन्हें वह पहले तुच्छ समझता था, लेकिन वह बहुत बूढ़ा हो चुका था और जब वह दरवाजे से बाहर निकला और सीढ़ियों से नीचे उतरकर जाने लगा, तो बुढ़ापा, वह सबसे दयनीय अवस्था जो पुरुषों को उनके उच्च पद से गिरा देती है, जैसा कि ग्रीक त्रासदी के राजाओं के साथ हुआ था, ने उसे जकड़ लिया, उसे उस क्रूस के मार्ग पर रुकने को मजबूर कर दिया जो मृत्यु से घिरे एक असहाय व्यक्ति का जीवन है, ताकि वह अपने बहते माथे को पोंछ सके और उस सीढ़ी को ढूंढ सके जो उसके पैर की पकड़ से छूट रही थी क्योंकि उसे सहारा चाहिए था, उसकी धुंधली आँखों के लिए सहारा, वह मदद जिसकी वह अनजाने में दूसरों से बहुत ही कोमल और दबी हुई आवाज़ में याचना कर रहा था। बुढ़ापे ने उसे भव्यता से भी अधिक बना दिया था, उसने उसे एक याचक बना दिया था।

इस प्रकार फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में ड्यूक और डचेस डी गुएरमांटेस तथा बैरन डी चार्लस की प्रतीतिक रूप से अभेद्य स्थिति अपनी अभेद्यता खो बैठी, क्योंकि इस संसार में सब कुछ एक आंतरिक सिद्धांत की क्रिया से बदलता है, जो उनके लिए कभी विचारणीय नहीं था; एम. डी चार्लस के मामले में, चार्ली के प्रेम ने उन्हें वर्दुरिन परिवार का गुलाम बना दिया और फिर धीरे-धीरे पतन की ओर ले गया; श्रीमती डी गुएरमांटेस के मामले में, नवीनता और कला के प्रति रुचि ने, और एम. डी गुएरमांटेस के मामले में,

एक अनन्य प्रेम ने, जैसा कि उनके जीवन में कई प्रेम रहे थे, बुढ़ापे की दुर्बलता ने इसे और भी अत्याचारी बना दिया, जिसके प्रति डचेस के सैलून की सादगी, जहाँ ड्यूक अब उपस्थित नहीं होते थे और जो कि लगभग निष्क्रिय हो चुका था, अपने पुनर्वास की शक्ति से कोई प्रतिरोध नहीं कर पाई। इस प्रकार जीवन में चीजों का स्वरूप बदलता रहता है, साम्राज्यों का केंद्र, भाग्य का लेखा-जोखा, स्थिति का चार्ट, जो कुछ भी अंतिम प्रतीत होता था, वह निरंतर रूप से नया रूप लेता रहता है और अपने जीवनकाल में एक व्यक्ति उन स्थानों पर सबसे पूर्ण परिवर्तनों का साक्षी बन सकता है जहां वे उसे सबसे कम संभव प्रतीत होते थे।

ओडेट के बिना रहना असंभव था, वह हमेशा उसके घर पर और उसी आरामकुर्सी पर बैठी रहती थी जिससे बुढ़ापे और गठिया के कारण उठना उसके लिए मुश्किल हो गया था। एम. डी गुएरमांटेस ने उसे अपने दोस्तों से मिलने की अनुमति दी, जो ड्यूक से परिचय पाकर, बातचीत में उसे आगे रखने और पूर्व समाज, मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस और ड्यूक डी चार्ट्रेस के बारे में उसकी बातें सुनने से बहुत खुश थे।

कभी-कभी, स्वान द्वारा एकत्रित पुरानी तस्वीरों के नीचे, जो इस रेस्टोरेशन ड्यूक और उनकी प्रिय दरबारी महिला के साथ मिलकर पुराने ज़माने की तस्वीर को पूरा करती थीं, गुलाबी पोशाक वाली महिला अपनी बकबक से उनकी बात काट देती थी और वे अचानक रुक जाते थे, और उन्हें भयंकर निगाहों से घूरते थे। शायद उन्हें पता चल गया था कि वह, और डचेस भी, कभी-कभी मूर्खतापूर्ण बातें कर बैठती थीं, शायद एक बूढ़े आदमी की कल्पना ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि श्रीमती डी गुएरमांटेस के किसी उग्र हास्य ने उनकी बात में बाधा डाली है और वे खुद को गुएरमांटेस के महल में वापस पा रहे थे, जैसे पिंजरे में बंद जानवर अफ्रीकी जंगलों में खुद को आज़ाद समझते हैं। अपना सिर तेज़ी से उठाते

हुए, उन्होंने अपनी छोटी पीली आँखों को, जिनमें कभी जंगली जानवर जैसी चमक थी, उन घूरती निगाहों में से एक में जमा दिया, जिन्हें देखकर मुझे कंपकंपी छूट गई थी जब श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझे उनके बारे में बताया था। इस प्रकार ड्यूक ने गुलाबी पोशाक पहने उस साहसी महिला को घूरकर देखा, लेकिन वह डटी रही, अपनी निगाहें उससे नहीं हटाईं और दर्शकों को जो क्षण लंबा लगा, उसके अंत में, वह बूढ़ा जंगली जानवर, शांत होकर, याद करने लगा कि वह अब अपने घर के रेगिस्तान जैसे रेगिस्तान में नहीं, बल्कि श्रीमती डी फोर्शेविल के बगीचे में बने अपने पिंजरे में है। उसने अपना सिर, जिस पर अभी भी सुनहरे-सफेद बालों की घनी लटें लटक रही थीं, अपने कंधों में समेट लिया और अपनी बात फिर से शुरू कर दी। जाहिर तौर पर वह श्रीमती डी फोर्शेविल की बात नहीं समझ पाया था, जिसका आमतौर पर कोई खास मतलब नहीं होता था। उसने उन्हें अपने दोस्तों को रात के खाने पर बुलाने की अनुमति दी। एक सनक जो उसके पुराने प्रेम प्रसंगों की निशानी थी और जिससे ओडेट को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह स्वान में भी यही आदत देख चुकी थी और जो मुझे अल्बर्टीन के साथ बिताए अपने जीवन की याद दिलाती थी, वह थी लोगों को जल्दी जाने के लिए कहना ताकि वह ओडेट को सबसे आखिर में शुभ रात्रि कह सके। यह कहने की जरूरत नहीं है कि उसके जाते ही उसने अन्य लोगों को आमंत्रित कर लिया। लेकिन ड्यूक को इसका ज़रा भी आशय नहीं था, या वे जानबूझकर ऐसा जताना नहीं चाहते थे; बुढ़ापे में लोगों की सतर्कता उनकी दृष्टि और श्रवण शक्ति के साथ कम हो जाती है। एक निश्चित उम्र के बाद बृहस्पति अनिवार्य रूप से मोलियर के पात्रों में से एक में बदल जाता है—बेतुके गेरोंटे में—न कि एल्कमने के ओलंपियन प्रेमी में। और ओडेट ने एम. डी गुएरमांटेस को धोखा दिया और न तो आकर्षण से और न ही उदारता से उनकी देखभाल

की। वह इसमें भी और हर चीज़ में साधारण थी। जीवन ने उसे अच्छे अवसर दिए थे, लेकिन वह उन्हें निभा नहीं सकी और इस बीच, वह एकांतवासी होने का नाटक कर रही थी। यह एक सच्चाई थी कि जब भी मैं उससे मिलना चाहता था, मैं नहीं मिल पाता था, क्योंकि एम. डी गुएरमांटेस, अपनी स्वच्छता संबंधी आवश्यकताओं और अपनी ईर्ष्या के बीच सामंजस्य बिठाने की इच्छा से, उसे केवल दिन के समय ही पार्टियों की अनुमति देते थे और वह भी इस शर्त पर कि नृत्य नहीं होगा। उसने अपने एकांत जीवन को खुलकर स्वीकार किया और इसके कई कारण थे। पहली बात तो यह थी कि, हालांकि मैंने कुछ ही लेख और अध्ययन प्रकाशित किए थे, उसने यह कल्पना की थी कि मैं एक प्रसिद्ध लेखक हूँ, जिसके कारण उसने भोलेपन से टिप्पणी की, अतीत की याद दिलाते हुए जब मैं उससे एवेन्यू डेस अकासियास में और बाद में उसके घर पर मिलने गया था: "काश, मैं तब यह अनुमान लगा पाती कि वह लड़का एक दिन एक महान लेखक बनेगा।" और यह सुनकर कि लेखक खुद को दस्तावेज़ करने और प्रेम कहानियाँ सुनने के लिए महिलाओं के साथ रहना पसंद करते हैं, उसने मेरा मनोरंजन करने के लिए वेश्या की अपनी भूमिका फिर से अपना ली: "सोचो, एक बार एक आदमी मेरे लिए दीवाना था और मैं उसे बहुत प्यार करती थी। हम साथ में बहुत अच्छा समय बिता रहे थे। उसे अमेरिका जाना था और मुझे उसके साथ जाना था। उसके जाने की पूर्व संध्या पर मैंने सोचा कि ऐसे अद्भुत प्रेम को खत्म होने का जोखिम न लेना ही बेहतर होगा। हमने अपनी आखिरी शाम साथ बिताई। उसे विश्वास था कि मुझे उसके साथ जाना चाहिए। वह असीम कामुकता और निराशा की एक मदहोश कर देने वाली रात थी, क्योंकि मैं जानती थी कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। सुबह मैंने अपना टिकट एक अनजान यात्री को दे दिया। वह उसे खरीदना चाहता था लेकिन मैंने जवाब दिया:

'नहीं, आप इसे स्वीकार करके मेरी इतनी बड़ी सेवा कर रहे हैं कि मुझे पैसे नहीं चाहिए।'" एक और कहानी थी: "एक दिन मैं चैंप्स एलिसीज़ में थी। एम. डी ब्रेउटे, जिनसे मैं केवल एक बार मिली थी, ने मुझे इतनी अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा कि मैं रुक गई और उससे पूछा कि उसकी हिम्मत कैसे हुई मुझे इस तरह देखने की। उसने जवाब दिया: 'मैं तुम्हें इसलिए देख रहा हूँ क्योंकि तुमने एक अजीब सी टोपी पहन रखी है।' यह सच था। वह एक छोटी सी टोपी थी जिस पर पैंसी के फूल बने थे और उस ज़माने का फैशन बहुत ही घटिया था। लेकिन मैं गुस्से से आग बबूला हो गई और मैंने उससे कहा: 'मैं तुम्हें मुझसे इस तरह बात करने की इजाज़त नहीं देती।' बारिश शुरू हो गई और मैंने कहा: 'अगर तुम्हारे पास गाड़ी होती तो शायद मैं तुम्हें माफ़ कर देती।' 'अच्छा, कोई बात नहीं, मेरे पास गाड़ी है और मैं तुम्हें घर तक छोड़ दूँगा।' 'नहीं, मुझे तुम्हारी गाड़ी में बैठने में खुशी होगी, लेकिन तुम नहीं।' मैं गाड़ी में बैठ गई और वह बारिश में चला गया। लेकिन उस शाम वह मेरे घर आया। हमने दो साल तक बेतहाशा प्यार किया। "आओ मेरे साथ चाय पियो," उसने आगे कहा, "और मैं तुम्हें बताऊंगी कि मेरी मुलाकात एम. डी फोर्शेविल से कैसे हुई। सच में," उदास स्वर में, "मेरा जीवन एकांत में बीता है, क्योंकि मुझे हमेशा ऐसे पुरुषों से प्यार हुआ है जो मुझसे बेहद ईर्ष्या करते थे। मैं एम. डी फोर्शेविल की बात नहीं कर रही; वह बिल्कुल उदासीन थे और मुझे केवल बुद्धिमान पुरुषों से ही लगाव था, लेकिन, देखो, एम. स्वान उतने ही ईर्ष्यालु थे जितना कि यह बेचारा ड्यूक, जिसके लिए मैंने अपना जीवन कुर्बान कर दिया क्योंकि वह घर पर दुखी था। लेकिन एम. स्वान से ही मुझे बेइंतहा प्यार हुआ था, और कोई भी अपने प्रिय पुरुष को खुश करने या उसे चिंता से बचाने के लिए नाच-गाना, समाज और सब कुछ त्याग सकता है। बेचारा चार्ल्स, वह इतना बुद्धिमान, इतना आकर्षक, बिल्कुल

वैसा ही पुरुष था जैसा मुझे पसंद था।" शायद यह सच था। एक समय था जब स्वान ने उसे खुश किया और यह ठीक वही समय था जब वह "उसके प्रकार की" नहीं थी। सच कहें तो, वह कभी भी "उसके मनपसंद" की नहीं थी, न तब और न बाद में। फिर भी उसने उसे इतने लंबे समय तक और इतने दर्द के साथ प्यार किया। बाद में जब उसे इस विरोधाभास का एहसास हुआ तो वह हैरान रह गया। लेकिन अगर हम इस बात पर विचार करें कि जो महिलाएं "उसके मनपसंद" नहीं होतीं, वे पुरुषों को कितना दुख देती हैं, तो यह विरोधाभास नहीं रह जाता। इसके कई कारण हो सकते हैं; पहला, क्योंकि वे हमारे मनपसंद नहीं होतीं, हम बिना प्यार किए खुद को प्यार करने देते हैं; इसके कारण हम एक ऐसी आदत अपना लेते हैं जो हमें अपने मनपसंद की महिला के साथ नहीं अपनानी चाहिए। बाद वाली, यह जानते हुए कि उसे चाहा जा रहा है, विरोध करेगी और केवल कभी-कभार ही मुलाकातें करेगी और इस तरह हमारे जीवन में ऐसी जगह नहीं बना पाएगी कि अगर बाद में हम उससे प्यार करने लगें और फिर किसी झगड़े या यात्रा के कारण हम अकेले पड़ जाएं और उसकी कोई खबर न मिले, तो वह हमें एक नहीं बल्कि हजारों बंधनों से वंचित कर दे। फिर यह आदत भावनात्मक है क्योंकि इसके मूल में कोई बड़ी शारीरिक इच्छा नहीं होती और अगर प्यार पैदा होता है, तो दिमाग बेहतर काम करता है; रोमांस शारीरिक इच्छा की जगह ले लेता है। हम अपने से अलग महिलाओं पर शक नहीं करते, हम उन्हें प्यार करने देते हैं और अगर बाद में हम उनसे प्यार करने लगते हैं तो दूसरों से सौ गुना ज़्यादा प्यार करते हैं, बिना उनसे इच्छा की संतुष्टि पाए। इन्हीं कारणों और कई अन्य कारणों से, यह तथ्य कि हमें सबसे ज़्यादा दुख उन महिलाओं से मिलते हैं जो हमारे जैसी नहीं होतीं, केवल उस भ्रम के कारण नहीं है जो हमें केवल उसी रूप में खुशी का एहसास कराता है जो हमें सबसे कम

पसंद आता है। हमारे जैसी महिला शायद ही कभी खतरनाक होती है, क्योंकि वह हमारी परवाह नहीं करती, हमें संतुष्ट करती है, जल्दी ही हमें छोड़ देती है और हमारे जीवन में जगह नहीं बनाती। प्यार में जो खतरनाक है और दुख का कारण बनती है, वह महिला खुद नहीं है, बल्कि उसकी लगातार मौजूदगी है, हर पल यह जानने की उत्सुकता है कि वह क्या कर रही है; यह महिला नहीं है, यह आदत है। मैं इतना कायर था कि मैंने कह दिया कि स्वान के बारे में उसने जो बताया वह दयालुता थी, बल्कि उसकी ओर से नेक काम था, लेकिन मैं जानता था कि यह सच नहीं था और उसकी बेबाकी झूठ से भरी थी। जैसे-जैसे वह मुझे अपने कारनामों के बारे में बताती गई, मैं भयभीत हो गया कि स्वान को किन-किन बातों की जानकारी नहीं थी और उसे कितना कष्ट सहना पड़ा होगा, क्योंकि उसने अपनी भावनाओं को उस प्राणी से जोड़ लिया था और किसी अनजान पुरुष या स्त्री पर उसकी एक नज़र मात्र से ही उसने लगभग निश्चित रूप से अनुमान लगा लिया था कि वह उसे आकर्षित करती है। वास्तव में उसने मुझे यह सब केवल उपन्यासों के लिए विषय जुटाने के उद्देश्य से बताया था। वह गलत थी, इसलिए नहीं कि वह मेरी कल्पना को भरपूर सामग्री प्रदान नहीं कर सकती थी, बल्कि इसलिए कि उसे ऐसा कम जानबूझकर करना पड़ता और मेरी अनजाने में ही, उसके जीवन को नियंत्रित करने वाले नियमों को दरकिनार करना पड़ता।

एम. डी गुएरमांटेस ने अपना गुस्सा डचेस के लिए बचाकर रखा था, जिनकी मिली-जुली सभाओं में श्रीमती डी फोर्शेविल ड्यूक का ध्यान अपनी ओर खींचने में जरा भी संकोच नहीं करती थीं। इसके अलावा, डचेस बहुत दुखी थीं। यह सच है कि एम. डी चार्लस, जिनसे मैंने एक बार इस बारे में बात की थी, ने सुझाव दिया था कि पहला अपराध उनके भाई की तरफ से नहीं हुआ था, और डचेस की पवित्रता की किंवदंती वास्तव में

अनगिनत चालाकी से गढ़े गए कारनामों से बनी थी। मैंने उनके बारे में कभी नहीं सुना था। लगभग सभी के लिए श्रीमती डी गुएरमांटेस ऐसी बिल्कुल नहीं थीं और यह धारणा सर्वमान्य थी कि वह हमेशा से बेदाग थीं। मैं यह तय नहीं कर पा रहा था कि इन दोनों धारणाओं में से कौन सी सही है, क्योंकि सच्चाई लगभग हमेशा दुनिया के तीन-चौथाई हिस्से के लिए अज्ञात रहती है। मुझे कॉम्ब्रे चर्च के मुख्य हॉल में डचेस डी गुएरमांटेस की कुछ नीली और क्षणभंगुर निगाहें याद आईं, लेकिन सच तो यह है कि वे इनमें से किसी भी राय का खंडन नहीं करतीं, क्योंकि प्रत्येक का एक अलग और समान रूप से स्वीकार्य अर्थ हो सकता है। बचपन के नादानी में मैंने एक पल के लिए उन्हें अपने लिए प्रेम के संदेश समझ लिया था। बाद में मुझे एहसास हुआ कि वे तो बस वैसी ही दयालु निगाहें थीं जो चर्च की रंगीन खिड़कियों में दिखाई देने वाली महारानी अपने जागीरदारों पर डालती थीं। क्या अब मुझे यह मान लेना चाहिए कि मेरा पहला विचार सही था, और अगर डचेस ने मुझसे कभी प्रेम की बात नहीं की, तो इसका कारण यह था कि वह अपनी चाची और भतीजे के दोस्त के साथ खुद को बदनाम करने से डरती थीं, बजाय इसके कि वह सेंट हिलैरे डी कॉम्ब्रे के चर्च में संयोग से मिले एक अनजान लड़के के साथ ऐसा करतीं?

डचेस को शायद उस क्षण के लिए खुशी हुई होगी कि मेरे साथ समय बिताने से उनका अतीत कुछ हद तक सुसंगत प्रतीत हुआ, लेकिन जब मैंने उनसे एम. डी ब्रेउटे के प्रांतीयवाद के बारे में पूछा, जिसे मैंने पहले एम. डी सागन या एम. डी गुएरमांटेस के समान श्रेणी में रखा था, तो उन्होंने समाज से घृणा करने वाली एक संभ्रांत महिला का रवैया फिर से अपना लिया। बोलते-बोलते डचेस मुझे घर घुमाने ले गईं। छोटे कमरों में, मेजबानों के कुछ करीबी दोस्त संगीत का आनंद लेने के लिए अलग बैठे

थे। उनमें से एक छोटे से भव्य हॉल में, जहाँ एक-दो कोट पहने सज्जन सोफे पर बैठकर संगीत सुन रहे थे, दीवार के किनारे एक झूला रखा था, जिसके पास साइकी की एक मूर्ति थी जो मिनर्वा पर झुकी हुई थी, और उस मूर्ति के खोखले भाग में एक युवती लेटी हुई थी। उनका शांत और सौम्य स्वभाव, जिसे डचेस के आगमन से ज़रा भी भंग नहीं किया जा सका, उनकी चमकदार रेशमी एम्पायर पोशाक की भव्यता से बिलकुल विपरीत था। रेशमी पोशाक इतनी चमकीली थी कि उसके सामने गहरे लाल रंग के फ़्यूशिया भी फीके पड़ जाते, और मोतियों से जड़ी हुई थी, जिसकी सिलवटों में फूलों की डिज़ाइन मानो उकेरी गई थी। उन्होंने डचेस को प्रणाम करने के लिए अपना सुंदर भूरा सिर थोड़ा झुकाया। हालाँकि दिन का उजाला था, फिर भी उन्होंने संगीत का आनंद लेने के लिए भारी पर्दे खींच दिए थे, और नौकरों ने लोगों को ठोकर लगने से बचाने के लिए तिपाई पर रखे कलश में आग जला दी थी। मेरे प्रश्न के उत्तर में डचेस ने बताया कि उनका नाम श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे है, और मैं जानना चाहता था कि उनका उस श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे से क्या संबंध है जिन्हें मैं जानता था। वह उनके एक परपोते की पत्नी थीं, और श्रीमती डी गुएरमांटेस ने संकेत दिया कि उनका जन्म ला रोशेफौकॉल्ड परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि उन्होंने स्वयं सैंटे-यूवर्टे परिवार को कभी नहीं जाना था। मैंने उन्हें उस शाम की पार्टी की याद दिला दी, जिसके बारे में सच कहूँ तो मुझे सिर्फ़ सुनी-सुनाई बातों से ही पता था, जब प्रिंसेस डेस लाउम्स के रूप में उन्होंने स्वान से दोबारा मुलाक़ात की थी। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा कि वह उस पार्टी में कभी नहीं गई थीं, लेकिन वह हमेशा से ही थोड़ी झूठी थीं और अब और भी ज़्यादा झूठी हो गई थीं। मैडम डी सैंटे-यूवर्टे का सैलून—जो समय के साथ थोड़ा फीका पड़ गया था—वह जगह थी जहाँ वह जाना पसंद नहीं करती थीं और मैंने इस बारे

में ज़ोर नहीं दिया। "नहीं," उन्होंने कहा, "जिस व्यक्ति से आप मेरे घर पर मिले होंगे क्योंकि वह मज़ेदार था, वह उस महिला का पति था जिसका आप ज़िक्र कर रहे हैं। मेरा उससे कभी कोई सामाजिक संबंध नहीं था।" "लेकिन वह विधवा थी?" "आपको ऐसा इसलिए लगा क्योंकि वे अलग हो गए थे; वह उससे कहीं ज़्यादा अच्छा था।" आख़िरकार मुझे एहसास हुआ कि बर्फ़ जैसे सफ़ेद बालों वाला एक विशाल, बेहद लंबा और मज़बूत आदमी, जिससे मैं हर जगह मिलती थी लेकिन जिसका नाम मुझे कभी पता नहीं चला, श्रीमती डी सैंटे-यूवर्टे का पति था और जिसकी एक साल पहले मृत्यु हो गई थी। मेरी भतीजी के बारे में, मुझे कभी पता नहीं चला कि क्या वह पेट की किसी तकलीफ, घबराहट, बुखार, प्रसव पीड़ा या हाल ही में हुए असफल प्रसव के कारण सोफे पर लेटी हुई संगीत सुन रही थी। शायद यही वजह थी कि वह उस चमकदार लाल पोशाक में सोफे पर रेकामियर की तरह दिखना चाहती थी। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसने सेंट-यूवर्टे नाम के एक नए रूप को जन्म दिया था, जो समय की दूरी और निरंतरता को कई बार दर्शाता था। वह उस पालने में झूल रही थी जहाँ सेंट-यूवर्टे नाम साम्राज्य शैली के गहरे लाल रेशम में खिल रहा था। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा कि उन्हें साम्राज्य शैली से हमेशा नफरत रही है; इसका मतलब था कि उन्हें अब भी इससे नफरत है, जो सच था, क्योंकि वह फैशन को मानती तो थीं, लेकिन पूरी तरह से नहीं। डेविड का ज़िक्र करके मामले को और जटिल बनाए बिना, जिनके काम के बारे में उन्हें कुछ जानकारी थी, जब वे बच्ची थीं तो इंग्रस को सबसे उबाऊ चित्रकार मानती थीं, फिर अचानक नए उस्तादों में सबसे आकर्षक, इतना कि वे डेलाक्रॉइक्स से घृणा करने लगीं। किस प्रक्रिया से वे इस निंदात्मक विचारधारा पर लौट आईं, यह मायने नहीं रखता, क्योंकि कला समीक्षकों द्वारा इस तरह के स्वाद के विभिन्न पहलुओं को इन श्रेष्ठ महिलाओं के

चर्चा करने से दस साल पहले ही दर्शाया जा चुका है। साम्राज्य शैली की आलोचना करने के बाद, उन्होंने सेंट-यूवर्टे जैसे महत्वहीन लोगों और ब्रेओटे के प्रांतीयवाद जैसी बकवास बातों के लिए खुद को क्षमा किया, क्योंकि वे इस बात से उतनी ही अनजान थीं कि उनमें मेरी कितनी रुचि थी, जितनी कि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे डी ला रोशेफौकॉल्ड अपने पेट या इंग्रस के पोज़ की देखभाल करने से, इस बात से कि उनका नाम मेरी खुशी का कारण था, उनके पति का नाम, न कि उनके परिवार का कहीं अधिक प्रसिद्ध नाम, और मेरे लिए यह उस कमरे में समय को थामे रखने का प्रतीक था जो लौकिक संबंधों से भरा था। "तुम्हें इस सब बकवास में क्या दिलचस्पी है?" डचेस ने कहा। उन्होंने ये शब्द धीमी आवाज़ में कहे और किसी को भी समझ नहीं आया कि उन्होंने क्या कहा। लेकिन एक युवक (जिसका नाम मुझे बाद में सैंटे-यूवर्टे से कहीं ज़्यादा परिचित होने के कारण महत्वपूर्ण लगा) जानबूझकर परेशान होकर उठा और ज़्यादा एकांत में सुनने के लिए दूर चला गया। वे क्रुत्ज़र सोनाटा बजा रहे थे, लेकिन उसने कार्यक्रम गलत पढ़ा था, इसलिए उसे लगा कि यह रावेल की कोई रचना है, जिसके बारे में उसे बताया गया था कि यह पैलेस्ट्रिना जितनी ही सुंदर है, लेकिन समझने में कठिन है। अचानक जगह बदलते समय, मंद अंधेरे के कारण, वह एक चाय की मेज से टकरा गया, जिससे कई लोगों ने मुड़कर देखा और इस तरह क्रुत्ज़र सोनाटा को ध्यान से सुनने के कष्ट से उन्हें एक सुखद राहत मिली। और श्रीमती डी गुएरमांटेस और मैं, जो इस छोटे से हंगामे का कारण थे, जल्दी से दूसरे कमरे में चले गए। “हाँ,” उसने आगे कहा, “तुम्हारे जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को ऐसी बेतुकी बातों में क्या दिलचस्पी हो सकती है? जैसे अभी मैंने तुम्हें गिल्बर्ट डी सेंट-लूप से बात करते देखा, यह तुम्हारे लायक नहीं है। मेरे लिए वह औरत कुछ भी नहीं है, वह तो औरत भी नहीं है; वह हद से ज़्यादा

दिखावटी और संभ्रांत है," डचेस ने अपने अभिजात्य पूर्वाग्रहों को सत्य के समर्थन के साथ मिला दिया। "सचमुच, क्या तुम्हें ऐसी जगहों पर आना चाहिए? आज, शायद राहेल के पाठ के कारण यह सार्थक हो। लेकिन, चाहे उसने कितना भी अच्छा पाठ किया हो, वह इतने बड़े श्रोताओं के सामने खुद को इतना बड़ा नहीं दिखाती। तुम्हें आना चाहिए और उसके साथ अकेले दोपहर का भोजन करना चाहिए, तब तुम्हें पता चलेगा कि वह कितनी अद्भुत है। वह यहाँ मौजूद हर किसी से सौ गुना श्रेष्ठ है। और दोपहर के भोजन के बाद वह तुम्हें वर्लेन की कविता सुनाएगी और तुम मुझे बताना कि तुम्हें यह कैसी लगी।" उसने मुझसे विशेष रूप से उन दोपहर के भोजन की पार्टियों के बारे में शेखी मारी जिनमें X और Y हमेशा आते थे। क्योंकि उसने वह विशेषता अपना ली थी जो उस तरह की महिला की पहचान होती है जिसका कोई "सैलून" होता है, जिसे वह पहले तुच्छ समझती थी (हालाँकि आज वह इससे इनकार करती है), जिसकी श्रेष्ठ बहुमुखी प्रतिभा का मुख्य संकेत यह है कि उसके घर में "सभी पुरुष" आते हैं। अगर मैं उसे बताती कि एक खास महिला, जो "सैलून" जाती थी, मैडम रोलैंड की बुराई करती थी, तो डचेस मेरी सरलता पर खिलखिलाकर हंस पड़ती और कहती: "बेशक, उसके घर में 'सभी पुरुष' आते थे और दूसरी उन्हें उससे छीनने की कोशिश करती थी।" मैडम डी गुएरमांटेस ने आगे कहा: "यह मेरी समझ से परे है कि आप इस तरह की चीजों में कैसे पड़ सकते हैं - जब तक कि यह चरित्र का अध्ययन करने के लिए न हो," उसने आखिरी शब्द संदेह और शंका से कहे, क्योंकि वह ज्यादा आगे बढ़ने से डर रही थी क्योंकि उसे यकीन नहीं था कि उस अजीबोगरीब प्रक्रिया में क्या शामिल था।

मैंने उससे पूछा, "क्या आपको नहीं लगता कि श्रीमती डी सेंट-लूप के लिए अपने पति की पूर्व प्रेमिका की बातें सुनना कितना कष्टदायक रहा

होगा?" मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के चेहरे पर वह अप्रत्यक्ष भाव देखा जो किसी की कही बात को अप्रिय तथ्यों से जोड़ता है। ये बातें अनकही रह सकती हैं, लेकिन गंभीर अर्थों वाले शब्दों का हमेशा मौखिक या लिखित उत्तर नहीं मिलता। केवल मूर्ख ही एक मूर्खतापूर्ण पत्र का दो बार उत्तर मांगते हैं जो एक भूल थी; क्योंकि ऐसे पत्रों का उत्तर केवल कार्यों से ही दिया जाता है और जिस पत्र-पत्रकार को मूर्ख लापरवाह समझता है, वह अगली बार मिलने पर उसे उसके पहले नाम के बजाय महाशय कहकर पुकारेगा। सेंट-लूप और राहेल के बीच संबंध का मेरा उल्लेख इतना गंभीर नहीं था और श्रीमती डी गुएरमांटेस को एक पल से अधिक नाराज नहीं कर सकता था, क्योंकि मैंने उन्हें याद दिलाया था कि मैं रॉबर्ट का मित्र था, शायद उसका विश्वासपात्र था, उस अपमान के बारे में जो उसे तब हुआ था जब उसने डचेस से राहेल को उसकी शाम की पार्टी में आने की अनुमति प्राप्त की थी। डी गुएरमांटेस के चेहरे पर उदासी नहीं छाई रही और उन्होंने श्रीमती के बारे में मेरे सवाल का जवाब दिया। सेंट-लूप: "मैं आपको बता सकता हूँ कि मुझे लगता है कि यह उसके लिए कोई मायने नहीं रखता, क्योंकि गिल्बर्ट ने कभी अपने पति से प्यार नहीं किया। वह एक घिनौनी औरत है। उसे बस पद, नाम चाहिए था, मेरी भतीजी होने का हक चाहिए था, उस गंदगी से बाहर निकलना चाहती थी जिसमें अब उसका एक ही विचार वापस जाने का है। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि बेचारे रॉबर्ट के लिए मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि भले ही वह बाज न रहा हो, उसने सब कुछ देखा था और इसके अलावा भी बहुत कुछ देखा था। शायद मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए क्योंकि आखिर वह मेरी भतीजी है और मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वह उसके प्रति बेवफा थी, लेकिन उसके बारे में तरह-तरह की बातें फैली हुई थीं। लेकिन मान लीजिए कि मैं आपको बताऊँ कि मुझे पता है कि रॉबर्ट मेसेंग्लिस के एक

अधिकारी के साथ द्वंद्वयुद्ध करना चाहता था। और इसी वजह से रॉबर्ट सेना में भर्ती हुआ था। युद्ध उसके पारिवारिक झंझटों से मुक्ति का जरिया था और अगर आप मेरी राय जानना चाहें, तो वह मारा नहीं गया था, उसने खुद को मरवा लिया था। उसे ज़रा भी दुख नहीं है, वह तो जिस निर्ममता से वह अपनी उदासीनता प्रदर्शित करती है, वह मुझे आश्चर्यचकित कर देती है, और इससे मुझे बहुत दुख होता है क्योंकि मैं रॉबर्ट को बहुत पसंद करती थी। शायद आपको आश्चर्य हो क्योंकि लोग मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं अब भी उसके बारे में सोचती हूँ। मैं किसी को नहीं भूलती। उसने मुझे कुछ नहीं बताया, लेकिन वह जानता था कि मैं सब कुछ समझ गई थी। लेकिन, हे भगवान, अगर वह अपने पति से इतना कम प्यार करती थी, तो क्या वह उस महिला के साथ एक ही ड्राइंग रूम में इतनी पूर्ण उदासीनता के साथ रह सकती थी, जिसका वह वर्षों तक, बल्कि हमेशा ही, भावुक प्रेमी था, क्योंकि मुझे यकीन है कि यह युद्ध के दौरान भी जारी रहा। "क्यों, वह उसका गला काट देगी," डचेस चिल्लाई, यह पूरी तरह से भूलकर कि उसने खुद राहेल को आमंत्रित करके और उस दृश्य को रचकर क्रूरता का काम किया था जिसे वह अपरिहार्य मानती थी अगर गिल्बर्ट रॉबर्ट से प्यार करती थी। "नहीं!" उसने निष्कर्ष निकाला, "वह औरत सूअर है।" मैडम के मुँह से ऐसा भाव संभव था। डी गुएरमांटेस परिवार से अभिनेत्रियों के समाज में सहज और क्रमिक रूप से प्रवेश करने के कारण, उन्होंने अठारहवीं सदी के उस तौर-तरीके को अपनाया जिसे वे ताजगी भरा मानती थीं, क्योंकि उन्हें हर तरह की स्वतंत्रता प्राप्त थी। लेकिन यह अभिव्यक्ति गिल्बर्ट के प्रति उनकी घृणा से भी प्रेरित थी, शारीरिक रूप से प्रहार करने में असमर्थ होने पर उसका पुतला बनाने की आवश्यकता से भी। और उन्हें लगा कि इस प्रकार वे गिल्बर्ट के प्रति या बल्कि उसके विरुद्ध अपने कृत्य को समाज

में, परिवार में, यहाँ तक कि रॉबर्ट की विरासत में अपने हित के संबंध में भी उचित ठहरा रही हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसे तथ्य जिनके बारे में हम अनजान होते हैं और जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते, हमारे निर्णयों का स्पष्ट औचित्य प्रदान करते हैं। गिलबर्ट, जिसने निस्संदेह अपनी माँ के कुछ गुण विरासत में पाए थे (और मुझे लगता है कि जब मैंने उससे लड़कियों से मिलवाने के लिए कहा था, तब मैंने अनजाने में ही यह अनुमान लगा लिया था), मेरे अनुरोध पर विचार करने के बाद और यह सुनिश्चित करने के लिए कि इससे होने वाला कोई भी लाभ परिवार से बाहर न जाए, एक ऐसा निष्कर्ष जिसकी धृष्टता की मैंने कल्पना भी नहीं की थी, थोड़ी देर बाद मेरे पास आई और बोली: "अगर आप मुझे अनुमति दें, तो मैं अपनी छोटी बेटी को बुला लाती हूँ, वह वहाँ युवा मोर्टेमार्ट और कुछ अन्य महत्वहीन बच्चों के साथ है। मुझे यकीन है कि वह आपके लिए एक प्यारी सी दोस्त साबित होगी।" मैंने उससे पूछा कि क्या रॉबर्ट को बेटी पाकर खुशी हुई थी। "ओह, उन्हें उस पर बहुत गर्व था, लेकिन, ज़ाहिर है, मुझे लगता है, उनकी पसंद को देखते हुए," गिलबर्ट ने भोलेपन से कहा, "वह एक लड़का पसंद करते।" यह लड़की, जिसके नाम और भाग्य ने निस्संदेह उसकी माँ को यह आशा दिलाई होगी कि वह किसी कुलीन राजकुमार से विवाह करेगी और इस प्रकार स्वान और उसकी पत्नी के पूरे परिवार को गौरवान्वित करेगी, बाद में एक साधारण साहित्यकार से विवाह कर बैठी, क्योंकि वह बिल्कुल भी अभिमानी नहीं थी, और उसके कारण परिवार सामाजिक स्तर पर उससे भी नीचे गिर गया जहाँ से वह आई थी। बाद में युवा पीढ़ी को यह विश्वास दिलाना बहुत कठिन हो गया कि इस साधारण परिवार के माता-पिता का सामाजिक स्तर बहुत ऊँचा था।

गिलबर्ट के शब्दों से मुझे जो आश्चर्य और आनंद हुआ था, वह तुरंत ही

उस अतीत के विचार से बदल गया, जिसे श्रीमती डी सेंट-लूप ने अपने विशेष अंदाज़ में, बिना मुझे देखे ही, मेरे सामने ला खड़ा किया था। अधिकांश मनुष्यों की तरह, क्या वह भी किसी जंगल के चौराहे के केंद्र की तरह नहीं थीं, वह बिंदु जहाँ अनेक दिशाओं से आने वाली सड़कें आकर मिलती हैं? श्रीमती डी सेंट-लूप पर आकर मिलने वाली सड़कें अनेक थीं और उनके चारों ओर से शाखाओं की तरह फैली हुई थीं। सबसे पहले, वे दो महान पहलू जहाँ मैं अक्सर चला था और अनगिनत सपने देखे थे, उनमें आकर समाप्त होते थे—उनके पिता, रॉबर्ट डी सेंट-लूप के माध्यम से, जो गुएरमांटेस पक्ष था, और उनकी माता, गिलबर्ट के माध्यम से, जो मेसेग्लिस का पक्ष था, जो स्वान का पक्ष था। एक रास्ता, उस युवती की माँ और चैंप्स एलिसीज़ के माध्यम से, मुझे स्वान तक ले गया, कॉम्ब्रे में बिताई मेरी शामों तक, मेसेग्लिस के पास तक। दूसरा रास्ता, उसके पिता के माध्यम से, मुझे बालबेक में बिताई मेरी दोपहरों तक ले गया, जहाँ मैंने उसे फिर से जगमगाते समुद्र के पास देखा। अनुप्रस्थ सड़कें पहले से ही उन दो मुख्य रास्तों को आपस में जोड़ती थीं। क्योंकि असली बालबेक से होकर, जहाँ मैं सेंट-लूप को जानता था और जाना चाहता था, मुख्य रूप से स्वान द्वारा मुझे वहाँ के चर्चों, विशेष रूप से फ़ारसी चर्च के बारे में बताई गई बातों के कारण, और फिर से डचेस डी गुएरमांटेस के भतीजे रॉबर्ट डी सेंट-लूप के माध्यम से, मैंने कॉम्ब्रे को गुएरमांटेस के पक्ष से फिर से जोड़ दिया। लेकिन मैडम डी सेंट-लूप ने मुझे मेरे जीवन के कई अन्य बिंदुओं से भी जोड़ दिया, उस गुलाबी पोशाक वाली महिला से जो उसकी दादी थी और जिसे मैंने अपने परदादा के घर पर देखा था। यहाँ एक नया मोड़ आया, क्योंकि मेरे परदादा के नौकर, जिसने उस दिन मेरा आगमन बताया था और जिसने एक तस्वीर के उपहार स्वरूप मुझे गुलाबी पोशाक वाली महिला की पहचान करने में

सक्षम बनाया था, उस युवक का चाचा था जिसे न केवल एम. डी चार्लस बल्कि मैडम डी सेंट-लूप के पिता भी प्यार करते थे और जिसके कारण उनकी माँ दुखी थीं। और क्या यह मैडम डी सेंट-लूप के दादा, स्वान ही नहीं थे, जिन्होंने मुझे विंटेइल के संगीत के बारे में सबसे पहले बताया था, जैसे गिल्बर्ट ने मुझे अल्बर्टीन के बारे में बताया था? और विंटेइल के संगीत के बारे में अल्बर्टीन से बात करते हुए ही मुझे पता चला था कि उसकी घनिष्ठ सहेली कौन थी और उसके साथ उस जीवन की शुरुआत हुई थी जो उसकी मृत्यु और मेरे गहरे दुखों का कारण बना। और यह फिर से मैडम डी सेंट-लूप के पिता ही थे जिन्होंने अल्बर्टीन को मेरे पास वापस लाने का प्रयास किया था। और मैंने समाज में अपना पूरा जीवन फिर से देखा, चाहे पेरिस में स्वान और गुएरमांटे के ड्राइंग रूम में, या इसके विपरीत, बालबेक में वर्दुरिन के घर में, जहाँ कॉम्ब्रे के दोनों हिस्से शैंप्स एलिसी और रास्पेलियर की खूबसूरत छतों से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, जिन लोगों को हम जानते हैं, उनमें से किन लोगों को हम अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं से जोड़ना अनिवार्य रूप से नहीं समझते, यदि हम उनसे अपने परिचय का वर्णन करते हैं? मेरे द्वारा वर्णित सेंट-लूप का जीवन हर तरह के दृश्य में सामने आएगा और मेरे पूरे जीवन को प्रभावित करेगा, यहाँ तक कि उन हिस्सों को भी जिनसे वह अपरिचित थे, जैसे मेरी दादी या अल्बर्टीन। इसके अलावा, चाहे उनकी तुलना कितनी भी की जाए, वर्दुरिन ओडेट से उसके अतीत के माध्यम से जुड़े हुए थे, रॉबर्ट डी सेंट-लूप से चार्ली के माध्यम से, और उनके घर में विंटेइल के संगीत ने कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी! अंत में, स्वान ने लेग्रैंडिन की बहन से प्रेम किया था और लेग्रैंडिन एम. डी चार्लस को जानते थे, जिनके शिष्य युवा कैम्ब्रेमर ने विवाह किया था। निश्चित रूप से, यदि केवल हमारे हृदय ही प्रश्न में होते, तो कवि जीवन के उन रहस्यमय धागों के बारे में सही

कहते जब वे टूटते हैं। लेकिन यह और भी अधिक सत्य है कि जीवन निरंतर प्राणियों के बीच, घटनाओं के बीच उन्हें बुनता रहता है, वह उन धागों को पार करता है, उन्हें दोहराता है ताकि ताना इतना घना हो जाए कि हमारे अतीत के सबसे छोटे बिंदु और बाकी सभी के बीच, यादों का भंडार इतना समृद्ध है कि केवल संवादों का चुनाव ही शेष रह जाता है। यदि मैं इसका सचेत रूप से उपयोग करने का प्रयास करता और इसे जैसा था वैसा ही याद करता, तो यह कहना संभव है कि अब मेरे काम आने वाली एक भी वस्तु ऐसी नहीं थी जो जीवित न रही हो, जो मेरी सेवा में अपना व्यक्तिगत जीवन जी रही हो, भले ही उस उपयोग से वह साधारण औद्योगिक पदार्थ में परिवर्तित हो गई हो। और मैडम डी सेंट-लूप से मेरा परिचय मैडम वर्दुरिन के घर पर होने वाला था, जो अब राजकुमारी डी गुएरमांटेस बन चुकी थीं! मुझे अल्बर्टीन के साथ उन यात्राओं का कितना आकर्षण याद आता है, जिनकी उत्तराधिकारी बनने के लिए मैं मैडम डी सेंट-लूप से कहने वाला था—डौविल की ओर जाने वाली छोटी ट्राम में मैडम से मिलने के लिए। वेरदुरिन, वही श्रीमती वेरदुरिन जिन्होंने अल्बर्टाइन से मेरे प्रेम करने से पहले मैडम डी सेंट-लूप के दादा-दादी के प्रेम को संवारा और तोड़ा था। और हमारे चारों ओर एल्स्टिर की तस्वीरें थीं, जिन्होंने मुझे अल्बर्टाइन से मिलवाया था, और मानो मेरे सारे अतीत को एक में मिलाने के लिए, श्रीमती वेरदुरिन ने भी गिल्बर्ट की तरह एक गुरमांटेस से शादी कर ली थी।

किसी दूसरे व्यक्ति के साथ अपने संबंधों की कहानी सुनाते समय, चाहे हम उसे कितना भी कम जानते हों, हमें अपने जीवन में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों को दर्ज किए बिना ऐसा नहीं करना चाहिए। इस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति—और मैं स्वयं भी उन्हीं व्यक्तियों में से एक हूँ—अपने जीवन की अवधि को न केवल अपने चारों ओर, बल्कि दूसरों के चारों ओर भी किए

गए अपने कार्यों और विशेष रूप से मेरे साथ अपने संबंधों में क्रमिक रूप से प्राप्त की गई स्थितियों के आधार पर मापता है।

और निःसंदेह, वे सभी विभिन्न तल, जिन पर समय ने, इस स्वागत समारोह में पुनः प्राप्त होने के बाद से, मेरे जीवन को प्रदर्शित किया था, मुझे यह याद दिलाते हुए कि किसी व्यक्ति के इतिहास को बताने वाली पुस्तक में, सामान्य सपाट मनोविज्ञान के विपरीत एक प्रकार के स्थानिक मनोविज्ञान का उपयोग करना आवश्यक होगा, पुस्तकालय में मेरे एकांत चिंतन के दौरान मेरी स्मृति द्वारा संचालित पुनरुत्थानों में एक नई सुंदरता जोड़ दी, क्योंकि स्मृति, अतीत को बिना किसी संशोधन के वर्तमान में प्रस्तुत करके, मानो वह वर्तमान ही हो, ठीक उसी महान समय-आयाम को समाप्त कर देती है जिसके अनुसार जीवन साकार होता है।

मैंने गिलबर्ट को अपनी ओर आते देखा। मैं, जिसके लिए सेंट-लूप का विवाह और उससे जुड़ी सारी चिंताएँ (जो अब भी थीं) बीते कल की बात थीं, उसके बगल में एक युवती को देखकर चकित रह गया, जिसकी लंबी, दुबली-पतली आकृति उस बीते समय का प्रमाण थी जिसे मैं अब तक देख नहीं पाया था।

रंगहीन, समझ से परे समय मानो उसमें साकार हो उठा था, मानो मैं उसे देख और छू सकूँ। समय ने उसे एक तराशी हुई उत्कृष्ट कृति में ढाल दिया था, जबकि मेरे लिए, अफसोस, वह बस अपना काम कर रहा था। फिर भी, मैडम डी सेंट-लूप मेरे सामने खड़ी थीं। उनकी गहरी, सुस्पष्ट, उभरी हुई और भेदक आँखें थीं। मैंने देखा कि उनकी नाक की बनावट उनकी माँ और दादी की तरह ही थी, आधार बिल्कुल सीधा था, और यद्यपि मनमोहक थी, थोड़ी सी लंबी थी। उस विशिष्ट विशेषता के कारण कोई भी उन्हें हजारों में पहचान सकता था, और मैंने प्रकृति की प्रशंसा की कि उसने एक शक्तिशाली और मौलिक मूर्तिकार की तरह, ठीक उसी जगह

पर छेनी का निर्णायक प्रहार किया था जहाँ उसने माँ और दादी की नाक पर किया था। वह आकर्षक नाक, जो चोंच की तरह उभरी हुई थी, सेंट-लूप की विशेषता थी, स्वान की नहीं। गुएरमांटे परिवार की आत्मा लुप्त हो चुकी थी, लेकिन उड़ते हुए पक्षी जैसी तीक्ष्ण आँखों वाला मनमोहक चेहरा उसके कंधों पर टिका हुआ था और मुझे, जो उसके पिता को जानता था, एक स्वप्नलोक में ले गया। वह इतनी सुंदर, इतनी आशावान थी। खिलखिलाती मुस्कान के साथ, वह मेरे खोए हुए वर्षों से बनी हुई प्रतीत होती थी; वह मेरी जवानी का प्रतीक थी।

अंततः, समय की इस अवधारणा का वही अंतिम महत्व था जो घड़ी की सुई का होता है। इसने मुझे बताया कि अब शुरुआत करने का समय आ गया है, यदि मैं उस चीज़ को प्राप्त करना चाहता हूँ जिसे मैंने गुएरमांटे परिवार के साथ और श्रीमती डी विलेपारिसिस के साथ यात्राओं के दौरान क्षणिक रूप से महसूस किया था - वह अवर्णनीय तत्व जिसने मुझे जीवन को सार्थक समझा था। अब तो यह और भी अधिक सार्थक हो जाता है, क्योंकि अब ऐसा प्रतीत होता है कि अंधकार में जी रहे उस जीवन को प्रकाशित करना संभव है, अंततः उस सत्य को एक पुस्तक में प्रकट करना संभव है जिसे हम निरंतर नकारते रहते हैं। वह व्यक्ति कितना भाग्यशाली होगा जो ऐसी पुस्तक लिख सके। उसके लिए कितना परिश्रम प्रतीक्षा कर रहा होगा! इसके विस्तार को व्यक्त करने के लिए इसकी तुलना सबसे उत्कृष्ट और विविध कलाओं से करनी होगी। लेखक को प्रत्येक पात्र का निर्माण करते समय उसे परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करना पड़ता है ताकि उसकी रचना में दृढ़ता आ सके। उसे इसे अत्यंत सावधानी से तैयार करना पड़ता है, निरंतर आक्रमण की तैयारी में अपनी शक्तियों को पुनर्गठित करना पड़ता है, इसे एक बोझ की तरह उठाना पड़ता है, इसे अपने जीवन का उद्देश्य मानना पड़ता है, इसे एक

गिरजाघर की तरह बनाना पड़ता है, एक नियम की तरह इसका पालन करना पड़ता है, एक बाधा की तरह इसे पार करना पड़ता है, एक मित्रता की तरह इसे जीतना पड़ता है, एक बच्चे की तरह इसका पालन-पोषण करना पड़ता है, इसे एक संसार की तरह सृजित करना पड़ता है, उन रहस्यों को ध्यान में रखते हुए जिनका स्पष्टीकरण शायद केवल दूसरे लोकों में ही मिल सकता है, जिनकी पूर्वसूचना हमें जीवन और कला में सबसे अधिक प्रेरित करती है। समय की कमी के कारण ऐसी महान पुस्तकों के कुछ अंश केवल रेखाचित्र के रूप में ही प्रस्तुत किए जा सकते हैं और शायद वास्तुकार की विशाल रचना के कारण वे कभी पूर्ण न हो सकें। कितने महान गिरजाघर अधूरे रह जाते हैं? ऐसी किताब को पनपने में लंबा समय लगता है, इसके कमजोर हिस्सों को मजबूत करना पड़ता है, इस पर नज़र रखनी पड़ती है, लेकिन अंततः यह अपने आप विकसित होती है, यह हमारी समाधि का प्रतीक बनती है, इसे बुरी खबरों से बचाती है और कुछ हद तक विस्मृति से भी। लेकिन अपने विषय पर लौटते हुए, मैं अपनी किताब के बारे में अधिक विनम्रता से सोच रहा था और यह कहना भी सही नहीं होगा कि मैं इसे पढ़ने वालों को अपने पाठक मान रहा था। क्योंकि, जैसा कि मैं पहले ही दिखा चुका हूँ, वे मेरे पाठक नहीं होंगे, बल्कि स्वयं के पाठक होंगे, मेरी किताब तो बस एक आवर्धक लेंस की तरह है, जैसे कॉम्ब्रे का ऑप्टिशियन खरीदार को देता है। इसलिए मुझे न तो उनकी प्रशंसा माँगनी चाहिए और न ही उनकी आलोचना, बल्कि केवल यह जानना चाहिए कि यह सही है या नहीं, क्या वे जो शब्द अपने भीतर पढ़ रहे हैं, वे मेरे लिखे हुए हैं (इस संबंध में संभावित विचलन हमेशा मेरी गलती से नहीं, बल्कि कभी-कभी इसलिए भी हो सकते हैं क्योंकि पाठक की आँखें वे नहीं होंगी जिनके लिए मेरी किताब उपयुक्त है)। और, जैसे-जैसे मैं अपने विचारों को बेहतर ढंग से व्यक्त

करती गई और अपने द्वारा शुरू किए गए कार्य को पूरा करती गई, वैसे-वैसे मेरा मन बदलता गया। मैंने सोचा कि मुझे उस सादे सफेद मेज पर, फ्रांस्वा की निगरानी में, अपना पूरा ध्यान इस कार्य पर कैसे लगाना चाहिए। चूंकि हमारे आस-पास रहने वाले उन सभी सरल स्वभाव के लोगों को एक निश्चित अंतर्ज्ञान होता है कि हम क्या करने की कोशिश कर रहे हैं, और चूंकि मैं अल्बर्टीन को इतना भूल चुकी थी कि मैंने फ्रांस्वा की उसके प्रति शत्रुता को माफ कर दिया था, इसलिए मुझे उसके पास और लगभग उसी की तरह काम करना चाहिए (कम से कम जैसा वह पहले करती थी, क्योंकि अब वह इतनी बूढ़ी हो गई थी कि उसे ठीक से दिखाई भी नहीं देता था), क्योंकि मुझे अपनी पुस्तक को इधर-उधर अतिरिक्त पन्ने जोड़कर, एक गिरजाघर की तरह नहीं, बल्कि एक पोशाक की तरह, तैयार करना चाहिए। जब मुझे अपनी मनचाही सारी शीटें नहीं मिलती थीं, मेरे सारे "पेपरहोल्स" (जैसा कि फ्रांस्वा उन्हें कहती थी), जब बस एक ज़रूरी शीट गायब होती थी, तो फ्रांस्वा मेरी परेशानी समझ जाती थी। वह हमेशा कहती थी कि अगर उसे मनचाहा धागा और बटन न मिले तो वह सिलाई नहीं कर सकती। और मेरे साथ रहने से उसे साहित्यिक कार्यों की एक सहज समझ आ गई थी, जो कई बुद्धिमान लोगों से भी कहीं ज़्यादा सटीक थी, और मूर्खों से भी कहीं ज़्यादा। इसलिए जब मैं फिगारो के लिए अपने लेख लिखती थी, तो वह बूढ़ा बटलर, जो परिश्रम की कठोरता के प्रति अतिरंजित सहानुभूति दिखाता था, जो अपरिचित थी, जिसे देखा नहीं जा सकता था, यहाँ तक कि उस आदत के लिए भी जो उसने खुद नहीं अपनाई थी, जैसे लोग कहते हैं, "इस तरह जम्हाई लेना कितना थका देने वाला काम होगा," लेखकों पर तरस खाता था और कहता था: "यह कितना सिरदर्द वाला काम होगा," वहीं फ्रांस्वा इसके विपरीत, मेरी संतुष्टि को भांप लेती थी और मेरे काम का सम्मान करती

थी। जब मैंने अपने लेख प्रकाशित होने से पहले ही ब्लोच को उनके बारे में बताया, तो वह नाराज़ हो गईं, क्योंकि उन्हें डर था कि वह मुझसे पहले ही लिख देंगे। उन्होंने कहा, "तुम्हें इन सभी लोगों पर पर्याप्त संदेह नहीं है, ये सब नकलची हैं।" और वास्तव में, ब्लोच ने हर बार जब मैंने कुछ ऐसा स्केच बनाया जो उन्हें पसंद आया, तो यह कहकर एक संभावित बहाना पेश किया: "वाह! यह तो अजीब बात है, मैंने भी कुछ ऐसा ही लिखा है; मुझे इसे तुम्हें पढ़कर सुनाना चाहिए।" (वह तब मुझे पढ़कर सुना नहीं सकते थे क्योंकि वह उसी शाम इसे लिखने वाले थे।)

एक पन्ने पर दूसरा पन्ने चिपकाने के कारण, जिसे फ्रांकोइस मेरे कागज़ के छेद कहती थी, वो जगह-जगह से फट गए थे। ज़रूरत पड़ने पर वो मेरी मदद कर देती, ठीक वैसे ही जैसे वो अपने कपड़ों के फटे हुए हिस्सों पर पैच लगाती थी, या जैसे मैं प्रिंटर का इंतज़ार करती थी, जब उसने खिड़की के शीशे की जगह अख़बार का एक टुकड़ा चिपका दिया था। मेरी कॉपी की किताबें, जो कीड़े लगे लकड़ी की तरह खराब हो चुकी थीं, उठाते हुए उसने कहा: "ये सब कीड़े खा गए हैं, देखो, कितना अफ़सोस है, ये रहा एक पन्ने का निचला हिस्सा जो बस एक लेस का टुकड़ा है," और फिर एक दर्जी की तरह उसे देखते हुए बोली: "मुझे नहीं लगता मैं इसे ठीक कर सकती हूँ, ये तो पूरी तरह से खराब हो गया है, कितना अफ़सोस; शायद ये तुम्हारे सबसे अच्छे विचार थे। जैसा कि कॉम्ब्रे में कहते थे, कोई भी फरियर अपने काम को कीड़ों जितना अच्छा नहीं जानता, वे हमेशा सबसे अच्छी सामग्री चुनते हैं।"

इसके अलावा, चूंकि इस पुस्तक में व्यक्तित्व (मानव या अन्य) का निर्माण अनेक छापों से होगा, जो अनेक लड़कियों, अनेक गिरजाघरों, अनेक सोनाटा से प्राप्त होकर एक सोनाटा, एक गिरजाघर और एक लड़की का निर्माण करेंगे, तो क्या मुझे अपनी पुस्तक उसी प्रकार नहीं

बनानी चाहिए जैसे फ्रांस्वा ने वह बोउफ आ ला मोड बनाया था, जिसका स्वाद एम. डी नॉरपोइस ने बड़े चाव से लिया था और जिसकी जेली में मांस के कई अतिरिक्त सावधानीपूर्वक चुने हुए टुकड़े मिलाए गए थे? और अंततः मैं वह प्राप्त कर लूँगी जिसके लिए मैं गुएरमांटेस की ओर अपनी सैर के दौरान इतनी तरसती रही थी और जिसे असंभव मानती थी, जैसे मुझे घर लौटने पर अपनी माँ को गले लगाए बिना बिस्तर पर जाना असंभव लगता था, या बाद में, अल्बर्टीन को महिलाओं से प्रेम था, एक ऐसा विचार जिसे मैंने अंततः अनजाने में स्वीकार कर लिया, क्योंकि हमारे सबसे बड़े भय, हमारी सबसे बड़ी आशाओं की तरह, हमारी क्षमता से परे नहीं हैं और पहले पर विजय प्राप्त करके दूसरे को साकार करना संभव है। हाँ, समय के इस नवगठित विचार ने मुझे चेतावनी दी कि काम पर लगने का समय आ गया है। यह सही समय था। ड्राइंग रूम में प्रवेश करते ही मेरे मन में जो चिंता छा गई थी और सजे-धजे चेहरों को देखकर मुझे समय के खो जाने का आभास हुआ था, वह जायज़ थी। क्या अभी भी समय था? मन में ऐसे दृश्य होते हैं जिन्हें निहारने के लिए हमें केवल कुछ समय ही दिया जाता है। मैं एक चित्रकार की तरह जी रहा था जो चट्टानों और पेड़ों के पर्दे से छिपी झील के किनारे बने रास्ते पर चढ़ रहा हो। एक दरार से वह उसे देखता है, वह उसके सामने होती है, वह अपने ब्रश उठाता है, लेकिन अंधेरा छा चुका होता है और वह अब और चित्र नहीं बना सकता, वह रात जिस पर फिर कभी दिन नहीं निकलेगा।

पुस्तकालय में अभी-अभी मैंने जिस कार्य की कल्पना की थी, उसकी एक शर्त यह थी कि मुझे उन छापों की गहराई को समझना होगा जिन्हें पहले स्मृति के माध्यम से पुनः जीवंत करना होगा। और मेरी स्मृति कमजोर थी। इसलिए, चूंकि मैंने अभी तक कार्य शुरू नहीं किया था, मुझे आशंका का कारण था, क्योंकि यद्यपि मैं अपनी उम्र को देखते हुए सोचता था कि मेरे

पास अभी कुछ वर्ष शेष हैं, मेरा समय किसी भी क्षण आ सकता था। वास्तव में, मुझे अपने शरीर को ही आरंभिक बिंदु मानना था, जिसका अर्थ था कि मैं लगातार दोहरे खतरे के साये में था - बाहरी और आंतरिक। और जब मैं यह कहता हूं, तो यह केवल अभिव्यक्ति की सुगमता के लिए है। क्योंकि मस्तिष्क रक्तस्राव जैसे आंतरिक खतरे का बाहरी खतरा भी होता है, क्योंकि यह शरीर से संबंधित होता है। और शरीर ही मन के लिए सबसे बड़ा खतरा है। यह कहना कम उचित है कि मानव का चिंतनशील जीवन पशु और भौतिक जीवन का चमत्कारिक रूप से परिपूर्ण होना है, बल्कि यह कहना अधिक उचित है कि यह आध्यात्मिक जीवन के संगठन में एक अपूर्णता है, जो कि कॉलोनियों में प्रोटोजोआ के सामूहिक अस्तित्व या व्हेल के शरीर आदि के समान ही आदिम है; वास्तव में इतनी अपूर्ण कि शरीर आत्मा को एक किले में कैद कर लेता है; जल्द ही किले पर चारों ओर से हमला होता है और अंत में आत्मा को आत्मसमर्पण करना पड़ता है। लेकिन अपनी आत्मा को खतरे में डालने वाले दो प्रकार के खतरों में अंतर करने और बाहरी खतरे से शुरू करने के लिए, मुझे याद आया कि मेरे जीवन में कई बार ऐसा हुआ था, बौद्धिक उत्तेजना के क्षणों में जब किसी परिस्थिति ने मेरी शारीरिक गतिविधि को पूरी तरह से रोक दिया था, उदाहरण के लिए जब मैं राइवेबेल के रेस्तरां से अर्ध-नशे की हालत में पास के कैसीनो में जाने के लिए निकल रहा था, तब मैंने अपने विचार के तात्कालिक विषय को अत्यंत स्पष्टता से महसूस किया और महसूस किया कि यह न केवल संयोग की बात थी कि वह विषय अभी तक मेरे मन में नहीं आया था, बल्कि उसका अस्तित्व मेरे शारीरिक अस्तित्व पर निर्भर था। तब मुझे इसकी परवाह बहुत कम थी। अपनी सहज खुशी में मैं न तो सावधान था और न ही चिंतित। मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि यह सुखद विचार पल भर में गायब हो गया और

शून्य में विलीन हो गया। लेकिन अब ऐसा नहीं था, क्योंकि जो आनंद मैंने अनुभव किया वह किसी व्यक्तिपरक तंत्रिका तनाव से उत्पन्न नहीं हुआ था जो हमें अतीत से अलग करता है, बल्कि इसके विपरीत, चेतना के विस्तार से उत्पन्न हुआ था जिसमें अतीत, पुनर्जीवित और साकार होकर, मुझे, अफसोस, केवल एक क्षण के लिए, शाश्वतता का अहसास करा रहा था। मेरी इच्छा थी कि मैं इसे अपने पीछे छोड़ जाऊं ताकि मैं अपने खजाने से दूसरों को समृद्ध कर सकूं। पुस्तकालय में मेरा अनुभव, जिसे मैं संरक्षित करना चाहता था, आनंद का था, लेकिन अहंकारपूर्ण आनंद नहीं, या कम से कम यह अहंकार का एक ऐसा रूप था जो दूसरों के लिए उपयोगी है (क्योंकि प्रकृति के सभी फलदायी परोपकार अहंकारपूर्ण तरीके से विकसित होते हैं; मानवीय परोपकार जो अहंकार नहीं है, वह निष्फल है, यह उस लेखक का परोपकार है जो किसी दुखी मित्र से मिलने, किसी सार्वजनिक समारोह में शामिल होने या प्रचार लेख लिखने के लिए अपना काम रोक देता है)।

रिवेबेल से लौटने पर मैं जिस तरह उदासीन थी, अब वैसी नहीं रही; इस काम ने मुझे अंदर से समृद्ध महसूस कराया (जैसे कोई अनमोल और नाज़ुक चीज़, जो मेरी नहीं, बल्कि किसी और की है, जिसे मेरी देखरेख में सौंपा गया है और जिसे मैं उन लोगों को अक्षुण्ण सौंपना चाहती हूँ जिनके लिए वह बनी है)। और यह सोचकर दुख होता है कि जब मैं अभी घर लौटी, तो एक दुर्घटना मेरे शरीर को नष्ट करने के लिए काफ़ी होगी और मेरा निर्जीव मन उन विचारों को हमेशा के लिए खो देगा जिन्हें उसने अब तक अपने कांपते हुए ढांचे में सहेज कर रखा था, इससे पहले कि उन्हें किसी किताब के पन्नों में सुरक्षित रख सके। अब, स्वयं को ऐसे कार्य का वाहक जानते हुए, मेरे लिए एक ऐसी दुर्घटना जिससे मेरी जान जा सकती थी, कहीं अधिक भयावह थी, वास्तव में (जिस हद तक यह कार्य मुझे

अपरिहार्य और स्थायी प्रतीत होता था) यह मेरी इच्छा, मेरी जीवनदायिनी प्रेरणा के विपरीत बेतुकी थी, लेकिन इस कारण से इसकी संभावना कम नहीं थी क्योंकि भौतिक कारणों से होने वाली दुर्घटनाएँ ठीक उसी क्षण घटित हो सकती हैं जब एक विरोधी इच्छा, जिसे वे अनजाने में नष्ट कर देती हैं, उन्हें भयावह बना देती है, जैसे कि मेज के किनारे के बहुत पास रखे पानी के जग को गिरा देने की सामान्य दुर्घटना, जिससे सो रहे मित्र की नींद टूट जाती है जिसे जगाना आप बिल्कुल नहीं चाहते।

मैं भली-भांति जानता था कि मेरा मस्तिष्क खनिजों का एक समृद्ध भंडार है, जहाँ बहुमूल्य खनिजों का विशाल और विविध क्षेत्र मौजूद है। लेकिन क्या मेरे पास उनका दोहन करने का समय होगा? दो कारणों से, मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो ऐसा कर सकता था। मेरी मृत्यु के साथ न केवल खनिजों को निकालने में सक्षम एकमात्र खनिक गायब हो जाएगा, बल्कि उसके साथ ही खनिज भी। और घर लौटते समय मेरी कार का किसी अन्य कार से टकरा जाना ही मेरे शरीर को नष्ट करने के लिए पर्याप्त होगा और मेरी आत्मा को अपने नए विचारों को हमेशा के लिए त्यागना पड़ेगा। और एक अजीब संयोग से, खतरे का वह तर्कसंगत भय ठीक उसी क्षण पैदा हुआ जब मृत्यु का विचार मेरे लिए उदासीन हो गया था। अस्तित्वहीन होने का भय पहले मुझे हर नए प्रेम के साथ सताता था —गिल्बर्टे के लिए, अल्बर्टीन के लिए—क्योंकि मैं यह विचार सहन नहीं कर सकता था कि एक दिन उन्हें प्यार करने वाला व्यक्ति शायद न रहे; यह एक प्रकार की मृत्यु थी। लेकिन इस भय के बार-बार उत्पन्न होने से यह शांत आत्मविश्वास में बदल गया।

अगर मृत्यु के विचार ने प्रेम पर अंधकार की छाया डाली थी, तो प्रेम की स्मृति ने लंबे समय से मुझे मृत्यु से भयभीत न होने में मदद की थी। मुझे एहसास हुआ कि मृत्यु कोई नई बात नहीं है, बचपन से ही मैं कई बार

मृत्यु के मुंह से वापस आया था। हाल के समय की बात करूं तो, क्या मैं अल्बर्टीन को अपने जीवन से अधिक महत्व नहीं देता था? क्या मैं उसके प्रति अपने प्रेम के बिना अपने अस्तित्व की कल्पना कर सकता था? फिर भी, अब मैं उससे प्रेम नहीं करता था, मैं वह व्यक्ति नहीं था जो उससे प्रेम करता था, बल्कि एक अलग व्यक्ति था जो उससे प्रेम नहीं करता था, और जब मैं वह दूसरा व्यक्ति बन गया, तब मैंने उससे प्रेम करना छोड़ दिया। और मुझे इस बात का दुख नहीं हुआ कि मैं वह दूसरा व्यक्ति बन गया था, क्योंकि अब मैं अल्बर्टीन से प्रेम नहीं करता था; और निश्चित रूप से, मुझे यह बात उतनी दुखद नहीं लगी कि एक दिन मेरा शरीर न रहे, जितनी पहले अल्बर्टीन से प्रेम न करना लगता था। फिर भी, अब यह सब मेरे लिए कितना उदासीन था। ये लगातार होने वाली मृत्युएँ, जिनसे मैं इतना भयभीत था कि वे मुझे नष्ट कर देंगी, इतनी उदासीन, इतनी मधुर थीं, जब वे घटित हुईं, जब उनसे भयभीत व्यक्ति उन्हें महसूस करने के लिए नहीं रहा, तब मुझे एहसास हुआ कि मृत्यु से भयभीत होना कितना मूर्खतापूर्ण होगा। और अब जब यह कुछ समय के लिए मेरे प्रति उदासीन रहा, तो मैं इससे फिर से डरने लगा, एक अलग रूप में, यह सच है, अपने लिए नहीं बल्कि अपनी पुस्तक के लिए, जिसके लिए वह जीवन, इतने सारे खतरों से घिरा हुआ, कम से कम एक अवधि के लिए अपरिहार्य था। विक्टर ह्यूगो कहते हैं: "घास उगती है और बच्चे मर जाते हैं।" मैं कहता हूँ कि कला का क्रूर नियम यह है कि प्राणी मरते हैं और हमें भी दुखों को समाप्त करने के बाद मरना होगा ताकि विस्मृति की नहीं बल्कि शाश्वत जीवन की घास उग सके, उन कृतियों से पोषित हो जिन पर आने वाली पीढ़ियाँ बिना किसी चिंता के मौज-मस्ती से पिकनिक मना सकें, उन लोगों की परवाह किए बिना जो उसके नीचे सो रहे हैं। मैंने बाहरी खतरों की बात की है, लेकिन आंतरिक खतरे भी थे। यदि मैं बाहरी

दुर्घटना से बच भी जाता, तो कौन जानता है कि क्या मुझे उस पुस्तक को लिखने के लिए आवश्यक महीनों के बीतने से पहले ही किसी आंतरिक दुर्घटना, किसी आंतरिक आपदा, किसी मानसिक त्रासदी से अपनी इस सुरक्षा का लाभ उठाने से रोका न जा सके। मानसिक दुर्घटना भी आवश्यक नहीं थी। मुझे पहले से ही कुछ लक्षण महसूस हो रहे थे, दिमाग में एक अजीब सा खालीपन और चीजों को भूल जाने की आदत, जो मुझे संयोग से ही मिलती थी, जैसे कोई अपनी चीजों को खंगालते समय अनजाने में कुछ ऐसा पा लेता है जिसकी उसे तलाश नहीं थी; मैं एक ऐसे कोषाध्यक्ष की तरह था जिसके टूटे हुए खजाने से धन धीरे-धीरे निकल रहा था। जब मैं कुछ देर बाद चैंप्स एलिसी से घर लौटा, तो कौन कह सकता था कि मुझे वही बीमारी नहीं लगेगी जो मेरी दादी को लगी थी, जब एक दिन वह मेरे साथ टहलने आई थीं, जो उनकी आखिरी सैर थी, और उन्होंने कभी सपने में भी ऐसी बात नहीं सोची थी, उस अज्ञानता में जो हमारे हिस्से में आती है जब घड़ी की सुई उस क्षण पर पहुँचती है जब घंटा बजने पर स्प्रिंग खुल जाती है। शायद उस पल के लगभग बीत जाने का डर, जो घंटे की पहली बत्ती बजने से ठीक पहले आता है, जब वह प्रहार करने के लिए तैयार होती है, शायद उस प्रहार का डर जो मेरे दिमाग को चीरने वाला था, आने वाली घटना का एक अस्पष्ट पूर्वज्ञान जैसा था, मस्तिष्क की उस नाजुक स्थिति का चेतना में प्रतिबिंब जिसकी धमनियां टूटने वाली हैं, जो उस घायल व्यक्ति द्वारा अचानक मृत्यु को स्वीकार करने से कम संभव नहीं है, जो यदि अपनी चेतना बनाए रखता है और डॉक्टर और जीने की इच्छा दोनों उसे धोखा देते हैं, फिर भी आने वाली स्थिति को देखता है और कहता है: "मैं मरने जा रहा हूँ, मैं तैयार हूँ," और अपनी पत्नी को अंतिम विदाई लिखता है।

जो कुछ होना था, उसका एक अस्पष्ट पूर्वाभास मुझे अपनी किताब

लिखना शुरू करने से पहले एक अनोखे रूप में मिला। एक शाम मैं एक पार्टी में था और लोग कह रहे थे कि मैं पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा दिख रहा हूँ और यह देखकर हैरान थे कि मुझ पर उम्र का इतना कम असर दिख रहा है। लेकिन उस शाम सीढ़ियों से उतरते समय मैं तीन बार गिरने से बाल-बाल बचा। मैं बस कुछ घंटों के लिए बाहर गया था, लेकिन जब घर पहुँचा, तो मेरी याददाश्त और सोचने की शक्ति चली गई थी और मुझमें न तो ताकत थी और न ही जीवन। अगर वे मुझे राजा घोषित करने या गिरफ्तार करने आते, तो मैं उन्हें बिना कुछ कहे, बिना आँखें खोले, जो चाहें करने देता, ठीक वैसे ही जैसे कैस्पियन सागर पार करते समय, जब वे समुद्री बीमारी की चरम सीमा पर होते हैं, तो अगर उन्हें समुद्र में फेंक दिया जाए तो वे कोई प्रतिरोध नहीं करते। सही मायने में मैं बीमार नहीं था, लेकिन मैं खुद की देखभाल करने में उतना ही असमर्थ था जितना कि कल तक सक्रिय रहे बूढ़े लोग जिनकी जांघ में फ्रैक्चर हो गया हो और वे जीवन के उस चरण में प्रवेश कर रहे हों जो अपरिहार्य मृत्यु की ओर एक प्रारंभिक चरण मात्र है, चाहे वह छोटा हो या लंबा। मेरे व्यक्तित्व का एक हिस्सा—वह हिस्सा जो हाल ही में उन बर्बर दावतों में से एक में गया था जिन्हें समाज में डिनर कहा जाता है, जहाँ सफेद टाई पहने पुरुष और पंखों से सजी, अधनंगी महिलाएं उपस्थित होती हैं, जिनके मूल्य इतने उलटे-पुल्टे होते हैं कि जो व्यक्ति निमंत्रण स्वीकार करने के बावजूद डिनर में नहीं जाता या केवल उपस्थिति दर्ज कराता है, वह उनकी नज़र में सबसे अनैतिक कृत्यों से भी बड़ा अपराध करता है, जिन पर दावत के दौरान बीमारी और मृत्यु जैसी बातों पर भी हल्के-फुल्के ढंग से चर्चा की जाती है, बशर्ते कि मेज़बान को समय पर सूचित कर दिया गया हो कि किसी की मृत्यु हो गई है—उस हिस्से ने अपने विवेक को बनाए रखा और अपनी स्मृति खो दी। दूसरी ओर, दूसरा हिस्सा, वह हिस्सा जिसने इस

रचना की कल्पना की, उसे याद था कि मुझे श्रीमती मोले से निमंत्रण मिला था और मैंने सुना था कि श्रीमती सज़ेरत के बेटे की मृत्यु हो गई है। मैंने मन बना लिया था कि मुझे एक घंटा आराम मिलेगा, जिसके बाद मैं एक शब्द भी नहीं बोल पाऊँगी और न ही दूध की एक बूँद पी पाऊँगी, मेरी दादी की तरह मेरी ज़बान बंद हो जाएगी, ताकि मैं श्रीमती मोले से माफ़ी माँग सकूँ और श्रीमती सज़ेरत को अपनी संवेदनाएँ व्यक्त कर सकूँ। लेकिन कुछ ही देर बाद, मैं यह भूल गई कि मुझे ऐसा करना था। सुखद विस्मृति! क्योंकि मेरे काम की याद मुझे सता रही थी और वह उस बचे हुए घंटे का उपयोग अपनी पहली नींव रखने के लिए करने वाली थी। दुर्भाग्य से, कॉपी उठाते ही, श्रीमती मोले का निमंत्रण पत्र उसमें से गिर गया। तुरंत ही, मेरा वह भूलने वाला स्वभाव, जो उन सभी संशयवादी लोगों पर हावी हो जाता है जो बाहर खाना खाते हैं, ने कॉपी को रख दिया और श्रीमती मोले को लिखना शुरू कर दिया (जिन्हें निस्संदेह मेरे बारे में और अधिक अच्छा लगता अगर उन्हें पता होता कि मैंने उनके निमंत्रण का जवाब अपने वास्तुशिल्प कार्य से पहले रखा है)। अचानक, जब मैं जवाब दे रही थी, मुझे याद आया कि श्रीमती... सज़ेरत ने अपना बेटा खो दिया था, इसलिए मैंने उसे भी पत्र लिखा और इस तरह अपनी शिष्टता और तर्कसंगतता साबित करने के काल्पनिक दायित्व के आगे अपने वास्तविक कर्तव्य का बलिदान करके, मैं बेजान होकर गिर पड़ा, मेरी आँखें बंद हो गईं और पूरे एक सप्ताह तक मैं बस निष्क्रिय पड़ा रहा। फिर भी, भले ही मेरे सारे निरर्थक कर्तव्य, जिनके लिए मैं वास्तविक कर्तव्य का बलिदान करने को तैयार था, कुछ ही मिनटों में मेरे दिमाग से निकल गए हों, लेकिन मेरे भवन का विचार एक पल के लिए भी मेरे मन से नहीं निकला। मुझे नहीं पता था कि यह एक ऐसा गिरजाघर होगा जहाँ श्रद्धालु धीरे-धीरे सत्य को जानेंगे और एक महान एकीकृत योजना की सामंजस्यता को

खोजेंगे या यह किसी रेगिस्तानी द्वीप की ऊँचाई पर स्थित ड्रूयूड स्मारक की तरह हमेशा के लिए अज्ञात ही रहेगा। लेकिन मैंने अपने मन में ठान लिया था कि मैं अपनी क्षीण होती शक्ति को, लगभग अनिच्छा से, इसमें समर्पित करूँगा, मानो मुझे मकबरे के द्वार बंद होने से पहले संरचना को विस्तृत करने का समय मिल रहा हो। मैं जल्द ही अपनी परियोजना की एक रूपरेखा प्रस्तुत करने में सक्षम हो गया। किसी को भी यह समझ नहीं आया। जिन लोगों ने सत्य के प्रति मेरी उस धारणा से सहानुभूति जताई जिसे मैं बाद में अपने माथे पर उकेरना चाहता था, उन्होंने भी मुझे यह कहकर बधाई दी कि मैंने इसे सूक्ष्मदर्शी से खोजा है, जबकि इसके विपरीत, मैंने दूरबीन का उपयोग करके उन चीजों को देखा था जो वास्तव में बहुत छोटी थीं क्योंकि वे दूर थीं, लेकिन उनमें से प्रत्येक अपने आप में एक दुनिया थी। जहाँ मैंने सार्वभौमिक नियमों की खोज की, वहाँ मुझ पर "अत्यंत महत्वहीन" में गहराई से उतरने का आरोप लगाया गया। इसके अलावा, इन सब का क्या फायदा, जब मैं युवा था तब मुझमें काफी प्रतिभा थी और बर्गोट ने मेरे स्कूली प्रयासों की बहुत प्रशंसा की थी। लेकिन काम करने के बजाय मैंने अपना समय आलस्य और फिजूलखर्ची में, बीमार पड़ने और देखभाल किए जाने में, और सनक में बिताया था, और मैं अपनी कला को जाने बिना ही मृत्यु की पूर्व संध्या पर अपना काम शुरू कर रहा था। मुझमें न तो अपने मानवीय दायित्वों का सामना करने की शक्ति बची थी और न ही अपने बौद्धिक दायित्वों का, दोनों का तो सवाल ही नहीं उठता। जहाँ तक पहले की बात है, मुझे जो पत्र लिखने थे उन्हें भूल जाने से मेरा काम कुछ हद तक आसान हो गया। स्मृति हानि ने सामाजिक दायित्वों को मिटाने में मदद की, जिनकी जगह मेरे काम ने ले ली। लेकिन, एक महीने के अंत में, विचारों के जुड़ाव ने अचानक दुखद यादें ताजा कर दीं और मैं अपनी लाचारी से अभिभूत हो गया। मुझे अपने

काम की आलोचनाओं के प्रति अपनी उदासीनता पर आश्चर्य हुआ, लेकिन जब से सीढ़ियों से उतरते समय मेरे पैर लड़खड़ा गए थे, तब से मैं हर चीज के प्रति उदासीन हो गया था; अंत तक मैं केवल आराम की कामना करता रहा। ऐसा इसलिए नहीं था कि मैं मरणोपरांत प्रसिद्धि की उम्मीद कर रहा था, इसलिए मैं आज के प्रतिष्ठित लोगों के निर्णयों के प्रति उदासीन था। जो लोग मेरी मृत्यु के बाद मेरे काम पर अपनी राय देंगे, वे उसके बारे में जो चाहें सोच सकते हैं। मुझे दोनों में से किसी की भी उतनी ही चिंता नहीं थी। वास्तव में, अगर मैं अपने काम के बारे में सोच रहा था और उन पत्रों के बारे में नहीं जिनका मुझे जवाब देना चाहिए था, तो इसका कारण यह नहीं था कि मैं अपने काम को उतना ही महत्वपूर्ण मानता था जितना कि उस समय जब मैं खाली बैठा था और बाद में जब मैंने काम करने की कोशिश की, उस दिन तक जब मुझे सीढ़ियों की रेलिंग पकड़नी पड़ी। मेरी यादों और मेरी चिंताओं का संगठन शायद मेरे काम से जुड़ा हुआ था, क्योंकि भले ही मुझे मिलने वाले पत्र पल भर में भुला दिए जाते थे, लेकिन मेरे काम का विचार लगातार मेरे मन में बना रहता था, एक निरंतर प्रक्रिया में। लेकिन यह भी एक बोझ बन गया था। मेरा काम उस बेटे की तरह था जिसकी मरणासन्न माँ को टीकाकरण और कपिंग के अंतराल में भी लगातार मेहनत करनी पड़ती थी। वह शायद अब भी उससे प्यार करती हो, लेकिन उसे यह एहसास केवल उसकी अत्यधिक देखभाल से ही होता है। और एक लेखक के रूप में मेरी क्षमताएँ अब काम की अहंकारी मांगों के बराबर नहीं रह गई थीं। उस सीढ़ी पर हुई घटना के बाद से, दुनिया की कोई भी चीज़, कोई भी खुशी, चाहे वह दोस्ती से मिले, मेरे काम की प्रगति से मिले या प्रसिद्धि की आशा से, मुझ तक नहीं पहुँची, सिवाय उस फीकी धूप के जो मुझे गर्म करने, मुझे जीवन देने या किसी भी इच्छा को जगाने की शक्ति खो चुकी थी,

और फिर भी अपनी फीकी चमक में मेरी थकी हुई आँखों के लिए बहुत तेज थी, जो दीवार की ओर मुड़ते ही बंद हो गईं। मेरे होठों की हरकत से जितना मैं समझ पाई, शायद मेरे होंठों के कोने पर हल्की सी मुस्कान थी जब एक महिला ने मुझे लिखा: "मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला।" फिर भी, इससे मुझे याद आया और मैंने उसका जवाब दिया। मैं कोशिश करना चाहती थी, ताकि लोग मुझे कृतघ्न न समझें, कि मैं दूसरों के प्रति उतनी ही विचारशील बनूँ जितना वे मेरे प्रति हैं। और अपने मरते हुए शरीर पर इन अमानवीय थकानों का बोझ डालने से मैं पूरी तरह टूट गई थी।

मृत्यु का यह विचार मुझमें प्रेम की तरह दृढ़ता से बस गया। ऐसा नहीं था कि मुझे मृत्यु से प्रेम था, मैं उससे घृणा करता था। लेकिन मैं कह सकता हूँ कि मैं समय-समय पर इसके बारे में सोचता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई उस स्त्री के बारे में सोचता है जिससे अभी प्रेम नहीं हुआ हो। अब यह विचार मेरे मस्तिष्क की सबसे गहरी परत में इस कदर समा गया था कि मैं मृत्यु के विचार के बिना कुछ भी नहीं सोच सकता था। और यहाँ तक कि अगर मैं कुछ भी न सोचूँ और बिल्कुल शांत रहूँ, तब भी मृत्यु का विचार मेरा साथ उसी तरह देता रहता था जैसे मेरा स्वयं का विचार। मुझे नहीं लगता कि जिस दिन मैं मृत्यु के कगार पर पहुँचा, उस दिन नीचे जाने में असमर्थता, नाम याद न आने की असमर्थता, उठने में असमर्थता जैसे साथ-साथ होने वाले कारकों ने अवचेतन तर्क से मुझे यह विचार दिया कि मैं लगभग मर चुका हूँ, बल्कि यह सब एक साथ घटित हुआ था, आत्मा के महान दर्पण ने एक नई वास्तविकता को प्रतिबिंबित किया था। फिर भी मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं बिना किसी चेतावनी के अपनी वर्तमान पीड़ाओं से सीधे मृत्यु की ओर कैसे बढ़ सकता हूँ। लेकिन फिर मैंने दूसरों के बारे में सोचा और कैसे लोग हर दिन मरते हैं, और हमें यह

अजीब नहीं लगता कि उनकी बीमारी और मृत्यु के बीच कोई अंतराल नहीं होता। मैंने यह भी सोचा कि शायद इसलिए कि मैंने उन्हें भीतर से देखा (भ्रामक आशा से कहीं अधिक), कुछ बीमारियाँ मुझे एक-एक करके घातक नहीं लगीं, हालाँकि मुझे लगा कि मैं मरने वाला हूँ, ठीक वैसे ही जैसे वे लोग जो निश्चित हैं कि उनका समय आ गया है, फिर भी आसानी से मान जाते हैं कि कुछ शब्दों का उच्चारण न कर पाना लकवा या दिल की विफलता से नहीं, बल्कि जीभ के थक जाने, हकलाने जैसी तंत्रिका संबंधी समस्या या अपच के कारण होने वाली थकावट से है।

मेरे मामले में, मुझे किसी मरते हुए आदमी की अपनी पत्नी को विदाई नहीं लिखनी थी, बल्कि उससे कहीं लंबी रचना लिखनी थी, जो एक से अधिक लोगों को संबोधित थी। लिखने में बहुत समय लगता! ज़्यादा से ज़्यादा मैं दिन में सोने की कोशिश कर सकता था। अगर काम करता भी, तो सिर्फ़ रात में ही करता, लेकिन इसके लिए कई रातें लग जातीं, शायद सौ, शायद हज़ार। और मुझे इस चिंता से सताया जाता कि कहीं मेरी किस्मत का मालिक, जो सुल्तान शेरियर से भी कम दयालु है, किसी सुबह जब मैं काम बंद करूँ, तो मुझे अगली शाम तक का समय न दे दे। ऐसा नहीं था कि मेरी किसी भी तरह से 'हज़ार और एक रात' की कहानियों को दोहराने की महत्वाकांक्षा थी, न ही 'सेंट साइमन के संस्मरणों' को, जो रात में लिखे गए थे, और न ही उन किताबों को जिन्हें मैंने इतना प्यार किया था और जिनसे मैं अपने बचपन के भोलेपन में अंधविश्वास से जुड़ा हुआ था, जैसे मैं अपने बाद के प्रेमों से जुड़ा था, मैं उनके मूल रूप से अलग कल्पना भी नहीं कर सकता था। जैसा कि एल्स्टिर ने चारडिन के बारे में कहा था, जिसे हम प्यार करते हैं, उसे हम तभी दोबारा बना सकते हैं जब हम उसे नकार दें। निःसंदेह मेरी पुस्तकें, मेरे शरीर की तरह, एक दिन मर जाएँगी। परन्तु मृत्यु को स्वीकार करना

ही होगा। यह विचार स्वीकार करना होगा कि दस वर्षों में मृत्यु हो जाएगी और मेरी पुस्तकें सौ वर्षों में। जैसे मनुष्यों को शाश्वतता का आश्वासन नहीं दिया जा सकता, वैसे ही रचनाओं को भी नहीं। यह शायद 'हजार और एक रात' जितनी लंबी पुस्तक हो सकती है, पर उससे बहुत भिन्न। यह सत्य है कि जब कोई किसी रचना से प्रेम करता है, तो वह उसके समान कुछ करना चाहता है, परन्तु उसे अपने सांसारिक प्रेम का त्याग करना होगा और अपनी पसंद-नापसंद के बारे में नहीं, बल्कि उस सत्य के बारे में सोचना होगा जो हमारी प्राथमिकताओं के बारे में नहीं पूछता और हमें उनके बारे में सोचने से रोकता है। और सत्य का पालन करके ही कोई एक दिन उस रचना से मिल सकता है जिसे उसने त्याग दिया है और 'अरब नाइट्स' या 'संत-साइमन के संस्मरण' को भूलकर किसी और काल में उसकी प्रतिरूप रचना कर सकता है। परन्तु क्या मेरे पास अभी भी समय था? क्या बहुत देर नहीं हो चुकी थी?

बहरहाल, अगर मुझमें अब भी अपना काम पूरा करने की शक्ति होती, तो आज राजकुमारी डी गुएरमांटेस के स्वागत समारोह के दौरान जो परिस्थितियाँ मेरे मन में इस काम का विचार और इसे पूरा न कर पाने का भय दोनों एक साथ पैदा कर रही थीं, वे स्पष्ट रूप से उस स्वरूप को दर्शा देतीं जिसका पूर्वाभास मुझे पहले कॉम्ब्रे चर्च में एक ऐसे समय में हुआ था जिसका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा था, एक ऐसा स्वरूप जो सामान्यतः अदृश्य होता है, समय का स्वरूप। मैं उस समय-आयाम को जीवन का वर्णन करके प्रस्तुत करने का प्रयास करता, जो हमारी इंद्रियों द्वारा बोध कराए गए स्वरूप से बिल्कुल भिन्न होता। निश्चित रूप से, हमारी इंद्रियाँ हमें अन्य गलतियों की ओर ले जाती हैं, इस वृत्तांत के कई प्रसंगों ने मुझे यह सिद्ध कर दिया है कि वे जीवन के वास्तविक स्वरूप को विकृत कर देती हैं। लेकिन यदि आवश्यक हो, तो मैं अपने प्रस्तावित अधिक सटीक

व्याख्या को सुनिश्चित करने के लिए ध्वनियों के स्थान को अपरिवर्तित छोड़ सकता हूँ, उन्हें उस स्रोत से अलग करने से बच सकता हूँ जो हमारी बुद्धि उन्हें प्रदान करती है, यद्यपि कमरे में बारिश की बूँदों को गूंजते हुए दिखाना या जिस प्याले से हम पी रहे हैं उसमें मूसलाधार बारिश की आवाज़ को प्रकट करना, अपने आप में उतना विचलित करने वाला नहीं है जितना कि अक्सर कलाकार किसी पाल या चोटी को हमारे निकट या दूर चित्रित करते हैं, जैसा कि परिप्रेक्ष्य के नियम, रंग में भिन्नता और दृष्टिगत भ्रम उन्हें प्रकट करते हैं, जबकि हमारी बुद्धि हमें बताती है कि ये वस्तुएँ हमसे बहुत दूर स्थित हैं।

हालांकि यह गलती अधिक गंभीर होगी, मैं शायद गुजरती हुई महिला के चेहरे में विशेषताएं डालने की प्रथा को जारी रखूं, जबकि वहां नाक, गाल और ठोड़ी के बजाय केवल एक खाली जगह हो जिसमें हमारी इच्छा प्रतिबिंबित होती हो। और, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि मेरे पास एक ही चेहरे के लिए उपयुक्त सौ मुखौटे तैयार करने का समय न होता, यदि इसे केवल आँखों द्वारा देखे जाने के तरीके से और उन भावों के अनुसार पढ़ा जाता, जैसा कि वे आँखें आशा या भय से देखती हैं या, दूसरी ओर, प्रेम और आदत से, जो कई वर्षों तक उम्र के बदलावों को छुपाए रखती हैं, देखा जाता है, तो भी, भले ही मैंने अल्बर्टीन के साथ अपने संबंध के बावजूद, जो यह साबित करता है कि इसके बिना सब कुछ काल्पनिक और झूठा है, लोगों को बाहर से नहीं बल्कि हमारे भीतर से चित्रित करने का बीड़ा न उठाया होता, जहाँ उनके छोटे से छोटे कार्य भी घातक परिणाम दे सकते हैं, और हमारी संवेदनशीलता पर विभिन्न छापों के अनुसार या हमारी इस शांत निश्चितता के अनुसार नैतिक वातावरण को बदलने का प्रयास न किया होता कि कोई वस्तु महत्वहीन है जबकि खतरे की मात्र छाया एक पल में अपना आकार कई गुना बढ़ा देती

है, यदि मैं इन परिवर्तनों और कई अन्य परिवर्तनों (जिनकी आवश्यकता, यदि सत्य को चित्रित करना हो तो इस वृत्तांत के दौरान लगातार दिखाई गई है) को एक ऐसे ब्रह्मांड के प्रतिलेखन में शामिल न कर पाता जिसे पूरी तरह से फिर से डिजाइन करना था, तो भी मैं उसमें मनुष्य को उसके शरीर के विस्तार के रूप में चित्रित करने में असफल नहीं होता। लेकिन उनके वर्षों को एक ऐसे बोझ के रूप में देखा जाता है जो धीरे-धीरे बढ़ता जाता है और अंततः उन्हें कुचल देता है, यानी उन्हें अपने साथ हर जगह घसीटना। इसके अलावा, हर कोई महसूस करता है कि हम समय में लगातार बढ़ते स्थान पर हैं, और यह सार्वभौमिकता मुझे प्रसन्न कर सकती है क्योंकि यह सत्य है, एक ऐसा सत्य जिस पर हममें से प्रत्येक को संदेह है और जिसे स्पष्ट करने का प्रयास करना मेरा कर्तव्य था। न केवल हर कोई महसूस करता है कि हम समय में एक स्थान रखते हैं, बल्कि सबसे सरल व्यक्ति भी उस स्थान को लगभग उसी तरह मापता है जैसे वह अंतरिक्ष में हमारे स्थान को मापता है। निःसंदेह हम इस माप में अक्सर गलतियाँ करते हैं, लेकिन यह मानना कि ऐसा करना संभव है, यह सिद्ध करता है कि व्यक्ति आयु को मापने योग्य वस्तु के रूप में देखता है।

और अक्सर मैं खुद से न केवल यह पूछता था कि क्या अभी भी समय है, बल्कि यह भी कि क्या मैं अपना काम पूरा करने की स्थिति में हूँ। बीमारी, जिसने मुझे संसार से विमुख करके मेरी सेवा की थी (क्योंकि यदि बीज बोने पर न मरे तो वह बंजर रह जाता है, परन्तु यदि वह मर जाए तो बहुत फल देता है), अब शायद मुझे आलस्य से बचाएगी, जैसे आलस्य ने मुझे आराम से बचाया था। बीमारी ने मेरी शक्ति को कमज़ोर कर दिया था और, जैसा कि मैंने लंबे समय से देखा था, अल्बर्टीन से प्रेम समाप्त होने के बाद मेरी स्मृति शक्ति को भी क्षीण कर दिया था। और क्या बाद में

समझने, प्रकाशित करने, बौद्धिक समकक्षों में रूपांतरित करने के लिए आवश्यक स्मृतियों का पुनर्निर्माण, उस कलाकृति की शर्तों में से एक, लगभग अनिवार्य शर्त नहीं थी, जिसकी कल्पना मैंने अभी पुस्तकालय में की थी? आह, काश मेरे पास अभी भी वे शक्तियाँ होतीं जो उस शाम को बरकरार थीं जब मैंने फ्रांकोइस ले चैम्पी को देखा था। मेरी दादी की धीमी मृत्यु और मेरी इच्छाशक्ति और मेरे स्वास्थ्य का पतन मेरी माँ के पदत्याग की उस शाम से शुरू हुआ था। सब कुछ उसी क्षण तय हो गया था जब सुबह का इंतज़ार किए बिना, अपनी माँ के चेहरे को चूमने के लिए, मैंने अपना निश्चय कर लिया था, मैं बिस्तर से कूदकर उठी थी और अपनी नाइटशर्ट पहने उस खिड़की के पास खड़ी थी जहाँ से चाँदनी छनकर आ रही थी, जब तक कि मैंने एम. स्वान के जाने की आवाज़ नहीं सुनी। मेरे माता-पिता उनके साथ गए थे, मैंने दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी थी, घंटी की आवाज़ और दरवाज़ा बंद होने की आवाज़। ठीक उसी क्षण, प्रिंस डी गुएरमांटेस के महल में, मैंने अपने माता-पिता के कदमों की आहट और उस छोटी घंटी की धातु जैसी, तीखी, ताज़ा गूँज सुनी, जिसने एम. स्वान के जाने और मेरी माँ के सीढ़ियों से ऊपर आने की सूचना दी थी; मैंने उसे अभी सुना, उसकी असली आवाज़, हालाँकि उसकी गूंज बहुत दूर अतीत में सुनाई दी थी। फिर, उस क्षण से लेकर जब मैंने उसे सुना था और गुएरमांटेस के स्वागत के बीच घटी सभी घटनाओं के बारे में सोचते हुए, मैं यह सोचकर भयभीत हो गया कि वास्तव में वह घंटी अभी भी मेरे भीतर बज रही थी, जिसकी तीखी आवाज़ को मैं शांत नहीं कर पा रहा था, क्योंकि मुझे अब याद नहीं था कि वह कैसे बंद होती थी। सीखने के लिए, मुझे उसे सुनना पड़ता था और अपने आस-पास के मुखौटों की बातचीत से मुझे अपने कान बंद करने पड़ते थे। उसे करीब से सुनने के लिए मुझे फिर से अपने भीतर डूबना पड़ता था। इसलिए वह घंटी हमेशा

मौजूद रहती थी और उसके साथ, उसके और वर्तमान के बीच, वह सारा अवर्णनीय अतीत खुल जाता था जिसके बारे में मुझे पता ही नहीं था कि वह मेरे भीतर मौजूद है। जब वह बजती थी, तब मैं अस्तित्व में होता था और चूंकि, उसे अभी भी सुनने के लिए, कोई विच्छेद नहीं हो सकता था, मुझे विश्राम या अस्तित्वहीनता, गैर-विचार, गैर-चेतना का कोई क्षण नहीं मिल सकता था, क्योंकि वह पूर्व क्षण मुझसे चिपका हुआ था, क्योंकि मैं उसे पुनः प्राप्त कर सकता था, उसमें लौट सकता था, केवल अपने भीतर और गहराई से डूबकर। समय के स्वरूप की वह धारणा, अतीत का हमसे अविभाज्य होना, यही वह विचार था जिसे मैं अब अपने काम में सशक्त रूप से उजागर करना चाहता था। और यही कारण है कि मानव शरीर अतीत को अपने भीतर समाहित किए रखते हैं, इसीलिए वे अपने प्रेमियों को इतना दुख पहुँचा सकते हैं, क्योंकि उनमें असंख्य यादें, असंख्य सुख और इच्छाएँ समाहित होती हैं, जो मिट तो जाती हैं, लेकिन उस व्यक्ति के लिए अत्यंत क्रूर होती हैं जो समय के क्रम में उस प्रिय शरीर का चिंतन करता है और उसे संजोता है, जिससे वह ईर्ष्या करता है, यहाँ तक कि उसके विनाश की कामना करता है। क्योंकि मृत्यु के बाद समय शरीर को छोड़ देता है और यादें—उदासीन और फीकी—उसमें मिट जाती हैं जो अब अस्तित्व में नहीं है, और जल्द ही उस व्यक्ति में भी विवश हो जाएँगी, वे यादें जो जीवित शरीर की इच्छा के साथ नष्ट हो जाती हैं।

मुझे तीव्र थकान का अहसास हुआ जब मुझे एहसास हुआ कि समय का यह पूरा अंतराल न केवल मेरे द्वारा निरंतर जिया गया, सोचा गया और संजोया गया था, बल्कि यह मेरा जीवन था, यह मैं ही था, और इससे भी कहीं अधिक इसलिए कि मुझे हर पल इसे अपने साथ जोड़े रखना था, इसने मुझे सहारा दिया था, मैं इसके चक्करदार शिखर पर टिका हुआ था, और मैं इसे अपने साथ लिए बिना हिल नहीं सकता था।

जिस दिन मैंने कॉम्ब्रे के बगीचे में दूर से आती घंटी की आवाज़ सुनी, वह मेरे लिए उस विशाल आयाम में एक मील का पत्थर था जिसके बारे में मुझे पता ही नहीं था कि वह मेरे भीतर मौजूद है। अपने भीतर इतने वर्षों को देखकर मैं चकित रह गई, मानो मैं मीलों ऊपर पहुँच गई हूँ।

अब मुझे समझ आया कि ड्यूक डी गुएरमांटेस, जिनकी मैं बैठे हुए प्रशंसा करता था क्योंकि वे मुझसे कहीं अधिक उम्र के होने के बावजूद बिल्कुल बूढ़े नहीं हुए थे, उठते समय क्यों लड़खड़ा गए थे और सीधे खड़े होने की कोशिश कर रहे थे—उन बूढ़े आर्कबिशपों की तरह जो अपने सहायकों से घिरे रहते हैं, जिनका एकमात्र ठोस हिस्सा उनका धातु का क्रॉस होता है —और अपने 83 वर्षों के लगभग असंभव शिखर पर एक पत्ते की तरह कांपते हुए आगे बढ़े, मानो लोग जीवित खंभों पर टिके हों जो बढ़ते ही रहते हैं, चर्च के टावरों की ऊँचाई तक पहुँच जाते हैं, जब तक कि चलना मुश्किल और खतरनाक न हो जाए और अंत में वे गिर जाते हैं। मैं भयभीत था कि मेरे अपने जीवन का बोझ पहले से ही इतना ऊंचा था और मुझे नहीं लगता था कि मैं इतने लंबे समय तक उस अतीत को सहन करने के लिए पर्याप्त मजबूत था जो इतना पुराना था और जिसे मैं अपने भीतर इतने दर्दनाक ढंग से ढो रहा था। यदि कम से कम मुझे अपना काम पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता, तो मैं उस पर समय की मुहर अवश्य लगाता, जिसका विचार आज मुझ पर इतनी प्रबलता से हावी हो गया है, और यदि आवश्यक हो तो मैं उसमें मनुष्यों को ऐसे राक्षसों के रूप में वर्णित करता जो समय में उस सीमित स्थान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जो अंतरिक्ष में उनके लिए आरक्षित है, एक ऐसा स्थान जो इसके विपरीत, असीम रूप से विस्तारित है, जो एक साथ दूर-दूर के वर्षों और उनके द्वारा जिए गए दूर के कालखंडों को छूता है - जिनके बीच अनगिनत दिन समाहित हैं - वे समय में डूबे हुए दिग्गजों की

तरह खड़े हैं।

समाप्त